माध्यमिक बहीखाता

[इन्टरमीडियेट कक्षाओं के लिये]

(उत्तर-प्रदेश, मध्यभारत, सैंट्रल बोर्ड, अजमेर एवं राजपूताना विश्वविद्यालय द्वारा इण्टरमीडियेट वाणिज्य के विद्यार्थियों के लिये स्वीकृत)

लेखक

रूपराम गुप्ता, एम० ए०, बी० कॉम०

रिटायर्ड प्रिन्सीपल एवं प्रोफेसर ऑव अकाउण्टेंसी

सेठ जी० बी० पोद्दार कॉलेज,

नवलगढ (राजस्थान)

संशोधित एवं परिवर्धित हिन्दी संस्करण

आगरा बुक स्टोर

प्रकाशक, विक्रेता एवं मुद्रक

आगरा अजमेर इलाहाबाद बनारस कानपुर

लखनऊ मेरठ नागपुर

१९५५]

[मूल्य ७॥).

विषय-सूची

अध्याय—१

विषय-प्रवेश

"पहिले लिख और पीछे दे, भूल पड़े कागज से ले" यह उन लोगो के लिये, जो रुपये का लेन-देन करते है चाहे वे व्यापार भले ही न करे, एक अति उत्तम व सुन्दर उपदेश है। कोई भी मनुष्य, उसकी स्मरण-शक्ति कितनी भी अच्छी क्यो न हो, हर एक चीज को याद नही रख सकता। इसलिये हमें ऐसी चीजो को, जिनको याद रखना हमारी भलाई के लिये आवश्यक है, लिख लेना चाहिए, क्योकि हम अपनी स्मरण-शक्ति के भरोसे पर ही नहीं रह सकते।

बहीखाता (Book-keeping) हमारे रुपये के लेन-देन व माल आदि के हिसाब को उचित ढङ्ग से लिखित रूप मे रखने की कला है। उत्तरी भारत मे बहीखाता प्राय. मुड़िया या हिन्दी मे रखा जाता है। अब भी शहरो और गॉवो के व्यापारी अपने बच्चो को पहले मुड़िया भाषा, हिसाब और बहीखाता पढ़ने के लिये पाठशालाओं मे भेजते है और उसके उपरान्त आधुनिक स्कूल मे। इससे बहीखाता आदि की महत्ता का पता चलता है।

साधारणत भारतीय व्यापारी अपना बहीखाता देशी भाषा मे ही रखता है और वह भी हिन्दुस्तानी-बहीखाता के सिद्धान्त पर। परन्तु बहुत से व्यापारी आजकल अपना बहीखाता अँग्रेजी ढङ्ग से रखते है। इतना ही नहीं, व्यापार गृहो के खाते किसी एक ढङ्ग से और व्यक्ति, सभा तथा संस्थाओ के खाते दूसरे ढङ्ग से रखे जाते है।

हम पहले एक व्यापार गृह के लिये उपयुक्त अँग्रेजी-ढङ्ग से बहीखाता रखना समझायेंगे। परन्तु इसके पहले कि हम बहीखाता समझाये, कुछ प्रचलित व्यापारिक शब्दो को समझना बहुत आवश्यक है। ये शब्द इस तरह से हैं :—

व्यापार (Business) :—यह एक साधारण शब्द है जो हर तरह के उद्यम के लिये, जो मुनाफा उठाने की इच्छा से किया जाय, काम आता है। उदाहरण के लिये, एक व्यापारी का व्यापार, शिल्पकार की दस्तकारी, बैंक, बीमा और दलाल का व्यापार आदि इसी गिनती में आते है।

व्यवसाय (Profession) :—व्यवसाय वह जीविका है जिसके लिए पूर्व ट्रेनिंग लेना आवश्यक है और जिसमे बौद्धिक चतुराई के प्रयोग की आवश्यकता पड़ती है, उदाहरण के लिये, डाक्टरी, वकालत आदि।

स्वामी (Proprietor) :—यह व्यापार अथवा व्यवसाय का मालिक होता है। वही आवश्यक पूँजी लगाता है, वही व्यापार की देख-भाल करता है, वही उसका बोझ अपने कंधों पर लेता है और वही व्यापार में होने वाले लाभ का हकदार होता है। यदि नुकसान होता है तो वह उसे ही सहना पड़ता है। यदि एक ही पुरुष अपना निजी व्यापार करता है तो उसे एकल व्यापारी (Sole Trader) कहते हैं, परन्तु यदि दो या अधिक पुरुषों द्वारा सम्मिलित व्यापार किया जाता है तो उसे साझेदारी

(Partnership) कहते है। साझेदारी (Partnership) को कानून की दृष्टि से तो फर्म (Firm) कहते हैं और इसमें भाग लेने वालो को साझीदार कहते है। जब दो या अधिक पुरुष मिलकर साझे का व्यापार चालू करते है तो हर एक व्यापार मे कुछ पूँजी लगाता है और वे अपने-अपने हानि-लाभ के हिस्से भी तय कर लेते है। इस हिस्से को पत्ती भी कहते हैं और यह साधारणत. आनों मे विभाजित करली जाती है। जैसे—उदाहरण के लिए, राम, श्याम और शंकर तीन साझीदार है। उनके हानि-लाभ के हिस्से राम के आठ आने, श्याम के छ. आने और शंकर के दो आने रखे जा सकते हैं।

पूँजी (Capital) :—व्यापारी जो भी रोकड़ी रुपया या माल अपने व्यापार को चालू करने मे लगाता है वह उसकी पूँजी कहलाती है।

व्यवहार (Transaction) :—किन्हीं दो पुरुषो या वस्तुओं के बीच के आदान-प्रदान को लेन-देन या व्यवहार कहते हैं। माल का क्रय-विक्रय, द्रव्य का लेन-देन तथा हर तरह का विनिमय, जो द्रव्य के लिये हो या ऐसी किसी वस्तु के लिये हो जिसका द्रव्य मे मूल्य लगाया जा सकता है, व्यवहार है।

आहरण (Drawings) —जब कभी स्वामी अपने व्यक्तिगत काम के लिये व्यापार से रुपये या माल लेता है तो उसे आहरण कहते है।

माल (Goods) —जो वस्तुएँ लाभ पर बेचने के लिए खरीदी जाती है या जिन्हे बेचने की हालत मे परिणत करके बेचा जाता है, माल (Goods) कहलाती है। व्यापार इस माल से ही होता है। कपड़े के दुकानदार द्वारा खरीदा हुआ कपड़ा, चीनी के कारखाने द्वारा खरीदा हुआ गन्ना तथा रूई के कारखाने द्वारा खरीदा हुआ कपास सब माल के ही उदाहरण है।

क्रय (Purchases) :—खरीदे हुए माल को क्रय कहते है। यदि माल रोकड़ी रुपये मे खरीदा गया है तो उसे नगद क्रय (Cash Purchases) कहते है; परन्तु यदि वह माल उधार पर खरीदा गया है, तो उसे उधार क्रय (Credit Purchases) कहते है।

क्रय-वापिसी (Purchases Returns) :– यदि खरीदा हुआ माल खराब हो, या जितने के लिये आर्डर दिया है उससे अधिक भेज दिया गया हो तो वह उस व्यापारी को ही वापिस भेज दिया जाता है जिससे खरीदा गया है, और इसे क्रय-वापिसी (Purchases Returns या Returns Outwards) कहते हैं।

विक्रय (Sales) :—व्यापार मे जो माल बिक जाता है उसे विक्रय कहते हैं। यदि माल रोकड़ी रुपयों में बेचा जाता है तो उसे नगद विक्रय (Cash Sales) कहते है; परन्तु जब उधार बेचा जाता है तो उसे उधार विक्रय (Credit Sales) कहते हैं।

विक्रय वापिसी (Sales Returns) :—यदि ग्राहक माल को, जो उसे बेचा गया है, खराब समझता है अथवा जिस माल के लिये उसने लिखा था वह माल उसे नहीं भेजा गया है तो वह ऐसा माल व्यापारी को वापिस लौटा देता है, इसे विक्रय वापिसी (Sales Returns या Returns Inwards) कहते हैं।

व्यापारिक छूट (Trade Discount) :—कभी-कभी व्यापारी अपनी भाव-सूची (Price List) [illegible] छूट के रूप में खरीदने वाले को दिया करता है। इस छूट को व्यापारिक छूट कहते हैं। उदाहरणार्थ, यदि हम कोई पुस्तक खरीदें तो पुस्तक बेचने वाला हमें एक आना [illegible] कीमत पर छोड़ देता है। यह व्यापारिक छूट है।

[illegible] है, तो विक्रय और क्रय हमेशा नेट मूल्य पर ही लिखी जाती है;

अर्थात् व्यापारिक छूट को घटाने के बाद जो कीमत शेष रहती है उसी पर बहीखाते में उल्लेख किया जाता है।

नगद छूट (Cash Discount) :—यदि एक व्यापारी निश्चित तारीख से पूर्व रुपये चुका देता है तो दूसरा व्यापारी उसे कुछ रकम छोड़ देता है, इसे नगद छूट कहते हैं। यह भी कुछ प्रतिशत के रूप में होती है।

कमीशन (Commission) .—जब एक पुरुष दूसरे पुरुष का कुछ कार्य करता है, तो उसे उस कार्य के लिए प्रतिफल मिलता है, इसे कमीशन कहते है। यह प्राय प्रतिशत के रूप में ही दिया जाता है।

रोकड़ी व्यापार (Cash Trade) .—यदि एक व्यापारी रोकड़ी क्रय-विक्रय करता है तो इसे रोकड़ी व्यापार कहते है।

उधार व्यापार (Credit Trade) .—यदि व्यापारी उधार क्रय-विक्रय करता है तो इसे उधार व्यापार कहते हैं।

थोक व्यापार (Wholesale Business) .—जब क्रय-विक्रय थोक माल मे किया जाता है तो उसे थोक व्यापार कहते है।

फुटकर व्यापार (Retail Business) :- जब व्यापारी फुटकर या थोड़ी तादाद मे खरीद-बिक्री करता है तो उसे फुटकर व्यापार कहते है।

ऋणी (Debtor) :—ऋणी वह व्यक्ति है जिसे कुछ चुकाना है; और जब तक वह दूसरे से लिए हुए माल तथा रकम का भुगतान नहीं करता है तब तक उसका ऋणी (Debtor) रहता है।

ऋण-दाता (Creditor) :—जब एक पुरुष दूसरे को कर्ज पर रुपये या माल देता है तो वह उसका ऋण-दाता (Creditor) कहलाता है, और जब तक उसे कर्ज का भुगतान नही मिलता तब तक वह ऋण-दाता ही रहता है।

डूबते ऋण (Bad Debts) :—प्रत्येक व्यापारी के, जो उधार माल बेचता है, बहुत से पुरुष ऋणी हो जाते है और कई कारणों से वह उनसे ऋण की पूरी रकम प्राप्त करने मे असमर्थ रहता है। जैसे सम्भव है कि उसका कोई ऋणी दिवालिया हो गया हो, या भाग गया हो, या बिना सम्पत्ति छोड़े ही मर गया हो। ऐसी स्थितियों मे ऋण का कुछ हिस्सा अप्राप्य हो जाता है। इसे अप्राप्य ऋण या डूबते ऋण (Bad debt) कहते हैं। अप्राप्य ऋण एक व्यापारिक नुकसान है।

सम्पत्तियाँ (Assets) .—इनका तात्पर्य व्यापारी की सम्पत्तियो से है और इनमें मकान, माल का स्टॉक आदि सम्मिलित है।

देनदारियाँ (Liabilities) :—ये वह ऋण हैं जो व्यापार को, अपने स्वामी और दूसरे व्यक्तियों के प्रति चुकाना है।

अवधि-विक्रय (Turnover) :—एक निर्धारित समय में होने वाली समस्त बिक्री को, चाहे वह नगद हो या उधार, अवधि-विक्रय कहते है।

प्रमाणक (Voucher) :—प्रति दिन के व्यापारिक लेन-देन को प्रमाणित करने के लिए जो लिखित प्रमाण-पत्र होता है उसे प्रमाणक कहते है। उदाहरण के लिये, जब माल खरीदा जाता है तो बेचने वाला एक बीजक देता है। यह बीजक एक प्रमाणक है जो प्रमाणित करता है कि यह माल खरीदा गया है। इसी प्रकार जब खरीदने वाला माल का रुपया अदा करता है तो उसे रसीद मिलती है वह भी प्रमाणक ही है। इन प्रमाणकों के आधार पर ही बहियों में लेखा किया जाता है।

फर्म (Firm) :—कानून की दृष्टि से तो यह शब्द साझे के व्यापार के लिए प्रयोग में आता हैं। परन्तु प्रतिदिन की भाषा मे यह किसी भी व्यापार-इकाई के लिए काम मे आता रहता है, चाहे वह व्यापार-इकाई साझे मे है या नहीं।

व्यापार-सम्बन्धी वहीखाता (Business Book keeping)

वहीखाता किसी व्यक्ति के व्यापारिक लेन-देनो का उचित रूप से लिखना है जिससे किसी भी समय उसके व्यापार की ठीक-ठीक स्थिति मालूम हो सके। सर्वश्रेष्ठ वहीखाता वही समझा जाता है जो अधिक से अधिक व्यापार-सम्बन्धी सूचना दे। कितनी और कैसी सूचना चाहिए यह तो व्यापार की प्रकृति व स्वरूप पर निर्भर रहता है, परन्तु साधारणत. निम्न सूचना हर व्यापार के सम्बन्ध मे आवश्यक है :—

१. आये-गये रुपये, माल और सेवा आदि का विवरण।
२. व्यापार मे हुए हानि-लाभ की रकम और वह किस तरह से निकली।
३. पूंजी और ऋण की स्थिति।

इसलिये वहीखाता पद्धति इस तरह की होनी चाहिए कि निम्नलिखित के सम्बन्ध मे फौरन सूचना मिल सके —

एक विशेष समय की खरीद, बिक्री और वापिस किया हुआ माल। मौजूद माल की तादाद और मूल्य। तमाम प्राप्त किया हुआ रुपया, और रोकड़ बाकी (तिजूरी व बैंक दोनो की)। देनदारों व लेनदारों के साथ हुए तमाम लेन-देन का विवरण। हानि-लाभ का ब्यौरा और पूंजी और ऋण का चिट्ठा।

वहीखाते की पद्धति ऐसी होनी चाहिए जिसको अपनाने मे कम परिश्रम हो और सब तरह का लेन-देन अच्छी तरह से सरलता के साथ लिखा जा सके।

वहीखाते की आवश्यकता

एक लिमिटेड कम्पनी के सिवाय, कानून के द्वारा कोई भी व्यापारी अपने लेन-देन का हिसाब रखने के लिए बाध्य नहीं है। परन्तु कभी-कभी हिसाब ठीक पद्धति पर न रखने से जो दुष्परिणाम होते हैं उन्हें देखते हुए हिसाब रखना परमावश्यक जान पड़ता है। निम्न कारणों से व्यापारी को अपना हिसाब उचित पद्धति के अनुसार रखना चाहिए :—

१. व्यापारी की स्मरण-शक्ति कितनी ही अच्छी क्यों न हो वह हर एक लेन-देन को याद नहीं रख सकता। इसलिये गलतियों व नुकसान से बचने तथा व्यापार का ठीक रूप से संचालन करने के लिए उचित वहीखाता रखना आवश्यक है।

२. व्यापारी की दृष्टि से आय-कर (Income-tax) एक बहुत ही महत्व की वस्तु है। यदि व्यापारी ने ठीक ढंग से हिसाब रखा है तो आय-कर वसूल करने वाले अधिकारी उसके साथ अच्छा व्यवहार करेंगे। परन्तु यदि हिसाब ठीक नहीं रखा गया है, तो वे अपनी इच्छानुसार मुनाफा मानकर [illegible] आय-कर वसूल करेंगे।

३. यदि कभी व्यापार को बेचना हो, तो उसका ठीक मूल्य निर्धारित करने के लिए पिछला [illegible] बहुत ही आवश्यक होता है।

४. यदि कभी दुर्भाग्य से व्यापारी का दिवाला निकल जावे, तो उसे दिवालियो की अदालत की शरण लेनी पड़ती है। यदि उसने उचित बहीखाता रखा है तो उसके साथ अच्छा व्यवहार किया जाता है। परन्तु यदि उसने ठीक हिसाब नही रखा हो तो वह अदालत का दया-पात्र नही हो सकता।

दोहरा लेख वहीखाता (Double entry Bookkeeping).—हिसाब रखने की पद्धति उतनी ही प्राचीन है जितनी कि व्यापार करने की रीति। परन्तु दोहरा लेख वहीखाता के जन्मदाता लूकास पैस्योली (Lucas Pacioli) थे जिन्होंने अपनी प्रथम पुस्तक इस विषय पर १५४४ मे लिखी थी। इस पुस्तक का नाम "De Computis et Scripturis" था। Pacioli के सिद्धान्त आज ४०० वर्ष वाद भी ठीक माने जाते है। उनको थोड़ी हेर-फेर के साथ आज भी काम मे लाया जाता है।

दोहरा लेख वहीखाते का सिद्धान्त इस तत्व पर आधारित है कि हर एक लेन-देन दो खातो को प्रभावित करता है। यदि एक खाता रुपया, माल आदि के रूप मे फायदा प्राप्त करता है तो दूसरे खाते को उतना ही नुकसान उठाना पड़ता है। प्राप्त करने वाले खाते के नाम लिखा जाता है और देने वाले खाते मे जमा किया जाता है। इस प्रकार प्रत्येक नाम प्रविष्ट के लिये उतनी ही रकम की एक जमा प्रविष्टि होगी और एक जमा प्रविष्टि के लिये उतनी ही रकम की नाम प्रविष्टि। समस्त दोहरा लेख वहीखाते (Double entry Book-keeping) को तीन विभागो मे विभाजित किया जा सकता है.—

१ प्रारम्भिक लेखा (Original Record) :—हरएक लेन-देन नकल-वही (Journal) में प्रतिदिन लिख लिया जाता है ताकि वह स्मरण रह सके। इसे ही प्रारम्भिक लेखा कहते हैं।

२. क्रमवद्धता (Classification) :—यदि व्यापार का लेखा सिर्फ नकल-वही मे ही रखा जावे तो इससे कोई अधिक फायदा नहीं हो सकता। परन्तु नकल-वही से जब खाता-वही (ledger) तैयार की जाती है तो यह एक बहुत ही लाभदायक वस्तु बन जाती है। खाता-वही में हर एक व्यक्ति व वस्तु के सब लेन-देन एक स्थान पर एकत्रित कर लिये जाते हैं। ऐसा श्रेणी-विभाजन करने को खाता खताना (Posting) कहते है। खाता-वही मे वे ही लेखे रहते हैं जो नकल में होते हैं परन्तु उनको क्रमवद्ध कर दिया जाता है।

३. सारांश (Summary) :—खाता-वही में भी बहुत से खाते होते हैं। इसलिए इससे फौरन यह पता नहीं चल सकता कि व्यापार मे लाभ हुआ या हानि, तथा व्यापार मे कितनी पूँजी है और किसको कितना देना है। अत. व्यापारी अन्त मे एक संक्षिप्त व्यौरा (Summary) तैयार करता है। इस सारांश को ही व्यापारी के अन्तिम खाते (Final Accounts) कहते हैं।

प्रश्न

१. बही-खाता वाणिज्य की माध्यमिक परीक्षा के लिए एक अनिवार्य विषय है, क्यों ? संक्षेप में लिखिये।

२. वस्तुओं के उधार क्रय-विक्रय से आप क्या समझते हैं ?

३. निम्न शब्दों को समझाइये :—

ऋणी, ऋणदाता, फर्म, धनात्मक व अवधि विक्रय।

४. बही-खाता क्या है और यह व्यापार के लिये क्यों आवश्यक है ?

५. उन सुविधाओं व लाभों को, जो एक व्यापारी अपने बहीखातों से प्राप्त करता है, संक्षेप में समझाओ।

अध्याय—२

प्रारम्भिक लेखे—जर्नल

दोहरा लेख बहीखाते के सिद्धान्त के अनुसार सारे व्यापारिक लेन-देन आरम्भ में जर्नल (Journal) में तारीख के क्रमानुसार लिखे जाते हैं। हरएक व्यापारिक लेन-देन के दो पहलू (Aspects) होते हैं—(अ) लाभ पहुँचाना और (ब) लाभ प्राप्त करना। एक के बिना दूसरा नहीं हो सकता, क्योंकि किसी देने वाले के लिये एक लेने वाला और लेने वाले के लिये एक देने वाला होना आवश्यक है। यह लेना-देना दो भिन्न-भिन्न खातों में होता है परन्तु एक ही बही में। जैसे, एक मोटर राम से खरीदी गई, तो यहाँ मोटर का खाता पाता है और राम खाता देता है। इसलिए पूर्ण लेखा के लिए व्यवहार को मोटर खाते के नाम और राम के खाते में जमा किया जाता है। यही दोहरा लेख (Double entry) है। जो खाता लाभ प्राप्त करता है उसके नाम (Debit) लिखा जाता है और जो लाभ देता है उसके जमा (Credit) किया जाता है। नाम वाले खाते को देनदार (Debtor) कहते हैं और जमा वाले खाते को लेनदार (Creditor) कहते हैं। जब यह लेखा जर्नल में लिखा जाता तो इसे जर्नल लिखना (Journalising) कहते हैं।

खातों की श्रेणियाँ (Classes of Accounts) :—किसी व्यक्ति विशेष, वस्तु से सम्बन्धित तमाम लेन-देन का संक्षेप में जो विवरण होता है, उसे खाता कहते हैं। बहीखाते के लिए खातों के तीन विभाग किये जा सकते हैं :—

१. व्यक्तिगत खाते (Personal Accounts) वे खाते हैं जिनमें व्यक्तियों के साथ किये गये लेन-देन का लेखा होता है। यह व्यक्ति हमारा लेनदार या देनदार हो सकता है।

२. वास्तविक खाते (Real Accounts) वे खाते हैं जिनमें वस्तुओं में किया गया लेन-देन लिखा जाता है। जैसे, रोकड़ खाता, मकान खाता, माल खाता आदि।

३. हानि-लाभ खाते (Nominal Accounts) ये खाते हैं जिनमें हानि-लाभ, जैसे—किराया, मजदूरी, वेतन, कमीशन, ब्याज आदि का लेखा रहता है।

इस बात को ध्यान रखना चाहिए कि कुछ खाते वास्तविक और अवास्तविक दोनों ही हो सकते हैं जैसे—क्रय तथा विक्रय खाते। जहाँ तक इनका माल-खाते से सम्बन्ध है ये वास्तविक खाते हैं परन्तु ये हानि-लाभ खाते में भी नफा-नुकसान मालूम करने के लिये सम्मिलित किये जा सकते हैं इसलिये इनको हानि-लाभ खातों की श्रेणी में भी रखा जा सकता है। वास्तविक और हानि-लाभ खाते दोनों मिल कर अव्यक्तिगत खाते (Impersonal Accounts) कहलाते हैं।

जर्नल लिखने के नियम (Rules for Journalising)

जब हम किसी लेन-देन को जर्नल में लिखते हैं, तो यह जानना आवश्यक होता है कि इसके

कारण कौन-कौन से दो खाते प्रभावित हुए, और उनमें से किस खाते के नाम लिखा जाय और किसका जमा।

व्यक्तिगत, वास्तविक और हानि-लाभ खातों को जर्नल में लिखने के निम्नांकित नियम हैं :—

१. व्यक्तिगत खाते—जो व्यक्ति लाभ प्राप्त करता है उसके खाते नाम (Debit) लिखा जाता है और जो व्यक्ति देता है उसके खाते जमा (Credit) किया जाता है।

२. वास्तविक खाते—जो वस्तु अन्दर आती है उसके खाते के नाम लिखा जाता है और जो वस्तु बाहर जाती है उसके खाते में जमा किया जाता है।

३. हानि-लाभ खातो में जिस खाते में खर्च होता है उसके नाम लिखा जाता है और जिसमें लाभ होता है उसमें जमा किया जाता है।

हर एक लेन-देन को अलग-अलग समझना चाहिए। अब यहाँ कुछ उदाहरण देकर, जर्नल में लिखने के आशय से जमा और नाम वाले खाते छाँटे जावेंगे।

उदाहरण १

१९५१					रु०
जनवरी १	(१)	एक्स ने व्यापार प्रारम्भ किया	....	....	५,०००
२	(२)	नकद माल (Goods) खरीदा	....	....	५००
३	(३)	ए को माल बेचा	....	....	१००
४	(४)	बी से माल खरीदा	....	....	८५०
५	(५)	नकद फर्नीचर (Furniture) खरीदा	....	....	५०
१०	(६)	सी से माल खरीदा	....	....	३७०
१३	(७)	ए से रोकड़ा (Cash) प्राप्त हुये	....	....	५०
२०	(८)	सी को चुकाये	....	....	१००
२५	(९)	डी को माल बेचा	....	....	४५०
२८	(१०)	नकद माल बेचा	....	....	२५०
३१	(११)	दुकान का किराया (Rent) दिया	....	....	३०

जर्नल की प्रविष्टि यह बताने का एक ढंग मात्र है कि किसी व्यवहार के लिये कौन-सा खाता नाम और कौन-सा खाता जमा किया जायगा और नीचे दी हुई तालिका में उपर्युक्त व्यवहारों के लिये नाम और जमा के कारण दिखाये गये हैं।

पद	खाते जिनको नाम करना है	खाते जिनको जमा करना है	खातों की किस्म	कारण
(१)	रोकड़ खाता		वास्तविक	रोकड़ा आया
		पूँजी खाता	व्यक्तिगत	व्यापारी देने वाला है।
(२)	माल खाता		वास्तविक	माल आया।
		रोकड़ खाता	वास्तविक	रोकड़ा गया।
(३)	ए		व्यक्तिगत	उसने माल प्राप्त किया।
		बिक्री खाता	वास्तविक	माल बाहर गया।

(४)	क्रय खाता		वास्तविक	माल अन्दर आया।
		बी	व्यक्तिगत	उसने माल दिया।
(५)	फर्नीचर खाता		वास्तविक	फर्नीचर आया।
		रोकड़ खाता	वास्तविक	रोकड़ा दिया।
(६)	क्रय खाता		वास्तविक	माल आया।
		सी	व्यक्तिगत	उसने माल दिया।
(७)	रोकड़ खाता		वास्तविक	रोकडा आया।
		ए	व्यक्तिगत	उसने रोकडा दिया।
(८)	सी		व्यक्तिगत	उसने रोकड़ा प्राप्त किया
		रोकड़ खाता	वास्तविक	रोकड़ा दिया।
(९)	डी		व्यक्तिगत	उसने माल प्राप्त किया।
		विक्रय खाता	वास्तविक	माल बाहर गया।
(१०)	रोकड़ खाता		वास्तविक	रोकडा आया।
		विक्रय खाता	वास्तविक	माल बाहर गया।
(११)	किराया खाता		हानि लाभ	किराया एक खर्चा है।
		रोकड़ खाता	वास्तविक	रोकड़ा दिया।

पूँजी खाता (Capital Account)—व्यापार अपने स्वामी से अलग समझा जाता है। यदि व्यापार को अपने स्वामी से कुछ प्राप्त होता है तो वह स्वामी के खाते मे जमा किया जाना चाहिए। यह स्वामी का खाता व्यापार मे पूँजी-खाता कहलाता है। जो व्यक्ति व्यापार मे रुपये लगाता है वह इस व्यापार को अपना ऋणी समझता है और इसी प्रकार व्यापार अपने स्वामी को लेनदार समझता है।

खातों के नाम (Name of Accounts) —जब व्यक्तिगत खाते लिखे जाते हैं तो व्यक्ति विशेष के नाम के बाद 'खाता' शब्द लगाना आवश्यक नही समझा जाता है। परन्तु वास्तविक और हानि-लाभ खातों के बाद 'खाता' शब्द लगाया जाता है।

जर्नल का रूप (The form of Journal):—जर्नल के खाने इस तरह बनाये जाते हैं:—

जर्नल का रूप—

तिथि (१)	खातों के नाम जो नाम या जमा किये हैं (२)	खाता-बही का पन्ना (३)	नाम (४)			जमा (५)		
			रु०	आ.	पा.	रु०	आ.	पा.

प्रथम खाने में तारीख लिखी जाती है और द्वितीय खाने मे जमा और नाम होने वाले खातों के नाम लिखे जाते हैं। तृतीय खाने में खाता-बही के पन्ने का नम्बर लिखा जाता है। चतुर्थ खाने में नाम की रकम और पंचम खाने में जमा की रकम लिखी जाती है।

वर्णन (Narration):—जब जर्नल के द्वितीय खाने में नाम और जमा के खाते लिख [illegible] जाते हैं तो संक्षेप में यह समझाया जाता है कि क्यों एक खाते के नाम लिखा गया और क्यों दूसरे खाते के [illegible] इस व्याख्या को ही वर्णन (Narration) कहते हैं।

पहले उदाहरण के लेन-देन, जर्नल में इस तरह लिखे जायेंगे —

एक्स का जर्नल

तिथि	खाते	खाता वहीका पन्ना	नाम			जमा		
			रु०	आ.	पा.	रु०	आ.	पा.
१९५१ जनवरी १	रोकड़ खाता पूँजी खाता पूँजी लगाई		५,०००	—	—	५,०००	—	—
२	क्रय खाता रोकड़ खाता नकद माल खरीदा		५००	—	—	५००	—	—
३	ए विक्रय खाता ए को उधार माल बेचा		१००	—	—	१००	—	—
४	क्रय खाता बी बी से उधार माल खरीदा		८५०	—	—	८५०	—	—
७	फर्नीचर खाता रोकड़ फर्नीचर नकद खरीदा		५०	—	—	५०	—	—
१०	क्रय खाता सी सी से उधार माल खरीदा		३७०	—	—	३७०	—	—
१३	रोकड़ खाता ए ए से रोकड़ प्राप्त की		५०	—	—	५०	—	—
२०	सी रोकड़ खाता सी को रोकड़ दी		१००	—	—	१००	—	—
२५	डी विक्रय खाता डी को उधार माल बेचा		४५०	—	—	४५०	—	—
२८	रोकड़ खाता विक्रय खाता नकद माल बेचा		२५०	—	—	२५०	—	—
३१	किराया खाता रोकड़ खाता किराया रोकड़ी दिया		३०	—	—	३०	—	—
		योग रु०	७,७५०	—	—	७,७५०	—	—

जोड़ लगाना और उनको आगे ले जाना (Casts and carry forwards) —जर्नल के प्रथम पन्ने का जोड़ लाइन खींच कर निकाला जाता है और वही जोड़ फिर दूसरे पन्ने के सिरे पर लिख दिया जाता है। इसी तरह से दूसरे पन्ने का जोड़ तीसरे पन्ने पर और तीसरे का चौथे पन्ने पर—और आगे भी इसी तरह लिखा जाता रहेगा जब तक कि अन्त के पन्ने का अन्तिम जोड़ न निकाल लिया जावे। जब एक पन्ने से दूसरे पन्ने पर जोड़ ले जाते हैं तो पहले पन्ने के नीचे "आगे ले गये" (Carried over या Carried forward) और दूसरे पन्ने के सिरे पर "नीचे लाये" (Brought forward) लिख देना चाहिये।

उदाहरण २—

१ अप्रेल १९५१ से एक व्यापारी ने १५००० रुपये की पूँजी से व्यापार आरम्भ किया और उसके उस मास में निम्न लेन-देन हुये :—

				रु०
अप्रैल २	इमारत (Building) खरीदी	....	....	८,५००
३	सी से फर्नीचर (Furniture) उधार खरीदा	....	....	१२५
५	नकद माल खरीदा	....	....	२,५००
७	डी को माल (Goods) बेचा	....	....	१,३५०
८	ई से माल खरीदा	....	....	९७५
	एफ से माल खरीदा	..	....	१,०२५
१०	नकद बिक्री	....	...	१,८४०
१२	डी से रोकड़ा (Cash) प्राप्त हुये	....	....	१,३३५
	डी को बट्टा (Discount) दिया	....	....	१५
	ई को माल वापिस किया	....	....	६५
१३	जी को माल बेचा	....	....	१,२००
१५	ई को चुकाये	....	....	९००
	बट्टा प्राप्त किया	...	....	५
१७	एच से माल खरीदा	....	....	९५०
	उस पर भाड़ा (Carriage) दिया	....	....	२५
१८	जे को माल बेचा	....	....	१,६७०
२०	के से माल खरीदा ८०० रु० का १२½% बट्टे पर	...	....	
२२	एच को उसके हिसाब के चुकाये	....	....	२००
२४	दान (Charity) नकद दिया—	....	...	
	रोकड़ा	....	....	१०१
	माल	....	....	५१
२६	[illegible] व्यापारिक खर्चे (Trade expenses) चुकाये	....	....	८५
२७	[illegible] रोकड़ा प्राप्त हुये	...	...	[illegible],०००
२८	[illegible]	....	.	[illegible]००
२९	[illegible]	...	....	[illegible]२०
	[illegible]	...	...	५
[illegible]	[illegible]	....	..	[illegible]५०

[illegible]

[illegible]

जर्नल

पृष्ठ (३)

			रु.	आ.	पा.	रु.	आ.	पा.
१९५१								
अप्रैल १	रोकड़ खाता	१०	१५,०००	—	—			
	पूँजी खाता	११				१५,०००	—	—
	पूँजी लगाई							
२	इमारत खाता	१२	८,५००	—	—			
	रोकड़ खाता	१०				८,५००	—	—
	इमारत रोकड़ा खरीदी							
३	फर्नीचर खाता	१३	१२५	—	—			
	सी	१४				१२५	—	—
	सी से फर्नीचर उधार खरीदा							
५	क्रय खाता	१५	२,५००	—	—			
	रोकड़ खाता	१०				२,५००	—	—
	माल नकद खरीदा							
७	डी	१६	१,३५०	—	—			
	विक्रय खाता	१७				१,३५०	—	—
	डी को उधार माल बेचा							
८	क्रय खाता	१५	२,०००	—	—			
	ई	१८				९७५	—	—
	एफ	१९				१,०२५	—	—
	ई और एफ से उधार माल खरीदा							
१०	रोकड़ खाता	१०	१,८४०	—	—			
	विक्रय खाता	१७				१,८४०	—	—
	नकद माल बेचा							
१२	रोकड़ खाता	१०	१,३३५	—	—			
	बट्टा खाता	२०	१५	—	—			
	डी	१६				१,३५०	—	—
	डी से रोकड़ा आये और बट्टा दिया							
	ई	१८	६५	—	—			
	क्रय वापिसी खाता	२१				६५	—	—
	ई को माल लौटाया							
१५	जी	२२	१,२००	—	—			
	विक्रय खाता	१७				१,२००	—	—
	जी को उधार माल बेचा							
	आगे ले गये		३३,९३०	—	—	३३,९३०	—	—

पृष्ठ (५)

	नीचे लाये		३६,७१७	—	—	३६,७१७	—	—
२६	सी	१४	१२५	—	—			
	रोकड़ खाता	१०				१२०	—	—
	बट्टा खाता	२०				५	—	—
	रोकड़ा दिये और बट्टा प्राप्त किया							
३०	वेतन खाता	३०	४५०	—	—			
	पूँजी खाता	११	२००	—	—			
	रोकड़ खाता	१०				६५०	—	—
	नकद वेतन दिया व व्यापारी ने निकाला							
	योग		४०,४६२	—	—	४०,४६२	—	—

टिप्पणी :—खा० पृ० संख्याये अगले अध्याय से सम्बन्धित है।

मिश्रित जर्नल लेखे (Compound Journal Entries) :—जब दो या अधिक लेन-देन एक ही तरह के एक ही तारीख को हो जाते है तो उनका जर्नल मे बजाय दो या तीन अलग अलग लेखे करने के एक ही लेखा कर लिया जाता है। ऊपर के जर्नल मे आठ, बारह, पन्द्रह व पच्चीस तारीख के लेखे मिश्रित लेखे है। इस तरह के मिश्रित लेखो मे (अ) एक खाते के नाम लिखे जाकर बहुत से खातो के जमा किये जा सकते है या (ब) बहुत से खातो के नाम लिख कर एक खाते मे जमा किये जा सकते हैं या (स) बहुत से खातो के नाम लिख कर बहुत से खातो मे जमा किये जा सकते है। अलग अलग पदो (items) के भिन्न-भिन्न रुपये हो सकते है परन्तु तमाम नाम का जोड़ जमा के जोड़ के बराबर होना चाहिये।

नकद छूट (Cash Discounts) :—जब रुपया निश्चित तारीख से पहले आ जाता है तो नकद छूट देनी पड़ती है। यह व्यापार का नुकसान समझी जाती है और बट्टे या छूट खाते के नाम लिख कर श्री रोकड़ मे जमा की जाती है, और जब रुपया निश्चित तारीख से पहले अदा कर दिया जाता है तब नकद छूट मिलती है यह व्यापार का नफा समझी जाती है और श्री रोकड़ के नाम लिख कर नकद छूट के नाम जमा की जाती है।

दिया गया माल (Goods Given Away) :—कभी-कभी माल या तो दान में दे दिया जाता है या स्वामी अपने निजी काम मे ले लेता है। इस तरह का माल विक्रय (Sales) नहीं है। इसलिये वह विक्रय (Sales Account) खाते मे जमा नहीं किया जा सकता, परन्तु क्रय खाते (Purchases Account) मे जमा किया जाता है ताकि खरीदे हुए माल की तादाद कम हो जावे।

आहरण (Drawings) :—जो रोकड़ी रुपया या माल व्यापारी अपने व्यक्तिगत काम के लिये लेता है वह आहरण कहलाता है और पूँजी खाते के नाम लिखा जाता है या एक अलग आहरण खाता इसके लिये खोल लिया जाता है। आहरण खाता भी पूँजी खाते की भाँति एक व्यापारी का व्यक्तिगत खाता है।

विविध व्यापार खर्चे (Sundry Trade Expenses) :—व्यापार के तमाम छोटे छोटे खर्चे इस खाते मे सम्मिलित किये जाते हैं।

उदाहरण ३

१ जनवरी १९४१ को मूलचन्द ने ४५,००० रुपये रोकड़ा (Cash) और ५००० रु० के माल (Goods) से व्यापार प्रारम्भ किया तथा उसके जनवरी मास के लेन-देन निम्न थे :—

				रु० आ. पा.
जनवरी	२	व्यापार के लिये एक मोटर गाड़ी (Motor lorry) खरीदी	....	५,६००– ०–०
		रामप्रसाद एण्ड ब्रदर्स को माल बेचा	... ..	३,०४५– ०–०
	३	हीरालाल ताराचन्द से माल खरीदा	.... .	३,५४५–१२–०
		हिसाब की पुस्तकें व स्टेशनरी खरीदी (नकद)	....	३५– ६–०
		रतन ब्रदर्स को माल बेचा	....	२,७५०– ८–०
		मोहनलाल एण्ड कम्पनी को माल बेचा	... ...	६१७– ८–०
	४	शर्मा ट्रेडिंग कम्पनी से माल खरीदा	....	१,५५१– ७–६
	५	रामप्रसाद एण्ड ब्रदर्स को माल बेचा	....	१,३११– ६–०
		हाजीनूर इलाही कं० से माल खरीदा	.... ..	२,५६७– ३–०
		ढुलाई व चुंगी (Carriage and octroi) चुकाई	... ..	८१–१०–०
	६	रतन ब्रदर्स से उनके हिसाब में पाये	.... .	१,५००– ०–०
	८	हाजी नूर इलाही एण्ड क० को माल वापिस किया	. ...	१५७– ४–०
	९	हीरालाल ताराचन्द को चुकाये	....	२,०००– ०–०
	१०	रामप्रसाद एण्ड ब्रदर्स से प्राप्त हुआ	....	३,०३५– ०–०
		और बट्टा दिया	....	१०– ०–०
	११	शर्मा ट्रेडिंग क० से माल खरीदा	....	८७५– ५–६
	१२	हाजी नूर इलाही एण्ड क० को दिये	....	१,६००– ०–०
		कार्यालय के लिये एक टंकन (Typewriter) खरीदा	....	४१५– ०–०
	१३	रामप्रसाद एण्ड ब्रदर्स को माल बेचा	....	७१५–१३–०
	१४	शर्मा ट्रेडिंग कम्पनी को चुकाये	....	२,४१५– ०–०
		और बट्टा (Discount) मिला	....	११–११–३
	१७	रामप्रसाद एण्ड ब्रदर्स ने माल वापिस किया	....	११०– ४–०
	१८	हीरालाल ताराचन्द से माल खरीदा	....	२,३०१– ६–०
		रतन ब्रदर्स को माल बेचा	....	८१६– १–३
	२०	विविध खर्चे (Miscellaneous Expenses) चुकाये	....	४५–१०–०
		नकद फर्नीचर (Furniture) खरीदा	....	८१– ०–०
	२१	मोहनलाल एण्ड क० को माल बेचा	.... ..	१,८७५–१४–६
	२२	मोहनलाल एण्ड क० से [illegible] प्राप्त हुए	....	२,१००– ०–०
	२३	नकद बिक्री (Cash sales)	....	१,५१०–१२–०
	२४	[illegible] से माल वापिस किया	....	७५– ०–०
	२५	[illegible] (Weighing machine) खरीदी	..	६५– ०–०
		[illegible] नकद खरीदी	... ...	११०– ०–०
	२७	[illegible]	... .	२३७– ८–०
	२८	[illegible]	....	१५,०००– ०–०
	३०	[illegible]	... ..	[illegible]
		[illegible]	..	३००– ०–०
		[illegible]	....	[illegible]– ८–०

ड्राइवर की मजदूरी (Wages) चुकाई	... .	३५– ०–०
कार्यालय का वेतन (Salary) दिया	... .	४१२– ०–०
किराये के चुकाये	...	१००– ०–०
उपर्युक्त लेन-देनों को जर्नल में लिखिये।	....	

सुमेरचन्द का जर्नल

१९५१			रु०	आ	पा.	रु०	आ.	पा.
जनवरी १	रोकड़ खाता		२५,०००	–	–			
	स्टॉक खाता		५,०००	–	–			
	पूँजी खाता					३०,०००	–	–
	रोकड़ व माल पूँजी रूप में आये							
२	मोटर गाड़ी खाता		५,६००	–	–			
	रोकड़ खाता					५,६००	–	–
	नकद मोटर गाड़ी खरीदी							
	रामप्रसाद एण्ड ब्रदर्स		३,०४५	–	–			
	विक्रय खाता					३,०४५	–	–
	उधार माल बेचा							
३	क्रय खाता		३,५४५	१२	–			
	हीरालाल ताराचन्द					३,५४५	१२	–
	माल उधार खरीदा							
	स्टेशनरी खाता		३५	६	–			
	रोकड़ खाता					३५	६	–
	स्टेशनरी नकद खरीदी							
	रतन ब्रदर्स		२,७५०	८	–			
	मोहनलाल एण्ड कं०		९१६	८	–			
	विक्रय खाता					३,६६८	–	–
	उधार माल बेचा							
४	क्रय खाता		१,५५१	७	६			
	शर्मा ट्रेडिंग क०					१,५५१	७	६
	माल उधार खरीदा							
५	रामप्रसाद एण्ड ब्रदर्स		१,३१२	६	–			
	विक्रय खाता					१,३१२	६	–
	माल उधार बेचा							
	क्रय खाता		२,५६७	३	–	२,५६७	३	–
	हाजी नूर इलाही एण्ड कं०							
	माल उधार खरीदा							
	आगे ले गये		५१,३२५	५	६	५१,३२५	५	६

तिथि	विवरण	नाम रु०	आ०	पा०	जमा रु०	आ०	पा०
	नीचे लाये	५१,३२५	५	६	५१,३२५	५	६
	भाड़ा व चुंगी खाता	८५	१०	–			
	गोकड़ खाता				८५	१०	–
	भाड़ा व चुंगी चुकाई						
६	गोकड़ खाता	१,५००	–	–			
	रतन ब्रदर्स				१,५००	–	–
	रतन ब्रदर्स से गोकड़ा आये						
८	हाजी नूर इलाही एण्ड क०	१५७	४	–			
	क्रय वापिसी खाता				१५७	४	–
	खरीदा माल वापिस किया						
९	हीरालाल ताराचन्द	२,०००	–	–			
	गोकड़ खाता				२,०००	–	–
	गोकड़ा चुकाये						
१०	गोकड़ खाता	३,०३५	–	–			
	बट्टा खाता	१०	–	–			
	रामप्रसाद एण्ड ब्रदर्स				३,०४५	–	–
	गोकड़ा प्राप्त किया और बट्टा दिया						
११	क्रय खाता	८७५	५	६			
	शर्मा ट्रेडिंग कं०				८७५	५	६
	उधार माल खरीदा						
१२	हाजी नूर इलाही एण्ड क०	१,६००	–	–			
	गोकड़ खाता				१,६००	–	–
	गोकड़ा चुकाये						
	फर्नीचर खाता	४१५	–	–			
	गोकड़ खाता				४१५	–	–
	[illegible] खरीदा						
१३	रामप्रसाद एण्ड ब्रदर्स	७१५	१३	–			
	विक्रय खाता				७१५	१३	–
	माल उधार दिया						
[illegible]	[illegible]	२,४२६	१३	३			
	[illegible]				२,४१५	–	–
	[illegible]				११	१३	३
	[illegible]						
[illegible]	[illegible]	११०	४	–			
	[illegible]				११०	४	–
	[illegible]						
	[illegible]	[illegible]	७	६	६४,२५६	७	६

	नीचे लाये	६३,३४७	१	६	६३,३४७	६	१
	क्रय खाता हीरालाल ताराचन्द उधार माल खरीदा	२,३०१	६		२,३०१	६	–
	रतन ब्रदर्स विक्रय खाता उधार माल बेचा	८१६	१	३	८१६	१	३
२०	विविध व्यापार खर्च खाता रोकड़ खाता व्यापार खर्च नकद चुकाये	४५	१०	–	४५	१०	–
	फर्नीचर खाता रोकड़ खाता नकद फर्नीचर खरीदा	८१	–	–	८१	–	–
२१	मोहनलाल एण्ड क० विक्रय खाता माल उधार बेचा	१,८७५	१४	६	१८७५	१४	६
२२	रोकड़ खाता मोहनलाल एण्ड क० रोकड़ा प्राप्त किये	२,१००	–	–	२,१००	–	–
२३	रोकड़ खाता विक्रय खाता माल नकद बेचा	१,५१०	११	–	१५१०	११	–
२४	विक्रय वापसी खाता मोहनलाल एण्ड क० बिका माल वापिस आया	७५	–	–	७५	–	–
२५	कार्यालय यन्त्र खाता रोकड़ खाता तोलने का यन्त्र व तिजोरी नकद खरीदी	१८५	–	–	१८५	–	–
२७	क्रय खाता रोकड़ खाता नकद माल खरीदा	२३७	८	–	२३७	८	–
२८	क्रय खाता इ[illegible] एण्ड ब्रदर्स उधार माल खरीदा	१५००	–	–	१५,००	–	–
	आगे ले गये	७४,६८३	१०	३	७४,६८३	१०	३

	विवरण		रु०	आ०	पा०	रु०	आ०	पा०
	नीचे लाये		७४,६८७	१०	३	७४,६८७	१०	३
३०	मुकर्जी एण्ड कम्पनी		६२०	७	६			
	रायजादा एण्ड सन्स		३००	–	–			
	विक्रय खाता					१,२२०	७	६
	उधार माल बेचा							
३१	मोटर खर्च खाता		२८०	८	–			
	कार्यालय वेतन खाता		४१२	–	–			
	किराया खाता		१००	–	–			
	रोकड़ खाता					७९२	८	–
	विविध खर्चे नकद चुकाये							
	योग		७७,०००	६	६	७७,०००	६	६

प्रश्न

१. 'दोहरा लेख बही खाता पद्धति में प्रत्येक लेन देन का दुहरा लेखा होता है' इस कथन को समझाओ।

२. जर्नल क्या है और यह किस प्रकार दुहरा लेख पद्धति को प्रमाणित करता है।

३. विभिन्न प्रकार के खातों को जर्नल में लिखने के नियम समझाइये।

४. निम्न खाते किस प्रकार के हैं ?—
पूँजी खाता, मोटरगाड़ी खाता, वेतन खाता, कमीशन खाता, क्रय खाता, विक्रय वापिसी खाता।

५. निम्न मदों को समझाइये—
वर्णन, आगे ले जाया गया, मिश्रित जर्नल लेखे, नकद बट्टा।

६. निम्न लेन-देनों को जर्नल में लिखो—

		रु० आ० पा०
मार्च १	व्यापार प्रारम्भ किया—रोकड़ (Cash)	४,००० ०–०
	माल (Goods)	२,५००– ०–०
३	भगवतीप्रसाद एण्ड सन्स से माल खरीदा	३,२७१– ४–०
६	[illegible] को माल बेचा	१,२६३– २–०
६	भगवती प्रसाद एण्ड सन्स को माल वापिस किया	३२२– ०–०
१२	नकद बिक्री	३७२– ८–०
१४	[illegible] को माल बेचा	१३६– ०–०
१५	भगवती प्रसाद एण्ड सन्स को हिसाब में चुकाये	१,५००– ०–०
१८	[illegible] से प्राप्त हुये	१,२८५– ०–०
	और बट्टा दिया	८– २–०
२०	[illegible] का किराया दिया	२५– ०–०
[illegible]	[illegible] को बेचा	१,४३१– ६–०
[illegible]	[illegible] से प्राप्त हुये	७५– ०–०
[illegible]	[illegible]	७५१– २–६
[illegible]	[illegible]	४५– ८–०

		रु० आ०पा०
२६	बाबूलाल को माल बेचा	१३५— ०—०
३१	वेतन चुकाया	१२०— ०—०

७. निम्न का जर्नल में लेखा करो—

१ अप्रैल १९५१ को रामप्रसाद एण्ड कं० ने २,५०० रु० रोकड़ा से व्यापार प्रारम्भ किया और उनके अप्रैल मास के लेन-देन निम्न है—

		रु० आ०पा०
अप्रैल १	नकद माल खरीदा	५००— ०—०
	चीप फर्नीचर स्टोर से फर्नीचर (Furniture) उधार खरीदा	५०— ०—०
२	रतन ब्रदर्स को माल बेचा	१४५—१२—०
३	बन्सीलाल एण्ड कं० को उधार बेचा	११७— ८—०
	ढुलाई जो बंसीलाल एण्ड कं० से लेनी है	७— ८—०
५	फरीद आलम से माल खरीदा	६४१— ५—०
७	नकद खरीद (क्रय)	४५०— ०—०
६	फरीद आलम को खराब माल होने से वापिस लौटाया	३७— ०—०
१२	रतन ब्रादर्स से रोकड़ा आये	१४०— ०—०
	बट्टा	५—१२—०
	उन्हें माल बेचा	३५०— ०—०
२०	नकद बिक्री	२१७—११—६
२२	ऋषि एण्ड कं० को माल बेचा	१८७—१४—०
२५	फरीद आलम को दिये	१००— ०—०
२६	रतन ब्रदर्स ने माल वापिस किया	२५— ०—०
२६	बन्सीलाल एण्ड कं० से प्राप्त हुए	५०— ०—०
३०	मार का किराया दिया	३०— ०—०

अध्याय—३

श्रेणी-विभाजन—खाता-बही

जब एक दिये हुए समय के व्यापार के लेन-देनो का लेखा जर्नल मे कर लिया जाता है तब इसके बाद इनका श्रेणी-विभाजन किया जाता है। यह श्रेणी-विभाजन खाता-बही मे लिखा जाता है। खाता-बही मे व्यापारी के सारे व्यक्तिगत, वास्तविक और अवास्तविक खाते रखे जाते हैं। एक खाते के लिए खाता-बही मे एक पन्ना छोड़ा जाता है। पन्नो (Folios) पर नम्बर लगे रहते है और इनकी सूची खाता-बही के शुरू मे होती है। खाता-बही के खाने नीचे दिये जाते है :—

नाम | जमा

तिथि	विवरण	ज० पृ०	धन राशि			तिथि	विवरण	ज० पृ०	धन राशि		
			रु.	आ	पा.				रु०	आ.	पा.

खाता-बही के खाने नकल-बही से बिल्कुल भिन्न होते है। खाता-बही के खाते को दो भागो मे विभाजित कर लिया जाता है। बाये हाथ वाले को नाम का हिस्सा (Debit Side) और दाहिने हाथ वाले को जमा का हिस्सा (Credit Side) कहते हैं। नाम की तरफ 'नाम' (Dr.) और जमा की तरफ 'जमा' (Cr.) लिखा जाता है। दोनो तरफ तारीख, विवरण, जर्नल के पन्ने का नम्बर व रुपये लिखने के लिए अलग-अलग खाने होते हैं। नाम की तरफ "To" और जमा की तरफ "By" हर एक लेखे के पहले लिखा जाता है। (हिन्दी मे बहीखाता करते समय इनका हिन्दी अनुवाद 'को' या 'से' प्रयोग करना अनावश्यक जान पड़ता है) यद्यपि जर्नल के हर एक लेखे के बाद मे वर्णन (Narration) दिया जाता है। परन्तु खाता-बही मे इसकी आवश्यकता नहीं है।

खाता खताना (Postings) —जर्नल से खाता-बही मे नाम और जमा की रकमें लिखने को खाता खताना (Posting) कहते हैं। एक खाते की जितनी भी लेन-देन की प्रविष्टियाँ होती हैं वे सब उस खाते में सम्मिलित करली जाती हैं।

पृष्ठाङ्कना (Folioing) —जब हम जर्नल से खाता-बही में खाते खताते हैं तब जर्नल में [illegible] खाता-बही में जर्नल का पन्ना नम्बर लिख देते हैं। इसे ही पृष्ठाङ्कना (Folioing) [illegible] होता है :—

[illegible] खाते खताते हैं तो हमें इससे यह मालूम होता है कि हमने कहाँ तक खाते खता [illegible] पर खाता-बही का पन्ना नम्बर नहीं लिखा रहता है वहीं से हमें शुरू [illegible]

२. यह जर्नल और खातावही की सूची का और उनसे आपस मे मिलाने का काम करता है।

उदाहरण ४

उदाहरण २ की जर्नल प्रविष्टियों को खाते में खताइये।

रोकड़ खाता

१९५१			रु०	आ	पा.	१९५१			रु.	आ	पा.
अप्रैल १	पूँजी खाता	३	१५,०००	—	—	अप्रैल २	इमारत खाता	३	८,५००	—	—
१०	विक्रय खाता	३	१,८४०	—	—	५	क्रय खाता	३	२,५००	—	—
१२	डी	३	१,३३५	—	—	१५	ई	३	६००	—	—
२७	जे	४	१,०००	—	—	१७	भाड़ा खाता	४	२५	—	—
						२२	एच	४	२००	—	—
						२५	दान खाता	४	१०१	—	—
						२६	विविध खर्च खाता	४	८५	—	—
						२६	सी	४	१२०	—	—
						३०	वेतन खाता	४	४५०	—	—
							पूँजी खाता	४	२००	—	—

पूँजी खाता

१९५१			रु०	आ.	पा	१९५१			रु.	आ.	पा.
अप्रैल ३०	रोकड़ खाता	१	२००	—		अप्रैल १	रोकड़ खाता	३	१५,०००	—	

इमारत खाता (पृष्ठ १२)

१९५१			रु०	आ	पा.					आ.	पा.
अप्रैल २	रोकड़ खाता	३	८,५००	—	—						

फर्नीचर खाता (पृष्ठ १३)

१९५१			रु.	आ.	पा					आ.	पा.
अप्रैल ३	सी	३	१२५	—	—						

सी (पृष्ठ १४)

१९५१			रु.	आ.	पा	१९५१			रु.	आ.	पा.
अप्रैल २६	रोकड़ खाता	४	१२०	—	—	अप्रैल ३	फर्नीचर खाता	३	१२५	—	—
	बट्टा खाता	४	५	—	—						

क्रय खाता (पृष्ठ १५)

१९५१			रु०	आ.	पा.	१९५१			रु.	आ.	पा.
अप्रैल ५	रोकड़ खाता	३	२,५००	—	—	अप्रैल २५	दान खाता	४	५१	—	
८	ई	३	६२५	—	—						
	एफ	३	१,०६५	—	—						
१७	[illegible]	३	६५०	—	—						
२०	ई	४	[illegible]	—	—						

डी
(पृष्ठ १६)

			रु.	आ.	पा.				रु.	आ.	पा.
१९५१						१९५१					
अप्रैल ७	विक्रय खाता	३	१,३५०	—	—	अप्रैल १०	रोकड़ खाता	३	१,३३५	—	—
							बट्टा खाता	३	१५	—	—

विक्रय खाता
(पृष्ठ १७)

			रु.	आ.	पा.				रु.	आ.	पा.
						१९५१					
						अप्रैल ७	डी	३	१,३५०	—	—
						१०	रोकड़ खाता	३	१,८४०	—	—
						१३	जी	३	१,२००	—	—
						१८	जे	४	१,६७०	—	—

ई
(पृष्ठ १८)

			रु.	आ.	पा.				रु.	आ.	पा.
१९५१						१९५१					
अप्रैल १२	क्रय वापसी खाता	३	६५	—	—	अप्रैल ८	क्रय खाता	३	६७५	—	—
१५	रोकड़ खाता	३	६००	—							
	बट्टा खाता	३	५	—	—						

एफ
(पृष्ठ १९)

			रु.	आ.	पा.				रु.	आ.	पा.
						१९५१					
						अप्रैल ८	क्रय खाता	३	१,०२५	—	

बट्टा खाता
(पृष्ठ २०)

			रु.	आ.	पा.				रु.	आ.	पा.
१९५१						१९५१					
अप्रैल १२	डी	३	१५	—	—	अप्रैल १५	ई	३	५	—	८
						२६	सी	४	५	—	—

क्रय वापसी खाता
(पृष्ठ २१)

			रु.	आ.	पा.				रु.	आ.	पा.
						१९५१					
						अप्रैल १२	ई	३	६५	—	

जी

			रु.	आ.	पा.				रु.	आ.	पा.
१९५१						१९५१					
अप्रैल १३	विक्रय खाता	३	१,२००	—		अप्रैल २८	विक्रय वापसी खाता	४	१००	—	—

[illegible]
(पृष्ठ २३)

			रु.	आ.	पा.				रु.	आ.	पा.
[illegible]						१९५१					
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	—	—	अप्रैल २७	[illegible] खाता	३	६५०	—	—

[illegible] खाता
(पृष्ठ [illegible])

			रु.	आ.	पा.				रु.	आ.	पा.
[illegible]											
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	—							

जे

(पृष्ठ २५)

			रु.	आ	पा.				रु.	आ.	पा.
१६५१						१६५१					
अप्रैल १८	विक्रय खाता	४	१,६७०	–	–	अप्रैल २७	रोकड़ खाता	४	१,०००	–	–

के

(पृष्ठ २६)

			रु.	आ	पा				रु	आ.	पा.
						१६५१					
						अप्रैल २०	क्रय खाता	४	७००	–	–

दानखाता

(पृष्ठ २७)

			रु.	आ.	पा				रु.	आ.	पा.
१६५१											
अप्रैल २५	रोकड़ खाता	४	१०१	–	–						
	क्रय खाता		५१	–	–						

विविध व्यापार खर्च खाता

(पृष्ठ २८)

			रु	आ	पा.				रु.	आ.	पा.
१६५१											
अप्रैल २६	रोकड़ खाता	४	८५	–							

विक्रय वापसी खाता

(पृष्ठ २९)

			रु.	आ	पा.				रु.	आ	पा.
१६५१											
अप्रैल २८	जी	४	१००	–	–						

वेतन खाता

(पृष्ठ ३०)

			रु.	आ.	पा.				रु.	आ	पा.
१६५१											
अप्रैल ३०	रोकड़ खाता	४	४५०	–	–						

उदाहरण ५

उदाहरण ३ की जर्नल प्रविष्टियों को खताओ—

रोकड़ खाता

		रु.	आ	पा			रु.	आ	पा.
१६५१					१६५१				
जनवरी १	पूँजीखाता	२५,०००	–	–	जनवरी २	मोटर गाड़ी खाता	५,६००	–	–
६	राम ब्रादर्स	१,५००	–	–	३	कार्यालय स्टेशनरी खाता	३५	६	–
१०	रामप्रसाद एण्ड ब्रादर्स	३,०३५	–	–	५	भाड़ा व कुली खाता	८५	१०	–
२६	मोहनलाल एण्ड क०	२,१००	–	–	६	हीरालाल तारचन्द	२,०००	–	–
३१	विक्रय खाता	३,५१०,११		–	१२	[illegible] एण्ड कं०	१,६००	–	–
						कार्यालय [illegible] खाता	४१५	–	–
					१४	शर्मा ट्रेडिंग कं०	२,४१५	–	–
					२०	विविध व्यापार खर्चखाता	८४	१०	–
						फर्नीचर खाता	८१	–	–
					२५	कार्यालय [illegible] खाता	१८५	–	–
					२६	[illegible]	३३७	८	–
					३१	मोटर खर्च खाता	२८०	८	–
						कार्यालय वेतन खाता	४१२	–	–
						किराया खाता	१००	–	–

रहतिया खाता

		रु.	आ	पा					पा.
१९५१									
जनवरी १	पूँजी खाता	५,०००	–	–					

पूँजी खाता

							रु.	आ	पा.
					१९५१				
					जनवरी १	रोकड खाता	२५,०००	–	–
						रहतिया-खाता	५,०००	–	–

मोटर गाड़ी खाता

		रु.	आ.	पा.			रु.	आ	पा.
१९५१									
जनवरी २	रोकड़ खाता	६,६००	–	–					

रामप्रसाद एण्ड ब्रादर्स

		रु	आ.	पा			रु.	आ.	पा
१९५१					१९५१				
जनवरी २	विक्रय खाता	३,०४५	–	–	जनवरी १०	रोकड़ खाता	३,०३५	–	–
५	विक्रय खाता	१,३१२	६	–		बट्टा खाता	१०	–	–
१३	विक्रय खाता	७१५	१३	–	१७	विक्रय वापसी खाता	११०	४	–

विक्रय खाता

							रु०	आ.	पा.
					१९५१				
					जनवरी २	रामप्रसाद एण्ड ब्रादर्स	३,०४५	–	–
					३	रतन ब्रादर्स	२,७५०	८	–
						मोहनलाल एण्ड कं०	६१७	८	–
					५	रामप्रसाद एण्ड ब्रादर्स	१,३१२	६	–
					१३	रामप्रसाद एण्ड ब्रादर्स	७१५	१३	–
					१८	रतन ब्रादर्स	८१६	१	३
					२१	मोहनलाल एण्ड कं०	१,८७५	१४	६
					२३	रोकड़ खाता	१,५१०	११	–
					३०	मुकर्जी एण्ड क०	६२०	७	६
						रायजादा एण्ड सन्स	३००	–	–

क्रय खाता

		रु०	आ.	पा					
१९५१									
जनवरी ३	मोहनलाल ताराचन्द	३,५४५	२	–					
४	मुकर्जी ट्रेडिंग कं०	१,५५[illegible]	७	६					
७	[illegible]	२,५६०	३	–					
११	मुकर्जी ट्रेडिंग कं०	८७१	५	[illegible]					
१८	मोहनलाल ताराचन्द	२,३०[illegible]	६	–					
२३	रोकड़ खाता	[illegible]	८	–					
२८	[illegible]	[illegible],५००	–	–					

हीरालाल ताराचन्द

१९५१		रु०	आ.	पा.	१९५१		रु०	आ.	पा.
जनवरी ६	रोकड़ खाता	२,०००	–	–	जनवरी ३	क्रय खाता	३,५४५	१२	–
					१८	क्रय खाता	२,३०१	६	–

कार्यालय स्टेशनरी खाता

१९५१		रु०	आ.	पा.					
जनवरी ३	रोकड़ खाता	३५	६	–					

रतन आर्डर्स

१९५१		रु०	आ.	पा.	१९५१		रु०	आ.	पा.
जनवरी ३	विक्रय खाता	२७५०	८	–	जनवरी ६	रोकड खाता	१५००	–	–
१८	विक्रय खाता	८१६	१	३					

मोहनलाल एण्ड कं०

१९५१		रु०	आ.	पा.	१९५१		रु०	आ.	पा.
जनवरी ३	विक्रय खाता	६१७	८	–	जन. २२	रोकड़ खाता	२,१००	–	–
२१	विक्रय खाता	१८७५	१४	६	२४	विक्रय वापसी खाता	७५	–	–

शर्मा ट्रेडिंग कं०

१९५१		रु०	आ.	पा.	१९५१		रु०	आ.	पा.
जन. १४	रोकड़ खाता	२,४१५	–	–	जन. ४	क्रय खाता	१५५१	७	६
	बट्टा खाता	११	१३	[illegible]	११	क्रय खाता	८७५	५	६

हाजी नूर इलाही एण्ड कं०

१९५१		रु०	आ.	पा.	१९५१		रु०	आ.	पा.
जन. ८	क्रय वापसी खाता	१५८	४	–	जन. ३	क्रय खाता	२५६७	३	–
१२	रोकड़ खाता	१६००	–	–					

भाड़ा व चुंगी खाता

१९५१		रु०	आ.	पा.					
जन. ४	रोकड़ खाता	८५	१०	–					

क्रय वापसी खाता

					१९५१		रु०	आ.	पा.
					जन. ८	हाजी नूर इलाही एण्ड कं०	१५८	४	–

बट्टा-खाता

		रु०	आ.	पा.			रु०	आ.	पा.
१९५१					१९५१				
जन. १०	रामप्रसाद एण्ड ब्रादर्स	१०	–	–	जन १४	शर्मा ट्रेडिंग कं०	११	१३	३

कार्यालय साज सज्जा खाता

		रु०	आ.	पा.					
१९५१									
जन. १२	रोकड़ खाता	४१५	–	–					
२५	रोकड़ खाता	१८५	–	–					

विक्रय वापसी खाता

		रु०	आ.	पा.					
१९५१									
जन. १७	रामप्रसाद एण्ड ब्रादर्स	११०	४	–					
२४	मोहनलाल एण्ड कं०	७५	–	–					

विविध व्यापार खर्च खाता

		रु०	आ	पा.					
१९५१									
जन. २०	रोकड़ खाता	४५	१०	–					

फर्नीचर खाता

		रु०	आ	पा					
१९५१									
जन. २०	रोकड़ खाता	८१	–	–					

ईवन्स व फ्रेजर

							रु०	आ.	पा
					१९५१				
					जन. २८	क्रय खाता	१५००	–	–

मुकर्जी एण्ड कं०

		रु०	आ	पा.					
१९५१									
जन. ३०	विक्रय खाता	६२०	७	६					

रायजादा एण्ड सन्स

		रु०	आ.	पा.					
१९५१									
जन. ३०	विक्रय खाता	३००	–	–					

मोटर खर्च खाता

		रु०	आ	पा					
१९५१									
जन. ३१	[illegible]	[illegible]	८	–					

४	नकद खरीद (क्रय)	....	....	५१०– ०–०
५	मोदी एण्ड कं० को माल लौटाया	....	....	१७५– ०–०
७	बगेरिया कॉटन मिल्स को भुगतान किया	...	...	२,०००– ०–०
८	माल बेचा—ख्वाजा एण्ड कं०	....	....	१,५६५– ०–०
	गनेशीलाल	....	....	१,०८०–१२–०
	हरविलास	....	....	२,४५०– ०–०
१०	ताराचन्द एण्ड सन्स से प्राप्त हुये	...	...	१,०००– ०–०
१३	मोदी एण्ड कं० को भुगतान किया	....	...	३,५२५– ०–०
	बट्टा	..	....	६२– ८–०
१४	गुना ट्रेडिंग कं० ने भुगतान किया	..	..	६६०– ०–०
	बट्टा		..	१५– ०–०
	सक्रान्ति के दिन कपडा भिखारी को दान में दिया	.	..	५१– ०–०
१५	गनेशीलाल ने माल वापिस किया	.		५०– ०–०
१६	गुना ट्रेडिंग कं० को माल बेचा	....	.	२,१६४– ८–०
१७	ख्वाजा एण्ड कं० से प्राप्त हुये			८००– ०–०
२२	स्वदेशी वस्त्र-भंडार को माल बेचा	.	.	२,७८५–१२–०
२६	स्वदेशी वस्त्र भण्डार से प्राप्त हुये		....	१,५००– ०–०
३१	मास की नकद बिक्री	.	....	७,५२४–१३–६
	वेतन चुकाया	....	....	३५०– ०–०
	निजी खर्चे	...	....	२१५– ०–०

उत्तर—तलपट का योग रुपये ७८,१०३–११–२

अध्याय—४

सारांश—अन्तिम खाते

(Summary—Final Accounts)

जब एक निश्चित समय के व्यवहार जर्नल में लिख लिये जाते हैं, और जर्नल से खाता वही में, तलपट बनाकर जब उनकी Arithmetic Accuracy परख ली जाती है तो इसके उपरान्त इनका सारांश (Summary) बनाया जाता है।

इस सारांश में माल खाता (व्यापार एवं लाभ-हानि खाता) और चिट्ठा सम्मिलित किये जाते हैं।

व्यापार एवं लाभ-हानि खाता (Trading and Profit & Loss Account)

व्यापार के बहुत से अवास्तविक खाते (जैसे—खर्च खाते, नुकसान और लाभ खाते) खाता वही में रहते हैं परन्तु जब तक इन सबको एकत्रित न किया जावे और इनका सार न निकाला जावे तब तक व्यापार का परिणाम क्या हुआ इसका पता नहीं लग सकता। व्यापार की वास्तविक स्थिति मालूम करने के लिये "हानि-लाभ" खाता तैयार किया जाता है। यह खाता दो हिस्सों में विभाजित किया जाता है। पहले हिस्से को व्यापार खाता (Trading Account) और दूसरे हिस्से को लाभ-हानि खाता (Profit & Loss Account) कहते हैं। इस खाते से निम्नलिखित भिन्न-भिन्न शब्द सम्बन्धित हैं :—

प्रारम्भिक रहतिया (Opening Stock) :—यह वह माल है जो व्यापारी के पास साल के आरम्भ में गोदाम में रहता है।

अन्तिम रहतिया (Closing Stock) :—यह वह माल है जो व्यापारिक वर्ष के अन्त में बच जाता है।

शुद्ध खरीद (Net Purchases) :—यह उस तमाम क्रय की रकम है जो वापिस किये हुए माल के घटाने के बाद बच रहती है।

शुद्ध बिक्री (Net Sales) :—यह उस तमाम विक्रय की रकम है जो वापिस किये हुए माल के घटाने के बाद बचती है।

अवधि विक्रय (Turnover) :—यह नेट विक्रय किये माल के लिये काम में आता है।

प्रत्यक्ष खर्चे (Direct Expenses) :—माल के मूल्य के अतिरिक्त, माल मँगाने से शुद्ध प्रत्यक्ष खर्चे जैसे, रेल भाड़ा, गाड़ी किराया, दलाली, [illegible], [illegible], मजदूरी तथा माल तैयार करने के खर्चे भी लगते हैं। यह तमाम खर्चे जो माल को बेचने की हालत में करने के लिये लगते हैं उन्हें प्रत्यक्ष खर्चे कहते हैं।

अप्रत्यक्ष खर्चे (Indirect Expenses) :—ये सारे खर्चे जो प्रत्यक्ष खर्चे (Direct

expenses) नहीं होते है उन्हे अप्रत्यक्ष खर्चे (Indirect expenses) कहते हैं। ये खर्चे माल के विक्रय और वितरण करने मे तथा व्यापार का संचालन करने मे लगते है।

विक्रय माल की लागत (Cost of Goods Sold or Cost of Sales) :—यह वह रकम है जो शुरू के माल, नैट क्रय और प्रत्यक्ष खर्चों के कुल जोड़ मे से अन्त का माल (closing stock) कम कर देने से बचती है। उदाहरण के लिये निम्नलिखित हिसाब को ले, जो सन् १९५० से सम्बन्धित है:—

	रु०
प्रारम्भिक रहतिया (पहली जनवरी १९५०)	१२,५००
क्रय	७५,२००
क्रय वापसी	२,५००
प्रत्यक्ष खर्चे	८,७५०
अन्तिम रहतिया (३१ दिसम्बर १९५०)	१४,७००

वर्ष के दौरान में बेचे गये माल की कीमत इस प्रकार निकलेगी—

		रु०
प्रारम्भिक रहतिया (पहली जनवरी १९५०)		१२,५००
क्रय	रु० ७५,२००	
क्रय वापिसी	२,५००	
	७२,७००	७२,७००
प्रत्यक्ष खर्चे		८,७५०
		९३,९५०
अन्तिम रहतिया (३१ दिसम्बर १९५०) —		१४,७००
वर्ष के दौरान में बिके हुए माल की कीमत		७९,२५०

कुल आय (Gross Income) :—यह रकम उस तमाम विक्रय और अन्य आय से बनी हुई है जिसमें मे अभी किसी तरह का खर्च कम नहीं किया गया है।

कच्चा मुनाफा (Gross Profit) :—जब कुल बेचे हुए माल की आय इस पर कुल लगे हुए लागत से अधिक होती है तो इस अधिकता (excess) को कच्चा मुनाफा कहते हैं।

पक्का मुनाफा (Net Profit) :—जब कच्चे मुनाफे की रकम तमाम अप्रत्यक्ष खर्चों (indirect expenses) से अधिक होती है तो इस आधिक्य (Excess) को पक्का मुनाफा कहते हैं।

पक्की हानि (Net loss) :—यह नुकसान या तो कच्चे मुनाफे से अप्रत्यक्ष खर्चों की अधिकता है या (जबकि कोई कच्चा मुनाफा नहीं है) यह कच्ची हानि (gross loss) और तमाम अप्रत्यक्ष खर्चों (indirect expenses) का योग है।

रहतिया निकालना (Stock taking) :—व्यापार का मुनाफा या नुकसान मालूम करने से पहले यह मालूम करना परम आवश्यक है कि जो माल अभी तक नहीं बेचा गया है उसका क्या मूल्य है। इस न बिके हुए माल का मूल्य निकालना ही रहतिया निकालना (stock taking) है। इस न बिके हुए माल की एक फेहरिस्त तैयार की जाती है और इस माल का मूल्य या तो लागत पर (cost price) या बाजार भाव से (market price) जो इन दोनों में कम हो उसके आधार पर निर्धारित किया जाता है। इस रहतिये का मूल्य निश्चित करते समय सम्भावित नुकसान को ध्यान में रखा जाता है, परन्तु लाभ पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। यह बहुत आवश्यक है कि रहतिये का मूल्य ठीक लगाया जाये नहीं तो [illegible] हिसाब गलत हो सकता है।

साल के अन्त के रहतिये का कुल मूल्य माल खाते में जमा किया जाता है और रहतिया खाते के नाम लिखा जाता है। अन्तिम रहतिया उस माल से बनता है जो चालू साल में नहीं बेचा जा सका

है और दूसरी साल बेचा जावेगा। यह स्टॉक दूसरी साल का प्रारम्भिक रहतिया (Opening Stock) रहेगा।

माल खाता (Trading Account) :—यह खाता सकल मुनाफा या नुकसान (Gross Profit or Loss) मालूम करने के लिये बनाया जाता है। इसके नाम की साइड में शुरू का स्टॉक, शुद्ध क्रय और सारे प्रत्यक्ष खर्चे (Direct expenses) और जमा की साइड में शुद्ध विक्रय और अन्त का स्टॉक लिखा जाता है। इन दोनों साइडों का अन्तर सकल मुनाफा या नुकसान होता है।

यदि जमा की साइड नाम की साइड से अधिक होती है तो सकल मुनाफा होता है और यदि नाम की साइड जमा की साइड से भारी होती है तो सकल नुकसान (Gross loss) रहता है। सकल नफा या नुकसान हानि-लाभ खाते की जमा या नाम की साइड में ले जाया जाता है।

हानि-लाभ खाता (Profit & Loss Account) : यह खाता शुद्ध मुनाफा या नुकसान मालूम करने के लिये तैयार किया जाता है। इसमें व्यापार खाते में लाया हुआ सकल मुनाफा या नुकसान होता है और व अवास्तविक खाते (Nominal Account जोकि व्यापार खाते में भेजे (transfer) नहीं किये गये हैं, रखे जाते हैं। खर्चे नाम की तरफ और लाभ की रकमें जमा की तरफ रखी जाती हैं। दोनों साइड का अन्तर या तो शुद्ध मुनाफा या शुद्ध नुकसान होता है। यदि जमा की साइड नाम की साइड से अधिक है तो शुद्ध मुनाफा है और यदि नाम की साइड जमा की साइड से अधिक है तो शुद्ध नुकसान है। शुद्ध मुनाफा स्वामी के पूंजी खाते में जमा कर दिया जाता है और यदि शुद्ध नुकसान है तो उसके पूंजी खाते के नाम लिख दिया जाता है। क्योंकि हानि-लाभ के लिये व्यापार का स्वामी ही जिम्मेदार होता है।

उदाहरण ६

उदाहरण ५ की खाता बहियों के अनुसार अवास्तविक खातों को बन्द करो और जनवरी १९५१ का माल व हानि-लाभ खाता तैयार करो। इस कार्य के लिये यह मान लो कि ३१ जनवरी १९५१ को रहतिया [illegible] था।

खाता बही

क्रय खाता

१९५१		रु०	आ०	पा०	१९५१		रु०	आ०	पा०
जनवरी १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	—	जन० ३१	माल खाता	१२,५३८	१०	४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]					
४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	—					
११	[illegible]	[illegible]	५	[illegible]					
२८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	—					
[illegible]	[illegible]	[illegible]	८						
[illegible]	[illegible]	[illegible]	—	—					
		[illegible]		[illegible]			[illegible]	[illegible]	[illegible]

रहतिया खाता

१९५१		रु०	आ.	पा.	१९५१		रु०	आ	पा
जनवरी १	पूँजी खाता	५,०००	–	–	जन ३१	माल खाता	५,०००	–	–
फरवरी १	माल खाता	६,५००	–	–					

विक्रय खाता

१९५१		रु०	आ	पा.	१९५१		रु०	आ.	पा.
जन ३१	माल खाता	१४,१६७	५	३	जनवरी २	रामप्रसाद एण्ड ब्रादर्स	३,०४५	–	–
					३	रतन ब्रादर्स	२,७५०	८	–
						मोहनलाल एण्ड क०	६१७	८	–
					५	रामप्रसाद एण्ड ब्रादर्स	१,३१२	६	–
					१३	रामप्रसाद एण्ड ब्रादर्स	७१५	१३	–
					१८	रतन ब्रादर्स	८१६	१	३
					२१	मोहनलाल एण्ड क०	१,८७५	१४	६
					२३	रोकड़ खाता	१,५१०	११	–
					३०	मुकर्जी एण्ड क०	६२०	७	६
						रायजादा एण्ड सन्स	३००	–	–
		१४,१६७	५	३			१४,१६७	५	३

कार्यालय स्टेशनरी खाता

१९५१		रु०	आ	पा	१९५१		रु०	आ.	पा.
जनवरी ३	रोकड़ खाता	३५	६	–	जन० ३१	हानि-लाभ खाता	३५	६	–

भाड़ा व चुंगी खाता

१९५१		रु०	आ.	पा	१९५१		रु०	आ	पा
जनवरी ५	रोकड़ खाता	८५	१०	–	जन० ३१	माल खाता	८५	१०	–

क्रय वापसी खाता

१९५१		रु०	आ	पा	१९५१		रु०	आ.	पा.
जन० ३१	माल खाता	१५७	४	–	जनवरी ८	हाजी नूर इलाही क०	१५७	४	–

बट्टा खाता

१९५१		रु०	आ.	पा	१९५१		रु०	आ.	पा.
जन० १८	रामप्रसाद एण्ड ब्रा०	१०	–	–	जन० ३१	शर्मा ट्रेडिंग क०	११	१३	३
३१	हानि-लाभ खाता	१	१३	३					
		११	१३	३			११	१३	३

विक्रय वापिसी खाता

१९५१		रु०	आ.	पा	१९५१		रु०	आ	पा.
जन० [illegible]	[illegible] एण्ड ब्रा०	१६०	४	–	जन० ३१	माल खाता	१८१	४	–
[illegible]	[illegible] एण्ड क०	२१	–						
		१८१	४	–			१८१	४	–

विविध व्यापार खर्च खाता

१९५१	रु०	आ	पा.	१९५१	रु०	आ	पा
जन० ३१ रोकड़ खाता	४५	१०	—	जन० ३१ हानि-लाभ खाता	४५	१०	—

मोटर खर्च खाता

१९५१	रु०	आ.	पा	१९५१	रु०	आ	पा
जन० ३१ रोकड़ खाता	२८०	८	—	जन० ३१ हानि-लाभ खाता	२८०	८	—

कार्यालय वेतन खाता

१९५१	रु०	आ.	पा	१९५१	रु०	आ.	पा
जन० ३१ रोकड़ खाता	४१२	—	—	जन० ३१ हानि-लाभ खाता	४१२	—	—

किराया खाता

१९५१	रु०	आ	पा.	१९५१	रु०	आ	पा.
जन० ३१ रोकड़ खाता	१००	—	—	जन० ३१ हानि-लाभ खाता	१००	—	—

माल तथा लाभ-हानि खाता ३१ जनवरी १९५१ के लिये

	रु०	आ.	पा		रु०	आ.	पा.
रहतिया १-१-५१ को	५,०००	—	—	विक्रय	१४,१६७	५	३
क्रय	१२,५५८	१०	३	क्रय वापसी	१५७	४	—
विक्रय वापसी	१८५	४	—	रहतिया ३१-१-५१ को	६,५००	—	—
भाड़ा व चुंगी	८५	१०	—				
सकल लाभ	२,६७५	१	—				
	२०,८२४	६	३		२०,८२४	६	३
कार्यालय रोशनी	१५	६	—	सकल लाभ	२,६७५	१	—
विविध व्यापार खर्च	४५	१०	—	बट्टा	१	१३	३
मोटर खर्च	२८०	८	—				
कार्यालय वेतन	४१२	—	—				
किराया	१००	—	—				
शुद्ध लाभ पूंजी खाते में स्थानान्तरित किया गया	[illegible]	३	३				
	[illegible]	१४	३		२,६७६	१४	३

[illegible] :—

	रु०	आ	पा		रु०	आ.	पा
[illegible]				[illegible]	१३,६८२	[illegible]	[illegible]
[illegible]	५,०००	—	—				
[illegible]	[illegible]	६	३				
[illegible]	८३	१०	—				
	[illegible]	—	३				

	रु०	आ०	पा०		रु०	आ०	पा०
घटाओ-रहतिया ३१-१-५१ को	६,५००	—	—				
	११,००७	—	३				
सकल लाभ	२९७५	१	—				
	१३,९८२	१	३		१३,९८२	१	३

आय-व्यय खाते बन्द करना (Closing of Nominal Accounts).—खाता वही के तमाम अवास्तविक खाते, जैसे . प्रारम्भिक रहतिया (opening stock) खाता, क्रय खाता, खर्च खाता, आदि व्यापार एवं लाभ-हानि खाते (Trading and Profit & Loss Account) मे भेज दिये जाते है।

चिट्ठा (Balance Sheet)

जब खाता वही के सब हानि-लाभ खाते बन्द कर दिये जाते है, और जब व्यापार एवं लाभ-हानि खाता तैयार कर लिया जाता है और उसका परिणाम पूँजी खाते से ट्रान्सफर कर दिया जाता है तो हमे अपना ध्यान चिट्ठे (Balance Sheet) पर डालना चाहिए। चिट्ठा बनाने के लिए सारे वास्तविक और व्यक्तिगत खातो का समतुलन (balance) कर लेना अत्यन्त आवश्यक होता है।

खातो का समतुलन (Balancing of Accounts) :—हर एक वास्तविक और व्यक्तिगत खाते की दोनो साइडो के अन्तर को मालूम करना ही समतुलन कहलाता है। इस अन्तर को शेष (balance) कहते हैं।

यदि किसी खाते की नाम की साइड जमा की साइड से अधिक है तो शेष नाम की तरफ ही रहता है और इसे नाम शेष (debit balance) कहते हैं। परन्तु यदि जमा की साइड नाम की साइड से अधिक है तो शेष जमा की तरफ रहता है और इसे जमा शेष (credit balance) कहते हैं। यदि किसी खाते की दोनो साइड बराबर है तो उस खाते मे कोई शेष ही नहीं है और वह खाता बराबर हुआ कहलाता है।

जब वास्तविक और व्यक्तिगत खातों का अन्तर मालूम कर लिया जाता है, तो जिस साइड का जोड़ कम है उस तरफ "शेष आ/ले" ('To Balance c/d' या "By Balance c/d") लिखकर दोनो साइडो का जोड़ बराबर कर दिया जाता है। दोनो तरफ का जोड़ एक ही लाइन मे रखा जाता है। जब किसी खाते मे दोनो तरफ एक-एक ही कलम हो तो जोड देने की कोई आवश्यकता नही है। उनके नीचे ही दो लाइने खीच दी जाती हैं।

जब खाते की दोनों साइडो का योग लगा दिया जाय और खाता बन्द कर दिया जाय तो शेष की रकम को दूसरी साइड मे "शेष उ/ले ("To Balance b/d" या "By Balance b/d") लिख कर लगाया जाता है। उ/ला (b/d) या आ/ले (c/d) के संक्षिप्त शब्द इस बात के द्योतक हैं कि शेष लाया गया है या आगे ले जाया गया है।

चिट्ठा (Balance Sheet) :—बैलेन्स-शीट, जैसा इसके नाम से प्रतीत होता है खाता वही के [illegible] वास्तविक और व्यक्तिगत खातो के शेषों की एक सूची (statement) है। यह व्यापार की [illegible] मालूम करने के उद्देश्य से तैयार किया जाता है। यह साल के अन्त मे 'आखिरी तारीख के [illegible]

[illegible] है। यह सिर्फ पूँजी, [illegible] है। वास्तविक [illegible] सम्पत्ति ([illegible]) [illegible] और [illegible] आग [illegible]

मुकर्जी एण्ड के०

१९५१		रु.	आ	पा	१९५१		रु	आ.	पा
जन० ३०	विक्रय खाता	६२०	७	६	जन० ३१	शेष आ०/ले०	६२०	७	६
१९५१									
फरवरी १	शेष उ०/ला०	६२०	७	६					

रायजादा एण्ड सन्स

१९५१		रु	आ	पा	१९५१		रु	आ	पा.
जन० ३०	विक्रय खाता	३००	–	–	जन० ३१	शेष आ०/ले०	३००	–	–
१९५१									
फरवरी १	शेष उ०/ला०	३००	–	–					

रहतिया खाता

१९५१		रु.	आ	पा.	१९५१		रु.	आ.	पा.
जन० ३१	माल खाता	६५००	–	–	जन० ३१	शेष आ०/ले०	६,५००	–	–
१९५१									
फरवरी १	शेष उ०/ला०	६५००	–	–					

चिट्ठा
३१ जनवरी १९५१ को

दायित्व	रु.	आ.	पा.	सम्पत्ति	रु.	आ.	पा.
लेनदार	६,१५७	१	–	नकदी	१६,६५२	१४	–
पूँजी	३२,१०३	३	३	देनदार	५,८२६	६	३
				रहतिया	९,५००	–	–
				मोटर गाड़ी	५,६००	–	–
				कार्यालय यन्त्र	६००	–	–
				फर्नीचर	८१	–	–
	३८,२६०	४	३		३८,२६०	४	३

बहियाँ बन्द करना (Closing of Books) —जब साल के अन्त में सम्पूर्ण खाते तैयार हो जाते हैं तो उस समय तक की बहियाँ बन्द कर दी जाती हैं। साधारणत: खाते सालाना बन्द कर दिये जाते हैं। कुछ लोग तो ३१ दिसम्बर को और कुछ ३१ मार्च को खाते बन्द करते हैं परन्तु भारतीय व्यापारी दशहरे पर, या दिवाली पर, या नये सम्वत साल पर बन्द करते हैं।

आरम्भिक प्रविष्टियाँ (Opening Entries) —जब साल के अन्त में खाते बन्द कर दिये जाते हैं तो बहियाँ भी बदली जाती हैं। नई बहियाँ दूसरे साल के लिये काम में ली जाती हैं।

जब बहियाँ बदली जाती हैं, तो यह आवश्यक होता है कि वास्तविक और व्यक्तिगत खातों के शेष (Balances) जो सम्पत्ति (Assets) और ऋण (liabilities) के रूप में पुरानी बैलेंस शीट में हैं नई बहियों में दूसरे साल के शुरू में ले जाये जायें। यह कार्य जर्नल के द्वारा किया जाता है और [illegible] ([illegible]) के आरम्भिक प्रविष्टियाँ (Opening entries) करते हैं।

उपर्युक्त चिट्ठे का जर्नल में जमा खर्च इस प्रकार किया जावेगा :—

१९५१		रु.	आ	पा.	रु.	आ.	पा.
फरवरी १	रोकड़ खाता	१६,६५२	१४	–			
	रामप्रसाद एण्ड ब्रादर्स	१,६१७	१५	–			
	रतन ब्रादर्स	२,०६६	६	३			
	मोहनलाल एण्ड को०	६१८	६	६			
	मुकर्जी एण्ड को०	६२०	७	६			
	शाहजादा एण्ड सन्स	३००	–	–			
	रहतिया खाता	६,५००	–	–			
	मोटर गाड़ी खाता	५,६००	–	–			
	कार्यालय साज सज्जा खाता	६००	–	–			
	फर्नीचर खाता	८१	–	–			
	हीरालाल ताराचन्द				३,८४७	२	–
	हाजी नूर इलाही एण्ड को०				८०६	१५	–
	ईस्ट व फ्रेजर				१,५००	–	–
	पूँजी खाता				३२,१०२	३	३
		३८,२६०	४	३	३८२६०	४	३

सारांश (Summary) :—पूर्ण दोहरा लेखा बहीखाता पद्धति (Double entry Book-keeping) की जो भिन्न-भिन्न विशेषतायें हैं वे अब यहाँ पर दी जाती हैं :—

१ सर्वप्रथम व्यापार के तमाम लेन-देन जर्नल में लिख लेने चाहिए।

२ तब उनको एक निश्चित समय के बाद (जैसे हर एक महीने के बाद) जर्नल से खाता बही में खतौनी देना चाहिये और एक तलपट (Trial balance) बनाकर खाता बही का मिलान कर लेना चाहिए।

३. साल के अन्त में—(अ) सब अवास्तविक खातों को व्यापार एवं लाभ-हानि खाता (Trading and Profit & Loss Account) में ट्रान्सफर (transfer) करके बन्द कर देना चाहिए, (ब) समस्त वास्तविक और व्यक्तिगत खातों का समतुलन करके, उनके शेषों से चिट्ठा तैयार करना चाहिए।

इस तरह बहियों में सब लेन-देनों का, जो कि एक विशेष समय में हुए हैं, क्रम-बद्ध स्थायी रिकार्ड रहेगा और इससे व्यापार के परिणाम (हानि-लाभ) का तथा उसकी आर्थिक स्थिति का पता लग जावेगा। यही पूर्ण दोहरा लेखा बहीखाता पद्धति (Double entry Book-keeping) है।

प्रश्न

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

५—माल तथा लाभ-हानि खाते के बन जाने के पश्चात कौन से खाते खाता वही में खुले रहते हैं।

६—चिट्ठा क्या है ? यह कैसे बनाया जाता है और इसमें दिखलाये गये शेषों का क्या होता है।

७—वहीखाते की दुहरी लेखा पद्धति में तीन मुख्य विभागों का वर्णन करो।

८—१ जनवरी १९५० को मिरजा एण्ड कम्पनी ने व्यापार प्रारम्भ किया। ३१ दिसम्बर १९५० को उनकी किताबों के निम्न शेषों के द्वारा १९५० वर्ष का माल तथा लाभ-हानि खाता व ३१ दिसम्बर १९५० का चिट्ठा तैयार करो।

	रु०		रु०
क्रय	२१,७५०	मरम्मत	१०५
बट्टा	१,३००	विविध खर्चे	७००
मजदूरी	६,५००	ब्याज (नाम)	१५०
विक्रय	३०,०००	भवन	६,०००
आवागमन खर्च	५००	फर्नीचर	२००
वेतन	२,०००	देनदार	३,२५०
क्रय पर भाड़ा	२७५	लेनदार	२,१००
कमीशन	३२५	पूँजी	१३,७०५
नकदी	२,७५०		

रहतिया ३१ दिसम्बर १९५० को ६०७५) मूल्यांकन किया गया।

उत्तर.—स० ला० रु० ७५५०, शुद्ध ला० रु० २४७०; चिट्ठा योग रु० १८२७५

९—एक व्यापारी के निम्न शेषों से ३१ दिसम्बर १९५० को माल तथा हानि-लाभ खाता व उसी तिथि का चिट्ठा तैयार करो। ३१ दिसम्बर १९५० को रहतिये का मूल्य ५००) था।

	रु०		रु०
आहरण	४००	विक्रय वापसी	३०
वेतन	१५०	देनदार	५६०
मजदूरी	३५०	रहतिया १-१-५०	४५०
किराया	५०	नकदी बैंक में	५६०
फर्नीचर व फिटिंग	१००	नकदी हाथ	७०
कर तथा टैक्स	३०	पूँजी	१,०८०
बट्टा दिया	५०	क्रय वापसी	२०
क्रय	२,३००	विक्रय	३,५००
		लेनदार	४००

उत्तर —स० ला० रु० ८६०, शुद्ध ला० रु० ६१०; चिट्ठा योग रु० १७६०

अध्याय—५

बैंक-सम्बन्धी व्यवहार

अब तक हमने यह मान लिया है कि व्यापार का रोकड़ी व्यापार (Cash Transactions) ...कड़ी रुपये और नोटों में होता है। परन्तु प्रतिदिन के बहुत से रोकड़ी लेन-देन का कार्य बैंकों और ...कों की सहायता से होता है, इसलिए यह समझना परम आवश्यक है कि बैंक-सम्बन्धी व्यवहारों का ...खा हमारी बहियों में कैसे किया जाता है। परन्तु इससे पहले हमें बैंकों और चैकों के सम्बन्ध में भी ...छ ज्ञान लेना चाहिए।

बैंक एक संस्था है जिसका कार्य रुपये का खरीदना और बेचना या रुपये से व्यापार करना है। ...से, दूकानदार चीज़ों का क्रय-विक्रय करता है वैसे ही बैंक भी रुपये के प्रयोग का क्रय-विक्रय करते हैं। ...क वाले सस्ते ब्याज पर रुपया जनता से लेते हैं और अधिक ब्याज पर देते हैं। यही इनका प्रमुख व्यापार ... और इससे वे मुनाफा प्राप्त करते हैं। परन्तु आजकल के बैंकों का काम केवल रुपया जमा करना ... उधार देना ही नहीं है, इसके अतिरिक्त वे और भी बहुत से अर्थ-सम्बन्धी कार्य करते हैं और व्यापारी-...माज की कई तरह से सेवा करते हैं। परन्तु अब भी भारतवर्ष के सभी व्यापारी उनसे पूरा फायदा नहीं ...ा रहे हैं।

भिन्न-भिन्न प्रकार के बैंक खाते

बैंक में कई प्रकार के खाते खोले जा सकते हैं। उनका संक्षिप्त विवरण यहाँ दिया जाता है।

१. मियादी खाता (Fixed Deposit Account) :—इस खाते में रुपया एक निश्चित ...मय के लिए जमा कराया जाता है और निश्चित समय के समाप्त होने पर या उससे एक निश्चित समय ...हले सूचना देकर इसे वापिस लिया जा सकता है।

इस खाते पर ब्याज, इसमें जमा की गई रकम, जमा की अवधि और बैंक की स्थिति पर निर्भर ...हता है। रुपया जमा कराने पर मियादी जमा की एक रसीद मिलती है जो हस्तान्तर नहीं की जा ...कती। रुपया निकालते समय यह रसीद बैंक को वापिस दे देनी चाहिए।

२. बचत खाता (Saving Bank Account) :—यह खाता उन लोगों की सुविधा के ...ए है जो थोड़ी-थोड़ी रकम समय-समय पर जमा कराना चाहते हैं। यह खाता [illegible]

३. घरेलू बचत खाता (Home Savings Account) :—यह नवीन ढंग कुछ बैंकों द्वारा अपने ग्राहकों में मितव्ययता को प्रोत्साहन देने के लिये अपनाया गया है। जब यह खाता खोला जाता है, तो बैंक ग्राहक को एक लोहे का सन्दूक (iron safe) देता है। ग्राहक इसी सन्दूक में रुपया समय-समय पर रखता रहता है। यह सन्दूक एक निश्चित समय के बाद बैंक में ले जाया जाता है, और इसमें खोलने पर जो भी रकम निकलती है वह ग्राहक के नाम से जमा करली जाती है। इस खाते पर मामूली ब्याज दिया जाता है। इस खाते वाले को एक पास बुक भी मिलती है। तमाम जमा और निकाली हुई रकम इसमें लिखी जाती हैं। इस खाते से भी चालू खाते की तरह रकम चैक के द्वारा निकाली जाती है।

चालू खाता (Current Account) :—इस खाते की विशेषता यह है कि इसमें कितनी ही बार रुपया जमा कराया जा सकता है और कितनी ही बार निकाला जा सकता है। अच्छे बैंक चालू खाते पर ब्याज नहीं देते। परन्तु कुछ बैंक तो उन ग्राहकों से, जिनके चालू खातों में एक निश्चित रुपये से कम रुपया रह जाता है, कुछ चार्ज कर लेते हैं। इम्पीरियल बैंक में कम से कम ५००) रुपये चालू खाते में जमा रखने पड़ते हैं, यदि इस रकम से कभी कम जमा रहता है तो ग्राहक को छ महीने का ५) चार्ज देना पड़ता है।

जो पुरुष बैंक में चालू खाता खोलने की इच्छा रखता है, उसका परिचय बैंक के एक पुराने ग्राहक द्वारा कराया जाना चाहिए। बैंक एक अपरिचित पुरुष को अपना ग्राहक नहीं बनाता। साथ ही खाता खोलने वाले को अपने नमूने के बतौर हस्ताक्षर (Specimen Signatures) भी देने पड़ते हैं। भविष्य में ग्राहक के हस्ताक्षर को इन नमूने के हस्ताक्षरों से मिलाकर ही रुपया दिया जाता है। खाता खुलने पर बैंक ग्राहक को तीन किताबें देता है, एक रुपया जमा करने वाली किताब (Pay-in-Slip Book), दूसरी पास बुक (Pass Book) और तीसरी चैक बुक (Cheque Book).

पास बुक (Pass Book) :—यह एक किताब है जो बैंक उस ग्राहक को देता है जो बचत खाता, घरेलू बचत खाता या चालू खाता खोलता है इसमें बैंक में जमा की हुई या बैंक से निकाली हुई सब रकम लिखी जाती हैं। पास बुक को समय-समय पर बैंक से हिसाब उतरवाने के लिये भेजना चाहिए और उसके वापिस आने पर इसे पूर्ण सावधानी से देख लेना चाहिए ताकि कोई गलती न रहने पाये। इस पुस्तक को पास बुक (Pass Book) इसलिए कहते हैं कि यह बैंक और ग्राहक के बीच में अधिकतर 'पास' (आदान-प्रदान) होती रहती है।

वास्तव में पास बुक में बैंक के खाते की ग्राहक के हिसाब की एक नकल होती है। बैंक की खाता बही के खाने साधारण व्यापारी की खाता बही के सदृश नहीं होते। इसमें खाने इस तरह से बनाये जाते हैं कि हर एक खाते का बैलेन्स (Balance) हर एक व्यवहार (transaction) के बाद फौरन जाना जा सकता है। बैंक की खाताबही और पास बुक की लाइनें (Ruling) निम्न प्रकार होती हैं :—

No . . . ..

IN CURRENT ACCOUNT with . . . BANK Ltd

Date	Particulars	Deposit	Withdrawals	Dr. or Cr	Balance
		Rs. a p	Rs. a p		Rs. a p

[illegible] (Pay-in-Slip Book) :—इसमें [illegible] हुई जमा करने की स्लिप होती है। जब [illegible] भेजी जाती है। जब रुपया जमा [illegible] लेता है और उसका पिछला हिस्सा

(CounterFoil) बैंक का रोकड़िया अपने हस्ताक्षर करके ग्राहक के पास भेज देता है। जब कभी बैंक और ग्राहक में झगड़ा हो जाता है तो यह स्लिप बड़ी काम आती है।

चैक बुक (Cheque Book) :—इस किताब में २५ से १०० तक खाली चैक होते हैं जो एक विशेष ढंग से छपे रहते हैं। चालू खाते से रुपया इन चैकों द्वारा ही निकाला जा सकता है। चैक बुक बैंक मुफ्त में देता है। नई चैक बुक के लिये अर्जी उस छपे हुए कागज पर देनी चाहिए जो चैक बुक के अन्त में लगा रहता है।

चैक (Cheque) :—एक बिना शर्त का लिखित आदेश है, जो किसी विशेष बैंक पर लिखा जाता है, जिस पर लिखने वाले का हस्ताक्षर होता है, और जो बैंक को केवल रुपयों की एक निश्चित रकम किसी व्यक्ति को, या उसके निर्देशित व्यक्ति को, या रुक्के के रखने वाले (Bearer) को माँगने पर अदा करने की आज्ञा देता है। चैक पर टिकिट की आवश्यकता नहीं होती है। इसलिये चैक वह प्रमाणपत्र है जो इसमें लिखित रुपये को लेने का अधिकार देता है। आधुनिक व्यापार संसार में अधिकतर लेन-देन चैकों द्वारा ही किया जाता है :—

चैक का नमूना निम्न प्रकार का होता है :—

COUNTER FOIL	CHEQUE
No. AC63483	No. AC63483 Agra, 15th May 1951.
Dated 15th May 1951	**IMPERIAL BANK OF INDIA,**
In favour of	**AGRA.**
Mr. Ram Ratan Gupta	Pay to Mr. Ram Ratan Gupta or order
in full settlement of	Rupees two hundred annas ten and
his account.	pies six only.
Rs. 200-10-6.	Rs. 200-10-6.
R. S. Gupta.	Ram Saran Gupta

चैकों का बेचान (Endorsement of Cheques) :—जब किसी चैक पर उसे किसी अन्य व्यक्ति को देने के लिए हस्ताक्षर किये जाते हैं, तो उसे बेचान करना कहते हैं। जो व्यक्ति बेचान करता है उसे बेचान-लेखक (Endorser) कहते हैं और जिसके नाम बेचान किया जाता है उसे बेचान-पात्र (Endorsee) कहते हैं। बेचान लेखक को हस्ताक्षर में अपना नाम उसी भाँति लिखना चाहिए जैसे कि वह चैक पर लिखा गया है। नाम का अक्षर-विन्यास (spellings) वैसा ही होना चाहिए जैसा कि चैक पर है। यदि लेखक चाहे तो चैक पर लिखे गए अक्षर-विन्यास के अनुसार अपना नाम लिखने के पश्चात् अपने नाम का ठीक अक्षर विन्यास नीचे लिख सकता है।

बेचान पूर्ण या कोरा हो सकता है। जब बेचान-लेखक केवल अपना नाम लिखता है तब उसे कोरा या साधारण बेचान कहते हैं। इसमें बेचान पात्र का नाम नहीं लिखा जाता। इस बेचान का परिणाम यह होता है कि चैक धारोदेय (Bearer) बन जाता है। जब चैक पर बेचान लेखक अपने नाम के साथ ही साथ बेचान-पात्र (Endorsee) का भी नाम लिख देता है तो उसे विशेष या पूर्ण बेचान कहते हैं।

रेखांकित चैक (Crossed Cheque) :—रेखांकित चैक वह है जिस पर दो समानान्तर रेखाएँ खिंची रहती हैं। [illegible] रेखांकित कर सकता है। [illegible] चैक पर दो समानान्तर रेखाएँ खिंची होती हैं [illegible] किसी बैंक का नाम न लिखा हो तो उसे साधारण रेखांकित कहते हैं। [illegible]

चैक का रुपया प्राप्त करने के लिये उसे किसी बैंक के पास जमा करना पड़ेगा और यह बैंक देनदार बैंक से रुपया वसूल कर सकता है।

जब चैक पर दो समानान्तर तिरछी रेखाये खींचकर उनके साथ किसी विशेष बैंक का नाम लिख दिया जाता है तो ऐसे लेख को विशेष रेखांकन (Special Crossing) कहते हैं। इस विशेष रेखांकन का परिणाम यह होता है कि इस चैक का रुपया केवल उसी बैंक के द्वारा प्राप्त किया जा सकेगा, जिसका नाम रेखांकन मे लिखा हुआ है।

अविनिमय साध्य (Not Negotiable) —ये शब्द साधारण और विशेष रेखांकन दोनो के साथ लिखे जा सकते हैं। इनका प्रभाव यह होता है कि चैक पाने वाले व्यक्ति का चैक पर वैसा ही अधिकार (title) होगा जैसा कि चैक देने वाले का है, उससे अच्छा कभी नहीं हो सकेगा। यदि देने वाले का अधिकार दूषित (Bad) है, तो पाने वाले का अधिकार अपने आप दूषित होगा।

Account Payee only '—यह रुपया वसूल करने वाले बैंक को लिखित आदेश है कि वह रुपया वसूल करके केवल लेनदार के नाम ही जमा करे।

खुले चैक (Open Cheque) —जिस चैक पर रेखांकन (Crossing) नहीं हो वह खुला चैक कहलाता है। रेखांकन का उद्देश्य है कि चैक का रुपया वास्तविक अधिकारी को मिले। एक खुले चैक का रुपया देनदार बैंक; इसके खिड़की पर उपस्थित करने पर तुरन्त दे देता है। इसलिये यदि ऐसा चैक चुरा लिया जावे तो इसका भुगतान चोर को भी मिल सकता है। इसलिये जब कभी कोई चैक डाक द्वारा भेजा जावे तो उसे अवश्य रेखांकित कर देना चाहिये।

रेखांकन (Crossing) को चैक का लेखक (Drawer) अपने हस्ताक्षर कर और रेखाओं के बीच में (Pay Cash) लिखकर रद्द कर सकता है।

चैक उपस्थित करना (Presenting a cheque) '—चैक के धारक (Holder) को चाहे वह लेनदार (Payee) हो या बेचान-पात्र (Endorsee), उचित (reasonable) समय के अन्दर ही देनदार बैंक के पास भुगतान के लिये चैक उपस्थित करना चाहिये। यदि धारक उचित समय के अन्दर चैक न भुनाये और कहीं देनदार बैंक का दिवाला निकल जाय, तो वह बैंक के अनेको लेनदारो में से एक होगा और सम्भव है उसे अन्य लेनदारो के साथ, अपने रुपये का केवल एक भाग (composition) ही मिल सके। ऐसी दशा मे वह लेखक (Drawer) पर दावा करने के अधिकार से वंचित हो जाता है।

बैंक अपने ग्राहक का एजेंट (Agent) होता है, इसलिये यदि ग्राहक के खाते मे रुपये जमा हैं और चैक ठीक ढग से बनाया गया है, तो बैंक का यह परम कर्त्तव्य है कि वह उस चैक का भुगतान करे।

अप्रतिष्ठित चैक (Dishonoured Cheque) :—जब देनदार बैंक चैक का भुगतान नहीं करता है तो चैक अप्रतिष्ठित हुआ कहलाता है।

Cheques Received :—देनदार (Debtors) अपने हिसाब के भुगतान में अधिकतर चैक दिया करते हैं। यदि ऐसे सब चैक उसी दिन बैंक में जमा न करवाये जावें तो सैकड़ों रुपये के सदृश [illegible] रहते हैं; ऐसे चैकों को [illegible] (Collection) के लिए बैंक भेज देना चाहिये। जब बैंक देनदार बैंक से इन चैकों के रुपये [illegible] है तो वह हमारे नाम में यह रुपये जमा कर देती है। जब [illegible] मिलता है जो कि किसी अन्य शहर में स्थित है जहाँ पर हमारा [illegible] [illegible] Out station चैक बैंक [illegible] (exchange) [illegible] हैं। इस प्रकार से हमारे खाते

खाते में जितने का चैक होता है उससे कम रुपये जमा होते हैं, क्योंकि चैक के रुपयों में से Exchange के दाम कम हो जाते हैं।

कभी-कभी देनदारों से प्राप्त चैक अपने लेनदारों का ऋण चुकाने के लिये हम उन्हें दे देते हैं। परन्तु ऐसा बहुत कम होता है।

Cheques Paid :—जब हम किसी को रुपया देना चाहते हैं तो उसके नाम से एक चैक बना कर देते हैं। वह हमारे बैंक में इस चैक को देकर इसका भुगतान ले लेता है। बैंक यह रुपया हमारे चालू खाते में से दे देता है, इसलिए वह चैक का रुपया हमारे नाम लिख देता है।

Bank Charges (बैंक खर्च) :—बैंक जो खर्चा अपने ग्राहकों से अपनी सेवाओं के लिए वसूल करता है उसे बैंक Bank-Charge कहते हैं। इस खर्चे में Over-draft पर ब्याज, चैक, हुण्डी आदि पर विनिमय खर्च व अन्य कई तरह के फुटकर खर्च सम्मिलित किये जाते हैं।

Bank Loans and Overdrafts

कभी-कभी व्यापारी को अपने बढ़ते हुये व्यापार की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए तथा कोई विशेष व्यवहार करने के लिए, धन की बड़ी आवश्यकता होती है। इस धन की पूर्ति जब वह स्वयं नहीं कर सकता है तो उसे ऋण लेना पड़ता है। इसलिये वह अपने बैंक से रुपया उधार ले सकता है। यदि वह बैंक के पास कोई चीज रेहन रख सकेगा तो उसे वहाँ से रुपये मिलने में कठिनाई नहीं होगी। बैंक से ऋण लेने के दो तरीके हैं।

१. पहली पद्धति के अनुसार, जब बैंक कर्ज देता है तो वह ग्राहक के चालू खाते में यह निश्चित की हुई रकम जमा कर देता है और ग्राहक के कर्ज खाते के नाम लिख दी जाती है। व्यापारी यह रकम बैंक के नाम लिखता है और बैंक कर्ज खाते में जमा कर लेता है। ब्याज इस कर्ज की पूरी रकम पर लिया जाता है और ग्राहक के चालू खाते के नाम लिख दिया जाता है। व्यापारी अपनी बहियों में बैंक के खाते में जमा करके, ब्याज खाते के नाम लिख देता है।

२. दूसरी पद्धति के अनुसार, बैंक अपने ग्राहक को उसके चालू खाते में जितनी रकम उसके खाते में जमा है उससे अधिक निकालने की सुविधा देता है। यह Bank overdraft कहलाता है। इसकी विशेषता यह है कि इसमें से रुपया एक निश्चित रकम तक कितनी ही बार निकाला जा सकता है और ब्याज भी निश्चित रकम पर नहीं बल्कि निकाली हुई या उधार ली हुई रकम पर दिया जाता है। Bank overdraft के लिए व्यापारी की बहियों में कोई विशेष लेखा नहीं होता है परन्तु यह बैंक खाते में ही लिख लिया जाता है।

Bank Draft :—यह एक प्रकार का चैक है जो एक बैंक अपनी दूसरी शाखा पर या अन्य किसी बैंक पर [illegible] निश्चित धन (Money [illegible]) किसी व्यक्ति को जिसका नाम इस बैंक Draft में लिखा रहता है देने का [illegible] करता है। Bank Draft [illegible] व्यापारियों के लिये [illegible] बैंक [illegible] से दूसरी [illegible] रुपया भेजने में काफी सुविधा प्रदान करते हैं। Bank Draft में [illegible] Draft की रकम के [illegible] की [illegible] है।

[illegible]

[illegible] Bank Draft एक बैंक दूसरे बैंक पर

लिखता है, परन्तु यह हुण्डी एक फर्म दूसरी अपनी शाखा पर लिखती है। बहुत सी हिन्दुस्तानी व्यापारिक फर्म अपने साधारण व्यापार के साथ बैंकों का कार्य भी करती हैं। वे जनता का रुपया जमा करती हैं और हुण्डियों का क्रय-विक्रय करती हैं।

मान लीजिए; एक आगरा के निवासी को जिसका बैंक में कोई खाता नहीं है, १,०००) इन्दौर के लेनदार को भेजने हैं। वह स्थानीय बैंक से एक बैंक ड्राफ्ट खरीद कर भेज सकता है। परन्तु यदि वह ऐसा नहीं करना चाहता हो तो वह एक हुण्डी द्वारा भी यह रुपया भेज सकता है। वह किसी एक ऐसी व्यापारिक फर्म में जिसकी शाखा इन्दौर में हो एक हजार रुपये जमा कराके, इन्दौर की शाखा पर एक दर्शनी हुण्डी ले सकता है और इसे अपने लेनदार के पास भेज सकता है। हुण्डी के मिलने पर यह लेनदार इस आगरा फर्म की इन्दौर शाखा पर जावेगा और हुण्डी का भुगतान करवा लेगा।

दर्शनी हुण्डी को चिट्ठी भी कहते है। बहुत सी बार दर्शनी हुण्डी बैंक ड्राफ्ट से भी काफी सस्ती होती हैं; इसीलिए ये भारतीय व्यापारियों में इतनी अधिक प्रचलित हैं। हुण्डियाँ दलालों की मारफत खरीदी या बेची जाती है। वहीखातों मे हुण्डियों का लेखा बैंक ड्राफ्ट की तरह से ही किया जाता है।

Treasury orders

Treasury order यह साधारण रूप से एक सरकारी चैक होता है जिसके द्वारा एक सरकारी विभाग एक विशेष सरकारी खजाने को इसमें लिखित रुपया उस पुरुष को जिसका नाम इसमें दिया हुआ है देने का आदेश देता है। भिन्न-भिन्न सरकारी-विभाग Treasury order द्वारा ही रुपये चुकाते हैं। Treasury order के रुपये सीधे सरकारी खजाने से प्राप्त किये जा सकते है, या साधारण चैक की तरह, बैंक की मारफत भी इसका संग्रह करवाया जा सकता है।

Postal orders

ये भी चैकों की भाँति एक डाकघर से दूसरी डाकघर पर लिखे जाते हैं। डाकघरों में बीस तरह के Postal orders आठ आने से शुरू करके, आठ आने की बढ़ौतरी से दस रुपये तक के बेचे जाते हैं। हर एक ऑर्डर के लिए एक आना कमीशन लगता है। सात आने तक की फुटकर रकम के Postal order पर सिवाय दस रुपये वाले Postal order के भारतीय टिकट लगाये जा सकते है। परन्तु यह टिकटें दो से अधिक नहीं हो सकेंगी।

जब थोड़ी रकम भेजनी हो तो Postal orders बैंक ड्राफ्ट का काम करते हैं। यह बाहर पैसे भेजने का बहुत ही सस्ता और सरल उपाय है, विशेषकर उनके लिए जो बैंक में खाता नहीं रखते हैं। Postal order चैक की तरह रेखांकित भी किया जा सकता है। साधारण Postal order का रुपया तो डाक-घर से सीधा ही मिल जाता है परन्तु रेखांकित Postal order का रुपया बैंक के मारफत ही प्राप्त किया जा सकता है।

Bookkeeping for Banking Transactions

बैंक और ग्राहक का सम्बन्ध एक देनदार और लेनदार का होता है। बैंक बहुधा देनदार रहता है। इसलिए व्यापारी का जो व्यवहार बैंक के साथ होता है उसका हिसाब इस तरह से रखा जाता है :—

(अ) चालू खाता (Current Account)

१. जब बैंक के चालू खाते में रुपये जमा करवाये जाते हैं तो बैंक खाते के नाम लिखे जाते हैं और रोकड़ में जमा किये जाते हैं।

२. जब [illegible] बैंक से रुपये निकाले जाते हैं तो वे रोकड़ के नाम लिखने हैं और बैंक [illegible] है।

३. जब चैक किसी लेनदार को दिया जाता है तो लेनदार के व्यक्तिगत खाते के नाम लिखकर बैंक खाते से जमा किया जाता है।

४. जब किसी देनदार से चैक प्राप्त होता है परन्तु वह उसी दिन बैंक नहीं भेजा जाता तो श्री रोकड़ के नाम लिखकर उस देनदार के व्यक्तिगत खाते में जमा करना चाहिए, क्योंकि यह चैक श्री रोकड़ बाकी का एक हिस्सा होगा।

५. यदि देनदार से प्राप्त चैक उसी दिन बैंक में जमा करवा दिया जावे तो बैंक खाते के नाम लिखकर उस देनदार के व्यक्तिगत खाते में जमा होना चाहिए।

६. जब हमने कोई बाहरी (out-station) चैक बैंक में संग्रह के लिए भेजा हो और जब बैंक उसके संग्रह की सूचना हमें देता हो और लिखता हो कि इसके संग्रह पर यह खर्च लगा है तो हमें यह बैंक खर्च खाते (Bank Charges Account) नाम लिखकर बैंक खाते में जमा करना चाहिए, क्योंकि जब यह चैक बैंक में भेजा गया था हमने बैंक खाते के नाम इस चैक के पूरे रुपये लिखे थे परन्तु अब बैंक तो केवल नेट रकम ही ग्राहक के खाते में जमा करेगा।

७. जब देनदार से प्राप्त हुआ कोई चैक, जिसको बैंक में जमा करवा दिया गया है, अप्रतिष्ठित (Dishonour) हो जावे तो खर्च सहित रकम देनदार के व्यक्तिगत खाते नाम लिखकर बैंक खाते में जमा करना चाहिए।

८. जब बैंक अधिविकर्ष (Overdraft) पर ब्याज लगाता है तो उसे ब्याज खाते नाम लिखकर बैंक खाते में जमा करना चाहिए।

९. यदि बैंक ने अन्य खर्च लगाये हों तो बैंक खर्च खाते के नाम लिखकर बैंक खाते में जमा करना चाहिए।

(ब) स्थायी जमा खाता (Fixed Deposit Account)

१. जब स्थायी जमा खाता खोला जाता है तो स्थायी जमा खाते के नाम करते और, यदि रोकड़ी रुपया जमा करवाया है तो खाते में जमा करते हैं, परन्तु यदि बैंक में से दिया है तो बैंक खाते में जमा करते हैं।

२. स्थायी जमा खाते की अवधि समाप्त होने पर स्थायी खाते में जमा करें और, यदि रोकड़ वापस ले ली हो, तो श्री रोकड़ के नाम करें। यदि रोकड़ वापस न लेकर चालू खाते में जमा करा दी गई हो, तो बैंक खाते के नाम करना चाहिए।

(स) बैंक से कर्ज (Bank Loan)

यदि बैंक से कर्ज रोकड़ी रुपये में लिया गया हो तो श्री रोकड़ के नाम लिख कर बैंक कर्ज-खाते (Bank Loan Account) के जमा किये जाते हैं, परन्तु यदि इस कर्ज की रकम चालू खाते में जमा की गई हो तो बैंक खाते के नाम लिखकर बैंक कर्ज खाते के जमा किये जाते हैं।

२. यदि बैंक से कर्ज (Loan) पर ब्याज लिया जाता है तो ब्याज खाते के नाम लिख कर बैंक खाते में जमा किया जाता है।

(द) [illegible]

१. [illegible] खाते नाम लिखा जाता है [illegible] के नाम लिखकर [illegible] खाते में जमा किये जाते हैं।

२. [illegible] के लिए [illegible] खाते [illegible] के नाम लिखा जाता है [illegible] जमा किया जाता है।

[illegible]

उदाहरण ८

एक व्यापारी के निम्न लेनदेनों को उसके जर्नल में लिखिये—

१९५१		रु. आ.पा
जनवरी २	बैंक में जमा किये—स्थायी खाते (Fixed Deposit) में (तीन माह के लिये)	५,०००— ०–०
	चालू खाते (Current Account) में	१५,०००— ०–०
३	ए से माल खरीदा व पूरे भुगतान के लिये चैक दिया	६५०— ०–०
४	नकद माल बेचा	४७५— ०–०
	बैंक में जमा किये	४००— ०–०
६	बी से स्थानीय (Local) चैक प्राप्त हुआ	१,०५०— ०–०
७	बी का चैक बैंक में जमा किया	
८	नकद मजदूरी दी	७५— ०–०
९	बी का चैक अस्वीकृत (Dishonoured) होकर वापस आया	१,०५०— ०–०
१०	बी से रोकड़ा प्राप्त हुए और बैंक मे जमा किये	१,०५०— ०–०
१२	सी को चैक दिया	१,२७५— ०–०
	बट्टा (Discount) मिला	२५— ०–०
१३	डी से बाहरी (Out-station) चैक प्राप्त हुआ और बैंक में जमा कराया	९२५— ०–०
१६	बैंक से सूचना मिली कि डी का चैक एकत्रित कर लिया है	
	विनिमय खर्च (Exchange)	२— ८–०
१७	ई से एक दर्शनी हुण्डी आई और भुना ली गई	५००— ०–०
१८	कार्यालय खर्च के लिये बैंक से निकाले	१५०— ०–०
२०	एफ से एक चैक आया व बैंक मे जमा करा दिया	२९५— ०–०
	और बट्टा दिया	५— ०–०
२१	जी को एक चैक दिया	४९०— ०–०
	और बट्टा प्राप्त हुआ	१०— ०–०
२२	एच से एक पोस्टल आर्डर मिला और बैंक में जमा कराया	१०— ०–०
२५	जे से एक मशीनरी खरीदी	७,५००— ०–०
	और उसे एक बैंक ड्राफ्ट (बैंक से खरीदा हुआ) द्वारा भुगतान किया ...	७,५०५— ०–०
२७	क से एक ट्रेजरी आर्डर प्राप्त हुआ जिसे बैंक में जमा कराया ...	९००— ०–०
३१	चेक द्वारा वेतन दिया	१,२००— ०–०

जर्नल

१९५१		रु०	आ.	पा.	रु०	आ	पा.
जनवरी २	स्थायी खाता	५,०००	—	—			
	[illegible] खाता	१५,०००	—	—			
	[illegible] खाता				२०,०००	—	—
	[illegible] चालू व स्थायी खाते में जमा किया						
३	[illegible]	६५०	—	—			
	[illegible]				६५०	—	—
	[illegible]						
	[illegible]	६५०	—	—			
	[illegible]				६५०	—	—
	[illegible]						
४	[illegible]	४७५	—	—			
	[illegible]				४७५	—	—
	[illegible]						
	[illegible]	[illegible]	—	—	[illegible]	—	—

तारीख	विवरण		नाम रु०	आ०	पा०	जमा रु०	आ०	पा०
	नीचे लाये		२६,३२७	८	–	२६,३२७	८	–
२०	बैंक खाता		२९५	–	–			
	बट्टा खाता		५	–	–			
	एफ					३००	–	–
	एफ से चैक आया बैंक में जमा किया व बट्टा दिया							
२१	जी		५००	–	–			
	बैंक खाता					४९०	–	–
	बट्टा खाता					१०	–	–
	जी को चैक दिया व बट्टा प्राप्त किया							
२२	बैंक खाता		१०	–	–			
	एच					१०	–	–
	एच से एक पो० आ० आया, बैंक में जमा किया							
२५	मशीनरी खाता		७ ५००	–	–			
	जे					७,५००	–	–
	जे से मशीनरी खरीदी							
	जे		७,५००	–	–			
	व्यापार खर्च खाता		५	–	–			
	बैंक खाता					७,५०५	–	–
	बैंक से बैंक ड्राफ्ट खरीदा व जे को भेजा							
२७	बैंक खाता		६००	–	–			
	के					६००	–	–
	के से ट्रेजरी आर्डर आया बैंक मे जमा किया							
३१	वेतन खाता		१,२००	–	–			
	बैंक खाता					१,२००	–	–
	चैक द्वारा वेतन का भुगतान किया							
	योग	रु०	४६,६४२	८	–	४६,६४२	८	–

उदाहरण ६

१ अप्रैल १९५१ को सुमेरानन्द ने १०,००० रु० रोकड़ा जमा करके बैंक का चालू खाता खोला। सारी आय उसी दिन बैंक में जमा कर दी जिस दिन वह प्राप्त हुयी व सारे भुगतान चैक द्वारा किये गये। निम्न लेन देनों को उसके जर्नल में लिखिये और बैंक खाता बनाइये :—

१९५१		रु० आ. पा.
अप्रैल ३	नकद बिक्री	५६३–११–३
	[illegible] ५% [illegible] कर दिया	१५०– ०–०
३	[illegible] प्राप्त किया	१४८०– ०–०
	[illegible] बट्टा दिया	२०– ०–०
	[illegible]	३८०– ०–०
	[illegible]	४२५– ०–०
४	[illegible] भुगतान किये	५००– ०–०
	[illegible]	
	[illegible]	४५– ०–०

तारीख	विवरण	रु.	आ.	पा.	रु.	आ.	पा.
	नीचे लाये	१५,४४३	११	३	१५,४४३	११	३
५	बैंक खाता	१,४२०	–	११			
	बट्टा खाता	३६	६	७			
	हाजी नूर इलाही कं०				१,४५६	७	६
	चैक आया बैंक को दिया और बट्टा दिया						
	मोतीलाल एण्ड कं०	२	–	–			
	ब्याज खाता				२	–	–
	दो दिन की देरी के लिये ब्याज लिया						
	बैंक खाता	१,४८२	–	–			
	मोतीलाल एण्ड क०				१,४८२	–	–
	हुण्डी आई, बैंक में जमा की						
६	बैंक खाता	९८०	–	–			
	बट्टा खाता	२०	–	–			
	सोहनलाल				१,०००	–	–
	रोकड़ा आये बैंक में जमा किये और बट्टा दिया						
	तारपोर वाला एण्ड सन्स	१२	८	–			
	बैंक खाता				१२	८	–
	उन्हें चैक भेजा						
७	व्यापार खर्च खाता	१५	४	६			
	बैंक खाता				१५	४	६
	चैक द्वारा बिजली का खर्च दिया						
	योग	१६,४११	१५	३	१६,४११	१५	३

बैंक खाता

१९५१		रु.	आ.	पा.	१९५१		रु.	आ.	पा.
अप्रैल १	रोकड़ खाता	१०,०००	–	–	अप्रैल २	रतन आदर्श	१४२	८	–
२	विक्रय खाता	५६३	११	३	३	कार्यालय यन्त्र	४२५	–	–
३	मोतीलाल एण्ड क०	१,४८०	–	–	४	आदर्श ट्रेडिंग क०	५००	–	–
	अमरनाथ	७८०	–	–		मोतीलाल एण्ड कं०	१,४८०	–	–
४	हीरालाल ताराचन्द	४५	–	–	६	तारपोर वाला एण्ड सन्स	१२	८	–
५	हाजी नूरइलाही कं०	१,४२०	–	११	७	व्यापार खर्चा	१५	४	६
	मोतीलाल एण्ड क०	१,४८२	–	–					
६	सोहनलाल	९८०	–	–					

प्रश्न

१. [illegible] के नाम से एक बैंक में खोले जा सकते हैं बतलाइये और उनमें अन्तर स्पष्ट कीजिये।

२. चैक [illegible] क्यों किये जाते हैं? साधारण व विशेष रेखांकन के उदाहरण दो।

३. [illegible] की व्याख्या कीजिये—अपरिमित मार्ग रेखांकन; [illegible] अधिविकर्ष; [illegible] तिथीय चैक; [illegible]; [illegible]।

४. [illegible] ने ५,००० रु० पूँजी से बैंक में जमा करके व्यापार आरम्भ [illegible] निम्न [illegible]—

१९५१		रु० आ० पा०
अप्रैल २	माल खरीदा :—बाबूलाल से	८४५— ०—०
	वालकर एण्ड कं०	७४०— ८—०
३	बैंक से कार्यालय खर्च (Office Expenses) के लिये निकाला ..	१००— ०—०
४	बंसीलाल रामगोपाल से माल खरीदा और बट्टा (Trade discount) कम किया १०%	१,०२०— ०—०
५	इस्माइल एण्ड सन्स को माल बेचा	१,३७६— ०—०
७	नकद डाक टिकट खरीदे	५— ०—०
९	बैंक द्वारा विविध खर्चों का भुगतान किया	८३— ४—६
११	इस्माइल एण्ड सन्स का उनके खाते की राशि का नकद बट्टा काट कर चैक मिला, और बैंक में जमा किया	
१३	बाबूलाल को चैक द्वारा भुगतान किया	८३५— ०—०
	बट्टा प्राप्त हुआ	१०— ०—०
१७	हमीद एण्ड कं० से माल खरीदा	६५४— ८—६
२०	हमीद एण्ड कं० को माल लौटाया	५०— ०—०
२५	बैंक से एक बैंक ड्राफ्ट (Bank draft) खरीदा और	५,००— ०—०
	वालकर कं० को भेजा ; बैंक कमीशन	१— ४—०
जनवरी २७	नीलाम द्वारा माल खरीदा व चैक द्वारा भुगतान किया	४६१— ०—०
२९	हमीद एण्ड कं० को चैक द्वारा भुगतान किया	२५०— ०—०
३०	चैक द्वारा वेतन चुकाया	१२०— ०—०
	किराया नकद दिया	२५— ०—०

उपर्युक्त लेन देनों को जर्नल में लिखिये व बैंक खाता बनाइये।

उत्तर—बैंक का शेष ३६८६ रु० १५ आ० ११ पा०

५. १ जनवरी १९५१ को माधोराम रामगोपाल ने ४,००० रु० की पूँजी लगाकर, जिसमें से ३,००० रु० यूनियन बैंक लि० में जमा किये, व्यापार आरम्भ किया तथा जनवरी मास में निम्न लेन देन हुए—

		रु०
जनवरी २	नकद माल खरीदा	३००
४	राम नारायण को माल बेचा	२०५
५	एक तिजोरी (Safe) खरीदी व चैक द्वारा भुगतान किया	१५०
६	सौंधी एण्ड सन्स से माल खरीदा	१,२१७
८	राम नारायण से प्राप्त हुए	२००
	और बट्टा दिया	५
११	छोटेलाल रामलाल को माल बेचा ...	१,२१०
१२	सौंधी एण्ड सन्स को चैक द्वारा भुगतान किया ...	५००
१४	अब्दुलअली को माल बेचा	३००
१७	पीयरर्स ... हिल कं० से माल खरीदा ...	६८०
२०	विविध व्यापार खर्चे रोकड़ा चुकाये	२३
२२	पीयरर्स ... कं० को माल लौटाया ...	२५
२५	नकद माल बेचा	२५०
२७	छोटेलाल रामलाल से चैक प्राप्त व बैंक में जमा किया ..	१५०
३१	रोकड़ा मजदूरी दी ..	६०
	दुकान का किराया (Rent ...)	२५
	बैंक में जमा किये	५००

उपर्युक्त, लेनदेनों को जर्नल में लिखिये, तथा खाता बही में रोकड़बही तथा बैंक खाता बनाइये।

उत्तर—[illegible]

अध्याय—६

बिल तथा हुण्डियाँ

आजकल अधिकतर व्यापारिक लेन-देन साख पर चलता है। इसे विनिमय बिल (Bill of Exchange) ने बहुत ही सरल और लाभदायक बना दिया है। माल उधार में बेचा जाता है और विक्रेता खरीदार पर एक बिल करता है जिसे खरीदार सिकार कर वापिस विक्रेता के पास भेज देता है। विक्रेता इस बिल को बैंक को बेच देता है और रुपया प्राप्त कर लेता है।

बिल बिना शर्त वाला लिखित और लेखक द्वारा हस्ताक्षरित रुक्का है जिसके द्वारा लेखक (Maker) किसी विशेष व्यक्ति को केवल रुपये की एक निश्चित रकम किसी अन्य व्यक्ति या उसके आदेशित व्यक्ति (Order) या धारक (holder) को अदा करने की आज्ञा देता है। बिल ऑव एक्सचेंज देशी या विदेशी हो सकती है।

देशी बिल वे है जो भारत में लिखी जाती है और या जिनका भुगतान भारत मे करना होता है, या जिनका देनदार भारत मे रहता है। जो देशी बिल नहीं है वे विदेशी बिल कहलाती है।

निम्नलिखित नमूना एक देशी बिल का है :—

| स्टाम्प |

आगरा,
१६ जनवरी, १६५१
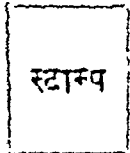
रु० १,०००)

इस तिथि के तीन महीने बाद मेरे आदेशानुसार केवल एक हजार रुपये की रकम, जिसका प्रतिफल दे किया गया है, दीजिये।

सेवा में,   रामगोपाल

लाला मंगतराय,
आगरा।

बिल के पक्षकार (Parties to bill) :—बिल में तीन पक्ष होते हैं। प्रथम लेखक (Drawer) जो बिल बनाता है; दूसरा देनदार (Drawee) जिस पर बिल बनाया जाता है और तीसरा प्राप्तकर्त्ता (Payee) जिसको बिल के रुपये मिलते हैं। बहुत सी स्थितियों में लेखक ही लेनदार भी होता है।

अवधि और तारीख (Tenor and Due Date) :—यह समय जिसके समाप्त होने पर बिल ऑव एक्सचेंज का भुगतान होता है अवधि (Tenor) कहलाता है। बिलें दर्शनी (on demand or at sight) और अवधि वाली (after date or after sight) होती हैं। दर्शनी बिलो के रुपये देनदार (Drawee) को उनके उपस्थित (Present) करते ही देने पड़ते हैं। अवधि वाली बिलो के दिन जिस तारीख को वे लिखी जाती हैं उससे गिने जाते हैं। पर इन बिलों में रियायत के तीन दिन (Days of grace) अधिक जोड़े जाते हैं। यदि यह अन्त या रियायत का दिन किसी सार्वजनिक या बैंक छुट्टी के दिन पड़ता है तो बिल का भुगतान एक दिन छुट्टी से पहले किया जाना चाहिए। जैसे, जिस बिल का अन्त का दिन रविवार है तो उसका भुगतान शनिवार को होना चाहिए अर्थात् एक दिन पहले। परन्तु यदि शनिवार भी छुट्टी का दिन हो तो भुगतान सोमवार को किया जावेगा।

बिल का धारक (Holder of a Bill):—किसी बिल का प्राप्तकर्त्ता (Payee), या बेचानपात्र (Endorsee) जो देय तिथि पर बिल का रुपया लेने का अधिकारी है धारक (Holder) कहलाता है।

टिकट (Stamp Duty):—यदि बिल ऑव एक्सचेञ्ज दर्शनी है तो किसी टिकट की आवश्यकता नहीं होती परन्तु यदि यह मुद्दती हो तो उसकी रकम के अनुसार (ad valorem) टिकट लगाना पड़ता है।

प्रतिफल या बदला (Consideration):—जब तक अन्यथा बात सिद्ध न हो जाय, बिल में हमेशा यह मान लिया जाता है कि वे किसी प्रतिफल के बदले ही दिये गये हैं। प्रतिफल मिलने की घोषणा (या 'For value received' शब्दों को) बिल में लिखना आवश्यक नहीं है। यद्यपि कानून की दृष्टि से ऐसा करना अनिवार्य नहीं है तथापि व्यवहार में ये शब्द लिखे जाते हैं:

स्वीकृति (Acceptance):—जब ऋणदाता (Creditor) बिल बनाता है तो यह ड्राफ्ट (Draft) कहलाता है। जिस व्यक्ति को वह सम्बोधित किया गया है उसे वह ड्राफ्ट स्वीकार करना पड़ता है। स्वीकृति का आशय यह है कि देनदार बिल में लेखक द्वारा दिये गये आदेश को स्वीकार कर लेता है। स्वीकार करने वाला बिल पर अपना नाम, स्थान और तारीख आदि लिख देता है। स्वीकृति के बाद देनदार (Drawee) को स्वीकारक (Acceptor) और ड्राफ्ट (Draft) को स्वीकृति (Acceptance) कहते हैं।

पूर्व पृष्ठ पर बनाये गये बिल को उसके सम्मुख भाग पर निम्नलिखित ढंग से लिखते हुए स्वीकार किया जा सकता है:—

स्वीकार किया.
इलाहाबाद बैंक लिमिटेड पर देय,
मंगतराय,
२० जनवरी, १९५१

उस बिल में, जो दर्शन के पश्चात् (after sight) देय है, स्वीकृति की तारीख अवश्य दी जानी चाहिये, जिससे उसकी देय तिथि (Due date) निकाली जा सके।

बेचान (Endorsement).—बिल ऑव एक्सचेंज अधिकतर नाम-जोग (Payable to the order of) लिखा जाता है और उसका भुगतान किसी व्यक्ति विशेष को या उसके आदेशानुसार किसी अन्य व्यक्ति (order) को किया जाता है। नाम-जोग बिल के नवाविले (Transfer) के पहले दो बातें—बेचान (Endorsement) लिखना, और फिर दूसरे के हाथ बिल सौंपना (Delivery)—नितान्त आवश्यक है।

बिल की पार्टियों का उत्तरदायित्व (Liability of parties to a Bill)—सबसे अधिक उत्तरदायित्व देनदार (Drawee) या स्वीकारक (Acceptor) का होता है, परन्तु यदि वह भुगतान करने से इन्कार करदे तो लेखक और हर एक बेचान-लेखक भी जमानतदार (Surety) के रूप में उत्तरदायी होते हैं। (Holder) यदि बिल को स्वीकारक द्वारा अस्वीकृत कर दिया जाय तो बिल का धारक बिल के लेखक और प्रत्येक बेचान-लेखक से भुगतान करने के लिये कह सकता है। इसलिये जितने अधिक बेचान-लेखक होंगे उतना ही अधिक बिल सुरक्षित समझा जाता है।

बैंकों द्वारा स्वीकृति का बेचान (Acceptance for [illegible] by Banks)—[illegible]

वेचान की हुई बिल बहुत ही श्रेष्ठ मानी जाती है क्योंकि बैंक एक उत्तरदायी पार्टी हो जाती है। इस सेवा के लिये बैंक कुछ कमीशन लेता है।

भुगतान के हेतु प्रस्तुति (Presentment for payment) :—देय तिथि पर बिल के धारक को चाहिये कि उसे भुगतान के लिये प्रस्तुत करे। वह ऐसा या तो सीधे या बैंक के द्वारा कर सकता है। बिल को उस जगह प्रस्तुत करना चाहिये जो भुगतान के हेतु स्वीकृति में दी गई हो या, जब ऐसी कोई जगह न दी हो, तो बिल में दिये हुए स्वीकारक के पते पर प्रस्तुत करना चाहिये। रकम देने पर स्वीकारक बिल को रसीद के रूप में रख लेगा।

बिल बट्टे पर भुनाना (Discounting a Bill) :—यदि बिल के धारक (Holder) को, बिल की अन्तिम तारीख से पहले रुपये की आवश्यकता हो तो वह इसे बैंक को बेच सकता है। बैंक इसमें से थोड़ा सा खर्च काट कर उसे बाकी रुपया दे देगा। इसे ही बिल का बट्टे पर भुनाना कहते हैं। जो खर्चा बैंक लेता है वह बिल के न समाप्त हुए समय का व्याज होता है। यह 'बैंकर का डिस्काउण्ट' (Banker's Discount) कहलाता है और बिल के रुपये पर कुछ प्रतिशत सालाना के हिसाब से लगाया जाता है।

अप्रतिष्ठित बिल (Dishonoured Bills) —बिल दो तरह से अप्रतिष्ठित हो सकता है—(अ) जब देनदार (Drawee) अपनी स्वीकृति बिल पर न दे या (ब) जब स्वीकारक (Acceptor) अन्तिम तारीख को बिल का भुगतान करने में असमर्थ रहे। जब बिल अप्रतिष्ठित हो जाता है तो इस सम्बन्ध का तमाम खर्चा उस पुरुष से लिया जाता है जिससे वह बिल प्राप्त हुआ था।

जब बिल अप्रतिष्ठित हो जाता है तो इसकी सूचना लेखक (Drawer)को और हरएक बेचान-लेखक (Endorser) को देनी चाहिये, नहीं तो उनका बिल का भुगतान करने के सम्बन्ध में दायित्व समाप्त हो जाता है। यह सूचना धारक (Holder) द्वारा दी जानी चाहिए।

बिल का टिप्पणन (Noting a Bill) :—जब बिल अप्रतिष्ठित हो जाता है और धारक (Holder) इसका लिखित प्रमाण प्राप्त करना चाहता है तब उसे प्रमाणित करने वाले अफसर (Notary public) की सेवाओं का लाभ उठाना चाहिए। यह अफसर बिल को दुबारा स्वीकारक के सामने उपस्थित करेगा और स्वीकारक की तरफ से जो कुछ भी उत्तर मिलेगा एक पत्र पर लिख देगा। इसके साथ ही साथ वह बिल के अप्रतिष्ठित होने का कारण, तारीख, अपना खर्च और अपने हस्ताक्षर भी इसी अलग पत्र पर लिख देगा। इसे ही बिल का टिप्पण कराना कहते हैं और इस पर जो खर्चे लगते हैं उन्हें टिप्पण व्यय (Noting charges) कहते हैं।

बिल का नवकरण (Renewing a Bill) :—जब स्वीकारक (acceptor) अन्तिम तारीख को बिल का भुगतान करने में असमर्थ रहता है तो वह धारक (holder) की स्वीकृति से एक नया बिल पुराने बिल की एवज में दे सकता है इसे बिल को नवीन करना कहते हैं। परन्तु स्वीकारक (acceptor) को उस बिल के बढ़ाये हुए समय के लिए व्याज देना पड़ता है। टिप्पण व्यय, टिकट और अन्य खर्चे भी जो बिल के नवकरण में लगते हैं वही देता है। इसलिये नया बिल इन सब खर्चों को मिलाने के बाद जो रकम होती है उसके लिए बनाया जाता है।

बिल की 'समय से पूर्व वापिसी' (Retiring a bill) :—यदि स्वीकारक (acceptor) के पास बिल की अन्तिम तारीख से पहले भुगतान करने के लिये काफी रुपये हों तो वह धारक [illegible] के लिये कह सकता है। यदि धारक (holder) बिल का भुगतान [illegible] स्वीकार करने को हो इसे बिल की समय पूर्व वापिसी (retiring a bill) कहते हैं। बिल का [illegible] स्वीकारक को कुछ छूट देता है जिसे रिबेट (Rebate या [illegible]) [illegible] रिबेट [illegible] न समाप्त हुए समय पर मिलती है।

विदेशी बिल (Foreign Bills)

देशी बिल (Inland Bill) वह है जो भारत में लिखा जाता है और जिसका भुगतान भारत में ही करना होता है या जिसका देनदार भारत में रहता है। जो बिल इन शर्तों की पूर्ति नहीं करता वह विदेशी बिल (Foreign bill) कहलाता है।

विदेशी बिल विदेशी व्यापारियों पर लिखे जाते हैं। ये बिल दो या तीन के सेट (Set) में लिखे जाते हैं। बिल की प्रत्येक प्रति को 'वाया' (via) कहते हैं और क्रमशः प्रथम, द्वितीय या तृतीय 'वाया' (via) के नाम से पुकारी जाती हैं। जैसे ही एक 'वाया' का भुगतान हो जाता है अन्य 'वाया' रद्द हो जाते हैं। ये बिल इतने सेट (Set) में इसलिये लिखे जाते हैं कि इनका रास्ते में खोने का भय रहता है। विदेशी बिल की दो या तीन प्रतियाँ अलग-अलग डाक द्वारा भेजी जाती हैं। इन [illegible] का यह उद्देश्य होता है कि यदि किसी कारण डाक द्वारा बिल की एक प्रति पाने वाले को न मिले तो दूसरी या तीसरी प्रति मिल जावे। जो बिल देनदार (Drawee) के पास सबके पहले पहुँचता है वही स्वीकृति कर लिया जाता है और अन्य सब बिल रद्द समझे जाते हैं। विदेशी बिल साधारणतः मुद्दती ही होते हैं।

विदेशी बिल या तो विशुद्ध (clear) या प्रलेखीय (documentary) होते हैं। विशुद्ध (clear) विदेशी बिलों के साथ कोई प्रलेख (Documents) नहीं होते। परन्तु प्रलेखीय विदेशी बिल के साथ जहाजी बिल्टी (Bill of lading), बीजक की एक नकल, सामुद्रिक बीमे की पॉलिसी और कभी-कभी एक बन्धक-पत्र (letter of hypothecation) रहता है। यह बन्धक-पत्र उस बैंक को, जिसके द्वारा यह बिल संग्रह के लिये भेजा गया है, माल गिरवी रखने का अधिकार देता है।

जो बहीखाता देशी बिलों के लिये होता है वही विदेशी बिलों के लिये होता है। विदेशी बिलों के सम्बन्ध में दो विशेष बातें होती हैं। प्रथम तो यह कि ये दो या तीन के "सेट" (Set) में लिखे जाते हैं। जब एक का भुगतान हो जाता है तो दूसरा रद्द कर दिया जाता है। द्वितीय, विदेशी बिल लेखक के देश की मुद्रा में बनाए जाते हैं; इसलिये भुगतान के समय मुद्रा-विनिमय का प्रश्न रहता है। यह विनिमय का प्रश्न पहले से ही लेखक (Drawer) और देनदार (Drawee) आपस में तय कर लेते हैं। यदि यह निश्चित नहीं किया गया है तो बिल के भुगतान के समय प्रचलित विनिमय की दरों से चुकाया जाता है।

अनुग्रह-बिल (Accommodation Bills)

ये वह बिल हैं जो बिना किसी प्रतिफल (consideration) के लिखे जाते हैं [illegible] व्यापारी थोड़े समय [illegible] रुपया [illegible] [illegible] इसलिये अनुग्रह-बिल [illegible] [illegible] इनका लेखा साधारण बिलों की तरह ही [illegible] है।

प्रोमिसरी नोट (Promissory Notes)

[illegible]

स्टाम्प

आगरा,
१६ जनवरी, १६५१

रु० १,०००)

तिथि के तीन महीने बाद मैं श्री रामगोपाल या उनके आदेशित व्यक्ति को एक हजार रुपये की केवल रकम, प्राप्त प्रतिफल के लिये, देने का वचन देता हूँ।

मंगतराय

प्रॉमिसरी नोट से दो पार्टियाँ होती हैं—(१) निर्माणक (maker) अर्थात् वह व्यक्ति जो नोट पर हस्ताक्षर करता है और भुगतान की प्रतिज्ञा करता है, और (२) प्राप्तकर्त्ता, (Payee), अर्थात् वह व्यक्ति जिसको रुपया मिलना है।

प्रॉमिसरी नोट में स्वीकृति की कोई आवश्यकता नहीं होती है क्योंकि ऋणी (Debtor) स्वयं ही इसे लिखता है। बिल की भाँति प्रॉमिसरी नोट भी बेचान-साध्य रुक्के (Negotiable instruments) हैं और बेचान द्वारा इनका तबादिला किया जा सकता है। बहीखाते की दृष्टि से प्रॉमिसरी नोट भी बिलों की तरह से ही समझे जाते हैं।

हुण्डियाँ (Hundies)

हुण्डी को भारतीय बिल ऑव एक्सचेञ्ज कहा जा सकता है। यह भारतीय भाषाओं में लिखी जाती है। हुण्डियों का उद्देश्य बिल ऑव एक्सचेञ्ज से भिन्न है। हुण्डियों का प्रयोग उस समय से प्रचलित है जब कि इस देश में कोई बैंक नहीं थे। ये आज तक चली आ रही हैं क्योंकि आज भी बहुत से भारतीय व्यापारी बैंक में खाता नहीं रखते। हुण्डियाँ व्यापारिक परम्परा के नियमों से नियन्त्रित होती हैं किन्तु किसी विशेष विषय पर व्यापारिक परम्परा के अभाव में बिलों पर लागू होने वाला सन्नियम अर्थात् भारतीय विनिमय-साध्य रुक्कों का अधिनियम (the Indian Negotiable Instruments Act) इन पर भी लागू होगा। हुण्डियाँ भी बिलों की भाँति दर्शनी या मुद्दती होती हैं।

दर्शनी हुण्डियों का भुगतान माँगने पर करना पड़ता है। दर्शनी हुण्डी डिमांड ड्राफ्ट के सदृश होती है और इस पर टिकट लगाने की आवश्यकता नहीं होती। दर्शनी हुण्डी दूसरे स्थान पर रुपये भेजने के लिये एक अच्छा साधन है और विशेषकर उन लोगों के लिये जिनका बैंक में खाता नहीं है।

मुद्दती हुण्डियों का भुगतान कुछ निश्चित दिनों या महीनों के बाद किया जाता है। मुद्दती हुण्डियों का समय भिन्न भिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न होता है। ये साधारणत ६१ या ६१ दिनों की होती हैं। मुद्दती हुण्डियों में रियायती दिन नहीं जोड़े जाते हैं। उत्तर प्रदेश में १०००) की मुद्दती हुण्डी पर दो आने का टिकट लगता है। हुण्डियाँ एक विशेष टिकट लगे हुए कागज पर लिखी जाती हैं।

मुद्दती हुण्डियाँ ऋण अदा करने के लिये नहीं परन्तु कुछ समय के लिये व्यापार के वास्ते रुपये कर्ज पर लेने के लिये लिखी जाती हैं। भारतीय व्यापारी बैंक ओवर ड्राफ्ट (Bank overdraft) [illegible] (cash credit), बैंक ऋण (bank loans) द्वारा रुपया एकत्रित नहीं करते। वे मुद्दती हुण्डियों द्वारा ही रुपया इकट्ठा करते हैं।

उदाहरणार्थ, किसी व्यापारी को जिसकी बाजार में अच्छी प्रतिष्ठा है कुछ समय के लिये रुपये की आवश्यकता है। ऐसी दशा में वह एक मुद्दती हुण्डी अपने पर लिखकर एक दलाल के हाथ [illegible] कर सकता है। खरीदने वाला ब्याज काट कर रुपये देता है। हुण्डी के आधार [illegible] पर [illegible] भिन्न [illegible] हैं। यद्यपि हुण्डी [illegible] के [illegible] पर [illegible] करने के [illegible] में कोई [illegible] नहीं होता।

बिल-सम्बन्धी व्यवहारों का बहीखाता (Book keeping for Bill Transactions)

यदि बिलो का प्रयोग अच्छी तरह से समझ लिया जाय तो इसका हिसाब भिन्न-भिन्न पार्टियों बहियों में लिखना कठिन नहीं लगेगा।

ऋणी (Debtor) अपने ऋणदाता (Creditor) को एक बिल देकर अपना ऋण अदा ता है और ऋणदाता के लिये यह बिल एक सम्पत्ति (asset) बन जाता है। ऋणी अपने ऋणदाता दो तरह की बिल दे सकता है (१) वह उस बिल को जो उसके ऋणदाता ने उस पर लिखी है स्वीकृत ले या (२) अपने ऋणियो (debtors) द्वारा स्वीकृत की हुई बिलो का बेचान अपने ऋणदाता creditor) के पक्ष मे कर दे।

जो व्यक्ति बिल को प्राप्त करता है वह इसके साथ तीन तरह से व्यवहार कर सकता है।) वह इसे परिपक्वता तक रख सकता है और अन्तिम तारीख (Due Date) पर इसके रुपये प्राप्त र सकता है। (२) यदि रुपये की पहले आवश्यकता हो तो वह इसे बैंक को बेच देता है. या (३) वह से किसी ऋणदाता (creditor) को अपना ऋण अदा करने के लिये दे सकता है।

बिल का स्वीकारक (acceptor) या तो उसका ठीक समय पर भुगतान कर सकता है या वह सी कारण से इसे अप्रतिष्ठित कर सकता है। कभी यह भी हो सकता है कि स्वीकारक बिल का रुपया न्तिम तारीख से पहले दे या बिल के अप्रतिष्ठित होने के उपरान्त उसका नवकरण करा ले।

प्राप्य बिल (Bills Receivable) और देय बिल (Bills Payable)

बही खाते के आशय के लिये बिल दो भागों में विभाजित किये जाते हैं। एक तो प्राप्यबिल ौर दूसरी देय बिल।

प्राप्यबिल (Bills Receivable) :—उस व्यक्ति के लिये, जिसे कि इस बिल के रुपये मिलने , बिल आफ एक्सचेंज प्राप्यबिल कहलाता है। यह बिल या तो उसके द्वारा लिखा गया हो और उसके ऋणी द्वारा स्वीकृत किया हुआ हो, या बिल का बेचान उसके पक्ष में किया गया हो।

देय बिल (Bills Payable) :—जब बिल के रुपए स्वयं देने पड़ते हैं तब वह देय बिल कहलाता है। जब दूसरे व्यक्ति द्वारा लिखा हुआ बिल स्वीकृत किया जाता है तो वह देय बिल होता है और अन्तिम तारीख पर धारक (holder) को भुगतान स्वीकारक को देना पड़ता है। इस तरह एक ही बिल एक व्यक्ति के लिये प्राप्य बिल और दूसरे व्यक्ति के लिए देय बिल हो सकता है।

(१) बिल का लेखन, स्वीकरण और भुगतान (Drawing, Acceptance and Payment of Bill)

ऋणदाता की बहियों (Creditor's Books) :—जब बिल लिखा जाता है तो प्राप्य बिल खाते (Bills Receivable Account) में [illegible]

[illegible]

[illegible]

जमा किया जाता है। जब अन्तिम तारीख (Due Date) को बिल का भुगतान किया जाता है तो देय बिल खाते के नाम लिखा जाता है और श्री रोकड़ खाते या बैंक खाते मे जमा किया जाता है।

यहाँ पर भी यह बात ध्यान देने योग्य है कि जब बिल का भुगतान किया जाता है, तो देय बिल खाते के नाम लिखना चाहिये न कि बिल के धारक (holder) के व्यक्तिगत खाते के नाम।

उदाहरण १०

ए का बी १,००० रु० का ऋणी है। १ जनवरी १९५१ को ए ने इस राशि का एक तीन का माह बिल बी पर लिखा। बी ने स्वीकृति देकर उसे ए को लौटा दिया। अवधि समाप्त होने पर बिल का भुगतान कर दिया गया। इन लेनदेनों को ए व बी के जर्नल में लिखिये।

ए का जर्नल

१९५१			रु०	आ.	पा.	रु०	आ.	पा.
जनवरी १	प्राप्य बिल खाता		१,०००	–	–			
	बी					१,०००	–	–
	स्वीकृति प्राप्त हुई							
अप्रैल ४	रोकड़ खाता		१,०००	–	–			
	प्राप्य बिल खाता					१,०००	–	–
	बिल की राशि प्राप्त हुई							

बी का जर्नल

१९५१			रु०	आ.	पा.	रु०	आ.	पा.
जनवरी १	ए		१,०००	–	–			
	देय बिल खाता					१,०००	–	–
	बिल पर स्वीकृति दी							
अप्रैल ४	देय बिल खाता		१,०००	–	–			
	रोकड़ खाता					१,०००	–	–
	स्वीकृति का भुगतान किया							

(२) बिल को बट्टे पर बैंक से भुनाना (Discounting a Bill)

यदि बिल के धारक (holder) को बिल की मुद्दत समाप्त होने से पहले ही रुपये की आवश्यकता अनुभव हो तो वह इसे बैंक को बेचकर रुपये प्राप्त कर सकता है। इसे ही बिल का बट्टे पर भुनाना (discounting) कहते हैं।

ऋणदाता की बहियाँ.—जब बिल को बट्टे पर भुनाते हैं तो श्री रोकड़ खाते या बैंक खाते और श्री बट्टे (Discount) खाते नाम लिखते हैं और देय बिल (Bills Receivable) खाते जमा करते हैं। बैंक खाते में बिल की नेट रकम (अर्थात् बिल के धन में से बट्टे के रुपये कम करके) नाम लिखी जाती है। जब बिल का भुगतान होता है तो लेनदार (Drawer) की बहियों मे कोई लेखा नहीं लिखा जाता है।

ऋणी की बहियाँ (Debtor's Books).—स्वीकारक (acceptor) पर बिल को बट्टे पर भुनाने का कोई प्रभाव नहीं होता है, क्योंकि वह तो अन्तिम तारीख (due date) पर जो कोई भी धारक (holder) हो उसी को बिल का भुगतान करने के लिए दायी है। भुगतान होने पर वह देय बिल के नाम लिखकर रोकड़ या बैंक खाते में बिल के रुपये जमा कर देता है।

उदाहरण ११

[illegible]

[illegible] इसी दिन [illegible] राशि का तीन माह [illegible] १९५१ को [illegible] ने अपनी स्वीकृति का भुगतान कर दिया।

ए का जर्नल

			रु०	आ.	पा	रु०	आ.	पा
१९५१								
जनवरी १	बी		१,०००	—	—			
	विक्रय खाता					१,०००	—	—
	उधार माल बेचा							
	प्राप्य बिल खाता		१,०००	—	—			
	बी					१,०००	—	—
	स्वीकृति प्राप्त हुई							
४	बैंक खाता		९८५	—	—			
	बट्टा खाता		१५	—	—			
	प्राप्य बिल खाता					१,०००	—	—
	बैंक से बिल भुनाया							

बी का जर्नल

			रु०	आ.	पा.	रु०	आ.	पा.
१९५१								
जनवरी १	क्रय खाता		१,०००	—	—			
	ए					१,०००	—	—
	उधार माल खरीदा							
	ए		१,०००	—	—			
	देय बिल खाता					१,०००	—	—
	बिल पर स्वीकृति दी							
अप्रैल ४	देय बिल खाता		१,०००	—	—			
	रोकड़ खाता					१,०००	—	—
	स्वीकृति का भुगतान किया							

(३) बिल का बेचान करना (Endorsing over a Bill) :—

लेखक की बहियाँ (drawer's Books) :—[illegible] जिसे अपने ऋणी से बिल प्राप्त हुआ है, अपना ऋण चुकाने के लिए उस बिल को [illegible] अपने ऋणदाता के पक्ष में कर देता है। इसलिए जब लेनदार (drawer) को इस तरह का बिल प्राप्त होता है तब वह प्राप्य बिल खाते के नाम लिखता है और ऋणी के व्यक्तिगत खाते में जमा करता है [illegible] (creditor) के पक्ष में कर देता है तब वह [illegible] व्यक्तिगत खाते के नाम [illegible] प्राप्य बिल खाते में जमा करता है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि [illegible]

स्वीकारक की बहियाँ (Acceptor's Books) :—[illegible]

[illegible]

उदाहरण १२

निम्न लेनदेनों को ए, बी व सी के जर्नल में लिखिये :—

१ जनवरी १९५१ को ए ने बी को १,००० रु० का माल बेचा और उसी दिन उस राशि का तीन माह का एक बिल बी पर लिखा। बी ने स्वीकृति देकर ए को वापिस लौटा दिया, जिसने १० दिन बाद उसे अपने लेनदार सी को हस्तान्तरित कर दिया। निश्चित तिथि पर स्वीकृति का भुगतान कर दिया गया।

ए का जर्नल

१९५१			रु०	आ.	पा.	रु०	आ.	पा.
जनवरी १	बी		१,०००	–	–			
	विक्रय खाता					१,०००	–	–
	उधार माल बेचा							
	प्राप्य बिल-खाता		१,०००	–	–			
	बी					१,०००	–	–
	स्वीकृति प्राप्त हुई							
	सी		१,०००	–	–			
	प्राप्य बिल खाता					१,०००	–	–
	उसे बी की स्वीकृति हस्तान्तरित की							

बी का जर्नल

१९५१			रु०	आ.	पा	रु०	आ.	पा.
जनवरी १	क्रय खाता		१,०००	–	–			
	ए					१,०००	–	–
	उधार माल खरीदा							
	ए		१,०००	–	–			
	देय बिल खाता					१,०००	–	–
	बिल पर स्वीकृति दी							
अप्रैल ४	देय बिल खाता		१,०००	–	–			
	रोकड़ खाता					१,०००	–	–
	स्वीकृति का भुगतान किया							

सी का जर्नल

१९५१			रु०	आ	पा	रु०	आ.	पा.
जन० १०	प्राप्य बिल खाता		१,०००	–	–			
	ए					१,० ०	–	–
	उनसे बिल प्राप्त किया							
अप्रैल ४	रोकड़ खाता		१,०००	–	–			
	प्राप्य बिल खाता					१,०००	–	–
	बिल का भुगतान मिला							

(४) बिल का अप्रतिष्ठित होना (Dishonour of a Bill) :—

लेनदार की बहियों (Creditor's Books) :- बिल या तब स्वीकृत न होने या भुगतान [illegible] है। जब बिल लिखा जाता है तो प्राप्य बिल (Bills Receivable) [illegible] (Debtor) के व्यक्तिगत खाते में जमा करते हैं। इसलिए जब बिल [illegible] प्रविष्टियों को उलट दिया जाता है। बिल के अप्रतिष्ठित [illegible] —

(अ) यदि ऋणी (debtor) पर लिखा हुआ बिल स्वीकृत न होने के कारण अप्रतिष्ठित हो जाय, तो ऋणी के व्यक्तिगत खाते के नाम लिखकर प्राप्य बिल खाते में जमा करते हैं, क्योंकि जब वह लिखा गया था तो रकम प्राप्य बिल खाते के नाम लिखकर ऋणी के खाते में जमा की गयी थी।

(ब) यदि बिल भुगतान न होने के कारण अप्रतिष्ठित हो गया है तो स्वीकारक (Acceptor) के खाते नाम लिखकर प्राप्य बिल (Bills Receivable) खाते में जमा किया जाता है। यदि टिप्पण व्यय (Noting charges) भी लगे हों, तो ये स्वीकारक (Acceptor) के व्यक्तिगत खाते के नाम लिखकर श्री रोकड़ में जमा करते हैं।

(स) यदि वह बिल, जो बैंक से भुनाया गया था, अप्रतिष्ठित हो गया हो, तो बिल के और टिप्पण व्यय के रुपये से स्वीकारक (Acceptor) के खाते नाम लिखकर बैंक खाते में जमा किये जाते हैं।

(द) यदि वह बिल जो किसी ऋणदाता (Creditor) को दिया गया है, अप्रतिष्ठित हो जाता है तो बिल और टिप्पण व्यय (Noting Charges) स्वीकारक के व्यक्तिगत खाते के नाम लिखकर ऋणदाता के व्यक्तिगत खाते में जमा करते हैं।

ऋणी की बहियाँ (Debtor's Books) :—जब बिल स्वीकृत न होने के कारण अप्रतिष्ठित होता है तो इसके सम्बन्ध में कोई लेखा (entry) नहीं किया जाता। परन्तु जब बिल भुगतान न होने के कारण अप्रतिष्ठित हो जाता है तो देय बिल (Bills payable) खाते में नाम लिख कर लेनदार (drawer) के व्यक्तिगत खाते में जमा किया जाता है। टिप्पण व्यय (Noting charges) के जो रुपये लेनदार ने दिये हैं व्यापार खाते (Trade expenses Account) के नाम लिखकर उन्हें उसके व्यक्तिगत खाते में जमा कर दिया जाता है।

उदाहरण १३

१ जनवरी १९५१ को ए ने बी को १,००० रु० का माल बेचा, व उसी दिन उस राशि का तीन मास का एक बिल बी पर लिखा। बिल स्वीकृत हो गया परन्तु अवधि समाप्त होने पर बिल अप्रतिष्ठित हो गया। ए ने २५ रु० बिल का टिप्पण कराने के दिये।

निम्न लेनदेनों को ए व बी के जर्नल में लिखिये।

ए का जर्नल

१९५१		रु०	आ. पा.	रु०	आ. पा.
जन० १	बी	१,०००	– –		
	बिक्री खाता			१,०००	– –
	उधार माल बेचा				
	प्राप्य बिल खाता	१,०००	– –		
	बी			१,०००	– –
	स्वीकृति प्राप्त हुई				
अप्रैल ४	बी	१,०२५	– –		
	प्राप्य बिल खाता			१,०००	– –
	रोकड़ खाता			२५	– –
	[illegible]				

बी का जर्नल

१९५१		रु०	आ. पा.	रु०	आ. पा.
जन० १	[illegible]	१,०००	– –		
	[illegible]			१,०००	– –
	[illegible]				

			रु०	आ.	पा.	रु०	आ.	पा.
	ए		१,०००	–	–			
	देय बिल खाता					१,०००	–	–
	स्वीकृति दी							
अप्रैल ४	देय बिल खाता		१,०००	–	–			
	व्यापार खर्च खाता		१५	–	–			
	ए					१,०१५	–	–
	स्वीकृति अस्वीकृति हुई व ए ने टिप्पण व्यय दिये							

उदाहरण १४

निम्न लेन-देन ए व बी के जर्नल में किस प्रकार लिखे जायेंगे ?—

१ जनवरी १९५१ को ए ने बी को १,००० रु० का माल बेचा व उसी दिन उस राशि का तीन माह का एक बिल बी पर लिखा। बी ने स्वीकृति देकर ए को लौटा दिया जिसने ४ जनवरी १९५१ को ६ प्रतिशत की दर से बैंक से भुना लिया। निश्चित तिथि पर स्वीकृति अप्रतिष्ठित हो गई, व बैंक ने १५ रु० बिल की निकराई के दिये।

ए का जर्नल

१९५१			रु०	आ.	पा.	रु०	आ.	पा.
जन० १	बी		१,०००	–	–			
	विक्रय खाता					१,०००	–	–
	उधार माल बेचा							
	प्राप्य बिल खाता		१,०००	–	–			
	बी					१,०००	–	–
	बी पर बिल लिखा							
४	बैंक खाता		९८५	–	–			
	बट्टा खाता		१५	–	–			
	प्राप्य बिल खाता					१,०००	–	–
	बिल भुनाया							
अप्रैल ४	बी		१,०१५	–	–			
	बैंक खाता					१,०१५	–	–
	बी की स्वीकृति अप्रतिष्ठित हो गई और बैंक ने १५ रु० टिप्पण व्यय के दिये							

बी का जर्नल

१९५१			रु०	आ.	पा.	रु०	आ.	पा.
जन० १	क्रय खाता		१,०००	–	–			
	ए					१,०००	–	–
	उधार माल खरीदा							
	ए		१,०००	–	–			
	देय बिल खाता					१,०००	–	–
	स्वीकृति दी							
अप्रैल ४	देय बिल खाता		१,०००	–	–			
	व्यापार खर्च खाता		१५	–	–			
	ए					१,०१५	–	–
	[illegible]							

(५) बिल का नवकरण (Renewal of a Bill):—

ऋणदाता की बहियाँ :—(Creditor's Books) जब बिल अप्रतिष्ठित हो जाता है तो स्वीकारक लेनदार का दुबारा ऋणी बन जाता है और उसे केवल बिल के रुपये ही नहीं बल्कि अन्य खर्चे, जैसे टिप्पण व्यय आदि के रुपये भी लेनदार को देने पड़ते हैं।

ऋणदाता कुछ रुपये ऋण के रोकड़ी प्राप्त कर सकता है। यदि ऐसा हो तो श्री रोकड़ खाते के नाम लिखकर ऋणी (debtor) के व्यक्तिगत खाते में जमा किये जाते हैं। परन्तु अधिकतर ऋणी और ऋणदाता यह तय करते हैं कि अप्रतिष्ठित बिल का नवकरण किया जाय। जब बिल का नवकरण (Renewal) किया जाता है तो उधार के बढ़ाये गये समय पर ब्याज लगाया जाता है। ऋणी यह ब्याज रोकड़ी रुपये में अदा कर सकता है। यदि वह ऐसा नहीं करता है तो बिल की रकम में ब्याज के रुपये भी जोड़ दिये जाते हैं।

यदि ब्याज रोकड़ी मिला है तो श्री रोकड़ खाते के नाम लिखकर ब्याज खाते में जमा किया जाता है। परन्तु यदि यह नये बिल की रकम में जोड़ दिया गया है तो ऋणी के व्यक्तिगत खाते के नाम लिखकर ब्याज खाते में जमा किया जाता है।

जब नया बिल प्राप्त होता है तो प्राप्य बिल खाते के नाम लिखा जाता है और ऋणी के व्यक्तिगत खाते में जमा किया जाता है। नया बिल ब्याज, टिप्पण व्यय और पुरानी बिल आदि सब के रुपयों के लिए लिखा जाता है।

ऋणी की बहियाँ (Debtor's Books).—जब बिल अप्रतिष्ठित हो जाये और उसका नवकरण ऋणदाता की स्वीकृति से हो, तो उस बिल के बढ़ाये गये समय के लिए ऋणी को ऋणदाता को ब्याज देना पड़ता है। यह ब्याज रोकड़ी दिया जा सकता है या बिल की रकम में जोड़ा जा सकता है।

यदि ब्याज रोकड़ी दिया गया है तो ब्याज खाते के नाम लिखकर श्री रोकड़ खाते में जमा किया जाता है परन्तु यदि बिल में जोड़ा गया है तो ब्याज खाते के नाम लिखकर ऋणदाता के व्यक्तिगत खाते में जमा किया जाता है। यह एन्ट्री नये बिल की एन्ट्री से पहले करनी चाहिए।

जब नया बिल स्वीकृत किया जाये तो ऋणदाता के व्यक्तिगत खाते के नाम लिखकर देय बिल के खाते में जमा किया जाता है।

उदाहरण १४

१ जनवरी १९५१ को ए ने बी को १,००० रु० का माल [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

तिथि	विवरण		रु.	आ.	पा.	रु.	आ.	पा.
४	बैंक खाता		९८५	–	–			
	बट्टा खाता		१५	–	–			
	प्राप्य बिल खाता					१,०००	–	–
	बिल भुनाया							
अप्रैल ४	बी		१,०१५	–	–			
	बैंक खाता					१,०१५	–	–
	बिल अस्वीकृत हो गया और बैंक ने १५ रु० निकराई के दिये							
	बी		३०	७	२			
	ब्याज खाता					३०	७	२
	१०१५ रु० १२% प्रतिवर्ष की दर से ३ माह का ब्याज लगाया							
	प्राप्य बिल खाता		१,०४५	७	२			
	बी					१,०४५	७	२
	स्वीकृति आई							

बी का जर्नल

१९५१			रु.	आ.	पा.	रु.	आ.	पा.
जन. १	क्रय खाता		१,०००	–	–			
	ए					१,०००	–	–
	उधार माल खरीदा							
	ए		१,०००	–	–			
	देय बिल खाता					१,०००	–	–
	स्वीकृति दी							
अप्रैल ४	देय बिल खाता		१,०००	–	–			
	व्यापार खर्च खाता		१५	–	–			
	ए					१,०१५	–	–
	स्वीकृति अस्वीकृति हुई व निकराई खर्च दिया							
	ब्याज खाता		३०	७	२			
	ए					३०	७	२
	आगे के उधार के लिये ब्याज दिया							
	ए		१,०४५	७	२	१,०४५	७	२
	देय बिल खाता							
	स्वीकृति दी							

उदाहरण १६

१ जनवरी १९५१ को ए ने बी पर ऋण चुकाने के लिये तीन माह का एक बिल [illegible] किया। [illegible] कर दिया। निश्चित तिथि पर स्वीकृति अनादरित हो गई व सी ने १५ रु० निकराई [illegible] दिये।

[illegible] ३० दिन बाद देय होगा, ३० रु० [illegible] सहित स्वीकृत किया। ३० दिन [illegible] किया।

[illegible] के खातों में लिखिये।

तारीख	विवरण	रु०	आ०	पा०	रु०	आ०	पा०
मई १८	बी	१,०१५	–	–			
	प्राप्य बिल खाता				१,०००	–	–
	रोकड़ खाता				१५	–	–
	बिल अस्वीकृत हो गया व निकराई खर्च दिया						
	बी	३०	–	–			
	ब्याज खाता				३०	–	–
	एक माह का ब्याज लगाया						
	प्राप्य बिल खाता	१,०४५	–	–			
	बी				१, ४५	–	–
	स्वीकृति प्राप्त हुई						

(६) बिल को परिपक्वता के पूर्व चुकाना (Retiring a Bill under Rebate) :—

जब स्वीकारक बिल की अवधि की अन्तिम तारीख के पहले धारक (Holder) को स्वीकृति का भुगतान कर देता है, तब धारक उसे कुछ वट्टा देता है जिसे भुगतान का वट्टा (Rebate) कहते हैं। यह भुगतान का वट्टा बिल के न समाप्त हुए समय का ब्याज होता है। ऐसी हालत में निम्नलिखित प्रविष्टियाँ (Entries) की जाती है :—

ऋणदाता की बहियाँ (Creditor's Books) —भुगतान वट्टे (Rebate) या वट्टे खाते में वट्टे के रुपये नाम लिखे जाते हैं, और बिल का जो रुपया वास्तव में प्राप्त होता है वह श्री रोकड़ के नाम लिखा जाता है और बिल के तमाम रुपये प्राप्य बिल खाते में जमा करते हैं।

ऋणी की बहियाँ (Debtor's Books) :—देय बिल के खाते में बिल के पूरे रुपये नाम लिखे जाते हैं और बिल की जो वास्तविक रकम अदा की गई है वह श्री रोकड़ में जमा की जाती है और वट्टे का जो रुपया मिला है वह भुगतान वट्टे खाते (Rebate Account) में जमा किया जाता है।

उदाहरण १७

१ जनवरी १९५१ को ए ने बी को १,००० रु० का माल बेचा, व उस राशि का तीन माह का एक बिल लिया। बी ने उसे स्वीकृत कर ए को लौटा दिया। ४ मार्च १९५१ को बी ६% प्रति सैकड़ा छूट पर स्वीकृति का भुगतान कर देता है।

उपर्युक्त लेन-देनों को ए व बी के जर्नल में लिखिये।

ए का जर्नल

तारीख	विवरण	रु०	आ०	पा०	रु०	आ०	पा०
१९५१							
जन. १	बी	१,०००	–	–			
	बिक्री खाता				१,०००	–	–
	उधार माल बेचा						
	प्राप्य बिल खाता	१,०००	–	–			
	बी				१,०००	–	–
	स्वीकृति प्राप्त हुई						
मार्च ४	रोकड़ खाता	९९५	–	–			
	छूट खाता	५	–	–			
	प्राप्य बिल खाता				१,०००	–	–
	बिल की राशि प्राप्त हुई और छूट दी गई।						

		रु०	आ	पा.	रु०	आ	पा.
४	बैंक खाता	९८५	–	–			
	बट्टा खाता	१५	–	–			
	प्राप्य बिल खाता				१,०००	–	–
	बिल भुनाया						
अप्रैल १	ए	१,०००	–	–			
	बैंक खाता				१,०००	–	–
	ए को चैक भेजा						

२. जहाँ पर एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति पर बिल लिखता है जो इसे बिना किसी मूल्यवान प्रतिफल के स्वीकृत कर लेता है। लेखक इसे अपने बैंक से भुनाता (Discount) है और जो रुपया प्राप्त होता है वह इन दोनों पार्टियों मे एक निश्चित अनुपात मे बॉट लिया जाता है। बट्टा (Discount) भी दोनों पार्टियो में बॉट दिया जाता है। बिल की अन्तिम तारीख को लेखक (Drawer) अपने हिस्से का रुपया स्वीकारक (Acceptor) के पास भेज देता है और वह बिल का भुगतान कर देता है।

उदाहरण १६

१ जनवरी १६५१ को, ए ने बी द्वारा लिखा हुआ १,००० रु० का तीन माह का बिल परस्पर सुविधा के लिये स्वीकृत किया। ४ जनवरी को बी ने अपने बैंक से ६% प्रति सैकड़ा पर बिल भुना लिया, और उसकी आधी राशि ए को दे दी। निश्चित तिथि पर बी ने ए को ५०० रु० का चैक भेजा, जिसने बिल का भुगतान कर दिया।

लेन-देनों को लिखने के लिये दोनों पक्षों के जर्नल में प्रविष्टियाँ कीजिये।

ए का जर्नल

१६५१		रु०	आ	पा.	रु०	आ	पा.
जन० १	बी	१,०००	–	–			
	देय बिल खाता				१,०००	–	–
	स्वीकृति दी						
४	रोकड़ खाता	४९२	८	–			
	बट्टा खाता	७	८	–			
	बी				५००	–	–
	बिल की राशि का आधा भाग प्राप्त हुआ व बट्टे का आधा भाग						
अप्रैल ४	रोकड़ खाता	५००	–	–			
	बी				५००	–	–
	चैक प्राप्त हुआ						
	देय बिल खाता	१, ००	–	–			
	रोकड़ खाता				१,०००	–	–
	स्वीकृति का भुगतान किया						

बी का जर्नल

१६५१		रु०	आ	पा.	रु०	आ	पा.
जन० १	प्राप्य बिल खाता	१,०००	–	–			
	ए				१,०००	–	–
	ए पर बिल लिखा						
४	बैंक खाता	९८५	–	–			
	बट्टा खाता	१५	–	–			
	प्राप्य बिल खाता				१,०००	–	–
	बिल भुनाया						

अप्रैल ४ देय बिल खाता	१,०००	–	–		
गोकड खाता				१,०००	– –
स्वीकृति का भुगतान किया					

उदाहरण २१

१ मई १९५० को, ए ने २,००० रु० का तीन माह का एक बिल लिखा और बी ने उस पर अपनी स्वीकृति दे दी। ४ मई १९५० को, ए ने अपने बैंक से ६% प्रति सैकड़ा पर बिल भुना लिया और आधा बी को चैक द्वारा भेज दिया। १ जून १९५० को, बी ने ५०० रु० के लिए तीन माह का एक बिल लिखा और ए ने उस पर स्वीकृति दे दी। ४ जून १९५० को बी ने अपने बैंक से ६% प्रति सैकड़ा बिल भुना लिया और आधा ए को भेज दिया। ए व बी ने बट्टे को बराबर-बराबर बाँटना स्वीकार किया।

अवधि समाप्त होने पर ए ने अपनी स्वीकृति का भुगतान कर दिया, परन्तु बी असफल रहा और इसलिये ए को भुगतान करना पड़ा। तब ए ने ३० रु० ब्याज सहित मूल बिल की राशि व तीन माह का बिल लिखा, जिसे बी ने स्वीकृत किया।

१ नवम्बर १९५० को, बी दिवालिया हो गया और उसने अपने लेनदारों को रुपये में आठ आने भुगतान किये।

ए की खाताबही में बी का खाता बनाइये।

ए की खाताबही

बी

१९५०		रु.	आ	पा	१९५०		रु.	आ	पा.
मई	बैंक	९८५	–	–	मई	१ प्राप्य बिल	२,०००	–	–
	बट्टा	१५	–	–	जून	४ रोकड	२४६	४	–
जून	१ देय बिल	५००	–	–		बट्टा	३	१२	–
अगस्त	४ बैंक	२,०००	–	–	अगस्त	४ प्राप्य बिल	२,०३०	–	–
	ब्याज	३०	–	–	नव.	७ रोकड़	६४०	–	–
नव	? प्राप्य बिल	२,०३०	–	–		७ डूबत कर्ज	६४०	–	–
		५,५६०	–	–			५,५६०	–	–

टिप्पणी.—जब एक मनुष्य दिवालिया हो जाता है तब वह लेनदारों को भुगतान करना बन्द कर देता है, अतः उसकी स्वीकृति स्वतः ही अस्वीकृत हो जाती है।

उदाहरण २२

१ जनवरी १९५१ को क्यू को पी को १,२०० रु० देना था, उसी दिन क्यू ने ब्याज सहित इस राशि के लिये कुल १,२५० रु० पर ६ माह की स्वीकृति दी।

१ अप्रैल १९५१ को क्यू ८०० रु० रोकड़ा व तीन माह का एक नवीन बिल देकर बिल लेता है जिसको पी ४ अप्रैल १९५१ को अपने बैंक से ६% प्रति सैकड़ा पर भुना लेता है।

इन लेनदेनों को पी की किताबों में दिखाते हुये जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये व क्यू का खाता भी दीजिये।

पी की किताब

जर्नल

१९५१		रु.	आ. पा.	रु.	आ. पा.
जन. १	क्यू	५०	– –		
	[illegible] खाता			५०	– –
	(१,२०० रु० पर [illegible] के अनुसार)				
	[illegible]	१,२५०	– –		
	[illegible]			१,२५०	– –
	[illegible]				

१० १ जुलाई १९५० को, पी ने अपने ऋणी क्यू पर २,४०० रु० के तीन बिल लिखे—प्रथम ७०० रु० का एक माह, द्वितीय ८०० रु० का दो माह; और तृतीय ९०० रु० का तीन माह का। क्यू ने इन बिलों को स्वीकार कर पी को लौटा दिया।

३ जुलाई १९५० को पी ने पहला बिल हस्तान्तरित करके अपने लेनदार आर को भेज दिया। द्वितीय बिल १५ जुलाई १९५० को ७९५ रु० में बैंक से भुनाया और वह अस्वीकृत (dishonoured) हो गया; १२ रु० बिल की निकराई (Noting) के दिए। पी ने क्यू से १५ रु० ब्याज के लेकर, ८२७ रु० का तीन माह का चौथा बिल लिखकर समझौता कर लिया।

तीसरा बिल बैंक में जमा कर दिया गया, जिसका भुगतान हो गया। चौथे बिल का भी भुगतान रोकड़ा प्राप्त हुआ।

इन लेनदेनों से पी व क्यू की आवश्यक पुस्तकें (जर्नल व खाताबही) तैयार करो।

११. ५,००० रु० का एक बिल बी ने सी पर लिखा और सी ने उसे स्वीकार किया। भुगतान उसके बैंक पर होगा। निम्न परिस्थितियों में आप बी की किताबों में क्या प्रविष्टियाँ करेंगे :

(१) यदि वह देय तिथि तक बिल को अपने पास रक्खे व अवधि की समाप्ति पर भुगतान कराये;

(२) यदि वह बिल को अपने बैंक से ४,८०० रु० पर भुनाले;

(३) यदि वह अपने लेनदार एम को किसी ऋण की समाप्ति के लिये हस्तान्तरित करदे;

यदि उपर्युक्त परिस्थितियों में बिल देय तिथि पर अस्वीकृति (dishonoured) हो जाये तो आप बी की किताबों में और कौन-कौन सी प्रविष्टियाँ करेंगे।

१२. ३१ दिसम्बर १९५० को, पी ४,९७० रु० का क्यू की किताबों में ऋणी है। १ जनवरी को उसने निम्न तीन बिल स्वीकार कर हिसाब चुकता किया; पहला १५०० रु० एक माह; दूसरा १७०० रु० दो माह; और शेष के लिये तीन माह का तीसरा बिल।

पहला बिल अवधि की समाप्ति पर चुका दिया गया। दूसरा बिल अस्वीकृत हो गया परन्तु ५% ब्याज की शर्त पर एक माह का नवकरण हो गया और नये बिल का देय तिथि पर भुगतान हो गया।

तीसरा बिल अवधि समाप्ति से एक माह पहले ५% प्रति सैकड़ा बट्टे पर लौटा लिया गया।

उपर्युक्त लेनदेनों को क्यू की खाता बही में लिखिये।

१३ ए की सहायतार्थ, १ जनवरी १९५१ को बी ने २,००० रु० का तीन माह का एक बिल स्वीकार किया। ए ने बिल को तुरन्त १,९७० रु० में भुनाकर रोकड़ बैंक में जमा करा दी।

बिल की देय तिथि पर बी ने भुगतान कर दिया, परन्तु ए, जिसने रुपये वापस करने की प्रतिज्ञा की थी, देय तिथि पर ऐसा करने में असमर्थ रहा। और यह समझौता हुआ कि ए बी को १,००० रु० का चैक व शेष के लिये १२% प्रति सैकड़ा ब्याज सहित एक नवीन बिल दे। इस बिल का अवधि समाप्त होने पर भुगतान हो गया।

ए व बी की पुस्तकों में आवश्यक खाते (Ledger Accounts) तैयार करो।

१४. १ फरवरी १९५१ को, ए ने बी के ऊपर ४० रु० का एक बिल लिखा और उसी राशि का एक बिल बी ने ए पर लिखा, दोनों बिलों की देय तिथि तीन माह बाद है। दोनों बिल ४ फरवरी १९५१ को ६% प्रति सैकड़ा की दर से बैंक से भुनाये गये।

देय तिथि पर बी ने बिल का भुगतान कर दिया। ए ने बी को सूचना दी कि वह भुगतान करने में असमर्थ है और बी को बिल ले लेना चाहिये। यह समझौता हुआ कि ए, बी को १०० रु० तुरन्त, १०० रु० एक माह बाद व शेष के लिये बी को २ माह का ५ रु० ब्याज के खर्चे सहित एक बिल देवे।

समय पर रोकड़ व बिल का भुगतान कर दिया गया।

दोनों पक्षों की पुस्तकों में खाताबही की प्रविष्टियाँ (Ledger Entries) दीजिये।

१५. ए व बी ने पारस्परिक लाभ के लिये अनुग्रह बिल लिखे। ए ने बी पर लिखा हुआ २,००० रु० का तीन माह का बिल १,९५० रु० रोकड़ लेकर [illegible] में भुनाया, जिसमें ए का बी के साथ समान भाग है। बी ने ए पर लिखा हुआ २,००० रु० का तीन माह का बिल १,९५० रु० रोकड़ लेकर [illegible] में भुनाया, जिसमें बी का ए के साथ समान भाग है।

[illegible]

[illegible]

अध्याय—७

जर्नल का विभाजन—रोकड़-बही

(Subdivision of Journal—Cash Book)

सर्व प्रथम व्यापार के सब लेन-देन जर्नल मे लिखे जाते हैं। इससे यह मालूम होता है कि व्यापार के हर एक लेन-देन का खाता वही पर क्या प्रभाव हुआ। विद्यार्थियो के दृष्टिकोण से, यह उन्हे दुहरा लेख (Double entry) प्रथा की महत्ता समझाने मे सहायक होती है, परन्तु यह सत्य है कि हर एक लेन-देन को जर्नल मे लिखना वहुत ही कष्टप्रद है और जव व्यापार वहुत ही अधिक वढ़ जाता है तव यह और भी कठिन हो जाता है। आधुनिक व्यापार शीघ्रता के साथ करना पड़ता है। इसलिये इसको उचित रूप मे चलाने के लिए, वही खातो की ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि उसके कार्य का विभाजन होकर कार्य शीघ्रता से हो सके। इसी उद्देश्य को दृष्टिकोण मे रखकर जर्नल को कई भिन्न-भिन्न सहायक वहियां (Subsidiary Books) मे विभाजित कर दिया जाता है। वे वहियाँ, जिनमे जर्नल को विभाजित किया जाता है, निम्नलिखित है :—

१. रोकड़-बही (Cash Book) जिसमे सारे रोकड़ प्राप्तियो (Receipts) और भुगतान (Payments) के लेन-देन और वट्टा (Discount), प्राप्त हुआ या दिया हुआ, लिखे जाते है।

२. क्रय-बही (Purchases Book) जिसमे तमाम उधार पर खरीदा हुआ माल लिखा जाता है।

३. क्रय-वापसी वही (Purchases Returns Book), जिसमे वह तमाम खरीदा हुआ माल जो वापिस कर दिया गया है, लिखा जाता है।

४. विक्रय-वही (Sales Book) जिसमे तमाम उधार पर बेचा माल लिखा जाता है।

५. विक्रय-वापसी वही (Sales Returns Book), जिसमे ग्राहको द्वारा वापिस लौटाया हुआ माल लिखा जाता है।

६. प्राप्य विल-वही (Bills Receivable Book) जिसमे जितने भी विल प्राप्त होते हैं उनकी प्रविष्टि की जाती है।

७. देय बिल-वही (Bills Payable Book) मे जितने भी बिल हमने दिये हैं उनका लेखा किया जाता है, और

८. साधारण जर्नल (Journal Proper), जिसमे उन तमाम लेन-देनो की प्रविष्टियाँ की जाती हैं जिन के लिए कोई अलग बही नहीं है।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि यदि हर एक बही से सम्बन्धित लेन-देन कम हैं तो अलग-अलग बहियाँ रखने की कोई आवश्यकता नहीं है। और उनकी प्रविष्टि जर्नल मे ही की जा सकती है।

एक जर्नल के बजाय भिन्न-भिन्न सहायक बहियाँ रखने से निम्नलिखित लाभ हैं :-

१. एक तरह के लेन-देन एक बही मे लिखने के कारण भविष्य मे किसी खाते की जाँच-पड़ताल करने मे बड़ी सरलता रहती है।

२. खाता डालने मे भी समय की बहुत बचत होती है, क्योंकि इन सहायक बहियों से कुछ [illegible] का कुल [illegible] लगाया जाता है।

(Column) और बना दिया जाता है। जो वट्टा हम देते है वह नाम तरफ (debit side) और जो वट्टा प्राप्त होता है वह जमा तरफ (credit side) लिखा जाता है।

रोकड़ वही की किस्में (Kinds of Cash Books) :—

१. साधारण रोकड़ वही (The Simple Cash Book) :—यदि व्यापारी कोई वैंक खाता नही रखता है और रोकड़ी वट्टा न देता है और न लेता है तो उसकी रोकड़ वही मे सिर्फ प्राप्तियाँ (Receipts) और भुगतान (Payments) ही लिखे जाते हैं। यह एक साधारण रोकड़ खाते (Cash Account) के सदृश होती है।

खताना (Posting) :—वर्ष के शुरू मे रोकड़ वही मे जो शेष (Balance) होता है वह कहीं भी नहीं खताया (post) जाता। परन्तु जो प्रविष्टियाँ (entries) रोकड़ वही की नाम तरफ (debit side) है उन्हे खाता वही मे अलग-अलग खातो की जमा तरफ (credit side) लिखा जाता है और जो रोकड़ वही की जमा तरफ (credit side) हैं उन्हे खाता वही मे भिन्न-भिन्न खातो की नाम तरफ (debit side) लिखा जाता है। यह सब तारीख के अनुसार किया जाता है।

रोकड़ वही खाता वही के समान होने के कारण वास्तविक और व्यक्तिगत खातों की तरह संतुलित (balance) कर ली जाती है।

उदाहरण २३

निम्न लेन देनों से रोकड़-वही तैयार करो और खाता-वही में खतियाओ :—

१९५१				रु० आ०पा०
जनवरी	१	रोकड़ हस्ते (Cash in hand)	...	१,२४५- ८-०
	५	रतन ब्रादर्स से प्राप्त हुये	....	३५६-१२-६
	७	किराया दिया	...	३०- ०-०
	१२	बाबूलाल को भुगतान किया	....	५६०- ०-०
	१५	नकद बिक्री	..	३२७- २-०
	२५	फर्नीचर (Furniture) नकद खरीदा	..	१२०- ०-०
	३१	वेतन में दिया	....	१२५- ०-०

साधारण रोकड़ वही

तिथि	विवरण	प्र० सं०	खा० ब० का पृ०	राशि			तिथि	विवरण	प्र० सं०	खा० ब० का पृ०	राशि		
१९५१				रु०	आ.	पा.	१९५१				रु०	आ	पा.
जन० १	शेष नी/ला			१,२४५	८	—	जन० ७	किराया खाता			३०	—	—
५	रतन ब्रादर्स			३५६	१२	६	१२	बाबूलाल			५६०	—	—
१५	बिक्री खाता			३२७	२	—	२५	फर्नीचर खाता			१२०	—	—
							३१	वेतन खाता			१२५	—	—
								शेष आ/ले			१,०९४	६	६
				१,९२९	६	६					१,९२९	६	६
१९५२													
जन० १	शेष नी/ला			१,०९४	६	६							

रतन ब्रादर्स

	१९५१		रु०	आ.	पा.
	जन० ५	रोकड़	३५६	१२	६

(Column) और बना दिया जाता है। जो बट्टा हम देते हैं वह नाम तरफ (debit side) और जो बट्टा प्राप्त होता है वह जमा तरफ (credit side) लिखा जाता है।

रोकड़ वही की किस्में (Kinds of Cash Books) :—

१. साधारण रोकड़ वही (The Simple Cash Book) :—यदि व्यापारी कोई बैंक खाता नहीं रखता है और रोकड़ी बट्टा न देता है और न लेता है तो उसकी रोकड़ वही में सिर्फ प्राप्तियाँ (Receipts) और भुगतान (Payments) ही लिखे जाते हैं। यह एक साधारण रोकड़ खाते (Cash Account) के सदृश होती है।

खताना (Posting) :—वर्ष के शुरू में रोकड़ वही में जो शेष (Balance) होता है वह कहीं भी नहीं खताया (post) जाता। परन्तु जो प्रविष्टियाँ (entries) रोकड़ वही की नाम तरफ (debit side) हैं उन्हे खाता वही मे अलग-अलग खातो की जमा तरफ (credit side) लिखा जाता है और जो रोकड़ वही की जमा तरफ (credit side) हैं उन्हे खाता वही मे भिन्न-भिन्न खातो की नाम तरफ (debit side) लिखा जाता है। यह सब तारीख के अनुसार किया जाता है।

रोकड़ वही खाता वही के समान होने के कारण वास्तविक और व्यक्तिगत खातो की तरह संतुलित (balance) कर ली जाती है।

उदाहरण २३

निम्न लेन देनों से रोकड-वही तैयार करो और खाता-वही में खतियाओ :—

१९५१				रु० आ० पा०
जनवरी	१	रोकड़ हस्ते (Cash in hand)	...	१,२४१- ८-०
	५	रतन ग्रादर्स से प्राप्त हुये	....	३५६-१२-६
	७	किराया दिया	..	३०- ०-०
	१२	बाबूलाल को भुगतान किया	..	५६०- ०-०
	१५	नकद बिक्री	..	२२७- २-०
	२५	फर्नीचर (Furniture) नकद खरीदा	. .	१२०- ०-०
	३१	वेतन में दिया	...	१२५- ०-०

साधारण रोकड़ वही

तिथि	विवरण	पृ० सं०	खा० ब० का पन्ना	राशि रु०	आ.	पा.	तिथि	विवरण	पृ० सं०	खा० ब० का पन्ना	राशि रु०	आ	पा.
१९५१				रु०	आ.	पा.	१९५१				रु०	आ	पा.
जन० १	शेष नी/ला			१,२४५	८	–	जन० ७	किराया खाता			३०	–	–
५	रतन ग्रादर्स			३५६	१२	६	१२	बाबूलाल			५६०	–	–
१५	बिक्री खाता			२२७	२	–	२५	फर्नीचर खाता			१२०	–	–
							३१	वेतन खाता			१२५	–	–
								शेष आ/ले			१,०६४	६	६
				१,८२९	६	६					१,८२९	६	६
१९५१													
फ० १	शेष नी/ला			१,०६४	६	६							

रतन ग्रादर्स

			१९५१		रु०	आ.	पा.
			जन० ५	रोकड़	३५६	१२	६

किराया खाता

		रु०	आ.	पा.					
१९५१ जन० ७	रोकड़	३०.	—	—					

बाबूलाल

		रु०	आ	पा					
१९५१ जन० १२	रोकड़	५६	—	—					

विक्रय खाता

							रु०	आ	पा.
					१९५१ जन० १५	रोकड़	३२७	२	—

फर्नीचर खाता

		रु०	आ	पा					
१९५१ जन० ५	रोकड़	१२०	—	—					

वेतन खाता

		रु०	आ.	पा					
१९५१ जन० ३१	रोकड़	१२५	—	—					

(२) बट्टे खानों वाली रोकड़ बही (Cash Book with Discount Columns) :—

यदि व्यापारी बैंक खाता नहीं रखता है परन्तु यह रोकड़ी बट्टा (Cash discount) देना और प्राप्त करता है तो यह बट्टा श्री रोकड़ बही में दोनो तरफ एक-एक नया स्तम्भ (Column) बनाकर लिखा जा सकता है। श्री रोकड़ बही की नाम तरफ (debit side) दिया हुआ बट्टा और जमा तरफ (credit side) प्राप्त किया हुआ बट्टा लिखा जाता है। ऐसी रोकड़ बही को द्वि-स्तम्भीय (Two-column) रोकड़ बही भी कहते हैं।

खताना (Posting) —रोकड़ी के खानो की रकम तो साधारण रोकड़ बही की तरह से खता दी जाती है। परन्तु बट्टे के खाने की रकमे, यदि बट्टा दिया गया है, तो हर एक सम्बन्धित व्यक्तिगत खाते मे जमा की जाती है और इस बट्टे खाते का कुल योग बट्टे खाते के (खाता बही मे) नाम लिख दिया जाता है परन्तु यदि बट्टा प्राप्त होता है तो व्यक्तिगत खातो मे नाम लिखकर श्री बट्टे खाते मे इस बट्टे के खाने का कुल योग जमा किया जाता है।

रोकड़ी के खानो को वास्तविक और व्यक्तिगत खातो की तरह संतुलित (Balance) कर लिया जाता है परन्तु बट्टे के खानो को संतुलित नहीं किया जाता क्योंकि वे तो सिर्फ मेमोरेडम खानो (Memorandum Column) की भाँति है।

उदाहरण २४

निम्न लेन-देनों की द्वि-स्तम्भीय रोकड़ पुस्तक बनाओ और खाता बही में खतियाओ :—

१९५१			रु० आ०पा०
जनवरी	१	रोकड़ हस्ते (Cash in hand) ..	१,२७५–१२–६
	५	रतन प्रादर्स को दिये .	३९५– ०–०
		बट्टा (Discount) प्राप्त हुआ	५– ०–०

११—श्र

७	नकद माल खरीदा	..	१५०— ६—०
१०	हरि एण्ड क० से प्राप्त हुये		६९०— ०—०
	बट्टा दिया		१०— ०—०
१५	नकद बिक्री		४६६— ४—०
१७	शर्मा ट्रेडिंग कं० को दिये	...	२८६— ०—०
२०	राममोहनराय से प्राप्त हुये	.	१,२८९— ०—०
	बट्टा	...	११— ०—०
२४	मजदूरी चुकाई	....	६५— ८—०
	भाड़ा (Carriage) दिया		६७— ३—६
२७	जे० वाकर को दिये	..	२५०— ०—०
२८	नकद मशीनरी खरीदी	..	१,५००— ०—०
२९	हरि एण्ड कं० से प्राप्त हुये	....	५००— ०—०
३१	किराया चुकाया	....	५०— ०—०

रोकड़ बही

तिथि	विवरण	प० सं०	खा. ब. प	बट्टा रु०	आ.	पा	रोकड़ रु०	आ	पा	तिथि	विवरण	प० सं०	खा. ब. प	बट्टा रु०	आ.	पा.	रोकड़ रु०	आ.	पा.
१९५१										१९५१									
जन० १	शेष नी/ला						१,२७५	१२	६	जन० ५	रतन ब्रादर्स			५	—	—	३९५	—	—
१०	हरि एण्ड क०			१०	—	—	९९०	—	—	७	क्रय खाता						१५०	६	—
१५	विक्रय खाता						४६६	४	—	१७	शर्मा ट्रेडिंग क०						२८६	—	—
२०	राममोहनराय			११	—	—	१,२८९	—	—	२४	मजदूरी खाता						६५	८	—
२९	हरि एण्ड कं०						५००	—	—		भाड़ा खाता						६७	३	६
										२७	जे० वाकर						२५०	—	—
										२८	मशीनरी खाता						१,५००	—	—
										३१	किराया खाता						५०	—	—
											शेष आ/ले						१,४८६	१५	—
			रु०	२१	—	—	४,२५१	—	६				रु०	५	—	—	४,२५१	—	६
१९५१																			
फर० १	शेष नी/ला																		

रसन ब्रादर्स

तारीख	विवरण	रु०	आ.	पा.	तारीख	विवरण	रु०	आ.	पा.
१९५१									
जन० ५	रोकड़	३९५	–	–					
	बट्टा खाता	५	–	–					

क्रय खाता

तारीख	विवरण	रु०	आ.	पा	तारीख	विवरण	रु०	आ.	पा.
१९५१									
जन० ७	रोकड़	१५०	६	–					

हरि एण्ड कं०

तारीख	विवरण	रु०	आ.	पा.	तारीख	विवरण	रु०	आ.	पा.
					१९५१				
					जन०१०	रोकड़	९९०	–	–
						बट्टा खाता	१०	–	–
					२९	रोकड़	५००	–	–

विक्रय खाता

तारीख	विवरण	रु०	आ.	पा.	तारीख	विवरण	रु०	आ	पा.
					१९५१				
					जन०१५	रोकड़	४९६	४	–

शर्मा ट्रेडिंग कं०

तारीख	विवरण	रु०	आ	पा	तारीख	विवरण	रु०	आ.	पा.
१९५१									
जन०१७	रोकड़	२८६	–	–					

राममोहनराय

तारीख	विवरण	रु०	आ.	पा.	तारीख	विवरण	रु.	आ.	पा.
					१९५१				
					जन. २०	रोकड़	१,२८९	–	–
						बट्टा खाता	११	–	–

मजदूरी खाता

तारीख	विवरण	रु०	आ.	पा.	तारीख	विवरण	रु०	आ.	पा.
१९५१									
जन. २१	रोकड़	६५	८	–					

भाड़ा खाता

तारीख	विवरण	रु०	आ.	पा	तारीख	विवरण	रु०	आ.	पा.
१९५१									
जन २०	गेकड़	६७	३	६					

जे० याकर

तारीख	विवरण	रु०	आ.	पा	तारीख	विवरण	रु०	आ.	पा.
१९५१									
जन. २७	रोकड़	२५०	–	–					

मशीनरी खाता

तारीख	विवरण	रु०	आ.	पा	तारीख	विवरण	रु०	आ.	पा.
१९५१									
जन. २८	रोकड़	१,५००	–	–					

किराया खाता

१९५१		रु.	आ.	पा.					
जन. ३१	रोकड़	५०	–						

बट्टा खाता

१९५१		रु.	आ.	पा.	१९५१		रु.	आ.	पा.
जन. ३१	विविध खाते रोकड़ वही के अनुसार	२१	–	–	जन. ३१	विविध खाते रोकड़ वही के अनुसार	५	–	–

(३) बैंक और बट्टे के खानों वाली रोकड़ (The Cash Book with Bank and Discount Columns) :—

यदि व्यापारी बैंक में खाता रखता है तो रोकड़ वही में दोनो तरफ रोकड़ी, बैंक और बट्टे के लिए तीन-तीन खाने रखे जाते है। ऐसी रोकड़-वही को त्रिस्तम्भीय रोकड़ वही (Three Columnar Cash Book) कहते हैं।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि इस तीन खाने की रोकड़ वही के रोकड़ के खाने श्री रोकड़ खाते को, बैंक खाने श्री बैंक खाते को धारण किये होते है जब कि बट्टे के दोनो खाने सिर्फ स्मरण के हेतु (Memorandum Columns) बनाये जाते हैं और वे बट्टे खाते को नहीं बतलाते हैं। रोकड़ और बैंक के खाने श्री रोकड़ खाते और बैंक खाते की तरह से बैलेंस (Balance) किये जाते है।

खताना (Posting) :—त्रिस्तम्भीय रोकड़-वही को खाता-वही मे खताने के निम्नलिखित नियम हैं :—

१. रोकड़ और बैंक के शेष (balances), जो कि गत वर्ष से लाये गये है, खताये नहीं जाते हैं क्योंकि जर्नल से श्री रोकड़-वही मे खताये गये हैं।

२. बैंक में रुपया जमा कराने और निकाले जाने की प्रविष्टियाँ रोकड़ वही मे दोनो तरफ लिखी जाती हैं। इन प्रविष्टियो को खाता वही मे नहीं खताया जाता, क्योंकि रोकड़ वही में ही उनका दोहरा लेखा पूरा हो जाता है। इन प्रविष्टियों को प्रतिरूप प्रविष्टि (Contra entry) कहते हैं और रोकड़ वही में उनके सामने खा० व० पन्ना स्तम्भ (L F Column) में अक्षर "प्र०" (C) लिख दिया जाता है।

३. अन्य सब रकमें जो नाम तरफ रोकड़ के खाने में है वे सम्बन्धित खातों में जमा की तरफ (credit side) में और जो जमा तरफ रोकड़ के खाने मे हैं वे सब सम्बन्धित खातों के नाम तरफ (debit side) खता दी जाती हैं। बैंक के खानों की रकम भी इसी तरह से खताई जाती है।

४. श्री बट्टे के खानों की खताई द्वि स्तम्भीय रोकड़-वही के बट्टे खानों के सदृश ही होती है।

उदाहरण २४

निम्न लेन-देनों से त्रिस्तम्भीय रोकड़ पुस्तक बनाओ और खाता वही में खताओ (Post).—

१९५१			रु. आ. पा.
जनवरी	१	रोकड़ हाथ (Cash in hand)	५,६७– ८–६
		रोकड़ बैंक (Cash at Bank) में	१२,६७५– ४–०
	२	बैंक में जमा किये	५,००– ०–०
	५	[illegible] से प्राप्त हुये	३५०– ०–०
		बट्टा दिया (Discount)	१०– ०–०
	७	[illegible]	५१०– ०–०
	१०	[illegible] बैंक द्वारा [illegible]	७४५– ०–१
		बट्टा [illegible]	५– ०–०

१३	हमीदअली से चैक प्राप्त किया और बैंक में जमा किया	५००— ०—०
१५	नकद बिक्री	७८५–१०–६
	बैंक में जमा किये ...	१,०००— ०—०
१७	एक मोटरकार खरीदा व चैक द्वारा भुगतान किया	५,२४०— ०—०
१९	जे वाकर को चैक द्वारा भुगतान किया ...	३६७— ० ०
	बट्टा प्राप्त किया	३ ०—०
२२	कार्यालय खर्च के लिए बैंक से निकाले ..	२५०— ० ०
२५	नकद माल खरीदा ..	३५०— ०—०
२७	गमलाल एण्ड क० को चैक द्वारा भुगतान किया	५००— ०—०
३०	हमीद अली से प्राप्त हुये ..	१६५— ०—०
	बट्टा दिया	५— ०—०
३१	स्थापन-खर्चा (Establishment) का चैक द्वारा भुगतान किया	४५०— ०—०
	किराया रोकड़ा दिया	५०— ०—०

रोकड़ बही

तिथि	विवरण	प्र.स.	खा.प.	बट्टा रु.	आ	पा.	रोकड़ रु.	आ	पा	बैंक रु.	आ	पा.	तिथि	विवरण	प्र.स.	खा.प.	बट्टा रु.	आ	पा.	रोकड रु	आ	पा.	बैंक रु.	आ	पा.
१९५१													१९५१												
जन १	शेष नी/ला०						५६७	८	६	१२,६७५	४	—	जन २	बैंक		(प्र)				५००	—	—			
२	रोकड़		(प्र)							५००			७	फर्नीचर खाता						२५०	—	—			
५	मोहन ब्रादर्स			१०	—	—	७६०	—	—				१०	गमलाल एण्ड क			५	—	—				७४५	—	—
१३	हमीदअली									५००	—	—	१५	बैंक		(प्र)				१,०००	—	—			
१५	विक्रय खाता						७८५	१०	६				१७	मोटर गाड़ी खाता									५,२४०	—	—
	रोकड़		(प्र)							१,०००	—	—	१९	जे० वाकर			३	—	—				३६७	—	—
२२	बैंक		(प्र)				२५०	—	—				२२	रोकड़		(प्र)							२५०	—	—
३०	हमीदअली			५	—	—	१६५	—	—				२५	क्रय खाता						३५०	—	—			
													२७	रामलाल एण्ड क									५००	—	—
													३१	स्थापन खर्च खाता									४५०	—	—
														किराया खाता						५०	—	—			
														शेष आ/ले						४३८	३	३	७,१२३	४	—
				१५	—	—	२,५८८	३	३	१४,६७५	४	—					८	—	—	२,५८८	३	३	१४,६७५	४	—
१९५१ फ़र. १	शेष नी/ला						४३८	३	३	७,१२३	४	—													

मोहन आदर्स

					१९५१		रु	आ	पा.
					जन. ५	रोकड़	७९०	–	–
						बट्टा	१०	–	–

फर्नीचर खाता

१९५१		रु.	आ	पा.					
जन. ७	रोकड़	९५०	–	–					

रामलाल एण्ड कं०

१९५१		रु.	आ	पा.					
जन. १०	बैंक	७४५	–	–					
	बट्टा	५	–	–					
२७	बैंक	५००	–	–					

हमीद अली

					१९५१		रु०	आ.	पा.
					जन० १३	बैंक	५००	–	–
					३०	रोकड़	१९५	–	–
						बट्टा	५	–	–

विक्रय खाता

					१९५१		रु०	आ	पा.
					जन० १५	रोकड़	७८५	१०	६

मोटर गाड़ी खाता

१९५१		रु०	आ.	पा					
जन० १७	बैंक	५,२५०	–	–					

जे० वाकर

१९५१		रु०	आ	पा					
जन० [illegible]	बैंक	३६७	–	–					
	बट्टा	३	–	–					

क्रय खाता

१९५१		रु०	आ	पा					
जन० [illegible]	रोकड़	३५०	–	–					

स्थापन-खर्च खाता

१९५१		रु०	आ,	पा					
जन० [illegible]	बैंक	४५०	–	–					

किराया खाता

[illegible]		[illegible]	आ	पा					
[illegible]	[illegible]	[illegible]	–	–					

बट्टा खाता

१९५१		रु०	आ०	पा०	१९५१		रु०	आ०	पा०
जन० ३१	विविध खाते रोकड़ बही के अनुसार	१५	—	—	जन० ३१	विविध खाते रोकड बही के अनुसार	८	—	—

रोकड़ और बैंक के बैलेंस का मेल बैठाना

(Reconciliation of Cash and Bank Balance)

रोकड़ शेष (Cash balance) :—रोकड़ का मेल बैठाना बहुत ही सरल है। रोकड़ी रुपये जितने प्राप्त हुए हैं और जितने दिये गये है उनका अन्तर पास में बचे हुए रुपये के बराबर होना चाहिए। यदि इसमे कोई अन्तर रहता है तो इसका मतलब यह है कि या तो कोई गलत प्रविष्टि कर दी गई या कोई रकम लिखने मे भूल हो गई है, या इतना रुपया खो गया है, या चुरा लिया गया है। इस तरह से कारण मालूम करके रोकड़ ठीक करनी चाहिए।

बैंक शेष (Bank Balance) .—बैंक के शेष का मेल बैठाना सरल कार्य नहीं है। हमारी रोकड़-वही के नाम सरफ (Debit side) का बैंक खाना वह रुपये जो हमने बैंक मे जमा किये हैं, और जमा तरफ (Credit side) का बैंक खाना वह रुपये जो हमने चैक द्वारा बैंक से निकाले है, दिखाता है। इन दोनो खानो (Columns) का जो अन्तर हो वही बैंक का बैलेस होता है। परन्तु यह रोकड़-बही का बैलेस पास-बुक के बैलेस से बहुत कम मिल पाता है। इसका मतलब यह नहीं है कि रोकड़-बही या पास-बुक मे गलतियाँ है। यह अन्तर निम्नलिखित कारणो से होता है :—

१. हो सकता है, कि काटे गये चैक (Cheques issued) जो रोकड़-बही मे लिख दिये गये है, प्राप्तकर्त्ताओ (Payee) द्वारा भुगतान के लिये अभी बैंक न भेजे गये हो।

२. हो सकता है कि चैक, ड्राफ्ट, हुँडियाँ इत्यादि जो संग्रहार्थ बैंक मे भेजे गये रोकड़-बही मे तो लिख दिये गये हो; परन्तु बैंक द्वारा उनका संग्रह न हो पाने के कारण उनको पास-बुक में जमा न किया गया हो—

३ हो सकता है कि बैंक से लिए गये ऋण आदि पर ब्याज और अन्य बैंक के खर्चे पास-बुक में हमारे नाम लिख दिये गये हो, परन्तु इनका लेखा रोकड़-बही मे न हुआ हो।

४. हो सकता है कि हमें मिलने वाला ब्याज और लाभांश (Dividend) बैंक ने संग्रह करके हमारी पास बुक मे जमा कर दिया हो परन्तु अभी रोकड़-बही मे न लिखा गया हो।

५. बैंक ने हमारे बीमा की किस्त (Premium) आदि दी हो और पास-बुक में हमारे नाम में लिख दी हो, परन्तु वह अभी तक रोकड़-बही मे न लिखी गई हो।

बैंक समाधान विवरण (Bank Reconciliation Statement) —बैंक पास-बुक और रोकड़-बही की मासिक तुलना करना आवश्यक हो जाता है, क्योंकि इसके बिना गलतियो का पता लगाना कठिन हो जाता है।

जब कभी रोकड़-बही की तुलना पास-बुक से की जाती है तो अधिकतर रोकड़ और पास-बुक का बैलेस नही मिलता है, परन्तु इन दोनो के शेष को एक विवरण तैयार करके मिलाया जा सकता है। यह विवरण (Statement) इन दोनों बैलेसो को मिलाने के लिए किसी एक विशेष तारीख को तैयार किया जाता है और इसे "बैंक समाधान विवरण" (Bank Reconciliation Statement) कहते हैं। यह निम्नलिखित नियमो के आधार पर तैयार किया जाता है :—

१. एक विशेष तारीख पर रोकड़-बही और पास-बुक को परस्पर मिलाते हुये (अ) उन तमाम रकमो पर जो कि पास-बुक मे है परन्तु रोकड़ मे नही हैं, और (ब) उन पर जो रोकड़ में हैं परन्तु पास-बुक में नहीं है, ध्यान देना चाहिए।

२. तब रोकड़-वही मे उन तमाम रकमो को लिखना चाहिए जो इसमें नहीं हैं, परन्तु पास-बुक में हैं और इस तरह से रोकड़ का ठीक वैलेंस (Corrected Balance) मालूम करना चाहिए।

३. इसके उपरांत पास-बुक और रोकड़ का वैलेंस मिलाने के लिए "बैंक समाधान विवरण" निम्नलिखित किसी एक पद्धति के अनुसार तैयार करना चाहिए :—

प्रथम पद्धति : (रोकड़ वही का शेष-लेकर)

(अ) जब बैंक का शेष रोकड़ वही मे नाम शेष हो, तो रोकड़ का ठीक किया हुआ वैलेस लेकर इसमे से वे तमाम चैक, हुंडियाँ आदि कम करदे जो संग्रह के लिए बैंक मे भेजे गये थे और जो अभी तक जमा (credit) नही किये गये है और उन तमाम चैको को जो बैंक पर लिखे गये थे परन्तु अभी तक भुगतान के लिए उपस्थित नही किये गये है, जोड़ दे। अब यह नया शेष पास-बुक के शेष के बराबर होगा।

(ब) जब बैंक का शेष रोकड़ वही मे जमा शेष हो अर्थात् अधिविकर्ष (overdraft) हो, तो रोकड़ का ठीक किया हुआ वैलेस ले और इसमे जो चैक संग्रह के लिए बैंक भेजे गये हैं, परन्तु अभी तक जिनका संग्रह नहीं हुआ है, जोड़ देने चाहिए और उन तमाम चैको को जो बैंक पर लिखे गए थे परन्तु अभी तक भुगतान के लिए उपस्थित नहीं किये गये है कम कर देना चाहिए। तब यह नया शेष पास-बुक के शेष से मेल खा जावेगा।

द्वितीय पद्धति (पास-बुक का शेष लेकर)

(अ) जब पास-बुक का शेष जमा शेष हो, तो पास-बुक के शेष उन चैक को, जो संग्रह (Collection) के लिए बैंक मे भेजे गये है परन्तु जिन्हे बैंक ने पास-बुक मे जमा नही किया है, जोड़ दें और उन तमाम चैको को, जो बैंक पर लिखे गये थे परन्तु जिनका भुगतान नहीं हुआ है, घटा दे तो यह नया शेष रोकड़ के ठीक किये हुये शेष के बराबर होगा।

(ब) जब पास-बुक का शेष नाम शेष हो तो इसमें से उन तमाम चैकों को जो संग्रह के लिये बैंक में जमा किये गये हैं परन्तु अभी तक जिनका बैंक द्वारा संग्रह नहीं हुआ है, घटा देना चाहिए, और उन तमाम चैकों को, जो बैंक पर लिखे गये हे परन्तु जिनका भुगतान नहीं हुआ है, जोड़ देना चाहिए। तब यह नया शेष रोकड़ के ठीक किये हुये शेष से मिल जावेगा।

नोट :—बैंक समाधान विवरण स्थायी रूप मे रोकड़-वही मे लिख लिया जाता है। इस विवरण की तारीख इसके शीर्षक के साथ दी जाती है।

उदाहरण २६

३१ दिसम्बर १९५० को; एक व्यापारी की रोकड़-पुस्तक में बैंक [illegible] का शेष २,९३० रु० १० आ० था और पास-बुक का शेष २,५१८ रु० १४ आ० ६ पा० था।

पास-बुक या रोकड़-पुस्तक से मिलान करने पर ये बातें मालूम हुई कि ३१ दिसम्बर को दिया हुआ एक ७०७ रु० ३ आ० ६ पा० का चैक पहली जनवरी तक क्रेडिट नहीं किया गया था। और निम्न चैक जो ३१ दिसम्बर के पहले लिखे गये थे ३ जनवरी १९५१ तक बैंक मे भुगतान के लिए प्रस्तुत नहीं किये गये—[illegible] १०० रु०; दामोदरदास ४८ रु०; ... २९ रु० २ आ०; मन्नालाल ११८ रु० ६ आ०

रोकड़ और पास-बुक के दोनों शेषों का मेल मिलाने के लिये बैंक समाधान विवरण तैयार करो।

बैंक समाधान विवरण, दिनांक ३१ दिसम्बर १९५०

[illegible]

रोकड़ वही का शेष		२,९३०—१०—०
घटाओ (—) चैक जिसका अभी तक संग्रह नहीं हुआ		७०७—३—६
		२,२२३—६—६
जोड़ (+) लिखे हुए चैक जो बैंक में उपस्थित नहीं हुए		२९५—८—०
पास बुक का शेष	रु०	२,५१८—१४—६

बैंक समाधान विवरण दिनांक ३१ दिसम्बर १९५०

द्वितीय पद्धति

पास-बुक का शेष		२,५१८–१४–६
घटाओ	(–) लिखे हुये चैक जो बैंक मे उपस्थित नहीं हुये	२९५–११–०
		२,२२३–३–६
जोड़ो	(+) चैक जिनका रुपया वसूल नहीं हुआ है	७०७–६–६
	रोकड़ वही का शेष	२,९३०–१०–०

उदाहरण २७

३१ दिसम्बर १९५० को, एक व्यापारी की पास-बुक मे १,६२८ रु० का अधिविकर्ष (overdraft) है। उस दिन रोकड़-वही देखने से यह पता लगा कि (१) १,६८२ रु० के चैक हुण्डी व ट्रेजरी बिल जो बक में दे दिये गये हैं, ३१ दिसम्बर १९५० तक क्रेडिट नहीं किये गये और (२) १,६५३ रु० के चैक जो बैंक पर लिखे गये थे, जनवरी के प्रथम सप्ताह तक भुगतान के लिये प्रस्तुत नहीं किये गये हैं।

३१ दिसम्बर १९५० को रोकड़-वही का बैंक-शेष निकालो।

३१ दिसम्बर, १९५० को रोकड़-बही के शेष की राशि

		रु०
पास-बुक का नाम शेष		१,६२८
जोड़ो	(+) लिखे हुये चैक जो बैंक में उपस्थित नहीं हुये	१,६५३
		३,२८१
घटाओ	(–) चैक इत्यादि जिनको खाते में क्रेडिट नहीं किया गया	१,६८२
रोकड़ी-वही में ओवर ड्राफ्ट	रु०	१,५९९

उदाहरण २८

३१ जनवरी १९५१ को, आपकी रोकड़-वही (cash book) में ५४३४ रु० १२ आ० बैंक शेष है। २ फरवरी तक ७६४ रु० ७ आ० ३ पा० के चैक व ड्राफ्ट जो बैंक में दिये गये थे क्रेडिट नहीं किये गये हैं; और ३१ जनवरी १९५१ तक, दो चैक जो ४०३ रु० ५ आ० ३ पा० व ३०१ रु० ८ आ० के दिये गये थे उपस्थित नहीं हुये।

बैंक द्वारा भुगतान किया हुआ २,००० रु० का एक देय बिल रोकड-वही में नहीं लिखा है, व एक ३,००० रु० का प्राप्य बिल जो बैंक से ३६ रु० ४ आने के बट्टे पर भुनाया था उसको आप रोकड़-वही में लिखना भूल गये हैं।

आप अपनी रोकड़-वही में बैंक के एक वाहरी चैक (outstation cheque) को एकत्रित करने का विनिमय (exchange) खर्च जो २ रु० ४ आ० है वह भी आप भूल गय हैं।

३१ जनवरी १९५१ की समाप्ति पर आपकी पास-बुक का शेष क्या होगा ?

रोकड़-वही (बैंक खाता)

१९५१		रु०	आ	पा	१९५१		रु०	आ	पा
जन० ३१	शेष नी/ला	५,४३४	१२	–	जन० ३१	देय बिल खाता	२,०००	–	–
	प्राप्य बिल खाता	२,९६३	१२	–		व्यापार खर्च खाता	२	४	–
						शेष आ/ले	६,३९६	४	–
		८,३९८	८	–			८,३९८	८	–

३१ जनवरी १९५१ को पास-बुक के शेष की राशि

रोकड़वही का शेष		६,३९६–४–०
घटाओ	(–) चैक व ड्राफ्ट जो जमा किये थे परन्तु एकत्रित नहीं हुये हैं	७६४–७–३
		५,६३१–१२–९
जोड़ो	(+) लिखे हुये चैक जो उपस्थित नहीं हुये हैं	७०४–१३–३
पास-बुक का जमा शेष	रु०	६,३३६–१०–०

उदाहरण २६

निम्न से बैंक-समाधान विवरण बनाओ।

३१ दिसम्बर १६५० को, सुन्दरलाल एण्ड सन्स की रोकड़-बही में बैंक शेष १०,५०० रु० (जमा) है, परन्तु निम्न कारणों से पास बुक में अन्तर है :—

(१) ए बी एण्ड कं० को लिखा हुआ ५४० रु० का एक चैक नं० ५१ अभी तक उपस्थित नहीं हुआ।

(२) ३०० रु० का एक अगली तिथि का चैक (post-dated cheque) रोकड़ बही के बैंक स्तम्भ में नाम हो गया है परन्तु किसी भी दशा में उसे उपस्थित करना सम्भव नहीं था।

(३) १,२०० रु० के चार चैकों का, जो बैंकों को भेजे गये हैं, संग्रह नहीं हुआ है, जब कि ४०० रु० का एक पाँचवाँ चैक जो बैंक में जमा किया गया था अस्वीकृत (dishonour) हो गया है।

(४) आदेशानुसार बैंक ने ५० रु० अग्नि बीमे की किस्त दे दी है, परन्तु रोकड़-बही में उसे नहीं लिखा गया है।

(५) बैंक ने एक बिल १,००० रु० का १५ रु० बट्टा (rebate) लेकर लौटा दिया (retired), परन्तु रोकड़ पुस्तक के बैंक स्तम्भ में हमने पूरी राशि जमा कर रक्खी है।

बैंक समाधान-विवरण
३१ दिसम्बर १६५०

		रु०
रोकड़-बही का शेष (जमा)		१०,५००
जोड़ो (+) अगली तिथि का चैक	३००	
चैक जिनका अब तक संग्रह नहीं हुआ है	१,२००	
अग्नि बीमा की दी हुई किस्त	५०	
अस्वीकृत चैक	४००	१,६५०
		१२,४५०
घटाओ (−) चैक जो उपस्थित नहीं हुये	५४०	
बिल लौटाने का बट्टा	१५	५५५
पास बुक का शेष (अधिविकर्ष)		११,८६५

उदाहरण ३०

एक कम्पनी प्रतिदिन अपनी सारी प्राप्तियाँ (receipts) बैंक में जमा करती है और सारे भुगतान (payments) बैंक द्वारा करती है। वह प्रतिदिन की समाप्ति पर पास-बुक व रोकड़-बही के शेषों को मिलाने के लिये बैंक-समाधान-विवरण बनाती है। २३ मार्च १६५१ को निम्न सूचनाओं से बैंक-समाधान-विवरण बनाइये :—

	रु०
रोकड़ बही का प्रारम्भिक शेष	१,६०,५६१
२३ तारीख का संग्रह जो बैंक में जमा किया	७,८३,३६७
२२ तारीख को लिखे चैक जिन्हें बैंक ने २३ को क्रेडिट किया	२०,६६३
२३ तारीख को लिखे चैक जिन्हें बैंक ने उस दिन क्रेडिट नहीं किया ..	१०,६६३
२३ तारीख को लिखे चैक	७,६१,३८१
पुरानी तिथियों के चैक जिन्हें बैंक ने २३ तारीख को डेबिट किया ...	८,३५३
२३ तारीख को लिखे चैक जिन्हें बैंक ने उस दिन डेबिट नहीं किया ...	२२,१६४
चैकों की कुल राशि जो २३ तारीख की प्रातः तक बैंक में उपस्थित नहीं हुए थे ..	२१,२६४
२३ तारीख को पास-बुक का प्रारम्भिक शेष	२,००,८६२

२३ तारीख की समाप्ति पर बैंक समाधान-विवरण बनाने से पूर्व उस दिन की पास-बुक व रोकड़-बही [illegible] होनी चाहिये जिससे अन्तिम शेष प्राप्त हो सके।

२३ मार्च १६५१ की रोकड़-बही

	रु०		रु०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	बैंक बाकी	[illegible]
	[illegible]		[illegible]

२३ मार्च १९५१ को पास बुक

	रु०		रु०
चैक	८,३५३	शेष नी/ला	२,००,८६२
चैक	७,३८,२१७	चेक आदि	२०,९६३
शेष आ/ले	२,४७,७१९	चेक आदि	७,७२,४३४
	९,९४,२८९		९,९४,२८९

बैंक-समाधान-विवरण
(२३ मार्च १९५१)

	रु०
पास-बुक का शेष	२,४७,७१९
जोड़ो (+) संग्रह जमा किया परन्तु क्रेडिट नहीं हुआ	१०,९६३
	२,५८ ६८२
घटाओ (–) लिखे हुए चैक जो उपस्थित नहीं हुये	४६,०७५
रोकड़ बही का शेष	२,१२,६०७

टिप्पणी—संग्रह के अन्तर्गत रोकड़ चैक, ड्राफ्ट व हुण्डी इत्यादि जो बैंक में जमा किये हैं आ जाते हैं। अत ऊपर दूसरे पद '२३ ता० का संग्रह बैंक में जमा किये' में चौथा पद '२३ को चैक दिये परन्तु बैंक ने उसी दिन क्रेडिट नहीं किया' सम्मिलित है।

उदाहरण ३१

निम्न विवरणों से बैंक-समाधान-विवरण बनाना है:—

		रु० आ० पा०
१.	३१ दिसम्बर १९५० को पास-बुक का शेष (ओवर ड्राफ्ट)	१०,२६६– ७–४
२	३१ दिसम्बर १९५० को लिखे गये चैक जो जनवरी १९५१ तक चुकता नहीं हुये हैं	१२०– ०–०
		१०,२११– ७–४
		६८१– २–८
		१,१२७–१५–४
३.	बैंक ओवरड्राफ्ट का व्याज जो रोकड़-वही में नहीं लिखा गया	१,५१०– ८–८
४.	३० दिसम्बर १९५० को बाहरी चैक बैंक में दिये जो जनवरी १९५१ में सग्रह व क्रेडिट किये गये	२१,०००– ०–०
५	३१ दिसम्बर १९५० को देय होने वाली एक हुण्डी, जो २९ दिसम्बर १९५० को बैंक मे सग्रह के लिये भेजी तथा रोकड़-वही में दर्ज कर ली गई थी, १ जनवरी १९५१ तक पास-बुक में क्रेडिट नहीं हुई	२,५००– ०–०
६.	३१ दिसम्बर १९५० को आदेशानुसार बैंक ने चैम्बर ऑफ कॉमर्स को चन्दा दिया जो रोकड़-वही में दर्ज नहीं किया	१००– ०–०

यह मानलो कि आप ३१ दिसम्बर १९५० को रोकड़ वही का शेष नहीं वदलते और सही करने की आवश्यक प्रविष्टि जनवरी ५१ में की जाती हैं।

बैंक-समाधान-विवरण
३१ दिसम्बर १९५०

पास-बुक का ओवरड्राफ्ट		१०,२६६ · ७–४
जोड़ो (+) लिखे हुए चैक जो उपस्थित नहीं हुये		१२,४४०– ९–४
		२२,७०७– ०–८
घटाओ (–) जमा किये चैक जो सग्रह नहीं हुये		२३,५००– ०–०
पास-बुक का क्रेडिट शेष		७९२–१५–४
जोड़ो (+) ओवरड्राफ्ट का व्याज	१,५१०– ८–८	
चैम्बर को चन्दा	[illegible]	

उदाहरण ३२

निम्न एक फर्म की रोकड़-वही (वैंक स्तम्भ) व वैंक पास-बुक से उद्धृत हैं, आपको इनसे ३१ दिसम्बर १९५० को वैंक-समाधान-विवरण वनाना है।

रोकड़-वही

१९५०		रु.	आ.	पा.	१९५१		रु.	आ	पा.
दिस. १	शेष नी/ला	४,५८१	–	–	दिस. २	मजदूरी	४८०	–	–
४	शान्ति प्रसाद	५१५	–	–	४	रोकड	१००	–	–
७	ब्राउन ब्रादर्स	१,०४८	–	–	६	आहरण (Drawings)	१,०००	–	–
६	गुप्ता ट्रेडिंग कं०	४४६	–	–	१४	तुलसीराम	२,८४१	–	–
११	मल्ला एण्ड कं०	१,२४१	–	–	१५	मजदूरी	५१०	–	–
२६	पीतमचन्द	६८०	–	–	२०	वैंक के खर्चे	२	–	–
३०	प्यारेलाल	२,०८८	–	–	३०	चेरी एण्ड कं०	४१०	–	–
३१	सी. जेकब	८४७	–	–	३१	वेतन	३५०	–	–
						मजदूरी	४६०	–	–
						हण्टर एण्ड कं०	१,०१२	–	–
						शेष आ/ले	४,५५४	–	–
		११,७४६	–	–			११,७४६	–	–

वैंक पास-बुक

१९५१		रु.	आ.	पा.	१९५१		रु.	आ	पा.
जन. १	आहरण	५००	–	–	जन. १	शेष नी/ला	२,०६१	–	–
	पीतमचन्द के ड्राफ्ट का विनिमय	२	–	–		पीतमचन्द	६८०	–	–
२	हण्टर एण्ड कं०	१,०१२	–	–		सी० जेकब	१४७	–	–
	पी. चार्ल्स	४८०	–	–	३	दामोदरदास	४६७	–	–
३	दामोदरदास के चेक पर विनिमय	१	–	–	४	प्यारेलाल	२,०८८	–	–
	अदत्त (unpaid) ड्राफ्ट (सी० जेकब)	८४७	–	–	६	शान्तिप्रसाद	४८७	–	–
	चेरी एण्ड कं०	४१०	–	–					
७	मजदूरी	५१०	–	–					

वैंक-समाधान-विवरण

(३१ दिसम्बर १९५०)

प्रथम पद्धति

	रु.	रु.
पास-बुक का बैंक शेष		२,०६१
जोड़ो (+) जमा किये चैक जिनका भुगतान नहीं हुआ :—	रु.	
पीतमचन्द	६८०	
प्यारेलाल	२,०८८	
सी० जेकब	८४७	३,९१५
		५,९७६
घटाओ (–) चैक जो जारी किये, पर भुगतान नहीं हुए		
चेरी एण्ड कं०	४१०	
हण्टर एण्ड कं०	१,०१२	१,४२२
रोकड़ बही का बैंक शेष	रु.	४,५५४

द्वितीय पद्धति

रोकड़-वही का बैंक शेष		४,५५४
जोडो (+) लिखे हुए चैक जो उपस्थित नहीं हुये :—		
चेरी एण्ड कं०	४१०	
हण्टर एण्ड क०	१,०१२	१,४२२
घटाओ (–) जमा किये चैक जिनका संग्रह नहीं हुआ :—		५,९७६
पीतमचन्द	९८०	
प्यारेलाल	२,०८८	
सी० जेकब	८४७	३,९१५
पास-बुक का बैंक शेष	रु०	२,०६१

रोकड़ वही की सहायक वहियाँ
(Books subsidiary to the Cash Book)

रोकड़ वही किसी व्यापार के तमाम रोकड़ा और बैंक व्यवहारो का लेखा करने के लिये होती है। परन्तु जब रोकड़ प्राप्ति और भुगतान एक प्रकृति के अनेक होते हैं, तो यदि ऐसे प्राप्तियो और भुगतानो को पहले अलहदा वहियो मे और तत्पश्चात् जोड़ से रोकड़ वही मे लिखे तो रोकड़ वही से अधिकांश प्रविष्टियाँ कम हो जायेगी। ऐसी प्राप्तियो और भुगतानो मे प्राय: निम्न गिनाये जा सकते हैं :—खिड़की पर माल की बिक्री से प्राप्त रोकड़, उधार पर जिन ग्राहको को माल बेचा गया है उनसे संग्रह किया गया रुपया, लघु रोकड़ के भुगतान, और चुकाई गई मजदूरी एवं वेतन। अत: निम्नलिखित वहियाँ, जिनको 'रोकड़ वही की सहायक' (Subsidiaries to the Cash Book) कहा जा सकता है, ऐसी प्राप्तियो और भुगतानो को लिखने के लिये स्तैमाल की जा सकती है :—

(१) रोकड़ी विक्रय वही (Cash Sales Book) —

खेरीज स्टोर्स जैसे एक व्यापार मे, छोटी छोटी रकमो के नगद विक्रयो की संख्या बहुत अधिक होती है; और, यदि इन सबको रोकड़ वही मे लिखा जावे, तो प्रतिदिन छोटी छोटी रकमो के लिये अनेक प्रविष्टियाँ करनी पड़ें। अत: ऐसी दशा मे एक अलग वही, जिसे 'रोकड़ी विक्रय वही' कहते है, ऐसे सब रोकड़ी विक्रयो का लेखा रखने के लिये लाभ सहित रखी जा सकती है। इसके आवधिक (दैनिक या साप्ताहिक) जोड़ रोकड़ वही की नाम तरफ ले जाये जायेंगे और वहाँ से उनको खाता वही मे खुले हुये विक्रय खाते के जमा मे खताया जायगा।

लेकिन जहाँ कोई व्यापारी प्रत्येक रोकड़ी विक्रय के लिये कैशमीमो दिया करता है, तो ऐसे कैशमीमो की कारबन प्रतियाँ ही स्वयं एक 'रोकड़ी विक्रय वही' का कार्य कर सकते हैं और फिर उस आशय के लिये एक अलहदा वही रखना आवश्यक न होगा। प्रत्येक दिन के अन्त में, कैशमीमो की कारबन नकलो का जोड़ लगाया जा सकता है और तत्पश्चात् उसे दैनिक रोकड़ी विक्रय के रूप मे रोकड़ वही की नाम तरफ दर्ज किया जा सकता है।

साधारणत: रोकड़ी विक्रयो के सम्बन्ध मे व्यक्तिगत खातों का कोई लेखा आवश्यक नहीं होता; परन्तु कभी-कभी ऐसा लेखा रखना आवश्यक हो जाता है, जैसे, जब किसी ग्राहक को, यदि उसकी खरीद (उधार व रोकड़ी दोनो) एक निश्चित सीमा से अधिक हो जाय, निर्धारित छूट या कोई अन्य रियायत दी जावे। कोई भी कारण हो, यदि, एक रोकड़ी विक्रय के लिये व्यक्तिगत खाता खोला जाता है तो इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि वह मद खाते के दोनों तरफ दिखाई जावे, अन्यथा उसे

रोकड़ी विक्रय वही (Cash Sales Book) की लाइने (Ruling) सूचना की उस मात्रा पर निर्भर करती हैं जो उसमें दर्ज करना आवश्यक समझा जाय। लेकिन प्रत्येक दशा में तारीख, बेचे हुये माल के विवरण और रकम के लिये उसमें स्थान होना चाहिये।

(२) उधार-संग्रह-वही (Credit Collection Book) :—

एक बड़े व्यापार में उन ग्राहकों से, जिनको माल उधार पर बेचा गया है, प्राप्त हुई रोकड़ के सम्बन्ध में रोकड़ वही की नाम तरफ हमेशा बहुत सी प्रविष्टियाँ होंगी। अतः रोकड़ वही में ऐसी प्रविष्टियों की संख्या घटाने के लिये, एक अलहदा वही, जिसे 'उधार संग्रह वही' कहते है, ग्राहकों से प्राप्त हुई रोकड़ और उनको दी हुई छूटों का लेखा रखने के हेतु प्रयोग की जा सकती है। इस पुस्तक की लाइनें इस प्रकार हो सकती हैं :—

उधार-संग्रह वही

तारीख	नाम	रसीद संख्या	खा० व० पृ०	छूट			रोकड़		
				रु०	आ.	पा.	रु०	आ.	पा.

इस वही में प्रगट की गई प्रत्येक प्रविष्टि सम्बन्धित व्यक्तिगत खाते की जमा में खताई जावेगी। इसका आवधिक जोड़ प्रतिदिन, प्रति सप्ताह या प्रतिमाह, जैसे भी सुविधाजनक हो, रोकड़ वही की नाम तरफ ले जाया जावेगा।

(३) फुटकर रोकड़ वही (Petty Cash Book) :—

लगभग प्रत्येक व्यापार में अनेक छोटे छोटे भुगतान होते हैं और उन सबों को रोकड़ वही में दर्ज करने में अनावश्यक कार्य बढ़ता है। अतः एक अलहदा वही, जिसे 'फुटकर रोकड़ वही' कहते हैं, छोटे-छोटे भुगतानों की अनेक प्रविष्टियों के अत्यधिक भार से रोकड़ वही को मुक्त करने के लिये प्रयोग की जाती है। फुटकर रोकड़ वही प्रायः एक जूनियर क्लर्क के जिम्मे कर दी जाती है, जिसे फुटकर रोकड़िया (Petty Cash Clerk) कहते हैं। इस पर देख-भाल रखी जाती है और इसके जोड़ एवं हस्तस्थ वास्तविक रकम (Actual Cash in hand) समय-समय पर फुटकर रोकड़ वही से मिलाई जाती है।

(Petty Cash) फुटकर रोकड़ वही में, जिसमें फुटकर रोकड़िया को अपने व्यवहारों का सही लेखा करना चाहिये, प्रायः इस तरह से खाते बनाये जाते हैं जिस तरह के खातों का नाम पड़ने की संभावना है। इससे हिसाब करने में समय और फुटकर व्यय का वर्गीकरण करना सम्भव हो जाता है और इस प्रकार समय व श्रम की बचत होती है।

पेशगी प्रथा (Imprest System) :—इस प्रथा के अन्तर्गत फुटकर रोकड़िया को [illegible] के आरम्भ में एक निश्चित रकम, जो अनुमान से फुटकर खर्चों के लिये काफी समझी जाय, दे दी जाती है और इसका लेखा रोकड़ वही की जमा तरफ 'फुटकर रोकड़' (By Petty Cash) के रूप में किया जाता है। फुटकर रोकड़िया इस रकम को फुटकर रोकड़ वही के नाम तरफ 'रोकड़ खाते' में [illegible]

(To Cash Account) के रूप मे दिखाता है; फुटकर रोकड़िया को चाहिये कि वह तमाम छोटे भुगतान इस पेशगी रकम से करे और उनको फुटकर रोकड़ बही की जमा तरफ लिखे। प्रत्येक भुगतान की रकम तुरन्त ही सम्बन्धित खाने मे लिखना चाहिये।

फुटकर रोकड़िया के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने द्वारा किए गए प्रत्येक भुगतान का वाउचर प्राप्त कर ले। लेकिन अनेक छोटी मदो के लिए प्राप्तकर्त्ताओ से रसीद लेना लगभग असम्भव होता है अत. प्राय यह प्रथा अपनाई जाती है कि पहले एक फुटकर रोकड़ी वाउचर पर किसी उत्तरदायी अधिकारी के हस्ताक्षर करा लिए जाते है और तत्पश्चात् इसके आधार पर भुगतान कर दिए जाते हैं। प्राप्तकर्त्ता से भी वाउचर पर हस्ताक्षर करा लिए जाते है। यदि प्राप्तकर्त्ता अपढ़ है तो उसके अँगूठे की निशानी वाउचर पर ले ली जावेगी।

महीने के अखीर मे या जब पेशगी की रकम लगभग समाप्त हो जाती है, फुटकर रोकड़िया अपनी फुटकर रोकड़ बही और सारे वाउचर रोकड़िया के पास लाता है। तब रोकड़िया फुटकर रोकड़ बही की प्रविष्टियो को जॉचता है और फुटकर रोकड़िया को उसके द्वारा खर्च की गई रकम लौटा देता है। इस प्रकार अगले महीने के लिए पेशगी उतनी ही हो जाती है जो चालू माह के प्रारम्भ मे थी। इस वापसी की रकम रोकड़ बही की जमा तरफ उपयुक्त आय-व्यय खातो (Nominal Accounts) के शीर्षक से दर्ज की जायगी और तत्पश्चात् खाता बही मे खुले हुए इन आय-व्यय खातो के नाम की तरफ खताई जावेगी।

यह ध्यान रखना चाहिए कि फुटकर रोकड़िया के हाथ मे जो रोकड़ है वह रोकड़ी शेष का ही एक भाग है, अतः तलपट और चिट्ठे मे रोकड़ी शेष दिखाते समय उसे इसमे शामिल कर लेना चाहिए।

यह भी न भूलना चाहिए कि फुटकर रोकड़ बही रोकड़ बही की भाँति प्रारम्भिक लेखे की बही नहीं है। वह रोकड़ बही की शाखा है और प्राप्त हुई फुटकर रोकड़ तथा उसमे से दिए गए छोटे भुगतानो का विवरण मात्र दर्ज करती है। फुटकर रोकड़ बही के खानों के जोड़ खातावही मे नहीं खताए जाते अपितु उनको पहले रोकड़ बही की जमा तरफ प्रविष्ट करते है और तत्पश्चात् उनको इसमे से खातावही मे खताया जाता है।

उदाहरण ३३

निम्न लेन-देनों को रोकड़ बही व फुटकर रोकड़-बही में लिखो और खाता-बही में खतियाओ :—

१ जनवरी १९५१ को, १०० रु० फुटकर रोकड़िया को दिये गये जिसने निम्न भुगतान किये :—

जनवरी २ लेखन सामग्री २ रु० ८ आ० ; डाक ३ रु० १२ आ० ; छपाई १० रु०
७ ताँगा खर्च २ रु० ४ आ० ; कुली की मजदूरी ३ रु० ८ आ० ; तार व्यय २ रु० ४ आ०
१२ ठेला किराया १ रु० १२ आ० ; स्याही खर्च २ रु० १० आ० ; विज्ञापन २ रु० ८ आ०
२० साबुन १ रु० २ आ० ; कुली की मजदूरी २ रु० ४ आ०
२५ तार ३ रु० ४ आ० ; ताँगा किराया १ रु० ४ आ०
२६ मुद्रण ५ रु० ; ठेला किराया ४ रु० ८ आ०
२७ डाक व्यय ३ रु० ४ आ० ; रेलवे किराया १२ रु० ८ आ०
३१ भंगी की मजदूरी २० रु० ; चौकीदार की मजदूरी १२ रु०

फुटकर रोकड़ बही

[illegible]			तिथि	विवरण	पृ० सं०	कुल भुगतान			मुद्रण व लेखन सामग्री			डाक व्यय व तार			मजदूरी			वाहन व्यय आदि			फुटकर खर्च		
रु०	आ	पा	१९४१			रु०	आ	पा	रु०	आ	पा	रु०	आ.	पा.	रु०	आ.	पा	रु०	आ.	पा	रु०	आ.	पा.
१००	—	—	जन० १	रोकड़ खाता																			
			२	लेखन सामग्री		२	८	—	२	८	—												
				डाक व्यय		३	१२	—				३	१२	—									
				मुद्रण		१०	—	—	१०	—	—												
			७	तांगा किराया		२	४	—										२	४	—			
				कुली की मजदूरी		३	८	—							३	८	—						
				तार		२	४	—				२	४	—									
			१२	ठेला किराया		१	१२	—										१	१२	—			
				स्याही		२	१०	—	२	१०	—												
				विज्ञापन		२	८	—													२	८	—
			२०	साबुन		१	२	—													१	२	—
				कुली की मजदूरी		२	४	—							२	४	—						
			२५	तार		३	४	—				३	४	—									
				तांगा किराया		१	४	—										१	४	—			
			२६	मुद्रण		५	—	—	५	—	—												
				ठेला किराया		४	८	—										४	८	—			
			२७	डाक व्यय		३	४	—				३	४	—									
				रेलवे किराया		१२	८	—										१२	८	—			
			३१	भंगी की मजदूरी		२०	—	—							२०	—	—						
				चौकीदार की मजदूरी		१२	—	—							१२	—	—						
				शेष नी/ले		३	१२	—															
१००	—	—				१००	—	—	२०	२	—	१२	८	—	३७	१२	—	२२	४	—	३	१०	—
३	१२	—	फरवरी १	शेष आ/ला																			
९६	४	—		रोकड़ खाता																			

रोकड़ बही (जमा)

तिथि	विवरण	खा० व० पृ०	बट्टा रु०	आ.	पा.	रोकड़ रु०	आ	पा	बैंक रु०	आ	पा.
१९५१											
जन० १	फुटकर रोकड़ खाता					१००	–	–			
३१	मुद्रण व लेखन सामग्री					२०	२	–			
	डाक व्यय व तार					१२	८	–			
	मजदूरी					३७	१२	–			
	वाहन व्यय					२२	४	–			
	विविध व्यापार खर्च					३	१०				

मुद्रण व लेखन सामग्री खाता

तिथि	विवरण	रु०	आ	पा				
१९५१								
जन० ३१	रोकड़	२०	२	–				

डाक व्यय व तार खाता

तिथि	विवरण	रु०	आ	पा				
१९५१								
जन० ३१	रोकड़	१२	८	–				

मजदूरी खाता

तिथि	विवरण	रु०	आ	पा				
१९५१								
जन० ३१	रोकड़	३७	१२	–				

वाहन खाता

तिथि	विवरण	रु०	आ.	पा				
१९५१								
जन० ३१	रोकड़	२२	४	–				

विविध व्यापार खर्च खाता

तिथि	विवरण	रु०	आ	पा				
१९५१								
जन० ३१	रोकड़	३	१०	–				

(४) मजदूरी वही (Wages Book) :—

एक निर्माणी व्यापार में काम पर लगाए गए मजदूरों की संख्या प्राय. बड़ी होती है; अत: गलती और धोखे से बचने के लिए यह आवश्यक है कि मजदूरियो का लेखा एक नियमित ढंग से किया ज य।

सबसे अच्छा ढंग तो एक विशेष वही, जिसे 'मजदूरी वही' कहते है, रखना है जिसमे प्रत्येक मजदूर का विवरण लिख लेना चाहिए। प्रत्येक मजदूर को एक कार्ड दिया जाता है जिस पर काम करने के घंटे (यदि उसे समय के अनुसार भुगतान किया जाता है), किया गया कार्य (यदि उसे कार्यानुसार भृत्ति पद्धति पर रखा गया है), जुर्माने (यदि कोई हो), उसे दी गई पेशगी (यदि कोई है), उसकी मजदूरी की दर और उससे सम्बन्धित अन्य कोई सूचना नोट की जा सकती है। महीने के अन्त में इन कार्डों को इकट्ठा कर लिया जाता है जिससे मजदूरी वही के बनाने के लिए आवश्यक

सूचना मिल सके। इसके पश्चात् एक व्यक्ति तो मजदूरी वही तैयार करता है, दूसरा जाँचता है और किसी उत्तरदायी अधिकारी के सामने मजदूरियाँ चुकाई जाती है।

मजदूरी वही मे निम्न बाते होगी—

मजदूरो की क्रम सख्या, उनके नाम, मजदूरी की दर, महीने मे लगाया गया समय या किया गया कार्य, जुर्माना, कुल मजदूरी और दी जाने वाली असल मजदूरी।

जब कभी मजदूरी चुकाई जाये, मासिक या पाक्षिक, मजदूरी वही का जोड़ रोकड़ वही की जमा तरफ दर्ज किया जायगा और वहाँ से खातावही मे मजदूरी खाते के नाम की ओर खताया जायगा।

(५) वेतन वही (Salary Book) :—

किसी व्यापारिक गृह के स्टॉफ के सदस्यो को चुकाए गए वेतन का विस्तृत विवरण रखने के लिए वेतन वही (जिसे Acquittance Roll भी कहते हैं) बनाना आवश्यक है। इसमे प्रत्येक कर्मचारी का नाम, वेतन की मासिक दर, कटने वाले टैक्स की रकम (यदि कोई हो), लिया गया अग्रिम (यदि कोई हो), अन्य कटौतियाँ और दी जाने वाली असल रकम लिखी जाती है। वेतन मिलने पर प्रत्येक कर्मचारी से वेतन वही में उसके नाम के सामने हस्ताक्षर कराए जाते हैं।

जब वेतन चुका दिए जाते है तो वेतन वही का जोड़ रोकड़ वही की जमा तरफ लिखा जायगा और वहाँ से उसे खातावही मे खुले वेतन खाते के नाम खताया जायगा।

प्रश्न

१. जर्नल को कौन-कौनसी प्रारम्भिक लेखे की पुस्तकों में विभाजित किया जाता है? इस प्रणाली से क्या लाभ है?

२. आप एक त्रि-स्तम्भीय रोकड़ वही को खाता-वही में कैसे खतियाओगे?

३. रोकड़-वही की प्रविष्टियों की सत्यता जाँचने में कौन-कौन से वाउचर सहायता देते हैं?

४. यदि आप रोकड़-वही के बैंक शेष की बैंक पास-बुक के शेष से तुलना करते समय दोनों में समेल न पायें तो आप पास बुक को या बैंक की रोकड़-वही को ठीक करने के लिये क्या करेंगे और आपको क्या-क्या मुख्य अन्तर मिलने की सम्भावना है?

५. किन परिस्थितियों में आप रोकड़ी-विक्रय-वही व उधार-संग्रह-वही का प्रयोग करने की सम्मति देंगे?

६. फुटकर-रोकड़-वही के अन्तर्गत आप पेशगी प्रथा से क्या अर्थ समझते हैं? फुटकर रोकड़-वही का रोकड़ वही से क्या सम्बन्ध है?

७. जर्नल के नाम वाले स्तम्भ में लिखे पद खातावही मे खुले हुये खातों में नाम की ओर ही क्यों लिखे जाते हैं जबकि रोकड़-वही में नाम की ओर के पद खातों में जमा की ओर लिखे जाते हैं? पूरी तरह समझाइये।

८. निम्न को-त्रिस्तम्भीय रोकड़ वही में लिखिये:—

१९५१

जून १ व्यापारी द्वारा व्यापार प्रारम्भ करने के लिये दिये गये ३,००० रु० में से २,००० रु० बैंक में व शेष कार्यालय की तिजोरी में रक्खे गये।

२ [illegible] के प्रति उधार माल खरीदने के ३७५ रु० का हिसाब देय था जिसे ७½% नकद बट्टा घटाकर चैक द्वारा चुका दिया।

३ ३७५ रु० का माल खरीदा, ७½% व्यापारिक बट्टा काटकर रोकड़ा चुका दिया।

४ ४०० नकद बिक्री, जिसमें से ३०० रु० बैंक में जमा किये।

[illegible] चैक द्वारा चुकता किया जो बैंक में जमा हुआ।

५ [illegible] रु० की मजदूरी चैक द्वारा चुकाई

[illegible] नकद खरीदी

[illegible]

[illegible] ([illegible] Accounts) [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

९. निम्न लेन देनों से एक त्रि-स्तम्भ रोकड़-पुस्तक तैयार करो और शेष निकाल कर उसे खाता-बही में खतियाओ —

१९५१

जनवरी १ रोकड़ हस्ते १,५०० रु० ; बैंक ओवरड्राफ्ट ७२० रु०
अफजलहुसैन से रोकड़ा प्राप्त हुए १९० रु०, बट्टा दिया १० रु०
२ बैंक में जमा किये १,४५० रु०
३ चमनलाल को एक चैक लिखा (१५ रु० बट्टा काटकर) २३५ रु०
४ २,७०० रु० का एक चैक मामचन्द से प्राप्त हुआ (३०० रु० बट्टा देकर) और बैंक में जमा किया
५ ८०० रु० बैंक से रोकड़ा निकाले
३०० रु० नकद मजदूरी दी, नकद खरीद ३०० रु०
६ बैंक ने मामचन्द का अप्रतिष्ठित चैक लौटा दिया
७ १२५ रु० नगरपालिका-कर नकद दिया
८ ४८० रु० का एक बैंक ड्राफ्ट चिरंजीलाल से प्राप्त हुआ ; बट्टा २० रु०
यह ड्राफ्ट बैंक में जमा किया
१० २,७०० रु० की एक दर्शनी हुण्डी मामचन्द से प्राप्त हुई जिसका भुगतान हो गया
११ १,४५० रु० वर्मा स्टोर को रोकड़ा दिये ; बट्टा ५० रु०
१२ १५० रु० वेतन चैक द्वारा चुकाया

उत्तर : रोकड़ का शेष १,५६५ रु० ; बैंक का शेष २५ रु०

१०. निम्न विवरणों से शर्मा ट्रेडिंग कं० की अप्रैल १९५१ के लिये रोकड-बही तैयार करो व खाता बही में खतियाओ :—

१९५१

अप्रैल १ रोकड़ हस्ते १७४ रु० ८ आ० ; बैंक ओवर ड्राफ्ट ३६४ रु० २ आ०
२ नकद बिक्री ४२४ रु० ९ आ० ३ पा० ; बैंक में रोकड़ी जमा किये १५० रु०
४ जैक्सन एण्ड क० को १४१ रु० ४ आ० चैक द्वारा दिये
५ ८१३ रु० का एक चैक ज्योतिप्रसाद से प्राप्त हुआ व बैंक में जमा किया
६ नकद वेतन दिया २४५ रु० ; नकद माल खरीदा ११० रु०
८ १६० रु० बैंक से कार्यालय के खर्च के लिये निकाले
१० नकद बिक्री २१ रु० ८ आ० ३ पा० ; नकद मजदूरी दी १२० रु०
१२ ३६१ रु० का एक चैक सुमेरचन्द से प्राप्त हुआ ; बट्टा ९ रु०
यह चैक बैंक में जमा किया
१५ सी० ब्राउन को एक चैक भेजा १६५ रु० ८ आ०
१८ २६५ रु० ज्योतिप्रसाद से रोकड़ा प्राप्त हुये ; बट्टा दिया ५ रु०
२० १६० रु० का फर्नीचर रोकड़ा खरीदा
२२ २५० रु० बैंक से निकाले ; विज्ञापन-व्यय रोकड़ा दिये ५३ रु० १२ आ० ६ पा०
२५ २४५ रु० का चैक माताप्रसाद से प्राप्त हुआ व बैंक मे जमा किया
२८ माताप्रसाद का चैक बैंक से विना भुगतान लौट आया
३० १६० रु० रोकड़ा वेतन चुकाया
१०० रु० बैंक में कार्यालय-रोकड़ा जमा किये

उत्तर : रोकड़ का शेष १९६ रु० १३ आ० ; बैंक का शेष ३४३ रु० २ आ०

११. ३१ मार्च १९५१ को, एक व्यापारी की रोकड़-बही में ६,६९९ रु० का बैंक खाते में डेबिट शेष है। पास-बुक को जाँचने से निम्न अन्तर पता लगे :—

(१) १२५ रु० ३ आना ६ पा० के बैंक पर लिखे गये चैक अभी तक भुगतान के लिये उपस्थित नहीं हुये और एक ७४४ रु० १४ आ० का ट्रेजरी आर्डर जो बैंक में संग्रह के लिये जमा किया गया था अभी तक संग्रह व क्रेडिट नहीं हुआ।

(२) ५ रु० का बैंक व्यय व ६०० रु० का एक देय बिल जो बैंक ने चुकता कर दिया है पास-बुक में लिखा है परन्तु रोकड-बही में नहीं लिखा।

उपर्युक्त विवरण से बैंक समाधान विवरण तैयार करो।

उत्तर : पास-बुक का शेष ६,४७४ रु० ५ आ० ६ पा०

१२. निम्न विवरणों से ३१ दिसम्बर १९५० को ए की पास-बुक का शेष दिखाते हुये एक विवरण (Statement) बनाइये :—

(१) ३१ दिसम्बर १९५० को रोकड़-बही में ओवरड्राफ्ट ६,३४० रु०

(२) ३१ दिसम्बर १९५० को छः माह का ओवरड्राफ्ट का ब्याज (१६० रु०) रोकड़-बही में नहीं लिखा गया।

(३) उपर्युक्त काल के लिये बैंक खर्चे (३० रु०) जो पास-बुक में डेबिट कर दिये हैं परन्तु रोकड़-बही में नहीं लिखे गये।

(४) १,१६८ रु० के चैक जो ३१ दिसम्बर १९५० तक चुकता नहीं हुये हैं।

(५) २,१७० रु० के चैक, ड्राफ्ट व हुण्डी आदि जो बैंक में जमा किये थे उनका ३१ दिसम्बर १९५० तक संग्रह नहीं हुआ।

(६) १,२०० रु० का विनियोगों का ब्याज जो बैंक द्वारा संग्रह व क्रेडिट कर दिया गया है, रोकड़-बही में नहीं दिखाया गया।

उत्तर : बैंक ओवरड्राफ्ट ६,३३२।

१३. निम्न एक रोकड-बही के बैंक स्तम्भ से उद्धृत किया गया है :—

१९५१		रु०	आ.	पा.	१९५१		रु०	आ	पा.
	आ/ले	१५,२४३	–	–		आ/ले	६,२४२	–	–
जून २७	अब्दुल्ला एण्ड सन्स	३,४००	–	–	जून २३	मजदूरी	६५०	–	–
	ओमप्रकाश	७२१	–	–	२७	जेकब एण्ड सन्स	४८२	–	–
२८	आशाराम*	८३१	–	–		रामप्रसाद	३६७	–	–
	सी० ब्राउन*	९७५	–	–	२९	टेलीफोन खर्च	१०९	–	–
३०	भार्गव स्टोर्स	१,१०७	–	–		हुसैन एण्ड कं०*	४६५	–	–
					३०	किराया	२५०	–	–
						श्यामसुन्दर*	६३७	–	–
						फूलचन्द*	३२०	–	–
						आहरण	५००	–	–
						शेष आ/ले	६,२५५	–	–
		२२,२७७	–	–			२२,२७७	–	–

बैंक पास-बुक का शेष ८,८०१ रु० है, और रोकड़ बही का पास-बुक से मिलान करने पर यह पता लगा कि चिन्हित पद पास-बुक में नहीं लिखे गये हैं। बैंक-समाधान-विवरण बनाइये।

१४. ३१ मार्च १९५१ को, एक व्यापारी को अपनी पास-बुक का रोकड़-बही से मिलान करने पर पता चला कि निम्न पदों के अतिरिक्त सब पद ठीक हैं :—

(१) १,१७२ रु० १४ आ० के लिखे हुये चैक बैंक में उपस्थित नहीं हुये हैं

(२) १७५ रु० का एक बाहरी (outstation) चैक जो पहले दिन जमा किया था पास-बुक में दर्ज नहीं किया गया

(३) पास-बुक में ओवरड्राफ्ट का ब्याज (७१ रु० १० आ०) लिखा है परन्तु रोकड़ बही में नहीं लिखा गया

(४) मार्च में व्यापारी ने एक १,२०० रु० का विनिमय-पत्र बैंक में भुनाया व रोकड़ बही में यह राशि (१,२०० रु०) लिख ली गई परन्तु पास-बुक में केवल १,१९८ रु० ११ आ० ४ पा० ही क्रेडिट किये गये हैं

३१ मार्च १९५१ को व्यापारी की रोकड़ बही में [illegible] रु० १२ आ० का ओवरड्राफ्ट है।

बताइये (i) कि उस दिन पास-बुक में क्या शेष होगा और (ii) आवश्यक प्रविष्टियाँ करने के बाद रोकड़-बही में क्या शेष होगा ?

उत्तर : (i) [illegible] (ii) [illegible]

[illegible] ३१ दिसम्बर १९५० को [illegible]

जाँचने के पश्चात् पता लगा कि—

(१) बैंक खर्च १५ रु०, रोकड़-बही में अभी नहीं लिखे गये हैं।

(२) श्री एक्स से प्राप्त ७५० रु० का एक चैक जो बैंक में संग्रह के लिये जमा किया गया था, ३१ दिसम्बर १९५० से पूर्व ही अस्वीकृत हो गया, परन्तु रोकड़-बही में अभी तक उस पर ध्यान नहीं दिया गया है।

(३) एक ५७५ रु० का बाहरी (out-station) चैक जो रोकड़-बही में बैंक स्तम्भ में जमा किया गया है, अभी तक संग्रह व क्रेडिट नहीं हुआ।

(४) १,००० रु० का भुनाया हुआ बिल रोकड-बही में सम्पूर्ण राशि से लिखा है जबकि बैंक ने ३० रु० बट्टे खर्च के काटे है।

(५) लेनदारों को १,८२० रु० के लिए लिखे गये चैक अभी तक बैंक में भुगतान के लिये उपस्थित नहीं हुये है।

रोकड़ बही में आवश्यक समायोजक (Adjustment) करने के पश्चात् बैंक-समाधान विवरण बनाओ।

उत्तर : पास-बुक का शेष ६,८२० रु०

१६. निम्न विवरणों से एक व्यापारी की मई १९५१ के लिये एक फुटकर-रोकड़-बही बनाओ। माह के प्रारम्भ में फुटकर-रोकडिया के पास प्रचलित प्रथा के अनुसार १०० रु० थे।

मई	२	डाक व्यय ५ रु० ८ आ०; तार २ रु० ४ आ०; लेखन सामग्री ५ रु०
	७	ठेला किराया १ रु० २ आ०; स्याही १ रु० ४ आ०; ताँगा किराया १ रु० ८ आ०
	१०	साबुन ४ आ०; कुली की मजदूरी २ रु० ६ आ०; रेलवे किराया ६ रु० ४ आ०
	१६	ताँगा किराया ३ रु० ४ आ०; कुली की मजदूरी ३ रु०
	२०	डाक-व्यय २ रु० ४ आ०; मुद्रण ७ रु० ८ आ०
	२५	तार २ रु० १ आ०; लेखन सामग्री २ रु०
	२७	वाहन भाड़ा ५ रु०; सफाई २ रु० ४ आ०; लेखन सामग्री ३ रु० ४ आ०
	३१	भंगी की मजदूरी १६ रु०; चौकीदार की मजदूरी २० रु०

१७. ए द्वारा प्राप्त निम्न सूचना से ३१ दिसम्बर १९५० को पास-बुक का शेष निकालो :—

३१ दिसम्बर १९५० को रोकड़-बही में बैंक से २३४ रु० ६ आ० ६ पा० अधिक निकास रक्खे हैं। बैंक ने २३ रु० २ आ० ६ पा० ब्याज के व २ रु० ४ आ० खर्चे के वसूल किये, परन्तु उसको यह सूचना रोकड़-बही के बन्द करने पर मिली। बैंक ने २५० रु० विनियोगों के ब्याज का संग्रह किया जो उसके पास सुरक्षित है, परन्तु इसकी सूचना भी रोकड़-बही बन्द करने पर प्राप्त हुई। बैंक में जमा किये हुये निम्न चैकों का वर्ष के अन्त तक संग्रह नहीं किया गया है; पी० एण्ड सी० २३४ रु० ६ आ० ९ पा०, राम ब्रॉदर्स ५४३ रु० ८ आ० ३ पा०, व सोहराबजी १७३ रु० ६ आ०। लिखे हुये चैक जो उपस्थित नहीं हुये हैं —शंकर एण्ड क० ४२८ रु० ९ आ० ३ पा०, डविड ब्रादर्स ६४३ रु० ८ आ० ३ पा० व गोविन्दलाल ३४ रु० ५ आ० ९ पा०।

उत्तर :— पास-बुक का क्रेडिट शेष १४५ रु० २ आ० ३ आ०

१८. एक फर्म के खजान्ची ने १५ फरवरी १९५१ को रोकड़-बही बन्द की। रोकड़-बही का शेष १,९८४ रु० ६ आ० ६ पा० है परन्तु वास्तव में रोकड़ा १,८७५ रु० ८ आ० तिजोरी में हैं। रोकड़ बही को जाँचने के पश्चात् यह पता लगा कि—

(१) पहले दिन का शेष जो १,४१३ रु० ७ आ० ६ पा० था १,४३७ रु० ६ आ० लिख लिया है।

(२) ५७१ रु० की नकद बिक्री रोकड बही में ५१७ रु० की लिखली गई है।

(३) २०० रु० के खरीदे हुये माल का भुगतान करते समय २० रु० बट्टा मिला परन्तु रोकड़-बही में भुगतान २०० रु० ही दिखलाया है।

(४) रोकड़-बही की क्रेडिट की ओर ९ रु० कम जोड़े गये हैं।

(५) बैंक में जमा की हुई १५० रु० की बैंक-राशि रोकड-बही में नहीं लिखी गई।

उपर्युक्त त्रुटियों को ठीक करने के लिये रोकड बही में आवश्यक समयोजक (Adjusting) प्रविष्टियाँ कीजिये व शेष निकालिये।

उत्तर. रोकड़-बही का शेष १,८७५ रु० ८ आ०

अध्याय—८

जर्नल का विभाजन—अन्य सहायक पुस्तकें

क्रय वही (Purchases Book)

क्रय वही, जिसे क्रय दैनिक वही या बीजक वही (Purchases Day Book or Invoice Book) भी कहते हैं, उधार पर खरीदे हुए माल का लेखा करने के लिये रखी जाती है न कि रोकड़ी खरीदे हुये माल का लेखा करने के लिये। लेकिन, जब कभी उस व्यक्ति का, जिससे रोकड़ी क्रय किया गया है, एक खाता रखना आवश्यक समझा जावे, तो रोकड़ी क्रय भी इस वही मे दर्ज की जा सकती हैं।

जब माल खरीदा जाता है, तो खरीदे जाने वाले माल का विवरण बतलाते हुये एक लिखित आदेश सप्लायर को भेजा जाता है और उसकी एक नक्ल भविष्य के हवाले के लिये 'क्रय आदेश वही' (Purchases Order Book) में रखी जाती है। जब आदेशित माल सप्लायर द्वारा भेज दिया जाता है, तो उसमे भेजे गये माल का विवरण बताते हुये एक लिखित वर्णन प्राप्त होता है और इस वर्णन को बीजक, या बिल कहा जाता है।

माल की प्राप्ति होने पर खरीदार को चाहिये कि वह उन्हे सावधानी से दिये गये आदेश के साथ और प्राप्त बीजक से भी यह निश्चय करने के लिये मिला ले कि वही माल आया है जिसके लिये आदेश दिया गया था। बीजक को माल के लगाये हुये मूल्य, गणनाओं (Calculations) जोड़ आदि के सम्बन्ध मे जाँच लेना चाहिये और उस पर जाँचने वाले व्यक्ति को अपने हस्ताक्षर करना चाहिये।

क्रय वही प्रति दिन प्राप्त हुई बीजको से लिखी जाती है। बीजको को विस्तार मे क्रय वही में लिखना आवश्यक नहीं है; प्रत्येक बीजक की निम्न आवश्यक बातें लिखना ही पर्याप्त है— क्रय की तिथि सप्लायर का नाम और रकम। बीजको पर क्रम संख्या डाल कर उन्हे फाइल कर लिया जाता है। प्रत्येक बीजक की संख्या भी क्रय वही मे इस आशय से बनाये गये खाने मे लिख दी जाती है। यदि भविष्य में किसी पद (Item) का विवरण मालूम करना हो तो इस संख्या की सहायता से बीजक शीघ्रता से निकाली जा सकती है। बीजक क्रय वही मे की गई प्रविष्टियों के लिये वाउचर का काम देती हैं।

लाइनें (Ruling)—क्रय वही मे साधारण जर्नल की भाँति लाइनें नहीं होतीं। उसमें प्रत्येक सौदे के लिये यह स्पष्ट निर्दिष्ट नहीं किया जाता कि कौनसा खाता नाम करना है और कौनसा जमा। इसका कारण यह है कि यदि उधार खरीद के सौ सौदे किसी दी हुई अवधि के दौरान मे किये जाते हैं और यदि जर्नल ही एक मात्र प्रारम्भिक लेख की वही है, तो उसमें ऐसी सौ जर्नल प्रविष्टियाँ होंगी— 'क्रय खाता नाम अमुक को'। ये व्यक्तिगत खाते जमा करने पड़ते लेकिन प्रत्येक प्रविष्टि में एक क्रय खाता ही नाम होगा। यदि इन व्यवहारों को एक ऐसी वही में लिखा जाय, जिसमें केवल उधार खरीद का ही लेखा हो तो सौ बार 'क्रय खाता' लिखने की मेहनत बच जाय। क्रय खाते को हर बार उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं होगी क्योंकि क्रय खाते का नाम होना प्रत्येक प्रविष्टि में गर्भित (Implied) होगा।

इसी कारण से क्रय वापसी वही, विक्रय वही, विक्रय वापसी वही, प्राप्य बिल वही और देय बिल वही में भी जर्नल की तरह लाइनें नहीं रखी जातीं।

खतौनी (Posting)—क्रय वही में की गई प्रत्येक व्यक्तिगत प्रविष्टि को प्रतिदिन या जैसे ही सम्भव हो, उस व्यक्ति के खाते, जिससे माल खरीदा गया था, उसी मे जमा किया जाता है, और [illegible] अवधि के अन्त मे क्रय वही का जोड़ लगाया जाता है

और अवधि भर की खरीद का जोड़ खाता बही में खरीद खाते के नाम इस प्रकार खताया जाता है—'विविध खाते क्रय बही के अनुसार' (To Sundries as per Purchases Book)। इस प्रकार प्रत्येक व्यवहार के दोहरे रूप का लेखा किया जाता है और आवश्यक दोहरा लेख पूर्ण किया जाता है।

टिप्पणी —जहाँ किसी व्यक्ति से रोकडी क्रय क्रय बही में लिखी जाती है, वहाँ भुगतान की गई रोकड को रोकड़ बही में लिखना आवश्यक है।

उदाहरण ३४

एक व्यापारी के निम्न लेनदेनों से क्रय-बही बनाओ व खातावही में खतियाओ।

१९५१			रु०
जनवरी	५	शर्मा ट्रेडिंग क० से माल खरीदा	१,२३४
	११	एस० के० डे से माल खरीदा	५६७
	२५	फ्रेजर एण्ड सन्स से माल खरीदा	२,३४५
	३०	रतन ब्रादर्स से माल खरीदा	३,२६५

क्रय बही

तिथि	विवरण	बी. सं.	खा. ब. प	राशि रु.	आ	पा.
१९५१						
जन. ५	शर्मा ट्रेडिंग क० ..			१,२३४	–	–
११	एस० के० डे ...			५६७	–	–
२५	फ्रेजर एण्ड सन्स .			२,३४५	–	–
३०	रतन ब्रादर्स ...			३,२६५	–	–
				७,४११	–	–

क्रय खाता

तिथि	विवरण	रु	आ	पा.	तिथि	विवरण	रु	आ	पा.
१९५१ जन. ३१	विविध खाते क्रय बही के अनुसार	७४११	–	–					

शर्मा ट्रेडिंग कं०

तिथि	विवरण	रु	आ	पा.	तिथि	विवरण	रु०	आ.	पा.
					१९५१ जन० ५	क्रय	१,२३४	–	–

एस. के. डे

तिथि	विवरण	रु	आ	पा.	तिथि	विवरण	रु.	आ	पा
					१९५१ जन० ११	क्रय	५६७	–	–

फ्रेजर एण्ड सन्स

तिथि	विवरण	रु	आ	पा.	तिथि	विवरण	रु.	आ	पा.
					१९५१ जन. २५	क्रय	२,३४५	–	–

रतन ब्रादर्स

तिथि	विवरण	रु	आ	पा.	तिथि	विवरण	रु.	आ	पा.
					१९५१ जन० ३०	क्रय	३,२६५	–	–

क्रय वापसी वही (Purchases Returns Book) :—

क्रय वापसी वही, जो 'बाह्यवापसी वही' (Returns Outwards Book) भी कहलाती है, खरीदे हुये माल की वापसियों या खरीदे हुये माल के सम्बन्ध मे माँगी गई छूटो का लेखा रखने के लिये प्रयोग की जाती है। माल इसलिये वापस किया जा सकता है, कि वे गलत किस्म के हैं या नमूने के अनुसार नही है अथवा वह खराव हो गया है, और छूटों की माँग, टूट फूट, कम तौल, अधिक मूल्यांकन आदि के लिये की जा सकती है।

जब खरीदा गया माल वापिस किया जाय या असंतोषजनक माल के सम्बन्ध मे कोई छूट माँगी जाय, तो उस व्यक्ति से, जिसे माल लौटाया गया है या जिससे छूट की माँग की गई है एक विवरण जिसे जमा पत्र (Credit Note) कहते हैं, प्राप्त होता है। ये जमा पत्र इस पुस्तक की प्रविष्टियो के लिये वाउचर का काम देते हैं।

खतौनी (Posting)—प्रत्येक प्रविष्टि, जो क्रय वापसी वही में हो रही है, प्रतिदिन या सुविधाजनक समयान्तरो पर उस व्यक्ति के खाते मे, जिसको माल लौटाया गया है या जिससे छूट की मांग की गई है, नाम (Debit) की जाती है; और निश्चित अवधि के वाद वही का जोड़ लगाया जाता है और इस जोड़ को क्रय वापिसी खाते (Purchases Returns Account) मे 'विविध खाते क्रय वापसी वही के अनुसार' (By Sundries as per Purchases Returns Book) जमा किया जाता है।

उदाहरण ३५

एक व्यापारी के निम्न लेन देनो से क्रय-वापिसी-वही बनाओ व खातों में खतियाओ :—

१९५१		रु. आ.पा.
जनवरी ९	शर्मा ट्रेडिंग कं० को माल लौटाया	१३४- ०-०
१६	बीजक में त्रुटि के कारण अलाउन्स के लिये फ्रेजर एण्ड कं० को नाम (debit) किया	४५- ०-०
२१	गुप्ता ब्रादर्स को माल लौटाया	६७- ८-०

क्रय वापिसी वही

तिथि	विवरण	क्रे०/नो० नं०	ख.व. पृ.	राशि रु.	आ	पा.
१९५१						
जन. ९	शर्मा ट्रेडिंग कं०			१३४	–	–
१६	फ्रेजर एण्ड सन्स			४५	–	–
२१	गुप्ता ब्रादर्स			६७	८	–
				२४६	८	०

शर्मा ट्रेडिंग कं०

	रु.	आ	पा	
१९५१				
जन० ९ [illegible]	१३४	–	–	

फ्रेजर एण्ड सन्स

	रु.	आ	पा	
१९५१				
१६ [illegible]	४५	–	–	

गुप्ता आदर्श

१६५१ जन. ३१	क्रय वापिसी	रु. ६७	आ ८	पा –					

क्रय वापसी खाता

					१६५१ जन. ३१	विविधि खाते क्रय वापसी बही के अनुसार	रु. २४६	आ. ८	पा. –

विक्रय वही (Sales Book) :—

विक्रय वही, जिसे 'विक्रय दैनिक वही' (Sales Day Book) भी कहा जाता है, उधार पर बेचे गये तमाम माल का लेखा रखने के लिये स्तैमाल की जाती है। इस वही मे रोकड़ी बिक्री दर्ज नहीं करते। कभी-कभी जब किसी विशेष ग्राहक को बेचे गये (नगद और उधार दोनो) माल का पूरा विवरण रखना आवश्यक समझा जावे, तो भले ही रोकड़ी विक्रय इस वही मे दर्ज की जा सकती है। उदाहरण के लिये किसी ग्राहक को दुकानदार, यदि उसकी क्रय एक निर्धारित अवधि मे दी हुई सीमा से अधिक हो जाये, तो कुछ छूट (rebate) या अन्य रियायत देता है। ऐसी दशा मे दोनो प्रकार के विक्रय (नगद और उधार) का लेखा विक्रय वही से करना आवश्यक होगा।

ग्राहको से प्राप्त हुये तमाम आदेश एक बही मे, जिसे 'प्राप्त आदेशो की बही' (Orders Received Book) कहते हैं, दर्ज किये जाते है। जब आदेशित माल ग्राहको को भेज दिया जाता है, तब एक बीजक (नकल सहित) तैयार किया जाता है। मूल बीजक ग्राहको को भेज दी जाती है और नकल विक्रेता के पास रह जाती है। विक्रय वही भेजी हुई इन बीजको की नकलो से लिखी जाती है।

खतौनी (Posting) —विक्रय वही मे दर्ज हुई प्रत्येक बिक्री ग्राहक के व्यक्तिगत खाते नाम की जाती है, और वही का आवधिक जोड़ (Periodical Total) खाता वही मे खुले हुये विक्रय खाते की जमा मे 'विविध खाते विक्रय वही के अनुसार' (By Sundries as per Sales Book) लिखते हुये खता दिया जाता है।

आगामी सुपुर्दगी या किश्तों में सुपुर्दगी की शर्त पर विक्रय
(Forward Delivery or Instalment Delivery Sales)

प्राय. माल के सप्लायर, विशेपत निर्माणी संस्थायें, इस शर्त पर अपने ग्राहकों से आर्डर प्राप्त करते है कि किसी निर्दिष्ट भावी दिन को आदेशित माल की सुपुर्दगी की जावेगी अथवा आदेशित माल किश्तो मे सुपुर्द किया जावेगा। ऐसी दशाओं में ग्राहक से आर्डर आने पर सप्लायरों की वहियो मे कोई प्रविष्टियाँ न की जावेगी। केवल आदेश को प्राप्त आदेशों की वही मे लिख लिया जावेगा। केवल तब ही जबकि सम्पूर्ण या थोड़ा माल वास्तव मे ग्राहक को सुपुर्द कर दिया गया हो, विक्रेता की वहियो में प्रविष्टियाँ करना आवश्यक होता है।

उदाहरण ३६

एक व्यापारी के निम्न लेन देनों से विक्रय-वही बनाओ और खाता वही में खताओ :—

१६५१		रु.
जनवरी ६	महेश स्टोर्स को माल बेचा	५३२
१०	अम्बा प्रसाद को माल बेचा	१५०
१५	अहमद एण्ड कं० को उनके नवम्बर मास के ऑर्डर पर माल बेचा	७८२
२१	पारकर एण्ड कं० के ऑर्डर पर माल की पहली किश्त भेजी	२७५

२७	बाबूलाल रामगोपाल को उधार माल बेचा	....	....	१,४५६
२९	दास ब्रादर्स को माल बेचा	....	....	३९५
३१	महेश स्टोर्स को माल बेचा	....	....	१,२६५

विक्रय बही

तिथि	विवरण		बी० सं०	खा. ब. प	राशि		
१९५१					रु०	आ.	पा.
जन० ६	महेश स्टोर्स	...			५३२	—	—
१०	अम्बाप्रसाद	...			१५०	—	—
१५	अहमद एण्ड कं०	...			७८२	—	—
२१	पारकर एण्ड सन्स	...			३७५	—	—
२७	बाबूलाल रामगोपाल	..			१,४५६	—	—
२९	दास ब्रादर्स				३९५	—	—
३१	महेश स्टोर्स				१,२६५	—	—
					४,९५५	—	—

महेश स्टोर्स

तिथि	विवरण	रु०	आ	पा.					
१९५१		रु०	आ	पा.					
जन० ६	विक्रय	५३२	—	—					
३१	विक्रय	१,२६५	—	—					

अम्बाप्रसाद

तिथि	विवरण	रु०	आ	पा					
१९५१		रु०	आ	पा					
जन० १०	विक्रय	१५०	—	—					

अहमद एण्ड कं०

तिथि	विवरण	रु०	आ	पा					
१९५१		रु०	आ	पा					
जन० १५	विक्रय	७८२	—	—					

पारकर एण्ड सन्स

तिथि	विवरण	रु०	आ	पा					
१९५१		रु०	आ	पा					
जन० २१	विक्रय	३७५	—	—					

बाबूलाल रामगोपाल

तिथि	विवरण	रु०	आ.	पा.					
१९५१		रु०	आ.	पा.					
जन० २७	विक्रय	१,४५६	—	—					

दास ब्रादर्स

तिथि	विवरण	रु०	आ	पा					
१९५१		रु०	आ	पा					
जन० २९	विक्रय	३९५	—	—					

विक्रय खाता

			१९५१		रु०	आ.	पा.
			जन० ३१	विविध व्यक्ति विक्रय बही के अनुसार	४,९५५	—	—

ग्राहकों से धर्मादा संग्रह (Charity Collection from Customers) :—

थोक व्यापार में भारतीय व्यापारी माल बेचते समय प्राय अपने ग्राहकों से प्रत्येक व्यवहार पर कुछ फीस (उदाहरण के लिए बेची गई किसी विशेष वस्तु के प्रति मन पर १ पैसा के हिसाब से) वसूल करते हैं। इसका प्राप्त धन विभिन्न धार्मिक और परोपकारी संस्थाओं में लगाया जाता है। यह फीस धर्मादा (Dharmada) कहलाती है और ग्राहक को भेजे गए बीजक में दिखाई जाती है।

बहियों में बिक्री दर्ज करते समय, धर्मादे की प्राप्त रकम विक्रय खाते में जमा नहीं करना चाहिए अपितु उसे एक अलहदा खाते में जमा करना श्रेष्ठ है, क्योंकि वह व्यापार के लाभों में तो शामिल होगा नहीं। इस आशय के लिए, विक्रय बही में दो खाने बनाए जा सकते हैं—एक तो बिक्री धन लिखने के लिए और दूसरा धर्मादे संग्रह का लेखा करने के लिए। पहले खाने का जोड़ तो विक्रय खाते की जमा तरफ खताया जायगा और दूसरे खाने का जोड़ एक धर्मादा कोष खाते की जमा तरफ। जब धर्मादा वास्तव में खर्च कर दिया जाय, तो वह धर्मादा कोष खाते (Charity Fund Account) (न कि हानि-लाभ खाते) नाम कर दिया जावेगा।

ग्राहकों से संग्रह की गई रकमों के अलावा कुछ रकम प्रति वर्ष लाभ एव हानि-खाते नाम और धर्मादा कोष खाते जमा की जा सकती है। यह रकम वास्तव में परोपकारी कार्यों के लिए संस्था का अपनी ओर से दिया गया दान है।

विक्रय वापसी बही (The Sales Returns Book) —

विक्रय वापसी बही, जिसे 'अन्दर वापसी बही' (Returns Inward Book) भी कहते है, ग्राहकों द्वारा लौटाये गये माल और कम सुपुर्दगी, टूट फूट या अधिक मूल्यांकन के सम्बन्ध में स्वीकृत की गई छूटों के दर्ज करने के लिये प्रयोग की जाती है।

जब कोई ग्राहक माल वापस करता है या उसे कोई छूट दी जाती है तो एक जमा पत्र (Credit Note) पास रखली जाती है। (नकल सहित) बनाया जाता है। मूल जमा पत्र तो ग्राहक को भेज देते हैं नकल जमा पत्रों की ये नकलें ही विक्रय वापसी बही में की गई प्रविष्टियों के लिये वाउचर का काम देती हैं।

खतौनी (Posting) :—विक्रय वापसी बही में की गई प्रत्येक प्रविष्टि उस ग्राहक के, जिसने माल लौटाया है या जिसको छूट दी गई है, व्यक्तिगत खाते की जमा तरफ खताया जायगा और बही का आवधिक जोड़ (Periodical Total) विक्रय वापसी खाते की जमा तरफ 'विविध खाते विक्रय वापसी बही के अनुसार' (Sundries as per Sales Returns Book) लिखते हुये खताया जाता है।

उदाहरण ३७

निम्न लेन-देनों से एक व्यापारी की विक्रय वापसी बही बनाओ व खाता बही में खतियाओ।

१९५१		रु०
जनवरी ८	ई० पारकर ने माल लौटाया ..	३२
१६	अहमद एण्ड क० को कम माल भेजने के कारण अलाउन्स दिया ...	५२
३१	दास ब्रादर्स ने माल लौटाया ..	५३

विक्रय वापसी बही

तिथि	विवरण	क्रे/नो नं०	खा. व पृ.	राशि रु०	आ	पा.
१९५१						
जन० ८	ई० पारकर			३२	—	—
१६	अहमद एण्ड क०			५२	—	—
३१	दास ब्रादर्स			५३	—	—
				१३७	—	—

विक्रय वापसी खाता

		रु०	आ.	पा.			रु०	आ.	पा.
१६५१ जन० ३१	विविध खाते वि० वा० ब० के अनुसार	१३७	–	–					

ई० पारकर

		रु०	आ.	पा.			रु०	आ.	पा.
					१६५१ जन० ८	विक्रय वापसी	३२	–	–

अहमद एण्ड कं०

		रु०	आ.	पा.			रु.	आ.	पा.
					१६५१ जन. १६	विक्रय वापिसी	५२	–	–

दास ब्रादर्स

		रु०	आ.	पा.			रु.	आ	पा
					१६५१ जन ३१	विक्रय वापिसी	५३	–	–

पसन्द या वापसी की शर्त पर भेजा गया माल (Goods Sent On Approval)

बहुत से फर्मों में यह प्रथा है कि वे अपने ग्राहकों को माल स्वीकृति के लिए भेजते हैं। ग्राहक इस माल को रख सकते हैं, या वापिस लौटा सकते हैं। यदि वे इसे रखते हैं तो उन्हे इसके रुपये देने पड़ते है। वह माल, जो स्वीकृति (Approval) के लिए भेजा गया है, तब तक बेचा हुआ नही समझा जा सकता जब तक ग्राहक अपनी स्वीकृति न दे या वापसी के लिये निर्धारित समय बीत न जाय। इसलिए इस माल के रुपये न तो उस व्यक्ति के खाते मे नाम ही लिखे जा सकते हैं और न विक्रय-खाते में जमा ही किये जा सकते है। इसलिए इस तरह के लेन-देन इस प्रकार लिखे जाते हैं :—

१. जब ऐसे लेन-देन बहुत कम हों तो इस तरह का माल बेचे हुए माल सदृश लिखा जा सकता है और संतुलित करने (balancing) के समय एक समायोजक प्रविष्टि (Adjusting entry) की जा सकती है, जिसके द्वारा जो माल वापिस नहीं लौटाया गया है और न स्वीकार ही किया गया है, वह विक्रय-खाते के नाम लिखकर उस व्यक्ति के खाते में जमा किया जा सकता है। फिर यह माल स्टॉक में जोड़ दिया जाता है और अन्य स्टॉक की तरह इसका मूल्य निर्धारित किया जाता है।

२. जब इस तरह के लेन-देन बहुत से हों तो ऊपर लिखी पद्धति काम नहीं देती। परन्तु एक और सहायक बही रखी जाती है जिसे 'विक्रय या वापसी बही' (Sale or Return Book) कहते हैं। इस बही की शक्ल निम्न प्रकार हो सकती है :

विक्रय या वापसी बही

तिथि	विवरण	स्वीकृति के लिए भेजा गया माल			तिथि	माल वापस आया			बिका माल			खा. ब. पृ.
१	२	३			४	५			६			
		रु.	आ.	पा.		रु.	आ.	पा.	रु.	आ.	पा.	

'विक्रय या वापसी' वही इस तरह से लिखी जाती है :—

(१) जब माल बाहर भेजा जाता है तब उसे तीसरे खाने मे विक्रय-मूल्य पर लिखा जाता है और कोई भी प्रविष्टि (entry) तब तक नही की जाती जब तक कोई निश्चित सूचना न मिले।

(२) जब माल वापिस किया जाता है तब वह पाँचवे खाने मे लिखा जाता है।

(३) जब इस तरह से भेजा हुआ माल ग्राहक द्वारा रख लिया जाता है तब यह बिक्री किया हुआ माल हो जाता है और छठे खाने मे लिखा जाता है और यहाँ से ग्राहक के नाम के खाते में खता दिया जाता है। इस खाने का योग एक निश्चित समय के बाद विक्रय-खाते मे जमा कर दिया जाता है।

(४) तीसरे खाने के योग मे से यदि पाँचवे और छठे का योग कम कर दे तो जो बाकी माल रहेगा, वह पसन्द के लिये बाहर भेजे हुये माल का विक्रय-मूल्य होगा। यह शेष (balance) स्टॉक मे या तो कीमत पर या बाजार-भाव जो भी इनमे कम हो उस पर सम्मिलित कर देना चाहिए।

उदाहरण ३८

एक व्यापारी के 'विक्रय व वापसी सम्बन्धी' निम्न लेन-देनों को आप उसकी पुस्तकों में किस प्रकार लिखेंगे :—

१९५०		रु.
दिसम्बर १०	अमरनाथ को स्वीकृति के लिये माल भेजा	१५०
१५	रामप्रसाद को स्वीकृति के लिये माल भेजा	९०
१७	अमरनाथ ने ५० रु० का माल रखकर शेष वापिस कर दिया	
२१	रामप्रसाद ने सब माल रख लिया	
२३	प्रकाशनारायण को स्वीकृति के लिये माल भेजा	१००
२५	अब्दुलकरीम को स्वीकृति के लिये माल भेजा	४५
२७	अब्दुलकरीम ने सब माल वापिस कर दिया	
२९	एस० पी० वर्मा को स्वीकृति के लिये माल भेजा	६५

विक्रय या वापसी वही

तिथि	विवरण	स्वीकृति के लिये माल भेजा			तिथि	माल वापिस आया			बिका माल			खा. ब. प.
१९५०		रु.	आ	पा.	१९५०	रु	आ	पा	रु	आ	पा	
दिस. १०	अमरनाथ	१५०	—	—	दिस १७	१००	—	—	५०	—	—	
१५	रामप्रसाद	९०	—	—	२१				९०	—	—	
२३	प्रकाशनारायण	१००	—	—								
२५	अब्दुलकरीम	४५	—	—	२७	४५	—	—				
२९	एस० पी० वर्मा	६५	—	—								
		४५०	—	—		१४५	—	—	१४०	—	—	

अमरनाथ

		रु०	आ	पा		
१९५० दिस. १७	विक्रय	५०	—	—		

रामप्रसाद

		रु०	आ	पा		
१९५० दिस. २१	विक्रय	९०	—	—		

विक्रय खाता

						रु.	आ.	पा.
					१६५० दिस. ३१	विविध खाते विक्रय या वापिसी वही के अनुसार	१४०	–

१६५ रु० विक्रय मूल्य का माल ग्राहकों के पास ही है। यह ३१ दिसम्बर १६५० को लागत या बाजार मूल्य जो भी कम हो उस पर स्टाक में सम्मिलित हो जायगा।

स्तम्भीय वहियाँ (Columnar Book)

जब व्यापारी तरह-तरह के माल का व्यापार करता है तब वह- हर एक व्यापार का परिणाम जानना चाहता है। उदाहरण के लिए यदि व्यापारी पत्थर, चूना और सीमेंट का व्यापार करता हो तो वह प्रत्येक तरह के माल का हानि-लाभ जानना चाहेगा। इसके लिए उसे अलग स्टॉक, क्रय-विक्रय आदि वहियाँ रखनी पड़ेंगी और वर्ष के अन्त मे अलग अलग व्यापार खाते (Trading Account) भी तैयार करना पड़ेगा।

इस उद्देश्य के लिए सहायक वहियो मे हर एक वस्तु के लिए अलग-अलग खाने बनाये जा सकते हैं। उदाहरण के लिये क्रय-वही मे निम्न प्रकार से खाने बनाये जा सकते है :—

खाने वाली क्रय-पुस्तक

तिथि	किससे खरीदा गया	खा. पृ	पत्थर			चूना			सीमेंट		
			रु.	आ.	पा	रु.	आ.	पा	रु.	आ	पा.

इसके पत्थर के खाने का योग 'पत्थर क्रय-खाते' के नाम, चूने के खाते का योग चूना क्रय-खाते के नाम और सीमेंट के खाने का योग 'सीमेंट क्रय-खाते' के नाम खाता-वही मे लिखा जाता है। इसी तरह से अन्य वहियाँ भी बनाई जाती हैं।

जब स्तम्भीय सहायक वहियाँ काम में ली जाती हैं तो खाता-वही मे अलग-अलग स्टॉक, क्रय, विक्रय आदि के खाते होते है। परन्तु यह खाते भी स्तम्भीय रूप मे सुविधापूर्वक निम्न प्रकार से रखे जा सकते हैं :—

क्रय खाता

		पत्थर	चूना	सीमेंट			पत्थर	चूना	सीमेंट

प्राप्य बिल वही (The Bills Receivable Book) :—

इस वही में जितनी भी बिलें हम अपने ऋणियों (Debtors) से प्राप्त होती हैं उनका ब्यौरा लिखा जाता है।

खतौनी (Posting) :—हर एक प्रविष्टि जो इस वही में है वह उस ऋणी के व्यक्तिगत खाते में जमा की जाती है जिससे बिल प्राप्त हुई है, और वही का कुल योग खाता-वही में प्राप्य बिल खाते (Bills Receivable Account) के नाम इस प्रकार लिखा जाता है :—विविध खाते प्राप्य बिल वही के अनुसार (To Sundries as per Bills Receivable Book)

वही की बनावट (Ruling of the Book) :—इस वही में व्यापार की आवश्यकतानुसार कई खाने बनाये जा सकते हैं।

प्राप्य बिल वही

क्रम संख्या	प्राप्ति तिथि	प्रेषक	लिखने वाला	स्वीकार करने वाला	कब देय होगा	बिल की तिथि	अवधि	देय तिथि	खा० पृ०	राशि रु०	आ.	पा	विशेष विवरण
	१९५१					१९५१		१९५१					
१	जन० ३	एफ० शाह	स्वयं	एफ० शाह		जन० ३	३ माह	अप्रेल ६		२००	—	—	
२	१३	एच० एस० गुप्ता	,,	एच० एस० गुप्ता		१३	३० दिन	फर० १५		५००	—	—	बैंक से भुनाया
३	२८	रतनलाल	,,	रतनलाल		२८	१ माह	मार्च ३		१,०००	—	—	
४	३१	दास एण्ड क०	,,	दास एण्ड कं०		३१	४ माह	जून ३		६००	—	—	शर्मा एण्ड कं० को बेचान किया

प्राप्य बिल वही

तिथि	प्रेषक	अवधि	देय तिथि	खा० पृ०	राशि रु०	आ.	पा.
१९५१			१९५१				
जन० ३	एफ० शाह	३ माह	अप्रेल ६		२००	—	—
१३	एच० एस० गुप्ता	३० दिन	फर० १५		५००	—	—
२८	रतनलाल ...	१ माह	मार्च ३		१,०००	—	—
३१	दास एण्ड क०	४ माह	जून ३		६००	—	—

उदाहरण ३६

एक व्यापारी के निम्न लेन-देनों से प्राप्य बिल पुस्तक बनाओ और खातों में खतियाओ।

१९५१

जनवरी ३ अब्दुल्ला एण्ड कं० पर २ माह का ६५० रु० का एक बिल लिखा

६ १,२५० रु० के ३ माह के एक बिल पर मुन्नालाल से स्वीकृति (acceptance) प्राप्त हुई

१४ कृष्णचन्द्र पर १ माह का ४२५ रु० का एक बिल लिखा

२४ दुर्गादास वेनीराम पर ३० दिन का १,३७५ रु० का एक बिल लिखा

३० पीटर वाइट ने ८५० रु० के ३ माह के एक बिल पर स्वीकृति दी

प्राप्य बिल बही

तिथि	प्रेषक	अवधि	देय तिथि	खा०पृ०	राशि रु०	आ.	पा.
१९५१			१९५१				
जन० ३	अब्दुल्ला एण्ड कं०	२ माह	मार्च ६		६५०	—	—
६	मुन्नालाल	३ माह	अप्रेल १२		१,२५०	—	—
१४	कृष्णचन्द्र ...	१ माह	फर० १७		४२५	—	—
२४	दुर्गादास वेनीराम ..	३० दिन	फर० २६		१,३७५	—	—
३०	पीटर वाइट ...	३ माह	मई २		८५०	—	—
					४,५५०	—	—

प्राप्य बिल खाता

तिथि	विवरण	रु०	आ.	पा.					
१९५१ जन० ३१	विविध खाते प्राप्य बिल वही के अनुसार	४,५५०	—	—					

अब्दुल एण्ड कं०

				तिथि	विवरण	रु०	आ.	पा.
				१९५१ जन० ३	प्राप्य बिल	६५०	—	—

मुन्नालाल

				तिथि	विवरण	रु०	आ.	पा.
				१९५१ जन० ६	प्राप्य बिल	१,२५०	—	—

कृष्णचन्द्र

				तिथि	विवरण	रु०	आ.	पा.
				१९५१ जन० १४	प्राप्य बिल	४२५	—	—

दुर्गादास वेनीराम

				तिथि	विवरण	रु०	आ.	पा.
				१९५१ जन० २४	प्राप्य बिल	१,३७५	—	—

पीटर वाइट

				तिथि	विवरण	रु०	आ.	पा.
				१९५१ जन० ३०	प्राप्य बिल	८५०	—	—

देय बिल बही (The Bills Payable Book) —

यह बही उन तमाम बिलों का ब्यौरा देने के लिए रक्खी जाती है जो कि हम स्वीकृत करके अपने ऋणदाताओं को देते हैं।

खतौनी (Posting) :—हर एक प्रविष्टि (entry) जो इस बही में होती है वह उन व्यक्तियों के खाते में नाम लिखी जाती है जिनको हमने बिल स्वीकृत करके दी हैं। इस बही का कुल जोड़ खाता बही में स्थित देय बिल खाते (Bills Payable Account) में इस प्रकार जमा कर दिया जाता है — "विविध खाते देय बिल बही के अनुसार" (By Sundries as per Bills Payable Book)

लाइनें (Ruling)—प्राप्य बिल बही की तरह देय बिल बही की लाइनें भी निम्नलिखित दो प्रकार से की जा सकती है।

देय बिल बही

क्रम संख्या	तिथि	किसको दिया गया	प्राप्त कर्ता	कब देय होगा	बिल की तिथि	अवधि	देय तिथि	खा०पृ०	राशि रु०	आ.	पा.	विशेष विवरण
	१९५१				१९५१		१९५१					
१	जन० ३	रामलाल एण्ड कं०	रामलाल एण्ड कं०		जन० ३	३ माह	अप्रेल ६		३००	—	—	भुगतान कर दिया गया
२	१६	गुप्ता ब्रादर्स	गुप्ता ब्रादर्स		१६	१ माह	फर० १९		५५०	—	—	,, ,, ,, ,,
३	१९	दास एण्ड कं०	दास एण्ड कं०		१९	३० दिन	फर० २१		१,२२५	—	—	अस्वीकृत
४	३१	गौतम ब्रादर्स	गौतम ब्रादर्स		३१	४ माह	जून ३		५२५	—	—	भुगतान कर दिया गया

देय बिल बही

तिथि	किसको दिया गया	अवधि	देय तिथि	खा०पृ०	राशि रु०	आ.	पा.
१९५१			१९५१				
जून ३	रामलाल एण्ड कं०	३ माह	अप्रेल ६		३००	—	—
१६	गुप्ता ब्रादर्स	१ माह	फर० १९		५५०	—	—
१९	दास एण्ड कं०	३० दिन	फर० २१		१,२२५	—	—
३१	गौतम ब्रादर्स	४ माह	जून ३		५२५	—	—

उदाहरण ४०

एक व्यापारी के निम्न लेन-देनों से देय बिल बही बनाओ और खाते में खतियाओ।

१९५१

जनवरी ५ १,३७५ रु० का ३ माह का रामलाल द्वारा लिखा हुआ एक बिल स्वीकार किया

१२ ७६५ रु० का ३० दिन का वर्मा ट्रेडिंग कं० द्वारा लिखा हुआ एक बिल स्वीकार किया

२७ श्यामसुन्दर को १,५०० रु० के २ माह के बिल पर स्वीकृति दी

३१ ५०० रु० के १ माह के बिल को स्वीकार कर रामलाल को दिया

देय विल वही

तिथि	किसको दिया गया	अवधि	देय तिथि	खा०पृ०	राशि		
१६५१			१६५१		रु०	आ.	पा.
जन० ५	रामलाल एण्ड कं०	३ माह	अप्रेल ८		१,३७५	–	–
१२	वर्मा ट्रेडिंग कं०	३० दिन	फर० १४		७६५	–	–
२७	श्यामसुन्दर ...	२ माह	मार्च ३०		१,५००	–	–
३१	रामलाल एण्ड कं०	१ माह	मार्च ३		५००	–	–
					४,१४०	–	–

रामलाल एण्ड कं०

तिथि	विवरण	रु०	आ.	पा.					
१६५१									
जन० ५	दे०/वि०	१,३७५	–	–					
३१	दे०/वि०	५००	–	–					

वर्मा ट्रेडिंग कं०

तिथि	विवरण	रु०	आ.	पा.					
१६५१									
जन० १२	दे०/वि०	७६५	–	–					

श्यामसुन्दर

तिथि	विवरण	रु०	आ.	पा.					
१६५१									
जन० २७	दे०/वि०	१,५००	–	–					

देय विल खाता

					तिथि	विवरण	रु०	आ.	पा.
					१६५१				
					जन० ३१	विविध खाते देय विल वही के अनुसार	४,१४०	–	–

विविध जर्नल (The Miscellaneous Journal or Journal Proper) :—वही-खाते का यह एक नियम है कि जो पहले किसी प्रारम्भिक लेखे की वही में नहीं लिखा गया हो वह खाता-वही में खताना नहीं चाहिए। खाता खाता-वही में पन्ने नं० का जो खाना होता है वह उस प्रारम्भिक वही के पन्ने का नम्बर लिखने के लिए ही होता है।

रोकड़-वही, क्रय-वही, विक्रय-वही आदि सब सहायक वहियाँ मौलिक वहियाँ (Books of original entry) हैं। ये सब जर्नल की शाखायें हैं परन्तु इन सब सहायक वहियों में भी व्यापार के सब लेन-देन नहीं लिखे जा सकते हैं। कुछ लेन-देन ऐसे भी हैं जिनका लेखा उपर्युक्त वहियों में नहीं हो सकता है यद्यपि ऐसे लेन-देन बहुत ही कम हैं।

जो लेन-देन और किसी वही में न लिखा जा सके, या जिनकी संख्या इतनी कम है कि उनके लिये अलहदा से एक वही रखना अनावश्यक है, वे इस जर्नल में लिखे जाते हैं। साधारणतः जर्नल का प्रयोग निम्नलिखित परिस्थितियों में होता है :—

१ उन लेन-देनों को लिखने के लिए जो अन्य किसी वही में नहीं लिखे जा सकते, जैसे— डूबत ऋण, [illegible] हुण्डी, ब्याज आदि।

२ प्रारम्भिक प्रविष्टियाँ (Opening entries) करने के लिये।

३ एक खाते से दूसरे खाते में रकम ले जाना। [illegible]

४. गलतियों को ठीक करने की प्रविष्टियो (correction entries) के लिये।

५. वर्ष के अन्त मे की जाने वाली समायोजक प्रविष्टियो (Adjustments) के लिये।

एक खाते से दूसरे खाते मे रकम ले जाना, समायोजन (Adjustments) और त्रुटि-सुधार अगले अध्यायो में समझाये गये है। नई बहियो के लिए जमा खर्च अध्याय ४ के अन्त में समझाये जा चुके है।

उदाहरण ४१

निम्न लेन-देनों से उचित बही में मौलिक प्रविष्टियाँ कीजिये :

१९५१			रु०
जनवरी	५	पटेल मोटर क० से एक मोटर लारी उधार खरीदी ...	५,६३०
	६	बालीराम से लेन रुपये डूबत ऋण में लिख लिये गये	२५०
	१५	मोहनलाल से स्वीकृति प्राप्त हुई जो अब्दुल मजीद को हस्तान्तरित कर दी गई	१,२००
	२५	रतनचन्द से प्राप्त रोकड़ा भूल से रतनलाल के खाते में खता दिये गये	५००
	३१	पूंजी खाते पर ब्याज दिया	५०

उपर्युक्त प्रकृति के लेन-देनों की मौलिक प्रविष्टियाँ किसी विशेष बही में नहीं की जा सकतीं, जैसे रोकड़-बही इत्यादि। अतः इनका लेखा जर्नल में ही करना होगा।

जर्नल

१९५१			रु	आ	पा	रु०	आ.	पा.
जन. ५	मोटर गाड़ी खाता		५,६३०	—	—			
	पटेल मोटर क०					५,६३०	—	—
	मोटर लारी खरीदी							
६	डूबत ऋण खाता		२५०	—	—			
	बालीराम					२५०	—	—
	डूबत ऋण हुये							
१५	अब्दुलमजीद		१,२००	—	—			
	प्राप्य बिल खाता					१,२००	—	—
	मोहनलाल की स्वीकृति उन्हें हस्तांतरित की							
२५	रतनलाल		५००	—	—			
	रतनचन्द					५००	—	—
	गलत प्रेषण का समायोजन							
३१	ब्याज खाता		५०	—	—			
	पूंजी खाता					५०	—	—
	पूंजी पर ब्याज दिया							

उदाहरण ४२

१ मार्च १९५१ को, मोहनलाल प्रेमचन्द का व्यापार निम्न था : बैंक में रोकड़ १८,००० रु० ; स्टॉक २०,००० रु०; मशीनरी फर्नीचर इत्यादि ४०,००० रु० ; मोटरगाड़ी १७,००० रु० ; प्राप्य बिल सं० १–२,५०० रु०; ऋणी : बालीराम ३,६५० रु०; द्वारकाप्रसाद १,५०० रु० ; ऋणदाता: जेम्स ग्रान्ट २,४०० रु० ; बर्मन एण्ड कं० ६,२४० रु०; देय बिल नम्बर १० १,६०० रु०।

माह में निम्नांकित लेन-देन हुये। आप उन्हें उचित बहियों में लिखिये और अन्तिम खाते तैयार करो। सब चैक बैंक में प्राप्ति के दिन ही भेज दिये जाते हैं।

१९५१			रु. आ.पा.
मार्च	१	कार्यालय की रोकड़ के लिये चैक लिखा	५००- ०-०
	२	नकदी बिक्री	६३०- ०-०
	३	प्राप्य बिल सं० १ का बैंक ने भुगतान प्राप्त कर लिया	२,५००- ०-०
		चैक द्वारा भुगतान कर एक मोटर कार खरीदी	२,१००- ०-०
		पैट्रोल की खरीद के लिये नकद भुगतान किया	६६- ४-०
	४	बालीराम का चैक प्राप्त हुआ	३,५८६- ४-०
		बट्टा दिया	६३-१२-०
	५	बालीराम ने ४५१ रु० १० आ० ६ पा० का माल खरीदा जिसके लिये उसने ५०० रु० का एक चैक दिया व अन्तर की राशि उसने रोकड़ा प्राप्त की	
	६	द्वारकाप्रसाद से चैक प्राप्त हुआ	१,४७३-१२-०
		बट्टा	२६- ४-०
	८	देय बिल सं० १० छूट पर चैक द्वारा भुगतान किया	१,५८६-१०-६
		बालीराम को माल बेचा	१,२५५- ०-०
	९	रोकड़ा नगरपालिका-कर दिया	८२-१०-०
		माल खरीदा जेम्स ग्रान्ट से	३,६०५- २-६
	१०	बालीराम का चैक बैंक ने अस्वीकृत कर वापस लौटाया	५००- ०-०
	११	द्वारकाप्रसाद को माल बेचा	२,६८२-१०-९
		जेम्स ग्रान्ट को चैक दिया २,३४५) और बट्टा ५५)	
	१२	बालीराम की स्वीकृति प्राप्त हुई	१,७५५- ०-०
	१३	मजदूरी के लिये चैक लिखा	१५६- ४-०
		द्वारकाप्रसाद से चैक प्राप्त हुआ	१,३४१- ४-९
	१५	बालीराम को माल बेचा	२,२२१- १-३
		जेम्स ग्रान्ट को स्वीकृति दी	२,५००- ०-०
	१६	मोटर गाड़ी का किराया चैक द्वारा प्राप्त हुआ	५३२- ५-६
	१७	वर्मन एण्ड क० से माल खरीदा	४,७५१- ४-०
		नकद माल खरीदा	१००- ०-०
	१८	द्वारकाप्रसाद की स्वीकृति प्राप्त हुई	१,३४१- ६-०
		जेम्स ग्रान्ट को माल बेचा	२७६- ४-०
	१९	द्वारकाप्रसाद को माल बेचा	१,८७३-१५-६
	२०	जेम्स ग्रान्ट से माल खरीदा	१,२७८- ८-०
	२२	मल्ला ब्रादर्स को माल बेचा	४,०००- ०-०
		वर्मन एण्ड क० को चैक द्वारा भुगतान किया	१,१९५- ४-०
		बट्टा प्राप्त हुआ	५४-१२-०
	२३	मरम्मत के लिये नकद चुकाये	१५- ६-०
		खराब माल के कारण मल्ला ब्रादर्स को अलाउन्स दिया	१००- ०-०
		मल्ला ब्रादर्स से चैक आया	२,२००- ०-०
		वर्मन कम्पनी का ड्राफ्ट स्वीकार किया	२,०००- ०-०
	२५	[illegible]	६००- ०-०
		वर्मन एण्ड क० को माल लौटाया	६५०- ०-०
	२६	मजदूरी के लिये चैक दिया	१७१- ०-०
		वर्मन एण्ड क० को चैक भेजा	२,१०१- ४-०
	२८	मल्ला ब्रादर्स की स्वीकृति प्राप्त हुई	[illegible]- ०-०
		वर्मन एण्ड क० से माल खरीदा	२,१५३-११-६
	[illegible]	[illegible] चैक लिखा	[illegible]- ०-०
		[illegible]	५००- ०-०
		[illegible]	४००- ०-०
		[illegible]	२५०- ०-०
		[illegible]	[illegible]- ०-०

क्रय वही

तिथि	विवरण	बी स.	खा पृ	राशि रु.	आ	पा.
१९५१						
मार्च ६	जेम्स ग्रान्ट			३,६०५	२	६
१७	बर्मन एण्ड कं०			४,७५१	४	—
२०	जेम्स ग्रान्ट ...			१,२७६	८	—
२६	बर्मन एण्ड क० ..			२,१५७	११	६
				११,७९०	१०	—

क्रय वापसी वही

तिथि	विवरण	क्रे/नो. स	खा पृ.	राशि रु	आ.	पा.
१९५१						
मार्च २५	बर्मन एण्ड क०			६५०	—	—

विक्रय वही

तिथि	विवरण	बी स.	खा.पृ.	राशि रु.	आ.	पा.
१९५१						
मार्च ५	बालीराम .			४५१	१०	६
८	बालीराम ..			१,२५५	—	—
११	द्वारकाप्रसाद			२,६८२	१०	९
१५	बालीराम ...			२,२२१	१	३
१८	जेम्स ग्रान्ट			२७६	४	—
१९	द्वारकाप्रसाद			१,८७३	१५	६
२२	खन्ना ब्रादर्स			४,०००	—	—
				१२,७६०	१०	—

विक्रय वापसी वही

तिथि	विवरण	क्रे/नो	खा.पृ.	राशि रु.	आ.	पा.
१९५१						
मार्च २३	खन्ना ब्रादर्स			१००	—	—

प्राप्य बिल वही

तिथि	विवरण	अवधि	देय तिथि	खा पृ.	राशि रु.	आ	पा.
१९५१							
मार्च १२	बालीराम				१,७५५	—	—
१८	द्वारकाप्रसाद ...				१,३४१	६	—
२६	खन्ना ब्रादर्स ...				१,७००	—	—
					४,७९६	६	—

देय बिल बही

तिथि	विवरण	अवधि	देय तिथि	खा०पृ०	राशि रु०	आ.	पा.
१९५१							
मार्च १५	जेम्स ग्रान्ट				२,५००	–	–
२३	बर्मन एण्ड कं०				२,०००	–	–
					४,५००	–	–

रोकड़ बही

तिथि	विवरण	ब०मू०	खा०पृ०	बट्टा रु.	आ	पा	रोकड़ रु.	आ	पा.	बैंक रु.	आ	पा.
१९५१												
मार्च १	शेष आ/ला									१८,०००	–	–
	[illegible]						५००	–	–			
२	[illegible]		(प्र)				६३०	–	–			
	[illegible]									२,५००	–	–
५	[illegible]राम			६३	१२	–				३,५८६	४	–
७	[illegible]									५००	–	–
९	[illegible]			२६	४	–				१,४७३	२	–
१२	[illegible]									१,३४१	४	९
१५	[illegible]									५३३	५	६
२३	[illegible]									२,२००	–	–
				[illegible]०	–	–	१,१३०	–	–	३०,१३४	१०	३
१९५१ अप्रैल १	शेष आ/ला						८१७	६	६	१७,५७५	३	९

तिथि	विवरण	ब०मू०	खा०पृ०	बट्टा रु.	आ	पा	रोकड़ रु.	आ	पा.	बैंक रु.	आ	पा.
१९५१												
मार्च १	रोकड़		(प्र)							५००	–	–
३	मोटर गाड़ी									२,१००	–	–
	मोटर खर्च						६६	४	–			
५	बालीराम						४८	५	६			
८	देय बिल									१,५८६	१०	६
९	नगर पालिका कर						८२	१०	–			
१०	बालीराम									५००	–	–
११	जेम्स ग्रान्ट			५५	–	–				२,३४५	–	–
१३	मजदूरी									१५६	४	–
१७	क्रय						१००	–	–			
२२	बर्मन एण्ड कं०			५४	१२	–				१,१९५	४	–
२३	मरम्मत						१५	६	–			
२६	मजदूरी									१७५	–	–
	बर्मन एण्ड कं०									३,१०१	४	–
३१	पूँजी									४००	–	–
	वेतन									५००	–	–
	शेष आ/ले						८१७	६	६	१७,५७५	३	९
				१०९	१२	–	१,१३०	–	–	३०,१३४	१०	३

जर्नल

१९५१			रु०	आ.	पा	रु०	आ.	पा.
मार्च	१	बैंक खाता	१८,०००	–	–			
		स्टॉक खाता	२०,०००	–	–			
		फ्री होल्ड भूमि गृह खाता	४०,०००	–	–			
		मोटर गाड़ी खाता	१७,०००	–	–			
		प्रा०/बि० खाता	२,५००	–	–			
		बालीराम	३,६५०	–	–			
		द्वारकाप्रसाद	१,५००	–	–			
		जेम्स ग्रान्ट				२,४००	–	–
		बर्मन एण्ड क०				३,२५०	–	–
		दे०/बि० खाता				१,६००	–	–
		पूँजी खाता				६५,४००	–	–
		पुरानी बहियों से शेष आये						
			१,०२,६५०	–	–	१०,२,६५०	–	–
	८	देय बिल खाता	१३	५	६			
		छूट खाता				१३	५	६
		देय बिल स० १० छूट पर भुगतान किया						
	२५	चोरी द्वारा हानि खाता	६००	–	–			
		मोटर गाड़ी खाता				६००	–	–
		मोटर साइकिल चोरी गई						
	३१	ब्याज खाता	४००	–	–			
		पूँजी खाता				४००	–	–
		पूँजी पर ब्याज						
		ह्रास खाता	१५०	–	–			
		मोटर गाड़ी खाता				१५०	–	–
		मोटर गाड़ी पर ह्रास						

टिप्पणी :—विभिन्न वहियों की मौलिक प्रविष्टियाँ तिथि के अनुसार खताई जाये जैसे १ मार्च १९५१ की प्रविष्टियाँ सर्वप्रथम ले और उचित आवश्यक खातों में खतावे. फिर २ मार्च की इसी प्रकार आगे की। एक वही की मौलिक प्रविष्टियों को पूर्णरूप से खातावही में खताने की गलत पद्धति मत अपनाइये। यदि यह पद्धति अपनाई जाती है तो आवश्यक खातों (Ledger Accounts) में प्रविष्टियाँ तिथि के अनुसार नहीं रहेंगी।

खाता वही

स्टॉक खाता

१९५१			रु०	आ.	पा	१९५१			रु०	आ.	पा.
मार्च	१	शेष नी/ला	२०,०००	–	–	मार्च	३१	व्यापार खाता	२०,०००	–	–
अप्रैल	१	व्यापार खाता	१६,१७६	–	–						

फ्री होल्ड भूमि गृहादि खाता

१९५१			रु०	आ	पा	१९५१			रु०	आ.	पा.
मार्च	१	शेष नी/ला	४०,०००	–	–	मार्च	३१	शेष आ/ले	४०,०००	–	–
१९५१											
अप्रैल	१	शेष नी/ला	४०,०००	–	–						

मोटर गाड़ी खाता

दिनांक	विवरण	रु०	आ	पा	दिनांक	विवरण	रु०	आ.	पा.
१९५१					१९५१				
मार्च १	शेष नी/ला	१६,०००	–	–	मार्च २५	चोरी से हानि	६००	–	–
२	बैंक	३,१००	–	–	३१	ह्रास	१५०	–	–
						शेष आ/ले	१८,३५०	–	–
		१६,१०	–	–			१६,१००	–	–
१९५१									
अप्रेल १	शेष नी/ला	१८,३५०	–	–					

प्राप्य बिल खाता

दिनांक	विवरण	रु०	आ	पा.	दिनांक	विवरण	रु०	आ.	पा.
१९५१					१९५१				
मार्च १	शेष नी/ला	२,५००	–	–	मार्च ३	बैंक खाता	२,५००	–	–
३१	प्राप्य बिल पुस्तक से लाया गया	४,७६६	६	–	३१	शेष आ/ले	४,७६६	६	–
		७,२६६	६	–			७,२६६	६	
१९५१									
अप्रेल १	शेष नी/ला	४,७६६	६	–					

बलीराम

दिनांक	विवरण	रु०	आ.	पा	दिनांक	विवरण	रु०	आ	पा
१९५१					१९५१				
मार्च १	शेष नी/ला	३,६५०	–	–	मार्च ४	बैंक	३,५८६	४	–
५	विक्रय	४११	१०	६		बट्टा	६३	१२	–
	रोकड़	४८	५	६	५	बैंक	५००	–	–
८	विक्रय	१,२५५	–	–	१२	प्राप्य बिल	१,७५५	–	–
१०	बैंक	५००	–	–	२१	शेष आ/ले	२,२२१	१	३
१५	विक्रय	२,२२१	१	३					
		८,१२६	१	३			८,१२६	१	३
१९५१									
अप्रेल १	शेष नी/ला	२,२२१	१	३					

द्वारकाप्रसाद

दिनांक	विवरण	रु०	आ.	पा	दिनांक	विवरण	रु०	आ.	पा.
१९५१					१९५१				
मार्च १	शेष नी/ला	१,५००	–	–	मार्च ६	बैंक	१,४७३	१२	–
११	विक्रय	२,६८२	१०	६		बट्टा	२६	४	–
१६	विक्रय	१,८७३	१५	६	१३	बैंक	१,३४१	४	६
					१८	प्राप्य बिल	१,३४१	६	–
					३१	शेष आ/ले	१,८७३	१५	६
		६,०५६	१०	३			६,०५६	१०	३
१९५१									
अप्रेल १	शेष नी/ला	१,८७३	१५	६					

जेम्स ग्रान्ट

दिनांक	विवरण	रु०	आ	पा	दिनांक	विवरण	रु०	आ.	पा.
१९५१					१९५१				
मार्च [illegible]	बैंक	२,३४५	–	–	मार्च १	शेष नी/ला	२,४००	–	–
	बट्टा	५५	–	–	६	क्रय	[illegible]	२	६
१५	देय बिल	२,५००	–		१०	क्रय	[illegible]	८	–
१८	विक्रय	९३६	४	–					
३१	शेष आ/ले	[illegible]	[illegible]	६					
		[illegible]	[illegible]	[illegible]			[illegible]	[illegible]	[illegible]
					१९५१				
					अप्रैल १	शेष नी/ला	[illegible]	[illegible]	[illegible]

वर्मन एण्ड कं०

		रु.	आ.	पा.			रु.	आ.	पा.
१९५१					१९५१				
मार्च २२	बैंक	१,१९५	४	–	मार्च १	शेष नी/ला	३,२५०	–	–
	बट्टा	५४	१२	–	१७	क्रय	४,७५१	४	–
२३	देय बिल	२,०००	–	–	२९	क्रय	२,१५७	११	६
२५	क्रय वापसी	६५०	–	–					
२९	बैंक	३,१०१	४	–					
३१	शेष आ/ले	३,१५७	११	६					
		१०,१५८	१५	६			१०,१५८	१५	६
					१९५१				
					अप्रैल १	शेष नी/ला	३,१५७	११	६

देय बिल खाता

		रु.	आ.	पा.			रु.	आ.	पा.
१९५१					१९५१				
मार्च ८	बैंक	१,५८६	१०	६	मार्च १	शेष नी/ला	१,६००	–	–
	छूट	१३	५	६	३१	विविध खाते दे.बि.ब. के अनु	४,५००	–	–
३१	शेष आ/ले	४,५००	–	–					
		६,१००	–	–			६,१००	–	–
					१९५१				
					अप्रैल १	शेष नी/ले	४,५००	–	–

विक्रय खाता

		रु.	आ.	पा.			रु.	आ.	पा.
१९५१					१९५१				
मार्च ३१	व्यापार खाता	१३,३९०	१०	–	मार्च २	रोकड़	६३०	–	–
					३१	विविध खाते वि.ब. के अनुसार	१२,७६०	१०	–
		१३,३९०	१०	–			१३,३९०	१०	–

मोटर खर्च खाता

		रु.	आ.	पा.			रु.	आ.	पा.
१९५१					१९५१				
मार्च ३१	रोकड़	६६	४	–	मार्च ३१	लाभ-हानि खाता	६६	४	–

बट्टा खाता

		रु.	आ.	पा.			रु.	आ.	पा.
१९५१					१९५१				
मार्च ३१	विविध खाते रो.ब. के अनुसार	९०	–	–	मार्च ३१	विविध खाते रो.ब. के अनुसार	१०६	१२	–
	लाभ-हानि खाता	१६	१२	–					
		१०६	१२	–			१०६	१२	–

छूट खाता

		रु.	आ.	पा.			रु.	आ.	पा.
१९५१					१९५१				
मार्च ३१	लाभ-हानि खाता	१३	५	६	मार्च ८	देय बिल	१३	५	६

नगरपालिका कर खाता

		रु.	आ.	पा.			रु.	आ.	पा.
१९५१					१९५१				
मार्च ६	रोकड़	८२	१०	–	मार्च ३१	लाभ-हानि खाता	८२	१०	–

क्रय खाता

		रु.	आ	पा.			रु.	आ.	पा.
१९५१					१९५१				
मार्च १७	रोकड़	१००	–	–	मार्च ३१	व्यापार खाता	११,८९०	१०	–
	विविध खाते क्र.ब. के अनुसार	११,७९०	१०	–					
		११,८९०	१०	–			११,८९०	१०	–

मजदूरी खाता

		रु.	आ	पा.			रु.	आ	पा.
१९५१					१९५१				
मार्च १३	बैंक	१५६	४	–	मार्च ३१	व्यापार खाता	३३१	४	–
२६	बैंक	१७५	–	–					
		३३१	४	–			३३१	४	–

मोटर किराया खाता

		रु.	आ	पा.			रु.	आ.	पा.
१९५१					१९५१				
मार्च ३१	लाभ-हानि खाता	५३३	५	६	मार्च १६	बैंक	५३३	५	६

चोरी द्वारा हानि खाता

		रु.	आ.	पा.			रु०	आ.	पा.
१९५१					१९५१				
मार्च २५	मोटर गाड़ी	६००	–	–	मार्च ३१	लाभ-हानि खाता	६००	–	–

क्रय वापिसी खाता

		रु.	आ.	पा.			रु.	आ.	पा
१९५१					१९५१				
मार्च ३१	व्यापार खाता	६५०	–	–	मार्च ३१	विविध खाते क वा.ब के अनुसार	६५०	–	–

खन्ना ब्रादर्स

		रु०	आ	पा			रु०	आ	पा
१९५१					१९५१				
मार्च २२	विक्रय	४,०००	–	–	मार्च २३	विक्रय वापसी	१००	–	–
						बैंक	२,२००	–	–
					२६	प्राप्य बिल	१,७००	–	–
		४,०००	–	–			४,०००	–	–

मरम्मत खाता

		रु०	आ.	पा.			रु०	आ.	पा.
१९५१					१९५१				
मार्च २३	रोकड़	१५	६	–	मार्च ३१	लाभ-हानि खाता	१५	६	–

विक्रय वापसी खाता

		रु०	आ.	पा.			रु०	आ	पा.
१९५१					१९५१				
मार्च २३	विविध खाते वि.वा.ब के अनु.	१००	–	–	मार्च ३१	व्यापार खाता	१००	–	–

पूँजी खाता

		रु०	आ	पा.			रु०	आ	पा.
१९५१					१९५१				
मार्च ३१	[illegible]	५००	–	–	मार्च १	[illegible]	[illegible]	–	–
	[illegible]	२,३५०	३	–	३१	[illegible]	[illegible]	–	
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	–					
		[illegible]	–	–			[illegible]	–	
					१९५१				
					[illegible]	[illegible]	[illegible]		

वेतन खाता

१९५१		रु०	आ.	पा.	१९५१		रु०	आ.	पा.
मार्च ३१	बैंक	५००	—	—	मार्च ३१	लाभ-हानि खाता	५००	—	—

ब्याज खाता

१९५१		रु०	आ.	पा.	१९५१		रु०	आ.	पा.
मार्च ३१	पूँजी	४००	—	—	मार्च ३१	लाभ-हानि खाता	४००	—	—

ह्रास खाता

१९५१		रु०	आ.	पा.	१९५१		रु०	आ.	पा.
मार्च ३१	मोटर गाड़ी	१५०	—	—	मार्च ३१	लाभ-हानि खाता	१५०	—	—

तलपट

खाते	खा० पृ०	नाम			जमा		
		रु०	आ	पा.	रु०	आ.	पा.
स्टॉक खाता		२०,०००	—	—			
फ्री होल्ड भूमि गृहादि खाता ...		४०,०००	—	—			
मोटर गाड़ी खाता ...		१८,३५०	—	—			
प्राप्य बिल खाता		४,७६६	६	—			
घासीराम		२,२२१	१	३			
द्वारकाप्रसाद		१,८७३	१५	६			
जेम्स ग्रान्ट					२,१०५	६	६
थर्मन एण्ड कं०					३,१५७	११	६
देय बिल खाता					४,५००	—	—
विक्रय खाता ...					१३,३६०	१०	—
मोटर खर्च खाता		९६	४	—			
घटा खाता					९९	१२	—
छूट खाता					१३	५	६
नगरपालिका कर खाता		८२	१०	—			
क्रय खाता ...		११,८९०	१०	—			
मजदूरी खाता ...		३११	४	—			
मोटर किराया खाता ...					५३३	५	६
चोरी द्वारा हानि खाता ...		९००	—	—			
[illegible] खाता ...					६५०	—	—
मरम्मत खाता		१५	६	—			
[illegible] खाता .		१००	—	—			
पूँजी खाता					८५,४००	—	—
वेतन खाता ...		५००	—	—			
ब्याज खाता		४००	—	—			
ह्रास खाता ...		१५०	—	—			
रोकड़ खाता ...		८१७	६	६			
बैंक खाता ..		१०,५८४	२	६			
		१,१६,७३०	३	—	१,१६,७३०	३	—

व्यापार व लाभ-हानि खाता
(माह मार्च १६५१)

	रु.	आ.	पा.		रु.	आ.	पा.
स्टॉक १-३-५१ को	२०,०००	–	–	विक्रय	१३,३६०	१०	–
क्रय	११,८६०	१०	–	क्रय वापसी	६५०	–	–
विक्रय वापसी	१००	–	–	स्टॉक ३१-३ ५१ को	१६,१७६	–	–
मजदूरी	३३१	४	–	सकल हानि आ/ले	२,१०२	४	–
	३२,३२१	१४	–		३२,३२१	१४	–
सकल हानि उ/ला	२,१०२	४	–	बट्टा	१६	१२	–
मोटर खर्च	६६	४	–	छूट	१३	५	६
नगर-पालिका कर	८२	१०	–	मोटर किराया	५३३	५	६
चोरी द्वारा हानि	६००	–	–	कुल हानि	३,३५०	१	–
मरम्मत	१५	६	–				
वेतन	५००	–	–				
ब्याज	४००	–	–				
ह्रास	१५०	–	–				
	३,६१६	८	–		३,६१६	८	–

सोहनलाल प्रेमचन्द का चिट्ठा
(३१ मार्च १६५१ को)

दायित्व	रु.	आ.	पा.	सम्पत्ति	रु.	आ.	पा.
देय बिल	४,५००	–	–	रोकड़	८१७	६	६
विविध लेनदार	५,२६३	२	–	बैंक	१७,५७५	३	६
पूँजी	६२,०४६	१५	–	प्राप्य बिल	४,७६६	६	–
				विविध देनदार	४,०६५	–	६
				स्टॉक	१६,१७६	–	–
				मोटर गाड़ी	१८,३५०	–	–
				फ्री होल्ड भूमि ग्रहादि	४०,०००	–	–
	१,०१,८१३	१	–		१,०१,८१३	१	–

प्रश्न

१. क्रय व क्रय वापसी पुस्तक की प्रकृति व लाभों का वर्णन करो। ये पुस्तकें किस प्रकार खाताबही में खताई जाती हैं ?

२. विक्रय व विक्रय-वापसी पुस्तकों की प्रकृति व लाभों का वर्णन करो। इनमें नकद बिक्री का किस प्रकार व्यवहार किया जाता है ?

३. क्रय, क्रय-वापसी, विक्रय व विक्रय वापसी पुस्तकों में कौन-कौन से लेख पत्र (Document) प्रमाणक (Voucher) का काम करते हैं ?

४. [illegible] (Instalment Delivery Sales) [illegible] विक्रय या वापसी पर माल भेजने की [illegible] किस प्रकार [illegible] ?

५. [illegible] से क्या अर्थ समझते हैं और पुस्तकों में इसका किस प्रकार व्यवहार होना चाहिए ?

६. [illegible] (rulings) [illegible]

७. [illegible]

८. [illegible] (Sale or Return) [illegible]

माल की मूल लागत १९५ रु० और ३१ दिसम्बर १९५० को कुल देनदार १६,३८५ रु० समझते हुये इनके समायोजन के लिये आवश्यक प्रविष्टियाँ कीजिये व यह भी बताओ कि स्टॉक व देनदार चिट्ठे में किस प्रकार लिखे जायेंगे ?

९. एक व्यापारी के निम्न लेनदेन मूल-प्रविष्टियों की किन पुस्तकों में, खाताबही के किन खातों में व ऐसे खातों की किस तरफ लिखे जायेंगे ?

		रु०
(१)	मारवाडी इंजिनियरिंग कम्पनी से एक मीटर उधार खरीदा	७५०
(२)	हरिराम को २% प्रति सैकडा पर उधार दिये	२,०००
(३)	सुन्दरलाल एण्ड क० को एक क्रेडिट नोट भेजा	१२०
(४)	व्यापारी के निजी घर की मरम्मत के लिये चैक द्वारा भुगतान किया	२५०
(५)	अब्दुलमजीद नामक ग्राहक को नकद बट्टा दिया	१५
(६)	एक कर्मचारी ने माल चुराया	५०

१०. निम्न व्यवहारों की आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये :—

		रु०
(१)	डूबत कर्ज के लिखे—रामप्रसाद पर	१५०
	हरिराम पर	२५०
(२)	मोहनलाल की स्वीकृति देय तिथि पर अस्वीकृत हो गई	६००
(३)	एक टकन यन्त्र की लागत, जो पहले कार्यालय यन्त्र खाते में न खता कर मूल-रूप से कार्यालय खर्च खाते में खता दी गई है, कार्यालय साज सामान को भेजने के लिये।	३६५
(४)	माल दान में दिया	१५०
(५)	प्रीमियर ट्रेडिंग क० से एक तिजोरी उधार खरीदी	१३५

११. १ जनवरी १९५१ को, नेशनल ट्रेडिंग क० की पुस्तकों में निम्न शेष थे :—

देनदार : एक्स ५,००० रु० ; वाई ३,००० रु० लेनदार : ए २,००० रु० ; बी १,००० रु०, रोकड़ ५,००० रु० ; बैंक में २,००० रु० ; भवन ३,००० रु० ; स्टाक १५,००० रु० ।

जनवरी माह में निम्नांकित व्यवहार हुये :—

			रु०
जनवरी	३	ए से माल खरीदा	५,०००
	४	ए को माल लौटाया	५००
	५	एक्स को माल बेचा	७,०००
	६	एक्स से वापिस आया	४००
	७	वाई से नकद प्राप्त हुआ	४८०
		बट्टा दिया	२०
	१०	वाई से २ माह बाद देय एक बिल प्राप्त हुआ	२,०००
	१२	बी को चैक द्वारा भुगतान किया	५००
		बट्टा प्राप्त हुआ	१०
	१५	बी को १ माह बाद देय एक बिल दिया	४९०
	१७	ए से माल खरीदा और उस राशि पर २ माह की स्वीकृति दी	२,०००
	२०	वाई को माल बेचा	५,०००
	२२	वाई से माल वापिस आया	५००
	२५	वाई से एक चैक प्राप्त हुआ, जो उसी दिन बैंक में जमा कर दिया गया	२,०००
	२७	वाई से उसके खाते की राशि पर २½% बट्टा घटाकर एक बिल प्राप्त हुआ	
	२८	एक्स से रोकड़ा प्राप्त हुये	३,०००
	३०	विविध खर्चे रोकड़ा चुकाये	५००
		मजदूरी चैक द्वारा चुकाई	५००
	३१	वेतन रोकड़ा चुकाया	५००
		निजी खर्चे के लिये चैक लिया	५००

३१ जनवरी १९५१ को स्टॉक १२,००० रु०

उपर्युक्त लेन-देनों को सहायक बहियों में लिखिये, खाताबही में खताइये, व तलपट बनाकर अंतिम खाते तैयार कीजिये।

उत्तर : तलपट का योग ५१,४६० रु० ; सकल लाभ १,१०० रु० ; शुद्ध लाभ १० रु० ; चिट्ठा १६,७८० रु० ।

अध्याय—९

व्यापारिक वर्ष के अन्त में समायोजन करना

वही खाते का प्रधान उद्देश्य किसी व्यापार के स्वामी को एक दी हुई अवधि के लिये उसके व्यापारिक परिणाम और उस अवधि की समाप्ति पर उसकी आर्थिक दशा का पता लगाने मे सहायता देना है। इसके लिये एक व्यापार एवं लाभ हानि खाता (Trading and P &L. Account) और एक चिट्ठा (Balance Sheet) बनाया जाता है। इन खातो को अन्तिम खाते (Final Accounnts) भी कहा जाता है और ये प्राय. एक दी हुई अवधि के अन्त तक के लिये बनाये जाते हैं—वार्षिक या अर्धवार्षिक। यदि अन्तिम खाते किसी वर्ष की समाप्ति पर बनाये जायें, तो उस दशा मे उनको वार्षिक खाते (Annual Accounts) भी कहा जा सकता है।

यदि अन्तिम खातों को ठीक ठीक तैयार करना है, तो यह आवश्यक होगा कि उस अवधि के तमाम सौदे वहियों मे दर्ज किये जाये। किसी व्यापार के वास्तविक सौदे तो निस्संदेह वर्ष पर्यन्त वहियों में उन तिथियो पर लिखे जाते है जिनको वे होते है और वही खाते की गणित सम्बन्धी शुद्धता को जाँचने के लिये एक तलपट बनाया जाता है। इस तलपट को प्रारम्भिक तलपट (Preliminary Trial Balance) कहते हैं।

परन्तु अन्तिम खाते बनाने के पहले, यह पता लगाना आवश्यक है कि अवधि से सम्बन्धित कोई ऐसे सौदे तो नहीं बचे, जिनको या तो वहियों मे बिल्कुल ही दर्ज नहीं किया गया, या जिनके नाम अपूर्ण कार्यवाही हुई है अथवा जिनको गलत लिखा गया हो। व्यवहार मे यह देखने मे आवेगा कि ऐसे सौदे कई होते है। इनके सम्बन्ध मे उचित कार्य करने चाहिये तब ही अन्तिम खाते सही बन सकेंगे। इन व्यवहारो का वहियो मे लिखना ही किसी व्यापारिक वर्ष के अन्त में समायोजन करना कहलाता है अन्य शब्दों में समायोजन (Adjustment) से केवल यह अभिप्राय है कि उस सौदे को जिसका अभी लेखा नहीं किया गया है, या अपूर्ण अथवा गलत लेखा किया है सही-सही दर्ज किया जाय। ये समायोजन प्रारम्भिक तलपट मिलने के बाद किये जाते हैं।

समायोजन करने के उद्देश्य निम्न हैं:—(अ) व्यापार एवं लाभ हानि खाता उस अवधि के लिये अवधि से सम्बन्धित तमाम व्यय और आय का, भले ही ऐसा व्यय वास्तव मे चुकाया गया हो या नहीं और भले ही ऐसी तमाम आय नकद प्राप्त हुई हो या नहीं, सही और पूर्ण लेखा करना तथा (आ) वहियो में मिली गलतियाँ (यदि कोई हों) उचित रूप मे सही कर देना है जिससे अन्तिम खातो द्वारा प्रगट किया परिणाम अधिक से अधिक विश्वास योग्य हो सके।

जब किसी व्यापारिक अवधि की समाप्ति पर आवश्यक समायोजन खातों में कर दिये जायें, तो वहियाँ उस अवधि के तमाम सौदों का एक पूर्ण लेखा रखेंगी और परिणामस्वरूप प्रारम्भिक तलपट के [illegible] कुछ शेष बदल जायेंगे और कुछ नये खाते अस्तित्व ग्रहण कर लेंगे।

यदि आवश्यक हो तो एक नया तलपट बनाया जा सकता है। ऐसे तलपट को अन्तिम तलपट (Final Trial Balance) कहते हैं क्योंकि वह उस समय बनाते हैं जब कि अवधि [illegible] सौदा वहियों में उचित रूप से दर्ज हो जाता है। यह अन्तिम तलपट ही है जिससे अन्तिम खाते बनाये जाते हैं।

प्रमुख समायोजन ([illegible] Adjustments) —किसी व्यापारिक अवधि के अन्त में जो

समायोजन प्राय आवश्यक होते हैं वे निम्नलिखित के सम्बन्ध में किये जाते है—अन्तिम स्टॉक, अदत्त व्यय; पेशगी या पूर्व दत्त व्यय; अप्राप्त आय या अर्जित आय; अनार्जित आय, ह्रास, पूँजी और आहरण पर व्याज; डूबत ऋण, बट्टे आदि के लिये कोष; पूँजी और आगम के मध्य भेद एवं त्रुटियाँ।

ये समायोजन किस प्रकार किये जायेंगे यह इस और अगले अध्यायो में बताया जायगा।

(१) अन्तिम स्टॉक (Closing Stock) :—

व्यापारिक अवधि के अन्तिम दिन हस्तस्थ स्टॉक की रकम व्यापार खाते के जमा तरफ दिखलाई जाती है; अत. लाभ के अंक की शुद्धता अन्तिम स्टॉक की शुद्धता पर बहुत ही निर्भर करती है। अन्तिम स्टॉक की रकम का बड़ी सावधानी से पता लगाना चाहिये। यह दो ढंगो मे किया जा सकता है :—

(अ) वास्तविक स्टॉक सँभाल कर (Actual stock taking) :—स्टॉक सँभालने के पहले, हस्तस्थ माल को उनकी प्रकृति के अनुसार वर्गित कर लेना चाहिये। माल और स्टोर्स के स्टॉक अलहदा अलहदा सँभाले जायें।

माल से अभिप्राय उन वस्तुओ का है जो पुनर्विक्रय या निर्मित माल मे परिवर्तित होने के लिये है। एक निर्माणी व्यापार मे, जैसे कि एक सूती वस्त्र मिल मे, माल के अन्दर कपास, रुई, सूत और कपड़ा शामिल किया जायगा।

स्टोर्स से अभिप्राय उन वस्तुओं का है जो पुनर्विक्रय के लिये तो नही परन्तु जिन्हे व्यापार के अन्दर ही स्तैमाल के लिये रखा जाता है। एक निर्माणी व्यापार मे, स्टोर्स के अन्दर कोयला, द्रव, ईंधन, चिकनाई के तेल, पैकिंग सामग्री, विज्ञापन सामग्री, रसायन, मशीनरी के खुले भाग आदि शामिल होंगे।

अन्तिम स्टॉक मालूम करना एक जटिल कार्य है और कभी-कभी इसमें कई दिन लग जाते है। हस्तस्थ सभी माल वास्तव मे गिना, तोला या नापा जाता है और तब स्टॉक सूचियो (Inventories) मे चढ़ाया जाता है और सूचियाँ जोड़ी जाती है इसके बाद हस्तस्थ स्टॉक की रकम निकलती है। इस सारे काम को 'स्टॉक सँभालना' (Stock Taking) कहते हैं।

व्यापारिक अवधि के अन्त मे हस्तस्थ स्टॉक (Stock in hand) का मूल्य निकालने के लिये स्टॉक सँभालना आवश्यक है। साथ ही इससे कोई माल जो टूटा फूटा है या बिक्री के अयोग्य है तो वह भी स्वामी की दृष्टि मे आ जाता है।

मूल्यांकन के ढंग (Mode of valuation) :—अन्तिम स्टॉक प्रारम्भिक लागत या बाजार भाव (Original Cost or Market Price) दोनो में जो कम हो उस पर मूल्यांकित करना चाहिये तथा ऐसे किसी माल के लिये जो पुराना है, दुकान में रखा-रखा खराब हो गया है और बिकने योग्य नहीं है, उचित रकम काट देनी चाहिये। प्रारम्भिक लागत या तो औसत लागत (Average Cost) हो या 'प्रथम आगमन, प्रथम निर्गमन' (First in First Out) के नियमानुसार निकाली गई लागत हो। उदाहरण के लिये, किसी सौदागर ने वर्ष के दौरान में किसी विशेष वस्तु की १२,००० इकाइयाँ ६ रु० ८ आ० प्रति इकाई, १३,००० इकाइयाँ ६ रु० ४ आ० प्रति इकाई और ८,००० इकाइयाँ ६ रु० प्रति इकाई की दर से खरीदीं। यदि १०,००० इकाइयाँ बिना बिकी रह जायँ, तो स्टॉक की औसत लागत ६२,७२१) होगी और 'प्रथम आगमन एवं प्रथम निर्गमन' के अनुसार लागत ६०,२५०) है। बाजार भाव शब्द स्टॉक सँभालने के दिन प्रतिस्थापन की लागत (Cost of replacement) सूचित करता है।

स्टॉक लागत पर या बाजार भाव जो भी कम हो उस पर मूल्यांकित किया जाता है, क्योंकि हिसाब में तब तक कोई लाभ शामिल नहीं करना चाहिये जब तक वह वस्तुत. हो न जाय। यदि विक्रय मूल्य

लागत से अधिक है और यदि स्टॉक विक्रय मूल्य पर मूल्यांकित किया जाता है तो ऐसे स्टॉक पर संभवनीय लाभ हिसाब में शामिल हो जावेगा यद्यपि वह हुआ नहीं है और शायद कभी न हो। ऐसे ढंग मे चालू वर्ष का लाभ उचित से अधिक पर प्रगट होता है, जो गलत है।

अत. यदि स्टॉक पर कोई हानि होने की संभावना है तो वह विचार मे लिया जाता है परन्तु यदि लाभ की संभावना है तो उसे छोड़ दिया जाता है। यह श्रेष्ठ वहीखाते का एक महत्वपूर्ण नियम है।

(२) स्टाक का 'लगभग सही' अनुमान लगाना (Approximation of Stock) :—

कभी-कभी यह आवश्यक हो जाता है कि हस्तस्थ स्टॉक बिना वास्तविक रूप से सँभाले ही उसका 'लगभग सही' मूल्य निकाला जाय। उदाहरण के लिये, जब मासिक व्यापार एवं लाभ-हानि खाता बनाना हो या जब आग या भूचाल आदि से स्टॉक नष्ट हो गया हो या उसे भौतिक रूप से सँभालना (Physical Stock taking) शक्ति के बाहर हो।

किसी निर्दिष्ट अवधि के अन्त मे स्टॉक का 'लगभग सही' मूल्य मालूम करने के लिये, व्यापार के पिछले रिकार्ड से पहले तो अवधि-विक्रय पर कुल लाभ का औसत प्रतिशत (Average percentage of Gross profit on turnover) निकालो और तब निम्न ढग से चलो—

प्रारम्भिक स्टॉक, अवधि की शुद्ध खरीद, प्रत्यक्ष खर्च और अवधि विक्रय पर कुल लाभ की औसत दर के आधार पर निकाला गया कुल लाभ जोड़ो और तत्पश्चात् इस प्रकार लगाये गये जोड़ से अवधि का शुद्ध विक्रय (Net Sales) घटादो। यह शेष उस विशेष दिन को हाथ मे रहे स्टॉक का 'लगभग सही' मूल्य होगा। ऐसा करने मे, यदि कोई माल नि.शुल्क दे दिया गया है या अवधि के दौरान मे चोरी हो गया है तो ऐसे माल की लागत इस प्रकार निकाले गये स्टॉक की रकम मे कम कर देना चाहिये।

यह ढंग केवल वहीं प्रयोग किया जा सकता है, जहाँ अवधि विक्रय पर कुल लाभ का प्रतिशत वर्ष से वर्ष बहुत भिन्न नही होता और यदि अवधि के दौरान मे कोई विशेष परिस्थिति रही है जो कुल लाभ पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाले (जैसे उस खरीदे हुये माल की लागत मे चढ़ाव या उतार आना जा उपभोगताओं को अभी नहीं बेचा गया है) तो कुल लाभ का औसत प्रतिशत उसके अनुसार ही समायोजित कर लेना चाहिये और तब ही उसे इस आशय के लिये इस्तैमाल किया जाय।

उदाहरण ४३

१५ मई १९५१ को, एक व्यापारी के व्यापार भवन में आग लग गई। स्टॉक का अधिकांश भाग नष्ट हो गया व केवल १,७०० रु० के मूल्य का स्टॉक बचा।

किसी प्रकार हिसाब की पुस्तकें बचा ली गई। उनसे पता लगा कि १ जनवरी १९५१ को स्टॉक का मूल्य ४०,२०० रु० था, और अग्नि के दिन कुल क्रय २,५१,८०० रु० व कुल बिक्री ३,२०,००० थी।

पिछले वर्षों के हिसाबों से पता लगा कि अवधि विक्रय पर सकल लाभ की औसत दर १५% थी।

अग्नि में नष्ट हुये स्टॉक की राशि का पता लगाओ।

व्यापार खाता

	रु०		रु०
स्टॉक १-१-५१	४०,२००	विक्रय	३,२०,०००
क्रय	२,५१,८००	स्टॉक १५-५-१९५१ को	२०,०००
कुल लाभ (अवधि विक्रय का १५ प्रतिशत)	४८,०००		
	३,४०,०००		३,४०,०००

अग्नि द्वारा नष्ट स्टॉक की राशि निम्न प्रकार निकाली जावेगी :—

अग्नि के पूर्व स्टॉक	२०,०००
घटाओ—बचा हुआ स्टॉक	१,७००
अतः अग्नि द्वारा नष्ट स्टॉक की राशि	१८,३००

उदाहरण ४४

एक व्यापार का स्वामी, जो अपने हिसाब कलेन्डर वर्ष के अंत में बन्द करता है, ३१ मार्च १९५१ को समाप्त होने वाले तीन महीने के लिये व्यापार का अनुमानित परिणाम (approximate result) जानना चाहता है। उस दिन स्टॉक सँभालना असम्भव है।

१ जनवरी १९५१ को स्टॉक की राशि १,२८,००० रु० थी व उसके तीन माह के लेन-देन निम्न थे :— क्रय २,९७,००० रु०, क्रय वापसी १३,००० रु०; विक्रय ४,२०,००० रु०; विक्रय वापसी २५,००० रु; प्रत्यक्ष खर्चे २४,००० रु०; प्रबन्ध व बिक्री खर्च ३५,००० रु०।

पिछले तीन वर्षों में सकल लाभ विक्रय का औसत पर २०% रहा है। ३१ मार्च १९५१ को समाप्त होने वाले तीन महीने के लिये व्यापार एव लाभ-हानि खाता बनाइये।

व्यापार एवं लाभ-हानि खाता
(३ माह का ३१ मार्च १९५१ को)

		रु०			रु०
स्टॉक १-१-५१ को		१,२८,०००	विक्रय	४,२०,०००	
क्रय	२,९७,०००		घटाओ-वापिसी	२५,०००	३,९५,०००
घटाओ-वापिसी	१३,०००	२,८४,०००	स्टॉक ३१-३-५१ को		१,५९,५००
खर्चे		२४,०००			
सकल लाभ आ/ले (२०% बिक्री पर)		१,१८,५००			
		५,५४,५००			५,५४,५००
प्रबन्ध व विक्रय खर्च		३५,०००	सकल लाभ नी/ला		१,१८,५००
शुद्ध लाभ (Net Profit)		८३,५००			
		१,१८,५००			१,१८,५००

(२) अदत्त व्यय (Outstanding Expenses) :—

किसी व्यापारिक अवधि की समाप्ति पर प्रायः देखा जावेगा कि उस अवधि से सम्बन्धित कुछ खर्च वस्तुतः चुकाये नहीं गये हैं। इन्हें 'अदत्त व्यय' कहते है। इनका लाभ तो प्राप्त हो गया है परन्तु प्रतिफल नहीं चुकाया गया है। ऐसे व्यय वेतन, मजदूरी, किराया, ब्याज, विज्ञापन आदि हो सकते हैं। उदाहरण के लिये, मान लीजिए कि एक व्यापारी ५००) प्रति माह अपने कार्यालय स्टॉफ का वेतन देता है, प्रत्येक माह का वेतन अगले माह की पहली तारीख को देय है। यदि उसका व्यापारिक वर्ष ३१ दिसम्बर को समाप्त होता है तो उस तारीख के पहले उसने दिसम्बर का वेतन नहीं चुकाया होगा। अत. ५००), जो दिसम्बर माह के वेतन की रकम है, ३१ दिसम्बर को अदत्त व्यय होगी।

मान लीजिये कि उसके १९५० के वर्ष के खाते तैयार कर लिये जाते हैं। उसकी खाता बही में बने वेतन खाते में वर्ष के दौरान में वास्तविक चुकाये गये वेतन का रिकार्ड होगा और ५,५००) का नाम शेष प्रगट करेगा। यदि दिसम्बर माह के अदत्त वेतन के सम्बन्ध में कुछ नहीं किया जाता तो केवल ५,५००) ही लाभ-हानि खाते से चार्ज किये जावेंगे और इसलिये लाभ एवं हानि खाते द्वारा प्रगट की लाभ या हानि की रकम ठीक न होगी क्योंकि पूरे वर्ष का वेतन विचार में नहीं लिया गया है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि वेतन खाते को पूरे वर्ष के ६,०००) वेतन से नाम करना चाहिये। यह वेतन खाते को ५००) अधिक नाम करके हो सकता है। लेकिन इस रकम से कौनसा खाता जमा किया जावेगा. इस प्रयोजन के लिये एक नया खाता, जिसे 'अदत्त वेतन खाता' (Outstanding Salaries Account) कहते हैं, खोला जाता है और अदत्त वेतन की रकम से जमा किया जाता है।

समायोजक प्रविष्टि (Adjusting entry) .—अदत्त वेतन के सम्बन्ध मे आवश्यक समायोजन निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि के द्वारा किया जायगा, जिसे समायोजक प्रविष्टि कहा जा सकता है।

			रु०	रु०
१६५०				
दिस. ३१	वेतन खाता	...	५००	
	अदत्त वेतन खाता	..		५००
	दिसम्बर का वेतन अभी नहीं दिया गया			

अब दो निम्न आवश्यक खाते खोले जायेंगे :—

वेतन खाता

		रु०			रु०
१६५०			१६५०		
विभिन्न			दिस. ३१	लाभ-हानि खाता	६,०००
तिथियाँ	रोकड़	५,५००			
दिस. ३१	अदत्त वेतन खाता	५००			
		६,०००			६,०००

अदत्त वेतन खाता

		रु०			रु०
१६५०			१६५०		
दिस. ३१	शेष आ/ले	५००	दिस. ३१	वेतन खाता	५००
			१६५१		
			जन. १	शेष नी/ला	५००

यह याद रखना आवश्यक है कि अदत्त वेतन खाता एक अव्यक्तिगत नाम के रूप मे व्यक्तिगत खाता है। यह उन लेनदारो का खाता जिनके प्रति वेतन देय है। इन दोनों खातों का शेष अन्तिम तलपट में प्रगट होगा। वेतन खाता एक आय-व्यय खाता होने के कारण लाभ एवं हानि खाते के नाम में ट्रान्सफर कर दिया जायगा और अदत्त वेतन खाता एक व्यक्तिगत खाता होने के कारण ३१ दिसम्बर १६५० को बनने वाले चिट्ठे में दायित्व की भाँति दिखाया जावेगा।

विपरीत प्रविष्टि (Reversing entry) :—अगले वर्ष के प्रथम दिन अर्थात् १ जनवरी १६५१ को एक ओर जर्नल प्रविष्टि, अदत्त वेतन खाते को नाम और वेतन खाते को जमा करते हुए पास की जावेगी। इस जर्नल प्रविष्टि को 'विपरीत प्रविष्टि' कह सकते हैं। दोनों खाते इस प्रकार प्रगट होंगे :—

अदत्त वेतन खाता

		रु०			रु०
१६५१			१६५१		
जन. १	वेतन खाता	५००	जन. १	शेष नी/ला	५००

वेतन खाता

					रु०
			१६५१		
			जन. १	अदत्त वेतन खाता	५००

(२) पूर्वदत्त व्यय या पेशगी व्यय (Prepaid Expenses) —

कुछ व्यय ऐसे भी होते हैं, जैसे अग्नि बीमा प्रीमियम, टेलीफोन चन्दा, किराया आदि, जो [illegible] व्यापारिक अवधि के [illegible] दे दिये जाते हैं किन्तु उनका पूरा लाभ उस अवधि में प्राप्त नहीं

हुआ है, अर्थात् लाभ का कुछ भाग अगली अवधि को भी मिलता है। किसी व्यय का वह भाग, जिसका लाभ आने वाली अवधि में मिलता हो, 'पूर्व दत्त व्यय' कहलाता है।

यदि हम मान लें कि एक व्यापारी का व्यापारिक वर्ष ३१ दिसम्बर को समाप्त होता है और १ जुलाई १९५० को उसने अपने व्यापार भवन (Business Premises) का एक साल का किराया ६,०००) पेशगी चुका दिया, तो ३१ दिसम्बर १९५१ को पूर्व दत्त किराये की रकम ३,०००) होगी। पूर्व दत्त किराये के सम्बन्ध में आवश्यक समायोजन करने के लिये खाता वही में एक नया खाता जिसे 'पूर्व दत्त किराया खाता' (Prepaid Rent Account) कहते हैं, खोला जावेगा।

समायोजक प्रविष्टि (Adjusting entry) .—पूर्व दत्त किराये पर समायोजन करने के लिये निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि, जिसे समायोजक प्रविष्टि कह सकते हैं, पास की जावेगी :—

			रु०	रु०
१९५० दिस. ३१	पूर्वदत्त किराया खाता	...	३,०००	
	किराया खाता	...		३,०००
	६ माह का किराया पहले से चुकाया			

निम्न दो आवश्यक खाते (Ledger Accounts) खोले जायेंगे .—

किराया खाता

		रु०			रु०
१९५० जुलाई १	रोकड़	६,०००	१९५० दिस ३१	पूर्वदत्त किराया खाता	३,०००
				लाभ-हानि खाता	३,०००
		६,०००			६,०००

पूर्वदत्त किराया खाता

		रु०			रु०
१९५० दिस. ३१	किराया खाता	३,०००	१९५० दिस. ३१	शेष आ/ले	३,०००
१९५१ जन. १	शेष नी/ला	३,०००			

पूर्व दत्त किराया खाता व्यक्तिगत नाम में एक व्यक्तिगत खाता है, क्योंकि यह उस व्यक्ति के लिये खोला गया है जिसको किराया पेशगी दिया गया। किराया खाता एक आय-व्यय खाता होने के नाते लाभ-हानि खाते की नाम तरफ ट्रान्सफर द्वारा बन्द हो जायगा और पूर्व दत्त किराया खाता एक व्यक्तिगत खाता होने के नाते ३१ दिसम्बर १९५० को बनने वाले चिट्ठे में एक सम्पत्ति के रूप में दिखाया जावेगा।

विपरीत प्रविष्टि (Reversing Entry) :—अगले वर्ष के पहले दिन अर्थात १ जनवरी १९५१ को एक दूसरी जर्नल प्रविष्टि किराया खाते के नाम और पूर्व दत्त किराया खाते के जमा करते हुए पास की जावेगी और तत्पश्चात् दोनों खाते इस प्रकार प्रगट होंगे :—

पूर्वदत्त किराया खाता

		रु०			रु०
१९५१ जन. १	शेष नी/ला	३,०००	१९५१ जन. १	किराया खाता	३,०००

किराया खाता

		रु०			
१९५१ जन. १	पूर्वदत्त किराया खाता	३,०००			

(४) प्राप्य या अर्जित आय (Accrued Income).—

तमाम आय, जैसे दिये हुए ऋणों पर ब्याज, कमाया हुआ कमीशन, प्राप्य किराया आदि, जो चालू वर्ष मे कमा तो ली गई है परन्तु जो वास्तव मे प्राप्त नहीं हुई अर्जित या प्राप्य आय कहलाती है।

यदि हम यह मान ले कि किसी व्यापारी ने १०,०००) ६% वार्षिक दर पर १ अप्रैल १९५० को ऋण दिया, जिस पर ब्याज छमाही चुकाया जायगा और यदि उसकी वहियाँ प्रति वर्ष ३१ दिसम्बर को बन्द की जाती है तो १ अक्टूबर १९५० को ब्याज की वास्तव मे प्राप्त रकम ३००) होगी और इसके अतिरिक्त १५०) (जो तीन महीने का ब्याज है) ३१ दिसम्बर १९५० को अर्जित होगा। अर्जित ब्याज को वहियो मे एक नया खाता खोल कर, जिसे अर्जित ब्याज खाता (Accrued Interest Account) कहते हैं, समयोजित किया जायगा।

समायोजक प्रविष्टि (Adjusting Entry) :—अर्जित ब्याज के लिये आवश्यक समायोजन निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि, जिसे समायोजक प्रविष्टि कहा जा सकता है, द्वारा किया जायगा।

		रु०	रु०
१९५०			
दिस ३१	अर्जित ब्याज खाता	१५०	
	ब्याज खाता		१५०
	३ महीने का अर्जित ब्याज		

खाता वही में दोनों खाते इस प्रकार प्रगट होंगे :—

ब्याज खाता

		रु०			रु०
१९५०			१९५०		
दिस ३१	लाभ-हानि खाता	४५०	अक्टू.	रोकड	३००
			दिस. ३१	अर्जित ब्याज खाता	१५०
		४५०			४५०

अर्जित ब्याज खाता

		रु०			रु०
१९५०			१९५०		
दिस. ३१	ब्याज खाता	१५०	दिस. ३१	शेष आ/ले	१५०
१९५१					
जन १	शेष नी/ला	१५०			

अर्जित ब्याज खाता, अव्यक्तिगत नाम से एक व्यक्तिगत खाता है क्योंकि वह उस व्यक्ति के लिये खोला गया है, जिसे ऋण दिया था। ब्याज खाता एक आय व्यय खाता होने के नाते लाभ-हानि खाते की जमा तरफ ट्रान्सफर द्वारा बन्द हो जायगा और अर्जित ब्याज खाता व्यक्तिगत खाता होने के नाते ३१ दिसम्बर १९५० को बनने वाले चिट्ठे में सम्पत्ति के रूप में प्रगट होगा।

विपरीत प्रविष्टि (Reversing Entry).—अगले वर्ष के प्रथम दिन अर्थात् १ जनवरी १९५१ को, ब्याज खाता नाम और अर्जित ब्याज खाता जमा करते हुए एक नई जर्नल प्रविष्टि पास की जायगी जिसके पश्चात् दोनों खाते इस प्रकार प्रगट होंगे :—

अर्जित ब्याज खाता

		रु०			रु०
१९५१			१९५१		
जन. १	[illegible]	१५०	जन. १	ब्याज खाता	१५०

ब्याज खाता

[illegible]		
[illegible]	[illegible]	[illegible]

(५) पूर्व प्राप्त, अनार्जित या अप्राप्य आय (Unearned Income):—

कभी-कभी किसी व्यापारिक वर्ष के दौरान मे कुछ आय जैसे व्याज, किराया, वट्टा, कमीशन आदि प्राप्त हो जाता है, जो सम्पूर्णत: उस अवधि की नही होती, क्योकि उसका कुछ भाग अगली अवधि के सम्बन्ध मे है। ऐसी आय का वह भाग जो अगली अवधि के लिये प्राप्त हुआ है पूर्व प्राप्त आय (Unearned Income) कहलाती है।

हम यह मान ले कि एक व्यापारी अपने भवन का कुछ भाग १ जुलाई १९५० को १,२००) वार्षिक किराये पर, जो सब पेशगी लिया जायगा, उठा देता है और उसके हिसाब प्रति वर्ष ३१ दिसम्बर को बनते हैं। १ जुलाई १९५० को वास्तव मे प्राप्त किराये की रकम १,२००) है परन्तु उसका केवल आधा ही १९५० के वर्ष का है शेप तो १९५१ की प्रथम छमाही के सम्बन्ध मे प्राप्त हुआ है। अत: ३१ दिसम्बर १९५० को ६००) पूर्व प्राप्त आय है। ६००) की यह पूर्व प्राप्त आय वहियो मे एक नया खाता, जो पूर्व प्राप्त किराया खाता, कहलाता है, खोल कर समायोजित की जावेगी।

समायोजक प्रविष्टि (Adjusting Entry):—पूर्व प्राप्त आय के सम्बन्ध मे आवश्यक समायोजन करने के लिये निम्नलिखित समायोजक प्रविष्टि की जावेगी —

			रु०	रु०
१९५०				
दि० ३१	किराया खाता		६००	
	पूर्व प्राप्त किराया खाता	...		६००
	छह महीने का किराया पेशगी आया	....		

दोनों खाते खाता-बही में इस प्रकार प्रगट होंगे।

किराया खाता

		रु०			रु०
१९५०			१९५०		
दि० ३१	पूर्व प्राप्त किराया खाता	६००	जुलाई १	रोकड़	१२००
	लाभ हानि खाता	६००			
		१,२००			१,२००

पूर्व प्राप्त किराया खाता

		रु०			रु०
१९५०			१९५०		
दि० ३१	शेप आ/ले	६००	दि० ३१	किराया खाता	६००
			१९५१		
			जन० १	शेप नी/ला	६००

पूर्व प्राप्त किराया खाता एक अव्यक्तिगत नाम से व्यक्तिगत खाता है क्योंकि वह उस व्यक्ति के लिये खोला गया है, जिसने पेशगी किराया दिया है। किराया खाता एक आय-व्यय खाता होने के कारण लाभ-हानि खाते की जमा तरफ ट्रान्सफर द्वारा बन्द कर दिया जायगा और पूर्व प्राप्त किराया खाता व्यक्तिगत खाता होने के नाते ३१ दिसम्बर १९५० को बनने वाले चिट्ठे में दायित्व के रूप में प्रगट होगा।

विपरीत प्रविष्टि (Reversing Entry):—अगले वर्ष प्रथम दिन अर्थात् १ जनवरी १९५१ को पूर्व प्राप्त किराया खाता नाम और किराया खाता जमा करते हुए एक प्रविष्टि और भी पास की जायगी तथा दोनों खाते इस प्रकार प्रगट होंगे :—

पूर्व प्राप्त किराया खाता

		रु०			रु०
१९५१			१९५१		
जन० १	किराया खाता	६००	जन० १	शेप नी/ला	६००

किराया खाता

			१९५१ जन० १	पूर्व प्राप्त किराया खाता	रु० ६००

(६) ह्रास (Depreciation) :—

इस विषय पर अगले अध्याय में विस्तार से विचार किया गया है। यहाँ केवल यह कहना पर्याप्त होगा कि ह्रास किसी सम्पत्ति के मूल्य में वह कमी है जो विभिन्न कारणों से, जिनमें घिसाई मुख्य है, होती है। यह स्पष्ट है कि जितनी अधिक कोई सम्पत्ति प्रयोग में आवेगी उतनी ही कम मूल्य की वह होती जावेगी। प्रत्येक दिन वह अपने मूल्य का कुछ भाग खोती है। इस प्रकार हुई हानिको लाभ से उसी प्रकार चार्ज करना चाहिये जिस तरह दूसरे व्यापारिक व्यय जैसे मजदूरी, वेतन, किराया, बट्टा आदि।

अतः अन्तिम खाते ठीक से बनाने के लिये यह आवश्यक है कि सम्पत्तियो पर ह्रास लाभ से चार्ज किया जाय। इसके लिये एक आय-व्यय खाता, जिसे ह्रास खाता (Depreciation Account) कहते हैं, खोला जाता है।

समायोजक प्रविष्टि (Adjusting Entry) :—सम्पत्ति के ह्रास की अनुमानित रकम निकालो और तब ह्रास खाते को नाम और उस सम्पत्ति खाते को जमा करो।

ह्रास खाता एक आय-व्यय खाता होने के नाते लाभ-हानि खाते के नाम तरफ ट्रान्सफर द्वारा बन्द कर दिया जावेगा और सम्पत्ति अपने घटे हुए मूल्य पर चिट्ठे में प्रगट होगी।

(७) पूँजी और आहरण पर व्याज (Interest on Capital and Drawings) :—

कभी-कभी एक व्यापार का स्वामी अपनी पूँजी को एक विनियोग मान लेता है, जिस पर उसे व्याज चाहिये। अतः यह व्यवस्था की जाती है कि एक निर्दिष्ट दर से व्याज उसकी पूँजी पर, व्यापार का लाभ या हानि पता लगाने से पहले, दी जावे।

पूँजी पर व्याज की रकम एक जर्नल प्रविष्टि द्वारा व्याज खाते को नाम और पूँजी खाते को जमा कर दी जाती है। व्याज खाता लाभ-हानि खाते की नाम तरफ ट्रान्सफर द्वारा बन्द कर दिया जाता है।

जहाँ पूँजी पर व्याज दिया जाता है, वहाँ स्वामी के आहरण पर भी प्रायः व्याज एक निर्दिष्ट दर से लगाया जाता है। ऐसी दशा में आहरण पर व्याज एक जर्नल प्रविष्टि द्वारा पूँजी खाते या आहरण खाते को नाम और व्याज खाते को जमा किया जाता है।

जहाँ आहरण खाता खोला गया है, उसे वर्ष की समाप्ति पर पूँजी खाते में ट्रान्सफर कर दिया जाता।

(८) अन्य समायोजन (Other Adjustments) :—

डूबत ऋण, बट्टे आदि, पूँजी और आगम एवं त्रुटियों के सम्बन्ध में समायोजनों पर अगले अध्याय में विचार किया जायगा।

उचन्त खाता (Suspense Account) :—प्रायः कुछ मदें ऐसे होते हैं जिनके बारे में पूरी जानकारी उस समय, [illegible] होते हैं, मालूम नहीं होती [illegible] के लिये, प्राप्त हुई रकम, जिसके बारे में यह पता नहीं कि यह किस व्यक्ति से या किस खाते में प्राप्त हुई है, या [illegible] [illegible] जो कभी अन्तिम आय-व्यय खातों में शामिल नहीं किये जाते हैं। ऐसी रकमें [illegible] पूरी सूचना [illegible] उचन्त खाते में लिखी

जाते हैं। जैसे ही सौदों की वास्तविक प्रकृति पता लगे, उदरत खाते में खताई गई रकम एक जर्नल प्रविष्टि द्वारा उसके उपयुक्त खाते को भेज दी जाती है।

उदरत खाता तलपट के अन्तर को, जब तक बहियों में विद्यमान त्रुटि पता न लग जाए और उचित रूप से सही न कर दी जावे, दर्ज करने के लिये भी प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण ४५

एक सस्था ने १ जनवरी १९५० को व्यापार प्रारम्भ किया और एक भवन २,००० रु० वार्षिक किराये पर लिया जो प्रत्येक ६ माह बाद अर्थात् ३० जून व ३१ दिसम्बर को नगरपालिका-कर सहित देय है, निम्न सूचनाओं से वर्ष के अन्त में जब कि सस्था की हिसाब की पुस्तकें बन्द होती हैं, आवश्यक समायोजन करके किराया दर व बीमा-खाता (Rent, Rates And Insurance Account) और उसके अन्तिम खाते तैयार करो :—

१९५०
अप्रैल १　२०० रु० एक साल का अग्नि बीमा प्रीमियम दिया
　　२१　१९५०-५१ का, जो १ अप्रैल १९५० से प्रारम्भ होता है, ४०० रु का नगरपालिका के कर के लिये बिल प्राप्त हुआ, परन्तु पुस्तकों में कोई प्रविष्ठ नहीं हुई
मई १५　नगरपालिका-कर के १०० रु० १ जनवरी १९५० से ३१ मार्च १९५० तक की अवधि के भुगतान किये
जुलाई २　३० जून १९५० को वाजिब होने वाला किराया चुकाया
अक्टूबर १　२०० रु० १९५०-५१ के लिये नगरपालिका-कर के सम्बन्ध में दिया

किराया, दर व बीमा खाता

१९५०		रु०	१९५०		रु०
अप्रैल १	रोकड़-अग्नि बीमा प्रीमियम ३१ मार्च १९५१ तक	२००	दिस० ३१	पूर्वदत्त बीमा खाता	५०
मई १५	रोकड़-नगरपालिका कर १ जन० १९५१ से ३१ मार्च' ५० तक	१००		लाभ-हानि खाता	२,५५०
जुलाई २	रोकड़—३० जून को वाजिब अर्द्धवार्षिक किराया	१,०००			
अक्टूबर १	रोकड़-नगरपालिका कर	२००			
दिस० ३१	अदत्त किराया खाता	१,०००			
	अदत्त नगरपालिका कर खाता	१००			
		२,६००			२,६००

उदाहरण ४६

एक इमारती सामान का व्यापारी प्रत्येक वर्ष ३१ मार्च को अपनी पुस्तकें बन्द करता है। ३१ मार्च १९५१ को, उसकी पुस्तकों से ४६,३२५ रु० का योग दिखलाते हुये एक प्रारम्भिक तलपट निकाला गया, तथा उस दिन अन्तिम खाते तैयार करने से पहले हमें निम्न बातों पर विचार करना है :—

१. ६५० रु० के मूल्य का माल खरीदा तथा प्राप्त करके स्टॉक में जमा कर दिया किन्तु, पुस्तकों में कोई प्रविष्टि नहीं की गई।

२. अदत्त खर्चे : वेतन २५० रु०; मजदूरी ७५ रु०; विज्ञापन १०० रु०; बिजली खर्च १५ रु०।

३. एक ग्राहक को दिये हुये ऋण पर अप्राप्त (Accrued) ब्याज की राशि ७५ रु० थी।

४ एक ठेकेदार से ३०० रु० कमीशन के प्राप्त हुये, जिनमें से आधे अगले वर्ष के कार्य के लिये हैं।

५. २५० रु० का माल व १५० रु० की मजदूरी एक धर्मशाला की दान स्वरूप मरम्मत कराने में लगी परन्तु पुस्तकों में कोई समायोजन नहीं किया गया।

६. १०० रु० का माल व्यापारी ने निजी खर्चे के लिये लिया।

७. ह्रास : ७५० रु० मोटर ट्रक पर; २५० रु० भवन; ८५० रु० कार्यालय यंत्र पर।

८. १०० रु० खोयी हुई रोकड़ राशि पुस्तकों में उचन्त खाते (Suspense Account) में डेबिट कर दी गई है।

उपर्युक्त पर समायोजन करने के लिये आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ बनाइये। अन्तिम तलपट का योग क्या होगा? यदि यह बातें ध्यान न दिया जाय तो इसका लाभ-हानि खाते पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

जर्नल

		रु०	रु०
१	क्रय खाता	६५०	
	लेनदार का व्यक्तिगत खाता		६५०
	माल खरीदा परन्तु पुस्तकों में नहीं लिखा गया		
२	वेतन खाता	२५०	
	मजदूरी खाता	७५	
	विज्ञापन खाता	१००	
	बिजली खर्च खाता	१५	
	अदत्त खर्च खाता		४४०
	इस काल में विभिन्न खर्चे नहीं चुकाये गये		
३	प्राप्य ब्याज खाता	७५	
	ब्याज खाता		७५
	ग्राहक को दिये गये ऋण पर प्राप्य ब्याज		
४	कमीशन खाता	१५०	
	पूर्व-प्राप्त कमीशन खाता		१५०
	कमीशन पेशगी प्राप्त हुआ		
५	दान खाता	४००	
	क्रय खाता		२५०
	मजदूरी खाता		१५०
	धर्मशाला की मरम्मत में माल व मजदूरी दान स्वरूप दी		
६	आहरण खाता	१००	
	क्रय खाता		१००
	व्यापारी ने माल निजी खर्च के लिये निकाला		
७	ह्रास खाता	१,०५०	
	मोटर ट्रक खाता		७५०
	भवन खाता		२५०
	कार्यालय साज सामान खाता		५०
	विभिन्न सम्पत्तियों पर ह्रास किया		
८	रोकड़ खाता	१००	
	उचन्त खाता		१००
	खोयी हुई रोकड़ की राशि भूल से उचन्त खाते के नाम डेबिट कर दी थी		

[illegible] तलपट का योग निम्न प्रकार निकाला जायगा :—

		नाम	जमा
		रु०	रु०
[illegible] तलपट का योग		[illegible]	[illegible]
[illegible] :—			
[illegible]	७५		
[illegible]	७५०		
[illegible]	२५०		
[illegible]	५०		

उदरत खाता	१००	१,२२५	
घटाओ विद्यमान जमा शेषों में घटोत्तरी :—		४५,१००	
कमीशन खाता			१५०
जोड़ो विद्यमान नाम शेषों की वृद्धि :—			४६,१७५
क्रय खाता	३००		
वेतन खाता	२५०		
विज्ञापन खाता	१००		
बिजली खर्च खाता	१५		
दान खाता	४००		
आहरण खाता	१००	१,१६५	
जोड़ो विद्यमान जमा शेषों में वृद्धि :—		४६,२६५	
लेनदार			६५०
जोड़ो उत्पन्न हुये नये शेष :—			४६,८२५
प्राप्य व्याज खाता		७५	
खोई रोकड़ खाता		१००	
ह्रास खाता		१,०५०	
अदत्त खर्च खाता			४४०
व्याज खाता			७५
पूर्व प्राप्त कमीशन खाता			१५०
अन्तिम तलपट का योग	रु०	४७,४६०	४७,४६०

यदि १, २, ४, ७ व ८वीं बातों पर ध्यान न दिया जाय तो असली लाभ (net profit) क्रमशः ६५० रु०, ४४० रु०, १५० रु०, १,०५० रु० व १०० रु० से बढ़ जायगा जबकि ३ व ६ बातों पर ध्यान न देने से असली लाभ क्रमशः ७५ रु० व १०० रु० से कम हो जायगा। ७ वें पद पर ध्यान न देने से असली लाभ पर किसी प्रकार का प्रभाव न होगा।

अतः यदि उपर्युक्त सब पूर्णतया भुला दिये जायँ तब असली लाभ २,२१५ से बढ़ जायगा।

प्रश्न

१. समायोजन (Adjustments) से आप क्या समझते हैं? एक व्यापारिक अवधि के अन्त में व्यापार की पुस्तकें बन्द करते समय अधिकांशतः कौन-कौन से समायोजन आवश्यक होते हैं, और क्यों?

२. प्रारम्भिक तलपट व अंतिम तलपट में अंतर बताओ। पुस्तकों में विभिन्न समायोजन (adjustments) करने से प्रारम्भिक तलपट पर क्या प्रभाव पड़ता है?

३ एक निश्चित तिथि पर बिना वास्तविक स्टॉक को देखे स्टॉक हस्ते (stock in hand) मूल्य का अनुमान कैसे लगाया जा सकता है? उदाहरण दीजिये।

४ माल व संग्रह (stores) में क्या अन्तर है? साधारणतया संग्रह में कौन-कौन सी वस्तुयें सम्मिलित की जाती हैं?

५ निम्नांकित का अर्थ समझाइये :—

(*i*) अवास्तविक खातों का समायोजन,

(*ii*) वास्तविक खातों का समायोजन,

(*iii*) व्यक्तिगत खातों का समायोजन जो साधारणतया व्यापार के अंतिम खाते तैयार करते समय आवश्यक होते हैं,

६. आप 'उदरत खाते' (Suspense Account) से क्या अर्थ समझते हैं? उन पदों (Items) के, जो इस खाते में लिखे जाते हैं, तीन उदाहरण दीजिये।

७. १ जुलाई १९५० को, एक्स की फैक्टरी, जिसका बीमा नहीं लिया गया था, अग्नि से पूर्णतया नष्ट हो गई। ३१ दिसम्बर १९४९ को उसके स्टॉक का मूल्य ८,७४५ रु० था, उसी तिथि को उसकी पुस्तकों में मशीनरी व फर्नीचर क्रमशः ४,५०७ रु० व ३१४ रु० की थी। अप्रैल १९५० में १,२०० रु० की मशीनरी और खरीदी गई।

उसके १ जनवरी से १ जुलाई १९५० तक क्रय, विक्रय और उत्पादन मजदूरी व खर्च क्रमशः १७,६७५ रु०, १८,२२० रु० व ७,६२५ रु० थे। उसके पिछले तीन वर्षों के हिसाब जाँचने से पता लगा कि उसका सकल लाभ औसतन २०% बिक्री पर है।

भवन उसकी सम्पत्ति नहीं थी। यह दिखाते हुये कि उसे बीमा कम्पनी पर कितनी राशि का दावा करना चाहिये, एक विवरण बनाओ।

उत्तर : दावे की राशि २५,६७० रु०

८. एक व्यापार में ३१ दिसम्बर १९५० को स्टॉक का पता लगना असम्भव है। आप उस तिथि को स्टॉक के अनुमानित मूल्य का किस प्रकार पता लगायेंगे जबकि पिछले तीन वर्षों के व्यापार खाते (Trading Account) के परिणाम निम्न हैं:—

	१९४७	१९४८	१९४९
	रु०	रु०	रु०
स्टॉक (१ जनवरी को)	१०,६००	१०,६८०	९,१५०
क्रय (Purchases)	४४,२६०	४३,२२०	४२,६६०
शेष, सकल लाभ (Gross Profit)	१३,७२०	१३,८८०	१६,६१०
	६८,५८०	६७,७८०	६८,४५०
विक्रय (sales)	५७,९००	५८,६३०	५८,८५०
स्टॉक (३१ दिसम्बर को)	१०,६८०	९,१५०	९,६००
	६८,५८०	६७,७८०	६८,४५०

१९५० में क्रय ३९,४२० रु०, विक्रय ५३,७०० रु० हुआ

उत्तर : स्टॉक ८,७४५ रु०

९. एक फुटकर व्यापारी की अंतिम खाते बनाने के पश्चात् पुस्तकें जाँचने पर आपको निम्न बातें पता लगती हैं:—

(१) एक नवीन टंकन यंत्र (Type Writer) ३९० रु० का चैक द्वारा खरीदा हुआ क्रय खाते में डेबिट कर दिया गया।

(२) १५० रु० के माल का, जो व्यापारी ने अपने निजी खर्च के लिये लिया था, कोई लेखा नहीं किया गया।

(३) २५० रु० का माल (जिसका बीमा नहीं किया गया था) इस वर्ष अग्नि द्वारा नष्ट हो गया।

(४) ३०० रु० किराये के भुगतान के लाभ-हानि खाते से चार्ज कर लिये गये, यद्यपि उसकी आधी राशि अगले वर्ष के लिये थी।

(५) एक ग्राहक को दिये गये ऋण पर ५० रु० अप्राप्त (Earned) ब्याज भुला दिया गया।

उपर्युक्त भूलों का कुल व असली लाभ पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

उत्तर: कुल लाभ (कम हुआ) ७९० रु० से व असली लाभ (कम हुआ) ७४० रु० से।

१०. एक थोक वस्त्र व्यापारी की फर्म अपनी पुस्तकें, कलैंडर वर्ष के अन्त में बन्द करती है। ३१ दिसम्बर १९५० को, उसकी पुस्तकों से एक प्रारम्भिक तलपट, जिसका योग ८७,३७५ रु० था उद्धृत किया गया। ३१ दिसम्बर १९५० को अंतिम खाते तैयार करने के लिये निम्न बातें ध्यान में रखनी चाहिये :—

(१) फर्म का स्टॉक पूर्णतया अग्नि से बीमित है। नवम्बर में आग लग जाने के कारण स्टॉक का एक भाग पूर्णतया नष्ट हो गया व शेष को हानि पहुंची। नष्ट व क्षति पूर्ण स्टॉक के दावे का बीमा कम्पनी से १,२७५ रु० पर समझौता हो गया, परन्तु राशि अभी तक प्राप्त नहीं हुई और न अग्नि-हानि की अभी तक पुस्तकों में कोई प्रविष्टि की गई है।

(२) २५० रु० का वर्ष में चोरी गये माल का उचन्त खाते (Suspense Account) में लेखा कर दिया गया है।

(३) भवन व मोटरगाड़ी पर क्रमशः ५% व १५% ह्रास लगाओ। भवन व मोटर गाड़ी का पुस्तक मूल्य क्रमशः [illegible] व [illegible] है।

(४) [illegible] (Brokerage), [illegible] अदत्त (Outstanding) हैं।

(५) [illegible]

(६) [illegible] पुस्तकों में उसका कोई लेखा नहीं किया गया।

(७) व्यापारी की २५,००० रु० की पूँजी पर ६% प्रति सैकड़ा ब्याज दो।

उक्त समायोजन करने के लिये आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ करो व अन्तिम तलपट का योग निकालो। यदि इन सब पर ध्यान न दिया जाय तो लाभ-हानि खाते पर क्या प्रभाव होगा ?

उत्तर : अंतिम तलपट ६०,२०५ रु०, अ० ला० ३,५६० रु० से बढ़ेगा।

११. एक व्यापारी की बहियों से ३१ दिसम्बर १९५० को निम्नलिखित तलपट निकाला :—

	रु०		रु०
क्रय	१२,४००	विक्रय	१५,८००
रोकड़	२००	पूँजी	९,०००
बैंक	२,०००	लेनदार	१,९९०
वेतन	१,६००	कमीशन	६००
टैक्स व बीमा	४००		
स्टॉक १-१-५० को	२,२००		
सामान्य खर्चे	८००		
डूबत ऋण (Bad Debts)	२५०		
क्रय पर भाड़ा (Carriage on Purchases)	१४०		
आहरण (Drawings)	५८०		
देनदार	२,१००		
भवन	४,७२०		
	२७,३९०		२७,३९०

उपर्युक्त शेषों व निम्न सूचनाओं से १९५० वर्ष के अन्तिम खाते तैयार करो :—

(१) १५० रु० वेतन व ५० रु० टैक्स के अदत्त (Unpaid) हैं परन्तु ५० रु० बीमा के पूर्वदत्त (Prepaid) हैं।

(२) एक ग्राहक से १२० रु० का माल वापिस आया व स्टॉक में ले जाया गया परन्तु पुस्तकों में उसकी कोई प्रविष्टि नहीं की गई।

(३) अगले वर्ष के कार्य के लिये १५० रु० कमीशन पेशगी प्राप्त हुआ।

(४) भवन पर १०% ह्रास काटो।

(५) ३१ दिसम्बर १९५० को स्टॉक का मूल्य ३,४८० रु० था।

उत्तर : स० ला० ४,५२० रु०; अ० ला० १,२९८ रु०, चिट्ठा १२,०५८ रु०

१२. १ जुलाई १९५१ को एक्स की फैक्टरी अग्नि से पूर्णतया नष्ट हो गई। ३१ दिसम्बर १९५० को उसका स्टॉक ८,७४५ रु० था। क्रय, विक्रय व उत्पादन खर्चे (१ जनवरी से १ जुलाई १९५१ तक) क्रमशः १७,६४५ रु०, १८,९२० रु० व ७,६१५ रु० थे। उसके पिछले तीन वर्षों के हिसाब जाँचने से पता लगा कि उसका सकल लाभ औसतन कुल बिक्री का २०% है।

अग्नि द्वारा नष्ट स्टॉक की राशि निकालो।

उत्तर : १६,६४६ रु०

१३. एक संस्था की पुस्तकें प्रत्येक वर्ष के अन्त में बन्द होती हैं। ३१ दिसम्बर १९५० को अन्तिम खाते बनाते समय निम्न बातों पर ध्यान दो :—

(१) संस्था के [illegible] २५० रु० वेतन अभी नहीं दिया है।

(२) १२ महीने का ६०० रु० किराया जो ३१ मार्च १९५१ तक का है १ अप्रैल १९५० को दे दिया गया है।

(३) संस्था के ३०० रु० के एक बिल का भुगतान नहीं हुआ है।

(४) [illegible] रु० विनियोगों पर उपार्जित ब्याज (Interest accrued)।

(५) १०० रु० [illegible] नहीं हुआ है।

(६) ३० सितम्बर १९५१ को समाप्त होने वाले वर्ष का बीमा प्रीमियम ६०० रु० १ अक्टूबर १९५० को [illegible]।

(७) [illegible] १९५० को ५,००० रु० [illegible] के हिसाब से उसका [illegible] नहीं हुआ।

संस्था की पुस्तकों में आवश्यक समायोजक प्रविष्टियाँ कीजिये। यदि ये बातें भुला दी जायें तो संस्था के १९५० के लाभ पर क्या प्रभाव होगा ?

असली लाभ ५० रु० से बढ़ जायगा।

१४. ३१ दिसम्बर १९५० को एक व्यापारी का निम्नलिखित चिट्ठा है :—

लेनदार	५,५००	रोकड़	१,०००
अदत्त वेतन (Outstanding salaries)	२५०	देनदार	२,५००
पेशगी प्राप्त कमीशन	१२५	विनियोग (investments)	३,०००
अदत्त नगरपालिका कर (Outstanding Municipal taxes)	३००	विनियोगों पर अप्राप्त (accrued) ब्याज	५०
पूँजी	३,८२५	पूर्वदत्त (prepaid) बीमा प्रीमियम	१५०
		भवन	३,३००
	१०,०००		१०,०००

१ जनवरी १९५१ को आवश्यक प्रारम्भिक जर्नल प्रविष्टियाँ (Opening Journal entries) बनाओ व अदत्त सम्पत्ति व दायित्व के लिये विपरीत प्रविष्टियाँ करो। यदि विपरीत प्रविष्टि (Reversing Entry) न की जाये तो उसका १९५१ के लाभ-हानि खाते पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

उत्तर : असली लाभ ४७५ रु० से कम हो जायगा।

अध्याय—१०

डूबत-ऋण, बट्टे आदि के संरक्षित-कोष

(१) डूबत-ऋणों के लिये रिजर्व (Reserve for Bad Debts) :—

वास्तविक डूबत ऋण (Actual Bad Debts) :—जब ऋणी अपना ऋण चुकाने में असमर्थ रहता है तो इस हानि को डूबत ऋण (Bad Debt) कहते हैं। डूबत ऋण (Bad Debts) व्यापारिक नुकसान है। ज्यो ही व्यापारी को यह ज्ञात होता है कि एक विशेष ऋण का कुछ हिस्सा या पूर्ण ही डूब (Bad Debt) गया है तो वह जर्नल वही मे डूबत ऋण खाते (Bad Debts Account) के नाम लिख कर सम्बन्धित ऋणी के व्यक्तिगत खाते के जमा कर देता है। इस तरह से तमाम साल भर किया जाता है। साल के अन्त मे डूबत ऋण खाते (Bad Debts Account) का बैलेंस (balance) हानि-लाभ खाते (Profit & Loss Account) में ट्रान्सफर (Transfer) कर दिया जाता है।

सम्भवनीय डूबत ऋण (Likely Bad Debts) —वास्तविक डूबत ऋणो के साथ ही ही साथ कुछ सम्भवनीय डूबत ऋण भी हो सकते है। यह सम्भव है कि साल के अन्त मे ऋणियो की सूची देखने पर व्यापारी को मालूम हो कि कुछ ऋणों की प्राप्ति सन्देहयुक्त है। व्यापारियों के लिये तमाम ऋणो के रुपये की प्राप्ति करना बहुत ही दुर्लभ है। इसलिये साल के अन्त में जितनी रकम इन ऋणों की प्राप्ति होने योग्य नहीं है, या वह रकम जो डूबने वाली है सम्भवनीय डूबत खाते (Likely Bad Debts) की रकम है।

इन सन्देहयुक्त डूबत ऋणों की हानि दो तरह से निश्चित की जा सकती है :—

(अ) साल के अन्त में सब ऋणियो के खातो की अच्छी तरह से जाँच की जाती है और जो रकम डूबने वाली है वह एक सन्देहयुक्त खातो की सूची (List of Doubtful Debts) तैयार करके निश्चित की जाती है, या (ब) तमाम ऋणियों के खातों के बैलेंसो (Balances) की एक निश्चित प्रतिशत को डूबने वाली रकम मान लिया जाता है। यह प्रतिशत गत वर्षों के अनुभव पर निर्धारित किया जाता है और हर साल इसका संशोधन कर लिया जाता है। यदि ऋणियों के खाते बहुत हैं तो यह दूसरी पद्धति ही अधिक सरल जान पड़ती है।

रिजर्व बनाने का ध्येय (Object of making a Reserve) :—सम्भवनीय डूबत ऋणों के लिये जो रिजर्व बनाया जाता है वह लाभ के प्रति एक चार्ज (Charge against Profits) है अर्थात् उसे लाभ मे से पाटा जाता है। सम्भवनीय डूबत ऋण के लिये रिजर्व रखने के दो कारण हैं। प्रथम तो जितनी भी हानि इन डूबत ऋणों द्वारा होती है उसका मूल कारण ग्राहकों को माल उधार बेचना ही होता है। इसलिये जितना भी नुकसान इस तरह से होता है वह उस माल की बिक्री के कारण होता है। अतएव यह नुकसान उसी समय के हानि-लाभ खाते (Profit & Loss Account) से चार्ज (charge) किया जाना चाहिये। द्वितीय व्यापार के सब ऋणियों के खातों को चिट्ठे में यथार्थ मूल्य पर दिखाना चाहिये। यदि एक व्यक्ति १५,०००) रुपये के लिये ऋणी है और उसमें से पाँच प्रतिशत पर देने में असमर्थ है, अर्थात् ७५०) रुपये सम्भवनीय डूबत ऋण के हैं, तो चिट्ठे (Balance Sheet) मे इस ऋणी के नाम १५,०००) दिखलाना ठीक नहीं होगा।

डूबत ऋण पर रिजर्व बनाना (Creation of Bad Debts Reserve) :—जब सम्भवनीय डूबत ऋणों की रकम निश्चित कर ली जाती है तो इस निम्नलिखित दो पद्धतियों में से एक के अनुसार रिजर्व बनाया जाता है :—

संस्था की पुस्तकों में आवश्यक समायोजक प्रविष्टियाँ कीजिये। यदि ये बातें भुला दी जाये तो संस्था के १६५० के लाभ पर क्या प्रभाव होगा ?

असली लाभ ५० रु० से बढ़ जायगा।

१४. ३१ दिसम्बर १६५० को एक व्यापारी का निम्नलिखित चिट्ठा है :—

लेनदार	५,५००	रोकड़	१,०००
अदत्त वेतन (Outstanding salaries)	२५०	देनदार	२,५००
पेशगी प्राप्त कमीशन	१२५	विनियोग (investments)	३,०००
अदत्त नगरपालिका कर (Outstanding Municipal taxes)	३००	विनियोगों पर अप्राप्त (accrued) ब्याज	५०
पूँजी	३,८२५	पूर्वदत्त (prepaid) बीमा प्रीमियम	१५०
		भवन	३,३००
	१०,०००		१०,०००

१ जनवरी १६५१ को आवश्यक प्रारम्भिक जर्नल प्रविष्टियाँ (Opening Journal entries) बनाओ व अदत्त सम्पत्ति व दायित्व के लिये विपरीत प्रविष्टियाँ करो। यदि विपरीत प्रविष्टि (Reversing Entry) न की जाये तो उसका १६५१ के लाभ-हानि खाते पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

उत्तर : असली लाभ ४७५ रु० से कम हो जायगा।

अध्याय—१०

डूबत-ऋण, बट्टे आदि के संरक्षित-कोष

(१) डूबत-ऋणों के लिये रिजर्व (Reserve for Bad Debts) :—

वास्तविक डूबत ऋण (Actual Bad Debts) :—जब ऋणी अपना ऋण चुकाने में असमर्थ रहता है तो इस हानि को डूबत ऋण (Bad Debt) कहते हैं। डूबत ऋण (Bad Debts) व्यापारिक नुकसान हैं। ज्यों ही व्यापारी को यह ज्ञात होता है कि एक विशेष ऋण का कुछ हिस्सा या पूर्ण ही डूब (Bad Debt) गया है तो वह जर्नल बही में डूबत ऋण खाते (Bad Debts Account) के नाम लिख कर सम्बन्धित ऋणी के व्यक्तिगत खाते के जमा कर देता है। इस तरह से तमाम साल भर किया जाता है। साल के अन्त में डूबत ऋण खाते (Bad Debts Account) का बैलेंस (balance) हानि लाभ खाते (Profit & Loss Account) में ट्रान्सफर (Transfer) कर दिया जाता है।

सम्भवनीय डूबत ऋण (Likely Bad Debts) :—वास्तविक डूबत ऋणों के साथ ही ही साथ कुछ सम्भवनीय डूबत ऋण भी हो सकते हैं। यह सम्भव है कि साल के अन्त में ऋणियों की सूची देखने पर व्यापारी को मालूम हो कि कुछ ऋणों की प्राप्ति सन्देहयुक्त है। व्यापारियों के लिये तमाम ऋणों के रुपये की प्राप्ति करना बहुत ही दुर्लभ है। इसलिये साल के अन्त में जितनी रकम इन ऋणों की प्राप्ति होने योग्य नहीं है, या वह रकम जो डूबने वाली है सम्भवनीय डूबत खाते (Likely Bad Debts) की रकम है।

इन सन्देहयुक्त डूबत ऋणों की हानि दो तरह से निश्चित की जा सकती है :—

(अ) साल के अन्त में सब ऋणियों के खातों की अच्छी तरह से जाँच की जाती है और जो रकम डूबने वाली है वह एक सन्देहयुक्त खातों की सूची (List of Doubtful Debts) तैयार करके निश्चित की जाती है, या (ब) तमाम ऋणियों के खातों के बैलेंसों (Balances) की एक निश्चित प्रतिशत को डूबने वाली रकम मान लिया जाता है। यह प्रतिशत गत वर्षों के अनुभव पर निर्धारित किया जाता है और हर साल इसका संशोधन कर लिया जाता है। यदि ऋणियों के खाते बहुत हैं तो यह दूसरी पद्धति ही अधिक सरल जान पड़ती है।

रिजर्व बनाने का ध्येय (Object of making a Reserve) —सम्भवनीय डूबत ऋणों के लिये जो रिजर्व बनाया जाता है वह लाभ के प्रति एक चार्ज (Charge against Profits) है अर्थात् इसे लाभ में से काटा जाता है। सम्भवनीय डूबत ऋण के लिये रिजर्व रखने के दो कारण हैं। प्रथम तो जितनी भी हानि इन डूबत ऋणों द्वारा होती है उसका मूल कारण ग्राहकों को माल उधार बेचना ही होता है। इसलिये जितना भी नुकसान इस तरह से होता है वह उस माल की बिक्री के कारण होता है। अतएव यह नुकसान उसी साल के हानि-लाभ खाते (Profit & Loss Account) में चार्ज (charge) किया जाना चाहिये। द्वितीय कारण यह है कि सब ऋणियों के खातों को चिट्ठे में यथार्थ मूल्य पर दिखाना चाहिये। यदि एक व्यक्ति १४,०००) रुपये के लिये ऋणी है और इसमें से पाँच प्रतिशत घट देने से सम्भवतः है, अर्थात् ७००) रुपये सम्भवनीय डूबत ऋण के हैं, तो चिट्ठे (Balance Sheet) में उस ऋणी के नाम १४,०००) दिखलाना ठीक नहीं होगा।

डूबत ऋण का रिजर्व बनाना (Creation of Bad Debts Reserve) :—जब सम्भवनीय डूबत ऋणों की रकम निश्चित कर ली जाती है तो उस निम्नलिखित दो पद्धतियों में से एक के अनुसार रिजर्व बनाया जाता है :—

१. रिजर्व की रकम हानि-लाभ खाते (Profit & Loss Account) के नाम लिख कर 'डूबत ऋण कोप खाते' (Bad Debts Reserve Account) में जमा कर ली जाती है।

इस रिजर्व की रकम ऋणियों के व्यक्तिगत खातों मे जमा करना सम्भव नहीं है, क्योंकि किस खाते में कितना रुपया डूबेगा यह सम्भवनीय डूबत ऋणों का अनुमान लगाते समय मालूम नही होता। इसलिये किसी ऋणी (Debtor) के व्यक्तिगत खाते मे जमा करने के बजाय 'डूबत ऋण कोप खाते' (Bad Debts Reserve Account) मे जमा कर दिया जाता है। साथ ही साथ यह भी सम्भव है कि बाद मे कोई ऋणी अपना पूर्ण ऋण भी अदा करने मे असमर्थ हो जाय तो ऐसी परिस्थिति में ऋणी के खाते में ऋण की पूरी रकम प्रकट होनी चाहिये।

डूबत ऋण कोप खाता (Bad Debts Reserve Account) चिट्ठे मे या तो एक दायित्व (liability) की तरह दिखलाया जाता है या विविध ऋणियों (Sundry Debtors) की रकम से घटोत्तरी के रूप मे दिखलाया जाता है। कभी-कभी विद्यार्थियों को यह समझने से बड़ी कठिनाई होती है कि डूबत ऋण कोप (Bad Debts Reserve) को दायित्व (liability) क्यों समझा जाता है। इसका कारण बिल्कुल साफ है। कोप सिर्फ मुनाफे से अलग किया हुआ हिस्सा है जो सम्भवनीय हानि की पूर्ति के लिये रखा जाता है। यदि वह हानि नही होती है तो यह कोप भी साधारण मुनाफे के एक हिस्से के रूप मे स्वामी का समझा जाता है। इसी कारण से हर एक कोप व्यापार का एक दायित्व (liability) है।

२. इस पद्धति के अनुसार कोप की रकम डूबत ऋण खाते (Bad Debts Account) के नाम लिखी जाती है और डूबत ऋण कोप खाते (Bad Debts Reserve Account) मे जमा कर ली जाती है। इस तरह से डूबत ऋण खाते में वास्तविक (actual) और सम्भवनीय (likely) दोनों ही तरह के डूबत-खातों की हानि दिखलाई जाती है।

ये दोनो पद्धतियाँ ही ठीक हैं, परन्तु प्रथम पद्धति अधिक सरल है और विद्यार्थियों को इसी का अनुसरण करना चाहिये।

डूबत ऋण खाता और डूबत ऋण कोप खाता का प्रयोग
(Treatment of Bad Debts Account and Bad Debts Reserve Account)

जब किसी वर्ष के अन्त में डूबत ऋण कोप (Bad Debts Reserve) की सृष्टि की जाती है तो दूसरा वर्ष इसी कोप की रकम से शुरू होता है। इसलिये, जब किसी वर्ष के शुरू में डूबत ऋण कोप (Bad Debts Reserve) होता है और जब उस वर्ष में कुछ ऋण सचमुच डूब जाते हैं, तब इन दोनों खातों को निम्नलिखित दो तरीकों में से किसी एक तरीके के अनुसार लिखा जाता है :—

१. जितने भी डूबे ऋण होते हैं उन सबको डूबत ऋण कोप खाते में ट्रान्सफर कर देते हैं और यदि डूबे ऋणों की रकम इस रिजर्व खाते से अधिक होती है तो हानि-लाभ खाते के नाम लिख दी जाती है। नये डूबत ऋण कोप की रकम भी हानि-लाभ खाते (Profit & Loss Account) से चार्ज (charge) की जाती है, परन्तु यदि पुराने कोप की रकम डूबे ऋणों से अधिक है तो वह रकम नये डूबत ऋण कोप की इस रकम में से, जोकि हानि-लाभ खाते (Profit & Loss Account) के नाम लिखी जाती है, कम कर दी जाती है।

२. इस पद्धति के अनुसार जितने भी डूबत ऋण होते हैं उन्हें हानि-लाभ खाते में ट्रान्सफर (transfer) कर दिया जाता है और जो पुराना डूबत ऋण कोप है उसका कुछ ध्यान नहीं रखा जाता है। [illegible]

से अधिक है तो यह बढ़ोत्तरी हानि-लाभ खाते में वापिस जमा की जाती है और डूबत ऋण कोष खाते (Bad Debts Reserve Account) के नाम लिखी जाती है।

ये दोनों पद्धतियाँ ही प्रयोग में लाई जाती हैं, परन्तु प्रथम पद्धति विद्यार्थियों के लिये अधिक सरल रहती है।

डूबे ऋणों की प्राप्ति (Bad Debts Recovered) —कभी-कभी वह रकम जो डूबत ऋण खाते में लिख दी जाती है, प्राप्त हो जाती है। इस तरह जो रकम प्राप्त होती है उसे रोकड़ खाते के नाम लिखा जाता है और डूबत ऋण खाते या डूबत ऋण कोष खाते या 'डूबत ऋण प्राप्ति खाता' (Bad Debts Recovered Account) में जमा किया जाता है, परन्तु यह रकम कभी भी ऋणी के व्यक्तिगत खाते में जमा नहीं की जाती, क्योंकि उसका खाता तो पहले ही बन्द कर दिया जाता है।

उदाहरण ४७

एक संस्था की पुस्तकों में १९५० वें वर्ष में, १,२५० रु० डूबत ऋण व ३१ दिसम्बर १९५० को ३६,००० रु० के अदत्त देनदार थे। समस्त ऋण का ५ प्रतिशत डूबत ऋण कोष ले में जाना है।

जर्नल, खाताबही, लाभ-हानि व चिट्ठे की प्रविष्टियाँ कीजिये।

जर्नल

		रु०	रु०
१९५० दिस ३१	लाभ-हानि खाता डूबत ऋण कोष खाता ३६,००० रु० पर ५% डूबत ऋण कोष बनाया	१,८००	 १,८००

डूबत ऋण खाता

		रु०			रु०
१९५० दिस. ३१	विविध देनदार	१,२५०	१९५० दिस. ३१	लाभ-हानि खाता	१,२५०

डूबत ऋण कोष खाता

		रु०			रु०
१९५० दिस. ३१	शेष आ/ले	१,८००	१९५० दिस ३१	लाभ-हानि खाता	१,८००
			१९५१ जन १	शेष नी/ला	१,८००

लाभ-हानि खाता (३१ दिसम्बर १९५०) को समाप्त हुये वर्ष के लिये

	रु०		
डूबत ऋण खाता	१,२५०		
डूबत ऋण कोष खाता	१,८००		

चिट्ठा ३१ दिसम्बर १९५० को

			रु०	रु०
		विविध देनदार घटाइये—डूबत ऋण कोष	३६,००० १,८००	 ३४,२००

उदाहरण ४८

[illegible]

१. रिजर्व की रकम हानि-लाभ खाते (Profit & Loss Account) के नाम लिख कर 'डूबत ऋण कोष खाते' (Bad Debts Reserve Account) से जमा कर ली जाती है।

इस रिजर्व की रकम ऋणियों के व्यक्तिगत खातों में जमा करना सम्भव नहीं है, क्योंकि किस खाते में कितना रुपया डूबेगा यह सम्भवनीय डूबत ऋणों का अनुमान लगाते समय मालूम नहीं होता। इसलिये किसी ऋणी (Debtor) के व्यक्तिगत खाते में जमा करने के बजाय 'डूबत ऋण कोष खाते' (Bad Debts Reserve Account) में जमा कर दिया जाता है। साथ ही साथ यह भी सम्भव है कि बाद में कोई ऋणी अपना पूर्ण ऋण भी अदा करने में असमर्थ हो जाय तो ऐसी परिस्थिति में ऋणी के खाते में ऋण की पूरी रकम प्रकट होनी चाहिये।

डूबत ऋण कोष खाता (Bad Debts Reserve Account) चिट्ठे में या तो एक दायित्व (liability) की तरह दिखलाया जाता है या विविध ऋणियों (Sundry Debtors) की रकम से घटोत्तरी के रूप में दिखलाया जाता है। कभी-कभी विद्यार्थियों को यह समझने में बड़ी कठिनाई होती है कि डूबत ऋण कोष (Bad Debts Reserve) को दायित्व (liability) क्यों समझा जाता है। इसका कारण बिल्कुल साफ है। कोष सिर्फ मुनाफे से अलग किया हुआ हिस्सा है जो सम्भवनीय हानि की पूर्ति के लिये रखा जाता है। यदि वह हानि नहीं होती है तो यह कोष भी साधारण मुनाफे के एक हिस्से के रूप में स्वामी का समझा जाता है। इसी कारण से हर एक कोष व्यापार का एक दायित्व (liability) है।

२. इस पद्धति के अनुसार कोष की रकम डूबत ऋण खाते (Bad Debts Account) के नाम लिखी जाती है और डूबत ऋण कोष खाते (Bad Debts Reserve Account) में जमा कर ली जाती है। इस तरह से डूबत ऋण खाते से वास्तविक (actual) और सम्भवनीय (likely) दोनों ही तरह के डूबत-खातों की हानि दिखलाई जाती है।

ये दोनों पद्धतियाँ ही ठीक हैं, परन्तु प्रथम पद्धति अधिक सरल है और विद्यार्थियों को इसी का अनुसरण करना चाहिये।

डूबत ऋण खाता और डूबत ऋण कोष खाता का प्रयोग

(Treatment of Bad Debts Account and Bad Debts Reserve Account)

जब किसी वर्ष के अन्त में डूबत ऋण कोष (Bad Debts Reserve) की सृष्टि की जाती है तो दूसरा वर्ष इसी कोष की रकम से शुरू होता है। इसलिये, जब किसी वर्ष के शुरू में डूबत ऋण कोष (Bad Debts Reserve) होता है और जब उस वर्ष में कुछ ऋण सचमुच डूब जाते हैं, तब इन दोनों खातों को निम्नलिखित दो तरीकों में से किसी एक तरीके के अनुसार लिखा जाता है :—

१. जितने भी डूबे ऋण होते हैं उन सबको डूबत ऋण कोष खाते में ट्रान्सफर कर देते हैं और यदि डूबे ऋणों की रकम उस रिजर्व खाते से अधिक होती है तो हानि-लाभ खाते के नाम लिख दी जाती है। नये डूबत ऋण कोष की रकम भी हानि-लाभ खाते (Profit & Loss Account) में चार्ज (charge) की जाती है, परन्तु यदि पुराने कोष की रकम डूबे ऋणों से अधिक है तो यह रकम नये डूबत ऋण कोष की उस रकम में से, जो कि हानि-लाभ खाते (Profit & Loss Account) के नाम लिखी जाती है, कम कर दी जाती है।

२. इस पद्धति के अनुसार जितने भी डूबत ऋण होते हैं उनको हानि-लाभ खाते में ट्रान्सफर (Transfer) [illegible] किया जाता है और जो पुराना डूबत ऋण कोष है उस पर कोई ध्यान नहीं रखा जाता है [illegible] कोष [illegible] Profit & Loss Account [illegible] के नाम लिख [illegible] कर दिया जाता है, परन्तु यदि [illegible] कोष [illegible]

से अधिक है तो यह बढ़ोत्तरी हानि-लाभ खाते में वापिस जमा की जाती है और डूबत ऋण कोष खाते (Bad Debts Reserve Account) के नाम लिखी जाती है।

ये दोनो पद्धतियाँ ही प्रयोग मे लाई जाती हैं, परन्तु प्रथम पद्धति विद्यार्थियो के लिये अधिक सरल रहती है।

डूबे ऋणों की प्राप्ति (Bad Debts Recovered).—कभी-कभी वह रकम जो डूबत ऋण खाते मे लिख दी जाती है, प्राप्त हो जाती है। इस तरह जो रकम प्राप्त होती है उसे रोकड़ खाते के नाम लिखा जाता है और डूबत ऋण खाते या डूबत ऋण कोष खाते या 'डूबत ऋण प्राप्ति खाता' (Bad Debts Recovered Account) मे जमा किया जाता है, परन्तु यह रकम कभी भी ऋणी के व्यक्तिगत खाते मे जमा नहीं की जाती, क्योंकि उसका खाता तो पहले ही बन्द कर दिया जाता है।

उदाहरण ४७

एक संस्था की पुस्तकों में १६५० वे वर्ष में, १,२५० रु० डूबत ऋण व ३१ दिसम्बर १६५० को ३६,००० रु० के अदत्त देनदार थे। समस्त ऋण का ५ प्रतिशत डूबत ऋण कोष ले में जाना है।

जर्नल, खातावही, लाभ-हानि व चिट्ठे की प्रविष्टियाँ कीजिये।

जर्नल

		रु०	रु०
१६५० दिस.३१	लाभ-हानि खाता	१,८००	
	डूबत ऋण कोष खाता		१,८००
	३६,००० रु० पर ५% डूबत ऋण कोष बनाया		

डूबत ऋण खाता

		रु०			रु०
१६५० दिस ३१	विभिन्न देनदार	१,२५०	१६५० दिस.३१	लाभ-हानि खाता	१,२५०

डूबत ऋणकोष खाता

		रु०			रु०
१६५० दिस.३१	शेष आ/ले	१,८००	१६५० दिस.३१	लाभ-हानि खाता	१,८००
			१६५१ जन १	शेष नी/ला	१,८००

लाभ-हानि खाता (३१ दिसम्बर १६५०) को समाप्त हुये वर्ष के लिये

	रु०		
डूबत ऋण खाता	१,२५०		
डूबत ऋण कोष खाता	१,८००		

चिट्ठा ३१ दिसम्बर १६५० को

				रु०	रु०
			विविध देनदार	३६,०००	
			घटाये—डूबत ऋण कोष	१,८००	३४,२००

उदाहरण ४८

३१ दिसम्बर १६५० को, एक व्यापारी के कुल देनदार १२,६०० रु० के थे, जिनमें से ६५० रु० के डूबने की संभावना है। ३१ दिसम्बर १६४६ को ८०० रु० डूबत खाते के लिये रिजर्व किये। १५ जुलाई १६५० को उसे १५० रु० प्राप्त हुए जोकि पहले डूबत ऋण लिख लिये गये थे। १६५० में ५६० रु० डूबत ऋण हुये।

जर्नल खाता-वही, लाभ-हानि खाता व चिट्ठा दिखाओ।

जर्नल

		रु०	रु०
१६५०			
जुलाई १५	रोकड़ खाता	१५०	
	डूबत ऋण कोष खाता		१५०
	पहले डूबत लिखे ऋण की राशि प्राप्त हुई		
३१	डूबत ऋण कोष खाता	५६०	
	डूबत ऋण खाता		५६०
	डूबत ऋणों को कोष में हस्तांतरित किया		
	लाभ-हानि खाता	५६०	
	डूबत ऋण कोष खाता		५६०
	६५० रु० कोष बनाने के लिये लाभ-हानि खाते से चार्ज किया		

डूबत ऋण कोष खाता

		रु०			रु०
१६५०			१६५०		
दिस ३१	डूबत ऋण खाता	५६०	जन. १	शेष नी/ला	८००
	शेष आ/लें	६५०	जुलाई १५	रोकड़	१५०
			दिस ३१	लाभ-हानि खाता	५६०
		१,५१०			१,५१०
			१६५१		
			जन १	शेष नी/ला	६५०

डूबत ऋण खाता

		रु०			रु०
१६५०			१६५०		
दिस.३१	विभिन्न देनदार	५६०	दिस.३१	डूबत ऋण कोष खाता	५६०

लाभ-हानि खाता ३१ दिसम्बर १६५० को समाप्त हुए वर्ष के लिये

	रु०		
डूबत ऋण कोष	५६०		

चिट्ठा ३१ दिसम्बर १६५० को

			रु०	रु०
		देनदार	१२,६००	
		घटाये—डूबत ऋण कोष	६५०	११,६५०

उदाहरण ४६

एक व्यापार के ३१ दिसम्बर १६४६ को अशुभ देनदार १५,००० रु० व ३१ दिसम्बर १६५० को १५,००० रु० थे। प्रत्येक वर्ष शुद्ध देनदारों पर ५% के हिसाब से डूबत ऋण कोष बनाया जाता है। १६५० में ४६० रु० डूबत ऋण अपलिखित (written off) किये गये।

१६४६ व १६५० में जर्नल, खाताबही, लाभ-हानि खाता व चिट्ठा दिखाओ।

१६४६ के खाते

जर्नल

			रु०	रु०
१६४६				
दिस. ३१	लाभ-हानि खाता	[illegible]	७५०	
	डूबत ऋण कोष खाता	[illegible]		७५०
	[illegible]			

डूबत ऋण कोष खाता

		रु०			रु०
१९४९ दि० ३१	शेष आ/ले	७५०	१९४९ दि० ३१	लाभ-हानि खाता	७५०
			१९५० जन० १	शेष नी/ला	७५०

लाभ-हानि खाता ३१ दिसम्बर १९४९ को समाप्त हुये वर्ष के लिये

	रु०		
डूबत ऋण कोष	७५०		

चिट्ठा ३१ दिसम्बर १९४९ को

			रु०	रु०
		देनदार	१५,०००	
		घटाये—डूबत ऋण कोष	७५०	१४,२५०

१९५० के खाते

जर्नल

		रु०	रु०
१९५० दि० ३१	डूबत ऋण कोष खाता ...	४६०	
	डूबत ऋण खाता ...		४६०
	डूबत ऋण कोष में हस्तान्तरित किये ...		
	लाभ-हानि खाता ...	६६०	
	डूबत ऋण कोष खाता ...		६६०
	२५,००० रु० पर ५% का एक कोष बनाने के लिये लाभ हानि खाते से चार्ज किया ..		

डूबत ऋण खाता

		रु०			रु०
१९५० दि० ३१	विभिन्न देनदार	४६०	१९५० दि० ३१	डूबत ऋण कोष खाता	४६०

डूबत ऋण कोष खाता

		रु०			रु०
१९५० दि० ३१	डूबत ऋण खाता	४६०	१९५० जन० १	शेष नी/ला	७५०
	शेष आ/ले	१,२५०	दि० ३१	लाभ-हानि खाता	६६०
		१,७१०			१,७१०
			१९५१ जन० १	शेष नी/ला	१,२५०

लाभ-हानि खाता ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त हुये वर्ष के लिये

	रु०		
डूबत ऋण कोष	६६०		

चिट्ठा, ३१ दिसम्बर १९५० को

			रु०	रु०
		देनदार	२५,०००	
		घटाये - डूबत ऋण कोष	१,२५०	२३,७५०

उदाहरण ५०

स्पष्ट रूप से समझाओ कि आप डूबत ऋण व डूबत ऋण कोष के सम्बन्ध में निम्नलिखित दशाओं मे क्या करेंगे :—

(१) यदि तलपट में लिखे हुये डूबत ऋण ३०० रु०, डूबत ऋण कोष ७०० रु० व देनदार २४,२०० रु० हों।

२०० रु० डूबत ऋण के और लिखने हैं तथा देनदारों पर ५% डूबत ऋण कोष बनाना है।

(२) यदि तलपट में लिखे हुए डूबत ऋण ६०० रु०; डूबत ऋण कोष ७०० रु० व देनदार २४,२०० रु० हों; तथा देनदारों पर ५% तक डूबत ऋण कोष में वृद्धि करना हो।

(३) यदि तलपट में लिखे हुये डूबत ऋण ६०० रु०, डूबत ऋण कोष ७०० रु० व देनदार २४,२०० रु० हों; तथा १,२०० रु० से डूबत ऋण कोष में वृद्धि करनी हो।

(४) यदि तलपट में लिखे हुये डूबत ऋण १०० रु०, डूबत ऋण कोष ८०० रु० व देनदार १२,००० रु० हों; तथा देनदारों पर ५% डूबत ऋण कोष बनाना हो।

(१)

डूबत ऋण खाता

		रु०			रु०
	शेष	३००		डूबत ऋण कोष खाता	५००
	देनदार	२००			
		५००			५००

डूबत ऋण कोष खाता

		रु०			रु०
	डूबत ऋण खाता	५००		शेष नी/ला	७००
	शेष आ/ले	१,२००		लाभ-हानि खाता	१,०००
		१,७००			१,७००

लाभ-हानि खाता

	रु०		
डूबत ऋण कोष	१,०००		

चिट्ठा

				रु०	रु०
			देनदार	२४,०००	
			घटाये—डूबत ऋण कोष	१,२००	२२,८००

(२)

डूबत ऋण खाता

	रु०		रु०
शेष	६००	डूबत ऋण कोष खाता	६००

डूबत ऋण कोष खाता

	रु०		रु०
डूबत ऋण खाता	६००	शेष नी/ला	७००
शेष आ/ले	१,२१०	लाभ-हानि खाता	१,११०
	१,८१०		१,८१०

लाभ-हानि खाता

	रु०		
डूबत ऋण कोष	१,११०		

चिट्ठा

			रु०	रु०
		देनदार	२४,२००	
		घटाये—डूबत ऋण कोष	१,२१०	२२,६६०

(३)

डूबत ऋण खाता

	रु०		रु०
शेष	६००	डूबत ऋण कोष खाता	६००

डूबत ऋण कोष खाता

	रु०		रु०
डूबत ऋण खाता	६००	शेष नी/ला	७००
शेष आ/ले	१,३००	लाभ हानि खाता	१,२००
	१,९००		१,९००

लाभ-हानि खाता

	रु०		
डूबत ऋण कोष	१,२००		

चिट्ठा

			रु०	रु०
		देनदार	२४,२००	
		घटाये—डूबत ऋण कोष	१,३००	२२,९००

(४)

डूबत ऋण खाता

	रु०		रु०
शेष	१००	डूबत ऋण कोष खाता	१००

डूबत ऋण कोष खाता

	रु०		रु०
डूबत ऋण खाता	१००	शेष नी/ला	८००
लाभ-हानि खाता	१००		
शेष आ/ले	६००		
	८००		८००

लाभ-हानि खाता

			रु०
		डूबत ऋण कोष (वृद्धि अपलिखित की)	१००

चिट्ठा

			रु०	रु०
		देनदार	१२,०००	
		घटाये—डूवत ऋण कोष	६००	११,४००

(२) वट्टे के रिजर्व (Reserve for Discounts) :—

(अ) देनदारों पर वट्टा कोष (Reserves for Discounts on Debtors) .—जो रोकड़ वट्टा ग्राहकों को दिया जाता है वह रोकड़ वही में लिखा जाता है और वहाँ से खाता वही मे खता दिया जाता है। परन्तु वर्ष के अन्त मे वहुत से ऐसे ऋण होते है जो अभी लेने वाकी है, इसलिए उन पर आगामी समय मे दिये जाने वाले वट्टे के लिये कुछ प्रवन्ध करना ठीक समझा जाता है।

यदि यह प्रवन्ध (Provision) करना उचित समझा जाय तो ऋणियो के उन शेषों (Debtor's balances) पर, जो डूवत ऋण कोष (Bad Debts Reserve) के घटाने के उपरान्त बच रहते है, कुछ प्रतिशत के हिसाव से वट्टा निर्धारित किया जाना चाहिए। सम्भवनीय वट्टे की रकम हमेशा अच्छे ऋण (Good debts) पर ही तय करनी चाहिये, क्योंकि यह वट्टा सिर्फ ऐसे ही ऋण के भुगतान पर दिया जाता है।

जव वट्टे (Discount) की रकम निश्चित कर ली जाती है तो आवश्यक कोष हानि-लाभ खाते (Profit & Loss Account) के नाम लिख कर और देनदार वट्टा कोष खाता (Reserve for Discounts on Debtors Account) के जमा करके की जाती है। डूवत ऋण कोष खाते की भाँति यह देनदार वट्टा कोष खाता भी वैलेंस-शीट (Balance Sheet) में या तो दायित्व के रूप मे या विविध देनदारों में से घटा कर दिखाया जाता है। यदि पहले मे डूवत ऋण कोष है तो विविध देनदार मे से यह कोष कम किया जाता है और उसके वाद शेष मे से देनदार वट्टा कोष कम किया जाता है।

आगामी वर्ष मे इस वट्टे-खाते व उसके रिजर्व खाते को उसी पद्धति के अनुसार लिखा जाता है जिस पद्धति के अनुसार डूवत-ऋण और उसके रिजर्व खाते को लिखा जाता है।

नोट —यद्यपि सम्भवनीय वट्टे के लिये कुछ कोष रखना दूरदर्शिता का कार्य है, परन्तु इन दो कारणों की वजह से यह आवश्यक नहीं जान पड़ता है :—(अ) रोकड़ी वट्टा उस साल के मुनाफे में से ही काटा जाना चाहिए जिस साल वह रुपया शीघ्रता से अदा किया गया, और (व) यह रोकड़ी वट्टा यदि ऋणियों ने शीघ्र भुगतान न किया तो कभी भी नहीं दिया जावेगा। इसलिए व्यवहार में वट्टा के लिये संचय कभी नहीं किया जाता। इसे सिर्फ परीक्षा के लिये याद करना पड़ता है।

(व) लेनदारों पर वट्टा कोष (Reserve for Discounts on Creditors) :—जिस प्रकार देनदारों पर सम्भवनीय वट्टों के लिए कोष बनाया जाता है, उसी प्रकार समय से पूर्व भुगतान करने पर [illegible] कोई वट्टा मिलता है तो उसके लिए भी कोष बनाया जा सकता है। यदि लेनदारों से वट्टे के [illegible] और सकता है तो यह लेनदाताओं के अन्तिम शेषों की राशि पर एक निश्चित प्रतिशत के [illegible] निर्धारित किया जा सकता है। अनुमान की हुई वट्टे की यह रकम एक खाते के नाम लिखी जाती है। [illegible] लेनदार वट्टा कोष खाता (Reserve for Discounts on Creditor Account) कहते हैं और [illegible] में जमा की जाती है।

[illegible]

नोट :—यह कोष भी व्यवहार में नहीं रखा जाता, सिर्फ परीक्षा के लिये वह यहाँ पर समझाया गया है।

अब इन दोनों प्रकार के खातों को उदाहरणों से समझाया जावेगा।

उदाहरण ५१

३१ दिसम्बर १६५० को, एक संस्था के लेनदार व देनदार क्रमशः १५,००० रु० व २०,००० रु० थे। १६५० में ७५० रु० बट्टा प्राप्त किया व ८६० रु० बट्टा दिया।

३१ दिसम्बर १६५० को, यह निश्चय किया गया कि २½% (प्रतिशत) देनदारों पर व ३% (प्रतिशत) लेनदारों पर बट्टा सचय रक्खा जाय।

जर्नल, खाता-बही, लाभ-हानि खाता व चिट्ठा दिखाइये।

जर्नल

		रु०	रु०
१६५० दिस. ३१	लाभ हानि खाता देनदारों पर बट्टा कोष खाता देनदारों पर २०,००० रु० पर २½% बट्टा सचय किया	५००	५००
	लेनदारों पर बट्टा कोष खाता लाभ हानि खाता लेनदारों पर १५,००० रु० पर ३ प्रतिशत बट्टा सचय किया	४५०	४५०

बट्टा खाता

		रु०			रु०
१६५० दिस. ३१	विविध खाते रोकड़ बही के अनुसार	८६०	१६५० दिस ३१	विविध खाते रोकड़ बही के अनुसार	७५०
				लाभ-हानि खाता	११०
		८६०			८६०

देनदारों पर बट्टा कोष खाता

		रु०			रु०
१६५० दिस. ३१	शेष आ/ले	५००	१६५० दिस. ३१	लाभ-हानि खाता	५००
			१६५१ जन १	शेष नी/ला	५००

लेनदारों पर बट्टा कोष खाता

		रु०			रु०
१६५० दिस ३१	लाभ-हानि खाता	४५०	१६५० दिस. ३१	शेष आ/ले	४५०
१६५१ जन. १	शेष नी/ला	४५०			

लाभ-हानि खाता
(३१ दिसम्बर १६५०)

	रु०		रु०
बट्टा खाता	११०	लेनदारों पर बट्टा कोष	४५०
देनदारों पर बट्टा कोष	५००		

चिट्ठा
(३१ दिसम्बर १६५० को)

	रु०	रु०		रु०	रु०
लेनदार	१५,०००		देनदार	२०,०००	
घटाये-लेनदारों पर बट्टा कोष	४५०	१४,५५०	घटाये–देनदारों पर बट्टा कोष	५००	१६,५००

उदाहरण ५२

३१ दिसम्बर १६५० को, एक संस्था के बट्टे-खाते के अनुसार देनदारों को ५४८ रु० का बट्टा दिया गया है व लेनदारों से १६६ रु० का बट्टा प्राप्त किया है। उस तिथि को देनदार व लेनदार क्रमशः १२,००० व ६,००० रु० थे।

यह निश्चय किया गया कि देनदारों पर ५ प्रतिशत डूबत ऋण कोष व २½ प्रतिशत देनदारों व लेनदारों पर नकद बट्टा संचय किया जाये। वर्ष में २८० रु० डूबत ऋण हुये।

उपर्युक्त सूचना से प्रभावित संस्था के सब आवश्यक खाते (Ledger Accounts) बनाओ और ३१ दिसम्बर १६५० को चिट्ठा बनाते हुये लेनदार व देनदारों को दिखाओ।

बट्टा खाता

१६५०		रु०	१६५०		रु०
दिस. ३१	विविध खाते रोकड़ बही के अनुसार	५४८	दिस ३१	विविध खाते रोकड़बही के अनुसार	१६६
				लाभ-हानि खाता	३५२
		५४८			५४८

डूबत ऋण खाता

१६५०		रु०	१६५०		रु०
दिस ३१	विभिन्न देनदार	२८०	दिस. ३१	लाभ-हानि खाता	२८०

डूबत ऋण कोष खाता

१६५०		रु०	१६५०		रु०
दिस ३१	शेष आ/ले	६००	दिस. ३१	लाभ-हानि खाता	६००
			१६५१		
			जन १	शेष नी/ला	६००

देनदारों पर बट्टा कोष खाता

१६५०		रु०	१६५०		रु०
दिस. ३१	शेष आ/ले	२८५	दिस ३१	लाभ-हानि खाता	२८५
			१६५१		
			जन. १	शेष नी/ला	२८५

लेनदारों पर बट्टा कोष खाता

१६५०		रु०	१६५०		रु०
दिस ३१	लाभ-हानि खाता	२२५	दिस ३१	शेष आ/ले	२२५
१६५१					
जन. १	शेष नी/ला	२२५			

लाभ-हानि खाता
(३१ दिसम्बर १६५० को)

	रु०		रु०
[illegible]	३५२	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]		
[illegible]	[illegible]		

चिट्ठा
(३१ दिसम्बर १६५० को)

	रु०	रु०		रु०	रु०
लेनदार	६,०००		देनदार	१२,०००	
घटाये—लेनदारों पर बट्टा कोष	२२५	८,७७५	घटाये—डूबत ऋण कोष	६००	
				११,४००	
			घटाये—देनदारों पर बट्टा कोष	२८५	११,११५

संयोगी हानि कोष (Reserve for Contingencies)

देनदारों पर डूबत ऋण और बट्टों के सम्बन्ध में परिचित हानियों के अतिरिक्त अपने व्यापार अवधि के अन्त में व्यापारी को अन्य भी हानियों की संभावना हो सकती है। उदाहरण के लिये एक चालू मुकदमे के सम्बन्ध में सभव हानि, जिसका अभी निपटारा नहीं हुआ है अत उसकी ठीक रकम अभी पता नहीं है। यदि व्यापार अवधि के अन्त में उस समय सभव प्रतीत होने वाली किसी हानि के लिये कोई आयोजन न किया जाय, तो परिणाम यह होगा कि उस हानि की रकम अगले वर्ष, यदि वह उस वर्ष में ही चुकानी पड़ी, नाम पड़ेगी।

अतः अन्तिम खाते बनाते समय, सभी संभव हानियों के लिये उपयुक्त आयोजन कर लेना चाहिये। इसके लिये हानि की अनुमानित रकम लाभ हानि खाते नाम और एक संयोगी हानि कोष खाते (Contingency Reserve Account) जमा की जाती है। यह अन्तिम खाता चिट्ठे में एक दायित्व की तरह प्रगट किया जायगा।

अगली व्यापारिक अवधि में, यदि वह संयोगी हानि सचमुच हो जाय, तो उस वर्ष संयोगी हानि कोष खाता नाम किया जायगा न कि लाभ-हानि खाता। इसी प्रकार किसी विशेष वर्ष के सम्बन्ध में संभव हानि उस वर्ष के (न कि अगले वर्ष के) लाभ हानि खाते से ही चार्ज की जा सकती है।

उदाहरण ५३

संस्था के अन्तिम खाते तैयार करते समय, एक प्रसविदा भग होने के कारण, क्षतिपूर्ति का ३१ दिसम्बर १६५० को एक मुकदमा संस्था पर चल रहा है और यह अनुमान है कि यदि वह संस्था के विपक्ष में हुआ तो ५६० रु० क्षतिपूर्ति के देने होंगे। १६५० के हिसाब में इसका क्या व्यवहार किया जायगा ?

यदि अगले वर्ष के पूर्व ही मुकदमा तय हो जाता है और १५ मार्च १६५१ को संस्था को ४६० रु० क्षतिपूर्ति के देने पडते हैं, तो क्षतिपूर्ति के भुगतान का १६५१ के हिसाब में किस प्रकार व्यवहार होगा ?

३१ दिसम्बर १६५० को अन्तिम खाते तैयार करते समय ५६० रु० की सम्भावित हानि के लिये लाभ-हानि खाते को डैबिट व संयोगी हानि कोष को क्रेडिट करके आवश्यक संरक्षण कर लिया जायगा। उस दिन संयोगी हानि कोष खाता चिट्ठे में दायित्व की ओर दिखाया जायगा।

१५ मार्च १६५१ को, क्षतिपूर्ति के भुगतान हुए ४६० रु०, क्षतिपूर्ति खाते के डेबिट व रोकड़ खाते के क्रेडिट होंगे। क्षतिपूर्ति खाता, संयोगी हानि कोष खाते में ७० रु० शेष रखते हुए हस्तातरित कर बन्द कर दिया जायगा।

अन्य विशेष कोष (Other Specific Reserves)

कुछ व्यापारो मे ऐसे खर्चे भी होते हैं जो वर्ष प्रति वर्ष बहुत घटते-बढ़ते रहते हैं जैसे स्थायी सम्पत्तियो की मरम्मत, दान में दी गई रकम, कर्मचारियो के कल्याण पर किया गया व्यय आदि। एक वर्ष तो इनमे से किसी शीर्षक के अन्तर्गत व्यय थोड़ा हो सकता है अगले वर्ष बहुत अधिक, तीसरे वर्ष शायद बिल्कुल नहीं। ऐसी परिस्थितियो मे, प्रत्येक वर्ष किसी विशेष खर्च खाते भिन्न-भिन्न रकम नाम डलती है। यह स्पष्ट ही अनुचित है क्योंकि इसके कारण वार्षिक लाभ बहुत घटता-बढ़ता रहेगा।

अत इस बात के प्रवन्ध के लिये कि प्रत्येक वर्ष का लाभ हानि खाता ऐसे व्यय के सम्वन्ध मे लगभग उतनी ही रकम से चार्ज हो, एक अनुमानित रकम प्रति वर्ष लाभ हानि खाते नाम और एक कोष खाते जमा की जाय। यह कोष खाता सम्वन्धित व्यय के नाम से खोला जाता है जैसे मरम्मत कोप खाता, दान कोप खाता, कर्मचारी कल्याण खाता। कभी कभी कोष (Reserve) के स्थान मे सचिति (Fund) शब्द प्रयोग किया जाता है जैसे दान संचिति खाता। चिट्ठे मे यह कोष खाता दायित्व की भाँति दिखाया जाता है।

एक विशेप कोप वह है जिसे किसी परिचित और संभव हानि के लिये बनाया जाता है। डूवत ऋण कोप, वट्टे कोप, सयोगी हानि कोप, मरम्भत कोप, दानकोष, कर्मचारी कल्याण कोप सभी विशेप कोपो के उदाहरण हैं।

जब कोई व्यय, जिसके लिये पहले से ही कोप विद्यमान है, वास्तव में हो जाय, तो उसे उपयुक्त कोप खाते से ट्रान्सफर कर दिया जाता है और उस वर्ष के लाभ-हानि खाते मे नही, जब कि व्यय वास्तव मे हुआ है।

उदाहरण ५४

१ जनवरी १६४७ को, एक उत्पादनकर्त्ता ने एक मशीन, जिसका अनुमानित उपयोगी जीवन ४ वर्ष है, ६,००० रु० में खरीदी। सम्पत्ति के जीवन में अनुमानित मरम्मत मूल्य ३०० रु० है। अतः ७५ रु० प्रतिवर्ष मरम्मत कोप खाते में हस्तान्तरित कर दिये गये। वास्तविक मरम्मत निम्न थी :—१६४७, कुछ नहीं ; १६४८, ४० रु० ; १६४६, १८० रु० ; १६५०, ३० रु०।

चार वर्षों का मरम्मत कोप खाता बनाओ।

मरम्मत कोप खाता

		रु०			रु०
१६४७			१६४७		
दि० ३१	शेप आ/ले	७५	दि० ३१	लाभ-हानि खाता	७५
१६४८			१६४८		
दि० ३१	मरम्मत खाता	४०	जन० १	शेप नी/ला	७५
	शेप आ/ले	११०	दि० ३१	लाभ-हानि खाता	७५
		१५०			१५०
१६४६			१६४६		
दि० ३१	मरम्मत खाता	१८०	जन० १	शेप नी/ला	११०
	शेप आ/ले	५	दि० ३१	लाभ-हानि खाता	७५
		१८५			१८५
१६५०			१६५०		
दि० ३१	मरम्मत खाता	३०	जन० १	शेप नी/ला	५
	शेप आ/ले	५०	दि० ३१	लाभ-हानि खाता	७५
		८०			८०
			१६५१		
			जन० १	शेप नी/ला	५०

उदाहरण ५५

३१ दिसम्बर १६५० को बनाये गये [illegible] के अन्तिम खाते निम्न बात बताते हैं :—[illegible] रु० [illegible] का योग [illegible] रु०। [illegible] वर्ष के अन्त में हिसाब बनाते समय निम्न बातों पर [illegible] नहीं दिया गया :—

(१) [illegible] रु० का खरीदा हुआ माल स्टॉक में ले लिया गया, परन्तु पुस्तकों में उसका कोई लेखा नहीं किया गया।

(२) [illegible] :—मजदूरी [illegible] रु० ; [illegible] रु०; विज्ञापन [illegible] रु० ; [illegible] १०० रु०; [illegible]

(३) [illegible]

(४) [illegible] रु० [illegible]

(५) ह्रास अपलिखित करना है :—भवन २,५०० रु०, मशीनरी १२,५०० रु०, मोटरगाड़ी ३,५०० रु०, व फर्नीचर ३०० रु० ।

(६) डूबत व सम्भावित ऋणों के लिये ८०० रु० संचय करना है ।

(७) एक भूतपूर्व कर्मचारी द्वारा चुराये हुये ६५० रु० उदरत खाते में डेबिट कर दिये हैं ।

उपर्युक्त के लिये जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये और विस्तृत रूप से बताओ कि इनका असली लाभ व चिट्ठे के योग पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

जर्नल

१९५०		रु०	रु०
दिस. ३१	क्रय खाता	७५०	
	लेनदार खाता		७५०
	माल खरीदा		
	मजदूरी खाता	६५०	
	वेतन खाता	४५०	
	विज्ञापन खाता	२५०	
	कानून खर्च खाता	१००	
	बिजली खर्च खाता	१७५	
	अदत्त खर्च खाता		१,६२५
	खर्चे जिनका भुगतान नहीं हुआ है		
	अर्जित व्याज खाता	३७५	
	व्याज खाता		३७५
	विनियोगों पर अर्जित की गई व्याज		
	आहरण खाता	२५०	
	दान खाता	५००	
	क्रय खाता		७५०
	व्यापारी ने निजी प्रयोग के लिए माल लिया तथा दान में दिया		
	ह्रास खाता	१८,८००	
	भवन खाता		२,५००
	मशीनरी खाता		१२,५००
	मोटर गाड़ी खाता		३,५००
	फर्नीचर खाता		३००
	ह्रास अपलिखित किया		
	लाभ-हानि खाता	८००	
	डूबत ऋण कोष खाता		८००
	डूबत ऋण कोष बनाया		
	चोरी से हानि खाता	६५०	
	उदरत खाता		६५०
	एक कर्मचारी द्वारा चुराया हुआ माल उदरत खाते में अपलिखित किया		

उपर्युक्त प्रविष्टियों का प्रभाव

संख्या	लाभ-हानि खाता		चिट्ठा			
	शुद्ध लाभ		सम्पत्ति		दायित्व	
	वृद्धि	कमी	वृद्धि	कमी	वृद्धि	कमी
	रु०	रु०	रु०	रु०	रु०	रु०
(१)	—	७५०	—	—	७५०	७५०
(२)	—	१,६२५	—	—	१,६२५	१,६२५
(३)	३७५	—	३७५	—	३७५	—
(४)	२५०	—	—	—	२५०	२५०
(५)	—	१८,८००	—	१८,८००	—	१८,८००
(६)	—	८००	—	८००	—	८००
(७)	—	६५०	—	६५०	—	६५०
योग रु०	६२५	२२,६२५	३७५	२०,२५०	३,०००	२२,८७५
		−२२,०००		−१९,८७५		−१९,८७५

इस प्रकार शुद्ध या असली लाभ २६,५७६ व चिट्ठे का योग १,१५,५५२ हो जाता है।

उदाहरण ५६

फिलिप व इमरसन बेतार के तार निर्माण में बराबर के साझीदार हैं। ३१ दिसम्बर को उनकी पुस्तकें बन्द होती हैं, तथा ३१ दिसम्बर १९५० को उनके निम्न शेष हैं :—

	रु०	रु०
फिलिप का पूँजी खाता		२०,०००
इमरसन का पूँजी खाता		१५,०००
फिलिप का आहरण खाता	२,०००	
इमरसन का आहरण खाता	१,५००	
क्रय	४३,०००	
विक्रय		१,०६,०००
सामान्य खर्चे	२,५००	
मजदूरी	४०,०००	
वेतन	३,५००	
प्राप्य व देय बिल	१,३७५	१,८७५
[illegible]	५००	
रोकड़ (बैंक में)	१३,२००	
रोकड़ (हाथ)	८००	
देनदार व लेनदार	१४,२५०	१०,०००
कर व रेट्स	५००	
स्टॉक १ जनवरी १९५० को	१३,०००	
बैंक का ऋण		६,०००
[illegible]	[illegible]	
[illegible]	[illegible]	
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]		[illegible]
[illegible]		[illegible]
[illegible]		[illegible]

बट्टा (दिया व लिया)	४१०	५००
दान खाता	२२०	
मरम्मत खाता	१३०	
	१,६४,५२५	१,६४,५२५

अन्तिम खाते बनाने से पहले निम्न समायोजन करो :—

(१) २५० रु० के डूबत ऋण और अपलिखित करो।

(२) देनदारों पर डूबत ऋणों के लिये ६% सञ्चय करो व ४ प्रतिशत की दर से लेनदारों व देनदारों पर बट्टा कोष बनाओ।

(३) ४०० रु० मरम्मत खाते में व ३५० रु० दान-कोष में—हस्तान्तरित करो।

(४) २,००० रु० मजदूरी व ६०० रु० वेतन अदत्त हैं।

(५) २५० ऋणों पर व्याज वाजिब है।

(६) ५० रु० का कर पेशगी दे दिया है।

(७) प्लाण्ट व मशीनरी का ५% की दर से व भूमि व भवन का २½ की दर से ह्रास अपलिखित करो।

(८) साझीदार अपनी पूंजी पर ५% व्याज लेने के अधिकारी हैं तथा इमरसन, जो प्रबन्धक साझीदार है, १,००० रु० प्रति वर्ष वेतन पाने का अधिकारी है जो अभी तक नहीं दिया गया है।

(९) ३१ दिसम्बर १९५० को स्टॉक का मूल्य २०,००० रु० था।

विभिन्न समायोजनाओं को जर्नल में दिखाकर अंतिम तलपट बनाओ व अंतिम खाते तैयार करो।

समायोजक जर्नल प्रविष्टियाँ

		रु०	रु०
१	डूबत ऋण खाता	२५०	
	देनदारों के क्रमश व्यक्तिगत खाते		२५०
	डूबत ऋण अपलिखित किये		
२	डूबत ऋण कोष खाता	७५०	
	डूबत ऋण खाता		७५०
	डूबत ऋण सञ्चय कोष में हस्तातरित किये		
	लाभ-हानि खाता	६५०	
	डूबत ऋण कोष खाता		६५०
	६% डूबत ऋण कोष बनाने के लिये राशि हस्तातरित की		
	प्राप्त बट्टा खाता	५००	
	लेनदार बट्टा कोष		५००
	प्राप्त बट्टा कोष में हस्तातरित किया		
	लेनदार बट्टा कोष खाता	३००	
	लाभ-हानि खाता		३००
	बट्टा कोष में ४% लेनदार बट्टा सञ्चय करने के लिये राशि हस्तातरित की		
	देनदार बट्टा कोष	४५०	
	दत्त बट्टा खाता		४५०
	दत्त बट्टे कोष में हस्तातरित किया		
	लाभ-हानि खाता	६१४	
	देनदार बट्टा कोष खाता		६१४
	बट्टा कोष में देनदारों पर ४% बट्टा सञ्चय करन के लिये राशि हस्तातरित की		

	....		६,२५०
बन्धक पर ऋण (Loan on Mortgage)	...	१५,६००	
फ्रीहोल्ड भूमि व भवन	.	६,५००	
प्लान्ट व मशीनरी	..	४००	५६४
देनदार व लेनदार बट्टा कोष	...	-	६००
डूबत ऋण कोष	...		६७०
मरम्मत कोष	...		४८०
दान कोष	....		२,६००
अदत्त खर्चे (Outstanding Expenses)	...	२,०००	
ब्याज	...	५०	
पूर्व दत्त खर्चे (Prepaid Expenses)	....	१,७१४	
लाभ-हानि खाता	....	४५०	
दर व कर	....	६००	
ह्रास (depreciation)			
		१,७०,३८६	१,७०,३८६

व्यापार व लाभ-हानि खाता

(३१ दिसम्बर १९५० को अन्त होने वाले वर्ष के लिये)

		रु०		रु०
स्टॉक (१-१-५०)		१३,०००	विक्रय	१,०६,०००
क्रय		४३,०००	स्टॉक (३१-१२-५०)	२०,०००
मजदूरी		४२,०००		
सकल लाभ आ/ले		३१,०००		
		१,२६,०००		१,२६,०००
वेतन		४,४००	सकल लाभ नी/ला	३१,०००
सामान्य खर्चे		२,५००	लेनदारों का बट्टा कोष	३००
दर व कर		४५०		
ह्रास		६००		
डूबत ऋण कोष		६५०		
देनदारों का बट्टा कोष		६१४		
दान कोष		३५०		
मरम्मत कोष		४००		
ऋण पर ब्याज		२५०		
शुद्ध लाभ आ/ले		२०,७८६		
		३१,३००		३१,३००
पूँजी पर ब्याज :			शुद्ध लाभ नी/ला	२०,७८६
फिलिप	१,०००			
इमरसन	७५०	१,७५०		
इमरसन का वेतन		१,०००		
शेष :				
फिलिप	९,०१८			
इमरसन	९,०१८	१८,०३६		
		२०,७८६		२०,७८६

फिलिप व इमरसन का चिट्ठा
(३१ दिसम्बर १९५० को)

दायित्व	रु०	रु०	सम्पत्ति		रु०	रु०
देय बिल		१,८७५	रोकड़			८००
बन्धक पर ऋण	६,०००		बैंक			१३,२००
जोड़ो—अदत्त ब्याज	२५०	६,२५०	प्राप्य बिल			१,३७५
			देनदार		१५,०००	
लेनदार	१०,०००		घटाया—कोष			
घटाओ—बट्टा कोष	४००		डूबत ऋण	९००		
		९,६००	बट्टा	५६४	१,४६४	१३,५३६
मरम्मत कोष		४८०				
दान कोष		६७०	स्टॉक			२०,०००
अदत्त खर्चे		२,६००	पूर्वदत्त खर्चे			५०
पूँजी—			भूमि व भवन		१६,०००	
फिलिप :			घटाया—ह्रास		४००	१५,६००
शेष १-१-५०	२०,०००					
घटाया—आहरण	२,०००		प्लान्ट व मशीनरी		१०,०००	
			घटाया—ह्रास		५००	९,५००
	१८,०००					
जोड़ा—ब्याज	४,०००					
,, लाभ	६,०१८					
		२८,०१८				
इमरसन :						
शेष १-१-५० को	१५,०००					
घटाया आहरण	१,५००					
	१३,५००					
जोड़ा—ब्याज	७५०					
,, वेतन	१,०००					
,, लाभ	६,०१८	२१,२६८				
		७४,०६१				७४,०६१

प्रश्न

१. डूबत ऋण कोष क्या है, इसकी धन-राशि किस प्रकार निश्चित की जाती है व इसको बनाने का उद्देश्य क्या है ?

२. एक व्यापार के अन्तिम खाते बनाते समय यदि आप तलपट में डूबत ऋण खाता व डूबत ऋण कोष खाता दोनों पावें तो उनका पुस्तकों में क्या व्यवहार करेंगे ? उत्तर को स्पष्ट करने के लिये उदाहरण दो।

३. देनदारों व लेनदारों पर बट्टा कोष बनाने के पक्ष व विपक्ष में तर्क दीजिये। ये किस प्रकार बनाये जाते हैं ?

४. आकस्मिक हानि कोष (Reserve for Contingencies) क्या है, और वह किन परिस्थितियों में बनाया जाता है ?

५. [illegible] (equalised) [illegible] ?

६. [illegible]

डूबत ऋण अपलिखित (write off) करने व सन्दिग्ध ऋणों के लिये ५% कोष (Reserve for Doubtful Debts) बनाने के बाद ३१ दिसम्बर १६५० को विविध देनदार व डूबत ऋण कोष खाते बनाओ।

७. एक संस्था के ३१ दिसम्बर १६५० को देनदार ८,६४० रु० व वर्ष के प्रारम्भ में डूबत ऋण कोष ५४० रु० था। देनदारों में से ४५० रु० डूबत ऋण समझा गया और उसे पूर्णतया अपलिखित करना था। सन्दिग्ध ऋण के लिये ५% कोष बना है। ३१ दिसम्बर १६५० को डूबत ऋण कोष खाता बनाओ।

८. एक संस्था की पुस्तकों में १ जनवरी १६४६ को डूबत ऋण कोष खाते में ६०० रु० का क्रेडिट शेष है। वर्ष में वास्तविक डूबत ऋण ७०० रु० हुए। ३१ दिसम्बर १६४६ को देनदार २४,००० रु० है और ५% डूबत ऋण के लिये कोष बनाना है।

१६५० के वर्ष में वास्तविक डूबत ऋण १,३५० हैं। ३१ दिसम्बर १६५० को देनदार २०,००० रु० हैं जिन पर ५% डूबत ऋण के लिये व २½% बट्टे के लिये संचित करना है।

उपर्युक्त का आवश्यक खातों में लेखा करो व सम्बन्धित पदें (Items) ३१ दिसम्बर १६५० को चिट्ठे में दिखाओ।

६. १ जनवरी १६४८ को, सदिग्ध ऋण कोष में ६०० रु० का क्रेडिट शेष हैं। वर्ष में डूबत ऋण ७०० रु० हुये। ३१ दिसम्बर १६४८ को देनदार २४,००० रु० है जिनपर ५% सन्दिग्ध ऋण के लिये सचय करना है। १६४६ वे वर्ष में डूबत ऋण १,३५० रु० हुये। ३१ दिसम्बर १६४६ को देनदार २५,००० रु० है व ५% सन्दिग्ध के लिये संचय करना है। १६५० में डूबत ऋण ३०० रु० तथा वर्ष के अन्त में देनदार १०,००० रु० है, जिनपर ५% सन्दिग्ध ऋणों के लिये व ५% बट्टे के लिये सचित करना है।

आवश्यक खाते बनाओ व बताओ कि यह पद लाभ हानि खाते व चिट्ठे में प्रत्येक वर्ष में तीन साल तक किस प्रकार दिखाये जायेंगे ?

१०. ३१ दिसम्बर १६४६ को, बी के चिट्ठे में देनदार निम्न प्रकार दिखाये गये —

	रु०	रु०
देनदार	२०,१००	
घटाओ—डूबत ऋण कोष	१,०५५	
	१६,०४५	
घटाओ—देनदारों पर बट्टा कोष	१,००२	१८,०४३

१६५० के वर्ष में डूबत ऋण ७२० रु० हुये व ६८५ रु० बट्टा दिया गया। वर्ष के अन्त में देनदार खातों के शेषों का योग २६,२०० रु० था। सम्भावित डूबत ऋण व देनदारों पर बट्टा आयोजित करने से पूर्व वर्ष का लाभ १६,३०० रु० था। डूबत ऋण व बट्टा दोनों का कोष उस दिन पर दिये हुए पुस्तक ऋणों का ५% रखना है।

(अ) वर्ष के लिए बी का वास्तविक कुल लाभ, और (ब) ३१ दिसम्बर १६५० को चिट्ठे में विविध देनदार जिस प्रकार प्रगट होंगे उस तरह दिखाइये।

११ १ अप्रैल १६५० को, हरिमोहन ने १०,००० रु० की पूँजी लगाकर मोहन इन्जिनियरिंग वर्क्स के नाम से व्यापार प्रारम्भ किया। ३१ मार्च १६५१ को उसकी पुस्तकों में निम्न शेष थे —

	रु०		रु०
लेनदार	४,३३८	रोकड (हस्ते) (Cash in Hand)	३६०
उत्पादक मजदूरी	४,६८३	रोकड (बैंक में)	२,५००
प्राप्य बिल	३६१	क्रय	१०,६४४
बट्टा प्राप्त (Discounts received)	१३०	सामान्य खर्चे	२,५६०
बट्टा दिया (Discounts given)	२६०	ऋण (क्रेडिट)	१,०१०
किराया दर व कर	१,३८०	देय बिल	१,५२०
विक्रय	२५,३६०	हरिमोहन की पूँजी	१०,०००
प्लाण्ट व मशीनरी	५,३६०	,, का आहरण	७२५
देनदार	८,१०५	डूबत ऋण	१००
वेतन	१,६४०	मोटर लॉरी	२,५००
विज्ञापन	५००		

निम्न बातों को ध्यान में रखकर ३१ मार्च १६५१ को समाप्त होने वाले वर्ष का व्यापार एवं लाभ-हानि खाता व चिट्ठा बनाओ —

(अ) ३१ मार्च १६५१ को स्टॉक ५,३५०) था।
(ब) पूँजी पर ६% प्रति वर्ष व्याज दिया जाय।

(म) ऋण पर ८ आने प्रतिशत प्रतिमाह ६ माह का व्याज वाजिब (due) है।
(ट) ५० रु० डूबत ऋण के अपलिखित करो तथा ५०० रु० का एक डूबत ऋण कोष बनाओ।
(इ) प्लाण्ट व मशीनरी पर १०% ह्रास अपलिखित करो।
(ई) ३५० रु० का खरीदा हुआ माल प्राप्त किया व स्टॉक में सम्मिलित किया, परन्तु इसकी पुस्तकों में कोई भी प्रविष्टि नहीं की।
(उ) १०० रु० किराये के पूर्वदत्त (prepaid) है।
(ऊ) ५०० रु० वेतन व ४५० रु० मजदूरी अदत्त (outstanding) है।
उत्तर : स० ला० १४,२८३ रु० ; अ० ला० ५,५४२ रु० ; चिट्ठा २३,६२० रु०।

१२. ३० दिसम्बर १९५० को एक व्यापारी की पुस्तकों में निम्न शेष थे :—

	रु०		रु०
पूँजी खाता	३०,०००	बट्टा (डेबिट) (discounts)	१,६००
आहरण	५,०००	बट्टा (क्रेडिट)	२,०००
फर्नीचर व फिटिंग	२,६००	कर व बीमा	२,०००
बैंक ओवर ड्राफ्ट	४,२ ०	सामान्य खर्चे	४,०००
लेनदार	१३ ३००	वेतन	६,०००
व्यापार गृहादि (Business Premises)	२०,०००	कमीशन (डेबिट)	२,२००
स्टॉक १-१-१९५० को	२२,०००	भाड़ा (क्रय पर)	१,८००
देनदार	१८,०००	डूबत ऋण कोष	५००
क्रय	१,७०, ००	डूबत ऋण	८००
विक्रय	१,५१,०००	विक्रय वापसी	२,०००

३१ दिसम्बर १९५० को निम्न व्यवहार और हुये :—
१. २,५०० रु० का उधार माल खरीदा।
२. ८०० रु० वेतन चैक द्वारा दिया
३. नकद बिक्री ३५० रु०।
४. व्यापार गृहादि तथा फर्नीचर व फिटिंग पर क्रमशः ५०० रु० व ६०० रु० ह्रास काटा गया।
५. डूबत ऋण कोष का इस प्रकार समायोजन किया जाय कि वे देनदारों के ५% के बराबर हों।
६. ५०० रु० असमाप्त बीमा (Unexpired Insurance) के आगे ले जाये गये।
७. व्यापारी की पूँजी पर ६% प्रतिवर्ष का व्याज क्रेडिट किया।
८ व्यापारी ने चैक द्वारा ५०० रु० निजी खर्च के लिये निकाले।

उपर्युक्त लेनदेनों से जर्नल, अन्तिम तलपट व वार्षिक खाते तैयार करो। ३१ दिसम्बर १९५० को स्टॉक २५,००० रु० का है।

उत्तर : स० ला० ३८,०५० रु० ; अ० ला० १६,८५० रु० ; चिट्ठा ६४,४५० रु० व अन्तिम तलपट का योग २,०३,८५० रु०।

१३. निम्न सूचनाओं से ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये व्यापार व लाभ-हानि खाते तथा उसी तिथि को चिट्ठा बनाओ।

तलपट
(३१ दिसम्बर १९५० को)

	रु०	रु०
पूँजी		[illegible]
आहरण (Drawings)	११,०००	
स्टॉक (१ जनवरी १९५०)	३०,०००	
[illegible]	[illegible]	
[illegible]		[illegible]
[illegible]		[illegible]
[illegible]	[illegible]	
[illegible]	[illegible]	
[illegible]	[illegible]	
[illegible]	[illegible]	

आवागमन खर्च (Travelling expenses)	६६०	
विज्ञापन	४२०	
कर व बीमा	२,८००	
बट्टा (discounts)	३००	
बैंक ब्याज व कमीशन	२१५	
डूबत ऋण (Bad-Debts)	४००	
गृहादि (Premises)	६,०००	
डूबत ऋण कोष		५५०
मशीनरी व प्लाएट	१०,०००	
फिक्चर्स व फिटिंग	२,४५०	
देनदार	४६,१००	
लेनदार		३०,०००
रोकड (हस्ते) (Cash in hand)	१,०३०	
बैंक अधिविकर्ष (Overdraft)		१०,०००
	२,०१,८५०	२,०१,८५०

३१ दिसम्बर १९५० को ४५,००० रु० का स्टॉक था। कर व मजदूरी के क्रमश २५० रु० व २०० रु० अदत्त थे। १५० रु० बीमा के पेशगी दे दिये गये हैं। ४०० रु० डूबत ऋण और अपलिखित करो। देनदारों पर ५% सदिग्ध ऋण के लिये कोष बनाओ। गृहादि पर २½%, मशीनरी व प्लान्ट पर ७½% और फिक्चर व फिटिंग पर १०% का ह्रास अपलिखित करो।

उत्तर—स० ला० ५६,६०० रु० ; अ० ला० ४२,४५० रु०; चिट्ठा १,०६,६०० रु०

१४. केशोराम एण्ड क० की पुस्तकों में ३१ दिसम्बर १९५० को निम्न शेष थे :—

	रु०		रु०
रोकड़ (हस्ते) (Cash in hand)	१,४६०	डूबत ऋण की प्राप्ति (Bad debts recovered)	४५०
देनदार	६६,१८०	बट्टा (Discounts)	८५०
स्टॉक	२३,९५०	डूबत ऋण कोष	१,५००
फर्नीचर	९२०	क्रय वापिसी	१५,०००
आहरण	४,०७०	बैंक के देने (Overdraft)	१५,२५०
मोटर लॉरी	२३,६००	लेनदार	४२,०००
क्रय	१,९८,०५०	विक्रय	२,४५,०००
विक्रय पर कमीशन	१,५००	मोटर किराया (प्राप्त)	२,३५०
कर व बीमा	३,०२५	पूँजी	४६,२५०
टेलीफोन का किराया	३५०		
कानूनी खर्चे	७५०		
वेतन	९,५६०		
मोटर खर्च	३,२८०		
ब्याज	१,४५०		
आवागमन खर्च	२,३५०		
मरम्मत	६७५		
भवन	२५,६००		
डूबत ऋण	१,८५०		
	३,६८,६५०		३,६८,६५०

निम्न समायोजन (Adjustments) करने के पश्चात् १६५० का व्यापार एवं लाभ-हानि खाता बनाओ और ३१ दिसम्बर १६५० को चिट्ठा दिखाओ।

१. १५० रु० डूबत ऋण लिखो व २,००० रु० डूबत ऋण के सचय करो।
२. ३०० रु० अंकेक्षण शुल्क (Audit fee), ६०० रु० वेतन, व २५० रु० कानूनी खर्च के नहीं दिये गये हैं।
३. ४५० रु० बैंक ओवरड्राफ्ट का व्याज देना है।
४. २५० रु० कमीशन व ४०० रु० बीमा पूर्वदत्त है।
५. निम्न पर ह्रास अपलिखित करना है :—फर्नीचर १०%, मोटर लॉरी १५% व भवन २%।
६. ५०१ रु० का माल दान में, ५०० रु० का मुफ्त बानगी (Sample) के रूप मे, व ७५० रु० का माल व्यापारी ने निजी खर्च के लिये निकाला।
७. बीमित स्टॉक (२,५०० रु०) अग्नि द्वारा नष्ट हो गया, तथा बीमा कम्पनी ने सम्पूर्ण दावा स्वीकार कर लिया।
८. स्टॉक ३१ दिसम्बर १६५० को १८,५०० रु०।

उत्तर : स० ला० ६०,७५१ ; अ० ला० ३२,८६६ ; चिट्ठा १,३३,१४६ रु०

अध्याय—११

पूँजी और लाभ

व्यय, भुगतान, आय, प्राप्ति और नुकसान के सम्बन्ध में पूँजी (Capital) और लाभ (Profit) के मध्य उचित भेद करना सही लेखा विधि के महत्वपूर्ण सिद्धान्तो मे से एक है। यदि इस भेद को भुला दिया जाय, तो बहीखाते के परिणाम न केवल गलत होगे अपितु बिल्कुल झूठ होगे। उदाहरण के लिए, मशीनरी खरीदे और खरीद खाता के नाम करदे, या फर्नीचर मे कुछ वृद्धि करें और उसकी लागत मरम्मत खाते नाम करदे या भूमि एवं भवन का एक भाग लाभ पर बेच दें और उस लाभ को लाभ-हानि खाते जमा लिखदे तो इन सभी दशाओ मे लाभ हानि खाता और चिट्ठा गलत एवं भ्रमपूर्ण होगे।

क्योकि सभी लाभ सम्बन्धी मदें (Revenue items) व्यापार एवं लाभ हानि खाते में जाती है और सभी पूँजी मदे चिट्ठे में, अत. यह बड़ा आवश्यक है कि किसी व्यापार अवधि की समाप्ति पर अन्तिम खाते बनाते समय पूँजी और लाभ के बीच उचित भेद रखा जाय।

पूँजी और लाभ व्यय

(Capital and Revenue Expenditure)

पूँजी और लाभ व्यय के मध्य भेद करने के कोई कठोर और निश्चित नियम बनाना संभव नही है, क्योकि जो व्यय एक दशा मे पूँजी होता है वही दूसरी दशा मे लाभ सम्बन्धी माना जा सकता है या वह अंशत पूँजी और अंशत. लाभ सम्बन्धी हो सकता है।

फिर भी निम्नलिखित नियम पूँजी व्यय और लाभ सम्बन्धी व्यय में भेद करने का मार्ग प्रदर्शन करने के लिये प्रयोग किये जा सकते हैं :—

पूँजी व्यय :—निम्नलिखित किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये किया गया व्यय पूँजी व्यय कहलाता है .—

(अ) स्थायी सम्पत्ति प्राप्त करने के लिये, जैसे भूमि, भवन, मशीनरी, फर्नीचर आदि जिन्हें स्तैमाल के लिए व्यापार मे रखा जाता है बेचने के लिये नहीं। एक स्थायी सम्पत्ति की लागत मे ऐसे सभी व्यय भी शामिल होगे जो सम्पत्ति के काम योग्य होने तक करना आवश्यक है। इस प्रकार खरीदी हुई भूमि की लागत मे विक्रेता को दिया गया मूल्य, सभी कानूनी खर्चे और दलाल का कमीशन, यदि कोई है, शामिल होगा। इसी प्रकार मशीनरी खरीदने की लागत मे क्रय मूल्य, भाड़ा, आयात कर, गाड़ी भाड़ा, चुंगी, ठेला भाड़ा, मशीन लगाने के व्यय आदि शामिल होते हैं।

(आ) स्थायी सम्पत्तियो की उन्नति और वृद्धि के लिए, जैसे भवन, मशीनरी, मोटर आदि मे विस्तार करने की लागत या उनमें अन्य कोई उन्नति करने की लागत।

(इ) किसी रूप मे व्यापार की आय-उत्पादक शक्ति बढ़ाने के लिए, उदाहरण के लिये व्यापार को अधिक विस्तृत एवं सुविधाजनक स्थान मे ले जाने का व्यय।

(ई) व्यापार के लिये पूँजीधन प्राप्त करने के लिये, जैसे ऋण प्राप्त करने के लिये चुकाये गये कमीशन व दलाली।

लाभ-व्यय :—वह व्यय जो निम्नलिखित उद्देश्यो के लिये खर्च किया जाता है, लाभ-व्यय कहलाता है :—

(अ) उस माल को खरीदने के लिये जिन्हे मुनाफे पर बेचने के लिये खरीदा जाता है, जैसे माल की लागत, कच्चा माल और स्टोर सामग्री।

(ब) वर्तमान स्थायी सम्पत्ति को अच्छी चालू दशा मे रखने के लिये जैसे भवन, मशीन एवं फर्नीचर आदि की मरम्मत और नवकरण या मशीनरी के खुले पुर्जों की लागत।

(स) व्यापार को सुचारु रूप से दिन प्रतिदिन चलाने के लिये, जैसे किराया, कर, वेतन, बीमा, विज्ञापन, वट्टा, व्याज, कमीशन आदि।

कभी-कभी यह कठिनाई उपस्थित होती है कि किस व्यय को पूँजी-गत मानें और किसको लाभ-गत। परन्तु यह समस्या निम्नलिखित प्रश्नों से हल की जा सकती है :—

१. क्या उस खर्च के फलस्वरूप कोई स्थायी सम्पत्ति प्राप्त हुई है ?
२. क्या उस रकम से स्थायी सम्पत्ति मे कोई विस्तार या उन्नति हुई है ?
३. क्या इस खर्च से व्यापार की लाभ-उत्पादन शक्ति किसी तरह से बढ़ी है ?
४. क्या यह व्यापार के लिये पूँजी प्राप्त करने मे खर्च की गई है ?

यदि इन प्रश्नों का उत्तर "हाँ" मे है तो यह सब खर्च पूँजी-गत हैं और यदि "नहीं" मे है तो वह सब खर्च लाभ-सम्बन्धी हैं। प्रथम खर्चे तो किसी स्थायी सम्पत्ति खाते के नाम लिखे जावेंगे और दूसरे खर्च हानि-लाभ खाते के नाम लिखे जावेंगे।

इसलिये यदि अवास्तविक खातो और स्थायी सम्पत्ति के खातो को शुद्ध रूप से लिखना हो तो पूँजी-व्यय और लाभ-व्यय के अन्तर का पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिये। यदि किसी पूँजी-व्यय को गलती से लाभ-व्यय मान लिया जावेगा तो स्थायी सम्पत्ति का खाता और हानि-लाभ खाता दोनो ही भ्रमात्मक और दोषपूर्ण हो जावेंगे। उदाहरणार्थ, यह सिद्धान्त से ही गलत होगा कि मरम्मत और नवकरण की रकमों को यन्त्रों और मशीनो के खाते में ले जाया जावे, परन्तु जहाँ पर किसी खर्चे की वास्तविक प्रकृति के सम्बन्ध मे सन्देह हो तो उसे लाभ-सम्बन्धी व्यय ही मान लेना अधिक उचित होगा।

लाभ-व्यय की मदें जो पूँजी-व्यय में परिणत हो जाती हैं

(Items of Revenue Expenditure becoming Capital)

कुछ व्यय, जैसे कच्चे माल और स्टोर्स का क्रय, मजदूरी, वेतन, मरम्मत, खर्चे, विज्ञापन, दलाली, कमीशन आदि ऐसे खर्चे है जो साधारणतः लाभ से सम्बन्ध रखते हैं। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि ये खर्चे सदैव ही लाभ-व्यय हों। निम्नलिखित उदाहरण उन खर्चों के हैं जो साधारणतः लाभ-गत होते हैं, परन्तु कुछ परिस्थितियों मे पूँजी-गत हो जाते हैं।

१. कच्चा माल और स्टोर्स :— उस कच्चे माल और स्टोर्स का मूल्य जो एक स्थायी सम्पत्ति तैयार करने मे खर्च होता है पूँजी-व्यय माना जाता है और यह कच्चे माल-खाते से उस स्थायी सम्पत्ति खाते के नाम लिख दिया जाता है।

२. मजदूरी और वेतन :— उन मजदूरों का वेतन और मजदूरी जिन्होंने किसी स्थायी सम्पत्ति के निर्माण के लिये कार्य किया है पूँजी-व्यय है और यह रकम स्थायी सम्पत्ति की लागत का एक हिस्सा समझी जानी चाहिये। उदाहरणार्थ, यदि किसी व्यापार के स्थायी मजदूर स्वयं किसी मकान के निर्माण में [illegible] लगाये जावे, तो उनकी मजदूरी लाभ-व्यय नहीं [illegible] पूँजी-व्यय है और [illegible] के नाम लिखा जाना चाहिये।

३. [illegible] ([illegible]) स्थायी [illegible]

[illegible]

सुधारने और उपयुक्त स्थिति मे लाने में जो खर्च होता है वह उस सम्पत्ति की कीमत का एक भाग होता है और पूँजी-व्यय माना जाता है।

५. कानूनी खर्चे :—वह कानूनी खर्चे जो जमीन, मकान, एकस्व-अधिकार व नमूनों इत्यादि स्थायी सम्पत्तियो के खरीदने के सम्बन्ध मे खर्च होते हैं, पूँजी-व्यय हैं।

६. विज्ञापन :—साधारणतः वह विज्ञापन जो बिक्री बढ़ाने के लिये किया जाता है लाभ-व्यय है, लेकिन जब माल का बनाने वाला व्यापारी अपने नये माल के गुणो का प्रचार करने मे प्रारम्भ मे असाधारण खर्चा करता है, तब ऐसा खर्च पूँजी-व्यय होता है, क्योकि इस खर्च का लाभ आगामी वर्षों मे भी प्राप्त होगा।

७. उन्नति खर्च :—खानो, रेल और बिजली की कम्पनियो, चाय और रबड़ के बगीचो इत्यादि संस्थाओ मे शुरू-शुरू मे उनकी उन्नति के लिये बहुत खर्च होता है। ऐसा खर्च (Development Expenditure), जब तक ये खाने, कम्पनियाँ और बगीचे इत्यादि मुनाफा पैदा नहीं करने लगते तब तक पूँजी-व्यय समझा जाता है। उस अवधि के अन्दर आवश्यक रूप से किया गया तमाम खर्च उन्नति खर्च कहलाता है और पूँजी व्यय माना जाता है भले ही उसमे ऐसे पद जैसे मजदूरी, वेतन, किराया, कर आदि (जो सब रेवेन्यू प्रकृति के है) शामिल हों।

(१) पूँजी और लाभ में विभाजन

(Appointment between Capital and Revenue)

साधारणत व्यय की कोई विशेष रकम या तो पूँजी-व्यय हो सकती है अथवा लाभ-व्यय, परन्तु कभी-कभी वह न तो पूर्ण रूप से पूँजी-व्यय ही होती है और न लाभ-व्यय ही, क्योकि इसका कुछ भाग पूँजी-व्यय हो सकता है और कुछ भाग लाभ-व्यय। उदाहरणार्थ, मकान या मशीन जैसी स्थायी सम्पत्तियो की मरम्मत, नवकरण, वृद्धि आदि की सम्मिलित लागत।

इस तरह की स्थिति मे इस विशेष खर्च को पूँजी-व्यय और लाभ-व्यय मे विभाजित किया जाता है। पहले तो यह मालूम किया जाता है कि इस खर्चे का कितना हिस्सा स्थायी सम्पत्ति की वृद्धि या उसकी उत्पादन-शक्ति बढ़ाने मे खर्च हुआ है और कितना मरम्मत मे। प्रथम खर्चे पूँजी-व्यय है और अन्तिम खर्च लाभ-व्यय।

पूँजी मे परिणित खर्च (Capitalised Expenditure) —जब लाभ-व्यय इस तरह का है कि उसका लाभ उसी वर्ष मे नहीं समाप्त होने वाला है जिसमे कि यह खर्च हुआ है, या वह लाभ व्यय बार-बार होने वाला नही है तथा विशेप प्रकृति का है और बहुत अधिक है तो वह खर्च कई वर्षों पर फैलाया जा सकता है और एक अनुपातिक भाग हर वर्ष चार्ज किया जाता है। वह बैलेस, जो आगामी वर्षों मे ले जाया जाता है, पूँजी मे परिणित खर्च या अस्थगित लाभ-व्यय (Deferred revenue expenditure) कहलाता है। यह पूँजी मे परिणित खर्च बैलेस शीट मे सम्पत्ति के रूप मे दिखलाया जाता है।

(२) पूँजी और लाभ-सम्बन्धी भुगतान

(Capital and Revenue Payments)

खर्च और भुगतान का अन्तर समझना परमावश्यक है। खर्च वह सारी रकम है जोकि देनी है, चाहे इसका भुगतान हुआ है या नहीं; जबकि भुगतान वह रकम है जोकि वास्तव मे चुका दी गई है। इस तरह से पूँजीगत भुगतान वह है जो किसी पूँजी-व्यय के सम्बन्ध मे दिया गया है और लाभ-सम्बन्धी भुगतान वह है जो किसी लाभ-व्यय के सम्बन्ध मे दिया गया है।

उदाहरणार्थ, एक मशीन २०,०००) मे खरीदी गई और केवल १०,०००) रोकड़ी दिये गये। बाकी रुपये छ महीने बाद देने की प्रतिज्ञा की गई, तो यहाँ २०,०००) का खर्च पूँजी-व्यय है

और पूँजी-सम्बन्धी भुगतान केवल १०,०००) है। इसी तरह से यदि राम से १०,०००) का माल रोकड़ी में और १०,०००) का उधार में खरीदा हो, तो २०,०००) लाभ-व्यय के हैं, किन्तु केवल १०,०००) लाभ-सम्बन्धी भुगतान के है।

(३) पूँजी और लाभ-सम्बन्धी आय

(Capital and Revenue profits)

व्यापार के अन्तिम खाते ठीक रूप से तैयार करने के लिए पूँजी और लाभ-सम्बन्धी आय का अन्तर भी वहुत महत्त्वपूर्ण है। परन्तु यह अधिकतर उस मूल श्रोत पर निर्भर रहता है जिससे आय प्राप्त होती है।

पूँजीगत आय (Capital Profits) :—यह आय किसी स्थायी सम्पत्ति के वेचने पर प्राप्त होता है। उदाहरणार्थ, यदि कोई मकान, जिसकी कीमत वहियों मे १२,०००) है, १५,०००) मे वेच दिया जावे तो ३,०००) पूँजी का लाभ हुआ। जव इस तरह की आय हो तो इसे हानि-लाभ खाते में जमा नहीं करना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से हानि-लाभ खाते का शेष भ्रमात्मक हो जायगा और यह व्यापार की आय-उत्पादन-शक्ति के सम्बन्ध मे गलत सूचना देगा। इसलिए इस तरह की आय को या तो प्रोपराइटर के खाते मे सीधे जमा कर देना चाहिए या अच्छा हो कि उसे पूँजी-रिजर्व मे जमा कर दिया जाय, जो वैलेंस-शीट मे ऋण के रूप मे दिखाया जावेगा।

लाभ सम्वन्धी आय (Revenue Profits) :—यह लाभ व्यापार के द्वारा प्राप्त होता है—उदाहरणार्थ माल वेचने का लाभ, धन लगाने से आय, प्राप्त किया हुआ कमीशन, वट्टा, किराया, व्याज आदि। इस तरह की आय हानि-लाभ खाते मे जमा की जाती हैं।

(४) पूँजी और लाभ-सम्बन्धी प्राप्तियाँ

(Capital and Revenue Receipts)

आय (Profits) और प्राप्तियों (Receipts) का अन्तर ध्यान में रखना परमावश्यक है। आय वह रकम है जो कि पैदा की गई है, चाहे वह वास्तव मे प्राप्त हुई हो या न हो, जवकि उसकी प्राप्ति वह रकम है जो वास्तव में प्राप्त हो चुकी है। इस तरह पूँजी प्राप्ति वह है जो पूँजी-लाभ के कारण या किसी स्थायी संपत्ति की विक्री पर या प्रोपराइटर द्वारा व्यापार मे पूँजी लगाने पर रोकड़ी प्राप्त होती है। लाभ-प्राप्ति वह है जो किसी लाभ सम्बन्धी आय के कारण या माल की विक्री से रोकड़ी प्राप्त होती है।

(५) पूँजी और लाभ-सम्बन्धी नुकसान

(Capital and Revenue Losses)

पूँजी और रेवेन्यू की आय के सदृश पूँजी और रेवेन्यू का नुकसान का अन्तर भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह अन्तर भी इस बात पर निर्भर रहता है कि नुकसान किस श्रोत से हुआ।

पूँजीगत-नुकसान :—यह हानि किसी स्थायी संपत्ति के बेचने या व्यापार के लिए पूँजी प्राप्त करने पर होती है। उदाहरणार्थ यदि एक मकान, जिसकी कीमत वहियों मे १२,०००) रुपया है, १०,०००) रुपये में बेच दिया जावे तो २,०००) रुपये का पूँजीगत-नुकसान है। जिस तरह से पूँजीगत लाभ हानि-लाभ खाते में जमा नहीं किया जाता है, वैसे ही पूँजीगत-नुकसान भी हानि-लाभ खाते में [illegible] [illegible] बैलेंस-शीट में [illegible] [illegible]

उसी साल के हानि लाभ खाते के नाम लिखदी जाती है और बाकी संपत्ति के रूप में आगामी वर्षों मे अपलिखित (write off) करने के लिए बैलेंस शीट में रख दी जाती है।

जब कभी कोई पूँजी नुकसान रवेन्यू के रूप में मान लिया जाता है तो लाभ-हानि खाते द्वारा प्रगट किया गया शुद्ध लाभ वास्तविक से कम दिखलाया जाता है, परन्तु ऐसा करने में कुछ नुकसान नहीं है; क्योंकि लाभ कम दिखाना अच्छा है परन्तु अधिक दिखलाना ठीक नहीं होता।

लाभ-सम्बन्धी नुकसान —यह वह नुकसान है जो व्यापार करने से अर्थात् माल बेचने के कारण से होता है। यह नुकसान हानि-लाभ खाते के नाम लिखा जाता है।

उदाहरण ५७

आप निम्न मदों को पूँजी-व्यय समझते हैं या लाभ-व्यय ? प्रत्येक के लिये कारण लिखिये :—

१. एक निकाले हुए कर्मचारी को बेरोजगारी की क्षतिपूर्ति दी।
२. एक पुराने भवन को गिराकर नया भवन निर्माण करने की लागत।
३. एक लीज (Lease) के लिये दिया गया प्रीमियम।
४. व्यापार के लिये एक ऋण प्राप्त करने के सम्बन्ध में किये गये कानूनी खर्चे।
५. इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट से व्यापार को दूसरे स्थान पर ले जाने के लिये प्राप्त हुई क्षति-पूर्ति।
६. व्यापार के लिये खरीदी हुई भूमि को साफ व समतल कराने की लागत।

हल :—

उपर्युक्त मदों का व्यवहार निम्न प्रकार होना चाहिये :—

१. एक निकाले गये कर्मचारी को बेरोजगारी की क्षति-पूर्ति देने से व्यापार में मितव्ययता होगी, अतः इस कारण यह पूँजी-व्यय है और यह 'क्षति-पूर्ति खाते' में डैबिट होगा जोकि चिट्ठे में सम्पत्ति की भाँति प्रदर्शित किया जायगा, परन्तु चूँकि इस सम्पत्ति का कोई मूल्य नहीं है अतः उसे कुछ वर्षों में लाभ में से काट देना चाहिये।

२ एक नया भवन बनाने के लिये पुराने भवन को गिराने की लागत पूँजीगत-व्यय है, क्योंकि यह नये भवन की लागत का एक भाग है।

३. लीज पर ली हुई सम्पत्ति अचल सम्पत्ति है और इसकी खरीद पर प्रीमियम का भुगतान देना पूँजीगत-व्यय है, अत. यह गृहादि (Leasehold) सम्पत्ति खाते में डैबिट होना चाहिये।

४. व्यापार के लिये एक ऋण को प्राप्त करने के लिये किये गये कानूनी खर्चे पूँजीगत-व्यय है, क्योंकि वे पूँजी प्राप्त करने के लिये किये गये हैं। वे चिट्ठे में सम्पत्ति के रूप में दिखाये जायेंगे। परन्तु यह सम्पत्ति केवल नाम मात्र मूल्य की है और किसी मूल्यवान सम्पत्ति का प्रतिनिधित्व नहीं करती, अतः इसे कुछ वर्षों में लाभ-हानि खाते से काट देना अत्युत्तम होगा।

५. इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट से व्यापार को दूसरे स्थान पर ले जाने के लिये प्राप्त हुई क्षति-पूर्ति पूँजीगत लाभ है, क्योंकि यह व्यापार के साधारण काल में अर्जित नहीं की गई। यह एक पूँजी सञ्चय खाते (Capital Reserve A/c) में, जोकि चिट्ठे में दायित्व की ओर दिखाई जायगा, क्रेडिट होनी चाहिये।

६. व्यापार के लिये खरीदी हुई भूमि को साफ व समतल कराने की लागत पूँजीगत-व्यय है जोकि भूमि को उपयोग के लिये तैयार करने में किया गया है।

उदाहरण ५८

कारण देते हुये बताइये कि निम्न मद पूँजी-व्यय है या लाभ-व्यय :—

१. खरीदे हुए माल पर भाडा चुकाया।
२. नयी मशीन को लगाने वाले कर्मचारी की मजदूरी।
३. पुराने घिसे हुए प्लाट को बदलने की लागत।
४. क्रय किये गये पुराने फर्नीचर की मरम्मत।
५ माल की पूर्ति के प्रसंविदे को भग करने का हर्जाना दिया।

हल :—

उपर्युक्त खर्चे पूँजीगत व लाभगत में निम्न प्रकार बाँटे जायेंगे :—

१ क्रय किये हुये माल पर भाडा देना लाभ व्यय है; क्योंकि यह उस माल पर व्यय किया गया है जोकि विक्रय के लिये है।

२. नई मशीन को लगाने वाले मजदूर की मजदूरी पूँजीगत-व्यय है, क्योंकि यह स्थायी सम्पत्ति को प्राप्त करने (acquire) में किया गया व्यय है।

३. पुराने घिसे हुये प्लान्ट को बदलने की लागत लाभ-व्यय है क्योंकि यह स्थायी सम्पत्ति को चालू (maintain) रखने के लिये किया गया है और किसी भी प्रकार सम्पत्ति में वृद्धि नहीं करता।

४ क्रय किये गये पुराने फर्नीचर की मरम्मत पूँजीगत व्यय है व फर्नीचर की लागत का एक भाग है क्योंकि यह फर्नीचर को कार्य योग्य बनान के लिये खर्च किया गया है।

५. माल की पूर्ति के प्रसंविदे को भंग करने का हर्जाना लाभगत-व्यय है, क्योंकि यह व्यापार करते हुए साधारण अवस्था में हुआ।

उदाहरण ५६

एक सुगर मिल कम्पनी के कुछ लेन-देन नीचे दिये गये हैं। कारण बतलाते हुए लिखिये कि ये पूँजीगत मदें हैं या लाभगत :—

(अ) २०० बीघे का एक कृषि फार्म १,५०० रु० वार्षिक किराये पर लिया व १०० रु० प्रति बीघा नजराने के दिये।

(ब) फार्म के लिये ५६०० रु० का सामान व औजार मोल लिये।

(स) पानी के लिये पक्की नालियाँ बनाने में ३,७५० रु० व्यय किये।

(द) १,२५० रु० मूल्य के दो बैल बिजली गिरने से मर गये।

(य) २५० रु० सरकारी आबपाशी अदा की।

(फ) गन्ने की फसल के अतिरिक्त २५,००० रु० की अन्य फसलें पैदा की गयीं।

हल :—

(अ) १,५०० रु० भूमि के किराये की राशि लाभगत व्यय है क्योंकि यह कृषि के चालू खर्चों का प्रतिनिधित्व करता है। परन्तु नजराने के २०,००० रु० पूँजीगत व्यय है क्योंकि यह लीज लेने के लिये व्यय किये गये हैं।

(ब) फार्म के लिये ५,६०० रु० का सामान व औजार पूँजीगत व्यय है क्योंकि यह स्थायी सम्पति क्रय करने में व्यय हुआ।

(स) कृषि-भूमि पर पानी के लिये पक्की नालियाँ बनाने के लिये ३,७५० रु० पूँजीगत व्यय है क्योंकि वह भूमि की उपयोगिता बढ़ाता है।

(द) १,२५० रु० की हानि, जो बैलों पर बिजली गिरने से हुई पूँजीगत हानि है, क्योंकि यह स्थायी सम्पति का नाश है।

(य) २५० रु० राज्य को दिये हुए सिंचाई-कर के लाभ-गत व्यय है क्योंकि वह कृषि करने की लागत का प्रतिनिधित्व करता है।

(फ) २५,००० रु० की अन्य फसलें लाभ-सम्बन्धी प्राप्ति है जो कृषि से प्राप्त होती है।

उदाहरण ६०

किसी शक्कर मिल के लेन-देन निम्न थे। कारण बतलाते हुये लिखिये कि ये पूँजीगत मदें हैं या लाभगत—

(अ) एक मोटर ट्रक २,००० रु० में बेचा जोकि पुस्तकों में १,२५० रु० का था।

(ब) २,००,००० रु० शेअर निर्गमित करके प्राप्त हुये और शेयर निर्गमन का व्यय २,५०० रु० हुआ।

(स) ७५,००० रु० की भूमि कृषि फार्म के लिये खरीदी व ८५० रु० भूमि का लगान दिया।

(द) १,५०,००० रु० उत्पादित शक्कर पर आबकारी कर दिया।

(य) ५०,००० रु० शहर विकास ऋण में जमा किये।

(फ) ६०,००० रु० रेलवे साइडिंग बनाने में खर्च किये।

हल :—

(अ) मोटर ट्रक की बिक्री से प्राप्त २,००० रु० पूँजी-प्राप्ति है व ७५० रु० पूँजीगत लाभ है क्योंकि यह एक स्थायी सम्पत्ति की बिक्री से उत्पन्न हुआ है।

(ब) २,००,००० रु० पूँजी के शेयरों की बिक्री से प्राप्त हुये हैं अतएव यह मिल की पूँजी है व २,५०० रु० पूँजी प्राप्त करने का व्यय है अतएव यह पूँजीगत व्यय है।

(स) ७५,००० रु० एक स्थायी सम्पत्ति की खरीद होने के कारण पूँजीगत व्यय है। ८५० रु० [illegible]

(द) १,५०,००० रु० [illegible]

(य) सरकारी ऋण में विनियोग किये हुये ५०,००० रु० पूँजी-व्यय है क्योंकि यह मान लिया है कि विनियोग बिक्री के लिये नहीं खरीदे गये थे अत: यह रकम एक स्थायी सम्पत्ति को खरीदने की लागत है।

(फ) रेलवे साइडिंग मिल की स्थायी सम्पत्ति है अतएव उसकी लागत के ६०,००० रु० पूँजीगत व्यय है।

उदाहरण ६१

कारण सहित लिखिये कि किसी लिमिटेड कम्पनी के निम्न व्यय पूँजीगत हैं या लाभगत :—

(अ) ऋण-पत्रों द्वारा व्यापार के लिये ऋण लेने का कानूनी व्यय।

(ब) उसके ट्रेड मार्क का दुरुपयोग होने के सम्बन्ध में कानूनी कार्यवाही करने का व्यय।

(द) भू सम्पत्ति खरीदने के सम्बन्ध में कानूनी व्यय।

(द) माल भेजने के प्रसंविदे को भंग करने पर मुकदमा लड़ने का कानूनी व्यय।

(य) आयकर की अपील करने का कानूनी व्यय।

हल :—

(अ) ऋण-पत्रों द्वारा ऋण लेने का कानूनी व्यय पूँजीगत व्यय है क्योंकि उसके द्वारा व्यापार के लिये पूँजी प्राप्त की गई है।

(ब) ट्रेडमार्क का दुरुपयोग होने पर कानूनी व्यय लाभगत व्यय है क्योंकि उसके द्वारा स्थायी सम्पत्ति को चालू हालत में रखने की व्यवस्था की गई है।

(स) भू-सम्पत्ति क्रय करने में हुआ कानूनी व्यय व्यापार का पूँजी व्यय है क्योंकि वह व्यापार की स्थायी सम्पत्ति प्राप्त करने में हुआ है।

(द) यह कानूनी व्यय उस मुकदमे के लिये है जिसमें माल भेजने का प्रसंविदा भग किया गया है। वह व्यापार चलाने के लिये किया गया है अत. लाभ सम्बन्धी व्यय है।

(य) आयकर की अपील करने का व्यय व्यापार चलाने में किया गया एक साधारण खर्च होने के कारण लाभ सम्बन्धी व्यय है।

उदाहरण ६२

एक उत्पादक सस्था में मशीनरी से सम्बन्धित किये गये व्यय में निम्न की लागत सम्मिलित हैं —

(अ) परिवर्धन, (ब) मरम्मत (स) परिवर्तन व (द) नवकरण। आप किस प्रकार इन मदों को लाभगत व पूँजीगत में लिखेंगे ?

हल :—

(अ) मशीनरी में परिवर्धन (Addition) परिवर्धन की लागत स्थायी सम्पत्ति में वृद्धि करने के लिये की गई है अत यह पूँजी है और मशीनरी खाते में डैबिट की जायगी।

(ब) मशीनरी की मरम्मत :– मशीनरी की मरम्मत पर व्यय की गई राशि स्थायी सम्पत्ति को चालू रखने के लिये की गयी है अतः यह लाभगत व्यय है।

(स) मशीनरी में परिवर्तन :– सर्वप्रथम हमे परिवर्तन की प्रकृति का पता लगाना आवश्यक है। यदि वह परिवर्तन कार्य कुशलता बढाता है तो वह पूँजीगत व्यय है और मशीनरी खाते में डैबिट होगा, परन्तु यदि वह मशीनरी में कोई उन्नति नहीं करता तो वह लाभगत व्यय होगा और मरम्मत खाते में चार्ज किया जागा।

(द) मशीनरी का नवकरण :—नवकरण का व्यवहार उसकी प्रकृति पर निर्भर है। यदि वह मशीनरी के थोड़े से भाग का किया जाता है तो वह मशीनरी को चालू अवस्था में रखने का व्यय समझा जायगा अतः उसे मरम्मत खाते में चार्ज करना चाहिये परन्तु यदि वह मशीनरी में आशातीत वृद्धि करे तब वह पूँजीगत व्यय होगा और मशीनरी खाते में डैबिट होना चाहिये।

उदाहरण ६३

एक व्यापारिक सस्था के निम्न लेनदेनों को जर्नल में लिखिये व भवन खाता बनाइये :—

१६५०		
जनवरी	१०	६,६५० रु० का एक पुराना भवन खरीदा व १५० रु० कानूनी व्यय दिये।
	२५	३७५ रु० में पुराना भवन पुनर्निर्माण के लिये गिराया व ८३० रु० पदार्थों की बिक्री से प्राप्त हुये।
	३०	२५० रु० एक शिल्पकार को नये भवन की योजना के लिये दिये।
अप्रेल	३०	नया भवन २१,४५० रु० की लागत से तैयार हुआ।

मई १५ ७४५ रु० भवन मे जल व बिजली के फिटिंग के लिये दिया।
२१ ६०० रु० इजिनियर को, जिसने भवन निर्माण की देखभाल की थी, पारिश्रमिक दिया।
सितम्बर १० वर्षा में भवन का एक भाग बिजली गिर जाने के कारण क्षतिग्रस्त हो गया जिसपर १,५०० रु० व्यय किये तथा ३,२५० रु० की लागत से एक नवीन कमरा बनाया।
दिसम्बर १५ इस भवन के अन्तर्गत नगरपालिका कर दिया १५० रु०।
३१ भवन पर २½% ह्रास अपलिखित करो।

जर्नल

१९५०		रु०	रु०
जन. १०	भवन खाता	६,८००	
	रोकड खाता		६,८००
	भवन खरीदा व कानूनी व्यय किये		
२५	भवन खाता	३७५	
	रोकड़ खाता		३७५
	पुराने भवन को गिराने की लागत		
	रोकड़ खाता	८३०	
	भवन खाता		८३०
	पुराना माल बेचा		
३०	भवन खाता	२५०	
	रोकड़ खाता		२५०
	शिल्पकार को शुल्क दिया		
अप्रैल ३०	भवन खाता	२१,४५०	
	रोकड़ खाता		२१,४५०
	नये भवन के निर्माण की लागत		
मई १५	भवन खाता	७४५	
	रोकड़ खाता		७४५
	जल व बिजली फिटिंग का व्यय		
२१	भवन खाता	६००	
	रोकड़ खाता		६००
	इजिनियर को पारिश्रमिक दिया		
[illegible]	[illegible] खाता	१,५००	
	[illegible] खाता	३,२५०	
	रोकड़ खाता		४,७५०
	[illegible] की लागत		
[illegible]	[illegible]	१५०	
	रोकड़ खाता		१५०
	[illegible] कर दिया		
[illegible]	[illegible]	[illegible]	
	[illegible]		[illegible]
	[illegible]		

भवन खाता

१९५०		रु०	१९५०		रु०
जन. १०	रोकड़ खाता	६,८००	जन. २५	रोकड़ खाता	८३०
२५	,, ,,	३७५	दिस.३१	ह्रास खाता	८९?
३०	,, ,,	२५०		शेष आ/ले	३४,७४९
अप्रैल३०	,, ,,	२१,४५०			
मई १५	,, ,,	७४५			
३१	,, ,,	६००			
सित.१०	,, ,,	३,२५०			
		३६,४७०			३६,४७०

टिप्पणी :—१,५०० रु० की राशि एक असाधारण मरम्मत है जो कि बिजली के गिर जाने से आवश्यक हुई अत. यह लाभगत व्यय है क्योंकि वह किसी भी प्रकार भवन में वृद्धि नहीं करती वरन् वह केवल खोयी गई कुशलता को वापस कराती है।

परन्तु क्योंकि राशि बहुत अधिक है और असाधारण (Exceptional) प्रकृति की है, अत: यदि आवश्यक समझा जाय तो इसे कुछ वर्षों में लाभ-हानि खाते से अपलिखित कर देना चाहिये। तथा इन वर्षों के बीच बची हुई राशि (Balance Carried Forward) ३१ दिसम्बर १९५० को प्रत्येक चिट्ठे में 'असाधारण मरम्मत' के नाम से दिखाई जाय।

यह सोचते हुये कि यह व्यय तीन वर्षों तक चार्ज किया जायगा, मरम्मत खाता निम्न प्रकार होगा :—

मरम्मत खाता

१९५०		रु०	१९५०		रु०
सित.१०	रोकड़ खाता	१,५००	दिस.३१	लाभ-हानि खाता	५००
				शेष आ/ले	१,०००
		१,५००			१,५००

मरम्मत खाते का १,००० रु० का शेष चिट्ठे में ३१ दिसम्बर १९५० को सम्पत्ति की ओर निम्न प्रकार दिखाया जायगा :—

	रु०	रु०
असाधारण मरम्मत	१,५००	
घटायी—अपलिखित राशि	५००	
		१,०००

उदाहरण ६४

निम्न लेनदेन एक मोटर लारी से सम्बन्धित है जिसे एक लिमिटेड कम्पनी ने अपने व्यापार के काम के लिये खरीदा है।

(अ) एक पुरानी लारी २,७५० रु० में नीलाम में खरीदी और २५० रु० उससे सम्बन्धित अन्य व्यय किये।
(ब) १,५९० रु० उसकी पूर्ण मरम्मत कराने में व्यय हुये।
(स) ३५० रु० का अन्य सामान खरीदा।
(द) दुर्घटना से लारी क्षतिग्रस्त हो गई और १,२०० रु० मरम्मत के देने पड़े।
(य) १,००० रु० हरजाना एक मोटर द्वारा हताहत व्यक्ति को दिया।
(फ) ३,१२० रु० में लारी बेच दी।
(ज) १,४७० रु० ड्राइवर का वेतन व पेट्रोल का व्यय दिया।

उपर्युक्त के लिये आवश्यक जर्नल एण्ट्री करो व लारी खाता बनाओ।

जर्नल

		रु०	रु०
(अ)	मोटर लारी खाता	३,०००	
	रोकड खाता		३,०००
	मोटर लारी खरीदी व सम्बन्धित व्यय किये		
(ब)	मोटर लारी खाता	१,५६०	
	रोकड खाता		१,५६०
	मरम्मत की लागत		
(स)	मोटर खर्च खाता	३५०	
	रोकड़ खाता		३५०
	अन्य सामान खरीदा		
(द)	मोटर खर्च खाता	१,२००	
	रोकड़ खाता		१,२००
	विशेष मरम्मत कराई		
(य)	मोटर खर्च खाता	१,०००	
	रोकड़ खाता		१,०००
	क्षति पूर्ति दी		
(फ)	रोकड़ खाता	३,१२०	
	लाभ-हानि खाता	१,४४०	
	मोटर लारी खाता		४,५६०
	लारी बेची		
(ज)	मोटर खर्च खाता	१,४७०	
	रोकड़ खाता		१,४७०
	वेतन, पेट्रोल आदि		

मोटर लारी खाता

	रु०		रु०
रोकड़ खाता	३,०००	रोकड़ खाता	३,१२०
" "	१,५६०	लाभ-हानि खाता	१,४४०
	४,५६०		४,५६०

प्रश्न

१. उन नियमों को बताइये जिनका आप किसी विशेष व्यय की मद को पूँजीगत तथा लाभ निश्चय करने में पालन करते हैं।

२. लेखा-विधि में पूँजी व आय का भेद क्यों बहुत महत्वपूर्ण है।

३. आप निम्न से क्या समझते हैं और उनके अन्तर स्पष्ट कीजिये।

(अ) पूँजीगत व आयगत व्यय (ब) पूँजीगत व आयगत भुगतान (स) पूँजीगत व आयगत आय (द) पूँजीगत व आयगत [illegible] (य) पूँजीगत व आयगत हानि।

४. [illegible]

५. [illegible]

६. [illegible]

७. लाभगत व्यय के कुछ उदाहरण दीजिये जो कुछ परिस्थितियों में पूँजीगत हो जाते हैं।

८ एक उत्पादक ने कुछ प्लान्ट व मशीनरी खरीदी, जिनका बीजक मूल्य १२,५६० रु० है। इस रकम में पहले ही से विद्यमान किसी अन्य मशीनरी के खुले हिस्सों (Spare parts) के ३४५ रु० सम्मिलित हैं। यह अन्तिम मद क्या है पूँजीगत या लाभगत ? अपने उत्तर की पुष्टि के लिये कारण दीजिये व बताइये कि बीजक की राशि का पुस्तकों में क्या लेखा होना चाहिये ?

९. एक उत्पादनकर्त्ता को अग्नि द्वारा हानि उठानी पड़ी जिसमें उसका सब माल नष्ट होगया। पुस्तकों में मूल्य इस प्रकार थे :—भवन ६०,००० रु०, मशीनरी ३०,००० रु०, स्टॉक १०,००० रु०। बीमा कम्पनी से उन्हे १,५०,००० रु० इस प्रकार प्राप्त हुये—भवन के लिये ८०,००० रु०, मशीनरी के लिये ४०,००० रु०, स्टॉक के लिये १५,००० रु० व शेष रकम लाभ की हानि के लिये।

आप उपर्युक्त का फर्म की बहियों में लेखा कैसे करेंगे ? जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिये।

१०. ए एक गैरेज का स्वामी है। १९५० में उसके निम्नलिखित लेन देन हुये :—

(१) विद्यमान साज सामान के परिवर्धन स्वरूप (additions) २,२०० रुपये का एक पुराना पेट्रौल पम्प खरीदा।

(२) उसके निजी कर्मचारी ने इस पम्प को लगाने के लिये ९६ रु० मजदूरी प्राप्त की।

(३) ३५ रु० उसकी रँगाई व लिखाई के दिये।

(४) १२५ रु० का पुस्तकों में लिखा हुआ एक पुराना पम्प ८५ रु० में बेचा और उसके स्थान पर ९६० रु० की लागत का एक नया पम्प लगाया।

(५) ८ माह के पश्चात्, १५ रु० में नया पम्प फिर रगवाया।

उपर्युक्त लेन-देनों का पुस्तकों में लेखा करने के लिये आप पूँजी व लाभ में अन्तर कैसे करेंगे ?

११. स्वदेशी इण्डस्ट्रीज लि० ने अपना मिल अच्छी जगह बदल दिया व उनके कुछ लेन-देन निम्न-लिखित थे :—

(अ) ४,७५० रु० प्लान्ट, मशीनरी व फिक्चरस को हटाने, ले जाने तथा फिर स्थापित करने में व्यय हुए।

(ब) ५०० रु० स्टॉक को पुराने स्थान से नये स्थान पर ले जाने का खर्च।

(स) पुस्तकों में लिखी हुई ७५,००० रु० की प्लान्ट व मशीनरी में १,५०० रु० की (पुस्तक-मूल्य पर) एक मशीन सम्मिलित है, अप्रचलित हो जाने के कारण वह ५०० रु० से बेच डाली गई और उसके स्थान पर २,४०० रु० की नई मशीन लगाई।

(द) नई मशीन पर १५० रु० किराया व भाड़ा तथा २७५ रु० लगाने का व्यय हुआ।

(य) फर्नीचर व फिक्चर का पुस्तक मूल्य ७,५०० रु० था। कुछ भाग खराब हो जाने के कारण उसे ७५० रु० में बेच दिया, उनका पुस्तक मूल्य १,५०० रु० था। १,२०० रु० का नया फर्नीचर खरीदा।

(फ) १,२०० रु० मिल की रगाई में व्यय हुए।

स्पष्ट कीजिये कि इनमें कौन सी मदें पूँजीगत हैं व कौन सी लाभगत।

१२. कारण सहित लिखिये कि एक लिमिटेड कम्पनी के निम्नलिखित लेन-देन पूँजीगत हैं या लाभगत :—

(अ) २,००० रु० एक मनुष्य को, जो कम्पनी की कार से हताहत हो गया था, क्षतिपूर्ति के दिये।

(ब) २,५०,००० रु० के विनियोग, जो पिछले वर्षों में खरीदे थे, ३,५०,००० रु० के बेच दिये।

(स) ८०,००० रु० कम्पनी के कर्मचारियों के बच्चों के लिये हाईस्कूल बनवाने में व्यय किये व इस कार्य के लिये २५,००० रु० राज्य सहायता प्राप्त की।

(द) कम्पनी का विद्युत्-गृह, जिसका पुस्तक मूल्य १५,७०० रु० था, बिजली गिरने से बिल्कुल नष्ट हो गया तथा उसके पुनर्निर्माण में ५६,००० रु० लगे।

१३. पूँजीगत व लाभगत व्ययों में क्यों अन्तर किया जाता है ? आप निम्न पूँजीगत व लाभगत व्ययों को किस प्रकार लिखेंगे :—

(अ) एक भवन, जिसका मूल्य ९५,००० था और अब जिसका पुस्तक मूल्य ५०,००० रु० है, गिरा दिया गया व उसके स्थान पर १,५०,००० रु० का एक भवन नया बनवाया।

(ब) एक सिनेमा कम्पनी ने अपने फर्नीचर व फिटिंग को १२,००० रु० लगाकर सुधरवाया तथा ४,००० रु० हाल की पुताई व सजाने में व्यय किये। हटाये हुये पुराने फर्नीचर का पुस्तक मूल्य २,००० रु० था जिसे बेचकर ८०० रु० प्राप्त किये।

अध्याय—१२

अशुद्धियाँ और उनका सुधार

तलपट वहीखाते की शुद्धता की अति उत्तम परख नहीं है और न इसे ऐसा समझना ही चाहिये। यदि इसका मेल मिल भी जाता है तो इसका यही अर्थ है कि हर एक नाम की रकम के वास्ते उतनी ही जमा की रकम भी खाता बही मे लिखी गई है। यह इस बात को सिद्ध करता है कि तलपट अंकगणित की दृष्टि से मेल खा सकती है, परन्तु वही-खाते की दृष्टि से इसमे अनेक अशुद्धियाँ हो सकती है। व्यवहार मे तलपट के मेल से सामान्यत. यह समझा जाता है कि वहीखाता साधारण शुद्धता से किया गया है।

इसलिये यह कहा जा सकता है कि यदि तलपट नहीं मिलता है तो अवश्य ही कुछ अशुद्धियाँ हैं और यदि तलपट मेल खाता है तो कुछ अशुद्धियाँ वहियो मे हो सकती हैं। भिन्न-भिन्न प्रकार की अशुद्धियाँ, जो किसी व्यापार की वहियो मे मिल सकती हैं, इस प्रकार है :—

(१) वहीखाते की अशुद्धियाँ (Book keeping errors)

भूल मनुष्य ही करता है। मनुष्य की यह कमजोरी वहीखाता रखने वालो मे भी पाई जाती है और वहीखाते के लिखने में वहुधा अशुद्धियाँ हो जाती है। ये अशुद्धियाँ मूल-पत्रो में, जैसे बीजक, जमा-पत्र (Credit Notes) खाता विवरणो (Statement of Account) मे हो सकती हैं और गलत वजन या कीमत लिखने के कारण या गलत हिसाब लगाने से पैदा होती हैं।

जब कभी अंको की नकल की जाती है तब अशुद्धियाँ होने की बड़ी सम्भावना रहती है। अगर मूल-पत्र ठीक हो तो अशुद्धियाँ प्रारम्भिक वहियो मे ही हो सकती हैं। उसके उपरान्त अशुद्धियाँ खाता खताने मे भी की जा सकती हैं। कभी-कभी खातो के शेष निकालने मे भी गलतियाँ हो जाती हैं। इनमे कुछ अशुद्धियाँ तलपट का मिलान नही होने देतीं और कुछ के होते हुए भी तलपट मिल जाता है। वहीखाते की अशुद्धियाँ साधारणत चार भागों मे विभाजित की जाती हैं :—

१. भूल-अशुद्धियाँ (Errors of Omission) :—ये अशुद्धियाँ उस समय उदय होती हैं जब कोई व्यवहार (transactions) वहियो मे लिखने से रह जाय। यदि बिक्री किया हुआ माल भूल से विक्रय-बही में न लिखा जाय तो उसकी रकम न तो ग्राहक के नाम मे लिखी जावेगी और न बिक्री-खाते मे ही जमा की जावेगी। इन अशुद्धियो में वे अशुद्धियाँ भी सम्मिलित की जाती हैं जिनके अन्तर्गत प्रारम्भिक वहियों में रकमें कुछ कम लिखी गई। यदि वही रकम खाता-बही में खताई जावेगी तो जमा और नाम की रकम एक ही होगी, परन्तु यह रकम सही अंक से कम होगी। इस तरह की अशुद्धियाँ तलपट के मेल पर कुछ भी प्रभाव नहीं डालतीं।

२. लिखान-अशुद्धियाँ (Errors of Commi ion) :—ये अशुद्धियाँ सबसे अधिक होती है। इनका मूल कारण गलत खताना, जोड़ना, स्थानान्तर करना आदि हैं। इस तरह की अशुद्धियाँ तलपट के मेल को कभी-कभी प्रभावित कर सकती हैं और कभी नहीं। इस तरह की अशुद्धियों के उदाहरण निम्नलिखित हैं :—

(क) प्रारम्भिक बहियों में गलत प्रविष्टियाँ।

(ख) प्रारम्भिक बहियों से खाता-बही में खताने में अशुद्धियाँ।

(ग) [illegible]

(ई) किसी पद (Item) का दोहरा लेख पूरा न होना।

(उ) पद को किसी खाते की गलत साइड मे खता देना।

(ऊ) पद को किसी गलत खाते मे परन्तु ठीक साइड में खताना।

(ए) किसी खाते मे गलत रकम खता देना।

(ऐ) वही रकम एक खाते मे दो बार लिख देना।

(ओ) खाता वही के खातो का शेष निकालने मे अशुद्धियाँ।

अ, इ और ऊ त्रुटियो के अलावा उपरोक्त सब त्रुटियाँ तलपट के मेल पर प्रभाव डालेंगी।

३. सिद्धान्त की अशुद्धियाँ (Errors of Principle) .—ये अशुद्धियाँ तब होती हैं जबकि कोई रकम किसी गलत श्रेणी के खाते मे लिख दी जाती है, अर्थात् जब पूँजी और लाभ-सम्बन्धी अन्तर पर पूरा-पूरा ध्यान नही दिया जाता। उदाहरणार्थ, जब खर्च की रकम किसी सम्पत्ति खाते मे और सम्पत्ति की रकम खर्च खाते मे लिख दी जाती है तो यह सिद्धान्त की अशुद्धि है। ये अशुद्धियाँ तलपट के मेल पर प्रभाव नही डालती।

४. क्षतिपूरक अशुद्धियाँ (Compensating Errors) —ये अशुद्धियाँ वे हैं जो एक-दूसरे का संतुलन करती रहती है और इसी कारण से इनको खोजना बहुत कठिन होता है। ये अशुद्धियाँ प्रकृति से भिन्न हो सकती है, परन्तु इनकी रकम बराबर-बराबर होती है। किसी खाते के नाम की १००) रु० की गलती, उतनी ही रकम की दूसरे खाते के जमा की गलती से निष्प्रभाव हो सकती है। इस तरह की अशुद्धियाँ तलपट पर कोई प्रभाव नहीं डालतीं।

(२) तलपट की अशुद्धियाँ

बहीखाते की अशुद्धियो को छोड़ कर, अशुद्धियाँ तलपट के तैयार करने मे भी हो सकती है। ये अशुद्धियाँ निम्नलिखित है —

१. तलपट मे खातो के बैलेस लिखने में भूल हो सकती है; रोकड़, फुटकर-रोकड़ और बैंक आदि का बैलेस अधिकतर भूल से रह जाता है।

२. बैलेस तलपट के गलत खाने मे रखा जा सकता है, अर्थात् जमा का बैलेंस तलपट के नाम के खाने मे रखा जा सकता है।

३ बैलेस की रकम तलपट में गलत लिखी जा सकती है; उदाहरणार्थ ५२३) रु० के स्थान पर ५३२) रु० लिखे जा सकते है।

४. तलपट के खानो के जोड़ गलत लग सकते हैं।

अशुद्धियों का खातों के बैलेंसों पर प्रभाव (Effect of Errors on Balancing) :—

तमाम अशुद्धियाँ बहियो के बैलेसो पर प्रभाव नहीं डालती है। कुछ गलतियाँ तलपट पर प्रभाव डालती है और कुछ नहीं। निम्नलिखित उदाहरण दोनो तरह की गलतियो के हैं —

(अ) उन अशुद्धियो के उदाहरण जो तलपट के मेल पर प्रभाव नहीं डालतीं —

१. ३,५०० रु०, एक खरीदी हुई मोटर लॉरी का रोकड़ा भुगतान मोटर गाड़ी खाते में डैबिट करने की बजाय प्लांट व मशीनरी में डैबिट कर दिये गये।

२ ७५० रु० की बिक्री रामप्रसाद एण्ड कं० को डैबिट करने के, स्थान पर रामप्रसाद एण्ड ब्रॉदर्स को डेबिट कर दी गई।

३. प्राप्य-बिल पुस्तक का योग, ६,७५० रु० प्राप्य बिल खाते के स्थान पर देय बिल खाते में डैबिट कर दिया गया।

४. डूबत ऋण कोष की राशि ७५० रु० के स्थान पर गलती से ६५० रु० निश्चय की गई।

५. एक ऋण से प्राप्त हुवे २५० रु०, जो पिछले वर्ष डूबत ऋण में सम्मिलित कर लिये गये थे, ग्राहक के व्यक्तिगत खाते में क्रेडिट कर दिये गये।

६. एक टंकन यत्र (Type writer) का मूल्य चुकाने को लिखा गया ३९० रु० का एक चैक कार्यालय साज सामान खाते के स्थान पर कार्यालय खर्च खाता में डेबिट कर दिया गया।

(ब) उन अशुद्धियों के उदाहरण जो तलपट पर प्रभाव डालती है —

१. ३५० रु० का एक लेनदेन खाते मे क्रेडिट के स्थान पर डेबिट में खता दिया गया है। इस त्रुटि से तलपट का डेबिट का योग ७०० रु० से बढ जायगा।

२. ७०० रु० एक खाते मे क्रेडिट कर दिये गये हैं जोकि ७१० रु० होने चाहिये थे। इससे तलपट में १० रु० से क्रेडिट का योग कम हो जायगा।

३ विक्रय पुस्तक १०० रु० अधिक जोड़ी गई जिससे तलपट का क्रेडिट योग १०० रु० बढ जायगा।

४. विक्रय वापसी पुस्तक १० रु० कम जोड़ी है, जिसके परिणाम स्वरूप तलपट में डैबिट योग १० रु० कम हो जायगा।

५ एक खाते का डैबिट शेष ५६६ रु० के स्थान पर ४६६ रु० उद्धृत कर लिया गया है, जोकि तलपट में १०० रु० का अन्तर कर देगा व डैबिट-योग क्रेडिट-योग से १०० रु० कम हो जायगा।

६. एक लेनदार को दिये हुये ५६० रु० रोकड़ पुस्तक में तो ठीक लिख दिये गये हैं, परन्तु लेनदार के व्यक्तिगत खाते में नहीं लिखे गये, इससे तलपट का क्रेडिट-योग ५६० रु० अधिक हो जायगा।

उदाहरण ६५

३१ दिसम्बर १९५० को, तलपट बनाते समय लिपिक को पता लगा कि वह मिलता नहीं है। उसने तुरन्त ही पुस्तकों की प्रविष्टियाँ जाँचकर निम्न त्रुटियाँ खोज निकालीं .—

१. ए का १५० रु० की चैक रोकड़ पुस्तक में तो ठीक लिख दिया गया है, परन्तु ए के खाते में १०० रु० ही क्रेडिट हुये हैं।

२. बी द्वारा ८० रु० का फर्म को लौटाया हुआ माल क्रय वापसी पुस्तक में लिख लिया गया है, परन्तु व्यक्तिगत खाते में नहीं लिखा गया।

३. ३६५ रु० का सी को बिका माल विक्रय पुस्तक मे तो लिख लिया गया है, परन्तु केवल ३६० रु० से।

४. गोदाम निर्माण करने का १,२०० रु० के मूल्य का डी का बिल मरम्मत खाते चार्ज किया गया था।

५. ३०० रु० बीजक मूल्य का ई द्वारा लौटाया हुआ माल २५० रु० पर स्टॉक मे ले लिया गया, परन्तु उसका पुस्तकों में कोई लेखा नहीं किया गया था।

उपर्युक्त त्रुटियां में से कौनसी तलपट के योग में अन्तर का कारण हो सकती हैं, तथा कितनी राशि से योग में अन्तर होगा ?

हल :—

उपर्युक्त त्रुटियों का तलपट के शेष पर निम्न प्रभाव पड़ेगा .—

१. ए का खाता ५० रु० कम से क्रेडिट हुआ था, अत: तलपट का क्रेडिट स्तम्भ ५० रु० से कम होगा।

२ बी का खाता ८० रु० से क्रेडिट नहीं हुआ था, अतः तलपट का क्रेडिट स्तम्भ ८० रु० से कम होगा।

३. सी का खाता ५ रु० से कम डैबिट हुआ, है अत: तलपट का डैबिट स्तम्भ ५ रु० से कम होगा।

चौथी व पाँचवी त्रुटियों का तलपट पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उपर्युक्त त्रुटियों के कारण तलपट का डैबिट स्तम्भ क्रेडिट स्तम्भ से १२५ रु० बढ जायगा।

अशुद्धियों का अन्तिम खातों पर प्रभाव

(Effect of Errors on Final Accounts)

यह समझना बहुत ही महत्वपूर्ण है कि अशुद्धियों का हानि लाभ खाते पर और बैलेंस शीट पर क्या प्रभाव होता है और इन अशुद्धियों के सुधार से इन पर क्या असर होता है। अशुद्धि हानि-लाभ खाते पर उसके शुद्ध लाभ को उचित से कम या अधिक दिखलाकर अपना प्रभाव डालती है और बैलेंस-शीट पर सम्पत्ति या दायित्व की रकम कम या अधिक कर अपना प्रभाव दिखाती है। परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक अशुद्धि हानि-लाभ खाते और बैलेंस शीट दोनों पर ही प्रभाव डाले। एक अशुद्धि दोनों को प्रभावित करती है, दूसरी सिर्फ हानि लाभ खाते पर अपना प्रभाव डालती है और तीसरी सिर्फ बैलेंस-शीट पर ही अपना प्रभाव डालती है।

इन परिस्थितियों में अधिकतर [illegible] त्रुटियाँ होती हैं, [illegible] अशुद्ध [illegible] होता है और फिर इन अशुद्ध खातों का प्रभाव अन्तिम खातों पर होता है।

उदाहरण ६६

एक व्यापारी के लिपिक ने तलपट बनाकर अन्तिम खाते तैयार किये। परन्तु निम्नलिखित गलतियों का बाद में पता लगा :—

१ विक्रय पुस्तक के जोड़ १,००० रु० अधिक लगे हैं।
२. किराये से प्राप्त ५०० रु० किराया खाते में डैबिट कर दिये हैं।
३. स्मिथ से हिसाब के निपटारे मे प्राप्त हुये १४५ रु० विक्रय खाते में क्रेडिट कर दिये गये है।
४. १०० रु० मरम्मत का भुगतान १० रु० खताया गया है।
५. बेकार माल की बिक्री से प्राप्त हुये ४५ रु० खताये नहीं गये।
६ कार्यालय की सफाई के लिये दिये गये १५ रु० के स्थान पर २५ रु० लिखा गया है।
७. मोटर लॉरी की क्षति पूर्ति स्वरूप प्राप्त हुये ५५० रु० के स्थान पर ५१५ रु० लिखा गया है।

उपर्युक्त गलतियों का अन्तिम खातों पर क्या प्रभाव होगा ?

त्रुटियो का अन्तिम खातो पर प्रभाव

गलतियाँ	व्यापार व लाभ-हानि खाता	चिट्ठा
१	सकल लाभ व शुद्ध लाभ १,००० से बढ जायगा	१,००० से पूँजी बढ जायगी
२	शुद्ध लाभ १,००० से कम हो जायगा	१,००० से पूँजी कम हो जायगी
३	सकल लाभ व शुद्ध लाभ १४५ रु० से बढ जायगा	१४५ रु० से पूँजी व देनदार बढ जायेग
४	शुद्ध लाभ ६० रु० से बढ जायगा	६० रु० से पूँजी बढ जायगी
५	शुद्ध लाभ ४५ रु० से कम हो जायगा	४५ रु० से पूँजी कम हो जायगी
६	शुद्ध लाभ १० रु० से कम हो जायगा	१० रु० से पूँजी कम हो जायगी
७	शुद्ध लाभ ३५ रु० से कम हो जायगा	३५ रु० से पूँजी कम हो जायगी

सब गलतियों का प्रभाव यह होगा कि शुद्ध लाभ, पूँजी व देनदार १४५ रु० से बढ जायेंगे।

अशुद्धियों का स्थान पता लगाना (Location of Errors)

यदि तलपट का मेल नहीं बैठता हो तो यह मान लेना चाहिए कि कहीं पर गलतियाँ हो गई हैं, चाहे ये प्रारम्भिक बहियो मे हो, या खाता बही, या स्वयं तलपट मे हो। इनको मालूम करने के लिए शीघ्र कार्य करना चाहिए। कभी-कभी छोटी-छोटी अशुद्धियो पर ध्यान नही दिया जाता है, परन्तु यह सदैव याद रखना चाहिए कि यह थोड़ा सा अन्तर भी कई बड़ी-बड़ी अशुद्धियों का परिणाम हो सकता है। इसलिये चाहे जितना थोड़ा अन्तर तलपट मे हो, उसे मालूम करने के लिए फौरन कोशिश करनी चाहिए।

इस तरह की अशुद्धियो को खोज निकालने के लिए कोई निश्चित नियम नहीं है, परन्तु निम्नलिखित उपाय काम मे लाये जा सकते हैं :—

१. सर्व-प्रथम, तलपट का जोड़ दुबारा लगाना चाहिए और यह भी देखना चाहिए कि उसमें दी गई सब रकमे अपने ठीक पक्ष मे लिखी गई हैं या नहीं।

२ तब अशुद्धियो को निम्नलिखित सरल उपाय से मालूम करना चाहिए :—

(अ) प्रथम तो जो सही अन्तर है उसे मालूम करना चाहिये। उदाहरणार्थ, तलपट के नाम का योग ६७,२००) है और जमा का योग ६७,०००) है, तो अन्तर २००) होगा; अर्थात् नाम की तरफ २००) जमा की तरफ से अधिक हैं। इसलिए प्रथम तो खाता बही में २००) के किसी जमा शेष को देखना चाहिए, जो शायद भूल से तलपट मे न लिखा गया हो।

खाता बही से तलपट में शेष भेजने मे यदि कोई गल्ती हो तो उसे मालूम करना चाहिए।

उदाहरणार्थ, २,०००) का नाम शेष तलपट में २,२००) लिखा जा सकता है, या ६००) का कोई जमा शेष तलपट में ७००) ही लिखा जा सकता है।

प्रारम्भिक वहियों में २००) की जमा रकम देखनी चाहिए, सम्भव है कि वह रकम खताई न गई हो।

(ब) यदि तलपट में शेष भेजते समय नाम की रकम जमा या जमा की रकम नाम में लिख दी गई हो तो तलपट में इस रकम की दूनी रकम का अन्तर हो जाता है। इसलिए तलपट के अन्तर को दो से विभाजित कर देना चाहिए। ऊपर के उदाहरण में २००) अधिक डेबिट के अन्तर को दो से विभाजित करने पर १००) रहता है।

१००) की जमा प्रविष्टि मालूम करनी चाहिए जो गलती से नाम की तरफ खाता-वही में खता दी गई हो, और खाता वही में भी १००) का क्रेडिट बैलेंस मालूम करना चाहिए, क्योंकि यह भी तलपट में भूल से नाम की तरफ लिखा जा सकता है।

(स) कभी-कभी अंकों का स्थान-परिवर्तन होने से भी अशुद्धियाँ हो जाती हैं, जैसे, ७०५) की जगह ७५०) लिख दिया जावे। इस तरह अंकों के स्थान-परिवर्तन की अशुद्धियों में जो सही और गलत अङ्कों का अन्तर होता है वह ९ से विभाजित हो जाता है। इसलिए तलपट के अन्तर को ९ से विभाजित करना चाहिए और मालूम करना चाहिए कि कहीं यह गलती अङ्कों के स्थान-परिवर्तन से तो नहीं हुई।

३. यदि वह विशेष उपाय भी अशुद्धि की खोज करने में विफल रहे, तो निम्न तरह से अपने कार्य को परखना चाहिए :—

(अ) खाता वही के शेष निकालने (extraction of balances) की जांच करो।

(ब) प्रारम्भिक वहियों के जोड़ आदि जाँचो।

(स) प्रारम्भिक वहियों से खाता वही में खतौनियों की जाँच करो। उनकी राशियों में कोई त्रुटि तो नहीं तथा यह भी देखना चाहिए कि कहीं कोई व्यवहार किसी खाते की गलत तरफ तो नहीं खता दिया गया है।

इस तरह करते समय हरएक रकम पर एक चिह्न प्रारम्भिक वहियों में और एक खाता वही में लगा देना चाहिए। यह कार्य समाप्त हो जाने पर उन रकमों को देखना चाहिए जिन पर यह चिह्न नहीं लगे हैं। प्रारम्भिक वहियों में ये रकमें वे हैं जो खताई नहीं गई हैं, परन्तु यदि ये खाता वही में हैं तो इसका अर्थ है कि ये रकमें या तो दो बार खताई जा चुकी हैं, या ये खाता वही से सम्बन्धित ही नहीं हैं।

अशुद्धियों का सुधार

अन्तिम खाते तैयार करने से पहले, तलपट का मेल बैठाना अत्यन्त आवश्यक है। यदि तलपट का मेल नहीं बैठता है तो यह स्पष्ट है कि बहियों में गलतियाँ हैं। यदि ऐसा ही है तो बहियों को बड़ी सावधानी से देखना चाहिए जब तक सब गलतियाँ मालूम न हो जावें और सुधार न ली जावें। ये गलतियाँ या तो बहियों के बन्द करने से पहले या बाद में सुधारी जा सकती हैं।

१. बहियाँ बन्द करने से पहले :—व्यापारिक वर्ष के अन्त में यदि तलपट का मेल नहीं बैठे तो उन अशुद्धियों को, जिनके कारण तलपट नहीं मिल रहा है, खोजना चाहिए। जब वे अशुद्धियाँ मालूम हो जावें तो उनका सुधार बहियों के बन्द करने और अन्तिम खाते बनाने से पहले ही कर देना चाहिए।

२. बहियों के बन्द होने पर :—निम्नलिखित परिस्थितियों में अशुद्धियों का सुधार व्यापारिक वर्ष के अन्त होने पर भी किया जा सकता है—

(अ) [illegible]

न खोजी जा सकी हो तो तलपट का अन्तर एक भूल-चूक या उदरत खाता (Suspense Account or Difference in Books Account) मे डालकर तलपट का मेल कर दिया जाता है। यह उदरत खाता (Suspense a/c) बैलेंस-शीट मे या तो सम्पत्ति के रूप मे या ऋण के रूप मे दिखलाया जाता है। इस तरह की स्थिति मे जो अन्तिम खाते तैयार किये जाते है वे बिल्कुल ठीक नहीं कहे जा सकते, इसलिए इस ढग से खाते तब ही तैयार करने चाहिए, जब ऐसा करना अत्यन्त आवश्यक हो। इससे बही-खाते रखने वाले की योग्यता प्रतिबिम्बित होती है।

जब यह भूल-चूक (suspense) खाता खोला जाता है तो दूसरे वर्ष के शुरू मे उन अशुद्धियो को खोजा जावेगा। जब अशुद्धियाँ मालूम हो जावेगी तो उन्हे सुधार दिया जायगा और उदरत बन्द हो जावेगा।

(ब) किसी व्यापारिक अवधि की समाप्ति पर बनाया गया तलपट मिल भी सकता है और अन्तिम खाते भी तैयार किये जा सकते हैं, परन्तु बाद मे यह मालूम हो सकता है कि बहियो मे अशुद्धियाँ रह गई है। जब इस तरह से अशुद्धियाँ मालूम होती है तब वे खातो के बन्द होने के बाद भी सुधारी जा सकती हैं।

अशुद्धियाँ किस तरह सुधारी जाती हैं :— अशुद्धियो का सुधार उन्हे काट कर या मिटाकर नहीं करना चाहिए। यदि ऐसा किया जावेगा तो हिसाब विश्वसनीय और अदालत में मान्य नहीं होगा। इसलिए जहाँ तक सम्भव हो सके अंको को बदलना नहीं चाहिए। यह ढॅग तब ही काम मे लिया जा सकता है जबकि उस बही का जोड़ नहीं किया गया हो और खाता बही मे भी उन खातो का शेष नही निकाला गया हो। यदि कोई परिवर्तन किया गया हो तो मूल अंकों को इस तरह से काटना चाहिए कि वे अब भी पढ़े जा सके।

अशुद्धियो को सदैव प्रविष्टि या प्रविष्टियो द्वारा ही सुधारना चाहिए। यदि अशुद्धि किसी खाते मे एक तरफ ही (single sided) है तो एक ही प्रविष्टि (entry) की जावेगी और यदि यह दो खातो से सम्बन्धित (Double sided) है तो दोहरी प्रविष्टियाँ की जाती हैं।

एक पक्षीय अशुद्धि दो तरह से सुधारी जा सकती है :—(१) यदि सुधार बहियो के बन्द करने से पहले किया गया हो तो उससे सम्बन्धित खाते मे सीधी एक समायोजक प्रविष्टि करके सुधार किया जा सकता है, या (२) जर्नल प्रविष्टि द्वारा गलत हुये खाते के नाम या जमा लिखकर और उदरत (suspense) खाते के जमा या नाम लिखकर यह अशुद्धि सुधारी जा सकती है। उदाहरणार्थ ; बिक्री बही मे भूल से १००) अधिक जोड़ दिये गये हो तो यह अशुद्धि एक-पक्ष की है, क्योकि यह एक खाते को ही प्रभावित करती है, अर्थात् बिक्री खाते को जिसमे १००) अधिक जमा हो गये है। यह बिक्री-खाता या तो १००) नाम मे लिखकर ठीक किया जा सकता है या एक जर्नल प्रविष्टि (Journal entry) द्वारा बिक्री खाते नाम लिखकर और भूल-चूक (suspense) खाते के जमा कर और उसे खाता बही मे खतिया कर ठीक किया जा सकता है जब ये सब अशुद्धियाँ मालूम हो जावेगी तो यह भूल-चूक (suspense) खाता भी अपने आप बन्द हो जाएगा।

द्विपक्षीय अशुद्धियाँ सदैव जर्नल प्रविष्टि के द्वारा गलत खातो मे से एक के नाम और दूसरे के जमा करके सुधारी जाती है। उदाहरणार्थ हरनारायण से १००) रुपये प्राप्त हुए, परन्तु गलती से वे हरप्रसाद के खाते मे जमा कर दिये गये। यह द्विपक्षीय गलती है, क्योकि यह दो खातो को गलत कर रही है। एक जर्नल प्रविष्टि द्वारा हरप्रसाद के नाम लिखकर और हरनारायण के जमा करके इसका सुधार किया जावेगा। यह जर्नल प्रविष्टि खाता बही मे खता दी जावेगी।

तलपट की अशुद्धि ठीक करने के लिये की गई जर्नल प्रविष्ट सिर्फ भूल-चूक खाते मे ही खताई जाती है किसी अन्य खाते मे नही खताई जाती। उदाहरणार्थ, अब्दुलमजीद का ५००) का नाम

शेष तलपट मे भूल से जमा की तरफ रख दिया गया हो तो यह तलपट की गलती है। यदि यह बहियों के बन्द करने से पहले ज्ञात हो जाती है तो आसानी से तलपट मे परिवर्तन करके सुधारी जा सकती है। परन्तु यदि बहियाँ बन्द करने के बाद यह मालूम होती है तो उसे अब्दुलमजीद के खाते के नाम लिखकर और भूल-चूक (suspense) खाते के जमा कर सुधारा जावेगा। १,०००) की यह रकम सिर्फ भूल-चूक (suspense) खाते में ही खताई जावेगी अब्दुलमजीद के खाते मे नही, क्योकि उसका खाता तो पहले से ही ठीक है।

उदाहरण ६७

एक व्यापारिक संस्था की पुस्तकों में निम्न त्रुटियाँ पाई गईं :—

(अ) कार्यालय के नवीन फर्नीचर के लिये दिये गये २५७ रु० कार्यालय खर्च खाते में लिख लिये गये।

(ब) देनदारों को दिये हुये बट्टे का माषिक योग ७२० रु० ८ आ०, रोकड़ पुस्तक से बट्टे खाते के क्रेडिट में खता दिया गया है।

(स) राम को लौटाये हुये माल की प्रविष्टि क्रय वापिसी पुस्तक में बिक्री मूल्य ७५ रु० से कर दी गई है, जबकि माल का बीजक मूल्य ६० रु० था।

उपर्युक्त त्रुटियों को सुधारने के लिये आवश्यक प्रविष्टियाँ कीजिये। गलत मौलिक प्रविष्टियों को हटाये बिना जिस रूप में आप उचित समझें सुधार कीजिये।

हल :—

(अ) फर्नीचर खाते को डेबिट व कार्यालय खर्च खाते को क्रेडिट करके २५७ रु० की राशि से जोकि कार्यालय खर्च खाते में भूल से लिख दी गई थी जर्नल प्रविष्ट करो।

(ब) १,४४१ रु० से बट्टे खाते को डेबिट करो क्योंकि ७२० रु० ८ आ० ग्राहकों को दिये गये बट्टे का जोड़ भूल से डेबिट करने के स्थान पर क्रेडिट कर दिया गया है।

(स) १५ रु० से जर्नल प्रविष्टि में क्रय वापसी खाते को डेबिट व राम के खाते को क्रेडिट करो, क्योंकि उसे लौटाया हुआ कुछ माल ६० रु० के स्थान पर ७५ रु० लिख दिया गया है।

उदाहरण ६८

एक संस्था की पुस्तकों में निम्नलिखित त्रुटियाँ हुई :—

१. हार्टले को बेचे हुये माल का बीजक भेजा व विक्रय-पुस्तक में लिखकर उसके खाते को डेबिट किया। यह पता लगा कि बीजक का योग १० रु० कम लग गया था।

२. आर्थर से खरीदे हुए माल का बीजक, जिसमें २४ वस्तुओं के ६० रु० प्रति वस्तु के स्थान पर ६५ रु० प्रति वस्तु चार्ज किये गये हैं, क्रय पुस्तक में चढा दिया गया है व आर्थर को क्रेडिट कर दिया गया है। आर्थर से एक पत्र प्राप्त हुआ जिसमें त्रुटि की ओर ध्यान दिलाते हुये क्षमा माँगी गई व बीजक बदलने के लिये प्रार्थना की है। क्रय पुस्तक जोड़ी जा चुकी है और योग खता दिया गया है।

३. स्मिथ पर वाजिब १५० रु० अप्राप्य समझकर डूबत ऋण खाते अपलिखित कर दिया। तदनन्तर स्मिथ ने भुगतान कर दिया जिससे रोकड़ को डेबिट व स्मिथ को क्रेडिट कर दिया।

४. बर्टन को २०० रु० दिया और ५% बट्टा काट लिया। मामले को ठीक प्रकार लिख भी लिया। वास्तव में उसे केवल २% बट्टा ही प्राप्त करना था। बर्टन ने पत्र द्वारा इस पर ध्यान दिलाते हुए शेष को अगले विवरण में ले जाने को कहा।

आप उपर्युक्त विवरण से त्रुटियों में कैसे सुधार करेंगे ?

हल :—

त्रुटियों के सुधार के लिये निम्न प्रविष्टियाँ करनी होंगी।

जर्नल

		रु०	रु०
१	हार्टले	१०	
	विक्रय खाता		१०
	बीजक में कमी की त्रुटि का सुधार		
२	आर्थर	१२०	
	क्रय वापसी खाता		१२०
	बीजक में [illegible] के स्थान [illegible]		

३	स्मिथ डूबत ऋण कोष डूबत ऋण की प्राप्ति के लिये स्मिथ को क्रेडिट करने की त्रुटि का सुधार	१५०	१५०
४	बट्टा खाता वर्तन ३% के स्थान पर ५% बट्टा काट लेने की गलती का सुधार	२	२

उदाहरण ६९

३१ दिसम्बर १९-० को तलपट बनाते समय एक व्यापारी को पता लगा कि डैबिट शेष क्रेडिट से ५६९ रु० अधिक हैं। तदनन्तर निम्न लिखित त्रुटियाँ पाई गई :—

(अ) ५४ रु० का एक क्रेडिट शेष तलपट से छूट गया है।

(ब) एक देनदार से प्राप्त ५५ रु० का चैक रोकड़ पुस्तक में लिख लिया गया, परन्तु व्यक्तिगत खाते में ६५ रु० से लिखा गया।

(स) एक लेनदार से १७५ रु० के अलाउन्स की माँग की गई है और व्यक्तिगत खाते में लिख लिया गया है परन्तु दोहरी प्रविष्टि पूर्ण नहीं की।

(द) नवम्बर में प्राप्त बट्टा के योग के १८० रु०, बट्टे खाते के डैबिट में लिख दिये गये हैं।

उपर्युक्त त्रुटियों का संतुलन (Balancing) पर प्रभाव दिखलाते हुए एक विवरण बनाइये व बताइये कि सुधार करने के पश्चात् पुस्तक में कितना अन्तर शेष रहेगा ?

त्रुटियो के सुधार का शेषों पर प्रभाव दिखाने वाला विवरण

		डबिट रु०	क्रेडिट रु०
	तलपट में दिया हुआ अन्तर	५६९	
(अ)	तलपट में लिखने से भूला हुआ क्रेडिट शेष		५४
(ब)	५५ रु० रोकड़ा प्राप्ति के स्थान पर ६५ रु० लिखे जाने की त्रुटि को सुधारने के लिये एक देनदार के खाते को डैबिट किये जाने की राशि	१०	
(स)	लेनदार को डैबिट किया हुआ बट्टा जो कहीं और नहीं लिखा गया क्रय वापिसी पुस्तक में क्रेडिट किया गया		१७५
(द)	बट्टे खाते में क्रेडिट की जाने वाली १८० रु० की राशि जो उस खाते को क्रेडिट के स्थान पर डैबिट कर देने की त्रुटि सुधारने के लिये आवश्यक है		३६०
		५७९	५८९
	अत. अब भी रहने वाला अन्तर (क्रेडिट अधिक)	१०	—
		५८९	५८९

उदाहरण ७०

यह मानते हुये कि उदरत खाते में अन्तर लिख दिया गया है निम्न त्रुटियों को सुधारने के लिये प्रविष्टियाँ दीजिये ; तथा यह भी बताइये कि त्रुटियों का पता लगाने से पूर्व अन्तर कितना था :—

१. ब्राउन द्वारा दिये हुये १८४ रु० ४ आ० १८० रु० ४ आ० खताये गये।

२. स्मिथ को ५२ रु० की बिक्री खताई नहीं गई।

३. लेनदार जॉनसन का खाता क्रेडिट की ओर १० रु० अधिक जोड़ दिया गया है अत. उसका शेष इतनी राशि से अधिक उद्धृत हुआ।

४. ५० रु० छोटी रोकड़ का शेष तलपट के क्रेडिट मे लिखा है।

५. रॉबिन्सन के खाते का ७० रु० डैबिट शेष तलपट से छूट गया।

६. ३५ रु० का ब्रॉउन द्वारा लौटाया हुआ माल उसके नाम क्रेडिट कर दिया गया परन्तु विक्रय वापसी पुस्तक मे नहीं लिखा गया।

७. विक्रय पुस्तक का जोड़ १००) अधिक लग गया है।

८. रोकड़ पुस्तक का डैबिट की ओर का बट्टा स्तम्भ १० रु० से कम जोडा गया है।

जर्नल

		रु०	रु०
१	उदरत खाता ब्राउन ब्राउन से प्राप्त भुगतान कम रकम से खताया गया	४	४
२	स्मिथ उदरत खाता बिक्री नहीं लिखी गई	५२	५२
३	जौनसन उदरत खाता उसके खाते में अधिक जोड़ लगाने का समायोजन	१०	१०
४	फुटकर रोकड़ बही* उदरत खाता फुटकर रोकड़ बही का शेष गलती से तलपट की क्रेडिट में लिख दिया गया	१००	१००
५	रौबिन्सन* उदरत खाता उसका खाता तलपट में लिखना भूल गये	७०	७०
६	विक्रय वापिसी खाता उदरत खाता विक्रय वापिसी विक्रय-वापसी-पुस्तक में नहीं लिखी गई	३५	३५
७	विक्रय खाता उदरत खाता विक्रय पुस्तक अधिक जोड़ी गई	१००	१०
८	बट्टा खाता उदरत खाता रोकड़ पुस्तक में बट्टा (दिया) स्तम्भ का जोड़ कम लगा था	१०	१०

त्रुटियों के पता लगने से पूर्व तलपट में उदरत खाते का शेष १७२ रु० डैबिट की ओर होगा।

* चिन्हित प्रविष्टियाँ खताई नहीं जायेंगी क्योंकि यह केवल तलपट की त्रुटियाँ हैं।

उदाहरण ७१

एक मुनीम क्रेडिट से डैबिट ४६६ रु० १ आ० ४ पा० अधिक होने के कारण तलपट को मिलान में असफल रहा, तथा यह राशि उदरत खाते में लिख दी गई। अन्तिम खाते बनाने से पूर्व निम्नलिखित त्रुटियाँ पाई गईं :—

(अ) अन्तिम स्टॉक १०० रु० से कम जुड़ा था।

(ब) उचन्त ऋण से प्राप्त १५ रु० (जो पहले अपलिखित कर दिये गये थे) देनदार के व्यक्तिगत खाते में क्रेडिट तथा साथ ही उचन्त ऋण खाते में भी लिख दिये गये।

(स) प्राप्त किराया खाते का क्रेडिट शेष ५८३ रु०, तलपट में ५[illegible] रु० ३ आ० लिखा गया।

(द) १०० रु० माल की खरीद की एक नकल बीजक (Duplicate Invoice) पुस्तक में [illegible] लिख लिया गया।

(य) [illegible] खाते का डैबिट शेष १६४ रु० ८ आ० तलपट में क्रेडिट में लिख दिया गया।

(र) [illegible] पुस्तक की [illegible] शेष [illegible] रु० ९६ आ० ८ पा० [illegible] नहीं [illegible] था।

आवश्यक [illegible] उदरत खाता [illegible] हों, [illegible]।

[illegible]

उदरत खाता

	रु०	आ	पा.		रु०	आ	पा.
प्राप्त किराया खाता*	४७०	१३	-	शेष नी/ला	४६६	१	४
क्रय खाता	३००	—	—	देनदार खाता	१५	-	—
बट्टा खाता	२५८	१२	४	राम	३००	-	—
				टेलीफोन खाता*	२४८	८	-
	१,०२९	६	४		१,०२९	६	४

*चिह्नित त्रुटियों को खताने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह तलपट तक ही सीमित हैं।

शेष प्रविष्टियाँ उनसे सम्बन्धित खातों में खताई जायेंगी क्योंकि यह बही-खाता की त्रुटियाँ हैं।

उदाहरण ७२

एक मुनीम को पुस्तकों का शेष निकालते समय पता लगा कि तलपट में ८६ रु० २ आ० का अन्तर है। अन्तिम खाते बनाने के लिये एक नये खोले हुये उदरत खाते में यह अन्तर लिख दिया गया और उसे अगले वर्ष ले गये जबकि निम्न त्रुटियाँ पाई गई —

(अ) एक व्यापारी से ५ रु० ५ आ० का खरीदा हुआ माल उसके खाते में ५५ रु० से क्रेडिट किया गया।

(ब) २०० रु० का बैंक से लौटाया हुआ अस्वीकृत प्राप्य-बिल बैंक खाते में क्रेडिट व प्राप्य बिल खाते में डेबिट किया गया।

(स) विक्रय वापसी पुस्तक में लिखा हुआ १० रु० १० आ० का एक व्यवहार ग्राहक के खाते में, जिसने माल लौटाया था, डेबिट कर दिया गया।

(द) यंत्र की फुटकर मदों की बिक्री के २६० रु० विक्रय पुस्तक में लिख लिये गये, जिसका योग विक्रय खाते में खता दिया गया।

(य) एक ग्राहक के ६० रु० (जो उस पर वाजिब थे) देनदारों की सूची में नहीं लिये गये।

(फ) एक लेनदार से प्राप्त २ रु० ५ आ० बट्टा उसके खाते में तो लिख दिया गया परन्तु बट्टे खाते मे नहीं खताया गया।

उपर्युक्त त्रुटियों को सुधारने के लिये आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये व उदरत खाता बनाइये। उपर्युक्त त्रुटियों का पिछले वर्ष के लाभ-हानि खाते पर क्या प्रभाव होगा ?

जर्नल

		रु०	आ.	पा	रु०	आ.	पा.
(अ)	व्यापारी खाता	४९	११	-			
	उदरत खाता				४९	११	-
	५ रु० ५ आ० का खरीदा हुआ माल ५५ रु० से खताया गया						
(ब)	देनदार खाता	२००	—	—			
	प्रा/बि खाता				२००	—	—
	एक अस्वीकृत बिल प्रा/बि खाते में खताया गया						
(स)	उदरत खाता	२१	४	—			
	ग्राहक खाता				२१	४	—
	१० रु० १० आ० का लौटाया हुआ माल ग्राहक के खाते के डैबिट में खताया गया						
(द)	विक्रय खाता	२६०	—	—			
	यन्त्र खाता				२६०	—	—
	यत्र की बिक्री विक्रय खाते मे खताई गई						

(य)	देनदार	६०	—	—			
	उदरत खाता				६०	—	—
	देनदारों की सूची में एक शेष छूट गया						
(फ)	उदरत खाता	२	५	—			
	बट्टा खाता				२	५	—
	प्राप्त बट्टा, बट्टे खाते में नहीं खताया गया						

उदरत खाता

	रु०	आ	पा		रु०	आ	पा.
शेष नी/ला	८६	२	—	व्यापारी खाता	४९	११	—
ग्राहक खाता	२१	४	—	देनदार	६०	—	—
बट्टा खाता	२	५	—				
	१०९	११	—		१०९	११	—

उपर्युक्त त्रुटियों का पिछले वर्ष के लाभ-हानि खाते पर अन्तिम प्रभाव यह होगा कि या तो शुद्ध लाभ २५७ रु० ११ आ० से बढ़ जायगा अथवा शुद्ध हानि इतनी ही राशि से कम हो जायगी।

उदाहरण ७३

३१ दिसम्बर १९५० को, एक संस्था के अन्तिम खाते बनाते समय निम्नलिखित मामलों का समायोजन जर्नल प्रविष्टियों द्वारा किस प्रकार होना चाहिये :—

(अ) एक अपराधी रोकड़िया के हिसाब जाँचने पर पता लगा कि संस्था के देनदारों से ४,२५० रु० व ७३० रु० नकद बिक्री से प्राप्त हुए तथा उसने खरीदे हुए माल के ६५ रु० व लेनदारों को हिसाब पर ८२० रु० (३० रु० बट्टा घटा कर) दिये। इन व्यवहारों की पुस्तक में कोई प्रविष्टि नहीं की गई।

(ब) २,५०० रु का बिका हुआ माल, जिसे विक्रय लिख लिया गया, बाँधा व ग्राहक को बीजक भेजा। परन्तु माल रवाना करने से पहले ही स्टॉक सँभाला जाने लगा और वह स्टॉक (हस्ते) में शामिल कर लिया गया।

(स) १,००० रु० की लागत का विभिन्न कर्मचारियों के लिये माल खरीदा व 'क्रय' में सम्मिलित कर लिया। उतनी ही राशि कर्मचारियों के वेतन में से काटकर शेष भुगतान वेतन खाते में खता दिया गया।

(द) एक ग्राहक शोभाराम से प्राप्त हुआ २५० रु० का एक चैक अस्वीकृत हो गया। लौटाया हुआ चैक रोकड़ पुस्तक में तो ठीक लिख लिया गया, परन्तु अलाउन्स खाते में खता दिया गया।

(य) दिसम्बर १९५० में अधिकांश कर्मचारी अवकाश पर रहे व उन्होंने अपने वेतन पेशगी प्राप्त किये। अगले वर्ष के लिये ८५०) पेशगी होती है।

जर्नल

		रु०	रु०
(अ)	रोकड़ खाता	४,९८०	
	देनदार खाता		४,२५०
	विक्रय खाता		७३०
	रोकड़ प्राप्त हुई परन्तु रोकड़िया द्वारा नहीं लिखी गई		
	क्रय खाता	६५	
	विविध लेनदार खाता	८२०	
	रोकड़ खाता		८८५
	रोकड़ दी परन्तु लिखी नहीं गई		
	विविध लेनदार खाता	३०	
	बट्टा खाता		३०
	[illegible]		

	रोकड़िया खाता रोकड़ खाता रोकड़िया के पास नकद	४,०६५	४,०६५
(ब)	विक्रय खाता विविध देनदार खाता माल नहीं भेजा परन्तु बिक्री लिख ली गई	२,५००	२,५००
(स)	वेतन खाता क्रय खाता कर्मचारियों के लिये खरीदा हुआ माल जो क्रय में सम्मिलित है तथा जो उनके वेतन में से काट लिया गया है परन्तु लेखा शुद्ध वेतन का किया है	१,०००	१,०००
(द)	शोभाराम खाता अलाउन्स खाता अस्वीकृत चैक गलती से अलाउन्स खाते में डैबिट कर दिया।	२५०	२५०
(य)	पूर्वदत्त वेतन खाता वेतन खाता वेतन पेशगी दिया	८५०	८५०

उदाहरण ७४

३० जून १९५१ को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये आशाराम एण्ड सन्स के खातों में निम्नलिखित त्रुटियाँ पाई गईं —

१. एक भवन निर्माणकर्त्ता का एक छोटे से शेड बनाने का २,७०० रु० का एक बिल मरम्मत खाते में डैबिट कर दिया था।
२. रहीम बक्स एण्ड क० से प्राप्त ३०० रु० का एक चैक अस्वीकृत होगया व अलाउन्स खाते डैबिट किया।
३. चाँदमल ब्रादर्स द्वारा लौटाया हुआ १५० रु० का माल स्टॉक रूम में ले जाया गया, परन्तु पुस्तक में कोई प्रविष्टि नहीं की गई।
४. ५६७ रु० यंत्र की मरम्मत कल व यंत्र खाते से चार्ज की गई थी।
५. यंत्र की वृद्धि (additions) के लिये संस्था के कर्मचारी को ५५० रु० मजदूरी दी व मजदूरी खाते खताई।
६. लालाराम से प्राप्त ७५ रु० का एक चैक टीकाराम के खाते में क्रेडिट कर दिया व बैंक खाते के स्थान पर रोकड़ खाते में डैबिट कर दिया।
७. व्यापारी द्वारा निकाली हुई १०० रु० की राशि आवागमन खर्च खाते में डैबिट कर दी गई।

उपर्युक्त त्रुटियों को सुधारने के लिये आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये तथा इन त्रुटियों का अलग-अलग व सामूहिक प्रभाव सकल लाभ, शुद्ध लाभ, व चिट्ठे पर क्या पड़ेगा स्पष्ट रूप से समझाइये।

कौनसी त्रुटियाँ तलपट पर प्रभाव डालेंगी? कारण सहित लिखिये।

जर्नल

		रु०	रु०
१	भवन खाता मरम्मत खाता भूल से पूँजी व्यय मरम्मत से चार्ज हो गया	२,७००	२,७००
२	रहीम बक्स एण्ड कं० अलाउन्स खाता भूल से अस्वीकृत चैक अलाउन्स खाते में डैबिट कर दिया था	३००	३००

३	विक्रय-वापिसी खाता	१५०	
	चाँदमल ब्रादर्स		१५०
	वापिसी बिक्री का कोई लेखा नहीं हुआ		
४	मरम्मत खाता	५६७	
	कल व यंत्र खाता		५६७
	मरम्मत गलती से कल व यंत्र से चार्ज कर ली गई		
५	कल व यंत्र खाता	५५०	
	मजदूरी खाता		५५०
	गलती से पूँजी व्यय मजदूरी खाते में डैबिट कर दिया था		
६	टीकाराम	७५	
	लालाराम		७५
	लालाराम के स्थान पर टीकाराम क्रेडिट कर दिये गये		
	बैंक खाता	७५	
	रोकड़ खाता		७५
	गलती से रोकड़ खाता, बैंक खाते के स्थान पर डैबिट होगया		
७	आहरण खाता	१००	
	आवागमन खर्च खाता		१००
	गलती से आहरण, आवागमन खर्च खाते से चार्ज कर लिया गया		

उपर्युक्त त्रुटियों का सकल व शुद्ध लाभ पर अलग-अलग प्रभाव निम्न होगा :—

१. सकल लाभ प्रभावित नहीं होगा, परन्तु शुद्ध लाभ २,७०० रु० से कम हो जायगा।
२. सकल लाभ प्रभावित नहीं होगा, परन्तु शुद्ध लाभ ३०० रु० से कम हो जायगा।
३. सकल व शुद्ध लाभ दोनों १५० रु० से बढ़ जायेंगे।
४ सकल लाभ प्रभावित नहीं होगा, परन्तु शुद्ध लाभ ५६७ रु० से बढ़ जायगा।
५. सकल व शुद्ध लाभ दोनों ५५० रु० से कम हो जायेंगे।
६. सकल व शुद्ध लाभ दोनों पर कोई प्रभाव नहीं होगा।
७, सकल लाभ प्रभावित नहीं होगा, परन्तु शुद्ध लाभ १०० रु० से कम हो जायगा।

उपर्युक्त त्रुटियों का सामूहिक प्रभाव यह होगा कि सकल लाभ ३०० रु० से व शुद्ध लाभ २,६३३ रु० से कम हो जायगा।

इन त्रुटियों के परिणामस्वरूप चिट्ठे का योग २,६३३ रु० कम हो जायगा।

उपर्युक्त में से कोई भी त्रुटि तलपट पर प्रभाव नहीं डालेगी। १,२,४,५ व ७वीं त्रुटियाँ सिद्धान्त की अशुद्धियाँ हैं; त्रुटि ३ भूल अशुद्धि है; जब कि त्रुटि ६ ठीक और परन्तु गलत खातों में लगाने की त्रुटि है।

प्रश्न

१. तलपट कौनसी अशुद्धियों पर प्रकाश डालता है तथा कौनसी अशुद्धियों को बताने में असमर्थ रहता है?

२. [illegible] कि [illegible] १५६ रु० १२ आ० अधिक है। [illegible]?

३. [illegible] अशुद्धियों को [illegible] में बांट सकते हैं? प्रत्येक के दो उदाहरण दो।

४. [illegible]

७. यदि आपको पता लगे कि व्यापार के अन्त में आपका बनाया हुआ तलपट नहीं मिलता तो आप क्या करेंगे ?

८. ३१ दिसम्बर १६५० को एक व्यापार की पुस्तकों से लिया गया तलपट मिल गया था और जो अन्तिम खाते बनाये गये उनसे २७,८७० रु० का वास्तविक लाभ निकलता था। तदनंतर निम्न त्रुटियाँ पाई गईं —

(अ) २५० रु० का इस्माइल को बेचा हुआ माल, जो विक्रय पुस्तक में तो ठीक लिख लिया गया था, उसके खाते में केवल ५० रु० से डैबिट किया।

(ब) १,२५० रु० का खरीदा हुआ इजिन क्रय खाते मे खता दिया गया।

(स) क्रय पुस्तक के तीन पृष्ठों में क्रमशः १०० रु०, २०० रु० व १०० रु० अधिक जोड़ दिये हैं।

(द) विक्रय वापिसी पुस्तक के एक पृष्ठ का योग (६६८ रु०) अगले पृष्ठ पर केवल ७६८ रु० ले जाया गया।

उपर्युक्त त्रुटियों का सुधार व १६५० के लाभ का समायोजन किस प्रकार करोगे ?

उत्तर :—समायोजित लाभ २६,३२० रु०।

६. ३ जून १६५१ को समाप्त हुये वर्ष के लिये एक संस्था के कर्मचारियों की निम्नलिखित त्रुटियाँ पाई गई :—

(अ) १८ फरवरी १६५१ को २,५०० रु० एक गोदाम में वृद्धि (extension of godown) कराने के लिये व्यय हुये व जर्नल में मरम्मत खाते के नाम डैबिट कर दिये तथा उसी खाते में खता दिये गये।

(ब) १५ मार्च १६५१ को संस्था के एक क्लर्क को ६० रु० वेतन का शेष देकर नौकरी से हटा दिया गया तथा यह राशि उसके व्यक्तिगत खाते में डैबिट कर दी गयी।

(स) १० अप्रेल १६५१ को, ७५ रु० का नकद माल खरीदा, परन्तु राशि रोकड़ पुस्तक के बट्टा स्तम्भ में लिख दी गई।

(द) १५ जून १६५१ को, असगर एण्ड क० ने ३५० रु० का माल लौटाया जिसे स्टॉक में ले लिया परन्तु वापिसी की पुस्तकों में कोई प्रविष्टि नहीं की गई।

आप किन प्रविष्टियों द्वारा उपर्युक्त त्रुटियों को सुधारेंगे ?

१० एक मुनीम अपनी बहियों का प्रति माह समतुलन (Balance) करता है और यदि किसी समय बहियों का मिलान नहीं होता तो वह थोड़े समय के लिये उस अन्तर को उदरत खाता (suspense A/c) में लिख देता है। ३१ दिसम्बर १६५० को बहियाँ समतुलित (Balance) की गई है, परन्तु ३१ जनवरी १६५१ को १७२ रु० ५ आ० का अधिक डैबिट था अतः इस राशि से उदरत खाते को क्रेडिट कर दिया गया। जनवरी १६५१ में अन्तर के निम्न कारण पता लगे :—

(अ) १८ रु० १५ आ० का ए को दिया हुआ बट्टा उसके खाते में क्रेडिट कर दिया गया, परन्तु और कोई प्रविष्टि नहीं की गई।

(ब) भुगतान की हुई मजदूरी, मजदूरी खाते में १,१७३ रु० १५ रु० आना के स्थान पर १,३७३ रु० १५ आ० खता दी गई।

(स) ३१ जनवरी १६५१ को लेनदारों की सूची में शेष चढाते समय ७१ रु० ४ आ० एक लेनदार का शेष बिल्कुल भुला दिया गया।

(द) शेष अन्तर विक्रय पुस्तक में गलत जोड़ने (miscast) के कारण था।

जर्नल प्रविष्टियों द्वारा आवश्यक सुधार करते हुये विभिन्न प्रभावित खातों का समायोजन कीजिये।

११. एक संस्था के तलपट न मिलने के कारण उदरत खाता खोला गया। तदनन्तर जाँच करने पर निम्न त्रुटियाँ पाई गई :—

(अ) विक्रय पुस्तक के जोड़ १०० रु० कम लगे। (under cast)

(ब) एक विक्रय व्यवहार जॉनसन एण्ड क० के खाते में ५०१ रु० ६ आ० के स्थान पर ५०० रु० १ आ० ६ पा० खताया गया था।

(स) एक क्रय व्यवहार चैरी एण्ड चैरी के खाते में १८० रु० ५ आ० के स्थान पर १८० रु० खताया गया था।

(द) १५० रु० की बिक्री गलती से विक्रय वापिसी पुस्तक में लिख दी गई, परन्तु ग्राहक के खाते में ठीक डैबिट की गई।

उपर्युक्त त्रुटियों को सुधारने के लिये आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये।

१२. ३१ दिसम्बर १६५० को, एक संस्था का मुनीम तलपट का मिलान करने में असफल रहा, क्रेडिट

शेष डेबिट से अधिक होने के कारण थोड़े समय के लिये उदरत खाता खोला गया। अन्त में निम्न त्रुटियाँ पाई गईं:—

(अ) खाता बही में दिखाये गये १६ रु० ११ आ० ६ पा० का दायित्व तलपट में सम्मिलित नहीं किया गया था।

(ब) नवम्बर की विक्रय-पुस्तक में १,०७६ रु० १ आ० ६ पा० जोड़ लगने के स्थान पर १,०८६ रु० १ आ० ६ पा० जोड लगा था।

(स) ५० रु० १ आ० का ७ सितम्बर १९५० को लिखा हुआ मजदूरी का एक चैक रोकड़ पुस्तक में ठीक लिख दिया गया, परन्तु मजदूरी खाते में ५० रु० ११ आ० से खताया गया था।

(द) १७५ रु० ६ आ० ६ पा० की बिक्री विक्रय-पुस्तक में लिख दी गई, परन्तु ग्राहक के खाते में नहीं खताई गई थी।

मुनीम द्वारा खोला हुआ उदरत खाता बनाओ तथा वह समायोजन जो आप पुस्तकें बन्द करने के लिये आवश्यक समझते हों, करो।

उत्तर: उदरत खाते का शेष (क्रे०) १६५ रु० १ आ०।

१३. एक मुनीम को तलपट बनाते समय पता लगा कि उसके पास डेबिट में ४१ रु० १० आ० ८ पा० अधिक बचते हैं। अपनी पुस्तकों को बन्द करने के हेतु उसने इस अंतर का एक नये उदरत खाते में, जो अगले वर्ष में ले जाया गया है, लेखा कर दिया। अगले वर्ष उसे पता लगा कि:—

(अ) ८३ रु० ६ आ० ११ पा० का एक क्रेडिट पद (Item) एक व्यक्तिगत खाते में ३८ रु० ११ आ० ६ पा० से डेबिट कर दिया गया है।

(ब) फिक्चर्स के लिये ह्रास की ६२ रु० १० आने की राशि ह्रास खाते में नहीं खताई गई।

(स) फर्नीचर खरीदने के १,००० रु० क्रय खाते से चार्ज कर लिये गये।

(द) एक ग्राहक को १५ रु० ४ आ० ६ पा० का दिया हुआ बट्टा उसके खाते में १४ रु० ५ आ० ६ पा० से क्रेडिट किया गया।

(य) विक्रय वापिसी पुस्तक का योग १ रु० कम लगाया गया है।

(फ) ६८ रु० की बिक्री विक्रय खाते में ८६ रु० से खताई गई।

उपर्युक्त त्रुटियों को सुधारने के लिये जर्नल प्रविष्टियों व उदरत खाता बनाइये तथा यह भी बताइये कि इन सुधार प्रविष्टियों का लाभ-हानि खाते पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

उत्तर: लाभ ६१८ रु० ६ आ० से बढ़ जायगा, उदरत खाते का योग १२३ रु० ४ आ० ८ पा०

१४. एक मुनीम को पता लगा कि उसका तलपट १२० रु० ३ आ० ६ पा० से नहीं मिलता। उसने इस राशि से उदरत खाते को अस्थायी रूप से डेबिट कर दिया। पुस्तकों की जाँच करने पर निम्नलिखित त्रुटियाँ पाई गईं:—

१. ५५ रु० १ आ० ६ पा०, विक्रय वापिसी पुस्तक का योग क्रय वापिसी पुस्तक के क्रेडिट में खता दिया गया है।

२. जे० जॉन के खाते का क्रेडिट योग १० रु० से अधिक जोड़ लिया गया।

३. ७५ रु० जोकि डूबत ऋण लिख दिये गये थे डूबत ऋण खाते में डेबिट नहीं किये गये।

४. [illegible] से प्राप्त १८ रु० ८ आ० ४ पा० रोकड़ पुस्तक में ठीक लिख लिये गये, परन्तु व्यक्तिगत खाते में ४ रु० ८ आ० ४ पा० खताये गये।

५. विक्रय पुस्तक ५ रु० कम जोड़ी गई है।

जर्नल प्रविष्टियों द्वारा ये त्रुटियाँ किस प्रकार ठीक की जा सकती हैं और उदरत खाता किस प्रकार बन्द होगा?

उत्तर: उदरत खाते का योग १२५ रु० ३ आ० ६ पा०।

१५. ३१ दिसम्बर १९५१ को एक मुनीम को पता लगा कि तलपट का डेबिट योग क्रेडिट योग से [illegible] रु० [illegible] ६ पा० अधिक है। उसने इस अन्तर को नये उदरत खाते के क्रेडिट में डालकर पुस्तकें बन्द कर दीं। अगले वर्ष [illegible] त्रुटियाँ पता लगीं:—

(अ) [illegible]

(ब) [illegible]

(स) [illegible]

(द) [illegible]

(य) [illegible]

(फ) [illegible]

सशोधक प्रविष्टियाँ कीजिये व उदरत खाता बनाइये। यदि वर्ष के अन्त में हानि लाभ खाता ७,८५६ रु० ६ पा० का वास्तविक लाभ प्रकट करे, तो इन प्रविष्टियों का उस पर क्या प्रभाव होगा ?

उत्तर: उदरत खाते का योग ६६४ रु०; वास्तविक लाभ ७,७७० रु० ६ पा०।

१६. एक संस्था के अन्तिम खातों में ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ २१,६५० रु० व पुस्तकों का अन्तर १,३६३ रु० था जोकि उदरत खाते में क्रेडिट कर दिया है। तदनन्तर निम्न त्रुटियाँ पाई गई :—

(अ) वर्ष के अन्त में स्टॉक १०६ रु० कम जोड़ा गया।
(ब) बैंक के खर्चे (२० रु० ८ आ०) विविध खर्च खाते में क्रेडिट कर दिये गये परन्तु बैंक के खाते मे कोई प्रविष्टि नहीं की गई।
(स) ३० दिसम्बर १९५० को ५७५ रु० का विक्रय विक्रय-पुस्तक द्वारा विक्रय खाते में क्रेडिट किया, परन्तु बेचे हुये माल को ग्राहक के पास न भेजने के कारण ७५५ रु० अन्तिम स्टॉक में सम्मिलित कर लिये गए।
(द) ए नामक दलाल से १,२५८ रु० का खरीदा हुआ माल क्रय पुस्तक में ठीक लिख लिया गया, परन्तु उसके खाते में १२५ रु० ८ आ० खताये गये।
(य) मशीनरी का ह्रास (२५० रु०) व्यापारी के पूँजी खाते में डैबिट किया गया।

उदरत खाता बनाइये व लाभ-हानि खाता बनाकर शुद्ध लाभ की सही रकम निकालिये।

उत्तर :—उदरत खाते का योग १,३८३ रु० ८ आ०, शुद्ध लाभ २०,७१३ रु०

१७. एक व्यापारी के हानि-लाभ खाते में (३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये) २७,५०० रु० का शुद्ध लाभ था। उसके व्यापार से संबधित निम्न सूचनाओं की, लाभ-हानि खाता बनाते समय उपेक्षा कर दी गई :—

(अ) ३१ दिसम्बर १९५० को स्टॉक का मूल्य १,००० रु० अधिक लिख गया क्योंकि स्टॉक सूचियों में गलत रकमे चढ गई थीं।
(ब) ४,५०० रु० के वेतन व मजदूरी अदत्त थीं।
(स) १,००० रु० कल व यत्र के चालू खर्चे पूंजीगत मान लिये गए।
(द) ५,००० की राशि का एक व्यापारी का दावा विवाद-ग्रस्त था और ऐसा अनुमान था कि उसे २,००० रु० देने पड़ेगे।
(य) विनियोगों का अर्जित (Accrued) व्याज १,००० रु०।

व्यापारी के जर्नल में आवश्यक समायोजन प्रविष्टियाँ कीजिये व सशोधित हानि-लाभ खाता बनाइये।

उत्तर :—सशोधित शुद्ध लाभ २०,००० रु०।

अध्याय—१३

अन्तिम खातों पर विशेष बातें (More about Final Accounts)

यह तो हम पहले से ही जानते है कि व्यापारिक वर्ष के अन्त में अन्तिम खाते कैसे तैयार किये जाते हैं। इस अध्याय मे हमे व्यापार एवं हानि-लाभ खाते और बैलेंस-शीट के सम्बन्ध मे कुछ और अधिक ज्ञात होगा।

नवे अध्याय मे प्रारम्भिक और अन्तिम तलपट का अन्तर समझाया गया था और यह भी बतलाया गया था कि अन्तिम हिसाब खाते अन्तिम तलपट से ही तैयार करने चाहिएँ। इस उद्देश्य के लिये, अन्तिम तलपट की हर एक रकम पर अलग-अलग अक्षर लिखकर यह निश्चित कर देना चाहिये कि कौनसी रकम व्यापार खाते, हानि-लाभ खाते तथा बैलेंस-शीट मे ले जानी चाहिये। जो रकमें व्यापार खाते की हों उन पर 'व्या', और जो हानि-लाभ खाते की हो उन पर 'ह'; और जो बैलेंस-शीट की हो उन पर 'ब' लिख देना चाहिये। इस तरह से अन्तिम खातो को तैयार करना जरा सरल हो जायगा।

(१) व्यापार खाता (Trading Account)

व्यापार खाता वास्तव में कोई अलग खाता नहीं है। यह हानि-लाभ खाते का प्रथम विभाग होता है। व्यापार खाता व्यापार का कच्चा लाभ या हानि मालूम करने के लिये तैयार किया जाता है। यदि यह कच्चा लाभ या हानि मालूम नहीं करना हो तो इसे तैयार करने की कोई आवश्यकता नहीं है। बहुत से व्यापारी इसे तैयार नहीं करते और न कच्चा लाभ या हानि ही मालूम करते हैं। वे सिर्फ एक हानि-लाभ खाता वास्तविक मुनाफा या हानि मालूम करने के लिये बनाते हैं।

व्यापार खाता एक बहुत उपयोगी कार्य पूरा करता है और इसके निम्नलिखित विशेष लाभ हैं :—

१ बहुधा व्यापारी अपने माल का विक्रय-मूल्य निर्धारित करते समय लागत का कुछ प्रतिशत लाभ के रूप मे लगा देता है और व्यापार खाता तैयार करके वह जान सकता है कि यह विचारा हुआ लाभ उसको हुआ या नहीं।

२. यदि यह कच्चा लाभ विचार किये हुए लाभ से कम है तो इसके क्या कारण थे ?

३. यदि लाभ विचार किये हुए लाभ से अधिक है तो इसे स्थायी करने के उपाय सोचे जा सकते हैं।

४. यदि व्यापार खाते से ही हानि हो गई है तो इस तरह के व्यापार को चलाना ही व्यर्थ है। ऐसी स्थिति में तो व्यापार तब तक बन्द कर देना चाहिये जब तक व्यापार की स्थिति सुधर न जावे, नहीं तो अधिक हानि होने की सम्भावना है।

५ व्यापार खाते से जो सबसे महत्वपूर्ण सूचना मिलती है वह यह है कि लाभ कुल बिक्री का कितने प्रतिशत रहा। एक वर्ष का यह लाभ प्रतिशत दूसरे वर्षों के लाभ प्रतिशतों से मिलाया जा सकता है और यदि इसमें विशेष अन्तर होता है तो इसके कारणों का अध्ययन किया जा सकता है। यह लाभ प्रतिशत स्टॉक का मूल्य निर्धारित करने तथा इसकी यथार्थता जानने के लिये भी बहुत उपयुक्त सिद्ध होता है

व्यापार खाते की कलमें

(Items appearing in Trading Account)

यदि एक वर्ष के कुल बिक्री के लाभ-प्रतिशत से दूसरे वर्ष के कुल बिक्री के लाभ-प्रतिशत की तुलना करनी हो तो व्यापार खाता भी हर साल एक ही निश्चित आधार पर तैयार किया जाना चाहिये। यदि कुछ खर्चे एक साल व्यापार खाते के नाम लिख दिये जावे और दूसरे साल हानि-लाभ खाते के, तो दोनो सालो के लाभ-प्रतिशत की तुलना ठीक नहीं हो सकती, क्योकि कच्चा लाभ दोनो वर्ष भिन्न-भिन्न तरीको से निकाला गया है। एक प्रकार की वस्तुओ की ही तुलना की जा सकती है।

१. स्टॉक —माल तैयार करने वाले व्यापार मे नाना प्रकार के माल के स्टॉक होते हैं। (अ) पक्का माल तैयार करने के लिये काम मे आने वाले कच्चे माल का स्टॉक, (ब) अर्द्ध-तैयार माल का स्टॉक, यानी वह सामान जो न तो बिल्कुल कच्चा अर्थात् प्रारम्भिक अवस्था मे ही है और न पक्का अर्थात् पूर्णतया तैयार अवस्था मे है, (स) पक्के माल का स्टॉक या बिक्री के लिये तैयार माल। हमारे देश मे साधारणतया अर्द्ध-तैयार माल के स्टॉक को अलग दिखाने की परिपाटी नहीं है, इस प्रकार का माल बहुधा कच्चे माल के स्टॉक में ही सम्मिलित कर दिया जाता है। इस प्रकार माल तैयार करने वाले व्यापार के स्टॉक को दो वर्गों में रखा जाता है.—कच्चे माल का स्टॉक और पक्के (तयार) माल का स्टॉक। यथा, आटे की मिल की कम्पनी के स्टॉक मे—गेहूँ का स्टॉक और आटे का स्टॉक होगा—रूई मिल की कम्पनी के स्टॉक मे—रूई का स्टॉक और सूत व कपड़े का स्टॉक होगा।

माल के स्टॉक और स्टोर्स के स्टॉक के भेद को न भूलना चाहिये। स्टोर्स मे वे चीजे आती हैं जो व्यापार मे ही काम मे आती हैं और फिर बेची नहीं जाती। जैसे—कोयला, तरल ईंधन, पैकिंग का सामान, साफ करने का सामान, विज्ञापन का सामान, रासायनिक पदार्थ, मशीन के अतिरिक्त पुर्जे इत्यादि। स्टोर्स के रूप मे काम मे लाया हुआ धन प्रत्यक्ष खर्चे के अन्तर्गत आता है और व्यापार खाते के नाम लिखा जाना चाहिये।

२. क्रय —यह शब्द उस माल के लिये जो दुबारा बेचने के लिये खरीदा गया है या उस कच्चे माल के लिये जो तैयार माल बनाने के लिये होता है काम मे आता है। स्टोर्स अधिकतर क्रय मे सम्मिलित नहीं किये जाते हैं।

इस क्रय की रकम से क्रय-वापिसी की रकम कम करके बाकी रकम व्यापार खाते के नाम लिख दी जाती है। यह घटोत्तरी व्यापार खाते मे दिखलाई और नहीं भी दिखलाई जा सकती है। जब माल क्रय किये हुए मूल्य पर दे दिया जाता है—उदाहरणार्थ, जब स्वामी अपने व्यक्तिगत उपयोग के लिये माल ले, मजदूरो को लागत कीमत पर बेच दे, दान में दे दे या मुफ्त मे नमूने के रूप मे वितरण कर दे तो इसे विक्रय-खाते मे जमा नहीं करना चाहिये, क्योंकि विक्रय-खाते मे सिर्फ वही माल जो बिक्री की कीमतो पर बेचा गया हो लिखा जाता है। इसीलिये इस तरह का माल क्रय-खाते में जमा करना चाहिये। यदि यह माल बिक्री-खाते मे जमा किया जावेगा तो बिक्री पर निकाला हुआ लाभ प्रतिशत ठीक न रहेगा।

जब माल खरीदा जाता है तो केवल उसकी कीमत ही नहीं बल्कि उस माल से सम्बन्धित और भी सब खर्चे क्रय खाते के नाम लिख देने चाहिएँ क्योकि ये खर्चे भी खरीदे हुए माल के एक विशेष अंग हैं। ऐसे खर्चों मे गाड़ी भाड़ा, जहाज भाड़ा, बीमा आदि सम्मिलित होते हैं। कभी-कभी ये खर्चे क्रय-खाते के नाम लिखने के बजाय अलग-अलग खातो मे भी लिख दिये जाते हैं। उस स्थिति में ये सब खर्चो के खाते व्यापार खाते मे से काट दिये जाते हैं।

३. प्रत्यक्ष खर्चे :—वे तमाम खर्चे जो माल को बेचने योग्य बनाने में खर्च होते है प्रत्यक्ष खर्चे (Direct Expenses) कहलाते हैं और ये लागत के ही एक विशेष भाग माने जाते हैं। इसलिये

ये सब खर्चे व्यापार खाते के नाम लिख देने चाहिएँ। कभी-कभी विद्यार्थियों के लिये यह निश्चय करना कठिन हो जाता है कि कौनसा खर्चा व्यापार खाते के नाम लिखें और कौनसा हानि-लाभ खाते के। इसके लिये कोई विशेष नियम नहीं है, परन्तु वे तमाम खर्चे जो माल को बेचने योग्य बनाने में खर्च होते हैं व्यापार खाते के नाम लिखे जाते हैं और अन्य खर्चे हानि-लाभ खाते के नाम लिखे जाते हैं।

यदि किसी खर्चे की प्रकृति ठीक तरह से नहीं जानी जा सकती है तो इसे व्यापार खाते या हानि-लाभ खाते में से किसी एक के नाम लिखा जा सकता है, परन्तु यह परमावश्यक है कि हर साल व्यापार खाते एक निश्चित आधार से ही तैयार किये जाये।

जहाज और गाड़ी-भाड़ा —माल के मँगाने व भेजने पर जो भाड़ा लगता है वह जहाज, रेल, गाड़ी आदि का किराया होता है। जो भाड़ा माल के मँगाने पर खर्च होता है वह व्यापार खाते के नाम लिखा जाता है और जो माल को बाहर भेजने पर लगता है वह हानि-लाभ खाते के नाम लिखा जाता है।

बीमा :—जब विदेशों से समुद्री मार्ग से माल मँगाया जाता है या रेल से मँगाया जाता है तो माल को मार्ग की जोखिमों से बीमा करा लेना आवश्यक है। यह मार्ग-बीमा कहलाता है। इस पर जो खर्चा होता है वह व्यापार खाते के नाम लिखा जाता है। परन्तु यदि बेचे हुए माल का बीमा कराया जाता है तो यह खर्च हानि लाभ खाते के नाम लिखा जाता है, क्योंकि यह माल बेचने का खर्चा है।

व्यापार-कर :—यह कर कस्टम कर, घरेलू उत्पादन कर, चुंगी आदि का हो सकता है। जब माल आयात-निर्यात किया जाता है तो कस्टम-कर देना पड़ता है। घरेलू उत्पादन कर वह कर है जो देश में उत्पादित वस्तुओं पर लगता है, जैसे—चीनी, दियासलाई, शराब, अफीम आदि पर कर लगता है। चुङ्गी वह कर है जो स्थानीय म्युनिसिपल बोर्ड, बाहर से शहर के अन्दर प्रयोग अथवा विक्रय के लिये आने वाले माल पर लगाता है। माल खरीदने पर जितना भी कर लगता है वह व्यापार खाते के नाम लिखा जाता है और जो बेचे हुए माल पर लगता है उसे हानि-लाभ खाते के नाम लिखा जाता है।

ठेला-भाड़ा :—ठेला या गाड़ी आदि का भाड़ा प्रत्यक्ष खर्च हैं, इसलिये व्यापार खाते के नाम लिखने चाहिये, परन्तु यदि ये बेचे हुए माल पर दिये गये हैं तो हानि-लाभ खाते के नाम लिखे जाने चाहिये।

मजदूरी और वेतन :—माल के उत्पादन करने तथा क्रय करने पर मजदूरी और वेतन का जो खर्च होता है वह सब प्रत्यक्ष खर्चा है और व्यापार खाते के नाम लिखा जाता है, परन्तु व्यापार के दफ्तर की मजदूरी और वेतन का खर्चा अप्रत्यक्ष खर्च है और वह हानि-लाभ खाते के नाम लिखा जाता है।

व्यय हुए स्टोर्स :—स्टोर्स की वह रकम जो माल के उत्पादन में खर्च हो जाती है व्यापार खाते के नाम लिखी जाती है। अधिकतर यह रकम व्यापार खाते में अलग दिखा दी जाती है, परन्तु कभी-कभी यह उत्पादन के खर्चों में भी सम्मिलित कर दी जाती है।

उत्पादन-खर्चे :—उपर्युक्त खर्चों के अलावा जितने भी खर्चे माल के उत्पादन में लगते हैं वे सब व्यापार खाते के नाम लिखे जाते हैं।

४ [illegible] :—जब शुद्ध बिक्री [illegible] [illegible] व्यापार खाते में [illegible] जाता है। [illegible] [illegible]।

उदाहरण ७५

३१ दिसम्बर १९५० को एक फ्लोर मिल कं० का तलपट निम्नलिखित था :—

	रु०		रु०
स्टॉक (१ जनवरी १९५० को)—		क्रय : गैहूँ	८७,०००
गैहूँ	२५,२५०	संग्रह	७,५००
आटा	१३,६५०	गैहूँ की क्रय वापिसी	१,२००
संग्रह (stores)	२,३४०	मिल मजदूरी व वेतन	१५,८००
आटे की बिक्री	१,२७,१५०	अन्य उत्पादन व्यय	४,६००

३१ दिसम्बर १९५० को स्टॉक :— गैहूँ ३०,५०० रु०, आटा १७,८५० रु० ; संग्रह ४,३७० रु० ।
१९५० के लिये व्यापार खाता बनाओ ।

व्यापार खाता

(३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये)

प्रथम पद्धति

		रु०			रु०
स्टॉक १-१-५० को :—	गैहूँ	२५,२५०	विक्रय		१,२७,१५०
	आटा	१३,६५०	स्टॉक ३१-१२-१९५० को :—	गैहूँ	३०,५००
	संग्रह	२,३४०		आटा	१७,८५०
क्रय गैहूँ वापिसी घटाकर		८५,८००		संग्रह	४,३७०
क्रय संग्रह		७,५००			
मिल मजदूरी व वेतन		१५,०००			
अन्य उत्पादन व्यय		४,६००			
सकल लाभ		२५,०३०			
		१,७९,८७०			१,७९,८७०

इस पद्धति में व्यापार खाते में कच्चे माल, तैयार माल व संग्रह के प्रारम्भिक व अन्तिम स्टॉक अलग-अलग दिखाये गये हैं।

द्वितीय पद्धति

	रु०		रु०
आटे का स्टॉक १-१-५० को	१३,६५०	आटे की बिक्री	१,२७,१५०
गैहूँ (प्रयोग में लाया हुआ)	८०,५५०	आटे का स्टॉक ३१-१२-१९५० को	१७,८५०
संग्रह ,, ,, ,,	५,४७०		
मिल मजदूरी व वेतन	१५,०००		
अन्य उत्पादन व्यय	४,६००		
सकल लाभ	२५,७३०		
	१,४५,०००		१,४५,०००

इस पद्धति में व्यापार खाते में कच्चे माल व संग्रह का प्रारम्भिक व अन्तिम स्टॉक नहीं दिखाया गया है, क्योंकि इसमें प्रयोग में लाये हुये गैहूँ व संग्रह के स्टॉक का निम्न प्रकार समायोजन कर लिया है :—

	गैहूँ	संग्रह
	रु०	रु०
प्रारम्भिक स्टॉक	२५,२५०	२,३४०
क्रय	८७,०००	७,५००
	१,१२,२५०	९,८४०
घटाया—क्रय वापिसी	१,२००	
	१,११,०५०	९,८४०

ये सब खर्चे व्यापार खाते के नाम लिख देने चाहिएँ। कभी-कभी विद्यार्थियों के लिये यह निश्चय करना कठिन हो जाता है कि कौनसा खर्चा व्यापार खाते के नाम लिखें और कौनसा हानि-लाभ खाते के। इसके लिये कोई विशेष नियम नहीं है, परन्तु वे तमाम खर्चे जो माल को बेचने योग्य बनाने में खर्च होते है व्यापार खाते के नाम लिखे जाते हैं और अन्य खर्चे हानि-लाभ खाते के नाम लिखे जाते हैं।

यदि किसी खर्चे की प्रकृति ठीक तरह से नहीं जानी जा सकती है तो इसे व्यापार खाते या हानि-लाभ खाते में से किसी एक के नाम लिखा जा सकता है, परन्तु यह परमावश्यक है कि हर साल व्यापार खाते एक निश्चित आधार से ही तैयार किये जाये।

जहाज और गाड़ी-भाड़ा :—माल के मँगाने व भेजने पर जो भाड़ा लगता है वह जहाज, रेल, गाड़ी आदि का किराया होता है। जो भाड़ा माल के मँगाने पर खर्च होता है वह व्यापार खाते के नाम लिखा जाता है और जो माल को बाहर भेजने पर लगता है वह हानि-लाभ खाते के नाम लिखा जाता है।

बीमा :—जब विदेशों से समुद्री मार्ग से माल मँगाया जाता है या रेल से मँगाया जाता है तो माल को मार्ग की जोखिमों से बीमा करा लेना आवश्यक है। यह मार्ग-बीमा कहलाता है। इस पर जो खर्चा होता है वह व्यापार खाते के नाम लिखा जाता है। परन्तु यदि बेचे हुए माल का बीमा कराया जाता है तो यह खर्च हानि लाभ खाते के नाम लिखा जाता है, क्योंकि यह माल बेचने का खर्चा है।

व्यापार-कर :—यह कर कस्टम कर, घरेलू उत्पादन कर, चुंगी आदि का हो सकता है। जब माल आयात-निर्यात किया जाता है तो कस्टम-कर देना पड़ता है। घरेलू उत्पादन कर वह कर है जो देश में उत्पादित वस्तुओं पर लगता है, जैसे—चीनी, दियासलाई, शराब, अफीम आदि पर कर लगता है। चुङ्गी वह कर है जो स्थानीय म्युनिसिपल बोर्ड, बाहर से शहर के अन्दर प्रयोग अथवा विक्रय के लिये आने वाले माल पर लगाता है। माल खरीदने पर जितना भी कर लगता है वह व्यापार खाते के नाम लिखा जाता है और जो बेचे हुए माल पर लगता है उसे हानि-लाभ खाते के नाम लिखा जाता है।

ठेला-भाड़ा :—ठेला या गाड़ी आदि का भाड़ा प्रत्यक्ष खर्चे हैं, इसलिये व्यापार खाते के नाम लिखने चाहिये, परन्तु यदि ये बेचे हुए माल पर दिये गये हैं तो हानि-लाभ खाते के नाम लिखे जाने चाहिये।

मजदूरी और वेतन :—माल के उत्पादन करने तथा क्रय करने पर मजदूरी और वेतन का जो खर्च होता है वह सब प्रत्यक्ष खर्चा है और व्यापार खाते के नाम लिखा जाता है, परन्तु व्यापार के दफ्तर की मजदूरी और वेतन का खर्चा अप्रत्यक्ष खर्च है और यह हानि-लाभ खाते के नाम लिखा जाता है।

व्यय हुए स्टोर्स :—स्टोर्स की वह रकम जो माल के उत्पादन में खर्च हो जाती है व्यापार खाते के नाम लिखी जाती है। अधिकतर यह रकम व्यापार खाते में अलग दिखलाई जाती है, परन्तु कभी-कभी यह उत्पादन के खर्चों में भी सम्मिलित कर दी जाती है।

उत्पादन-खर्चे :—उपर्युक्त खर्चों के अलावा जितने भी खर्चे माल के उत्पादन में लगते हैं वे सब व्यापार खाते के नाम लिखे जाते हैं।

४. विक्रय :—सब शुद्ध बिक्री अर्थात् कुल बिक्री में से वापिस किया हुआ माल कम करके जो माल बाकी रहता है वह व्यापार खाते में जमा किया जाता है। वापिस किये हुए माल की घटाघटी कभी व्यापार खाते में दिखलाई जाती है और कभी नहीं।

उदाहरण ७५

३१ दिसम्बर १६५० को एक फ्लोर मिल कं० का तलपट निम्नलिखित था :—

	रु०		रु०
स्टॉक (१ जनवरी १६५० को)—		क्रय : गेहूँ	८७,०००
गेहूँ	२५,२५०	संग्रह	७,५००
आटा	१३,६५०	गेहूँ की क्रय वापिसी	१,२००
संग्रह (stores)	२,३४०	मिल मजदूरी व वेतन	१५,८००
आटे की बिक्री	१,२७,१५०	अन्य उत्पादन व्यय	४,६००

३१ दिसम्बर १६५० को स्टॉक :— गेहूँ ३०,५०० रु०, आटा १७,८५० रु० ; संग्रह ४,३७० रु०।

१६५० के लिये व्यापार खाता बनाओ।

व्यापार खाता

(३१ दिसम्बर १६५० को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये)

प्रथम पद्धति

		रु०			रु०
स्टॉक १-१-५० को :—	गेहूँ	२५,२५०	विक्रय		१,२७,१५०
	आटा	१३,६५०	स्टॉक ३१-१२-१६५० को :—	गेहूँ	३०,५००
	संग्रह	२,३४०		आटा	१७,८५०
क्रय गेहूँ वापिसी घटाकर		८५,८००		संग्रह	४,३७०
क्रय संग्रह		७,५००			
मिल मजदूरी व वेतन		१५,०००			
अन्य उत्पादन व्यय		४,६००			
सकल लाभ		२५,७३०			
		१,७६,८७०			१,७६,८७०

इस पद्धति में व्यापार खाते में कच्चे माल, तैयार माल व संग्रह के प्रारम्भिक व अन्तिम स्टॉक अलग-अलग दिखाये गये है।

द्वितीय पद्धति

	रु०		रु०
आटे का स्टॉक १-१-५० को	१३,६५०	आटे की बिक्री	१,२७,१५०
गेहूँ (प्रयोग में लाया हुआ)	८०,५५०	आटे का स्टॉक ३१-१२-१६५० को	१७,८५०
संग्रह ,, ,, ,,	५,४७०		
मिल मजदूरी व वेतन	१५,०००		
अन्य उत्पादन व्यय	४,६००		
सकल लाभ	२५,७३०		
	१,४५,०००		१,४५,०००

इस पद्धति में व्यापार खाते में कच्चे माल व संग्रह का प्रारम्भिक व अन्तिम स्टॉक नहीं दिखाया गया है, क्योंकि इसमें प्रयोग में लाये हुये गेहूँ व संग्रह के स्टॉक का निम्न प्रकार समायोजन कर लिया है :—

	गेहूँ	संग्रह
	रु०	रु०
प्रारम्भिक स्टॉक	२५,२५०	२,३४०
क्रय	८७,०००	७,५००
	१,१२,२५०	६,८४०
घटाया—क्रय वापिसी	१,२००	
	१,११,०५०	६,८४०

घटाया—अन्तिम स्टॉक	३०,५००	४,३७०
प्रयोग में लाई हुई राशि	८०,५५०	५,४७०

तृतीय पद्धति

	रु०		रु०
प्रयोग में लाया हुआ गेहूँ	८०,५५०	आटे की बिक्री	१,३१,३५०
,, ,, ,, ,, संग्रह	५,४१०		
मिल मजदूरी व वेतन	१५,०००		
अन्य उत्पादन व्यय	४,६००		
सकल लाभ	२५,७३०		
	१,३१,३५०		१,३१,३५०

इस पद्धति में व्यापार खाते में किसी भी प्रकार का स्टॉक नहीं दिखाया गया है। आटे का स्टॉक विक्रय के व्यवहारों के अनुसार निम्न प्रकार समायोजित किया गया।

	रु०
आटे की बिक्री	१,२७,१५०
जोड़ो आटे का स्टॉक ३१-१२-१९५० को	१७,८५०
	१,४५,०००
घटाया आटे का स्टॉक १-१-१९५० को	१३,६५०
	१,३१,३५०

उदाहरण ७६

३१ दिसम्बर १९५० को, कॉटन मिल्स कं० की पुस्तकों में निम्नलिखित शेष थे :—

	रु०		रु०
स्टॉक १-१-५० को कॉटन	१,५०,०००	क्रय : कॉटन	८,००,०००
स्टोर्स	३०,०००	स्टोर्स	७०,०००
सूत	५०,०००	विक्रय : सूत	२,२०,०००
कपड़ा	३,००,०००	कपड़ा	१७,००,०००
मिल की मजदूरी व वेतन	२,००,०००	अन्य उत्पादन-व्यय	६५,०००

३१ दिसम्बर १९५० को स्टॉक :— कॉटन २,५०,००० रु० ; स्टोर्स २०,००० रु० ; सूत ३०,००० रु० ; कपड़ा १,००,००० रु०।

१९५० का व्यापार खाता बनाइये, परन्तु उसमें कोई स्टॉक न दिखाइये।

व्यापार खाता

(३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये)

	रु०		रु०
कॉटन (प्रयोग में लायी हुई)	७,००,०००	कपड़ा खाता	१५,००,०००
स्टोर्स ,, ,,	८०,०००	सूत खाता	२,००,०००
मजदूरी व वेतन	२,००,०००		
अन्य उत्पादन व्यय	६५,०००		
सकल लाभ	६,२५,०००		
	१७,००,०००		१७,००,०००

(२) हानि-लाभ खाता

व्यापार खाता जो कच्चा मुनाफा या नुकसान प्रगट करता है तो वह हानि-लाभ खाते में पक्का या वास्तविक मुनाफा या नुकसान मालूम करने के लिये ले जाया जाता है। हानि-लाभ खाते का बैलेंस, जो वास्तविक मुनाफा या नुकसान के रूप में होता है, पूँजी खाते में ले जाया जाता है।

कच्चे मुनाफे या नुकसान के अतिरिक्त हानि-लाभ खाते मे आय और खर्चे की अन्य रकमे भी जो व्यापार खाते मे नहीं गई हैं लाई जाती हैं। जब व्यापार खाता नहीं बनाया जाता है तब सभी आय और खर्च की रकमे हानि-लाभ खाते मे ही लिखी जाती है।

व्यवहार मे व्यापार खाता तैयार नही किया जाता और सिर्फ हानि-लाभ खाता ही तैयार किया जाता है। सब अप्रत्यक्ष खर्चे हानि लाभ खाते के नाम मे लिखे जाते है। ये खर्चे माल बेचने तथा व्यापार का संचालन करने मे लगते है। सब आय हानि-लाभ खाते मे जमा की जाती है।

सहायक व्यापार खाता

जब व्यापार मे केवल खरीदने और माल बेचने का ही कार्य किया जाता है तब वार्षिक व्यापार खाता ही काफी होता है। परन्तु जब व्यापार-स्वामी कोई विशेष व्यापार अपने हाथ मे लेता है तब वह उसका परिणाम अलग जानना चाहेगा। वार्षिक व्यापार खाता तो केवल व्यापार का सम्मिलित परिणाम ही बतला सकता है और उससे भिन्न-भिन्न व्यापारिक कार्यों का अलग-अलग परिणाम नहीं जाना जा सकता। उदाहरणार्थ, यदि किसी फर्म ने अपने आढतिये के पास कमीशन पर माल बेचने के लिये भेजा हो, या किसी कपड़े की मिल को अपने ग्राहक के लिये एक विशेष माल तैयार करना हो, या किसी प्रकाशक को एक मूल्यवान पुस्तक प्रकाशित करनी हो, और इन सबका अलग-अलग परिणाम जानना हो तो वार्षिक व्यापार खाता इनके बतलाने मे सहायक नहीं हो सकेगा। इनके लिये, वार्षिक व्यापार खाते के अतिरिक्त एक सहायक व्यापार खाता तैयार किया जाता है तथा इसका जो नफा या नुकसान होता है वह व्यापार खाते मे ले जाया जाता है।

उदाहरण ७७

बमल ब्रॉदर्स प्रकाशक ने राम द्वारा लिखी हुई (मॉडर्न इण्डिया) एक पुस्तक, जिसपर ८ आ० प्रति विक्रय पुस्तक रॉयल्टी देय होगी, प्रकाशित की। प्रकाशक ने सारे उत्पादन व वितरण के खर्चे, जिसमें विभिन्न खर्च खातों में डैबिट हुये खर्चे भी सम्मिलित हैं, भुगतान किये। ४,००० प्रतियाँ छापी गई व प्रति कॉपी उत्पादन व वितरण लागत निम्न थी :—मुद्रण १,२०० रु० ; कागज २,५०० रु० ; जिल्द बँधवाई ५०० रु० ; विज्ञापन ४०० रु०।

प्रकाशन के प्रथम वर्ष में २०० प्रतियाँ समालोचकों व पुस्तकालयों को नि शुल्क भेजी गई ; तथा २,५०० प्रतियाँ ३ रु० प्रति की दर से नैट मूल्य पर बेची गई। प्रकाशक ने लेखक के पास दातव्य रॉयल्टी का चैक भेजा।

प्रथम वर्ष में इस पुस्तक पर प्रकाशन से हुये लाभ का हिसाब बनाओ।

यह समझते हुये कि द्वितीय वर्ष में शेष पुस्तकें, १०० प्रतियों को छोड़कर जोकि १ रु० ८ आ० की दर से बिकीं, उसी दर पर बेची गई व रॉयल्टी के अतिरिक्त, जो सब पुस्तकों पर चुका दी गई है, कोई व्यय नहीं हुआ, द्वितीय वर्ष की पुस्तकों में लेखा पूर्ण करो।

'मौडर्न इण्डिया' प्रकाशन खाता

		रु०			रु०
वर्ष १	मुद्रण	१,२००	वर्ष १	विविध देनदार	७,५००
	कागज	२,५००		स्टॉक (लागत पर, वर्ष के अन्त में)	१,४६५
	जिल्द सम्बन्धी सामान	५००			
	विज्ञापन	४००			
	राम (रायल्टी)	१,२५०			
	लाभ (व्यापार खाते को हस्तान्तरित किया)	३,१४५			
		८,९६५			८,९६५
वर्ष २	स्टॉक प्रारम्भ में	१,४६५	वर्ष २	विविध देनदार	३,६००
	राम (रायल्टी)	६५०		विविध देनदार	१५०
	लाभ (व्यापार खाते में हस्तान्तरित किया)	१,६०५			
		३,७५०			३,७५०

उदाहरण ७८

एक फ्लोर मिल कं० के ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए टाट बोरों के खाते से सम्बन्धित निम्न सूचना प्राप्त हुई :—

(अ) १ जनवरी १९५० को ३,१५० रु० मूल्य के ६,५५० बोरे थे।
(ब) ५८ रु० प्रति सैकड़ा की औसत दर से वर्ष के दौरान में २५,००० बोरे खरीदे।
(स) वर्ष के दौरान में बिके हुये माल को बाँधने के लिये २४,५०० बोरे प्रयोग हुये जिनका मूल्य १० आ० प्रति बोरा लगाया।
(द) ३१ दिसम्बर १९५० को स्टॉक वाले माल को बाँधने के लिये २,५०० बोरे काम आये।
(य) २०० बोरे दीमक लग जाने के कारण ३५ रु० में बेचे गये।
(फ) ५० बोरे चुरा लिये गये।

३१ दिसम्बर १९५० को बोरों का २५% प्रतिशत कम मूल्य मानते हुये वर्ष का टाट-बोरा या बारदाना खाता बनाइये।

बारदाना खाता

		रु०	आ.	पा.			रु०	आ	पा.
स्टॉक (१-१-५०)	६,५५०	३,१५०	–	–	विक्रय	२४,५००	१५,३१२	८	–
क्रय	२५,०००	१४,५००	–	–	,,	२००	३५	–	–
लाभ		६५५	८	–	बोरे चुराये गये	५०	—	–	–
					स्टॉक (३१-१२-५०)	६,८००	२,९५८	–	–
	३१,५५०	१८,३०५	८	–		३१,५५०	१८,३०५	८	–

स्टॉक ६८०० बोरे, दर ५८ रु० प्रति सैकड़ा २५% कम करके।

(३) बैलेंस-शीट

बैलेंस-शीट उन सब खातो के शेषो (Balances) का क्रमबद्ध (Classified) संग्रह है जो अवास्तविक खातो को व्यापार खाते तथा हानि-लाभ खाते मे ले जाकर बन्द करने के उपरान्त शेष रह जाते हैं। हानि-लाभ खाते का बैलेंस या तो पूँजी-खाते मे भेजा जाता है या यह बैलेंस-शीट मे अलग से दिखलाया जाता है। बैलेंस-शीट को सम्पत्ति और ऋण का लेखा कहना ठीक नहीं जान पड़ता, क्योकि इसमे ऐसी रकमे भी होती है जो इन दोनो ही श्रेणियों मे नहीं रखी जा सकती है।

क्योंकि बैलेंस-शीट में उन सब बैलेंसो का संग्रह होता है जो हानि-लाभ खाता तैयार करने के बाद मे बच रहते हैं, इसलिये इसका मिलना (agreement), अन्तिम खाते बनाने के लिये जितने भी समायोजन किये गये है उनकी शुद्धता का प्रतीक कहा जा सकता है।

बैलेंस-शीट लाभ-हानि खाते की तरह खाता-बही का कोई खाता नही है और न वह बहीखाते की दोहरा लेखा पद्धति प्रणाली के अन्तर्गत आता है। यह केवल बहियो में दी गई सूचनाओं का संग्रह है। इसमे खाता-बही के बैलेंस विपरीत दशा में दिखलाये जाते हैं अर्थात् नाम के बैलेंस दाहिने हाथ की तरफ व जमा के बाँये हाथ की तरफ।

बैलेंस-शीट का उद्देश्य एक निश्चित तिथि को व्यापार की आर्थिक स्थिति बतलाना है। यह सम्पत्तियो की प्रकृति और मूल्य, दायित्वो व ऋणो की प्रकृति और रकम, तथा उसकी कार्य-शील पूँजी (Working Capital)बतलाता है। यह एक विशेष तिथि पर जैसी आर्थिक स्थिति है उसे बताता है वैसे वास्तविक स्थिति दिन-प्रतिदिन बदलती रहती है।

सामूहीकरण एवं क्रमांकन :—बैलेंस-शीट में सब पदो (Items) को ठीक रूप मे समूह एवं क्रम-बद्ध करके वर्गित सारांश के रूप मे रखना चाहिये। सामूहीकरण (Grouping) का मतलब है कि एक ही तरह की सब रकमे एक शीर्षक के नीचे रखना चाहिए। उदाहरणार्थ, 'विविध देनदार' खाते में केवल व्यापारिक ऋण ही जोड़ना चाहिए अदत्त खर्च आदि की रकम नहीं।

क्रमबद्धता (Marshalling) का आशय उस क्रम से है जिसमे सम्पत्ति, ऋण आदि चिट्ठे मे दिखाये जाते है। बैलेस-शीट मे यह क्रम दो तरह का हो सकता है :—

(१) तरलता के क्रम से :—सम्पत्ति उस क्रम से लिखी जाती है जिसमे वह शीघ्रता से रोकड़ी रुपये मे परिणत की जा सकती हो और ऋण आदि उस क्रम से लिखे जाते हैं जिसमे वे अदा करने है।

या (२) स्थिरता के क्रम से। जैसे :—

चिट्ठा (तरलता के क्रम से)

देय बिल लेनदार अदत्त खर्चे ऋण पूँजी		रोकड़ बैंक विनियोग प्राप्य बिल पुस्त ऋण (देनदार) स्टॉक स्टोर्स फर्नीचर कल व यन्त्र भूमि व भवन	

चिट्ठा (स्थिरता के क्रम से)

पूँजी ऋण अदत्त खर्चे लेनदार देय बिल		भूमि व भवन कल व यन्त्र फर्नीचर स्टोर्स स्टॉक पुस्त ऋण (देनदार) प्राप्य बिल विनियोग बैंक रोकड	

प्रथम पद्धति निजी व्यापारो मे और द्वितीय पद्धति परिमित दायित्व वाली कम्पनियो में अपनाई जाती है। परन्तु बैंक इन दोनो पद्धतियो के मिश्रण को काम मे लेता है। वे अपनी सम्पत्ति तरलता के क्रम से और ऋण आदि स्थिरता के क्रम से रखते है।

(२) सम्पत्ति का श्रेणी-विभाजन

जायदाद और अन्य वस्तुयें जो पास हो, व्यापार की सम्पत्तियाँ हैं। सम्पत्तियाँ प्रकृति के अनुसार निम्नलिखित श्रेणियों मे विभाजित की जाती हैं :—

१. स्थायी सम्पत्ति :—यह स्थायी प्रकृति की सम्पत्तियाँ हैं जो व्यापार को चलाने के काम मे आती है और जो आय पैदा करने के हेतु रखी जाती है न कि वेचने के लिये। उदाहरणार्थ—जमीन, मकान, मशीन आदि।

भारतीय बही-खाता पद्धति के अनुसार व्यापार की स्थायी सम्पत्तियों के लिये सामूहिक नाम ब्लॉक खाता (Block Account) है। जब यह सम्पत्तियाँ मूल कीमतों पर लिखी जाती हैं तब इन्हें ग्रॉस ब्लॉक (Gross Block) कहते हैं। जब इस ग्रॉस ब्लॉक में से ह्रास (Depreciation) कम कर दिया जाता है तब इसे नैट ब्लॉक (Net Block) कहते हैं।

स्थायी सम्पत्तियों के लिये दूसरे नाम पूँजी सम्पत्तियाँ (capital assets), स्थायी पूँजी व्यय (Fixed capital expenditure), या दीर्घजीवी सम्पत्तियाँ (long lived assets) भी है।

क्षयशील सम्पत्तियाँ (Wasting Assets) उन स्थायी सम्पत्तियों को कहते है जो किसी कारण से अपने मूल्य का कुछ भाग खो देती हैं, जैसे प्लाट व मशीनरी, पट्टे की भूमि, पेटेन्ट और प्रकाशनाधिकार आदि।

२. चल-सम्पत्ति (Liquid Assets) —यह वह सम्पत्ति है जिसमे व्यापार किया जाता है और जो व्यापार मे खर्च होने के लिये, बेचने के लिये या रोकड़ी रुपये मे परिणित करने के लिये रखी जाती है; जैसे—स्टॉक, स्टोर्स, रोकड़ी रुपये, देनदार आदि।

३. रोकड़ी सम्पत्तियाँ (Cash Assets) —इस सम्पत्ति मे रोकड़ी रुपया और सर्वश्रेष्ठ विनियोगो को सम्मिलित किया जाता है जोकि शीघ्रता से बेच कर रोकड़ी रुपये मे परिणित किये जा सकते हो।

४. अवास्तविक सम्पत्तियाँ (Nominal Assets) —यह वह सम्पत्तियाँ हैं जो कोई मूल्य नही रखतीं, जैसे—स्थगित लाभ-व्यय, पूँजीगत हानि जो हानि-लाभ-खाते के नाम नही लिखी गई है, इत्यादि। इस सम्पत्ति के अन्य नाम काल्पनिक सम्पत्ति (imaginary assets), कृत्रिम सम्पत्ति (fictitious assets) आदि है।

५. संयोगी सम्पत्ति (Contingent Assets) :—संयोगी सम्पत्ति वह सम्पत्ति है जिसका अस्तित्व किसी घटना के होने पर निर्भर रहता है। यदि यह घटना होती है तब तो यह एक सम्पत्ति का रूप धारण कर लेती है, अन्यथा नहीं। इस सम्पत्ति का सबसे साधारण उदाहरण वापिस मिलने वाला अतिरिक्त मुनाफा कर (Refundable Excess Profits Tax) है जो इसी महायुद्ध मे लगाया गया था। यह संयोगी सम्पत्ति बैलेंस-शीट मे नहीं लिखी जाती, परन्तु इसके सम्बन्ध मे सूचना अवश्य दी जाती है।

६. बकाया सम्पत्ति (Outstanding Assets) :—पेशगी दिये हुए खर्चे और पैदा की हुई परन्तु प्राप्त न हुई आय इसमे सम्मिलित की जाती है।

ऋणों का विभाजन (Classification of Liabilities) —

व्यापार के ऋण उनकी प्रकृति के अनुसार निम्नलिखित श्रेणियों मे विभाजित किये जा सकते है :—

१. स्थायी ऋण (Fixed Liabilities) —ये वे ऋण हैं जो अभी अदा नहीं करने हैं परन्तु जिनका भुगतान एक बहुत लम्बे अर्से के बाद होगा। उदाहरणार्थ, स्वामी की पूँजी या दीर्घकालीन ऋण।

२. चालू ऋण (Current Liabilities) :—यह वह ऋण है जो शीघ्र ही निकट भविष्य मे अदा किया जावेगा, जैसे—व्यापार के लेनदार, अदत्त खर्च, बैंक ऋण, देय बिल इत्यादि। ये स्वामी के प्रति भी हो सकते है और बाहरी व्यक्तियों के प्रति भी।

३. संयोगी ऋण (Contingent Liabilities) :—ये वे ऋण हैं जो किसी घटना विशेष के होने पर देने पड़ते है, अन्यथा नहीं। इस तरह के ऋणों के उदाहरण ये हैं :—

(अ) डिस्काउंट करवाए हुए बिलों पर :—यदि स्वीकारक बिल को अंतिम तारीख पर अप्रतिष्ठित कर देता है, तो बेचान करने वाले और लेखक इसके भुगतान के लिये उत्तरदायी हो जाते हैं। इसलिये डिस्काउण्ट कराया गया बिल, जब तक स्वीकारक द्वारा उसका भुगतान नहीं हो जाता है तब तक, लेखक और हर एक बेचान करने वाले के लिये एक संयोगी ऋण है।

(ब) प्रतिभू (surety) का उत्तरदायित्व :—जब कोई पुरुष दूसरे व्यक्ति का ऋण अदा

करवाने का उत्तरदायित्व लेता है तव यह उसका संयोगी ऋण है, क्योंकि यदि देनदार रुपया देने मे असमर्थ रहा तो ये रुपयें प्रतिभू को ही देने पड़ेंगे।

(म) विचाराधीन मुकदमे का खर्च .—यदि किसी व्यक्ति के विरुद्ध कोई मुकदमा अदालत मे विचाराधीन हो तो यह उसके लिये एक संयोगी दायित्व है, क्योकि अदालत का निर्णय उसके विरुद्ध हो सकता है और उस दशा मे वह खर्चा अदा करने का उत्तरदायी वनाया जा सकता है।

जब यह संयोगी ऋण देना पड़ता है तब या तो इसके परिणाम स्वरूप कुछ नुकसान उठाना पड़ता है या इसके वदले मे बरावर के मूल्य की सम्पत्ति प्राप्त हो जाती है। जैसे, जब डिस्काउण्ट करवाई हुई विल अप्रतिष्ठित हो जाती है तो उसका भुगतान हमें करना पड़ता है। यदि ऐसा किया तो वह हमारे लिये एक वास्तविक दायित्व वन जाता है। परन्तु जव हम उसे स्वीकर्त्ता की ओर से चुकाते है तो वह उस रकम के लिये हमारा ऋणी हो जाता है अर्थात् ऋण चुकाने के वदले मे हमे समान रकम की एक सम्पत्ति प्राप्त हो जाती है। यदि स्वीकर्त्ता के पास पर्याप्त जायदाद है तो हम उससे पूरी रकम वसूल कर सकते है और हमे सयोगी ऋण के एक वास्तविक दायित्व मे परिणित होने से कोई हानि नहीं उठानी पड़ती। इसके विपरीत, यदि स्वीकर्त्ता के पास कोई जायदाद नही है और हम उससे उसकी ओर से चुकाई गई रकम वसूल नहीं कर सकते तो संयोगी ऋण हमारे लिये हानि उत्पन्न करेगा।

संयोगी ऋण वहियो मे नहीं लिखे जाते और न उन्हे अन्य ऋणो मे सम्मिलित करके वैलेस-शीट मे दिखलाया जाता है। यह सिर्फ वैलेस-शीट में नीचे की तरफ टीका (Note) के रूप मे लिख दिया जाता है, जिससे उनका अस्तित्व ध्यान से न छूट जाय।

यदि किसी वर्ष के अन्त मे यह संयोगी ऋण नुकसान मे परिणित होने वाला हो तो उसके लिये एक विशेष सयोगी ऋण कोप हानि-लाभ खाते के नाम लिख कर रख लेना चाहिये। यह रिजर्व वैलेस-शीट मे ऋण के रूप मे दिखलाया जाता है।

४ न चुकाये हुए ऋण (Outstanding Liabilities) —वे खर्चें जो चुकाये नहीं गये हो, या वह प्राप्त हुई आय जो अभी पैदा नहीं की गई है अदत्त ऋणो मे सम्मिलित की जाती है।

पूँजी-विभाजन (Classification of Capital) —

व्यापार के स्वामी की पूँजी (Proprietor's Capital) — व्यापार के बाह्य ऋणो पर सम्पत्ति की अधिकता सूचित करती है। यह वह रकम है जो व्यापारी ने शुरू मे व्यापार मे लगाई थी और जो व्यापार के लाभ से वढ़ गई है, या व्यापार के नुकसान से घट गई है।

व्यापार-पूँजी (Trading Capital) .—यह व्यापार की तमाम स्थायी और तरल सम्पत्ति से वनती है। इसे व्यापार मे लगी हुई पूँजी' भी कहते हैं।

स्थायी पूँजी (Fixed Capital) —तमाम स्थायी सम्पत्ति को सम्मिलित रूप से स्थायी पूँजी कहते है।

चल-पूँजी :—तमाम तरल व चल-सम्पत्ति व्यापार की चल-पूँजी (Circulating Capital) कहलाती है।

उधार-पूँजी (Loan Capital) —व्यापार के लिये लम्बे समय के लिये जो ऋण लिया जाता है उसे उधार-पूँजी कहते है।

कार्यशील-पूँजी (Working Capital) :—एक नव-स्थापित व्यापार में जो पूँजी स्थायी सम्पत्ति खरीदने के वाद व्यापार को चलाने के लिये रहती है उसे कार्यशील-पूँजी कहते हैं। पुराने व्यापार में चल-ऋणो पर चल-सम्पत्ति की जो अधिकता होती है उसे कार्यशील-पूँजी कहते हैं। इस अधिकता को नैट-चल-सम्पत्ति (Net Liquid Assets) भी कहते हैं। यदि एक व्यापार २५,०००) की पूँजी से शुरू किया गया हो और इसमें से १५,०००) स्थायी सम्पत्ति को खरीदने में खर्च हो गये

हो तो १०,०००) कार्यशील-पूँजी है। यदि एक पुराने व्यापार में ६७,५००) चल-सम्पत्ति हो और ४०,०००) के चालू ऋण हो तो कार्यशील-पूँजी या नैट चल-सम्पत्ति २७,५००) होगी।

कार्यशील-पूँजी किसी व्यापार की अच्छी स्थिति की सूचक है। जितनी अधिक कार्यशील-पूँजी होगी व्यापार उतना ही शक्तिशाली होगा। यह कार्यशील-पूँजी लाभ, रिजर्व आदि से बढ़ती है और पूँजीगत खर्च या हानि से घटती है।

अधिक व्यापार (Overtrading) —यदि किसी व्यापार की चल-सम्पत्ति उसके चालू-ऋणो से कम होती है तो उसे पूँजी से अधिक व्यापार करना (overtrading) कहते हैं। इसका अर्थ यह है कि व्यापार अपर्याप्त तरल-साधनो द्वारा चालू है। इस हालत मे व्यापार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है; क्योकि यदि उसके सब लेनदार उससे रुपया लेना चाहेगे तो उसे अपनी स्थायी-सम्पत्ति को बेचकर उनका भुगतान करना पड़ेगा। व्यापार की आर्थिक स्थिति उसकी कार्यशील-पूँजी या चल-सम्पत्ति से ही जानी जा सकती है।

दूसरे शब्दो मे 'अधिक व्यापार' का आशय है कि व्यापारी माल की खरीद, बिक्री, उधार लेन-देन इतना अधिक करता है कि उसकी कार्यशील-पूँजी के लिये उसका भार वहन करना सम्भव नही है। यह स्थिति दो कारणो के द्वारा उपस्थित हो सकती है, प्रथम तो व्यापार ही अल्प कार्यशील-पूँजी से स्थापित किया गया हो या द्वितीय उसको पूँजी व्यापार के नुकसान या व्यक्तिगत खर्च से कम हो गई हो।

सम्पत्ति का मूल्य निर्धारण

हानि-लाभ खाते तथा बैलेंस-शीट की शुद्धता अधिकतर सम्पत्ति के मूल्य निर्धारण पर ही निर्भर रहती है। इसलिये बैलेंस-शीट मे जो सम्पत्ति रखी जावे उसका मूल्य निर्धारण बही खाते के माने हुए सिद्धान्तो के अनुसार ही होना चाहिये।

बैलेस-शीट मूल्य निर्धारण का ब्यौरा (Valuation Statement) नहीं है; और न इसमे सम्पत्ति का सिर्फ वह मूल्य रखा जाता है जो बेचने पर प्राप्त हो सकता है। यह तो एक चालू व्यापार के सम्बन्ध मे बनाया गया ब्यौरा है, जो व्यापार की चालू स्थिति बतलाने के लिये तैयार किया जाता है।

भिन्न-भिन्न सम्पत्ति का मूल्य व्यापार की प्रकृति, और जिस उद्देश्य के लिये वह विशेष सम्पत्ति रखी जाती है उस पर निर्भर रहता है। अन्तिम खाते बनाने के लिये सम्पत्ति का मूल्य कुछ परम्परागत नियमो के अनुसार लगाया जाता है और इस प्रकार निकाला हुआ लाभ या हानि साधारण व्यापारिक कार्यों के लिये उचित रूप से सही माना जाता है। भिन्न-भिन्न पद्धतियाँ जिनके अनुसार स्थायी व चल-सम्पत्ति का मूल्य निर्धारण किया जाता है इस प्रकार हैं :—

१ स्थायी सम्पत्ति :—स्थायी सम्पत्ति का मूल्य इसकी मूल कीमत में से उचित ह्रास घटा कर निर्धारित किया जाता है। इस मूल्य को चालू-व्यापार (Going Concern) या परम्परागत (Conventional) या संकेत-मूल्य (Token Value) कहते है। इस मूल्य का बाजार-मूल्य से कोई सम्बन्ध नहीं होता है। यह वास्तव में तमाम स्थायी सम्पत्ति का अनुमानी नैट भावी मूल्य है (Estimated net future worth)।

दूसरे शब्दों में, यह ऐसी सम्पत्तियों के असमाप्त उपयोगी मूल्य का (उस उद्देश्य का ध्यान रखते हुए जिसके लिये उनको खरीदा गया है) रुपयों में अन्दाज लगाने का एक प्रयत्न है।

ऐसे किसी मूल्य की गणना आवश्यक रूप से अनुमानी है परन्तु वहीखाते का मान्य सिद्धान्त तो यह है कि ऐसी सम्पत्तियाँ, यदि वे क्षयशील या घिसाऊ प्रकृति की हैं तो उन्हें उनके जीवन काल में अपलिखित कर देना चाहिये और वह शेष, जो किसी भी समय पुस्तकों में दिखला रहे, उनके चालू मूल्य (Going Concern Value) का अनुमान माना जाता है।

इन स्थायी सम्पत्तियो का मूल्य निर्धारण करते समय बाजार-भावो पर निम्नलिखित तीन कारणो से ध्यान नहीं दिया जाता है :—(अ) बाजार-भाव इन सम्पत्तियो की उपयोगिता पर कोई प्रभाव नही डालता है, (ब) वह व्यापारी पर भी तब तक कुछ प्रभाव नहीं डालता जब तक यह पुराना न हो जावे और इसका नवकरण न करना पड़े, तथा (स) स्थायी सम्पत्ति का प्राप्य मूल्य (realisable value) मालूम करना सम्भव भी नहीं है। इन सम्पत्तियो का मूल्य इनकी उपयोगिता मे होता है न कि बेचने से।

२. चल-सम्पत्ति —इस सम्पत्ति का मूल्यांकन बैलेंस-शीट के लिये लागत कीमत या बाजार-भाव, इन दोनो मे जो कम होता है, उस पर किया जाता है। इस तरह इनका मूल्य निर्धारित करते समय सम्भवभावी नुकसान को तो ध्यान मे रखा जाता है, परन्तु सम्भवभावी लाभ को बिल्कुल ही छोड़ दिया जाता है, क्योकि एक संयोगी लाभ के लिये, जो शायद कभी न हो, क्रेडिट लेना गलत होगा। यदि ऐसा किया गया तो हानि-लाभ खाता अधिक लाभ दिखलायेगा।

तलपट और बैलेंस-शीट का अन्तर

तलपट खाताबही के तमाम, वास्तविक, व्यक्तिगत और अवास्तविक खातो के बैलेसो की एक सूची होती है। जब सब खाते खताये जा चुकते है तब ही यह तैयार की जाती है। तलपट का मेल होना बहियो की गणित-सम्बन्धी शुद्धता का सूचक है; परन्तु इसका मतलब यह नहीं है कि बहियाँ पूर्ण रूप से ठीक होगी, क्योकि तलपट के स्वीकृत होने के बाद भी कुछ अशुद्धियाँ ऐसी रह जाती है जिनका तलपट से मालूम होना सम्भव नही है।

बैलेस-शीट वह विवरण है जो व्यापार तथा हानि-लाभ खाते बनाने के बाद मे तैयार किया जाता है। इसमे सिर्फ उन वास्तविक और व्यक्तिगत खातो के बैलेस होते हैं जो अभी तक बन्द नही हुए है। बैलेस-शीट का उद्देश्य व्यापार की आर्थिक स्थिति को मालूम करना है। बैलेस-शीट का मेल होना, बहियो मे किये गये समायोजन की शुद्धता का प्रतीक है।

हानि-लाभ खाते और बैलेंस-शीट का अन्तर

हानि-लाभ खाता तमाम अवास्तविक खातो को लेते हुए तैयार किया जाता है, जबकि बैलेस-शीट कोई खाता नही है, परन्तु उन खातो का संग्रह मात्र है जो व्यापार खाता और हानि-लाभ खाता तैयार करने के बाद बच रहते है।

अवास्तविक खातो के बैलेस व्यापार खाते और हानि-लाभ खाते मे उसी तरफ रखे जाते है जिस तरफ वे खाताबही मे होते है, परन्तु बैलेस-शीट मे वास्तविक और व्यक्तिगत खातो के बैलेस विपरीत दशा मे रखे जाते है।

व्यापार खाते और हानि-लाभ खाते मे एक विशेष व्यापार-समय का परिणाम लिखा जाता है, परन्तु बैलेस-शीट एक विशेष तिथि को व्यापार की आर्थिक स्थिति का एक विवरण होती है।

दिये हुए बैलेंसों से अन्तिम खाते कैसे तैयार किये जावे

बहीखाते की परीक्षाओ मे साधारणतया दिये हुए खातो के बैलेंसो से अन्तिम खाते तैयार करने के लिये एक प्रश्न आता है। इस प्रकार का प्रश्न दो प्रकार का हो सकता है :—

(अ) प्रश्न में या तो एक तलपट हो सकता है या कुछ बैलेंसों की सूची नाम और जमा की रकमों मे भिन्नता किये बिना दी जा सकती है और कुछ समायोजन भी अन्त मे दिये जा सकते हैं, या

(ब) प्रश्न कुछ प्रस्तावना से शुरू किया जाता है जिसमे खाताबही के कुछ बैलेसो की सूचना रहती है। इसके बाद कुछ और बैलेस दिये जाते है जो पूर्ण तलपट के रूप मे नहीं होते है और न इनके जमा और नाम का भेद ही रहता है व अन्त मे कुछ आवश्यक समायोजन होते है।

इस तरह के प्रश्न को ठीक तरह शीघ्रता के साथ हल करने के लिये निम्नलिखित उपायो को अपनाया जा सकता है —

१. व्यापार की प्रकृति को समझना चाहिये, क्योंकि इसकी जानकारी से कुछ विचित्र बैलेसो का अर्थ ठीक-ठीक समझा जा सकेगा।

२. जिस समय के लिये हिसाब तैयार करना है उसे याद रखना चाहिये, क्योकि यह ठीक-ठीक समायोजन करने मे सहायक होगा।

३. जब खाताबही के बैलेस बिना किसी जमा या नाम की रकमो का भेद किये रखे गये हो और यह मालूम करना कठिन हो कि कौन रकम नाम की है और कौन रकम जमा की तब एक प्रारम्भिक तलपट तैयार कर लेना चाहिये।

४ जब सब बैलेसो की पूर्ण सूची न हो तब प्रस्तावना को बड़ी सावधानी से पढ़ना चाहिये और इसम जो बैलेस मिल सके उन्हे मालूम करके दिये हुए अन्य बैलेंसो मे जोड़ देना चाहिये और इनसे प्रारम्भिक तलपट तैयार करना चाहिये। यह तलपट आगामी सब कार्य की नींव रहेगा।

५ किये जाने वाले समायोजन अलिखित लेन देन के बारे मे होते हैं। जर्नल प्रविष्टियाँ मन ही मन करते हुए ठीक ठीक समायोजन करो और देखो कि प्रत्येक दशा मे दोहरा लेख पूरा हो गया है या नहीं। कभी-कभी प्रश्न मे समायोजन उपलक्षित (Implied) होते है, स्पष्ट रूप से नही दिये होते। जैसे—पहले से चुकाये हुए खर्चे।

६. यदि समायोजनो की शुद्धता पर थोड़ा सा भी सन्देह हो तो अन्तिम खातों के तैयार करने से पहले अन्तिम तलपट बना लेना चाहिये।

७ यदि प्रश्न में कोई सन्देह हो तो आपको अपनी तरफ से कुछ मान करके प्रश्न को हल कर लेना चाहिये और इसके सम्बन्ध मे उत्तर के बाद एक नोट लिख देना चाहिये।

उदाहरण ७६

एक व्यापारी की बहियों से ३१ दिसम्बर १९५० को निम्नलिखित तलपट निकला —

	रु०	रु०
पूँजी खाता		२८,०००
आहरण खाता	३,०००	
विविध देनदार व लेनदार	२०,१००	१०,४०१
बंधक पर ऋण (Loan on Mortgage)		६,५००
ऋण पर ब्याज	३००	
रोकड़	२,०५०	
डूबत ऋण सञ्चय		७१०
[illegible]	६,८३९	
मोटर गाड़ियाँ	१०,०००	
बैंक	३,५५५	
भूमि व भवन	१२,०००	
डूबत ऋण	५२५	
क्रय व विक्रय	६६,४१८	१,१०,२४३
क्रय व विक्रय वापिसी	७,८२१	१,३४६
विक्रय पर भाड़ा	२,[illegible]	
क्रय पर भाड़ा	[illegible],८१८	

सगठन व्यय (Establishment expenses)	६,०६७	
दर, कर व बीमा (Rent, Rates and Insurance)	२,८६१	
विज्ञापन	३,२६४	
बट्टा		५४०
सामान्य खर्चे	३,४८६	
प्राप्य व देय बिल	६,८८२	२,६१४
प्राप्त किराया		२५०
	१,६३,६०४	१,६३,६०४

निम्न समायोजनों के पश्चात् ३१ दिसम्बर १६५० को समाप्त होने वाले वर्ष का व्यापार खाता व लाभ-हानि खाता बनाओ और ३१-१२-५० का चिट्ठा बनाओ।

(१) भूमि व भवन पर २½% व मोटर गाड़ियों पर २०% ह्रास काटो।
(२) ऋण पर ६% प्रति वर्ष की दर से छः माह का व्याज नहीं दिया गया है।
(३) ५०० रु० की लागत का माल ३० दिसम्बर १६५० को एक ग्राहक को बिक्री या वापिसी की शर्त पर ६०० रु० की कीमत पर भेजा और पुस्तकों में उसका विक्रय म लेखा कर लिया।
(४) ७५० रु० का वेतन व ३५० रु० की दरें (Rates) अदत्त है।
(५) १५० रु० बीमे के पूर्वदत्त हैं।
(६) विविध देनदारों पर ५% डूबत ऋण सचय करना है।
(७) मैनेजर को १०% कमीशन देना है जो ऐसा कमीशन चार्ज करने के बाद निकाले हुए असल लाभ पर लगेगा।
(८) ३१ दिसम्बर १६५० को बाकी स्टॉक ६,२५० रु० है।

व्यापार व लाभ हानि-खाता

(३१ दिसम्बर १६५० को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये)

		रु०		रु०
स्टॉक १-१-५० को		६,८३६	विक्रय	१,०१,८२२
क्रय		६५,११२	स्टॉक ३१-१२-५० को	६,७५०
क्रय भाड़ा		२,६२६		
सकल लाभ आ/ले		३३,६६२		
		१,०८,५७२		१,०८,५७२
ऋण पर व्याज		५८५	सकल लाभ नी/ला	३३,६६२
विक्रय भाड़ा		२,४०४	बट्टा	५४०
दर, कर व बीमा		३,०६१	किराया	२५०
विज्ञापन		३,२६४		
सामान्य खर्चे		३,४८६		
सगठन व्यय		६,८४७		
ह्रास				
भूमि व भवन	३००			
मोटर गाड़ियाँ	२,०००	२,३००		
डूबत ऋण संचय		७६०		
मैनेजर का कमीशन		७६२		
असल लाभ		७,६२०		
		३४,४८२		३४,४८२

टिप्पणी :—(१) विक्रय या वापिसी पर भेजे गये माल का आवश्यक समायोजन विक्रय खाते को डेबिट व उस व्यक्ति के खाते को [illegible] माल भेजा गया है, क्रेडिट करके किया जायेगा, इस प्रकार विक्रय व देनदार दोनों क्रमशः १,०६,६४२ रु० व १६,५०० रु० हो जायेंगे। अतः डूबत ऋण सचय की गणना १६,५०० रु० पर की जायगी।

(२) कुल लाभ पर मैनेजर के कमीशन की गणना ८,७१२ रु० के १०/११० पर की गई है।

(३) 'संगठन' (Establishment) शब्द में, कार्यालय वेतन, मुद्रण व लेखन-सामिग्री, डाक व तार, टेलीफोन व आवागमन खर्चे आदि सम्मिलित है।

चिट्ठा
(३१ दिसम्बर १९५० को)

दायित्व	रु०	रु०	सम्पत्ति	रु०	रु०
देय बिल		२,६१४	रोकड़ बाकी		२,०५०
लेनदार		१०,४०१	बैंक		३,५५५
अदत्त खर्चे		१,३८५	प्राप्य बिल		६,८८२
मैनेजर का कमीशन अदत्त		७९२	विविध देनदार	१९,५००	
बधक पर ऋण		९,५००	घटाया-डू०ऋ० सञ्चय	९७५	१८,५२५
			स्टॉक		६,७५०
पूँजी—१-१-५० को	२८,०००		पूर्वदत्त खर्चे		१५०
घटाया-आहरण	३,०००		भूमि व भवन	१२,०००	
			घटाया—ह्रास	३००	११,७००
जोडा + वर्ष का लाभ	२५,०००	३२,९२०	मोटर गाडी	१०,०००	
	७,९२०		घटाया—ह्रास	२,०००	८,०००
		५७,६१२			५७,६१२

उदाहरण ८०

६ फरवरी १९५० को, बंशीधर रामगोपाल ने लक्ष्मी ऑयल मिल्स को (१,५०,००० रु० रोकड़ी में) निम्न सम्पत्तियों के साथ खरीदा —

भवन ४५,००० रु०; मशीनरी ६३,५०० रु०; डैड स्टॉक १,५०० रु०; बीज का स्टॉक १०,००० रु०, स्टोर्स २,५०० रु०, खली व तेल १७,५०० रु०।

मिल पर अधिकार करते ही उन्होंने ६,००० रु० मशीनरी को साफ कराने पर व्यय किये तथा २५,०० रु० कार्यशील-पूँजी के बतौर रखे।

उपर्युक्त सूचनाओं के अतिरिक्त ३१ दिसम्बर १९५० को मिल की पुस्तकों में निम्न शेष थे :—

	रु०		रु०
क्रय . बीज	६५,०००	विविध लेनदार	१७,५००
स्टोर्स	८,०००	रोकड़ बाकी	१,२००
विक्रय	१,१५,९००	बैंक	३१,२००
उत्पादन-व्यय	२५,०००	सामान्य खर्चे	३,७५०
संगठन व्यय	१२,०००	किराया (प्राप्त)	४५०
विविध देनदार	१५,३००	सिक्यूरिटी डिपॉजिट (क्रे०)	३,०००

निम्नलिखित सूचनाओं को ध्यान में रखते हुये ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का व्यापार व लाभ-हानि खाता तथा चिट्ठा बनाओ।

(अ) ३१ दिसम्बर १९५० को स्टॉक का मूल्य निम्न था :—बीज २७,५०० रु०, स्टोर्स ७,५०० रु०, खली व तेल २७,५०० रु०।

(ब) १,५०० रु० मिल मजदूरी व १,२०० रु० संगठन व्यय के अदत्त थे।

(स) ३०० रु० पूर्वदत्त बीमा था जो सामान्य खर्चे में डेबिट कर दिया था।

(द) भवन पर २½%, मशीनरी पर १०% तथा डैड स्टॉक पर १५% ह्रास अपलिखित (Write off) करो।

(य) ५०० रु० वास्तविक डूबत ऋण अपलिखित करो व ५% सम्भवनीय डूबत ऋण के लिये संचित कोष बनाओ।

(र) १८० रु० सिक्यूरिटी डिपॉजिट पर अदत्त ब्याज है।

लक्ष्मी आयल मिल्स

व्यापार व लाभ हानि खाता (६-१२-१९५० से ३१-१२-१९५०)

	रु०		रु०
स्टॉक ६-२-१९५० को :		विक्रय	१,१५,९००
बीज	१०,०००	स्टॉक ३१-१२-१९५० को :	
खली व तेल	१७,५००	बीज	३७,५००
स्टोर्स	२,५००	खली व तेल	२७,५००
क्रय : बीज	६५,०००	स्टोर्स	७५००
स्टोर्स	८०००		
उत्पादन-व्यय	२६,५००		
सकल लाभ आ/ले	५८,९००		
	१,८८,४००		१,८८,४००
संगठन व्यय	१३,२००	सकल लाभ नी/ला	५८,९००
सामान्य खर्चे	३,४५०	किराया	४५०
ह्रास : भवन	१,१२५		
मशीनरी	६,६५०		
डैड स्टॉक	२२५		
डूबत ऋण	५००		
डूबत ऋण संचय	७६०		
व्याज	१८०		
असल लाभ	३२,६६०		
	५९,३५०		५९,३५०

चिट्ठा (३१ दिसम्बर १९५० को)

		रु०			रु०
सिक्यूरिटी डिपोजिट		३,०००	रोकड़ बाकी		१,२००
विविध लेनदार		१७,५००	बैंक		३१,२००
अदत्त खर्चे		२,८८०	विविध देनदार	१५,२००	
पूँजी	१,८१,०००		घटाया—डूबत ऋण		
जोड़ा + कुल लाभ	३२,६६०	२,१३,६६०	संचय	७६०	१४,४४०
			स्टॉक बीज	३७,५००	
			खली व तेल	२७,५००	
			स्टोर्स	७,५००	७२,५००
			पूर्वदत्त बीमा		३००
			डैड स्टॉक	१,५००	
			घटाया-ह्रास	२२५	१,२७५
			मशीनरी	६९,२००	
			घटाया-ह्रास	६,६५०	६२,५५०
			भवन	४५,०००	
			घटाया-ह्रास	१,१२५	४३,८७५
			ख्याति		१०,०००
		२,३७,३४०			२,३७,३४०

टिप्पणी— ''डैड स्टॉक' शब्द में फर्नीचर, मोटरगाड़ियाँ इत्यादि सम्मिलित हैं।

बुक-कीपिंग और एकाउन्टेंसी का अन्तर

१६ वीं शताब्दी मे इन दोनो शब्दो मे कोई अन्तर नहीं समझा जाता था और इन दोनो को एक ही अर्थ मे प्रयोग किया जाता था, परन्तु ज्यों-ज्यों व्यापार का रूप और समस्याये बढ़ीं त्यों-त्यों इस विषय का महत्त्व भी अधिक से अधिक बढ़ता गया। व्यापार मे अब हिसाब की नई-नई समस्यायें उपस्थित हो रही हैं जो पहले कभी नहीं थीं। इसलिये आधुनिक ढंग के अनुसार बुक-कीपिंग और एकाउन्टेसी मे एक विशेष अन्तर समझा जाता है।

बुक-कीपिंग सिर्फ मूल बहियो तथा खाता बहियो मे व्यापार के लेन-देन को लिखने की कला है। इससे अधिकतर कार्य यन्त्र की प्रकृति का होना है और इसको करने के लिये पाश्चात्य देशों मे तो यन्त्रो से ही कार्य लिया जाता है। अमेरिका और इङ्गलैंड मे इस तरह के यन्त्रो का बहुत प्रचार हो रहा है और इनके द्वारा सब हिसाब लिखा जाता है, परन्तु भारतवर्ष मे अभी ऐसे यन्त्रो का प्रचार नहीं हुआ है।

बुक-कीपिंग का कार्य साधारणत जूनियर क्लर्कों के सुपुर्द किया जाता है जिन्हे अकाउन्ट्स क्लर्क कहते हैं। उनको इस विषय की कोई अधिक शिक्षा नहीं होती है। वे किसी उच्च-अधिकारी के निरीक्षण मे कार्य करते हैं। इस उच्च-अधिकारी को अकाउन्टेट कहते हैं।

अकाउन्टेसी मे बुक-कीपिंग भी सम्मिलित होती है और इसमे उच्च प्रकृति का कार्य होता है और जिस पुरुष को यह कार्य सौंपा जाता है उसे इस विषय के सिद्धान्तो का पूर्ण ज्ञान होता है। अकाउन्टेसी का कार्य बुक-कीपिंग के रिकॉर्ड का संग्रह, सारांश और विश्लेपण करना है। कहने का मतलब यह है कि जहाँ बुक-कीपिंग का अन्त होता है वहाँ से अकाउन्टेसी का प्रारम्भ होता है। अकाउन्टेसी से समायोजन करना, अन्तिम खाते तैयार करना और उनकी व्याख्या और आलोचना करना आदि सभी सम्मिलित किये जाते हैं। आधुनिक व्यापार मे अन्तिम हिसाब खाते ही तैयार करना काफी नहीं है, परन्तु उनका विश्लेपण तथा व्याख्या करना भी अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि इनके आधार पर ही व्यापार के भविष्य की नीति निश्चित की जा सकती है।

जिस पुरुष को यह सारा कार्य सुपुर्द किया जाता है उसे अकाउन्टेट कहते है। वह साधारणत अपने विषय का प्रकाण्ड विद्वान होता है।

प्रश्न

१. सकल लाभ व असल लाभ में अन्तर बतलाइये। समय-समय पर किसी व्यापार का सकल लाभ निकालने से क्या लाभ है ?

२. किन परिस्थितियों में तलपट के अन्दर (अ) प्रारम्भिक स्टॉक, (ब) अन्तिम स्टॉक तथा (स) कोई स्टॉक नहीं (No Stock) दिखलाये जायेंगे ?

३ एक व्यापार के प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष खर्चों में अन्तर बतलाइये।

४. चिट्ठे की बनावट व उपयोग पर एक संक्षिप्त नोट लिखिये।

५. चिट्ठे में एकत्रीकरण (Grouping) व क्रमबद्धता (Marshalling) से आप क्या समझते हैं ? किसी व्यापार का चिट्ठा कितने प्रकार से क्रमबद्ध किया जा सकता है ?

६. निम्न मदें समझाइये :—पूँजी सम्पत्ति (Capital assets), तरल सम्पत्ति (Liquid assets), चल सम्पत्ति (Current assets), अवास्तविक सम्पत्ति (Nominal assets) व चालू दायित्व (Current Liabilities)।

७. ग्रॉस ब्लॉक (Gross Block) व नेट ब्लॉक (Net Block) में अन्तर बतलाइये।

८ 'संयोगी (Contingent) दायित्व' का क्या अर्थ है ? संयोगी दायित्व के तीन उदाहरण देते हुये बतलाइये कि पुस्तकों में इसका किस प्रकार व्यवहार किया जाता है ?

९. 'अन्तिम खातों की शुद्धता अधिकांशतः सम्पत्ति के मूल्यांकन पर निर्भर रहती है'—इस कथन की पुष्टि कीजिये।

१०. किसी व्यापार की सम्पत्तियों के जो मूल्य चिट्ठे में दिखाये जाते हैं, वे क्या ऐसे मूल्य हैं जो सम्पत्तियों के बाजार में बेचने पर प्राप्त हो सकेंगे ? यदि नहीं, तो बताइये कि प्राप्ति योग्य मूल्य से अधिक मूल्य दिखाना कहाँ तक न्याय पूर्ण है ?

११. एक चालू व्यापार की स्थायी सम्पत्ति लागत मूल्य पर ह्रास कम करके मूल्यांकित की जाती है, भले ही उनका बाजार मूल्य कितना भी हो, जबकि चल सम्पत्ति लागत या बाजार मूल्य दोनों में जो भी कम हो उसपर मूल्यांकित की जाती है। मूल्यांकित करते समय एक चल व स्थायी सम्पत्ति के इस व्यवहार भेद को आप किस प्रकार समझायेंगे ?

१२. संक्षिप्त परन्तु स्पष्ट रूप से समझाइये कि चिट्ठे के लिये स्थायी सम्पत्ति को बाजार-मूल्य की अपेक्षा लागत-मूल्य (ह्रास कम करके) पर मूल्यांकित करना क्यों उचित समझा जाता है ?

१३. ऐक्स की बहियों से ३१ मार्च १९५१ को निम्नलिखित शेष उद्धृत किये गये :—

	रु०		रु०
पूँजी	२४,५००	ऋण	७,८८०
आहरण	२,०००	विक्रय	६५,३६०
सामान्य खर्चे	२,५००	क्रय	४७,०००
भवन	११,०००	मोटर कार	२,००६
मशीनरी	६,३४०	डूबत ऋण संचय	६००
स्टॉक	१६,२००	कमीशन (क्रे०)	१,३२०
कोयला व शक्ति	२,२४०	कार के खर्चे	१,८००
कर व बीमा	१,३१५	देय बिल	३,८५०
मजदूरी	७,२००	रोकड़ बाकी	८०
देनदार	६,२८०	बैंक अधिविकर्ष (Bank overdraft)	३,३००
लेनदार	२,५००	दान	१०५
बट्टा (डे०)	५००		

निम्न समायोजनों के पश्चात् ३१ मार्च १९५१ को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए अन्तिम खाते तैयार करो :—

१. ३१ मार्च १९५१ को मूल्यांकित स्टॉक २३,५०० रु० ।
२ १६० रु० डूबत ऋण के अपलिखित करो व देनदारों पर ५% डूबत ऋण संचय करो ।
३. मशीनरी पर १०% व मोटर कार पर १२% ह्रास अपलिखित करो ।
४. मोटर कार व्यापारी के निजी कार्यों व व्यापार-कार्य दोनों के उपयोग में आती थी; अतः कार के खर्चों का (कार का ह्रास सम्मिलित करके) १/३ व्यापारी के व्यक्तिगत खाते से चार्ज होना चाहिये ।
५ ७५० रु० ऋण व बैंक अधिविकर्ष पर ब्याज के देने बाकी हैं ।
६. २५० रु० प्रतिवर्ष हस्तान्तरित करके एक दान-कोष प्रारम्भ करने का निश्चय किया ।

उत्तर . स० ला० १६,२२० रु० ; श्र० ला० १०,२१० रु० ; चिट्ठा ५०,५६० रु० ।

१४. एक व्यापारी की बहियों में ३१ दिसम्बर १९५० को निम्न शेष थे :—

	रु०		रु०
भवन	७०,०००	क्रय पर भाड़ा	१,२९१
मोटर ट्रक	१२,०००	विक्रय पर भाडा	८००
फर्नीचर	१,६४०	डूबत ऋण संचय	१,३२०
देनदार	१५,६००	संगठन (Establishment) व्यय	२,१३५
लेनदार	१८,८५२	कर व बीमा	७८३
स्टॉक	१५,०४०	ब्याज (क्रे०)	३४०
रोकड़ बाकी	९८८	डूबत ऋण	६१३
बैंक	१४,५३४	अंकेक्षण शुल्क	४००
प्राप्य बिल	५,८४४	सामान्य खर्चे	३,९५०
देय बिल	६,९३०	यात्रा खर्च	३२५
क्रय	८५,५२२	बट्टा (डे०)	६२०
विक्रय	१,२१,८५०	विनियोग	८९२२
पूँजी	९२,०००	विक्रय वापिसी	२८५

निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखते हुये ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का व्यापार व लाभ-हानि खाता तथा चिट्ठा बनाइये ।

१. ३१ दिसम्बर १९५० क स्टॉक १५,५०० रु० था ।
२. मोटर ट्रक पर २०% व फर्नीचर पर १०% ह्रास काटो ।
३. विविध देनदारों पर डूबत ऋण सञ्चय में ५% से वृद्धि करो ।
४. ५०० रु० वेतन व १५० रु० कर के अदत्त हैं ।
५. ५० रु० का बीमा ऐसा है जिसकी अवधि समाप्त नहीं हुई है ।
६. १२० रु० विनियोगों पर अप्राप्त ब्याज (accrued) है ।
७. किराये पर दिये हुये भवन के एक भाग का १५० रु० किराया वाजिब (due) है ।
८. ५०० रु० का प्राप्य बिल जो दिसम्बर १९५० में भुनाया था, अगली जनवरी तक देय नहीं हुआ ।

उत्तर : स० ला० ३५,२१२ रु० ; अ०ला० २२,८६५ रु० ; चिट्ठा १,४१,२९७ रु० ।

१५. एक व्यापारी की बहियों से ३१ दिसम्बर, १९५० को निम्नलिखित तलपट निकला :—

	रु०	रु०
फर्नीचर व फिटिंग	६४०	
मोटर गाड़ियाँ	६,२५०	
भवन	७,५००	
पूँजी		१२,५००
डूबत ऋण	१२५	
डूबत ऋण सञ्चय		२००
देनदार व लेनदार	३,८००	२,५००
स्टॉक १ जनवरी १९५० का	३,४६०	
क्रय व विक्रय	५,४०५	१५,४५०
बैंक अधिविकर्ष (Bank Overdraft)		२,८५०
विक्रय व क्रय वापिसी	२००	१२५
विज्ञापन	४५०	
ब्याज खाता	११८	
कमीशन खाता		३७५
रोकड़ बाकी	६५०	
कर व बीमा	१,२५०	
सामान्य खर्चे	७८२	
वेतन	३,३००	
	३४,०००	[illegible]

निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखकर अन्तिम खाते बनाइये :—

१. स्टॉक ३१ दिसम्बर १९५० को ३,२५० रु०
२. भवन पर ५%, फर्नीचर व फिटिंग पर ७½% व मोटर गाड़ियों पर १८% ह्रास अपलिखित करो ।
३. ८५ रु० बैंक अधिविकर्ष का ब्याज देना है ।
४. ३०० रु० वेतन व १२० रु० कर के अदत्त हैं ।
५. १०० रु० का बीमा पूर्वदत्त है ।
६. कमीशन का एक तिहाई भाग अगले वर्ष के कार्य के लिये है ।
७. ६०० रु० की लागत के माल का, जो कि व्यापारी ने अपने निजी खर्चे के लिये निकाला था, पुस्तकों में कोई लेखा नहीं किया गया है ।
८. देनदारों के ५% के बराबर डूबत ऋण सञ्चय बनाना है ।

उपर्युक्त समायोजनों से आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ करो व अन्तिम तलपट बनाओ, तथा ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का व्यापार व लाभ-हानि खाता तथा चिट्ठा तैयार करो ।

उत्तर : स० ला० १०,२६० रु० ; अ० ला० २,५७२ रु० ; चिट्ठा २०,४५२ रु०

१६. एकल व बाई दोनों एक व्यापार में बराबर के साझीदार हैं । ३१ मार्च १९५१ को फर्म के आवश्यक खाते निम्न प्रकार थे :—

	रु०		रु०
क्रय	६३,०००	कर व बीमा	१,१३८
मोटर लॉरी	३,२५०	लेनदार	७,८६०
क्रय पर किराया	२,३१२	डूबत ऋण	३४२
मरम्मत व प्रतिस्थापन (Repairs and replacements)	१,२०५	डूबत ऋण सचय	३८५
लेनदारों से प्राप्त हुये अलाउन्स	२,४२०	सामान्य खर्चे	६८२
कोयला (प्रयोग म लाया गया)	६,७०६	विज्ञापन	३,८००
मशीनरी व प्लान्ट	२५,०००	प्राप्त किराया	११८
मजदूरी	६,२२१	रोकड़ ब की	३२५
भूमि व भवन	१३,८४०	एक्स का ऋण	१०,०००
वेतन	२,८५८	एक्स का पूँजी खाता	४६,४००
देनदार	७,६४०	एक्स का आहरण	४,२५०
विक्रय	७४,४४१	वाई का पूँजी खाता	३०,०००
रोकड़ (बैंक में)	२,१८५	वाई का आहरण	२,०५०
स्टॉक १-४-५० को	२५,२२०	कोयले का स्टॉक	२,०००

निम्न समायोजनों के पश्चात् ३१ मार्च १९५१ को समाप्त होने वाले वर्ष का व्यापार व लाभ-हानि खाता तथा चिट्ठा तैयार करो : —

१ साझीदारों की पूँजी पर ६% प्रति वर्ष व्याज दिया।
२. मोटर लॉरी तथा मशीनरी व प्लाण्ट पर १०% ह्रास अपलिखित करना है।
३. २०० रु० से डूबत ऋण सचय में वृद्धि करनी हैं।
४. विज्ञापन का आधा भाग इस वर्ष अपलिखित करना है।
५. ३,००० रु० क्रय खाते से तथा २५० रु० मजदूरी खाते से भवन खाते में हस्तान्तरित करो जोकि भवन के बनाने पर व्यय हुये।
६. स्टॉक ३१ मार्च १९५१ को ३०,३४२ रु० था।
७. एक्स के ऋण पर ७½% प्रति वर्ष व्याज दो।

उत्तर : स० ला० ४,५७४ रु० ; असल हानि ६,८१० रु० ; चिट्ठा ८६,६६४ रु०।

१७. १ जनवरी १९५० को, सुमेरचन्द ने २५,००० रु० की पूँजी से व्यापार प्रारम्भ किया तथा ३,००० रु० पुरत-ऋण, १२,००० रु० स्टॉक व २०० रु० फिटिंग के देकर एक स्थापित फुटकर स्टोर खरीदा। उसके बाद २५० रु० फर्नीचर व फिटिंग पर खर्च हुये।

उपर्युक्त सूचना के अतिरिक्त ३१ दिसम्बर १९५० को उसकी पुस्तकों से निम्नलिखित शेष उद्धृत किये गये :—

रोकड़ बाकी ४५० रु० ; रोकड़ (बैंक में) ७,८५० रु० ; देनदार १३,६५० रु० ; लेनदार ५,४६० रु० ; विक्रय ३२,३४० रु० ; क्रय २५,६०० रु० ; बट्टा, (क्रे०) १५० रु० ; सामान्य खर्चे १,२५० रु० ; किराया व बीमा १,५०० रु० ; विज्ञापन २५० रु०, क्रय वापिसी १५० रु० व डूबत ऋण १०० रु०।

निम्न समायोजनों के पश्चात् ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का व्यापार व लाभ-हानि खाता तथा चिट्ठा बनाओ।

१ ३१ दिसम्बर १९५० को स्टॉक ६,६५० रु० था।
२. १५० रु० सामान्य खर्चे व ६० रु० किराया अदत्त हैं।
३ ५० रु० बीमे के पूर्वदत्त हैं।

उत्तर : स० ला० ४,५४० रु० ; अ० ला० १,४०० रु० ; चिट्ठा ३२,१०० रु०।

१८. एक प्रकाशक ने एक पुस्तक, जिसकी ३,००० प्रतियाँ मुद्रित की गई, प्रकाशित की। सारे खर्चों का भुगतान करके उसने लेखक को ८ आ० प्रति बिकी पुस्तक की दर से रॉयल्टी दी। पुस्तक की लागत निम्न थी :— मुद्रण १,००० रु०, कागज १,३०० रु०, बंधाई ४०० रु०, विज्ञापन ३०० रु०।

वर्ष के अन्त में पता लगा कि १०० पुस्तकें नमूने में दी गई व २,००० पुस्तकें २ रु० ८ आ० प्रति पुस्तक के नैट मूल्य पर बेची गई। उसने लेखक को देय रॉयल्टी के चैक के साथ पूर्ण विवरण भेज दिया।

फर्म की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियाँ करते हुये बताइये कि प्रथम वर्ष की बिक्री पर उसे कितना लाभ हुआ ? यदि शेष स्टॉक की प्रतियाँ बिना कुछ अधिक खर्च किये उसी मूल्य पर बेची जायें तो फर्म को अगले वर्ष कितना लाभ होगा ?

उत्तर : प्रथम वर्ष का लाभ १,६०० रु० ; अगले वर्ष का लाभ ६०० रु० ।

१६. एक व्यापारी आपसे ३१ दिसम्बर १६५० को अपने अन्तिम खाते तैयार करने को कहता है। आप निम्नलिखित से आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये :—

१. स्टॉक ३१ दिसम्बर १६५० को १५,२८० रु० ।

२. २५० रु० उदन्त खाते का डेबिट शेष है जो ३१ दिसम्बर १६४६ को विक्रय के ६५० रु० ग्राहक के खाते में केवल ७०० रु० से ही डेबिट कर देने के कारण उत्पन्न हुआ था ।

३. ३१ दिसम्बर १६५० को उदन्त खाते में अन्तर (क्रेडिट डेबिट से अधिक) ६१० रु० रखना है ।

४. १५० रु० का माल व्यापारी ने अपने खर्चे के लिये निकाला, ५०० रु० की लागत का माल मुफ्त नमूने में बाँटा व १०१ रु० का माल दान में दिया, परन्तु पुस्तकों में उनका कोई लेखा नहीं किया गया है ।

५ बाढ़ द्वारा १,२५० रु० का स्टॉक (अबीमित) नष्ट हो गया ।

६. १२,३५० रु० के देनदारों पर ५% डूबत ऋण संचय करना है ; ३१ दिसम्बर १६४६ को सचित कोष ५७५ रु० व १६५० में अपलिखित किये गये डूबत ऋण ६५० रु० थे ।

७. १,५०० रु० का ब्लॉक पर ह्रास के लिए आयोजन करो ।

यदि उपर्युक्त सब बातें पूर्णतया भुला दी जायें तो १६५० के असली लाभ पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

उत्तर : शुद्ध लाभ १३,२३७ रु० ८ आ० होगा ।

२०. अब्दुल्ला एण्ड सन्स सेना के एक ठेकेदार ने ७ रु० ८ आ० प्रति जोडा की दर पर २०,००० जोड़ी सैनिक जूते बनाने का ठेका लिया । इस व्यापार के लिये उन्होंने १५,००० रु० के आवश्यक यत्र व औजार खरीदे ।

इस ठेके के लिये उन्होंने २१,५०० जोड़े जूते, जिनकी लागत निम्न थी, तैयार किये :—(अ) कच्चा माल ३ रु० ५ आ० प्रति जोड़ा, (ब) स्टोर्स ३ आ० ३ पा० प्रति जोड़ा, (स) मजदूरी ११ आ० ६ पा० प्रति जोड़ा व (द) अन्य खर्चे (Over head Charges) १३,८७५ रु० ।

५०० जोड़े खराब होने के कारण ४ रु० ८ आ० की दर से बेचे गये । १०,००० जोड़े जूते ठेका देने वाले को समय पर व ५,००० जोड़े १ मास बाद भेजे गये । ठेका देने वाले ने उन जोड़ों पर जो देर से भेजे गये थे, चार आना प्रति जोड़ा दण्ड लगाया ।

शेष जोड़ों को लागत से २०% कम पर मूल्यांकित करते हुये व मशीनरी व औजार को १५% अपलिखित करते हुये, इस ठेके पर लाभ व हानि दिखाने के लिये एक खाता बनाओ ।

उत्तर : लाभ ४७,५०० रु० ।

२१. निम्नलिखित में से प्रत्येक दशा में उस राशि को कारण सहित बताइये, जिससे एक व्यापार का असल लाभ कम या अधिक हो जायगा :—

(अ) प्रारम्भिक व अन्तिम स्टॉक, जिनका उचित मूल्यांकन क्रमशः ४०,००० व ३५,००० रु० था, दोनों ही लाभ-हानि खाते में २०% कम से सम्मिलित किये गये ।

(ब) २०,१०० रु० की ३% राजकीय प्रतिभूतियों (Securities) का ३ माह १२ दिन के उपार्जित ब्याज (accrued interest) का पुस्तकों में लेखा नहीं किया गया ।

(स) १,००० रु० जो एक ग्राहक से एक ऋण के सम्बन्ध में, जिसे पहले अपलिखित कर दिया गया था, प्राप्त हुये हैं, उसके व्यक्तिगत खाते में क्रेडिट कर दिये गये ।

(द) १,५०० रु० की लागत का माल २,००० रु० के मूल्य पर विक्रय या वापिसी पर भेजा गया, जोकि विक्रय में सम्मिलित कर लिया गया है, जबकि ग्राहक से कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई थी ।

अध्याय—१४

चलता खाता और मध्यम भुगतान तिथि

चलता खाता

चलता खाता (Account Current) दो पक्षो के एक विशेष समय के आपस के लेन-देन का खाता है जो एक पक्ष के द्वारा दूसरे पक्ष को भेजा जाता है और जिसमें एक निश्चित दर से प्रत्येक मद (item) पर व्याज लगाया जाता है। यह चलता खाता साझीदारो, एजेन्टो और स्वामियो, संयुक्त साहस के हिस्सेदारो, बैंक और उसके ग्राहको के बीच प्रयोग किया जाता है।

यह चलता खाता एक विशेष तिथि को एक खाते के रूप मे, दोनो तरफ व्याज के खानों सहित, तैयार किया जाता है। इस खाते के शीर्षक मे उस पुरुष का नाम, जिसको यह भेजा जाता है, और उस पुरुष का नाम, जिसने यह भेजा है, लिखे रहते हैं। जैसे—यदि आशाराम को मोहनलाल ने चलता खाता भेजा हो तो इसका शीर्षक "आशाराम का चलता खाता मोहनलाल के साथ" होगा।

व्याज लगाना :– व्याज दोनो तरफ की हरएक रकम पर लगाया जाता है और व्याज का बैलेंस मुख्य खाने मे रख दिया जाता है और खाते का वास्तविक बैलेस आगे ले जाया जाता है। व्याज मालूम करने की साधारण पद्धतियाँ ये हैं .—

१. व्याज हरएक रकम पर उसके भुगतान की तिथि से उस तिथि तक, जबकि यह खाता तैयार किया जाता है, लगाया जाता है। यह पद्धति उस दशा से काम मे ली जाती है जबकि तैयार व्याज सूचियाँ (Interest Tables) सुलभ हो। परीक्षा के लिये यह पद्धति उपयुक्त नहीं है, क्योंकि इसमे बहुत समय लगता है।

२. व्याज गुणनफल के द्वारा भी मालूम किया जा सकता है। हरएक रकम पर अलग-अलग व्याज लगाने के स्थान पर, हरएक रकम को उन दिनो से, जो भुगतान की तिथि से खाता तैयार करने की तिथि तक होते है, गुणा किया जाता है और इस गुणनफल को दोनों तरफ एक विशेष खाने में रख दिया जाता है। इन दोनो खातो के गुणनफल का बैलेस मालूम किया जाता है और इस बैलेंस को व्याज की द्विगुणित दर से गुणा करके और ७३,००० से विभाजित करके व्याज की रकम मालूम कर ली जाती है।

व्याज को गुणनफल की पद्धति से मालूम करना इस सिद्धान्त पर आधारित है कि किसी रकम का कुछ निश्चित दिनो का व्याज उतना ही होता है जितना कि इनके गुणनफल पर एक दिन का व्याज। उदाहरणार्थ, ५००) पर ५ दिन का व्याज उतना ही होगा जितना २,५००) पर एक दिन का व्याज।

यदि नाम की रकमों पर व्याज की दरें जमा की दरों से भिन्न हों, तो व्याज मालूम करते समय यह आवश्यक होगा कि दोनों तरफ के गुणनफलों के जोड़ को, गुणनफलों का शेष मालूम करने और उसे ७३,००० से भाग देने के पहले व्याज की द्विगुणित दरों से गुणा कर लेना चाहिये।

लाल रोशनाई व्याज :—जैसा ऊपर बतलाया गया है, हरएक रकम पर व्याज इसकी भुगतान की तिथि से लगाया जाता है न कि इसके लेखे (entry) की तिथि से। जब तक हरएक रकम की भुगतान की तिथि हिसाब तैयार करने की तिथि से पहले पड़ती है तब तक कोई कठिनाई उपस्थित नहीं होती है, क्योंकि नाम की रकमों का व्याज नाम लिख दिया जाता है और जमा की रकमों का व्याज जमा कर दिया जाता है, परन्तु यदि किसी रकम के भुगतान की तिथि हिसाब की तिथि से भी बाद में आती हो तो हिसाब की तिथि से भुगतान की तिथि तक के समय पर अवश्य ध्यान देना चाहिये।

यदि नाम की रकम का भुगतान हिसाब की तिथि से बाद में होता है तो यह स्पष्ट है कि इस पर न केवल कोई व्याज नहीं लगना चाहिये, बल्कि इस पर हिसाब की तिथि से भुगतान की तिथि तक व्याज अदा करना चाहिये, क्योंकि यह रकम दूसरे साल में जाने वाले बैलेंस में जोड़ दी जावेगी और उस पर व्याज लगाया जावेगा।

यदि जमा की रकम हिसाब की तिथि के बाद में अदा होने वाली है तो इसकी बिल्कुल विपरीत स्थिति होगी। अर्थात् इस तरह की रकम पर व्याज देने के स्थान पर हिसाब की तिथि से भुगतान की तिथि तक व्याज लगाया जाना चाहिये क्योंकि जमा की गई रकम दूसरे वर्ष के बैलेंस में से घटा दी जावेगी और इस घटी हुई रकम पर ही व्याज लगाया जावेगा।

इसलिये उस रकम का व्याज, जो हिसाब की तिथि के बाद में भुगतान-योग्य होती है, इस रकम के विपरीत पक्ष में लिखा जाता है परन्तु यह व्याज उस तरफ भी लाल रोशनाई में दिखलाया जा सकता है जिस तरफ कि यह रकम है। इस दशा में यह व्याज लाल रोशनाई में लिखा जाता है जिसमें कि यह बात सूचित हो कि यह व्याज विपरीत तरफ का है। इसे लाल रोशनाई व्याज कहते हैं। खाता बन्द करने से पहले यह लाल रोशनाई व्याज दूसरी तरफ लिख देना चाहिये।

नोट :—यदि व्याज जिस तरफ का है उस तरफ पहले से ही ठीक तरह से लिख दिया गया है तो लाल रोशनाई व्याज लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है। यहाँ पर यह इसलिये समझाया गया है क्योंकि यह कभी-कभी परीक्षा में पूछा जाता है।

उदाहरण ८१

निम्न व्यवहारों से ३० जून १९५१ को श्याम के द्वारा राम को भेजा हुआ चालू खाता तैयार करो, महीनों के आधार से व्याज की गणना ६% वार्षिक दर से करो :—

१९५१

जनवरी १ राम श्याम का २,००० रु० का ऋणी है।

मार्च १ राम ने ५०० रु० रोकड़ा भेजे।

अप्रैल १ राम ने श्याम से १ मास के उधार पर १,००० रु० का माल खरीदा।

२८ राम ने श्याम को १,००० रु० पर ३ मास की स्वीकृति दी।

प्रथम पद्धति (लाल रोशनाई ब्याज सहित)

राम का चालू खाता श्याम के साथ
(३० जून १९५१ को)

तिथि	विवरण	माह	ब्याज	धन	तिथि	विवरण	माह	ब्याज	धन
१९५१			रु०	रु०	१९५१			रु०	रु०
जन० १	शेष नी/ला	६	६०	२,०००	मार्च १	रोकड	४	१०	५००
अप्रेल १	विक्रय, देय तिथि १ मई	२	१०	१,०००	अप्रेल २८	प्रा/वि० देय तिथि ३१ जुलाई	१	५*	१,०००
जून ३०	लाल रोशनाई ब्याज	१	५	—	जून ३०	ब्याज का शेष जो दूसरी ओर ले गये		६५	
	ब्याज दूसरी ओर से लाया गया			६५		शेष आ/ले			१,५६५
			७५	३,०६५				७५	३,०६५

* यह लाल रोशनाई ब्याज है।

द्वितीय पद्धति (बिना लाल रोशनाई ब्याज)

राम का चालू खाता श्याम के साथ
(३० जून १९५१ को)

तिथि	विवरण	माह	ब्याज	धन	तिथि	विवरण	माह	ब्याज	धन
१९५१			रु०	रु०	१९५१			रु०	रु०
जन० १	शेष नी/ला	६	६०	२,०००	मार्च १	रोकड	४	१०	५००
अप्रेल १	विक्रय, देय तिथि १ मई	२	१०	१,०००	अप्रेल २८	प्रा/वि० देय तिथि ३१ जुलाई			१,०००
जून ३०	बिल का ब्याज	१	५	—	जून ३०	ब्याज का शेष दूसरी ओर ले गये		६५	
	ब्याज दूसरी ओर से लाया गया			६५		शेष आ/ले			१,५६५
			७५	३,०६५				७५	३,०६५

उदाहरण ८९

निम्नलिखित से ३० जून १९५१ को, डैबिट पर ३% वार्षिक ब्याज लगाते हुये व क्रेडिट पर २½% वार्षिक ब्याज देते हुये, ए के द्वारा बी को भेजा गया चालू खाता तैयार करो :—

१९५१			रु०	आ०	पा०
जनवरी	१	बी पर शेष	५६०	११	०
	१०	बी को माल बेचा	५१८	८	६
	१७	बी ने माल लौटाया	१२६	७	०
फरवरी	१०	बी ने रोकड़ा दिये	४००	०	०
	१४	बी ने ए का १ माह बाद देय ड्राफ्ट स्वीकार किया	२००	०	०
अप्रेल	१६	बी को माल बेचा	६१५	१०	६
मई	१५	बी से रोकड़ी प्राप्त हुये	७००	०	०
जून	५	बी ने ए का ३ माह बाद देय ड्राफ्ट स्वीकार किया	५००	०	०

बी का चालू खाता ए के साथ
(३० जून १६५१ को)

तिथि	देय तिथि	विवरण	राशि			दिन	गुणन फल	तिथि	देय तिथि	विवरण	राशि			दिन	गुणन फल
१६५१	१६५१		रु०	आ०	पा०			१६५१	१६५१		रु०	आ०	पा०		
जनवरी १	जनवरी १	शेष नी/ला	५६०	११	—	१८१	१,०१,५४१	जनवरी १७	जनवरी १७	वापिसी	१२६	७	—	१६४	२०,६६४
,, १०	,, १०	विक्रय	५१८	८	६	१७१	८८,७४६	फरवरी १०	फरवरी १०	रोकड़	४००	—	—	१४०	५६,०००
अप्रैल २६	अप्रैल २६	विक्रय	६१५	१०	६	६२	३८,१६२	,, १४	मार्च १७	प्रा०/बि०	३००	—	—	१०५	३१,५००
जून ३०		लाल रोशनाई						मई १५	मई १५	रोकड	७००	—	—	४६	३२,२००
		ब्याज					३५,०००	जून ५	सितम्बर ८	प्रा०/बि०	५००	—	—	७०	*३५,०००
							२,६३,४८२								१,४०,३६४
		ब्याज गुणनफल के शेष पर‡	१२	—	८		६								५
		शेष आ/ले	३१६	८	१		१५,८०,८६२								७,०१,८२०
										गुणनफल का शेष					८,७६,०७२
			२,०२६	७	—		१५,८०,८६२				२,०२६	७	—		१५,८०,८६२

* यह लाल रोशनाई ब्याज, खाते की तिथि के बाद देय होने वाले बिल के सम्बन्ध में है।

‡ यह ब्याज रु० ८,७६,०७२ पर ३ प्रतिशत वार्षिक से एक दिन का, ७३,००० से विभाजित करके, लगाया गया है।

उदाहरण ८३

३१ मार्च १६५१ को, एक्स, वाई का माल खरीदने के कारण ५५० रु० का ऋणी था। उसने १५ मई को ८७० रु०; २२ जून को १४७ रु० व १८ जुलाई को ४३० रु० का माल खरीदा।

कुछ माल खराब होने के कारण लौटा दिया गया व २६ मई को ५८ रु० से क्रेडिट किया गया।

१५ अप्रेल को वाई ने तीन माह बाद देय ५५० रु० का एक बिल एक्स पर लिखा तथा २६ जुलाई को शेष राशि का तीन माह बाद देय एक बिल और लिखा।

तदनन्तर दोनों पक्षों ने यह समझौता किया कि ३१ मार्च से ५% वार्षिक दर से ब्याज लगाया जाय।

आप वाई द्वारा भेजा हुआ, ३० सितम्बर १९५१ को अर्द्ध वार्षिक, चलता खाता बनाइये। ब्याज निकटतम रुपये तक निकालिये।

एक्स का चलता खाता वाई के साथ
(३० सितम्बर १९५१ को)

तिथि	विवरण	राशि	दिन	गुणनफल	तिथि	विवरण	राशि	दिन	गुणनफल
१९५१		रु०			१९५१		रु०		
अप्रेल १	शेष नी/ला	५५०	१८३	१,००,६५०	अप्रेल १५	प्रा०/बि० १८		७४	४०,७००
मई १५	विक्रय	८७०	१३८	१,२०,०६०		जुलाई को देय	५५०	१२४	७,१९२
जून २२	,,	१४७	१००	१४,७००	मई २६	वापसी	५८		
जु. १८	,,	४३०	७४	३१,८२०	जु. २६	प्रा०/बि० २९			
सित. ३०	१,३८९ रु० के बिल					अक्तूबर को देय	१,३८९		
	का ब्याज जिसकी				सित. ३०	गुणनफल का शेष			२,५९,६१९
	देय तिथि २९					शेष आ/ले	३६		
	अक्तूबर है		२९	४०,२८१					
	ब्याज								
	२५९६१९ × ५ / ३६५ × १००	३६							
		२,०३३		३,०७,५११			२,०३३		३,०७,५११

टिप्पणी :—यहाँ लाल रोशनाई ब्याज नहीं दिखाया गया है।

सामयिक समीकरण पद्धति :—

इस पद्धति (Periodic Balance Method) के अनुसार ब्याज खाते के बैलेंस पर शुरू की तिथि से दूसरे लेन-देन की तिथि तक के समय पर लगाया जाता है और उसके उपरान्त दोनो रकमों के बैलेंस पर उस तारीख से दूसरे लेन-देन की तारीख तक लगाया जाता है और इसी तरह खाते की तिथि तक ब्याज मालूम कर लिया जाता है। इस तरह से ब्याज हरएक बैलेंस पर उतने समय के लिये जबकि वह अपरिवर्तित रहता है, मालूम कर लिया जाता है।

यह पद्धति बैंक और इसके ग्राहक के चालू-खाते पर ब्याज मालूम करने के लिये काम में ली जाती है। एक बैंक सम्बन्धी खाते में ब्याज अधिकतर ओवरड्राफ्ट पर ऊँची दर से लगाया जाता है और जमा की रकम पर नीची दर से।

उदाहरण ८४

१ जनवरी १९४८ को, लाला सुमेरचन्द ने १०,००० रु० जमा करके मारवाड़ी बैंक लि० में चालू खाता खोला।

उनके अन्य जमा निम्न थे :—२० जनवरी ५,००० रु० ; २० मार्च ६,००० रु० ; २० मई ७,००० रु०। उन्होंने २० फरवरी को १२,००० रु० ; २० अप्रेल को १०,००० रु० व २० जून को ५,००० रु० निकाले।

ग्राहक के डेबिट शेष पर ५% वार्षिक से व क्रेडिट शेष पर २% वार्षिक से बैंक का ब्याज निकालते हुए ३० जून १९४८ को खाता बन्द करो।

लाला सुमेरचन्द

चालू खाता मारवाड़ी बैंक लि० के साथ

तिथि	विवरण	जमा			आहरण			डे० या क्रे०	शेष			दिन	गुणनफल	
													डेबिट	क्रेडिट
१९४८		रु०	आ.	पा.	रु०	आ.	पा		रु०	आ.	पा.			
जनवरी १	रोकड़	१०,०००	–	–				क्रे०	१०,०००	–	–	१९		१,९०,०००
२०	,,	५,०००	–	–				क्रे०	१५,०००	–	–	३१		४,६५,०००
फरवरी २०	चैक				१२,०००	–	–	क्रे०	३,०००	–	–	२९		८७,०००
मार्च २०	रोकड़	६,०००	–	–				क्रे०	९,०००	–	–	३१		२,७९,०००
अप्रेल २०	चैक				१०,०००	–	–	डे०	१,०००	–	–	३०	३०,०००	
मई २०	रोकड़	७,०००	–	–				क्रे०	६,०००	–	–	३१		१,८६,०००
जून २०	चैक				५,०००	–	–	क्रे०	१,०००	–	–	१०		१०,०००
३०	आधे वर्ष का ब्याज	६२	९	२				क्रे०	१,०६२	९	९			
		२८,०६२	९	२	२७,०००	–	–						३०,०००	१२,१७,०००

ब्याज निम्न प्रकार निकाला जायगा :—	रु०	आ०	पा०
१२,१७,००० रु० पर २% से एक दिन का	६६	१०	११
३०,००० रु० पर ५% से एक दिन का	४	१	९
ब्याज जो क्रेडिट होना है	६२	९	२

मध्यम भुगतान तिथि :—

मध्यम भुगतान तिथि (Average due date) वह औसत या संतुलित तिथि है जिस पर भिन्न-भिन्न तिथियों पर होने वाले भुगतान एक साथ किये जा सकते है। जब कोई पुरुष भिन्न-भिन्न तिथियों पर अदा होने वाले ऋणों को एक विशेष तिथि पर देना चाहे तब यह तिथि ऐसी होनी चाहिये जिससे न तो लेनदार को और न देनदार को ही किसी ब्याज का नुकसान हो, अर्थात् यह इकट्ठा भुगतान एक औसत-तिथि को होना चाहिये।

भिन्न-भिन्न तिथियों पर होने वाले भुगतानों का एक तिथि पर देने के लिये मध्यम भुगतान तिथि ही काम में ली जाती है। यह तिथि साझीदारों के आहरण (Drawings) पर ब्याज लगाने के काम में भी आती है।

बहुत से लेन-देनों की मध्यम भुगतान तिथि निकालने की पद्धति निम्नलिखित है :—

१. किसी एक तिथि (साधारणतः प्रथम लेन-देन की भुगतान तिथि) को आधार तिथि मान लेना चाहिये।

२. हर एक लेन-देन की रकम को आधार तिथि से भुगतान तिथि तक के दिनों से गुणा करना चाहिये।

३. इस तरह से जो गुणनफल प्राप्त हो उसके योग को समस्त रकमों के योग से विभाजित करना चाहिये और विभाजन पर जो दिन आवे उनको आधार तिथि में जोड़ देने से मध्यम भुगतान तिथि मालूम हो जावेगी।

उदाहरण ८४

एक्स ने वाई से माल खरीदा, जिसकी रोकड़ा भुगतान की देय तिथियाँ निम्न थीं :—

मार्च १५   २२० रु०, १८ अप्रेल को देय
अप्रेल २१   १२५ रु०, २४ मई को देय
२७   २०० रु०, ३० जून को देय
मई १५   ३१० रु०, १८ जुलाई को देय

वाई कुल राशि का, जो माध्य-तिथि पर देय हो, एक बिल लिखने को तैयार हो गया। यह माध्य-तिथि निकालिये।

हल :—

देय तिथि	राशि	दिन (१८ अप्रेल से)	गुणनफल
अप्रेल १८	२२०	०	—
मई २४	१२५	३६	४,५००
जून ३०	२००	७३	१४,६००
जुलाई १८	३५०	९१	३१,८५०
रु०	८९५		५०,९५०

मध्यम भुगतान तिथि $= \frac{५०,९५०}{८९५} =$ ५७ दिन १८ अप्रेल के बाद अर्थात् १४ जून

अतः लिखा हुआ बिल भुगतान के लिये १४ जून को देय होगा।

उदाहरण ८६

ए, एक फर्म के साझीदार ने १९४८ में व्यापार से निम्न राशियाँ निकालीं, जिन पर ६% वार्षिक ब्याज लिया जायगा :—

३१ जनवरी १५० रु०; २९ फरवरी १०० रु०; ३१ मार्च १६० रु०; ३० अप्रेल २०० रु०; ३१ मई १४० रु०; ३० जून ७० रु०; ३१ जुलाई २५० रु०; ३१ अगस्त १५० रु०; ३० सितम्बर १२० रु०; ३१ अक्तूबर १०० रु०; ३० नवम्बर १८० रु० व ३१ दिसम्बर को २०० रु०।

मध्यम भुगतान तिथि व कुल ब्याज की रकम निकालिये।

हल :—

आहरण पर ब्याज उसी तिथि से लगेगा जिस तिथि को वर्ष के अन्त में रुपया निकाला गया है।

तिथि	राशि	माह जिन पर ब्याज लगेगा	गुणनफल
जनवरी ३१	१५०	११	१,६५०
फरवरी २९	१००	१०	१,०००
मार्च ३१	१६०	९	१,४४०
अप्रेल ३०	२००	८	१,६००
मई ३१	१४०	७	९८०
जून ३०	७०	६	४२०
जुलाई ३१	२५०	५	१,२५०
अगस्त ३१	१५०	४	६००
सितम्बर ३०	१२०	३	३६०
अक्तूबर ३१	१००	२	२००
नवम्बर ३०	१८०	१	१८०
दिसम्बर ३१	२००	०	०
रु०	१,८२०		९,६८०

अतः मध्यम भुगतान तिथि ९,६८०/१,८२० हुई या ३१ दिसम्बर १९४८ से ५ माह पूर्व अर्थात् ३१ जुलाई।

अतः ए से १,८२० रु० पर ६% वार्षिक की दर से ५ महीने का ब्याज लिया जायगा जोकि ४५ रु० ८ आ० हुआ।

उदाहरण ८७

ब्लेक व हार्ट नामक दो व्यापारियों की पुस्तकों में निम्न लेन-देन हुए :—

१९४८

जनवरी १० हार्ट ने ब्लेक को २०० रु० का माल बेचा

१५ ब्लेक ने ऑर्डर के अनुसार माल न होने के कारण ५० रु० का माल लौटाया।
फरवरी १६ ह्वाइट ने ब्लेक को १५० रु० का माल बेचा
मार्च ११ ह्वाइट ने ब्लेक से १७५ रु० का माल खरीदा

वर्ष के प्रारम्भ में ह्वाइट के ब्लेक पर १२५ रु० अदत्त थे।

लेन-देनों की तिथियों के क्रम से ५% वार्षिक ब्याज लगाकर, ११ मार्च १६४८ को देय-शेष (Balance due) निकालते हुए चालू खाता बनाइये।

उपर्युक्त चालू खाते में चार्ज की गई ब्याज की कुल राशि को जाँचते हुए विभिन्न लेन-देनों की प्रारम्भिक शेष को सम्मिलित करके मध्यम भुगतान तिथि भी निकालो।

ब्लेक का चालू खाता ह्वाइट के साथ
(११ मार्च १६४८ को)

तिथि	विवरण	राशि			दिन	गुणन फल	तिथि	विवरण	राशि			दिन	गुणन फल
१६४८		रु०	आ.	पा.			१६४८		रु०	आ	पा.		
जनवरी १	शेष नी/ला	१२५	–	–	७०	८,७५०	जनवरी १५	वापिसी	५०	–	–	५५	२,७५०
१०	विक्रय	२००	–	–	६०	१२,०००	मार्च ११	क्रय	१७५	–	–	०	०
फरवरी १६	विक्रय	१५०	–	–	२३	३,४५०		गुणनफल का शेष					२१,४५०
मार्च ११	ब्याज												
	२१४५० × १० / ७३,०००	२	१५	–				शेष आ/ले	२५२	१५	–		
		४७७	१५	–		२४,२००			४७७	१५	–		२४,२००

विभिन्न लेनदेनों की मध्यम भुगतान तिथि २१,४५०/२५० (ब्याज छोड़ते हुये, गुणनफल के शेष को खाते के शेष से विभाजित करके) अर्थात् ११ मार्च १६४८ से ८५$\frac{4}{5}$ या ८६ दिन पूर्व, अर्थात् १५ दिसम्बर १६४७।

ब्याज की जाँच २५० रु० का ५% वार्षिक से ८५$\frac{4}{5}$ दिन का ब्याज २ रु० १५ आ० हुआ।

टिप्पणी :—उपर्युक्त उदाहरण मध्यम भुगतान तिथि निकालने की उस पद्धति का विवेचन करता है जब कि विभिन्न देय तिथियों के विभिन्न डेबिट व क्रेडिट लेन-देन हों।

प्रश्न

१. चालू खाता क्या है, व चालू खाते में ब्याज निकालने की दो मुख्य रीतियाँ कौनसी हैं ?
२. लाल रोशनाई का ब्याज क्या है, और यह किस प्रकार अलग किया जाता है ?
३. 'मध्यम भुगतान तिथि' किसे कहते हैं और यह किस कार्य के लिये निकाली जाती है ?
४. आप चालू खाता बनाने की 'सामयिक समीकरण पद्धति' से क्या अर्थ समझते हैं ?
५. आप मध्यम भुगतान तिथि किस प्रकार निकालेंगे जबकि विभिन्न देय तिथियों के विभिन्न डेबिट व क्रेडिट लेनदेन हों ?
६. १६५२ में एक्स के वाई के साथ निम्न लेनदेन हुये :—

		रु०	आ०	पा०
जनवरी १०	वाई को माल बेचा	३०५	१२	६
फरवरी १६	वाई से प्राप्त हुये	२५३	६	३
मार्च ५	वाई से माल खरीदा	४२५	१२	६
अप्रैल १३	वाई का एक माह बाद देय १२ तारीख का एक ड्राफ्ट स्वीकार किया	१८३	१	३
मई ६	वाई को रोकड़ा दिये	६५	१५	६
जून २५	वाई को माल बेचा	३८६	१०	६

एक्स के द्वारा वाई को ३० जून १६५२ को, भेजा हुआ चालू खाता बनाइये। ब्याज ४% वार्षिक दर से लगाया गया है।

उत्तर : शेष १६३ रु० ६ आ० १० पा० (डे०)

७ एक्स का वाई के साथ चालू खाता है और १ जनवरी से ३० अप्रैल १६५२ तक निम्न लेनदेन हुये :—

जनवरी १ वाई से ३,०६७ रु० का माल प्राप्त किया जो फरवरी के अन्त में देय है।
,, १६ वाई को २६६ रु० का माल बेचा जो अप्रैल के अन्त में देय है।
फरवरी ३ वाई को १,३०० रु० रोकड़ी दिये।
,, १२ वाई से ४,६८५ रु० का माल प्राप्त किया जो मार्च के अन्त में देय है।
मार्च २१ वाई से १,६०० रु० रोकड़ी प्राप्त हुये।
अप्रैल ५ वाई से २,७६३ रु० का माल प्राप्त किया जो जुलाई के अन्त में देय है।

एक्स द्वारा वाई को, ३० अप्रैल १६५२ के दिन भेजा गया चालू खाता ४% वार्षिक ब्याज लगाते हुये तैयार कीजिये।

उत्तर : शेष ११,१५० रु० १५ आ० ६ पा० (क्रे०)

८ १ जनवरी १६५१ को, सोहनलाल ने १०,००० रु० जमा करके अग्रवाल बैंक लि० में चालू खाता खोला और उसने निम्न प्रकार जमा किया :—

१० जनवरी २,५०० रु०, १० मार्च ८०० रु०, ३ अप्रैल ५६० रु०, २५ मई २,६५० रु० २ जून ४,५०० रु०।

उसने निम्न प्रकार रुपया निकाला :—५ जनवरी ४,५०० रु०, ६ फरवरी ३,५०० रु०, १ मार्च ५,००० रु०, २८ मार्च २,००० रु०, ३ मई २५० रु० व १२ जून ६०० रु०।

डैबिट शेष पर ६% वार्षिक व क्रेडिट शेष पर १½% वार्षिक ब्याज लगाते हुये ३० जून १६५१ को हिसाब बन्द करके बैंक की खाता-बही तैयार कीजिये।

उत्तर : शेष ५,१६६ रु० १० आ० ६ पा० (क्रे०) VCT.

६. एक व्यापारी ने माल खरीदा जिसकी देय तिथि निम्न थीं :—

जनवरी ७ ५०७ रु० १२ आ० ३ पा०, १० फरवरी को देय।
फरवरी १० १८३ रु० ६ आ० ६ पा०, २३ मार्च को देय।
मार्च १६ ६७ रु० ८ आ० ६ पा०, १६ मई को देय।
अप्रैल १६ ४१३ रु० १३ आ० ६ पा०, २२ मई को देय।

कुल राशि का मध्यम भुगतान तिथि पर भुगतान का प्रबन्ध हो गया है, तिथि निकालिये। क्रिया दिखाइये।

उत्तर : मार्च ३०

१०. एक साझीदार उस आधे वर्ष में, जो ३० जून १६५१ को समाप्त होता है, निम्न राशियाँ निकालीः— १७ जनवरी १५० रु०, २८ जनवरी २०० रु०, १८ फरवरी १२० रु०, ५ मार्च ८० रु०, २४ अप्रैल २०० रु०, २ मई १५० रु०, ३० जून १०० रु०।

आहरण पर ६% वार्षिक ब्याज लगाते हुये ब्याज की राशि और मध्यम भुगतान तिथि निकालिये।

उत्तर : मार्च १६ ; ब्याज १६ रु० १४ आ० ११ पा०।

११. एक्स ने वाई को निम्न प्रकार माल बेचा :—४ जनवरी ५३२ रु० ३ आ० ६ पा० ; १८ फरवरी ३८७ रु० ८ आ० ३ पा०; २४ मार्च ४६६ रु० ३ आ० ६ पा०। उसने वाई से निम्न प्रकार माल खरीदा :— २३ जनवरी २८२ रु० ५ आ० ३ पा०; १० मार्च ४३४ रु० १ आ० ६ पा०; १८ अप्रैल १७५ रु० ८ आ० ६ पा०।

एक्स को २ माह के बिल की व वाई को १ माह के बिल की शर्त है। दोनों पक्ष निश्चित तिथि पर भुगतान करने की इच्छा रखते हैं। तिथि व भुगतान की राशि निकालो।

उत्तर . ५ मई ; ५२४ रु०

१२ ३० जून १६५० को एक्स के आदर्श बैंक लि० के चालू खाते में से ७,५०० रु० अधिक निकाल लिये गये थे। ३१ दिसम्बर १६५० को समाप्त होने वाले आधे वर्ष के लिये जमा व आहरण निम्न थे :—

जमा : १५ जुलाई २,५०० रु० ; २० अगस्त ६,००० रु० ; १ अक्टूबर १०,००० रु० ; १७ नवम्बर ३,००० रु०।

आहरण : १ सितम्बर २,००० रु०, ३० नवम्बर ५,००० रु०, २० दिसम्बर ८,००० रु०।

चालू खाते पर कोई ब्याज नहीं मिलती है, परन्तु अधिविकर्ष (overdraft) पर ६% वार्षिक की दर से ब्याज ली जाती है।

३१ दिसम्बर १६५० को समाप्त होने वाले आधे वर्ष का, तथा उस दिन का शेष निकालते हुए बैंक की खाता-बही में एक्स का खाता बनाइये।

उत्तर : व्याज ५४ रु० १३ आ० २ पा०, शेष १,०५४ रु० १३ आ० २ पा०।

१३ . बी की खाता-बही में ए का निम्न खाता है :—

१६५०			रु०	१६५०			रु०
जनवरी	१	शेष नी/ला	१५,०००	मार्च	२५	वापिसी	१,०००
मार्च	६	विक्रय	३०,०००	अप्रैल	१०	रोकड़	१५,०००
मई	२५	विक्रय	७,०००	जून	३	रोकड़	२०,०००
				,,	३०	शेष आ/ले	१६,०००
			५२,०००				५२,०००

३० जून १६५० को, ६% वार्षिक की दर से ए द्वारा देय या प्राप्त व्याज मध्यम भुगतान तिथि द्वारा निकालो।

उत्तर : मध्यम भुगतान तिथि २१ सितम्बर १६४६ ;

ए द्वारा देय व्याज ७४४ रु० ५ आ० ६ पा०।

अध्याय—१५

एजेन्सी व्यवहार

एजेण्ट (Agent)

कानून के अनुसार एजेण्ट वह व्यक्ति है जो दूसरे व्यक्ति के लिये कार्य करे या उस व्यक्ति की ओर से अन्य व्यक्तियो से व्यापारिक लेन-देन करे। जिस व्यक्ति का वह प्रतिनिधित्व करता है उसे प्रधान (Principal) कहते हैं।

व्यापार का बहुत-सा कार्य एजेण्टो द्वारा होता है। कुछ व्यापारो मे एजेण्टो का होना परमावश्यक है। एजेण्ट माल बेचने, खरीदने, ऋणो का संग्रह करने तथा अन्य कार्य करने के लिये नियुक्त किये जा सकते है। एजेण्टो की सेवा के लिये जो प्रतिफल उन्हे दिया जाता है उसे कमीशन कहते हैं।

एजेन्सी —एजेण्ट और प्रधान के ऐसे सम्बन्ध को एजेन्सी (Agency) कहते है जिससे कि एजेण्ट प्रधान की ओर से कार्य करके उसे उस कार्य के लिये कानूनन उत्तरदायी बना सके। एजेन्सी दो व्यक्तियो के इस विचार पर आधारित है कि उनमे से एक व्यक्ति कुछ कार्य करेगा जिनके लिये दूसरा व्यक्ति उत्तरदायी होगा। जैसे—यदि आगरे का 'अ' बम्बई मे 'ब' को माल बेचने के लिये अपना एजेण्ट नियुक्त करता है तो हम बहुधा यह कहेगे कि 'अ' ने बम्बई मे अपनी एजेन्सी स्थापित की है।

प्रधान और एजेण्ट का सम्बन्ध :—एजेण्ट और प्रधान का सम्बन्ध एजेन्सी सन्नियम द्वारा संचालित होता है। यदि एजेण्ट अपने कर्त्तव्य-पालन करने मे ऐसा व्यय करता है जो प्रधान को करना था तो उस व्यय को भी वह प्रधान से लेने का अधिकारी होगा। इसके अतिरिक्त वह अपनी सेवाओ के लिये और माल खरीदने और बेचने के कार्य के लिये प्रधान से प्रतिफल ले सकेगा।

पारस्परिक समझौते के अधीन, एजेण्ट अपने प्रधान का माल जमानत पर रख सकता है, वह बेचे हुए माल की प्रमाणित रसीद दे सकता है और प्रधान के माल को अपने कमीशन या अन्य खर्चों के लिये अपने पास रोक सकता है।

दूसरी तरफ, एजेण्ट को अपने प्रधान का माल नुकसान या नष्ट होने से बचाने के लिये साधारण बुद्धि और उचित सावधानी से अवश्य काम लेना चाहिये। उसे प्रधान से प्राप्त वस्तु या धन का ठीक-ठीक हिसाब रखना चाहिये। उसे अपने प्रधान के माल को अपने माल से अलग रखना चाहिये। सारांश में उसे अपना कार्य बुद्धिमत्ता और एजेन्सी की शर्तों के अनुसार करना चाहिये।

माल बेचने की एजेन्सी

चालान (Consignment) :—कभी-कभी व्यापारी अपने कुछ माल को दूसरे नगर या देश में किसी व्यापारी के पास कमीशन के आधार पर बिकने के लिये भेज देते हैं। इस तरह से जो माल भेजा जाता है उसे चालान (Consignment) कहते हैं। प्रधान के लिये यह बाह्य चालान (Consignment outward) है और एजेण्ट के लिये आन्तरिक चालान (Consignment inward) है। प्रधान इस कार्य में चालान कर्त्ता (consignor) है और एजेण्ट चालान प्रापक (consignee) है।

जो माल चालान (Consignment) पर भेजा गया है वह एजेण्ट का माल नहीं हो जाता, क्योंकि उसने इसे खरीदा नहीं है। उसे तो इस माल को अच्छे भाव पर बेचना है और जब यह सब माल बिक जाता है तब ही यह चालान कर्त्ता का माल नहीं रहता है।

एजेण्ट का प्रतिफल .—एजेण्ट द्वारा प्रधान का जो माल बेचा जाता है उस पर उसे एक निश्चित दर से कमीशन दिया जाता है। यदि प्रतिदिन के व्यापार मे एजेन्ट द्वारा की हुई बिक्री मे से कोई रकम डूब जाती है तो वह प्रधान को भुगतनी पड़ती है, परन्तु कभी-कभी एजेण्ट और प्रधान यह तय करते है कि यदि कोई रकम डूब जावेगी तो एजेण्ट उसका उत्तरदायी होगा। दूसरे शब्दो मे एजेण्ट सब डूबत ऋणो को चुकाने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लेता है और इसके लिये उसे एक विशेष कमीशन दिया जाता है, जिसे परिशोध कमीशन (Del credere commission) कहते हैं।

जब एजेण्ट को माल भेजा जाता है तब इसके साथ एक अनुमान बीजक (Pro-forma invoice) भी भेजा जाता है जिसमे माल का व्यौरा और वह कीमते लिखी रहती हैं जिनसे कम मे माल को नही बेचा जा सकेगा। कभी-कभी एजेण्ट को प्रलोभन देने के लिये यह निश्चय किया जाता है कि अनुमान बीजक मे उल्लिखित कीमतो से एजेण्ट जितनी अधिक कीमते वसूल करेगा उनका कुछ हिस्सा उसको दे दिया जावेगा।

चालान के लिये पेशगी —जब प्रधान एजेण्ट को माल भेजता है तब वह उससे कुछ रुपये पेशगी ले सकता है। यह पेशगी या तो रोकड़ी हो सकती है या हुण्डी या बिल के रूप मे। जब तक एजेण्ट माल नहीं बेचता वह प्रधान का देनदार नहीं बनता, इसलिये उस समय उससे माल के रुपयो का भुगतान नहीं माँगा जा सकता। अत. जब एजेण्ट प्रधान को पेशगी देता है तब वह उस रकम पर प्रधान से व्याज ले सकता है।

बिक्री पत्र (Account Sales) :—जब बाहर से आया हुआ माल बिक जाता है तब एजेण्ट बिक्री के हिसाब का एक व्यौरा, जिसे बिक्री पत्र कहते है, बना कर अपने प्रधान को भेजता है। जब एजेण्ट माल बेच देता है तब खरीदने वाला इस माल का स्वामी बन जाता है और इस तरह एजेण्ट कभी भी माल का स्वामी नहीं होता। माल बेचने पर जो रकम एजेण्ट को प्राप्त होती है उसमे से वह अपना खर्चा और कमीशन काट कर बाकी रकम (net proceeds) अपने स्वामी के पास भेज देता है।

चालान का बहीखाता करना —दोहरा लेख बहीखाते के साधारण नियम इस तरह के लेन-देन लिखने मे भी काम आते हैं, परन्तु इन नियमो मे कुछ परिवर्तन इसलिये किया जाता है कि जो माल चालान के रूप में भेजा जाता है वह जब तक बेच न दिया जावे चालानकर्त्ता का ही माल माना जाता है।

माल भेजने वाला भेजे हुए माल को बिक्री नहीं मान सकता और न एजेण्ट ही इस माल को खरीदा हुआ माल मान सकता है, क्योकि माल भेजने वाले ने बिक्री नहीं की है। इसलिये उसे इस माल पर होने वाले लाभ को तब तक नही लिखना चाहिये जब तक यह माल वास्तव में बिक न जाय। चालान प्रापक के पास जो माल बच रहता है उसे चालान कर्त्ता को अपने अन्तिम स्टॉक मे सम्मिलित कर लेना चाहिये।

चालान से सम्बन्धित लेन-देन को अब चालान कर्त्ता (Consignor) और चालान प्रापक (Consignee) दोनों के दृष्टिकोण से समझाया जावेगा।

चालान कर्त्ता की पुस्तकों में—

माल भेजने वाले के दृष्टिकोण से, कॉनसाइन्मेण्ट सम्बन्धी हिसाब रखने का उद्देश्य हरएक कॉनसाइन्मेण्ट पर अलग-अलग हानि या लाभ मालूम करना है। इसके लिये एक विशेष खाता, जिसे "चालान .... खाते को" (Consignment to .... Account) या "........ एजेन्सी खाता" (.......... Agency Account) या "एजेन्सी व्यापार खाता" (Agency Trading Account) कहते हैं, खोला जाता है। उदाहरणार्थ, यदि अहमदाबाद की एक कपड़ा मिल ने अपने

कानपुर एजेण्ट को कॉनसाइन्मेण्ट पर माल भेजा हो तो इस खाते का शीर्षक "कानपुर को चालान खाता" (Consignment to Kanpur Account) या 'कानपुर एजेन्सी खाता" (Kanpur Agency Account) या 'कानपुर व्यापार खाता" (Kanpur Agency Trading Account) होगा।

यह खाता एक व्यक्तिगत खाता नहीं है, परन्तु एक *वास्तविक खाता है; क्योंकि यह कॉनसाइन्मेण्ट पर हानि या लाभ मालूम करने के लिये तैयार किया जाता है। वास्तव मे यह सहायक माल खाता है और इसका परिणाम माल खाते मे लिखा जाता है। हानि-लाभ खाते के नियम ही इस खाते में लागू होते हैं।

चालान से सम्बन्धित प्रविष्टियाँ निम्नलिखित तरह से की जावेंगी :—

१ क्योंकि चालान प्रापक और चालान कर्त्ता का सम्बन्ध एक देनदार और लेनदार का नहीं है परन्तु एक एजेण्ट और स्वामी का है, इसलिये जब माल भेजा जाता है तब चालान खाते (Consignment Account) में माल की कीमत (या बीजक की कीमत जब कि माल की कीमत मालूम न हो) नाम लिख दी जाती है और 'चालान पर प्रेपित माल खाता' (Goods on Consignment Account) या 'एजेण्ट को प्रेपित माल खाता' (Goods sent to Agent Account) में जमा कर दी जाती है। इस बाद वाले खाते का बैलेंस व्यापार अवधि की समाप्ति पर व्यापार खाते मे जमा की तरफ लिख दिया जाता है।

२. जितने भी खर्चे माल भेजने वाले को करने पड़ते हैं वे चालान खाते के नाम लिखे जाते हैं और रोकड़ खाते या लेनदारो के खातों मे जमा कर दिये जाते हैं।

३. यदि एजेण्ट से पेशगी प्राप्त हुई हो तो श्री रोकड़ खाते या प्राप्य बिल खाते (Bills Receivable Account) के नाम लिखकर एजेण्ट के व्यक्तिगत खाते मे जमा की जाती है, क्योंकि इस पेशगी के लिये एजेण्ट स्वामी का लेनदार हो जाता है।

४. बिक्री-पत्र (Account Sales) के प्राप्त होने पर एजेण्ट के व्यक्तिगत खाते मे नाम लिखकर चालान खाते मे कुल बिक्री की रकम जमा की जाती है और चालान खाते के नाम लिखकर एजेण्ट के व्यक्तिगत खाते में एजेण्ट के कुल खर्चे और कमीशन की रकम जमा की जाती है।

५. जब एजेण्ट से रुपया प्राप्त होता है तब रोकड़ या बैंक खाते के नाम लिखकर एजेण्ट के व्यक्तिगत खाते में जमा किया जाता है।

६. अब चालान खाते के नाम की तरफ माल की कीमत व खर्चे और जमा की तरफ कुल बिक्री लिखी रहेगी। यदि चालान पर भेजा हुआ सब माल बिक गया है तो चालान खाता बन्द किया जा सकता है। इस चालान खाते का बैलेंस हानि या लाभ होगा और इसे व्यापार खाते या हानि-लाभ खाते में लिखा जावेगा। इसे व्यापार खाते में ही ले जाना अधिक उचित है ताकि कुल बिक्री पर होने वाले लाभ का प्रतिशत ठीक तरह से मालूम किया जा सके।

बिना बिका स्टॉक :—जब चालान पर भेजा हुआ सब माल न बिका हो, तब माल भेजने वाले के लिए अन्तिम खाते तैयार करते समय इस बचे हुए स्टॉक का मूल्य निर्धारित करना आवश्यक हो जाता है। इस बचे हुए माल का मूल्य बाजार-भाव पर या लागत में यथोचित खर्चा जोड़ कर दोनों में जो कम होता है उस पर लगाया जाता है। जब चालान पर भेजे हुए माल का कुछ भाग नष्ट हो गया हो तब एजेण्ट के पास के बाकी स्टॉक का मूल्य निर्धारित करते समय इस नष्ट हुए माल का ध्यान रखना चाहिये। उदाहरणार्थ, पाँच सौ मन तेल किसी एजेण्ट को भेजा गया और इसका कुल खर्च (कीमत सहित २०,०००) हुआ. यदि इसमें से दस मन तेल चू गया हो और चार सौ मन तेल बेच दिया गया हो, तो बाकी बचे हुए तेल का मूल्य इस तरह से मालूम किया जावेगा :—

पाँच-सौ मन का मूल्य १०,०००) रुपया था, इसलिए नब्वे मन तेल का आनुपातिक मूल्य ३,६००) रुपया होगा।

न बिके हुए माल का इस तरह से मूल्य निर्धारित करके यह मूल्य चालान खाता (Consignment Account) मे जमा कर दिया जाता है और 'एजेन्ट के पास स्टाक खाता' (Stock with Agent Account") के नाम लिख दिया जाता है और यह खाता बैलेंस-शीट मे सम्पत्ति के रूप मे दिखलाया जाता है।

चालान पाने वाले की पुस्तकों (The Consignee's Books) में :—

चालान प्रापक (Consignee) के दृष्टिकोण से जो माल चालान कर्त्ता (Consignor) ने भेजा है वह खरीदा हुआ माल नहीं है, वह माल उसे बेचने के वास्ते रखना है। इसलिये आवश्यक बहीखाते की प्रविष्टियाँ निम्न प्रकार से होगी —

१. माल के आने पर इसका व्यौरा स्टॉक-बही में लिख लेना चाहिए और अन्य किसी बही मे कोई लेखा नही करना चाहिए।

२. जब कोई खर्च (जैसे—रेल-भाड़ा, गाड़ी-भाड़ा, कस्टम-कर इत्यादि) चालान-प्रापक (Consignee) ने इस चालान पर किया हो तब माल भेजने वाले के नाम लिखकर रोकड़ खाते या लेनदारो के खाते मे यह रकम जमा कर देनी चाहिए।

३. यदि माल भेजने वाले को पेशगी दी हो तो उसके व्यक्तिगत खाते के नाम लिखकर रोकड़ खाते या देय बिल खाते (Bills Payable Account), में जमा करनी चाहिए।

४. जब माल बिक जावे तब रोकड़ खाते या देनदारो के खातो के नाम लिखकर माल भेजने वाले के व्यक्तिगत खाते मे कुल बिक्री की रकम जमा कर देना चाहिए।

५. माल भेजने वाले के व्यक्तिगत खाते के नाम लिखकर कमीशन की रकम को कमीशन खाते मे जमा कर लेनी चाहिए।

६. माल भेजने वाले का हिसाब तय होने पर उसके व्यक्तिगत खाते के नाम लिखकर रोकड़ या बैंक खाते मे जो रकम उसे भेजी गई है जमा कर लेनी चाहिए।

उदाहरण ८८

देहरादून के बसल ब्रॉदर्स ने अपने आगरे के एजेण्ट सुमेरचन्द को २० रु० प्रति बोरी की लागत का, २५ रु० प्रति बोरी अनुमान या कच्चे बीजक (Pro-forma Invoice) के मूल्य पर २५० बोरी चावल भेजा। उन्होंने इस माल पर ५०० रु० भाड़ा व रेलवे किराये के दिये। एक माह बाद एजेण्ट से बिक्री के लेखे की सूचना प्राप्त हुई कि सम्पूर्ण चालान (Consignment) २६ रु० प्रति बोरे के हिसाब से बेच दिया गया है तथा उस पर ९० रु० व्यय हुये हैं; और प्राप्त राशि का २% कमीशन एजेण्ट का है। शेष बकाया राशि के लिये एक हुंडी प्राप्त हुई।

उपर्युक्त व्यवहारों को दोनों पक्षों की खाता-बही में दिखाओ।

चालान करने वाले की पुस्तकें

आगरा चालान खाता

	रु०		रु०
चालान पर माल भेजा खाता ...	५,०००	सुमेरचन्द	६,५००
रोकड़ (खर्चे) ...	५००		
सुमेरचन्द (खर्चे) ...	९०		
सुमेरचन्द (कमीशन) ...	१३०		
लाभ (व्यापार खाते को हस्तान्तरित किया)	७८०		
	६,५००		६,५००

सुमेरचन्द

	रु०		रु०
आगरा चालान खाता	६,५००	आगरा चालान खाता	६०
		,, ,, ,,	१३०
		रोकड़	६,२८०
	६,५००		६,५००

चालान पर माल भेजा खाता

	रु०		रु०
व्यापार खाता	५,०००	आगरा चालान खाता	५,०००

चालान पाने वाले की पुस्तकें

बंसल ब्रादर्स

	रु०		रु०
रोकड़ (खर्चे)	६०	रोकड (विक्रय)	६,५००
कमीशन खाता	१३०		
रोकड़ (हुंडी)	६,२८०		
	६,५००		६,५००

उदाहरण ८६

बम्बई की एक कॉटन मिल कम्पनी, बिलमोरिया एण्ड क० (कानपुर एजेण्ट) को माल भेजती रहती है। उनके द्वारा बेचे गये माल पर ३ पाई प्रति पौंड कमीशन काटकर, कानपुर के चालान पर लाभ व एजेण्ट पर शेष राशि दिखलाते हुये निम्न व्यवहारों को आवश्यक खातों में लिखिये —

११ आने प्रति पौंड की लागत पर भेजा हुआ कुल माल २,५६,००० पौ०।
१५ आने प्रति पौंड पर बेचा हुआ कुल कपड़ा १,९२,००० पौ०।
एजेण्ट द्वारा भेजी हुई राशि १,५५,००० रु०।
एजेण्ट द्वारा भुगतान किया हुआ रेलवे किराया १६,००० रु०।
शेष कपड़ा किराये सहित लागत पर मूल्यांकित किया गया।

कानपुर एजेंसी खाता

	रु०		रु०
चालान पर माल भेजा खाता	१,७६,०००	बिलमोरिया एण्ड कं०	१,८०,०००
बिलमोरिया एण्ड कं० :		किराये के अनुपात सहित स्टॉक की लागत	४८,०००
किराया	१६,०००		
कमीशन	३,०००		
लाभ व्यापार खाते को हस्तान्तरित किया	३३,०००		
	२,२८,०००		२,२८,०००

बिलमोरिया एण्ड क०

	रु०		रु०
कानपुर एजेंसी खाता	१,८०,०००	रोकड़	१,५५,०००
		कानपुर एजेंसी खाता	
		किराया	१६,०००
		कमीशन	३,०००
		शेष आ.ले	६,०००
	१,८०,०००		१,८०,०००

चालान पर माल भेजा खाता

	रु०		रु०
व्यापार खाता	१,७६,०००	कानपुर एजेंसी खाता	१,७६,०००

एजेंट के पास स्टॉक खाता

	रु०		रु०
कानपुर एजेंसी खाता	४८,०००		

उदाहरण ६०

दिल्ली के प्यारेलाल एण्ड सन्स ने २०,००० रु० का १०,००० गज कपड़ा खरीदा, जिसमे से ५,००० गज अजमेर वाले मगरूवचन्द एण्ड ब्रॉदर्स को चालान पर, ३ रु० प्रति गज विक्रय-मूल्य पर भेजा। चालान करने वाले ने ५०० रु० किराये व ५० रु० पैकिंग आदि के दिये।

मगरूवचन्द एण्ड ब्रॉदर्स ने ४,००० गज कपड़ा ४ रु० प्रति गज से बेचा व २०० रु० विविध खर्चों में व्यय किये। वे कुल बिक्री पर ५% व ३ रु० प्रति गज से अधिक पर २०% कमीशन पाने के अधिकारी है।

३,०८० गज कपड़ा दिल्ली में ३ रु० गज की दरसे, ३०० रु० कमीशन व खर्चे के कम करके बेचा। बाजार में मंदी के कारण शेष कपड़े के स्टॉक का १०% मूल्य कम हो गया।

प्यारेलाल एण्ड सन्स की पुस्तकों में चालान खाता और व्यापार व लाभ-हानि खाता, तथा चालान पाने वाले की पुस्तकों में प्यारेलाल एण्ड सन्स का खाता तयार करो।

चालान करने वाले की पुस्तकें

अजमेर चालान खाता

	रु०			रु०
चालान पर माल भेजा खाता	१०,०००	मगरूवचन्द एण्ड ब्रादर्स		१६,०००
रोकड़ खाता (खर्चे)	५५०	स्टॉक लागत पर	२,०००	
मगरूवचन्द एण्ड ब्रॉदर्स		घटाया १०%	२००	
खर्चे	२००			
कमीशन	१,६००		१,८००	
लाभ व्यापार खाते को	५,५६०	जोड़ो खर्चे	११०	
				१,६१०
	१७,६१०			१७,६१०

व्यापार व लाभ-हानि खाता

	रु०		रु०
क्रय	२०,०००	चालान पर माल	१०,०००
सकल लाभ आ/ले	८,१६०	विक्रय	६,०००
		चालान खाता	५,५६०
		स्टॉक की लागत १०% कम	३,६००
	२८,१६०		२८,१६०
खर्चे	३००	सकल लाभ नी/ला	८,१६०
कुल लाभ	७,८६०		
	८,१६०		८,१६०

चालान पाने वाले की पुस्तकें

प्यारेलाल एण्ड सन्स

	रु०		रु०
रोकड़ खाता (खर्चे)	२००	रोकड़ खाता	
कमीशन	१,६००	(विक्रय)	१६,०००
शेष आ/ले	१४,२००		
	१६,०००		१६,०००

उदाहरण ६१

बम्बई की हिन्दुस्तान साइकिल्स लि० ने आगरे के ए को निम्नलिखित शर्तों पर अपना एजेण्ट नियुक्त किया :—

(अ) माल बीजक-मूल्य या उससे अधिक पर बेचा जायगा।

(ब) ए को ७½% बीजक-मूल्य पर व २०% उससे अधिक मूल्य पर कमीशन प्राप्त करने का अधिकार होगा।

(स) प्रधान एजेण्ट पर ३० दिन बाद देय बिल बीजक-मूल्य के ८०% तक लिख सकता है।

१ अगस्त १९५० को, ए को प्रति साइकिल ६४ रु० की लागत की १,००० साइकिल किराये सहित ८० रु० बीजक मूल्य पर भेजी गई।

३१ दिसम्बर १९५० से पूर्व (जब प्रधान की पुस्तकें बन्द होती हैं) ए ने देय तिथि को अपनी स्वीकृति का भुगतान कर दिया। उसने ८२० साइकिलें ९३ रु० औसतन प्रति साइकिल की दर से बेचकर व १२५० रु० विक्रय खर्च काट कर, शेष राशि बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेज दी।

२० बिना बिकी साइकिलें दूकान में रक्खी रहने के कारण ५०% कम पर मूल्यांकित की गईं।

आवश्यक खातों द्वारा उपर्युक्त व्यवहारों का दोनों पक्षों की पुस्तकों में किस प्रकार लेखा करोगे?

हिन्दुस्तान साइकिल्स लि० की पुस्तकें

आगरा चालान खाता

१९५०		रु०	१९५०		रु०
अगस्त १	चालान पर माल खाता	६४,०००	दिसम्बर ३१	ए (बिक्री)	७६,२६०
दिसम्बर ३१	ए (विक्रय खर्च)	१,२५०		ह्रास रहित लागत पर	
	ए (कमीशन)	७,०५२		मूल्यांकित स्टॉक	१०,८८०
	व्यापार खाता	१४,८३८			
		८७,१४०			८७,१४०

चालान पर माल खाता

१९५०		रु०	१९५०		रु०
दिसम्बर ३१	व्यापार खाता	६४,०००	अगस्त १	आगरे को चालान	६४,०००

ए

१९५१		रु०	१९५०		रु०
दिसम्बर ३१	आगरा चालान खाता		अगस्त १	प्रा०/बि० खाता	६४,०००
	(विक्रय)	७६,२६०		आगरा चालान खाता	१,२५०
				,, ,, ,,	७,०५२
				बैंक खाता	३,९५८
		७६,२६०			७६,२६०

स्टॉक खाता

१९५०		रु०			
दिसम्बर ३१	आगरा चालान खाता	१०,८८०			

प्रा०/बि० खाता

१९५०		रु०	१९५०		रु०
अगस्त १	ए	६४,०००	सितम्बर ३	रोकड़ खाता	६४,०००

ए की पुस्तके

हिन्दुस्तान साइकिल्स लि०

१९५०		रु०	१९५०		रु०
अगस्त १	दे०/बि० खाता	६४,०००	दिसम्बर ३१	रोकड़ खाता	७६,२६०
	रोकड़ (खर्च)	१,२५०			
	कमीशन	७,०५२			
	बैंक खाता	३,९५८			
		७६,२६०			७६,२६०

दे०/बि० खाता

१९५०		रु०	१९५०		रु०
सितम्बर ३	रोकड़	६४,०००	अगस्त १	हिन्दुस्तान साइकिल्स लि०	६४,०००

एजेण्ट का कमीशन निम्न प्रकार से निकाला जायगा :—

६५,६०० रु० पर ७½% (बिके हुये माल का बीजक-मूल्य) = ४,९२०
१०,६६० रु० पर २०% (बीजक-मूल्य से अधिक बिक्री पर) = २,१३२
७,०५२

माल खरीदने के लिए एजेन्सी

बहुधा एजेन्ट माल बेचने के लिए नियुक्त किये जाते हैं, परन्तु कभी-कभी माल खरीदने के लिए भी एजेन्ट नियुक्त किये जाते है। उदाहरणार्थ, एक ऊनी मिल कम्पनी ऊन खरीदने के लिए एजेण्ट नियुक्त कर सकती है। कभी-कभी एक ही आदमी खरीदने और बेचने के दोनो कार्य करने के लिए रखा जा सकता है।

जब माल खरीदने के लिए कोई एजेन्ट रखा जाता है तब उसे स्वामी की तरफ से रुपया भी दिया जाता है। एजेन्ट अपने स्वामी की आज्ञानुसार माल खरीद कर भेजता रहता है। ऐसा करने में एजेन्ट का कुछ खर्चा लगता रहता है। यह खर्चा वह अपने स्वामी के व्यक्तिगत खाते मे से काट लेता है। उसकी सेवाओं के लिए उसे एक निश्चित कमीशन दिया जाता है। समय-समय पर एजेंट अपना हिसाब स्वामी के पास भेजता रहता है।

ऐसी स्थितियों मे एजेण्ट और स्वामी का सम्बन्ध एक देनदार और लेनदार का होता है। कभी एजेण्ट देनदार और कभी लेनदार होता रहता है। इस तरह की एजेन्सी के लेन-देन के हिसाब खाते बहुत ही सरल होते है और निम्न प्रकार से लिखे जाते हैं :—

प्रधान की पुस्तकें (Principal's Books) :—जब एजेण्ट को रुपया भेजा जाता है तब उसके व्यक्तिगत खाते के नाम लिखकर रोकड़ खाते में जमा कर लिया जाता है। जब एजेन्ट के द्वारा भेजा हुआ माल प्राप्त होता है तब क्रय-खाते के नाम लिखकर एजेण्ट के व्यक्तिगत खाते में माल की कीमत, उसके खरीदने में लगा हुआ खर्च और कमीशन आदि की रकम जमा की जाती है।

एजेन्ट की पुस्तकें (Agent's Books) .—जब स्वामी से रुपया प्राप्त होता है तब वह रोकड़ खाते में नाम लिखकर उसके व्यक्तिगत खाते में जमा कर दिया जाता है। जब माल खरीद लिया जाता है

तव स्वामी के व्यक्तिगत खाते के नाम लिखकर श्री रोकड़ खाते या लेनदारो के खाते मे माल की कीमत और उस पर लगा हुआ खर्चा जमा करते है। कमीशन खाते की रकय जमा की जाती है।

उदाहरण ६२

एक तेल मिल कम्पनी ने सरसों खरीदने के लिये १½% कमीशन पर शिवकुमार को अपना एजेण्ट नियुक्त किया और २,५०० रु० पेशगी भेजे। शिवकुमार ने ३,२०० रु० की सरसों नकद खरीदी व १२ रु० दलाली के दिये तथा ३५ रु० भाड़े के देकर उसने प्रधान को माल भेज दिया।

उपर्युक्त व्यवहारों का प्रधान व एजेण्ट दोनों पक्षों के आवश्यक खातों में लेखा करो।

प्रधान की पुस्तकें

शिवकुमार

	रु०		रु०
रोकड़ (पेशगी)	२,५००	क्रय खाता	३,२९५

क्रय खाता

	रु०		
शिवकुमार	३,२९५		

एजेण्ट की पुस्तकें

तेल मिल कम्पनी

	रु०		रु०
रोकड़ (माल की लागत)	३,२००	रोकड़ (पेशगी)	२,५००
,, (दलाली)	१२		
,, (भाड़ा)	३५		
कमीशन खाता	४८		

उधार-संग्रह के लिए एजन्सी

कभी-कभी स्वामी के उधार दिये हुए रुपयों का संग्रह करने के लिये एजेण्ट नियुक्त किया जाता है। जब एजेण्ट इन रुपयों का संग्रह कर लेता है तब वह इनमें से अपना खर्चा और कमीशन कम करके बाकी रुपये स्वामी को भेज देता है। इस तरह के लेन-देन को लिखने के लिए निम्नलिखित वही-खाते की प्रविष्टियाँ की जाती हैं :—

प्रधान की पुस्तकें (Principal's Books) :—जब यह सूचना प्राप्त होती है कि एजेण्ट ने ऋणों का संग्रह कर लिया है तब जो रकम वास्तव में संग्रहीत की गई है वह एजेण्ट के व्यक्तिगत खाते में नाम लिखकर देनदारों के खाते में जमा करदी जाती है। यदि रोकड़ी बट्टा देनदार को दिया गया है तो बट्टे खाते के नाम लिखकर देनदार के व्यक्तिगत खाते में जमा कर दिया जाता है। खर्च खाते के नाम लिखकर खर्च और एजेण्ट के कमीशन की रकम एजेण्ट के व्यक्तिगत खाते में जमा कर दी जाती है।

एजेन्ट की पुस्तकें (Agent's Books) :—जब स्वामी का रुपया संग्रहीत कर लिया जाता है, तब संग्रह की हुई रकम रोकड़ खाते के नाम लिखकर स्वामी के व्यक्तिगत खाते में जमा कर दी जाती है। यदि कोई रोकड़ी बट्टा किसी देनदार को दिया गया है तो एजेण्ट की वहियों में इसका कोई लेखा नहीं किया जा सकता है, परन्तु इस बट्टे की सूचना स्वामी को अवश्य भेज दी जाती है। जो भी खर्चा ऋण-संग्रह में लगता है उसकी रकम स्वामी के व्यक्तिगत-खाते के नाम लिखकर रोकड़ खाते में जमा की जाती है और जो कमीशन की रकम होती है उसे भी स्वामी के व्यक्तिगत खाते के नाम लिखकर कमीशन खाते में जमा कर ली जाती है।

उदाहरण ६३

आगरे के वृजभूषण के देनदार बम्बई में थे। अत' उन्होंने बम्बई के राजेन्द्रसिंह को २% कमीशन पर उधार संग्रह करने के लिये एजेण्ट नियुक्त किया। राजेन्द्रसिंह ने ५० रु० संग्रह पर व्यय करके वृजभूषण के देनदारों से १२,५०० रु० संग्रह किया, तथा उससे निम्न सूचना प्राप्त हुई उसने ४५ रु० रोकड़ बट्टा दिया है तथा २०० रु० के कुछ दिवालिया देनदारों से रु० में कुल ८ आने ही संग्रह हुये है। श्री राजेन्द्रसिंह ने भेजी जाने वाली धन-राशि को बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेज दिया—

उपर्युक्त व्यवहारों को प्रधान एवं एजेण्ट की पुस्तकों में लिखो।

वृजभूषण की पुस्तकें

विविध देनदार

	रु०		रु०
शेष नी/ला	?	राजेन्द्रसिंह	१२,५००
		बट्टा खाता	४५
		डूबत् ऋण खाता	१००

राजेन्द्रसिंह

	रु०		रु०
विविध देनदार	१२,५००	विविध खर्च खाता	५०
		कमीशन खाता	२५०
		रोकड़	१२,२००
	१२,५००		१२,५००

राजेन्द्रसिंह की पुस्तकें

वृजभूषण

	रु०		रु०
रोकड़ (खर्च)	५०	रोकड़	१२,५००
कमीशन खाता	२५०		
रोकड़	१२,२००		
	१२,५००		१२,५००

प्रश्न

१. निम्न मदों को समझाइये :—एजेण्ट, प्रधान, परिशोध आढत (*Del Credere Commission*), बिक्री पत्र।

२ निम्न दोनों में क्या अन्तर है—(अ) चालान व माल के विक्रय में, (ब) चालान व माल के 'विक्रय या वापिसी' में ?

३. चालान करना तथा चालान प्राप्ति से क्या अर्थ है ? प्रधान व एजेण्ट की पुस्तकों में चालान का लेखा किस प्रकार किया जाता है ?

४. एक्स को कमीशन पर बिक्री के लिये वाई से १०० दवाओं की पेटियाँ प्राप्त हुई, प्रत्येक पेटी की लागत ४५० रु० थी। वाई ने चालान पर निम्न खर्चे किये : किराया १,५०० रु०; बीमा ७५० रु०; विविध खर्चे २५० रु०।

वाई ने २०,००० रु० का तीन माह का एक बिल एक्स पर लिखकर १६,६०० रु० में भुनाया।

एक्स ने ७५ पेटी ६५० रु० प्रति पेटी व शेष ६८० रु० प्रति पेटी बेची व ५% कमीशन चार्ज किया। एक्स ने शेष राशि का एक ड्राफ्ट वाई को भेजा।

वाई की खाता-बही में आवश्यक चालान खाते बनाओ।

उत्तर . चालान पर लाभ १४,८६२ रु० ८ आ०।

५. १ जून १६५१ को, भार्गव कोल कं० ने २,००० टन कोयला अमृतलाल को २० रु० प्रति टन बीजक-मूल्य पर भेजा। खान की खुदाई व रेलवे का किराया क्रमशः १५ रु० व २ रु० प्रति टन हुये।

२५ जून १९५१ को, भेजने वाले को निम्न वार्ता सहित एक विक्री-पत्र प्राप्त हुआ, जिसमें १,००० टन २५ रु० प्र० ट० के हिसाब से बेचने का विवरण, ७५० रु० फुटकर खर्च, १२० रु० बीमा, ½% दलाली व २½% कमीशन सम्मिलित था। एजेण्ट ने शेष राशि का एक बैंक ड्राफ्ट भेज दिया तथा सारे माल में ४० टन की कमी होने की सूचना थी।

चालान पर लाभ व हानि दिखलाते हुये चालान करने वाले की पुस्तकों में आवश्यक खाते दिखलाओ।

उत्तर · लाभ ५,७०० रु०, स्टॉक १६,३२० रु०।

६. देहली के हसन ब्रॉदर्स ने अपने काबुल के एजेण्ट को ४५,००० रु० का बीजक-मूल्य का चालान भेजा। लागत में व्यय को पूरा करने के लिये ३०% जोडकर निकाला गया है।

छः माह के पश्चात् एजेण्ट ने १२,००० रु० निम्न प्रकार भेजे :—

माल की बिक्री का मूल्य		१३,०००
घटाया—५% कमीशन	६५०	
खर्च	३५०	१,०००
		१२,०००

एजेण्ट ने सूचना दी कि ६०० रु० बीजक-मूल्य का माल आवागमन में नष्ट हो गया, तथा ३१,४०० रु० का माल स्टॉक में शेष है।

हसन ब्रॉदर्स की पुस्तकों में उपर्युक्त व्यवहारों का लेखा किस प्रकार करोगे ?

उत्तर —लाभ १,५३८ रु० ७ आ० ४ पा०।

७. बम्बई की एक कॉटन मिल कम्पनी ने देहली के अपने विक्रय एजेण्ट एक्स को ५,००० रु० का कटपीस का एक चालान भेजा व माल के ८०% मूल्य का एक बिल लिखा।

एक्स द्वारा ७,२५० रु० का माल बेचा गया, जिस पर २५० रु० किराया व भाड़ा, १५ रु० गोदाम किराया, ४० रु० बीमा व १० रु० विविध खर्च हुये। वह २½% कमीशन पाने का अधिकारी है। विक्री-पत्र के साथ पूर्ण भुगतान की राशि एक चैक द्वारा भेजी गई व बिल का निश्चित तिथि पर भुगतान हो गया।

उपर्युक्त व्यवहारों को दोनों पक्षों के जर्नल में प्रविष्ट करो।

उत्तर :—लाभ १,७५३ रु० १२ आ०।

८. १ अगस्त १९५० को रगून के एक्स ने कलकत्ते के वाई को एक जहाज इमारती लकड़ी का कमीशन पर बेचने के लिये भेजा। इमारती लकड़ी की लागत १०,००० रु० थी। एजेण्ट कुल बिक्री पर ५% कमीशन (परिशोध आढ़त पर) पाने का अधिकारी है।

१५ अगस्त १९५० को माल प्राप्त हुआ और वाई ने उस दिन २३० रु० उतराई के दिये। १५ अक्टूबर १९५० को उसने १५० रु० गोदाम का किराया दिया। लकड़ी निम्न प्रकार बेची गई :—

१९५०			रु०
अगस्त	१८	अ को	६,२००
सितम्बर	३	ब को	४,४००
अक्टूबर	१	स को	३,२२०
,,	१५	द को	१,५००

अ ने १ सितम्बर को, स ने २० अक्टूबर को व द ने ३१ अक्टूबर को भुगतान किया। ब दिवालिया हो गया और २० दिसम्बर १९५० को रु० में चौदह आने का भुगतान किया।

वाई ने २५ सितम्बर को ८,००० रु० व शेष ३० दिसम्बर को एक्स को भेजा।

उपर्युक्त व्यवहारों का एक्स व वाई की पुस्तकों में कैसे लेखा करोगे ?

उत्तर :—लाभ ७,१०० रु०।

९. बंशीधर रामगोपाल कमीशन एजेण्ट हैं। १ मई १९५० को, उन्हें श्री बाबूलाल से चालान करने वाले के दायित्व पर, उनके मार्फत बेचने के लिये एक माल का चालान प्राप्त हुआ। एजेण्ट द्वारा इस माल से सम्बन्धित निम्न व्यवहार हुये।

मई १ प्राप्त माल के साथ श्री बाबूलाल का एक पत्र प्राप्त हुआ जिसमें उन्होंने बताया कि माल ५,६०० रु० से कम में न बिकेगा।

,, ८ माल पर ६३ रु० १२ आ० आन्त वाहन के दिये।

,, १० माल का एक भाग नीलाम द्वारा श्री प्रीतमचन्द को ४,००० रु० में उधार बेचा।

,, १२ शेष माल २,१५० रु० में नकद बेचा ।
,, १५ माल का गोदाम किराया, बीमा आदि २४४ रु० ६ आ० दिये ।
,, २० २५ रु० विविध व्यय व ५ विक्रय मूल्य पर कमीशन काटकर तथा शेष राशि के साथ विक्री-पत्र भेजा ।

उपर्युक्त व्यवहारों को श्री वशीधर रामगोपाल के जर्नल व रोकड़ पुस्तक में लिखो व आवश्यक खातों में खताओ ।

उत्तर.—एजेण्ट द्वारा भेजा हुआ शेष ५,४७६ रु० ६ आ० ।

१०. ३१ जनवरी १९५१ को अलीगढ़ की स्टैण्डर्ड लॉक कं० ने अपने कलकत्ते के एजेण्ट एक्स को कुछ तालों के बक्स का लोहे के इस्पाती सामान के साथ एक चालान भेजा, तथा उससे सम्बन्धित कार्यों पर २० रु० व्यय किये ।

उसी तिथि को उन्होंने अपने एजेण्ट को ८७५ रु० का एक नकली बीजक, जिसकी लागत ५९० रु० थी ५०० रु० के तीन माह के एक ड्राफ्ट के साथ, जो एक्स द्वारा स्वीकृत होकर १० फरवरी १९५१ को चालान करने वाले को प्राप्त हो गया है, भेजा ।

माल के कलकत्ता पहुँचने पर पता लगा कि खराब पैकिंग होने के कारण ४० रु० की लागत की वस्तुयें इतनी नष्ट हो गईं कि बिक्री-योग्य नहीं हैं और न उनका कोई दावा रेलवे कम्पनी पर ही किया जा सकता है ।

२८ फरवरी १९५१ को एक्स ने अपने प्रधान को सूचना दी कि उसने ?०० रु० का माल नकद बेचा व शेष माल ५९० रु० में ४ मार्च १९५१ को उधार बेचा, तथा उसी दिन उसने अलीगढ़ को शेष राशि जो उसे देनी थी एक बैंक ड्राफ्ट द्वारा विक्री-पत्र सहित भेज दी ।

एजेण्ट का बिक्री पर ५% कमीशन था व उसने २५ रु० चालान पर खर्च किये ।

उपर्युक्त व्यवहारों से चालान करने वाले की पुस्तकों में आवश्यक खाते बनाओ ।

उत्तर.—लाभ २१० रु० ८ आ० ।

११ बम्बई की एक वुलन कं० ने एक्स को कच्ची ऊन खरीदने के लिये पर्वतीय प्रदेशों का एजेण्ट नियुक्त किया व ३,००० रु० पेशगी भेजे । एजेण्ट प्रधान के लिये खरीदी हुई ऊन पर २ प्रतिशत कमीशन पाने का अधिकारी है ।

एक्स ने सूचना दी कि उसने ३,६०० रु० की ऊन खरीदी और २४५ रु० ऊन खरीदने में व्यय किये । ऊन बम्बई को भेज दी गई जिस पर एजेण्ट ने भाड़े आदि पर १५ रु० व्यय किये ।

उपर्युक्त व्यवहारों को दोनों पक्षों की पुस्तकों में आवश्यक खाते खोलकर दिखाओ ।

उत्तर:—एक्स पर शेष राशि ६३२ रु० ।

१२. २५ मार्च १९५१ को, कलकत्ते की दी फिलिप्स रेडियो कम्पनी लि० ने ६० रु० प्रति सेट की लागत के १,००० रेडियो सेट बम्बई की देसाई एण्ड क० को भेजे । चालान पर फिलिप्स के निम्नलिखित खर्चे हुये :—

किराया ७५० रु० ; भाड़ा ४५ रु० व बीमा २५० रु० । एजेण्ट पर अनुमान बीजक ९०,००० रु० का था और एजेण्ट का प्रतिफल कुल सकल बिक्री पर ५% नियत हुआ । एजेण्ट ने २०,००० रु० का उन पर लिखा हुआ एक पेशगी बिल स्वीकार किया ।

३० जून १९५० को १०० सेट अग्नि में बिल्कुल नष्ट हो गये और ६०० रु० बीमा कम्पनी से दावे के पूर्ण भुगतान में प्राप्त हुये । ३१ दिसम्बर १९५० को एजेण्ट से कम्पनी को निम्न विक्री-पत्र प्राप्त हुआ :—

	रु०	रु०
कुल बिक्री ६०० सेट		६०,०००
घटाया आबकारी-कर	१०,०००	
बन्दरगाह-कर	५००	
गोदाम व बीमा	४५०	
विक्रय खर्च	६००	
एजेण्ट का कमीशन	३,०००	
		१४,५५०
कुल राशि		४५,४५०

उन्होंने शेष राशि का एक ड्राफ्ट पहले के स्वीकृत बिल की राशि को घटाकर भेजा । एजेण्ट से यह सूचना प्राप्त हुई कि कुछ नष्ट सेटों की मरम्मत के लिये ६०० रु० की लागत का अनुमान है ।

फिलिप्स रेडियो कं० लि० की पुस्तकों में भेजे हुये माल व चालान पाने वाले का खाता बनाओ।
उत्तर :—लाभ २,७०५ रु० ।

१३. १ जुलाई १९५० को आत्माराम एण्ड सन्स ने भारत कॉमर्शियल बैंक के चालू खाते में १,००,००० रु० जमा करके व्यापार प्रारम्भ किया। एक सप्ताह के पश्चात् उन्होंने सोहनलाल के व्यापार को २०,००० रु० में खरीदा जिसमें निम्न सम्पत्तियाँ सम्मिलित थीं :—भवन १०,००० रु०; स्टॉक ५,००० रु० व फर्नीचर २,००० रु०। उन्होंने सोहनलाल के पुस्त-ऋण नहीं लिये परन्तु उन्होंने प्रत्येक ऋण की राशि पर ५% कमीशन लेकर संग्रह करना स्वीकार कर लिया। प्रथम छः माह में उनके निम्न व्यवहार हुये :—

जुलाई	१०	सोहनलाल को देयधन चैक द्वारा चुकाया।
अगस्त	१५	सोहनलाल के एक ऋणी से, १०० रु० बट्टा देने के बाद, १९०० रु० का एक चैक प्राप्त हुआ व उसे बैंक में भेजा।
सितम्बर	२	भवन व स्टॉक के अग्नि बीमा के लिये चैक द्वारा २५० रु० प्रीमियम दिया।
अक्तूबर	१०	बैंक में १०,००० रु० चालू खाते से स्थायी खाते में हस्तान्तरित कराये।
	३१	राजकीय बिक्री विभाग के १५,००० रु० के एक माल खरीदने के टेण्डर के लिये आवेदन किया व १,००० रु० की टेण्डर डिपॉजिट की राशि चैक द्वारा भेजी।
नवम्बर	५	सोहनलाल से उसके शेष ८,००० रु० के पुस्त-ऋणों को १०% बट्टे पर खरीदने का प्रबन्ध किया।
	२२	सोहनलाल को उसकी राशि का चैक द्वारा भुगतान किया।
दिसम्बर	९	राज्य के माल का टेण्डर स्वीकृत हो गया तथा शेष राशि देकर माल की प्राप्ति ली।

उपर्युक्त व्यवहारों को आत्माराम एण्ड सन्स के जर्नल में लिखिये।

अध्याय—१६

संयुक्त-साहस (Joint Venture)

दो या अधिक व्यक्तियो मे किसी व्यापार विशेष या सट्टे के लाभ या हानि को एक निश्चित अनुपात मे विभाजित करने की दृष्टि से स्थापित हुई अस्थायी साझेदारी को संयुक्त-साहस कहते है। यह साझेदारी बिना किसी फर्म के नाम से बनाई जाती है और इसका प्रत्येक साझीदार या साहसी अपने-अपने हिस्से की पूँजी देता है। जब संयुक्त-साहस का कार्य पूरा हो जाता है तब यह साझा स्वत. समाप्त हो जाता है।

हिसाब की दृष्टि से इस संयुक्त-साहस के लिये या तो अलग बहियाँ रखी जा सकती हैं या हर एक साझीदार अपने साधारण व्यापार की बहियों मे ही इस संयुक्त-साहस के लेन-देनो का लेखा कर सकता है।

(अ) संयुक्त-साहस के लिये अलग बहियाँ

जब इसके सब साझीदार एक ही स्थान पर हो और सयुक्त-साहस बहुत बड़े पैमाने पर हो तब एक अलग बैंक खाता और अलग ही अन्य बहियाँ इसके लिये रखी जाती हैं।

इस तरह की परिस्थिति मे संयुक्त साहस के सब खाते साधारण साझेदारी की भाँति रखे जाते हैं, सिर्फ व्यापार एवं हानि-लाभ खाते की जगह पर "संयुक्त-साहस-खाता" खोल दिया जाता है। हर एक साझीदार का अलग-अलग खाता खोला जाता है। जब संयुक्त-व्यापार का कार्य पूर्ण हो जाता है तब बहियाँ बन्द कर दी जाती है और साझेदारी का अन्त हो जाता है।

उदाहरण ६४

कलकत्ते के बी एव सी ने बर्मा-टिम्बर के व्यापार करने के लिये एक संयुक्त साहस बनाया। १ जुलाई १९५० को दोनों ने २५,००० रु० से बैंक में सम्मिलित खाता खोला, जिसमें बी ने १५,००० रु० और सी ने १०,००० रु० दिये। दोनों ने अपनी-अपनी रकम के अनुपात से लाभ-हानि विभाजित करना स्वीकार किया।

उन्होंने अपने बर्मा-स्थित एजेंट को टिम्बर खरीदने के लिये २२,१०० रु० भेज दिये। भाड़ा, बीमा तथा अन्य खर्चों के लिये कुल ३,६०० रु० कलकत्ते में चुकाये गये।

३१ दिसम्बर १९५० तक विक्रय २८,७४० रु० हुआ जिसमें से उन्होंने अपना प्रारम्भ में लगाया रुपया बिना व्याज के वापिस ले लिया और तब सयुक्त साहस समाप्त कर दिया। बाकी बची टिम्बर सी ने १,२६० रु० में खरीद ली और यह रकम उसके मुनाफे में से ले ली गई।

यह दिखलाते हुये खाते तैयार करो कि लाभ के रूप में बाँटने के लिये उपलब्ध नकद रकम कितनी है और वह किस प्रकार बी एवं सी में विभाजित की जायगी।

बी का खाता

१९५०		रु०	१९५०		रु०
दिस. ३१	बैंक खाता	१५,०००	जुलाई १	बैंक खाता	१५,०००
	बैंक खाता	२,४००	दिस. ३१	संयुक्त साहस खाता (लाभ का भाग)	२,४००
		१७,४००			१७,४००

सी का खाता

१९५०		रु०	१९५०		रु०
दिस. ३१	संयुक्त साहस खाता (माल)	१,२६०	जुलाई १	बैंक खाता	१०,०००
	बैंक खाता	१०,०००	दिस. ३१	संयुक्त साहस खाता (लाभ का भाग)	१,६००
	बैंक खाता	३४०			
		११,६००			११,६००

बैंक खाता

१९५०		रु०	१९५०		रु०
जुलाई १	बी	१५,०००	जुलाई १	संयुक्त साहस खाता	२२,१००
	सी	१०,०००		,, ,,	३,६००
दिस.३१	संयुक्त साहस खाता	२८,७४०	दिस.३१	बी	१५,०००
				सी	१०,०००
				बी	२,४००
				सी	३४०
		५३,७४०			५३,७४०

संयुक्त साहस खाता

१९५०		रु०	१९५०		रु०
जुलाई १	बैंक खाता (टिम्बर)	२२,१००	दिस.३१	बैंक खाता (विक्रय)	२८,७४०
	,, (व्यय)	३,६००		सी	१,२६०
दिस.३१	बी (लाभ)	२,४००			
	सी (लाभ)	१,६००,			
		३०,०००			३०,०००

(ब) संयुक्त-साहस के लिये अलग वहियाँ न हों

जब अलग वहियाँ रखना सम्भव या उचित न हो तब हर एक साझीदार अपनी साधारण व्यापार की वहियों में ही इस संयुक्त-साहस का हिसाब भी लिख लेता है। इस तरह की स्थिति में संयुक्त-साहस का लेन-देन वहियों मे दो भिन्न-भिन्न पद्धतियों के अनुसार लिखा जा सकता है।

प्रथम पद्धति :—

१. हर एक साझीदार अपनी-अपनी वहियों में एक खाता खोलता है जिसे '...... के साथ संयुक्त साहस खाता' ("Joint Venture with.. ....Account") कहते हैं। यह खाता व्यक्तिगत खाता माना जाता है। इस खाते में जितने भी रुपये दिये जाते हैं या खर्च होते हैं वे नाम की तरफ लिखे जाते हैं और जो रुपये प्राप्त होते हैं वे जमा किये जाते हैं—बिल्कुल उसी तरह से जैसे वह किसी व्यक्ति विशेष से व्यवहार करते समय करता है।

२. जब यह कार्य समाप्त हो जाता है तब हर एक साझीदार दूसरे साझीदार को संयुक्त साहस खाते की एक नकल, जैसी वह उसकी वहियों में उस समय हो, भेज देता है। इस नकल के प्राप्त होने पर हर एक साझीदार एक पूर्ण स्मारक संयुक्त साहस खाता (Memorandum Joint Venture Account or Statement) तैयार करता है और इस खाते में जो लाभ या हानि होती है वह साझेदारों में एक निश्चित अनुपात में विभाजित कर दी जाती है।

यह खाता स्मारक संयुक्त साहस खाता कहलाता है, क्योंकि यह दोहरा लेखा वही खाते का अंग नहीं होता। यह खाता व्यापार एवं हानि-लाभ खाते की भाँति संयुक्त साहस व्यापार का लाभ या हानि मालूम करने के लिये तयार किया जाता है।

३. अन्त में हर एक साझीदार अपने संयुक्त-साहस खाते में अपने लाभ या हानि के हिस्सों को नाम या जमा कर देता है और हानि-लाभ खाते में जमा या नाम लिख देता है। तब संयुक्त-साहस खाते का बेलेंस दूसरे पक्ष से कितना रुपया लेना या देना है, यह बतलाता है।

द्वितीय पद्धति :—

१ हर एक साझीदार अपनी-अपनी वहियों में एक खाता खोलता है जिसे 'श्री......के साथ संयुक्त साहस खाता' ("Joint Venture with ... Account") कहते हैं और यह खाता अवास्तविक

खाता समझा जाता है। माल की कीमत और खर्चे की रकम इस खाते में नाम लिखी जाती है और रोकड़ खाते या लेनदारो के खाते मे जमा कर दी जाती है।

२ हर एक साझीदार दूसरे साझीदार द्वारा किये गये खर्च और खरीदे गये माल की रकम से संयुक्त साहस खाते को नाम लिखता है और उस दूसरे साझीदार के व्यक्तिगत खाते मे जमा करता है। इस उद्देश्य के लिए हर एक साझीदार को हर एक लेन-देन की पूरी-पूरी सूचना देनी पड़ती है।

३. साझे का माल बिक जाने पर हर एक साझीदार उस बिक्री धन को, जो उसे प्राप्त हुआ है, रोकड़ या देनदारो के खाते के नाम लिखता है और संयुक्त-साहस खाते में जमा करता है

४. हर एक साझीदार दूसरे साझीदार द्वारा प्राप्त बिक्री धन से उसके व्यक्तिगत खाते के नाम लिखता है और संयुक्त-साहस खाते मे जमा करता है।

५. जब रुपया भेजा जाता है तब दूसरे साझीदार के व्यक्तिगत खाते मे नाम लिखकर रोकड़, बैंक या देय बिल खाते में जमा किया जाता है।

६. रुपया प्राप्त होने पर हर एक साझीदार रोकड़ या प्राप्य बिल खाते के नाम लिखकर दूसरे साझीदार के व्यक्तिगत खाते में जमा करता है।

७. इस संयुक्त-साहस खाते का बैलैंस लाभ या हानि होता है। यदि लाभ होता है तो वह साझीदार उसको संयुक्त-साहस खाते के नाम लिखकर अनुपातिक भाग अपने हानि-लाभ खाते में और साथ ही साथ दूसरे साझीदार के खाते मे भी जमा कर देता है। यदि हानि होती है तो इससे विपरीत किया जाता है।

८. दूसरे साझीदार के व्यक्तिगत खाते मे जो बैलेंस होता है वह या तो उसे देना होता है या उससे लेना होता है। यह रुपया चुका देने पर खाता बन्द हो जाता है।

नोट :—प्रथम पद्धति दूसरी पद्धति से अधिक सरल है, परन्तु कभी-कभी परीक्षा में दोनों में से किसी भी एक पद्धति पर प्रश्न दिया जा सकता है, इसलिये यह दूसरी पद्धति भी यहाँ पर बतलाई गई है। यदि किसी विशेष पद्धति से प्रश्न हल करने का निर्देश न हो तो विद्यार्थीगण दोनो में से किसी भी पद्धति का प्रयोग कर सकते हैं।

न बिका हुआ स्टॉक :—यदि इस संयुक्त-साहस का परिणाम इसके पूर्ण होने से पहले मालूम करना हो तो न बिके हुये स्टॉक का मूल्य लाभ या हानि मालूम करने से पहले खाते में अवश्य लिख लेना चाहिये।

ब्याज :—जब संयुक्त-साहस के साझीदार यह तय कर ले कि हर एक साझीदार की प्राप्तियों और भुगतानो पर इस कार्य के पूर्ण होने तक एक निश्चित दर से ब्याज लगा दिया जावेगा तब हर एक साझीदार का हिसाब एक चलते खाते (account current) की भाँति लिखा जायगा और ब्याज की रकम इस संयुक्त-साहस खाते मे हानि या लाभ मालूम करने से पहले लिख ली जावेगी।

उदाहरण ६५

ए और बी ने मिलकर एक एक संयुक्त-साहस व्यापार किया। दोनों ने एक-एक हजार रुपया लगाया और लाभ-हानि में बराबर के साझीदार हुए। उन्होंने २०० टन कोयला १० रु० प्रति टन के भाव से खरीदा।

ए ने १५० टन कोयला १२ रु० ८ आ० प्रति टन के भाव से बेचा और निम्नलिखित खर्च किया :—
गोदाम-खर्च ३५ रु० ; बीमा ५० रु० ; गाड़ी-भाड़ा १२० रु० ; सफर-खर्च १० रु० ; फुटकर ५ रु०।

बी ने बाकी कोयला १३ रु० प्रति टन बेचा तथा उस पर ४ आ० प्रति टन कमीशन लिया और उसने ३२ रु० गाड़ी-भाड़ा, १५ रु० बीमा और ३ रु० फुटकर खर्च के दिये।

उपर्युक्त व्यवहारों को दोनों साझीदारों के बहीखातों में दिखलाओ।

प्रथम पद्धति

ए की खाता वही

वी के साथ संयुक्त साहस खाता

	रु	आ.	पा		रु.	आ.	पा.
रोकड़ (माल)	१,०००	–	–	रोकड़ (विक्रय धन)	१,८७५	–	–
रोकड़ (व्यय)	२२०	–	–				
लाभ हानि खाता	१२१	४	–				
शेष वी को देय	५३३	१२	–				
	१,८७५	–	–		१,८७५	–	–

वी की खाता वही

ए के साथ संयुक्त साहस खाता

	रु०	आ	पा.		रु	आ.	पा.
रोकड़ (माल)	१,०००	–	–	रोकड़ (विक्रय)	६३७	८	–
,, (व्यय)	५०	–	–	शेष ए से प्राप्य	५३३	१२	–
,, लाभ-हानि खाता	१२१	४	–				
	१,१७१	४	–		१,१७१	४	–

मेमोरेण्डम संयुक्त साहस खाता

(ए व वी दोनों की पुस्तकों में)

	रु.	आ	पा.		रु	आ.	पा.
क्रय	२,०००	–	–	विक्रय	२,५१२	८	–
व्यय	२७०	–	–				
लाभ ए	१२१	४	–				
वी	१२१	४	–				
	२,५१२	८	–		२,५१२	८	–

द्वितीय पद्धति

ए की खाता वही

वी के साथ संयुक्त साहस खाता

	रु	आ.	पा		रु	आ.	पा.
रोकड़ (माल)	१,०००	–	–	रोकड़ (विक्रय धन)	१,८७५	–	–
,, (व्यय)	२२०	–	–	वी (विक्रय धन)	६३७	८	–
वी (माल)	१,०००	–	–				
,, (व्यय)	५०	–	–				
,, (लाभ का भाग)	१२१	४	–				
लाभ-हानि खाता (लाभ का भाग)	१२१	४	–				
	२,५१२	८	–		२,५१२	८	–

वी

	रु	आ	पा.		रु	आ	पा.
संयुक्त साहस खाता	६३७	८	–	संयुक्त साहस खाता	१,०००	–	–
शेष प्राप्ति	५३३	१२	–	,, ,,	५०	–	–
				,, ,, (लाभ)	१२१	४	–
	१,१७१	४	–		१,१७१	४	–

बी की खाता बही

ए के साथ संयुक्त साहस खाता

	रु.	आ.	पा.		रु	आ.	पा.
रोकड़ (माल)	१,०००	–	–	रोकड़ (विक्रय)	६३७	८	–
,, (व्यय)	५०	–	–	ए (विक्रय)	१,८७५	–	–
ए (माल)	१,०००	–	–				
ए (व्यय)	२२०	–	–				
ए (लाभ का भाग)	१२१	४	–				
लाभ-हानि खाता (लाभ का भाग)	१२१	४	–				
	२,५१२	८	–		२,५१२	८	–

ए

	रु.	आ	पा		रु.	आ.	पा.
संयुक्त साहस खाता	१,८७५	–	–	संयुक्त साहस खाता	१,०००	–	–
				,, ,,	२२०	–	–
				,, ,, (लाभ)	१२१	४	–
				शेष आ/ले	५३३	१२	–
	१,८७५	–	–		१,८७५	–	–

उदाहरण ६६.

जोन्स (एक इंजीनियर) एवं ब्राउन (एक ठेकेदार) दोनों ने साझे में एक बड़ा मकान छोटे-छोटे हिस्सों में (Flats) परिवर्तन करने के लिये खरीदा। जोन्स ने मकान का मूल्य १६,००० रु० तथा कानूनी-खर्च ८५० रु० बैंक से उधार लेकर दिये।

ब्राउन ने ४,००० रु० इमारती सामान के तथा २,८०० रु० मकान में परिवर्तन कराने की मजदूरी के दिये। मकान के साथ खरीदी गई कुछ जमीन ३,१०० रु० में बेच दी और यह रुपया ब्राउन ने प्राप्त किया। तैयार हुई इमारत २४,६०० रु० में बिकी, जिसमें से ५०० रु० विक्रय खर्च के कम करके बाकी रुपया जोन्स न प्राप्त किया और उसने उसमें से ऋण तथा व्याज के ४०० रु० बैंक को दिये।

समझौते के अनुसार जोन्स को ऋण पर व्याज के लिये तथा ब्राउन को परिवर्तनों की लागत पर १५% अतिरिक्त खर्चों के लिये क्रेडिट करने के पश्चात् लाभ में से जोन्स को २/३ और ब्राउन को १/३ हिस्सा मिला है।

प्रत्येक साझी ने अपने वहीखातों में संयुक्त-साहस पर उसने जो धन खर्च किया तथा प्राप्त किया उसका व्यौरा रक्खा है। संयुक्त साहस के लाभ-हानि का विवरण बनाओ और इसे प्रत्येक खातावही में साझीदारों के संयुक्त साहस का खाता जैसा वह अन्तिम निपटारा होने पर प्रगट होगा उस तरह तैयार करो।

मेमोरेण्डम संयुक्त साहस खाता
(दोनों पक्षों की पुस्तकों में)

	रु०		रु०
मकान की लागत	१६,०००	भूमि का विक्रय	३,१००
वैधानिक व्यय	८५०	मकान का विक्रय	२४,१००
सामान	४,०००		
मजदूरी	२,८००		
व्याज	४००		
अतिरिक्त व्यय	१,०२०		
लाभ—जोन्स	१,४२०		
ब्राउन	७१०		
	२७,२००		२७,२००

जोन्स की खाता-वही

ब्राउन के साथ संयुक्त साहस खाता

	रु०		रु०
रोकड़ (मकान का लागत व्यय)	१६,०००	रोकड़ (विक्रय)	२४,१००
,, (वैधानिक व्यय)	८५०		
ब्याज खाता	४००		
लाभ-हानि खाता (लाभ का भाग)	१,४२०		
शेष ब्राउन को देय	५,४३०		
	२४,१००		२४,१००

ब्राउन की खाता-वही

जोन्स के साथ संयुक्त साहस खाता

	रु०		रु०
सामान खाता	४,०००	रोकड़ (विक्रय)	३,१००
मजदूरी खाता	२,८००	शेष जोन्स से प्राप्य	५,४३०
व्यय खाता	१,०२०		
लाभ-हानि खाता (लाभ का भाग)	७१०		
	८,५३०		८,५३०

उदाहरण ६७

कलकत्ते का सी और देहली का डी दोनों संयुक्त साहस में पुरानी मोटरों को बेचने का व्यापार करते हैं। सी का कार्य खरीदना और डी का कार्य बेचना है। लाभ-हानि में सी २/५ और डी ३/५ के हिस्सेदार हैं। डी ने व्यापार के लिये सी को १०,००० रु० दिये।

सी ने १० मोटरकार ८,००० रु० में खरीदीं और उनकी मरम्मत में ४,३५० रु० खर्च किये तथा उनको देहली भेज दिया। उसने २½ प्रतिशत खरीदने का कमीशन तथा ३५० रु० फुटकर-खर्च के भी दिये।

डी ने ७५० रु० रेल-किराया और ३७५ रु० चुङ्गी के देकर मोटरें छुड़ा लीं। चार मोटरें १,६०० रु० प्रति मोटर, दो १,८०० रु० प्रति मोटर, तीन २,२५० रु० प्रति मोटर के हिसाब से क्रमश: बेच दीं तथा एक मोटर २,१०० रु० में अपने लिए रखली। उसने निम्न खर्चा किया—बीमा १५०; गैरेज-किराया २५० रु०; दलाली ६८५ रु०; और फुटकर-खर्च ४५० रु०।

प्रत्येक साझी ने अपने वहीखातों में संयुक्त साहस पर जो धन उसने खर्च किया तथा प्राप्त किया उसका पूरा ब्योरा रक्खा है। संयुक्त साहस के लाभ-हानि का विवरण बनाओ और यह मानते हुये कि दोनों साझीदारों का हिसाब बिल्कुल साफ हो गया है प्रत्येक साझी के वहीखातों में संयुक्त-साहस का खाता तैयार करो।

संयुक्त साहस विवरण

	रु.	आ.	पा.		रु.	आ.	पा.
कारों की कीमत	८,०००	—	—	विक्रय	१६,७५०	—	—
पुनर्सुधार व्यय	४,३५०	—	—	डी	२,१००	—	—
क्रय कमीशन, २½%	२००	—	—				
विविध व्यय	८००	—	—				
रेल-भाड़ा	७५०	—	—				
चुङ्गी	३७५	—	—				
बीमा	१५०	—	—				
गैरेज किराया	२५०	—	—				
दलाली	६८५	—	—				
लाभ:—सी १,३१६		—	—				
डी १,६७४	२,९९०	—	—				
	१८,८५०	—	—		१८,८५०	—	—

सी की पुस्तकें

डी के साथ संयुक्त साहस खाता

	रु०	आ	पा.		रु.	आ.	पा.
रोकड़ (१० कारों की कीमत)	८,०००	—	—	रोकड़	१०,०००	—	—
,, (पुनसुधार व्यय)	४,३५०	—	—	रोकड़	४,२१६	—	—
,, (कमीशन)	२००	—	—			—	
,, (विविध व्यय)	३५०	—	—			—	
लाभ-हानि खाता (लाभ का भाग)	१,३१६	—	—			—	
	१४,२१६	—	—		१४,२१६	—	—

डी की पुस्तकें

सी के साथ संयुक्त साहस खाता

	रु०	आ	पा		रु.	आ.	पा.
रोकड़	१०,०००	—	—	रोकड़ (४ कारों का विक्रय)	६,४००	—	—
रोकड़ (रेल-भाड़ा)	७५०	—	—	,, (२ कारों का विक्रय)	३,६००	—	—
,, (चुङ्गी)	३७५	—	—	,, (३ कारों का विक्रय)	६,७५०	—	—
,, (बीमा)	१५०	—	—	कार खाता	२,१००	—	—
,, (गैरेज-किराया)	२५०	—	—				
,, (दलाली)	६८५	—	—				
,, (विविध व्यय)	४५०	—	—				
लाभ हानि खाता (लाभ का भाग)	१,६७४	—	—				
रोकड़	४,२१६	—	—				
	१८,८५०	—	—		१८,८५०	—	

प्रश्न

१. सयुक्त साहस से आप क्या अर्थ समझते हैं ? सयुक्त साहस के व्यवहारों का लेखा करने की विभिन्न पद्धतियाँ बतलाइये।

२. प्रत्येक पक्ष की पुस्तकों में सयुक्त साहस के व्यवहारो का लेखा करने की दो पद्धतियाँ बतलाइये, जबकि संयुक्त साहस के लिये अलहदा पुस्तकें नहीं रक्खी जातीं ?

३. ए व बी ने एक नये छविगृह की बिल्डिंग बनाने का १,००,००० रु० के मूल्य का संयुक्त ठेका लिया। ए ने २५,००० रु० व बी ने १५,००० रु० देकर एक बैंक में सयुक्त खाता खोला। ठेके के मूल्य का ८०,००० रु० समय-समय पर किस्तों में प्राप्त हुआ।

वे क्रमशः २/३ व १/३ लाभ या हानि वितरित करने के लिये राजी हुये तथा उनके निम्न व्यवहार थे :—

मजदूरी दी ३०,००० रु०; सामान खरीदा ७०,००० रु०; ए के स्टॉक से माल आया ५,००० रु०; ४,००० रु० का बी के स्टॉक से माल आया, ए द्वारा शिल्पकार को दी गई फीस २,००० रु०।

ठेका सतोषजनक रूप से पूर्ण रहा और ठेके का शेष मूल्य समय पर प्राप्त हो गया।

ए ने शेष माल १०,००० रु० में लेकर सयुक्त व्यापार (Venture) बन्द कर दिया।

लाभ-हानि दिखलाते हुये एक संयुक्त खाता और रोकड़ का अन्तिम वितरण दिखाते हुये ए व बी के खाते बनाओ।

उत्तर : हानि १,००० रु०।

४. अहमदाबाद के ए व बम्बई के बी नामक व्यापारी कलकत्ते के सी को सयुक्त साहस पर बेचने के लिये क्रमशः ३/५ व २/५ संयुक्त जोखिम के अनुपात में १०० कपड़े की गाँठें भेजने के लिये राजी हुये।

ए ने ६० गाँठें (मूल्य १,२०० रु० प्रत्येक) १,८०० रु० किराया व अन्य खर्चे देकर भेजीं; बी ने ४० गाँठें (मूल्य १,१०० रु० प्रत्येक) १,००० रु० किराया व अन्य खर्चे देकर भेजीं।

सी ने सारी गाँठें १,४०,००० रु० में बेचीं जिसमें से सी ने १,६०० रु० खर्च व २% कमीशन काटकर ७०,००० रु० ए को व शेष बी को भेजे।

उपर्युक्त व्यवहारों को (दोनों पद्धतियों से) ए व बी की पुस्तकों में लिखो।

उत्तर: लाभ १५,४०० रु०, ए को देय राशि १३,०४० रु०।

५. विदेशों में माल भेजने के लिये ए व बी संयुक्त साझी हुये। ए ने १५,००० रु० का माल १,५०० रु० किराया व ५७५ रु० विविध खर्चे देकर भेजा। बी ने १० ७५० रु० का माल १,२०० रु० किराया व बीमा तथा ७५० रु० विविध खर्चे देकर भेजा। बी ने ए को उपक्रम के सम्बन्ध में ६,००० रु० दिये।

ए ने कुल माल के ३७,५०० रु० बिक्री धन का भुगतान व बिक्री-पत्र (Account Sales) प्राप्त हुआ। अन्तिम भुगतान पूर्ण हुआ समझकर उपर्युक्त व्यवहारों को क्रमशः ए व बी की पुस्तकों में लिखो।

उत्तर: लाभ ७,७२५ रु०।

६. जैक्सन एण्ड कं० बर्ड एण्ड कं० के साथ १०,००० रु० का माल संयुक्त चालान पर भेजने के लिये राजी हुई। जैक्सन एण्ड कं० ने सारा माल भेजा जबकि बर्ड एण्ड कं० ने ४२० रु० भाड़ा व बीमा तथा १५० रु० सामान्य खर्चों के दिये। बर्ड एण्ड कं० ने चालान पाने वाली पिट्मैन एण्ड कं० पर ३ माह का ७,५०० रु० का एक बिल लिखा तथा ५% पर बिल को भुनाकर १ जुलाई १६५० को कुल प्राप्त धन जैक्सन एण्ड कं० को भेजा।

१ जनवरी १६५१ को बर्ड एण्ड कं० ने ६,३०० रु० विक्रय-पत्र सहित प्राप्त किये। उसने समझौते के अनुसार शेष राशि जैक्सन एण्ड कं० को भेजी।

जैक्सन एण्ड कं० को २/३ व बर्ड एण्ड कं० को १/३ लाभ बाँटते हुये एक संयुक्त चालान खाता (Joint Consignment Account) बनाओ व दोनों पक्षों की पुस्तकों में खाते लिखो।

उत्तर: लाभ ३,१३६ रु० ४ आ०।

७. एक्स व वाई संयुक्त रूप से खण्डित धातु (Scrap metal) के खरीदने व बेचने का सट्टा करते हैं। संयुक्त खाते के व्यवहार कभी एक्स व कभी वाई द्वारा किये जाते हैं तथा प्रत्येक पक्ष अपने व्यवहार अपने व्यापार द्वारा करता है। यह समझौता हुआ कि लाभ बराबर-बराबर बँटेगा तथा जो भी खण्डित धातु बेचे वह सकल बिक्री का ५% कमीशन पाने का अधिकारी होगा। उनके निम्नलिखित व्यवहार हुये:—

१६५१			रु०
जनवरी	१	एक्स ने खण्डित धातु के लिये भुगतान किया	५००
,,	१६	वाई ,, ,, ,, ,,	८००
फरवरी	१०	वाई ने भाड़ा दिया	१२
,,	१२	एक्स ने धातु नकद बेची	६२०
,,	२८	एक्स के आदेशानुसार वाई ने एक ग्राहक को धातु भेजी जिसने एक्स को भुगतान किया	४००
,,	,,	वाई ने भेजने का व्यय दिया	१०
मार्च	१५	एक्स ने धातु खरीदी व भुगतान किया	५००
,,	१७	एक्स ने भाड़ा दिया	१७
,,	२०	वाई ने धातु नकद बेची	४००

३१ मार्च १६५१ को बिना बिकी धातु ६६० रु० की मूल्यांकित रकम को वाई ने रख ली। प्रत्येक पक्ष की पुस्तकों में संयुक्त साहस खाता बनाइये तथा ३१ मार्च १६५१ को लाभ शामिल करते हुये खातों की स्थिति दिखाइये।

उत्तर: लाभ १४० रु०; एक्स को देय-राशि ११८ रु०।

८. कलकत्ते के स्टोकमैन व हार्टहेड बम्बई में संयुक्त साहस व्यापार करने के हेतु सम्मिलित हुये तथा उनके निम्नलिखित व्यवहार हुये:—

१६५१			रु०
जनवरी	१	स्टोकमैन ने रोकड़ी माल खरीदा	२,०००
,,	,,	स्टोकमैन ने उस पर किराया व जहाजी खर्चे दिये	१३०
,,	,,	स्टोकमैन ने हार्टहेड पर एक माह का बिल लिखा	१,६००
,,	,,	स्टोकमैन ने उपरोक्त बिल भुनाया और रोकड़ी प्राप्त किये	१,५८८
,,	१५	माल बम्बई पहुँचा व हार्टहेड ने उतराई (landing charges) दी	८५
,,	२०	हार्टहेड ने माल का ½ भाग रोकड़ी बेचा	८५०
,,	३१	हार्टहेड ने माल का ½ भाग और रोकड़ी बेचा	९००
फरवरी	४	हार्टहेड ने बिल का भुगतान किया	१,६००
,,	१५	हार्टहेड ने शेष माल रोकड़ी बेचा	८००

दोनों पक्षों में बराबर-बराबर लाभ बाँटते हुये एक सयुक्त-साहस खाता बनाओ। बिल का बट्टा सयुक्त-साहस खाते में लिखो।

उत्तर : लाभ ३८० रु०।

९. ३ जनवरी १९५१ को अजमेर के ए व बम्बई के बी नाम के दो व्यापारी एक माल के चालान को बेचने के लिये (बराबर की लाभ व हानि बराबर-बराबर पर) साझी हुये।

अगले दिन ए ने १०,००० रु० का नकद माल खरीदकर बी को बेचने के लिये भेजा। उसने ४०० रु० किराया, ३५० रु० दलाली व १०० रु० विविध खर्चों के दिये।

२० जनवरी १९५१ को बी को माल प्राप्त हुआ तथा उसने ६०० रु० चुगी के दिये। १५ फरवरी १९५१ को उसने २०० रु० गोदाम किराया व ९० रु० बीमा के दिये। उसी दिन १६,००० रु० मे सारा चालान बेचा।

संयुक्त-साहस का परिणाम दिखाते हुये एक विवरण बनाओ तथा प्रत्येक पक्ष की खाता वही में एक-एक खाता बनाओ।

उत्तर : लाभ ४,२६० रु० ; बी पर ए का धन १२,९८० रु०।

अध्याय—१७

वर्गीय-संतुलन (Sectional Balancing)

जब व्यापार बहुत विशाल होता है और जब खाता-बही में अनेक खाते होते हैं तब दो विशेष कठिनाइयाँ उपस्थित होती हैं। प्रथम तो यह कि एक हिसाब रखने वाला सब खाते समय पर नहीं खता सकेगा और इस तरह से अन्तिम खातों की तैयारी बहुत देर में होगी। द्वितीय, यदि तलपट का मेल न बैठा हो तो सारी खाता-बही को देखना पड़ेगा। इन कठिनाइयों को सुलझाने के लिये ही वर्गीय-संतुलन की पद्धति अपनाई गई है। इस वर्गीय-संतुलन पद्धति का कार्य निम्नलिखित तरह से होता है :—

१. खाता-बही को निम्न तीन वर्गों मे विभाजित कर दिया जाता है, (अ) क्रय-खाता बही, जिसमें लेनदारों के खाते लिखे जाते हैं; (ब) विक्रय खाता बही, जिसमे देनदारो के खाते लिखे जाते हैं; और (स) सामान्य-खाता बही, जिसमें सब वास्तविक और अवास्तविक खाते लिखे जाते हैं। प्रथम दो खाता बहियों को सहायक खाता-बही कहते हैं और वे साधारणत जूनियर क्लर्क के अधिकार में रहती हैं और जबकि सामान्य-खाता बही अकाउन्टेण्ट के अधिकार मे रहती है।

२. हरएक सहायक-खाता बही की शुद्धता को अलग-अलग जाँचने के लिये सामान्य खाता बही में हरएक सहायक-खाता बही से सम्बन्धित एक खाता खोलते हैं। क्रय-खाता बही से सम्बन्धित खाते को 'क्रय-खाता बही समायोजन खाता' (Purchases Ledger Adjustment Account) या 'क्रय-खाता-बही नियंत्रण खाता' (Purchases Ledger Control Account) या 'कुल लेनदार खाता' (Total Creditors' Account) कहते हैं। जबकि विक्रय खाता-बही से सम्बन्धित खाते को 'विक्रय खाता बही समायोजन खाता' (Sales Ledger Adjustment Account) या 'विक्रय खाता बही नियन्त्रण खाता' (Sales Ledger Control Account) या 'कुल देनदार खाता' (Total Debtors' Account) कहते हैं। इनको संक्षेप में कुल खाते' (Total Accounts) कहते हैं। इन 'कुल खातों' को सामान्य-खाता बही मे रखने का अभिप्राय यही है कि वे खाते सम्बन्धित खाता-बही को योग रूप से सारांश में दिखलाये जिससे हर एक सहायक खाता के बैलेंसों को इनके जोड़ से मिलाया जा सके।

इसलिये सामान्य-खाता-बही में यदि कुल देनदार खाता और कुल लेनदार खाता खोले गये हों तो इन तीनों खाता बहियों की शुद्धता निम्नलिखित प्रकार से जाँची जा सकती है :—

(अ) सामान्य-खाता बही को एक तलपट बनाकर, जिसमें तमाम वास्तविक और अवास्तविक तथा दोनों 'कुल खातों' के बैलेंस दिये हों, जाँचा जा सकता है।

(ब) क्रय-खाता बही को उसके विभिन्न खातों के बैलेंसों के जोड़ की कुल तुलना लेनदार खाता (Total Creditors' Account) के बैलेंस से करके जाँचा जा सकता है।

(स) विक्रय-खाता बही को इसके विभिन्न खातों के बैलेंसों के जोड़ की कुल देनदार खाते (Total Debtors' Account) के बैलेंस से तुलना करके जाँचा जा सकता है।

इस तरह यह मालूम करना सम्भव हो जाता है कि अशुद्धि किस खाता बही में है और इसके लिये कौन क्लर्क उत्तरदायी है। उदाहरणार्थ :—

(अ) यदि सामान्य-खाता बही का तलपट मिल जाता है और यदि क्रय-खाता बही के विभिन्न खातों के बैलेंसों का जोड़ कुल लेनदार खाते के बैलेंस से मिल जाता है परन्तु विक्रय-खाता बही के विभिन्न खातों के बैलेंसों का जोड़ कुल देनदार खाते के बैलेंस से मेल नहीं खाता तो विक्रय-खाता बही गलत है।

(ब) यदि सामान्य-खाता बही का तलपट मिल जाये और यदि विक्रय-खाता बही के विभिन्न

खातों के बैलेंसों का जोड़ कुल देनदार खाते के बैलेन्स से मिल जावे, परन्तु क्रय-खाता बही के विभिन्न खातो के बैलेसो का जोड़ कुल लेनदार खाते के बैलेंस से न मिले, तो क्रय-खाता बही गलत है।

(स) यदि सहायक खाता बहियाँ अपने अपने 'कुल खातो' से मिल जावें, परन्तु सामान्य-खाता बही का तलपट न मिलता हो तो गलती सामान्य-खाता बही मे समझनी चाहिए।

(द) यदि सहायक-खाता बही अपने नियंत्रण खाते (Control Account) से न मिले, और सामान्य-खाता बही का तलपट भी न मिले और यदि दोनो ही अवस्थाओ में यह अन्तर बराबर है तो गलती सम्बन्धित नियन्त्रण खाते मे ही है।

नोट :—इन सब उदाहरणो में यह मान लिया गया है कि प्रारम्भिक लेख की बहियों मे कोई गलती नहीं है।

इसलिए इस वर्गीय-संतुलन पद्धति का अर्थ यह है कि खाता-बही वर्गों में विभाजित कर दी जाती है और हर एक वर्गीय खाता-बही की शुद्धता अलग-अलग एक कुल खाता (Total Account) तैयार करके परख ली जाती है।

कुल खाते बनाना (Construction of Total Accounts)

कुल देनदार खाता (Total Debtors' Account) और कुल लेनदार खाता (Total Creditors' Account), जिनमे विक्रय-खाता बही और क्रय-खाता बही के व्यवहारो का सारांश होता है, प्रारम्भिक बहियो से तैयार किये जाते है। इसलिये यह परमावश्यक है कि किसी भी व्यक्तिगत खाते मे तब तक कोई प्रविष्टि (Entry) नहीं करनी चाहिए जब तक वह प्रारम्भिक बहियो मे लिख न ली जावे। कुल खातों (Total Accounts) के तैयार करने के लिये जो सूचना चाहिए वह निम्नलिखित प्रकार से प्राप्त की जाती है।:—

कुल देनदार खाता

नाम :—१. शुरू का बैलेंस जो तमाम देनदारो का योग होता है जर्नल की प्रारम्भिक प्रविष्टि से लिया जाता है।

२. कुल बिक्री विक्रय-बही के योग से मालूम की जाती है।

३ ब्याज के खर्चे, अप्रतिष्ठित चैक और बिल जर्नल से मालूम किये जाते हैं।

जमा :—१. प्राप्त हुआ रोकड़ी रुपया रोकड़ बही के नाम की तरफ से मालूम किया जाता है।

२. बट्टा खाता भी रोकड़ बही के नाम तरफ के बट्टे खाते का योग होता है।

३. वापिस किया माल व अन्य छूट विक्रय-वापिसी बही का योग होता है।

४. प्राप्य बिले प्राप्य बिल पुस्तक (Bills-Receivable Book) की योग होती है।

५. डूबत खाते जर्नल से मालूम किये जाते है।

६. ट्रांसफर यदि कोई होता है तो वह जर्नल से मालूम किया जाता है।

कुल लेनदार खाता

नाम :—१. रोकड़ी दिया हुआ रुपया रोकड़-बही की जमा तरफ से मालूम किया जाता है।

२. प्राप्त हुआ बट्टा भी रोकड़ की जमा तरफ के बट्टे खाने का योग होता है।

३. क्रय वापिसी आदि क्रय-वापिसी बही के योग होते हैं।

४. देय बिले देय बिल पुस्तक (Bills Payable Book) की योग है।

५, यदि कोई ट्रांसफर है तो वह जर्नल से मालूम किया जाता है।

जमा :—१. शुरू के बैलेंस जो तमाम लेनदारों के योग होते हैं जर्नल की प्रारम्भिक प्रविष्टि से मालूम किये जाते हैं।

२ कुल क्रय, क्रय-बही का योग होता है।

निम्नलिखित कुल देनदार खाता और कुल लेनदार खाता के नमूने हैं :—

कुल देनदार खाता (सामान्य खाता वही में)

१९५१		रु०	१९५१		रु०
जन १	शेष नी/ला	७,६२१	जन ३१	रोकड़	१०,२१६
३१	विक्रय	१२,४२५		बट्टा	३१०
	अनादरित प्राप्य बिल	२५०		प्राप्य बिल	१,३६५
	ब्याज	१२		वापिसी	२२०
				डूबत ऋण	३०१
				हस्तांतरण	२५०
				शेष आ/ले	७,६४६
		२०,३०८			२०,३०८

कुल लेनदार खाता (सामान्य खाता वही में)

१९५१		रु०	१९५१		रु०
जन ३१	वापिसी	५०६	जन १	शेष नी/ला	६,९८०
	रोकड़	७,१०३	३१	क्रय	९,२६५
	बट्टा	३५४			
	देय बिल	२,४२०			
	हस्तांतरण	२५०			
	शेष आ/ले	५,६१२			
		६,२४५			१६,२४५

स्थानान्तर (Transfers) .—कभी-कभी एक ही व्यक्ति से माल खरीदा भी जाता है और उसको बेचा भी जाता है। इस दशा में उस व्यक्ति के लिए दो खाते खोलने आवश्यक हैं, अर्थात् एक क्रय-खाता वही में और दूसरा विक्रय-खाता वही में, परन्तु अन्त में उसका हिसाब तै करने के लिए एक खाते की रकम दूसरे खाते में कम करनी पड़ती है। इसलिए छोटी रकम बड़ी रकम में स्थानान्तरित करदी जाती है। इसके यह अर्थ हुये कि एक खाता क्रय-खाता वही से विक्रय-खाता वही में या इसके विपरीत ट्रांसफर करना है। इस तरह के ट्रांसफर हमेशा जर्नल के द्वारा करने चाहियें ताकि वे कुल खाते तैयार करते समय छूट न जावें।

अतः यदि एक व्यक्ति विशेष का छोटा खाता क्रय-खाता वही में है और उसका बड़ा खाता विक्रय-खाता वही में है तो यह आवश्यक ट्रांसफर निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि द्वारा किया जावेगा :—

कुल लेनदार खाता.

कुल देनदार खाता

(अमुक व्यक्ति के खाते का क्रय-खाता वही से विक्रय खाता वही को स्थानान्तरण)

कभी-कभी ट्रांसफर, एक खाते से दूसरे खाते में उसी खाता वही में करते हैं। यह भी जर्नल के द्वारा किया जाता है। इस तरह का ट्रांसफर कुल खातों (Total Accounts) पर कोई प्रभाव नहीं डालता है।

विपरीत बकाया शेष (Contra Balances) .—नियमानुसार क्रय-खाता वही के सब बैलेंस जमा बैलेंस होने चाहिये और विक्रय-खाता वही के सब बैलेंस नाम बैलेंस होने चाहिये, परन्तु व्यवहार में कभी-कभी ऐसा भी हो सकता है कि विक्रय-खाता वही के कुछ खातों का बैलेंस जमा बैलेंस हो और क्रय-खाता वही के कुछ खातों का बैलेंस नाम बैलेंस हो। उदाहरणार्थ, यदि कोई ग्राहक, जिसने अपना तमाम खाता चुका दिया है, कुछ माल वापिस करे तो उसके खाते में यह रकम जमा की जावेगी और इस तरह से उसका खाता थोड़ा-सा जमा बैलेंस दिखलायेगा।

जब क्रय-खाता वही और विक्रय-खाता वही में नाम और जमा दोनों बैलेंस होते हैं तब सामान्य खाता वही में रक्खे जाने वाले और कुल खातों में भी दोहरे बैलेंस होंगे। इस तरह से कुल देनदार खाते में नाम बैलेंस तो [illegible] देनदारों (Gross debtors) से [illegible] वाली रकम और थोड़ा-

सा जमा बैलेंस उन खातो को बतलाता है जिनका जमा है। इसी तरह से कुल लेनदार खाते में जमा बैलेंस होगा, जो सकल लेनदार (Gross Creditors) सूचित करता है। उसमे जो थोड़ी-सी रकम नाम की तरफ रहती है वह उन खातो को बतलाती है जिनके नाम मे कुछ रुपया है।

बैलेंस-शीट तैयार करते समय सब नाम बेलेंस, चाहे वे विक्रय-खाता बही में हों या क्रय-खाता बही में, देनदार माने जाते है और सब जमा बैलेंस चाहे वे क्रय-खाता बही में हों या विक्रय-खाता बही मे) व्यापार के लेनदार माने जाते हैं।

प्रारम्भिक बहियों का विश्लेषण—

तमाम देनदारों और लेनदारो के खाते तैयार करने के लिए कुछ प्रविष्टियों का योग जानना आवश्यक है; जैसे—डूबत खाते, ब्याज खर्च, न-सिकरे हुए चैक और बिल की रकम, देनदारो से प्राप्त हुआ रुपया, लेनदारो को अदा किया हुआ रुपया और ट्रांसफरो की रकम आदि। इनका योग दो प्रकार से मालूम किया जा सकता है :—

(१) समय-समय पर जर्नल और रोकड़-बही से विक्रय-खाता बही और क्रय-खाता बही से सम्बन्धित रकमे छाँट करके अलग से जोड़ी जा सकती हैं और इस तरह से कुल खातों की तमाम रकमें मालूम हो सकती हैं। छाँट का यह कार्य जर्नल और रोकड़ी-बही के पन्ना नम्बर वाले खाने मे विक्रय-खाता बही और क्रय-खाता बही से सम्बन्धित रकमो को खताते समय कुछ विशेष चिह्न लगाकर सरल किया जा सकता है। यह पद्धति छोटे व्यापारो मे ठीक काम दे सकती है, परन्तु जब व्यापार बहुत बड़ा होता है तब इस पद्धति में बहुत समय लग सकता है; इसलिए दूसरी पद्धति अपनाना अधिक सुविधाजनक होगा।

(२) जर्नल और रोकड़ बही में क्रय-खाता बही और विक्रय-खाता बही से सम्बन्धित रकमों को लिखने के लिए दो अलग खाने बना दिये जाते है। इन विश्लेषण के खानो का योग कुल खाते तैयार करने मे सहायक होता है। इस प्रकार के खानो वाला जर्नल और रोकड़ बही मे इस तरह लाइनें की जाती है :—

जर्नल

दिनाक	विवरण	खा०पृ०	डैबिट	क्रेडिट	क्रय खाता बही		विक्रय खाता बही	
					डैबिट	क्रेडिट	डै०	क्रे०
			रु०	रु०	रु०	रु०	रु०	रु०

डै० रोकड़ बही (नाम की तरफ)

दिनाक	विवरण	बट्टा	रोकड़	बैंक	क्रय खाता बही	विक्रय खाताबही
		रु०	रु०	रु०	रु०	रु०

रोकड़ बही (जमा की तरफ) क्रे०

दिनाक	विवरण	बट्टा	रोकड़	बैंक	क. खा. ब	वि खा.ब.
		रु०	रु०	रु०	रु०	रु०

उदाहरण ६८

उदाहरण ४२ (अध्याय ८ के अन्त में) वर्गीय-संतुलन पद्धति के अनुसार तैयार करो।

डै०

रोकड़ बही

तिथि	विवरण	बट्टा रु.	आ	पा	रोकड़ रु.	आ	पा.	बैंक रु.	आ	पा.	वि० खा० बही रु.	आ	पा	क्र० खा० बही रु.	आ	पा.
१९५१																
मार्च १	शेष नी/ला							१८,०००	–	–						
	बैंक				५००	–	–									
२	विक्रय खाता				६३०	–	–									
३	प्राप्य बिल खाता							२,५००	–	–						
४	बलीराम	६३	१२	–				३,५८६	४	–	३,५८६	४	–			
५	,,							५००	–	–	५००	–	–			
६	द्वारकाप्रसाद	२६	४	–				१,४७३	१२	–	१,४७३	१२	–			
१३	,,							१,३४१	४	९	१,३४१	४	९			
१६	मोटर किराया खाता							५३३	५	६						
२३	खन्ना ब्रादर्स							२,२००	–	–	२,२००	–	–			
		९०	–	–	११३०	–	–	३०,१३४	१०	३	९,१०१	४	९			

रोकड़ बही

क्रे०

तिथि	विवरण	बट्टा रु.	आ	पा	रोकड़ रु.	आ	पा.	बैंक रु.	आ	पा	क्र० खा० बही रु.	आ	पा	वि० खा० बही रु.	आ	पा
१९५१																
मार्च १	रोकड़							५००	–	–						
३	मोटर गाड़ी खाता							२,१००	–	–						
	मोटर व्यय खाता				६६	४	–									
५	बलीराम				४८	५	६							४८	५	६
८	देय बिल खाता							१ ५८६	१०	६						
९	नगरपालिका कर खाता				८२	१०	–									
१०	बलीराम							५००	–	–				५००	–	–
११	जेम्स ग्राण्ट	५५	–	–				२,३४५	–	–	२,३४५	–	–			
१३	मजदूरी खाता							१५६	४	–						
१७	क्रय खाता				१००	–	–									
२२	बर्मन एण्ड कं०	५४	१२	–				१,१९५	४	–	१,१९५	४	–			
२३	मरम्मत खाता				१५	६	–									
२६	मजदूरी खाता							१७५	–	–						
	बर्मन एण्ड कं०							३,१०१	४	–	३,१०१	४	–			
३१	पूँजी खाता							४००	–	–						
	वेतन खाता							५००	–	–						
	शेष आ/ले				८१७	६	६	१७,५७५	३	९						
		१०९	१२	–	१,१३०	–	–	३०,१३४	१०	३	६,६४१	८	–	५४८	५	६

क्रय-पुस्तक, क्रय-वापिसी पुस्तक, विक्रय-पुस्तक, विक्रय-वापिसी पुस्तक, प्राप्य-बिल पुस्तक एवं देय-बिल पुस्तक अध्याय ८ के अन्त में दिये गये विवरणानुसार ही होंगी।

क्रय खाता वही

जेम्स ग्रान्ट

१६५१		रु.	आ.	पा.	१६५१		रु	आ	पा
मार्च ११	बैंक	२,३४५	—	—	मार्च १	शेष नी/ला	२,४००	—	—
	बट्टा	५५	—	—	६	क्रय खाता	३,६१५	२	६
१५	देय बिल खाता	२,५००	—	८	२०	,, ,,	१,२६६	८	—
३१	वि० खा० व० से हस्तांतरित	२७६	४	—					
	शेष आ/ले	२,१०५	६	६					
		७,२८१	१०	६			७,२८१	१०	६

वमन एण्ड कम्पनी का हिसाब अध्याय ८ में किये गये वर्णन के अनुसार होगा ।

लेनदारों की तालिका

१	जेम्स ग्राण्ट	रु०	२,१०५	६	६
२.	वर्मन एण्ड कं०		३,१५७	११	६
			५,२६३	२	०

क्रय खाता वही की शुद्धता, लेनदारों की तालिका के योग की, सामान्य खाता वही में दिये गये कुल लेनदार खाते के शेष से तुलना करके जाँची जा सकती है ।

विक्रय खाता वही

बलीराम, द्वारकाप्रसाद और खत्रा ब्रादर्स के खाते अध्याय ८ में दिये गये विवरणानुसार होंग ।

जेम्स ग्राण्ट

१६५१		रु.	आ.	पा	१६५१		रु.	आ	पा.
मार्च १८	विक्रय खाता	२७६	४	—	मार्च ३१	क्रय खाता वही को हस्तांतरित	२७६	४	—

देनदारों की तालिका

१	बलीराम	रु०	२,२२१	१	३
२	द्वारकाप्रसाद		१,८७३	१५	६
			४,०९५	०	६

विक्रय खाता वही की शुद्धता, देनदारों की तालिका के योग की, सामान्य खाता वही में दिये गये कुल देनदार खाते के शेष से तुलना करके जाँची जा सकती है ;

सामान्य खाता वही

वास्तविक और व्यक्तिगत खाते अध्याय ८ में दिये गये विवरणानुसार ही होंगे ।

कुल देनदार खाता

१६५१		रु.	आ.	पा.	१६५१		रु.	आ.	पा.
मार्च १	शेष नी/ला	५,१५०	—	—	मार्च ३१	वापिसी	१००	—	—
३१	विक्रय	१२,३६०	१०	—		प्राप्य बिल	४,३२६	६	—
	रोकड़	४८	५	६		रोकड़	६,१०६	४	६
	बैंक (अनादरित बीजक)	५००	—	—		बट्टा	६०	—	—
						हस्तांतरण	३३६	४	—
						शेष आ/ले	४,०९५	—	६
		१८,०५८	१५	६			१८,०५८	१५	६

कुल लेनदार खाता

		रु.	आ	पा			रु.	आ.	पा.
१६५१					१६५१				
मार्च ३१	वापिसी	६५०	–	–	मार्च ३१	शेष नी/ला	५,६५०	–	–
	देय बिल	४,५००	–	–		क्रय	११,७६०	१०	–
	रोकड़	६,६४१	८	–					
	बट्टा	१०६	१२	–					
	हस्तातरण	२७६	४	–					
	शेष आ/ले	५,२६३	२	–					
		१७,४४०	१०	–			१७,४४०	१०	–

सामान्य खाता बही से उद्धृत तलपट, निम्न अतरों को छोड़कर, आठवे अध्याय में दिये गये तलपट के अनुसार ही होगा :—

१. बलीराम और द्वारकाप्रसाद के दो डैबिट शेषों के स्थान पर केवल एक शेष, कुल देनदार खाते का ४,०६५ रु० ६ पा० का होगा, और

२. जेम्स ग्राएट और बर्मन एराड कम्पनी के दो क्रेडिट शेषों के स्थान पर केवल एक शेष कुल लेनदार खाते का ५,२६३ रु० २ आ० का होगा।

उदाहरण ६६

एक फर्म अपने क्रय, विक्रय तथा सामान्य बहियों मे वर्गीय सतुलन प्रथा का प्रयोग करती है। निम्नलिखित विवरणों से क्रय तथा विक्रय खाता बही समायोजन खाता तैयार कीजिये तथा यह मानते हुये कि सामान्य खाता बही से उद्धृत तलपट मिलता (agrees) है, प्रत्येक बही की शुद्धता की जॉच करो।

	रु०		रु०
प्रारम्भिक शेष क्र० खा० ब० में	११,८०५	बट्टा प्राप्त	२२५
प्रारम्भिक शेष वि० खा० ब० में	२०,२०१	क्र० खा० ब० से वि० खा० ब० को हस्तातरित	२५
डूबत ऋण (अपलिखित)	३२०	क्रय	४०,३२५
प्राप्य बिल	१,२००	क्रय वापसी	२८६
देय बिल	५,६४०	विक्रय	५७,३६०
रोकड जो लेनदारों को दी	३७,३५०	विक्रय वापिसी	२,१६६
ग्राहकों से प्राप्त रोकड़	६०,२६०	क्र० खा० ब० का अन्तिम शेष	८,३०१
बट्टा दिया	१,०२५	वि० खा० ब० का अन्तिम शेष	१२,५१८

क्रय खाता बही समायोजन खाता (सामान्य खाता बही में)

	रु०		रु०
रोकड़	३७,३५०	शेष नी/ला	११,८०५
बट्टा	२२५	क्रय	४०,३२५
वापिसी	२८६		
देय बिल	५,६४०		
हस्तातरण	३२५		
शेष आ/ले	८,३०१		
	५२,१३०		५२,१३०

विक्रय खाता बही समायोजन खाता (सामान्य खाता बही में)

	रु०		रु०
शेष नी/ला	२०,२०१	डूबत ऋण	३२०
विक्रय	५७,३६०	प्राप्य बिल	१,२००
		रोकड़	६०,२६०
		बट्टा	१,०२५
		वापिसी	२,१६६
		हस्तातरण	२५
		शेष आ/ले	१२,५६५
	७७,५६१		७७,५६१

चूँकि सामान्य खाता वही से उद्धृत तलपट मिलता है, इसलिए सामान्य खाता वही सही है और चूँकि क्रय खाता वही समायोजन खाते का शेष क्रय खाता वही के व्यक्तिगत शेषों (individual balances) के योग से मिलता है, इसलिए क्रय खाता वही भी सही है, किन्तु विक्रय खाता वही समायोजन खाते का शेष विक्रय खाता वही के व्यक्तिगत शेषों के योग से नहीं मिलता, अतः विक्रय खाता वही गलत है। विक्रय खाता वही में कहीं २७ रु० की गलती है, क्योंकि इस राशि से जमा की तरफ नाम की तरफ से बढ़ रही है।

उदाहरण १००

निम्न विवरण से क्रय तथा विक्रय खाता वही समायोजन खाते, जैसे कि वे सामान्य खाता वही में दिखाये जायेंगे, क्रय वही तथा विक्रय वही का कुल क्रेडिट व डेबिट शेष दिखाते हुये तैयार करो।

१९५०		क्रय खाता वही	विक्रय खाता वही
		रु०	रु०
जनवरी १	शेष : डेबिट	२१	५,४५०
	क्रेडिट	३,२६०	१३०
दिसम्बर ३१	क्रय व विक्रय	१,७४६	३,३२०
	वापिसी	१२०	२५२
	रोकड़	१,८३०	३,४३०
	बट्टा	३२	११०
	प्राप्य व देय बिल	३००	८६०
	अस्वीकृत प्राप्य बिल	—	१००

६६ रु० के शेष का एक खाता क्रय खाता वही से विक्रय खाता वही में हस्तान्तरित करना है। वर्ष के अन्त में क्रय खाता वही का डेबिट शेष २१ रु० तथा विक्रय खाता वही का क्रेडिट शेष १२ रु० है।

क्रय खाता वही समायोजन खाता

१९५०		रु०	१९५०		रु०
जन. १	शेष नी/ला	२१	जन १	शेष नी/ला	३,२६०
दिस. ३१	वापिसी	१२०	दिस. ३१	क्रय	१,७४६
	रोकड़	१,८३०		शेष आ/ले	२१
	बट्टा	३२			
	देयबिल	३००			
	हस्तान्तरण	६६			
		२,६६१			
		५,०३०			५,०३०
१९५१			१९५१		
जन. १	शेष नी/ला	२१	जन. १	शेष नी/ला	२,६६१

विक्रय खाता वही समायोजन खाता

१९५०		रु०	१९५०		रु०
जन. १	शेष नी/ला	५,४५०	जन. १	शेष नी/ला	१३०
दिस. ३१	विक्रय	३,३२०	दिस. ३१	वापिसी	२५२
	प्राप्य बिल (अस्वीकृत)	१००		रोकड़	३,४३०
	शेष आ/ले	१२		बट्टा	११०
				प्राप्य बिल	८६०
				हस्तान्तरण	६६
				शेष आ/ले	४,००४
		८,८८२			८,८८२
१९५१			१९५१		
जन. १	शेष नी/ला	[illegible]	जन. १	शेष आ/ले	१२

टिप्पणी—३१ दिसम्बर १९५० को [illegible] देनदार (४,००४ + २१) रु० के और लेनदार (२,६६१ + १२) रु० के दिखाई पड़ेंगे।

उदाहरण १०१

निम्न सूचना ३१ दिसम्बर १६५० को समाप्त होने वाले अर्ध वर्ष की पुस्तकों से उद्धृत की गई है:—

	रु०		रु०
विक्रय	५६,३००	क्रय	३२,२००
विक्रय वापसी	१,६८०	क्रय वापसी	७६०
ग्राहकों से प्राप्त रोकड़	३८,४२०	लेनदारों को दी रोकड़	१८,०००
प्राप्य बिल	१६,०००	देय बिल	१२,०००
बट्टा दिया	१,०६०	प्राप्त बट्टा	४२०
डूबत ऋण	१,२००	क्रय खाता बही से हस्तान्तरित	६८०

१ जुलाई १६५० को विक्रय खाता बही के शेषों का योग ३४,८२० रु० तथा क्रय खाता बही के शेषों का योग १८,३०० रु० था।

उपर्युक्त सूचनाओं से विक्रय तथा क्रय खाता बही समायोजन खाते तैयार कीजिये।

विक्रय खाता बही समायोजन खाता

	रु०		रु०
शेष नी/ला	३४,८२०	रोकड़	३८,४२०
विक्रय	५६,३००	वापिसी	१,६८०
		प्राप्य बिल	१६,०००
		बट्टा	१,०६०
		डूबत ऋण	१,२००
		हस्तानरण	६८०
		शेष आ/ले	३२,०८०
	६१,१२०		६१,१२०

क्रय खाता बही समायोजन खाता

	रु०		रु०
वापिसी	७६०	शेष नी/ला	१८,३००
रोकड़	१८,०००	क्रय	३२,२००
देय बिल	१२,०००		
बट्टा	४२०		
हस्तानरण	६८०		
शेष आ/ले	१८,६४०		
	५०,५००		५०,५००

व्यापार खाता वहियो का विभाजन :—एक विशाल व्यापार में एक-एक विक्रय और क्रय खाता बही रखना सुविधाजनक प्रतीत नहीं होता है। इसलिए क्रय-खाता वही तथा विक्रय खाता वही को दो या अधिक भागों मे विभाजित कर दिया जाता है। यह विभाजन वर्णमाला या भौगोलिक क्रम से, या किसी अन्य क्रम से किया जा सकता है। उदाहरणार्थ, तीन विक्रय-खाता वहियाँ इस प्रकार हो सकती हैं "A—G", 'H—O" और "P—Z"।

जब बहुत-सी क्रय-खाता वहियाँ और विक्रय-खाता वहियों काम में ली जाती हैं तब वर्गीय-सतुलन के हेतु सामान्य खाता वही में भी हरएक के लिए अलग-अलग कुल खाता रखा जाता है और आवश्यक कुल खाता तैयार करने के लिए केवल जर्नल और रोकड़ वही के विश्लेषण खानों का ही योग नहीं लिया जायगा, परन्तु सभी प्रारम्भिक वहियों से भी पूर्ण सहायता लेनी पड़ेगी। प्रारम्भिक वहियों में बिना उचित विश्लेषण-खानों के रखे इन कुल खातों के लिए पूरी सूचना मालूम करना अत्यन्त कठिन हो जाता है।

जब सहायक खाता बहियाँ बहुत होती हैं तब विश्लेषण की हुई प्रारम्भिक बहियाँ रखना सुविधाजनक नहीं होता, क्योंकि इनमें बहुत से खाने हो जाते हैं। इस तरह की स्थिति में हरएक सहायक खाता बही के लिए अलग-अलग प्रारम्भिक बहियाँ रखनी चाहिये।

उदाहरण १०२

एक फर्म दो विक्रय खाता बहियाँ (A—L तथा M—Z) प्रयोग करती है। ३१ दिसम्बर १९५० को उस दिन चिट्ठे में दिखाये गये इन बहियों के कुल शेष निम्न थे . A—L बही ४७,३६० रु०; M—Z ९९,०६७ रु०। माह जनवरी १९५१ की विभिन्न सहायक पुस्तकों के विश्लेषण से निम्न बातें पता लगीं :—

	A—L	M—Z
	रु०	रु०
विक्रय पुस्तक से कुल खताये	३९,९२६	८६,७६८
विक्रय वापसी पुस्तक से कुल खताये	१,६३१	२,११२
रोकड़ पुस्तक से कुल खताये (रोकड़ व बट्टा)	२७,२१८	७२,१६६
प्रा०/ बि० पुस्तक से कुल खताये	२१,०००	१५,०००
अपलिखित डूबत ऋण	२२२	..

वर्गीय संतुलन के लिये रखी गई सामान्य खाता बही में एक द्विस्तम्भ खाते द्वारा यह स्पष्ट बताओ कि प्रत्येक माह के अन्त में प्रत्येक खाता बही में कुल शेष क्या होंगे।

वास्तव में उनके शेष इस प्रकार थे A—L खाता बही ३८,२१४ रु० तथा M—Z खाता बही ९५,५५८ रु०। होने वाली त्रुटियाँ बताइये।

विक्रय खाता बही समायोजन खाता

		A—L खाता बही	M—Z खाता बही			A—L खाता बही	M—Z खाता बही
१९५१		रु०	रु०	१९५१		रु०	रु०
जन. १	शेष नी/ला	४७,३६०	९९,०६७	जन. ३१	वापिसी	१,६३१	२,११२
३१	विक्रय	३९,९२६	८६,७६८		रोकड़ एवं बट्टा	२७,२१८	७२,१६६
					प्राप्य बिल	२१,०००	१५,०००
					डूबत ऋण	२२२	
					शेष आ/ले	३७,२१५	९६,५५७
		८७,२८६	१,८५,८३५			८७,२८६	१,८५,८३५

उपर्युक्त दोनों समायोजन खातों के शेष का योग, दोनों विक्रय खाता बहियों में प्रकट होने वाले व्यक्तिगत शेषों के योग से मिलता है किन्तु A—L विक्रय खाता बही समायोजन खाते का शेष A—L विक्रय खाता बही के शेषों के योग से ९९९ रु० कम है, जबकि M—Z विक्रय खाता बही समायोजन खाते का शेष M—Z विक्रय खाता बही के शेषों के योग से ९९९ रु० अधिक है। अतः गलती किसी सहायक पुस्तक में गलत विश्लेषण के कारण हुई है, जहाँ कि A—L खाता बही स्तम्भ में आने वाली ९९९ की राशि M—Z खाता बही स्तम्भ में लिखी गई है।

अशुद्धियों का वर्गीय-संतुलन पर प्रभाव —इस वर्गीय-संतुलन पद्धति को अपनाने का मुख्य अभिप्राय अशुद्धियों को सरलता से खोज निकालना है, अर्थात् यह मालूम करना है कि अशुद्धियाँ किस खाता बही में हैं, परन्तु भिन्न-भिन्न प्रकार की अशुद्धियाँ खाता बहियों के वर्गीय-संतुलन को किस तरह प्रभावित करती हैं यह समझना भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यह निम्नलिखित उदाहरणों से समझाया जाता है :—

उदाहरण १०३

[illegible]

[illegible] प्रयोग भी होते हैं।

[illegible] बताइये :—

(१) [illegible] लिखी गई है।

(ब) एक ग्राहक को बेचे गये माल का ४५७ रु० १२ आ० ३ पा० का बीजक विक्रय पुस्तक मे ठीक लिखा गया है, परन्तु गलती से व्यक्तिगत खाते मे ४७५ रु० १२ आ० ३ पा० खताया गया है।

(स) देनदारों को दिये गये बट्टे का आवधिक (Periodical) योग २३५ रु० १२ आ० सम्बन्धित नियत्रण खाते मे खताना भूल गये हैं, यद्यपि यह बट्टे खाते में ठीक खताया गया है।

(द) एक ग्राहक को दिया हुआ १५ रु० अलाउन्स विक्रय बही में क्रेडिट तो किया परन्तु कोई और प्रविष्टि नहीं की।

हल :—

इन त्रुटियों का व्यापारी की पुस्तकों के शेष पर निम्न प्रभाव पड़ेगा।

(अ) क्रय वापिसी पुस्तक मे १० रु० अधिक लिखे जाने से सामान्य खाता बही के तलपट के मिलान पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। क्रय खाता बही मे व्यक्तिगत लेनदारों के शेष भी सही रहेंगे, किन्तु क्रय खाता बही नियत्रण खाते का शेष १० रु० से कम हो जावेगा।

(ब) विक्रय खाता बही मे ग्राहक के खाते में ४५७ रु० १२ आ० ३ पा० के स्थान पर गलती से ४७५ रु० १२ आ० ३ पा० डैबिट कर देने से सामान्य खाता बही के तलपट के मिलान पर कोई प्रभाव न पड़ेगा और विक्रय खाता बही नियन्त्रण खाते के शेष पर भी कोई प्रभाव न होगा। किन्तु विक्रय खाता बही के देनदार खातों के शेषों का योग विक्रय खाता बही नियंत्रण खाते के शेष से १८ रु० अधिक होगा।

(स) सामान्य खातावही के तलपट की डैबिट साइड क्रेडिट साइड की अपेक्षा २३५ रु० १२ आ० अधिक होगी और विक्रय खाता बही नियत्रण खाते का शेष, इसी राशि से, देनदारों के शेषों के योग से बढ जावेगा।

(द) इस गलती से सामान्य खाता बही के तलपट के मिलान पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, किन्तु विक्रय खाता बही नियत्रण खाते का शेष १५ रु० बढ़ जावेगा। देनदारों के शेषों का योग सही रहेगा।

वर्गीय-संतुलन के लाभ —वर्गीय-सतुलन पद्धति के निम्नलिखित लाभ हैं :—

१. क्योकि हरएक खाता बही अलग-अलग तैयार की जाती है, इसलिए अशुद्धियाँ अच्छी तरह से मालूम की जा सकती हैं। यदि किसी खाता बही में कोई गलती है तो उसी खाता बही को जाँचा जाता है और अन्य सब खाता बहियो का निरीक्षण नहीं करना पड़ता। इससे काफी समय और मेहनत बच जाती है।

२. संतुलित अशुद्धियाँ (Compensating errors) बहुत कम होने पाती है। यदि ये अशुद्धियाँ दो अलग-अलग खाता बहियो मे हैं तो वे सरलता से मालूम पड़ जाती हैं, क्योकि व्यक्तिगत खातों के शेषो का योग कुल खाते से नहीं मिलेगा, परन्तु यदि सतुलित अशुद्धियाँ एक ही खाता बही मे हैं तो इनका मालूम होना कठिन है।

३. यदि अन्तिम खाते व्यापार-वर्ष के बीच मे तैयार करने हों तो वे चाहे जब किये जा सकते है, क्योकि हरएक व्यक्तिगत खाते का अलग-अलग बैलेंस निकालने की कोई आवश्यकता नहीं होती। लेनदारो और देनदारो की कुल रकमे कुल खातो को बैलेंस करने से मालूम हो जाती हैं।

४. वर्गीय-संतुलन ऑफिस के उचित प्रबन्ध के लिए एक बहुत ही अच्छी पद्धति है, क्योंक गलतियो की खोज के द्वारा यह मालूम किया जा सकता है कि किस खाता बही में और किस क्लर्क से यह गलती हुई है। इससे अच्छे, योग्य और अयोग्य क्लर्कों की पहिचान भी की जा सकती है।

५. वर्गीय-संतुलन से सहायक खाता बहियाँ रखने वाले क्लर्कों की ईमानदारी पर भी निग्रह रखने में सफल होता है। यदि कोई क्लर्क बेईमानी या धोखेबाजी करता है तो वह इसे अपनी खाता बही में दोनो तरफ नाम और जमा मे लिखकर के ही छिपा सकता है, परन्तु ऐसा करने से उसकी खाता बही के अलग-अलग खातों के शेषों का योग सम्बन्धित कुल खातों के बैलेंस से नहीं मिलेगा और इस तरह से उस छल का पता लग सकता है।

६. क्योंकि कुल खातो का बैलेंस चाहे जब मालूम किया जा सकता है, इसलिए तमाम देनदारो और लेनदारों की रकमों पर भी पूरा-पूरा ध्यान रखा जा सकता है।

स्वकीय-संतुलित खाता बहियाँ :— स्वकीय-सतुलित खाता बही (Self Balancing Ledger) वह बही है जिसमें तलपट तैयार करने की पूरी पूरी सूचना हो।

इस अध्याय में जो वर्गीय-संतुलन पद्धति समझाई गई है उसमें सहायक खाता वहियाँ स्वकीय-संतुलित नहीं होती हैं, क्योंकि इनकी शुद्धता सामान्य खाता वही में खोले हुए कुल खातों से परखी जाती है।

परन्तु यदि क्रय-खाता वही और विक्रय-खाता वही को स्वकीय-संतुलित करना हो तो इन वहियों में एक नया खाता जिसे "सामान्य खाता वही समायोजन खाता" (General Ledger Adjustment Account) कहते हैं, खोला जाता है। क्रय-खाता वही में जो यह खाता खोला जाता है उसमें वे ही रकमें होती हैं जो कुल लेनदार खाते में होती हैं, परन्तु विपरीत साइड में। इसी तरह से विक्रय खाता वही में जो सामान्य खाता वही समायोजन खाता खोला जाता है उसमें भी वे ही रकमें होती हैं जो कुल देनदार खाते में होती हैं, परन्तु विपरीत साइड में।

इस तरह प्रत्येक व्यापार खाता वही स्वकीय-संतुलित हो जाती है, क्योंकि अब उसमें वह सब सूचना होगी जो तलपट बनाने के लिये आवश्यक है। इस सामान्य खाता वही समायोजन खाते का बैलेंस उसी वही के दूसरे बैलेंसों के योग के बराबर होगा। इस तरह से नाम और जमा की रकम बराबर हो जावेगी और तलपट सरलता से बन सकेगा।

उदाहरण १०४

उदाहरण ९८ की क्रय खाता वही, विक्रय खाता वही तथा सामान्य खाता वही किस प्रकार स्वकीय-संतुलित बनाई जावेगी?

हल :—

क्रय खाता वही, विक्रय खाता वही तथा सामान्य खाता वही निम्न प्रकार से स्वकीय-संतुलित बनाई जावेंगी।

१. क्रय खाता वही में, इस अध्याय के पूर्व पृष्ठों में दिये गये अनुसार लेनदारों के खाते होंगे और साथ साथ, निम्न प्रकार से, एक सामान्य खाता वही समायोजन खाता भी होगा।

सामान्य खाता वही समायोजन खाता

१९५१		रु.	आ.	पा.	१९५१		रु.	आ.	पा.
मार्च १	शेष नी/ला	५,६५०	—	—	मार्च ३१	वापिसी	६५०	—	—
३१	क्रय	१४,७९०	१०	—		देय बिल	४,५००	—	—
						रोकड़	९,६४१	८	—
						कटौती	१०६	१२	—
						हस्तान्तरण	२७६	४	—
						शेष आ/ले	५,२६३	२	—
		२०,४४०	१०	—			[illegible]	१०	—

क्रय खाता वही से अनुसार तलपट निम्न प्रकार होगा :—

क्रय खाता वही का तलपट

	रु.	आ.	पा.	रु.	आ.	पा.
[illegible]				३,७०४	६	—
[illegible] एण्ड कम्पनी				१,५५८	१२	—
सामान्य खाता वही समायोजन	५,२६३	२	—			
	५,२६३	२	—	५,२६३	२	—

२. विक्रय खाता वही में, इस अध्याय के पूर्व पृष्ठों में दिये गये विवरण के अनुसार देनदारों के खाते होंगे और साथ साथ, निम्न प्रकार से, एक सामान्य खाता वही समायोजन खाता भी होगा।

सामान्य खाता बही समायोजन खाता

१९५१		रु.	आ.	पा.	१९५१		रु.	आ.	पा.
मार्च ३१	वापिसी	१००	—	—	मार्च १	शेष नी/ला	५,१५०	—	—
	प्राप्य बिल	४,७९६	६	-	३१	विक्रय	१२,७६०	१०	-
	रोकड़	६,१०१	४	६		रोकड़	४८	५	६
	बट्टा	६०	—	-		बैंक (अनादरित चैक)	५००	—	—
	हस्तातरण	२७६	४	—					
	शेष आ/ले	४,०९५	—	६					
		१८,४५८	१५	६			१८,४५८	१५	६

विक्रय खाता बही से उद्धृत तलपट निम्न प्रकार होगा :—

विक्रय खाता बही का तलपट

	रु.	आ.	पा.	रु.	आ.	पा.
बलीराम	२,२२१	१	३			
द्वारकाप्रसाद	१,८७३	१५	६			
सामान्य खाता बही समायोजन				४,०९५	—	६
	४,०९५	—	६	४,०९५	—	६

इस अध्याय के पूर्व पृष्ठों में दी गई सामान्य खाता बही स्वकीय-सतुलित है। कुल देनदार एव लेनदार खाते विक्रय खाता बही समायोजन एवं क्रय खाता बही समायोजन खाते कहे जा सकते हैं।

आधुनिक बहीखाता प्रयोग में व्यापारिक खाता बहियों में उनको स्वकीय-संतुलित बनाने के लिये, उनमें सामान्य खाता बही समायोजन खाते रखना त्याग दिया गया है। इसके निम्न कारण हैं :—

१ क्रय खाता बही अथवा विक्रय खाता बही में सामा य खाता बही समायोजन खाता रखना आवश्यक नहीं है, क्योंकि इन खाता बहियों की शुद्धता सामान्य खाता बही में रखे गये कुल देनदार अथवा लेनदार खातों के द्वारा बहुत अच्छी तरह जाँची जा सकती है।

२. जब क्रय खाता बही तथा विक्रय खाता बही में सामान्य खाता बही समायोजन खाते रखे जाते हैं, तो उन बहियों को रखने वाले क्लर्कों को कुल लेनदार व कुल देनदार खातों के शेष मालूम रहते है। इससे उनकी ईमानदारी पर कोई प्रतिबन्ध नहीं रहता।

उदाहरण १०५

एक फर्म स्वकीय-संतुलित बहियाँ रखती है। ३० जून १९५० को उसका चिट्ठा निम्न था :—

	रु०			रु०
व्यापारिक लेनदार	२३,५९०	रोकड़ हस्ते		३८०
ऋण लेनदार	१०,०००	रोकड बैंक में		४,१९०
पूँजी खाता	१५,८५०	पुस्तक ऋण	१६,६९०	
		घटाये डू० ऋ० सचय	१,०००	१५,६९०
		प्राप्य बिल		२,६५०
		स्टॉक		१५,८३०
		फर्नीचर व फिटिंग्स		१,४००
		भवन		६,०००
	४६,४४०			४६,४४०

फर्म की पुस्तकों से निम्न सूचना प्राप्त हुई :—

	रु०		रु०
विक्रय	४७,५००	प्राप्य बिल मिले	३,५५०
क्रय	२१,६६०	बैंक से आहरण, वर्ष में 30-६-१९५१ तक	५२,७६०
देनदारों से रोकड़ प्राप्त	४१,६६०	बैंक में दिये, वर्ष में ३०-६-१९५१ तक	४५,४५०
लेनदारों को रोकड़ दी	४२,१३०		
बट्टा दिया	१,८२०		

प्राप्त बट्टा	१,५३०	अपलिखित डूबत ऋण	३२०
व्यक्तिगत आहरण	४,३३०	प्राप्त प्राप्य बिल	१,१००
ऋण का व्याज दिया	३८०	निर्गमित देय बिल	५,४००
सामान्य खर्चे	३,६७०	पूँजी में योग, वर्ष में ३०-६-१९५१ तक	२३,७३०
विक्रय वापिसी	१,१३०		
क्रय वापिसी	५६०	स्टॉक ३०-६-५१ को	१७,७५०

३० जून १९५१ को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये फर्म का सामान्य खाता बही तलपट तैयार कीजिये।

तलपट ३० जून, १९५१ को

	रु०		रु०
भवन	६,०००	बैंक अधिविकर्ष	३,१२०
फर्नीचर व फिटिंग्स	१,४००	डूबत ऋण संचय	६८०
स्टॉक	१५,८३०	देय बिल	५,४००
प्राप्य बिल	५००	लेनदार	१०,०००
रोकड़	२६,१५०	विक्रय	४७,५००
क्रय	३१,६६०	प्राप्त बट्टा	१,५३०
बट्टा दिया	१,८२०	क्रय वापिसी	५६०
व्याज	३८०	पूँजी खाता	३५,२५०
सामान्य व्यय	३,६७०	क्रय खाता बही नियन्त्रण खाता	५,६००
विक्रय वापिसी	१,१३०		
विक्रय खाता बही नियन्त्रण खाता	१७,८३०		
	१,०६,६७०		१,०६,६७०

सामान्य खाता बही का यह तलपट सामान्य खाता बही में रोकड़, बैंक, प्राप्य बिल, देय बिल, अन्य वास्तविक एवं अवास्तविक खाते तथा क्रय व विक्रय खाता बही नियन्त्रण खाते तैयार करने के पश्चात् उद्धृत किया गया है।

प्रश्न

१. वर्गीय-संतुलन प्रणाली का अर्थ बताओ। वर्गीय खाता बही (Sectional Ledger) का क्या अर्थ है?

२. यदि किसी व्यापार में वर्गीय-संतुलन प्रथा का प्रचलन हो, तो आप त्रुटियों का पता कैसे लगायेंगे?

३. यौगिक खातों (Total Accounts) का क्या अर्थ है, ये किस प्रकार और क्यों बनाये जाते हैं?

४. स्थानान्तरण (Transfer) से क्या तात्पर्य है और यह क्यों आवश्यक है?

५. क्रय व विक्रय बहियों की शुद्धता सिद्ध करने के लिये नमूने के समायोजन खाते बनाओ।

६. स्वकीय-संतुलित खाता बही क्या होती है और खाता बहियाँ किस प्रकार स्वकीय-संतुलित बनाई जाती हैं?

७. संक्षेप में वर्गीय संतुलन के लाभ बताओ।

८. स्वकीय व वर्गीय-संतुलन में अन्तर बताओ।

९. [illegible] व्यापार की [illegible] किस प्रकार [illegible] जिसमें एक सामान्य खाता बही, एक क्रय व दो विक्रय खाता बहियाँ वर्गीय संतुलन पद्धति पर रक्खी जाती हैं।

१०. [illegible] की किन त्रुटियों का वर्गीय संतुलन [illegible] में असमर्थ रहता है?

११. [illegible] प्रणाली की [illegible] में [illegible] बनाये बिना आप उसके [illegible] का कैसे पता लगायेंगे? [illegible] में इस पद्धति का [illegible] बताइये [illegible] हैं।

१२. [illegible] बही [illegible] का क्या उद्देश्य है? [illegible] दिसम्बर को [illegible] से आवश्यक समायोजन खाता बनाओ।

	रु०
[illegible]	१२,५४८
३१ [illegible]	२१,६५८
[illegible]	६४२
[illegible]	१५,६८१

ग्राहकों को बट्टा दिया	६६८
ग्राहकों से प्राप्त स्वीकृतियाँ	३,४७१
माह में ग्राहकों द्वारा दी गई अस्वीकृत स्वीकृतियाँ	५४२

उत्तर : समायोजन खाते का शेष १३,७४६ रु० ।

१३. एक ऐसे व्यापारी की पुस्तकों से, जो अपनी क्रय व विक्रय खाता बहियाँ अलग अलग रखता है, वर्ष १९५० के निम्न विवरण उद्धृत किये गये। ३१ दिसम्बर १९५० को उसके सामान्य खाता बही में लिखे हुये क्रय व विक्रय खाता बही समायोजन खाता बनाओ ।

	रु०		रु०
ऋणी १ जनवरी १९५० को	१८,६३३	बट्टा प्राप्त	८५०
लेनदार १ जनवरी १९५० को	१४,३६५	बट्टा दिया	१,२५०
उधार क्रय	७६,५१०	नकद क्रय	२,५००
उधार विक्रय	९५,४६१	नकद विक्रय	७,५६०
ऋणियों से प्राप्त रोकड़	८२,४७२	अशोध्य ऋण (अपलिखित)	१,०४५
प्राप्त प्राप्य बिल	१,५००	ग्राहकों पर लगाया गया ब्याज	१५०
निर्गमित देय बिल	९००	क्रय वापिसी	८५०
देय बिलों का भुगतान किया	८००	३१ दि० १९५० को वि० खा० ब० में विविध जमा शेष	१५६
प्राप्य बिलों पर प्राप्त रोकड़	१,०००	लेनदारों को दी रोकड़	४०,०००

उत्तर : क्रय खाता बही समायोजन खाते का शेष ४८,३५५ रु० ।
विक्रय खाता बही समायोजन खाते का शेष २८,४३३ रु० ।

१४. एक संस्था की पुस्तकों का ३० जून १९५१ को समाप्त होने वाले छः माह के शेषों के योग इस प्रकार है :—

	रु०	आ०	पा०
देनदारों का शेष १ जनवरी १९५१ को	१६,२६५	१०	०
पूर्ति-कर्त्ताओं (Suppliers) का शेष	१२,१५४	६	४
पूर्ति-कर्त्ताओं को भुगतान	७६,१३१	०	०
देनदारों से रोकड़ा प्राप्त	१,२६,६३१	८	८
क्रय	८८,४८६	१२	८
बट्टा प्राप्त	२,८५७	६	०
अपलिखित अशोध्य ऋण	५५५	४	८
विक्रय वापिसी	६३१	१५	४
क्रय वापिसी	१,८२१	११	४
देनदारों से प्राप्त ब्याज	५२	४	०
देनदारों के अनादरित चैक	७६२	१३	४
बट्टा दिया	३,५६४	४	०
स्वीकृत देय बिल (नवीनकरण सहित)	८,६०५	४	०
नवीनकरण पर वापिस लिया हुआ दे०/बि०	२,०००	०	०
नवीन (renewed) दे०/बि० पर ब्याज	२५	४	०
विक्रय	१,३३,०८३	२	८

३० जून १९५१ को व्यापार की खाता बहियों से उद्धृत शेषों के योग ये थे : विक्रय खाता बही १८,०७६ रु० ५ आ० ४ पा० ; क्रय खाता बही १२,६०० रु० १२ आ० ८ पा० । क्या ये योग उपर्युक्त विवरणों के अनुसार हैं ? अपना कार्य दिखाओ ।

उत्तर : समस्त देनदार खाते का शेष १८,९८० रु० १३ आ० ४ पा० व समस्त लेनदार खाते का शेष १२,९५१ रु० ४ आ० ८ पा० ।

१५. निम्न सूचना से समस्त देनदार खाता बनाओ जो कि १९५० की सामान्य खाता बही में होगा ।

	रु०	आ०	पा०		रु०	आ०	पा०
देनदार १ जनवरी १९५०	८,६६४	१३	७	रोकड़ा प्राप्ति	३०,५४९	११	११
प्राप्य बिल	४,५००	०	०	बट्टा दिया	१,३१८	१२	२
विक्रय	३६,३४१	६	९	वापिसी	१८१	७	६

रोकड़ा भुगतान	६७	६	६	क्रेडिट शेष क्रय खाता बही में स्थानान्तरित किया	८६	६	०

३१ दिसम्बर को विक्रय खाता बही से उद्धृत शेष ८,७३६ रु० ६ आ० था तथा उस दिन तलपट में २ रु० ४ आ० का अन्तर था। आप इस अन्तर से क्या परिणाम निकालेंगे ?

उत्तर : शेष ८,७३७ रु० ५ आ० जो २ रु० ४ आ० से गलत था।

१६. एक संस्था अपनी क्रय व विक्रय खाता बहियाँ स्वकीय-संतुलित पद्धति के अनुसार रखती है। निम्नलिखित विवरणों से वर्ष १६५० के आवश्यक समायोजन खाते बनाओ :—

	रु०		रु०
विविध देनदार १-१-५० को	६,२००	क्रय वापिसी	२५०
विविध लेनदार १-१-५० को	२,५००	देनदारों की अनादरित स्वीकृतियाँ	५००
उधार खरीद	१०,३००	बट्टा दिया	१००
उधार बिक्री	१३,४००	अपलिखित अशोध्य ऋण	२००
देनदारों से प्राप्त रोकड़	७,८००	लेनदारों को दिया हुआ रोकड़ा	७,५००
विक्रय वापिसी	३००		
स्वीकृतियाँ दीं	४,०००		

उत्तर : क्रय खाता बही समायोजन खाते का शेष १,०५० रु०।
विक्रय खाता बही समायोजन खाते का शेष ११,७०० रु०।

१७. एक व्यापार की क्रय खाता बही में निम्न प्रविष्टियाँ हुईं :—

		रु०	आ०	पा०
३० जून १६५१ को शेष	(क्रे०)	६१,३१७	८	०
,, ,, ,,	(डे०)	२५०	१२	८
३१ दिसम्बर १६५१ को शेष	(क्रे०)	५१,८२५	७	४
,, ,, ,,	(डे०)	१६१	४	८
क्रय		५०,८७५	४	०
लेनदारों को रोकड़ा भुगतान		५२,१८८	१३	४
बट्टा प्राप्त		१,३१६	६	४
देय बिलों पर स्वीकृति		६,५००	०	०
वापिसी रोकड़ा (cash refunds) प्राप्त		१५५	१०	०
विक्रय बही के क्रेडिट में स्थानान्तरण		४५५	०	०

सामान्य खाता बही में क्रय खाता की समायोजन खाता बनाओ।

उत्तर : क्रय खाता बही समायोजन खाते का शेष ५१,८२५ रु० ७ आ० ४ पा०।

१८. निम्नलिखित विवरणों से, क्रय खाता बही में समस्त जमा शेष व विक्रय खाता बही में समस्त नाम शेष दिखाते हुये क्रय व विक्रय खाता बही नियन्त्रण खाते बनाओ जैसे कि वे सामान्य खाता बही में बनाये जायेंगे :—

१६५०		क्रय खाता बही	विक्रय खाता बही
		रु०	रु०
जनवरी १	शेष : डेबिट	४८	१६,६००
	क्रेडिट	६,५२०	२६०
दिसम्बर ३१	क्रय व विक्रय	३,४६८	६,६४८
	वापिसी (Returns)	३४०	५०४
	रोकड़	३,६६०	६,८६०
	बट्टा	६४	३३६
	अशोध्य ऋण [illegible]	२००	१,३८०
	[illegible]		३००

१६४ रु० [illegible] विक्रय खाता बही से [illegible] खाता बही में स्थानान्तरित किया गया।
[illegible]

उत्तर : [illegible] शेष ४,३६२ रु०।
[illegible] शेष १६,०१८ रु०।

अध्याय—१८

सिंगल एण्ट्री या अपूर्ण बहीखाता

अकेले व्यापारी के लिए बहीखाता रखना अत्यन्त आवश्यक है यद्यपि वैधानिक रूप से वह इसके लिये बाध्य नहीं है। लेकिन एक ही तरह का बहीखाता हर तरह के व्यापार की आवश्यकताओं को पूर्ण नहीं कर सकता। व्यापार प्रकृति और स्वरूप मे भिन्न-भिन्न होते हैं। वे एक छोटे से व्यापारी से लेकर एक बड़े थोक माल बेचने वाले तक है। एक बहीखाते की पद्धति एक व्यापार के लिए बिल्कुल ठीक हो सकती है तो दूसरे के लिए अपर्याप्त और तीसरे के लिए बिल्कुल ही निरर्थक होती है। बहीखाते की पद्धति व्यापार की आवश्यकतानुसार अपनानी चाहिए। इसीलिए निम्नलिखित भिन्न-भिन्न प्रकार की पद्धतियाँ काम मे ली जाती हैं :—

१. व्यापारिक बहीखाता-पद्धति—यह पद्धति पूर्ण दोहरा-लेखा पद्धति पर आधारित है और इसमे निम्नलिखित लेखे किये जाते हैं —

(अ) हर लेन-देन को तिथि के अनुसार प्रारम्भिक बहियों मे लिखा जाता है।

(आ) इन प्रारम्भिक बहियो से खाता बही मे खता करके खातो की शुद्धता जॉचने के लिए प्रारम्भिक तलपट तैयार किया जाता है।

(इ) साधारण समायोजन अन्तिम खातो को तैयार करने से पहले किये जाते हैं और इन समायोजनाओ की शुद्धता जॉचने के लिए अन्तिम तलपट भी तैयार किया जा सकता है।

(ई) सब अवास्तविक खातों को माल खाते और हानि-लाभ खाते में रख करके बन्द कर दिया जाता है और जो लाभ अथवा हानि होती है वह व्यापार-स्वामी के पूँजी-खाते मे लिख दी जाती है।

(उ) अन्त मे वास्तविक और व्यक्तिगत खातो को बैलेंस करके, व्यापार-वर्ष की अन्तिम तिथि को व्यापार की आर्थिक स्थिति बतलाने के लिए चिट्ठा (Balance Sheet) तैयार किया जाता है।

इस पद्धति के अनुसार हानि या लाभ उस व्यापार-वर्ष की सब आय और सब खर्च को ध्यान में रखते हुए मालूम किया जाता है चाहे यह आय वास्तव में हुई हो या नहीं और चाहे यह खर्च वास्तव में चुकाया गया हो या नहीं अर्थात् इस पद्धति के अनुसार वास्तविक लाभ चाहे वह रोकड़ी रुपये में प्राप्त हुआ हो या नहीं तथा वास्तविक हानि चाहे वह रोकड़ी रुपये मे दी गई हो या नहीं, मालूम किये जाते हैं।

इसीलिए इस पद्धति को 'व्यापारिक बहीखाता पद्धति' (Mercantile Accountancy System) या 'बही खाते की पुस्तक लाभ प्रणाली' (Book Profits System of Accountancy) या "पूर्ण दोहरा लेख बहीखाता" (Complete Double Entry Book-keeping) कहते हैं। संक्षेप में इस पद्धति के लाभ निम्नलिखित हैं :—

१. यह व्यापार के लेन-देन का एक विशुद्ध, क्रमबद्ध और पूर्ण विवरण रखने में सहायक होती है और इसमें गलतियाँ न्यूनतम हो जाती हैं।

२. यह छल-कपट को रोकने और खोजने मे सहायक होती है, क्योंकि बहियों में परिवर्तन करना बहुत कठिन होता है।

३. यह व्यापार खाता और हानि-लाभ खाते को पूर्ण व्यौरे के साथ तैयार करने में सहायक होती है।

४. इससे व्यापार की आर्थिक स्थिति मालूम करने के लिये बैलेंस-शीट तैयार की जा सकती है।

यह हिसाब की पूर्ण पद्धति है जिसे हर व्यापारी को अपनाना चाहिए, परन्तु व्यवहार में हर व्यक्ति इस पद्धति को नहीं अपना सकता। इसलिए निम्नलिखित हिसाब-पद्धतियाँ भी काम में लाई जाती हैं :—

२. वहीखाते की नकद लेन-देन पद्धति :—इस पद्धति के अनुसार तमाम रोकड़ी लेन और देन सम्बन्धी हिसाब रोकड़ वही में लिखा जाता है। यदि कोई उधार का लेनदेन होता है तो वह जब तक रोकड़ी रुपये में दिया न जाय या प्राप्त न किया गया हो तब तक नहीं लिखा जाता है। इस पद्धति को ही वहीखाते की नकद लेन-देन पद्धति (Cash System of Book-keeping) कहते हैं।

उन छोटे व्यापारों में जहाँ उधार का व्यापार नहीं होता है यह पद्धति यथोचित काम देती है। यदि व्यापारी इस पद्धति के अनुसार लाभ मालूम करना चाहे तो उसे शुरू और अन्त का स्टॉक भी ध्यान में रखना चाहिए नहीं तो लाभ बिल्कुल गलत होगा।

परन्तु ज्यों ही उधार के लेन-देन शुरू होते हैं यह पद्धति कुशलता से काम देना बन्द हो जाती है। व्यापारी न तो सब उधार के लेन-देन याद ही रख सकता है और न उसका लाभ या हानि ही ठीक तरह से मालूम किया जा सकता है।

परन्तु यह पद्धति (अ) अकेले व्यक्तियों, (ब) व्यवसायी व्यक्तियों, जैसे—डाक्टर, वकील, अकाउन्टेन्ट; और (स) व्यापार न करने वाली संस्थाओं जैसे—क्लब, पुस्तकालय, धार्मिक संस्था, स्कूल, कॉलेज इत्यादि के लिये बहुत उपयुक्त होती है।

३. मिश्रित वहीखाता पद्धति :—व्यवहार में बहुत सी स्थितियों में हिसाब रखने की जो पद्धतियाँ अपनाई जाती हैं वे व्यापारिक वहीखाता पद्धति और रोकड़ वहीखाता दोनों पद्धतियों की मिश्रण होती हैं। व्यापारी कुछ लेन-देन प्रथम पद्धति के अनुसार लिखता है जैसे—उधार खरीद-बिक्री; और कुछ लेन-देन वह दूसरी पद्धति के अनुसार लिख सकता है, जैसे—आय और व्यय का हिसाब। इस तरह की पद्धति को 'मिश्रित वहीखाता पद्धति' (Hybrid Mixed or Composite System of Book-keeping) कहते हैं।

अनेक छोटे व्यापारी जो रोकड़ी और उधार दोनों तरह का व्यापार करते हैं वे इस पद्धति के अनुसार ही हिसाब रखते हैं परन्तु इस पद्धति के द्वारा जो लाभ या हानि की रकम मालूम की जाती है वह बिल्कुल शुद्ध नहीं कही जा सकती, क्योंकि इसको मालूम करते समय उपार्जित आय, या अदत्त खर्चे, या पूर्व दत्त या प्राप्त की हुई आय को बिल्कुल छोड़ दिया जाता है. परन्तु यदि व्यापारी इस पद्धति को हर साल से काम लेता रहता है तो इसके द्वारा मालूम किये हुए व्यापारिक परिणाम को ठीक कहा जा सकता है।

सिंगल एन्ट्री बुक-कीपिंग

यह शब्द उस किसी भी हिसाब-पद्धति के लिए काम में लिया जाता है जो पूर्ण रूप से डबल एन्ट्री पद्धति के अनुसार नहीं है। इसमें कुछ लेन देन की कोई एन्ट्री नहीं होती, कुछ की एक तरफ की ही एन्ट्री होती है और कुछ की दोनों तरफ, जो पूर्ण एन्ट्री होती है। रोकड़ वही खाता पद्धति और मिश्रित वहीखाता पद्धति भी इसी पद्धति के अंग हैं।

सिंगल एन्ट्री बुक-कीपिंग का मतलब प्रत्येक लेन देन की सिर्फ एक ही एन्ट्री करना नहीं है

बल्कि ऐसी सब पद्धतियो से है जो पूर्ण दोहरा लेखा पद्धति नहीं हैं। आजकल इस नाम के स्थान पर अपूर्ण बहीखाता (Incomplete Records) शब्द प्रयोग किया जाता है और यह उचित भी है।

किसी व्यापारिक संस्था का हिसाब दो कारणो से अपूर्ण हो सकता है :—(अ) बुक-कीपिंग किसी अभिप्राय से अपूर्ण रखी गई हो, या (ब) बुक-कीपिंग के कुछ रिकॉर्ड नष्ट हो गये हो या चुरा लिये गये हो। हिसाब की अपूर्णता भिन्न-भिन्न स्थितियो मे भिन्न-भिन्न होती है। कभी-कभी तो बहुत कम हिसाब लुप्त होता है और कभी-कभी तो बिल्कुल ही हिसाब नहीं होता।

अपूर्ण बहीखातो से अन्तिम खाते तैयार करना (Preparation of Final Accounts from Incomplete Records) —जब व्यापारी के बुक-कीपिंग रिकॉर्ड पूर्ण नहीं होते तब इनसे निम्नलिखित दो पद्धतियो के अनुसार अन्तिम खाते तैयार किये जा सकते हैं :—

प्रथम पद्धति

व्यापार के शुद्ध और प्रमाणित अन्तिम खाते दोहरा लेखा पद्धति के अनुसार ही तैयार किये जा सकते हैं, परन्तु जब व्यापारी का लेखा बहुत खराब हो और उसके लेन-देन आदि के वाउचर न हों तब दोहरा लेखा सिद्धांत के अनुसार खाते तैयार नहीं किये जा सकते। इसलिये इस तरह की परिस्थितियों मे अन्तिम खाते प्राय. निम्नलिखित प्रकार से तैयार किये जाते हैं .—

(अ) प्रथम तो व्यापारी की शुरू की आर्थिक स्थिति का एक लेखा तैयार किया जाता है। इस लेखे को प्रारम्भिक विवरण (Statement of Affairs) कहते हैं। यह बैलेस-शीट के सदृश होता है, सम्पत्ति दाहिने हाथ की तरफ और ऋण बाँये हाथ की तरफ दिखलाये जाते है। ऋणो पर सम्पत्ति की जो अधिकता होती है उसे व्यापार के स्वामी की पूँजी समझना चाहिए, परन्तु यह लेखा वास्तव में बैलेस-शीट नही है, क्योकि इसमे सब खाताबही के बैलेस नहीं होते; कुछ बैलेस तो खाताबही के होते हैं परन्तु बाकी सिर्फ अन्दाज से ही लिखे जाते हैं। इस लेखे को तैयार करने के लिए सूचना निम्न प्रकार से प्राप्त की जाती है :—

रोकड़ी रुपये की रकम व्यापार-स्वामी से मालूम की जाती है और बैंक बैलेस पास-बुक से मालूम कर लिया जाता है। तमाम देनदारो और लेनदारो की रकमें खाता वही के व्यक्तिगत खातो से प्राप्त की जाती हैं। अन्त के स्टॉक की रकम व्यापार-स्वामी से मालूम की जाती है। अन्य सम्पत्तियों के सम्बन्ध में व्यापारी से प्रश्नो द्वारा मालूम किया जा सकता है। इसी तरह से बिना चुकाये हुए खर्चे, पेशगी मे दी हुई रकम, प्राप्त न हो पाई आय, पेशगी से प्राप्त हुई आय की रकम आदि के सम्बन्ध मे भी सूचना मालूम की जाती है।

(ब) तब वर्ष के अन्त मे, उसी तरह का एक लेखा और तैयार किया जाता है और इसे अन्तिम विवरण (Statement of Affairs) से व्यापारी के अन्त की पूँजी मालूम की जाती है।

(स) अन्त में व्यापारी की प्रारम्भिक और अन्तिम पूँजियों की तुलना करके और वर्ष में अधिक जमा की हुई रकम या व्यापार से निकाली हुई पूँजी की रकम को ध्यान मे रखते हुए व्यापार का लाभ मालूम किया जाता है। यदि अन्त की पूँजी शुरू की पूँजी से अधिक है तो लाभ समझना चाहिए, परन्तु यदि अन्त की पूँजी शुरू की पूँजी से कम है तो नुकसान समझना चाहिए।

यदि इन लेखों के तैयार करने के लिए पूरी-पूरी सूचना मिल जाती है तो लाभ या हानि की रकम भी ठीक-ठीक पता चल जाती है, अन्यथा नहीं परन्तु इन विवरणों (Statements of Affairs) को तैयार करने के लिए पूर्ण सूचना नहीं मिलती; इसलिए इनसे मालूम किये हुए लाभ या हानि की रकम भी प्रमाणित नहीं समझी जा सकती।

सिंगल एण्ट्री की हानियाँ .—अपूर्ण बहीखाता पद्धति में निम्नलिखित हानियाँ हैं :—

१ बहियों की अंकगणित-सम्बन्धी शुद्धता तलपट के द्वारा जाँचना असम्भव है।

२. क्योंकि अन्तिम खातों के तैयार करने के लिए बहुत सी सूचना इधर-उधर से मालूम करनी पड़ती है, इसलिए ये खाते बिल्कुल प्रमाणित नहीं समझे जा सकते।

३. पूर्ण निगरानी की कमी से बहियों में अशुद्धियाँ और छल-कपट बहुत हो जाते है और ये सरलता से मालूम नहीं हो सकते।

४. लाभ के मूल कारणों और खर्चों की प्रकृति और रकम के सम्बन्ध में पूरी-पूरी सूचना नहीं मिलती। .

उदाहरण १०६

एक्स अपनी पुस्तकें इकहरा लेख पद्धति पर रखता है। उससे निम्न सूचनायें प्राप्त हुईं:—

	१ जनवरी १९५०	३१ दिसम्बर १९५०
	रु०	रु०
फर्नीचर	२००	२००
स्टॉक	२,८००	३,०५०
विविध देनदार	२,१००	२,४००
रोकड़	१५०	२००
विविध लेनदार	१,७५०	१,९००
देय बिल	—	३००
ऋण	—	५००
विनियोग	—	१,०००

उसने वर्ष में ५०० रु० व्यापार से निकाले।

३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का, फर्नीचर पर १०% ह्रास अपलिखित करके तथा विविध देनदारों पर १०% डूबत ऋण संचय बनाकर, लाभ दिखाते हुए एक विवरण तैयार कीजिये।

प्रारम्भिक विवरण

(१ जनवरी १९५०)

दायित्व	रु०	सम्पत्ति	रु०
लेनदार	१,७५०	रोकड़ हस्ते	१५०
पूँजी	३,५००	देनदार	२,१००
		स्टॉक	२,८००
		फर्नीचर	२००
	५,२५०		५,२५०

अन्तिम विवरण

(३१ दिसम्बर १९५०)

दायित्व	रु०	सम्पत्ति		रु०
देय बिल	३००	रोकड़ हस्ते		२००
लेनदार	१,९००	देनदार	२,४००	
ऋण	५००	घटाओ डूबत ऋण संचय	२४०	२,१६०
पूँजी	३,८९०	स्टॉक		३,०५०
		फर्नीचर	२००	
		घटाओ ह्रास	२०	१८०
		विनियोग		१,०००
	६,५९०			६,५९०

लाभ का विवरण (३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए)

	रु०
पूँजी ३१ दिसम्बर १९५० को	४,७९०
जोड़ा आहरण	५००
	५,२९०
घटाई पूँजी १ जनवरी १९५० को	३,५००
साल का शुष्क लाभ	१,७९०

उदाहरण १०७

१ जनवरी १९५० को एक फुटकर व्यापारी की, जो कि अपने पूर्ण द्वि-प्रविष्टि लेखे नहीं रखता, स्थिति निम्न थी. रोकड़ हस्ते ३४५ रु० ; रोकड़ बैंक में ५,५३७ रु० ; स्टॉक ५,६९० रु० ; विविध देनदार ३,२७५ रु० ; फर्नीचर २१० रु० ; विविध लेनदार ३,४५७ रु०।

१९५० के अन्त में उसकी स्थिति निम्न थी ; रोकड़ हस्ते ४५० रु० ; रोकड़ बैंक में २,४३० रु० ; स्टॉक ४,६८० रु० ; विविध देनदार ४,६२० रु० ; फर्नीचर २५० रु० ; विविध लेनदार ४,३५० रु० ।

वर्ष में उसने व्यापार से ६,५०० रु० निकाले, जिनमे से ५,६०० रु० व्यापार के लिये एक मोटर कार खरीदने मे खर्च किये ।

३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का व्यापारिक परिणाम तथा उस दिन का चिट्ठा, (अ) फर्नीचर तथा मोटर ट्रक पर १०% का ह्रास करके (ब) १२० रु० वास्तविक डूबत ऋण अपलिखित करके ; (स) तथा ५% सम्भवत: डूबत ऋण के लिये सचय करके, तैयार कीजिये ।

वर्ष १९५० के लिए लाभ का विवरण

१-१-१९५० को स्थिति	रु०	३१-१२-१९५० को स्थिति	रु०
रोकड़ हस्ते	३४५	रोकड़ हस्ते	४५०
बैंक	५,५३७	बैंक	२,४३०
स्टॉक	५,६९०	स्टॉक	४,६८०
विविध देनदार	३,२७५	विविध देनदार (डू०ऋ० संचय घटाकर)	४,२७५
फर्नीचर	२१०	फर्नीचर (ह्रास घटाकर)	२२५
		मोटर ट्रक (ह्रास घटाकर)	५,०४०
	१५,०५७		१७,१००
घटाये विविध लेनदार	३,४५७	घटाये विविध लेनदार	४,३५०
पूँजी	११,६००	पूँजी	१२,७५०

	रु०
१९५० में पूँजी में वृद्धि (१२,७५० रु०—११,६०० रु०)	१,१५०
जोड़ा आहरण	९००
१९५० का शुष्क लाभ	२,०५०

चिट्ठा (३१ दिसम्बर १९५० को)

		रु०			रु०
विविध लेनदार		४,३५०	रोकड़ हस्ते		४५०
पूँजी खाता			रोकड़ बैंक में		२,४३०
१-१-५० को शेष	११,६००		विविध देनदार	४,५००	
जोड़ो १९५० का लाभ	२,०५०		घटाओ डू०ऋ० सचय	२२५	४,२७५
	१३,६५०		स्टॉक		४,६८०
घटाओ आहरण	९००	१२,७५०	फर्नीचर	२५०	
			घटाओ ह्रास	२५	२२५
			मोटर ट्रक	५,६००	
			घटाओ ह्रास	५६०	५,०४०
		१७,१००			१७,१००

उदाहरण १०८

१ जनवरी १९५० को बी व सी ने साझेदारी में व्यापार प्रारम्भ किया। बी का अपना व्यापार है जिसका ३१ दिसम्बर १९४९ को चिट्ठा निम्न था :—

रोकड़ बैंक में १,००० रु० ; देनदार १२,००० रु० ; स्टॉक १०,००० रु० ; भवन २०,००० रु० ; लेनदार १५,००० रु० ; पूँजी २८,००० रु०।

सी ५,००० रु० रोकड़ी तथा १०,००० रु० की एक मशीनरी पूँजी के रूप में लाया तथा यह निश्चय किया गया कि बी को ६,००० रु० की ख्याति से क्रेडिट किया जाय। यह भी निश्चय किया गया कि सी ३,००० रु० वार्षिक वेतन लेगा तथा साझियों की पूँजी पर ५% प्रति वर्ष की दर से ब्याज दिया जायगा. शेष लाभ बी व सी में ३/५ व २/५ के अनुपात में विभाजित होगा। उन्होंने एक वर्ष तक व्यापार किया, परन्तु उनकी पुस्तकें पूर्ण द्वि-प्रविष्टि द्वारा नहीं रक्खी गई।

१९५० के अन्त में लेनदार २२,१०० रु०, देनदार १६,००० रु० ; स्टॉक २४,५०० रु०; तथा बैंक अधिविकर्ष ५०० रु० का था।

१ जुलाई १९५० को, साझीदारों ने डी से १,००० रु० ६% प्रति वर्ष की दर पर उधार लिये, जिस पर ३१ दिसम्बर १९५० तक का ब्याज दिया जा चुका है। सी ने अपने वेतन के ३,००० तथा बी ने ५,१०० रु० निकाले।

व्यापार का कुल लाभ दिखाते हुए एक विवरण तैयार करो तथा प्रत्येक साझीदार के पूँजी खाते के अंतिम शेष की गणना करो। भवन पर ५% तथा मशीनरी पर १०% ह्रास काटो। ३१ दिसम्बर १९५० को चिट्ठा भी बनाओ।

शुद्ध लाभ का विवरण

कुल सम्पत्ति १-१-१९५० का		रु०	कुल सम्पत्ति ३१-१२-१९५० का		रु०
बी की सम्पत्ति : रोकड़ बैंक में		१,०००	देनदार		१६,०००
देनदार		१२,०००	स्टॉक		२४,५००
स्टॉक		१०,०००	भवन (ह्रास घटाकर)		१९,०००
भवन		२०,०००	कलें (ह्रास घटाकर)		९,०००
ख्याति		६,०००	ख्याति		६,०००
सी की सम्पत्ति : रोकड़		५,०००			७४,५००
कलें		१०,०००	घटाये दायित्व		
		६४,०००	लेनदार	२२,१००	
घटाये लेनदार		१५,०००	बैंक अधिविकर्ष	५००	
पूँजी		४९,०००	डी का ऋण	१,०००	२३,६००
			पूँजी		५०,९००

	रु०
कुल सम्पत्ति में वृद्धि (५०,९०० रु० – ४९,००० रु०)	१,९००
जोड़ो आहरण (५,१०० रु० + ३,००० रु०)	८,१००
व्यापार का शुद्ध लाभ	१०,०००

विभाजन का विवरण

		रु०		रु०
पूँजी पर ब्याज			शुद्ध लाभ	१०,०००
बी—३४,००० रु० पर		१,७००		
सी—१५,००० रु० पर		७५०		
वेतन—सी		३,०००		
शेष—बी	२,७३०			
सी	१,८२०	४,५५०		
		१०,०००		१०,०००

[illegible]

Drawn Capital to Drawing

पूँजी खाते

	बी	सी		बी	सी
	रु०	रु०		रु०	रु०
आहरण	५,०००	३,०००	शेष नी/ला	३४,०००	१५,०००
शेष आ/ले	३५,१७०	१८,७३०	ब्याज	१,७००	७५०
			वेतन		३,०००
			लाभ	४,४७०	२,६८०
	४०,१७०	२१,७३०		४०,१७०	२१,७३०

चिट्ठा (३१ दिसम्बर १९५० को)

		रु०		रु०
बैंक अधिविकर्ष		५००	देनदार	१६,०००
लेनदार		२२,१००	स्टॉक	२४,५००
डी का ऋण		१,०००	भवन	१६,०००
पूँजी : बी	३५,१७०		कलें	६,०००
सी	१८,७३०	५३,९००	ख्याति	६,०००
		७७,५००		७७,५००

द्वितीय पद्धति

यदि व्यापारी का रखा हुआ अपूर्ण रिकॉर्ड (मूल प्रमाण-पत्र सहित) दोहरा लेखा पद्धति पूर्ण करने के लिए काफी सूचना दे सके, तो दोहरा लेख पूर्ण करके अन्तिम खाते लगभग सही बनाये जा सकते हैं।

लेकिन इन परिस्थितियों में दोहरा लेखा कैसे पूर्ण किया जाय, इसके लिए कोई एक विशेष उपाय नहीं। उपाय तो हिसाब की अपूर्णता पर निर्भर रहता है। उदाहरण र्थ, मान लीजिये कि व्यापारी रोकड़ वही और व्यक्तिगत खातों के सिवा और कुछ नहीं रखता तो द्वि-प्रविष्टि निम्नलिखित तरह से तैयार की जा सकती है :—

(१) वर्ष के शुरू का एक आर्थिक विवरण (Statement of Affairs) तैयार करना चाहिए और इससे जिन नये खातों का पता चले उनको खाता वही में खोल लेना चाहिए। आर्थिक विवरण ऐसे स्मरण पत्रों से जो उपलब्ध हों तथा व्यापारी की याद से बनाया जावेगा।

(२) रोकड़ वही की सब रकमें भिन्न-भिन्न खातों में ख़ता देनी चाहिए।

(३) देनदारों के खातों का विश्लेषण करके कुल देनदार खाता (Total Debtors Account) तैयार करना चाहिए और इस खाते के ब्यौरे को अर्थात विक्रय, ब्याज, न-सिकरी हुई बिले, प्राप्त हुआ रुपया, डूबत खाते बट्टा आदि को उचित खातों में खता देना चाहिए।

(४) लेनदारों के खातों का विश्लेषण करके कुल लेनदार खाता (Total Creditors Account) तैयार करना चाहिए और इस खाते के ब्यौरे को (जैसे—क्रय, क्रय वापिसी, दिये हुए बिल, प्राप्त हुआ बट्टा आदि) उचित खातों में खता देना चाहिए।

(५) प्रारम्भिक तलपट तैयार करके यह मालूम करना चाहिए कि सब खाते ठीक तरह से लिखे गये हैं या नहीं।

(६) रिज़र्व, घिसावट डूबत खाते पूँजी आदि पर ब्याज, न चुकाये हुये खर्चे आदि के ठीक तरह से समायोजन कर लेना चाहिए।

(७) यदि आवश्यक हो तो अन्तिम तलपट भी तैयार कर लेना चाहिए और उसके उपरांत अन्तिम खाते साधारण ढंग से तैयार कर लेने चाहिए।

सिंगल एण्ट्री को दोहरे लेखे में परिणत करने के प्रश्न परीक्षा में कई तरह से दिये जा सकते हैं, परन्तु हरएक स्थिति में इस तरह के प्रश्न निम्नलिखित उपाय से सरलता से हल किये जा सकते हैं :—

(अ) प्रथम तो शुरू का आर्थिक (Statement of Affairs) तैयार करना चाहिये और इससे शुरू की सम्पत्ति और ऋण मालूम कर लेना चाहिए।

(ब) रोकड़ खाता, बैंक खाता, कुल देनदार खाता व कुल लेनदार खाता आदि खाते खोलने चाहिये।

(स) उपर्युक्त खातों से क्रय, विक्रय, विक्रय वापिसी, क्रय वापिसी इत्यादि मालूम करना चाहिए। निम्नलिखित उदाहरण से इस ढंग को अच्छी तरह से समझा जा सकेगा :—

उदाहरण १०९

एक व्यापारी जो पूर्ण पुस्तकें नहीं रखता आपसे ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष के अन्तिम खाते तैयार करने के लिये कहता है। आपने किसी प्रकार निम्न सूचनायें प्राप्त कीं।

उसकी रोकड़ पुस्तक का सारांश: १ जनवरी १९५० को रोकड़ का शेष, ५,१७० रु०, देनदार ४२,०५० रु०, वैयक्तिक आहरण ३,००० रु०; क्रय ३२,४०० रु०, वेतन २,५०० रु०; किराया १,२०० रु०; बिजली खर्च १५० रु०; मुद्रण व आलेखन (Printing and Stationery) २५० रु०; विज्ञापन ४५० रु०।

उसके अन्य सम्पत्ति व दायित्व :—

	३१ दिसम्बर १९४९	३१ दिसम्बर १९५०
	रु०	रु०
देनदार	३,३५०	५,१००
लेनदार	१,४००	२,५००
अदत्त किराया	१००	१००
अदत्त बिजली खर्च	२०	१५
अदत्त विज्ञापन	—	२५०

३१ दिसम्बर १९५० को स्टॉक का मूल्य ४,५०० रु० था, परन्तु व्यापारी के पास ३१ दिसम्बर १९४९ के स्टॉक का कोई लेखा न था। उसने आपको सूचना दी कि उसने अपना माल बिना हेर फेर के लागत पर ३३⅓% लाभ पर बेचा है।

३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का उसका लाभ-हानि खाता तथा चिट्ठा तैयार करो।

अब इस प्रकार के प्रश्न को, जिसमें दोहरा लेखा पूर्ण करने के लिए पर्याप्त सूचना है, हल करना है तो दोहरे लेखे के अनुसार सहायक खाते व तलपट (यदि आवश्यक न हो तो रफ कागज पर ही) तैयार कर लेने चाहिए और तब अन्तिम खाते बनाने चाहिये।

इस प्रश्न में प्रारम्भिक चिट्ठा तथा पूर्ण खाते निम्न प्रकार होंगे—

चिट्ठा (१ जनवरी १९५०)

	रु०		रु०
लेनदार	१,४००	रोकड़	५,१७०
अदत्त खर्च	१२०	देनदार	३,३५०
पूंजी	९,८३०	स्टॉक	२,८३०
	११,३५०		११,३५०

१ जनवरी १९५० को स्टॉक की राशि निम्न प्रकार होगी :—

[illegible] रु०

[illegible]

[illegible] ३,३५०

बिके हुए माल की वास्तविक लागत	३२,८५०
जोड़ा—३१ दिसम्बर १९५० को स्टॉक	४,५००
	३७,३५०
घटाया—वर्ष के मध्य में क्रय	३४,५००
स्टॉक १ जनवरी १९५० को	२,८५०

निम्न खातों में फूल (*) से चिह्नित राशियाँ शेष राशियाँ (balancing figures) हैं। अतः क्रय की राशि लेनदार खाते से और विक्रय की राशि देनदार खाते से मालूम की गई हैं।

रोकड़ खाता

	रु.	आ.	पा.		रु.	आ.	पा.
शेष नी/ला	५,१७०	–	–	आहरण खाता	३,०००	–	–
देनदार	४२,०५०	–	–	लेनदार	३२,४००	–	–
				वेतन खाता	२,५००	–	–
				किराया खाता	१,२००	–	–
				बिजली खर्च खाता	३५०	–	–
				मुद्रण एवं आलेखन खाता	२५०	–	–
				विज्ञापन खाता	४५०	–	–
				शेष आ/ले	७,०७०	–	–
	४७,२२०	–	–		४७,२२०	–	–

देनदार

	रु.	आ.	पा.		रु.	आ.	पा.
शेष नी/ला	३,३५०	–	–	रोकड़	४२,०५०	–	–
विक्रय खाता*	४३,८००	–	–	शेष आ/ले	५,१००	–	–
	४७,१५०	–	–		४७,१५०	–	–

स्टॉक खाता

	रु.	आ.	पा.				
शेष नी/ला	२,८५०	–	–				

लेनदार

	रु.	आ.	पा.		रु.	आ.	पा.
रोकड़	३२,४००	–	–	शेष नी/ला	१,४००	–	–
शेष आ/ले	३,५००	–	–	क्रय खाता*	३४,५००	–	–
	३५,९००	–	–		३५,९००	–	–

किराया खाता

	रु.	आ.	पा.		रु.	आ.	पा.
रोकड़	१,२००	–	–	अदत्त किराया खाता	१००	–	–
अदत्त व्यय खाता	१००	–	–				

बिजली खर्च खाता

	रु.	आ.	पा.		रु.	आ.	पा.
रोकड़	३५०	–	–	अदत्त बिजली खर्च खाता	२०	–	–
अदत्त व्यय खाता	२५	–	–				

पूँजी खाता

	रु.	आ.	पा.		रु.	आ.	पा.
				शेष नी/ला	६,८५	–	–

आहरण खाता

	रु.	आ.	पा.		रु.	आ.	पा.
रोकड़	३,०००	–	–				

वेतन खाता

	रु.	आ.	पा.		रु.	आ.	पा.
रोकड़	२,५००	–	–				

मुद्रण एवं आलेखन खाता

	रु.	आ.	पा.		रु.	आ.	पा.
रोकड़	२५०	–	–				

विज्ञापन खाता

	रु.	आ.	पा.		रु.	आ.	पा.
रोकड़	४५०	–	–				
अदत्त व्यय खाता	२५०	–	–				

अदत्त व्यय खाता

	रु.	आ.	पा.		रु.	आ.	पा.
				किराया खाता	१००	–	–
				बिजली खर्च खाता	२५	–	–
				विज्ञापन खाता	२५०	–	–

माल खाता

	रु.	आ.	पा.		रु.	आ.	पा.
लेनदार	१४,५००	–	–				

विक्रय खाता

	रु.	आ.	पा.		रु.	आ.	पा.
				देनदार	४३,८५०	–	–

रोकड़

[illegible]

बिजली खर्च	..	३४५	
विज्ञापन	....	७००	
मुद्रण एवं आलेखन	...	२५०	
स्टॉक	...	२,८५०	
अदत्त व्यय	..		३६५
		५७,५१५	५७,५१५

व्यापार व लाभ-हानि खाता

(३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये)

	रु.	आ.	पा.		रु.	आ	पा.
स्टॉक १-१-५० को	२,८५०	—	—	विक्रय	४३,८००	—	—
क्रय	३४,५००	—	—	स्टॉक ३१-१२-५० को	४,५००	—	—
सकल लाभ आ/ले	१०,६५०	—	—				
	४८,३००	—	—		४८,३००	—	—
वेतन	२,५००	—	—	सकल लाभ नी/ला	१०,६५०	—	—
किराया	१,२००	—	—				
बिजली खर्च	३४५	—	—				
विज्ञापन	७००	—	—				
मुद्रण एव आलेखन	२५०	—	—				
शुद्ध लाभ (पूँजी में स्थानान्तरित)	५,६५५	—	—				
	१०,६५०	—	—		१०,६५०	—	—

चिट्ठा (३१ दिसम्बर १९५० को)

		रु.		रु.
लेनदार		३,५००	रोकड़	७,०७०
अदत्त व्यय		[illegible]	देनदार	५,१००
पूँजी	६,८५०		[illegible]	४,५००
जोड़ा लाभ	५,६५५			
	१५,८०५			
घटाया आहरण	३,०००	[illegible]		
		१[illegible]		१६,६७०

उदाहरण ११०

एक व्यापारी अपने ... निम्नलिखित विश्लेषण रोकड़ पुस्तक से उद्धृ[illegible]

[illegible]	८०
[illegible]	६००
विविध देनदारों से प्राप्त	२,५००
अतिरिक्त पूँजी १ सितम्बर १९५० को लगाई हुई	६००
[illegible]	३००
[illegible] ऋण १ जुलाई १९५० को ६% प्रति वर्ष की दर पर	५००
[illegible]	६००

१ जनवरी १९५० को निम्न [illegible]

[illegible] २,२०० रु० ; स्टॉक १,८०० रु० ।

[illegible] १९५० को निम्न

विजली खर्च	३४५	
विज्ञापन	७००	
मुद्रण एवं आलेखन ...	२५०	
स्टॉक ..	२,८५०	
अदत्त व्यय ...		३६५
	५७,५१५	५७,५१५

व्यापार व लाभ-हानि खाता
(३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये)

	रु.	आ	पा		रु.	आ	पा
स्टॉक १-१-५० को	२,८५०	—	—	विक्रय	४३,८००	—	—
क्रय	३४,५००	—	—	स्टॉक ३१-१२-५० को	४,५००	—	—
सकल लाभ आ/ले	१०,६५०	—	—				
	४८,३००	—	—		४८,३००	—	—
वेतन	२,५००	—	—	सकल लाभ नी/ला	१०,६५०	—	—
किराया	१,२००	—	—				
विजली खर्च	३४५	—	—				
विज्ञापन	७००	—	—				
मुद्रण एवं आलेखन	२५०	—	—				
शुद्ध लाभ (पूँजी में स्थानान्तरित)	५,६५५	—	—				
	१०,६५०	—	—		१०,६५०	—	—

चिट्ठा (३१ दिसम्बर १९५० को)

		रु		रु.
लेनदार		३,५००	रोकड़	७,०७०
अदत्त व्यय		३६५	देनदार	५,१००
पूँजी	९,८५०		स्टॉक	४,५००
जोड़ा लाभ	५,९५५			
	१५,८०५			
घटाया आहरण	३,०००	१२,८०५		
		१६,६७०		१६,६७०

उदाहरण ११०

एक व्यापारी अपनी पुस्तके इकहरा लेख पद्धति के अनुसार रखता है। १९५० वें वर्ष में उसने निम्नलिखित विश्लेषण रोकड़ पुस्तक से उद्धृत किये।

	रु०		रु०
विविध देनदारों से प्राप्त	४,०००	अधिविकर्ष १ जनवरी १९५० को	६००
अतिरिक्त पूँजी १ सितम्बर १९५० को लगाई हुई	३००	विविध लेनदारों को दिया	२,७००
मी का ऋण १ जुलाई १९५० को ६% प्रति वर्ष की दर पर	१,५००	सामान्य खर्चे	६००
		वेतन	३००
		आहरण	४००
		बैंक में शेष ३१ दिसम्बर १९५० को	६००

१ जनवरी १९५० को निम्न शेष थे :—विविध देनदार ५,३०० रु०; विविध लेनदार १,५०० रु०; भवन २,५०० रु०; स्टॉक १,८०० रु०।

३१ दिसम्बर १९५० को निम्न शेष थे :—विविध देनदार ६,००० रु; विविध लेनदार १,६०० रु०; स्टॉक २,६०० रु०; भवन २,५०० रु०।

उदाहरण १११

एक व्यापारी ने १९५० वें वर्ष में अपने व्यापारिक व्यवहारों का पूर्ण लेखा नहीं रक्खा (अर्थात् उसने बहीखाते की इकहरी लेख पद्धति अपनाई), उसके व्यापार के बारे में निम्न बातें प्राप्त हुई —

(अ) उसकी रोकड पुस्तक का सारांश : बैंक में दी गई रोकड़ ८,६९० रु० ; लाभाश रोकड़ी प्राप्त २०० रु० ; आहरण रोकडा ४४५ रु० तथा बैंक से ७५० रु० ; देनदारों से प्राप्त रोकड़ ११,७०० रु० ; चैक व रोकड़ द्वारा लेनदारों को भुगतान ७,७५० रु० व २०० रु० ; मजदूरी १,५०० रु० ; तथा विविध खर्चे १,०७५ रु० रोकड़ा दिये ; बैंक से प्राप्त ब्याज १० रु० ;

(ब) उसके सम्पत्ति व दायित्व :—

	१-१-१९५०	३१-१२-१९५०
	रु०	रु०
स्टॉक	६००	७५०
बैंक शेष	८००	१,०००
रोकड हस्ते	३०	२०
देनदार	७५०	१,०५०
लेनदार	१,२००	१,४००
विनियोग	३,०००	३,०००

उपर्युक्त सूचना से यह ध्यान मे रखते हुये कि वर्ष के अन्त में अदत्त विविध खर्चे १२० रु० हैं, ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए उसकी रोकड़ पुस्तक व हानि-लाभ खाता तथा उसी तिथि को चिट्ठा तैयार कीजिये।

रोकड़-पुस्तक

	रोकड़	बैंक		रोकड़	बैंक
	रु०	रु०		रु०	रु०
शेष नी/ला	३०	८००	आहरण	४४५	७५०
रोकड़		८,६९०	बैंक	८,६९०	
लाभाश	२००		लेनदार	२००	७,७५०
देनदार	११,५००		मजदूरी	१,५००	
ब्याज		१०	विविध व्यय	१,०७५	
			शेष आ/ले	२०	१,०००
	११,९३०	९,५००		११,९३०	९,५००

व्यापार व लाभ-हानि खाता
(३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए)

	रु०		रु०
स्टॉक १-१-५० को	६००	विक्रय	१२,०००
क्रय	८,१५०	स्टॉक ३१-१२-५० को	७५०
मजदूरी	१,५००		
सकल लाभ आ/ले	२,५००		
	१२,७५०		१२,७५०
विविध व्यय	१,१९५	सकल लाभ नी/ला	२,५००
शुद्ध लाभ	१,५१५	ब्याज	१०
		लाभाश	२००
	२,७१०		२,७१०

मजदूरी	१०,०८०		
किराया	४,०००		
दर	१,५००		
मनोरंजन कर	१०,०००		
बिजली खर्चे	६,५५३		
विज्ञापन	८,२३६		
बैंक का ब्याज व खर्चे	४,९५०		
विविध खर्चे	६,३६८		
सामान का नवीनकरण	१,६७५		
मरम्मत	३४५		
अंकेक्षण शुल्क	२१०		
पट्टे का ह्रास	२,५००		
शुद्ध लाभ	३३,१५५		
	१,४१,५७४		१,४१,५७४

चिट्ठा (३१ दिसम्बर १९५० को)

	रु०	रु०		रु०	रु०
बैंक-ऋण		४५,०००	रोकड़ हस्ते		२५,५१०
अदत्त व्यय		३,१९५	जलपान आदि का स्टॉक		५४०
पूँजी :			पट्टे पर गृह		४७,५००
लाभ	३३,१५५				
घटाया आहरण	७,८००	२५,३५५			
		७३,५५०			७३,५५०

टिप्पणी :—वर्ष १९५० के अदत्त किराये ८०० रु० के लिए प्रबन्ध कर लिया गया है। पट्टा २० वर्ष के लिए है, इसलिए किरत में से २,५०० रु० ह्रास के रूप मे अपलिखित कर दिये गये हैं।

उदाहरण ११३

१ जनवरी १९५० को, एक व्यापारी ने अपना व्यापार ५,००० रु० की पूँजी से प्रारम्भ किया। वह रोकड़ पुस्तक के अतिरिक्त और कोई पुस्तक नहीं रखता। पुस्तक का ३१ दिसम्बर १९५० को निम्न साराश था :—

आय : विविध देनदारों से ६,५०० रु० ; नकद बिक्री ३,५०० रु०; कमीशन २५० रु०।

भुगतान विविध लेनदारों को ७,८५० रु० ; नकद खरीद ४,५०० रु० ; व्यापारिक खर्चे १,२५० रु० ; फर्नीचर १०० रु० ; युद्ध के लिए दान ५० रु०।

३१ दिसम्बर १९५० को वर्ष से सम्बन्धित निम्न सूचनायें प्राप्त हुईं ; उधार बिक्री १२,००० रु० ; उधार खरीद १०,२०० रु० ; अदत्त खर्चे १५० रु० ; पूर्वदत्त खर्चे ७५ रु०।

फर्नीचर पर १०% ह्रास तथा ५० रु० डूबत ऋण अपलिखित करके ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ-हानि खाता तथा उसी तिथि को चिट्ठा तैयार कीजिये। ३१ दिसम्बर १९५० को स्टॉक का मूल्य २,२५० रु०।

लाभ-हानि खाता
(३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये)

	रु०		रु०
क्रय	१४,७००	विक्रय	१५,५००
व्यापारिक व्यय	१,३२५	स्टॉक ३१-१२-५० को	२,२५०
युद्ध-दान	५०	कमीशन	२५०
ह्रास	१०		
डूबत ऋण	५००		
शुद्ध लाभ	१,४१५		
	१८,०००		१८,०००

चिट्ठा ३१ दिसम्बर १९५० को

		रु०			रु०
लेनदार		२,३५०	रोकड़ हस्ते		१,५००
अदत्त व्यय		१५.०	देनदार		५,०००
पूँजी	५,०००		पूर्वदत्त व्यय		७५
जोड़ा लाभ	१,४१५	६,४१५	स्टॉक		२,१५०
			फर्नीचर	१००	
			घटाया ह्रास	१०	९०
		८,९१५			८,९१५

उदाहरण ११४

ए ने, जिसके खाते इकहरे लेख पर रक्खे गये हैं, १ जनवरी १९५० को २,००० रु० अपने तथा १,००० बी से उधार लेकर एक फुटकर व्यापार लिया।

क्रय-मूल्य में ७५० रु० ख्याति के; २५० रु० फर्नीचर के; १,७५० रु० स्टॉक के हुए तथा २५० रु० कार्यशील पूँजी के लिए रक्खे गये, जिनमें से २०० रु० बैंक में जमा कर दिया।

वर्ष में ए की बिक्री ११,५००) की हुई जिसमें से १०,९०० बैंक में जमा किये, तथा शेष रोकड़ा भुगतान के लिये प्रयोग किये गये। वर्ष में बैंक व रोकड़ से निम्न भुगतान हुये :—

	रु०		रु०
क्रय	७,८००	मजदूरी	८२०
		वेतन	२५०
व्यापारिक खर्चे	३६०	किराया दर व कर :—	
घरेलू कार्यों के लिये भुगतान	१२०	व्यापारिक	२६६
आहरण	१,२००	वैयक्तिक	१४८

३१ दिसम्बर १९५० को स्टॉक का मूल्य १,८७५ रु० था। व्यापारिक लेनदार व देनदार क्रमशः ६७५ रु० व ७४० रु० तथा बैंक शेष राशि २७५ रु० थी।

फर्नीचर पर ५% ह्रास था, बी के ऋण पर ५% वार्षिक ब्याज था तथा ५० रु० संदिग्ध ऋण संचय का प्रबन्ध करो।

३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का रोकड़ व बैंक खाता, लाभ-हानि खाता तथा चिट्ठा तैयार करो।

रोकड़ खाता

	रु०		रु०
ए का पूँजी खाता	२,०००	व्यापार का क्रय :—	
बी का ऋण खाता	१,०००	ख्याति	७५०
विक्रय	११,५००	फर्नीचर	२५०
		स्टॉक	१,७५०
		रोकड़	२००
		बैंक	१०,९००
		[illegible]	१३६
		वैयक्तिक भुगतान	४८१
		शेष आगे ले	[illegible]
	१४,५००		१४,५००

बैंक खाता

		रु०		रु०
१९५०		२००	विविध भुगतान	१०,८२५
,,		१०,९००	शेष आगे ले	२७५
		११,१००		११,१००

टिप्पणी —साल के मध्य में बैंक व रोकड़ से किये गये कुल भुगतान १०,६६४ रु० है। बैंक मे जमा की गई कुल राशि ११,१०० रु० है, जिसमे से २७५ रु० बैंक में बाकी हैं। अतः बैंक से कुल भुगतान (११,१०० – २७५) १०,८२५ रु० हुए। शेष भुगतान (१०,६६४ – १०,८२५) १६६ रु० रोकड़ में से भुगतान किये गये।

व्यापार व लाभ-हानि खाता
(३१ दिसम्बर १६५० को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए)

	रु.	आ.	पा.		रु.	आ.	पा.
क्रय	१०,२२५	–	–	विक्रय	१२,२५०	–	–
मजदूरी	८२०	–	–	स्टॉक	१,८७५	–	–
सकल लाभ आ/ले	३,०८०	–	–				
	१४,१२५	–	–		१४,१२५	–	–
वेतन	२५०	–	–	सकल लाभ आ/ला	३,०८०	–	–
व्यापारिक व्यय	३६०	–	–				
किराया, दर व कर	२६६	–	–				
डूबत ऋण संचय	५०	–	–				
ऋण पर ब्याज	५०	–					
फर्नीचर पर ह्रास	१२	८	–				
शुद्ध लाभ (पूँजी खाते को स्थानांतरित)	२,०६१	८	–				
	३,०८०	–	–		३,०८०	–	–

चिट्ठा ३१ दिसम्बर १६५० को

		रु.	आ.	पा.			रु.	आ.	पा.
लेनदार		६७५	–	–	रोकड़ हस्ते		४८१	–	–
बी का ऋण (ब्याज सहित)		१,०५०	–	–	रोकड बैंक मे		२७५	–	–
ए का पूँजी खाता					देनदार	७५०–०–०			
लगाई गई राशि	२,०००–०–०				घटाया डू० ऋ०सचय	५०–०–०	७००	–	–
जोड़ा लाभ	२,०६१–८–०				स्टॉक		१,८७५	–	–
	४,०६१–८–०				फर्नीचर	२५०–०–०			
घटाया आहरण	१,४६८–०–०	२,५६३	८	–	घटाया ह्रास	१२–८–०	२३७	८	–
					ख्याति		७५०	–	–
		४,३१८	८	–			४,३१८	८	–

सिंगल एण्ट्री बहियों को डबल एण्ट्री बहियों में बदलना

किसी समय के सिंगल एण्ट्री हिसाब को दोहरा लेखा प्रणाली में बदलना ऊपर बताया जा चुका है, लेकिन उस व्यापारी को, जोकि अब तक अपना हिसाब सिंगल एण्ट्री या अधूरी बहियों से रखता आया है और अब नये वर्ष से दोहरा लेखा प्रणाली से रखना चाहता है यह चाहिए कि वह अपने अन्तिम लेखे (Statement of Affairs) को रोजनामचे (Journal) में लिख ले और उनकी सब प्रविष्टियाँ खातों में खता दे और फिर जिस प्रकार दोहरे लेखे से हिसाब रखा जाता है रखे।

प्रश्न

१. व्यापारिक बही खाता पद्धति व रोकड़ लेखा पद्धति में क्या अन्तर है, तथा प्रत्येक का प्रयोग किन परिस्थितियों में किया जाता है?

२. एक व्यापार में लेखा-विधि की जो पद्धति प्रयोग की जाय वह उसकी आवश्यकताओं को पूर्ण करने योग्य होनी चाहिये — इस कथन को पूर्णतया समझाइये।

३. मिश्रित वही खाता पद्धति से आप क्या अर्थ समझते हैं ? उदाहरण देकर समझाइये ।

४. इकहरा लेख प्रणाली क्या है और उसके क्या दोष हैं ?

५. एक संस्था में जहाँ रोकड़ पुस्तक व स्टॉक के अतिरिक्त कुछ नहीं है, आप उसके अन्तिम खाते बनाते समय किस पद्धति का प्रयोग करेंगे ? पूर्ण रूप से वर्णन करो ।

६. एक व्यापार की पुस्तकें इकहरे लेख प्रणाली पर रक्खी जाती हैं । उसके स्टॉक का मूल्यांकन तथा उस दिन तक का हिसाब बिल्कुल ठीक है । उसको दोहरे लेखे प्रणाली में बदलना है । स्वरूप से समझाइये कि यह किस प्रकार होगा ?

७. एक ऐसा व्यापारी, जो उधार व नकद व्यापार करता है तथा अपने हिसाब की पुस्तकें इकहरे लेख पद्धति पर रखता है, भविष्य में अपने हिसाब पूर्ण या दोहरे लेखे पद्धति पर रखना चाहता है । संक्षेप में बताइये कि उसे कैसे व क्या करना चाहिये ?

८. 'इकहरा लेख पद्धति वास्तव में कोई पद्धति नहीं है और इस नाम से हिसाब रखने की प्रत्येक दोषयुक्त, अपूर्ण, अशुद्ध, अवैज्ञानिक व अक्रमबद्ध लेखन पद्धति का बोध होता है, इस विवरण को समझाइये ।

९. दोहरा लेख पद्धति की तुलना में इकहरा लेख पद्धति के क्या लाभ व हानि हैं ?

१०. आपने एक छोटे से व्यापारी के इकहरा लेखे से पूर्ण प्रमाणपत्रों के बिना अंतिम खाते तैयार किये हैं । बताइये किन कारणों से ये खाते अशुद्ध हैं ?

११. ए अपने हिसाब-किताब इकहरा लेख पद्धति पर रखता है । ३० जून १९५१ को उसकी पुस्तकों व प्राप्त विवरणों से निम्नांकित बातें पता लगीं :—

पुराना ऋण ५,००० रु०; रोकड़ हस्ते १० रु०; स्टॉक (अनुमानित) २,००० रु०; फर्नीचर व फिटिंग्स ६०० रु०; लेनदार २,००० रु०; बैंक अधिविकर्ष (Overdraft) ६०० रु० ।

ए ने बताया कि उसने १ जुलाई १९५० को ३,००० रु० बैंक में देकर व २,००० रु० के मूल्य के स्टॉक से व्यापार आरम्भ किया था । उसके वर्षभर के आहरण ६,२०० रु० थे ।

वर्ष की लाभ हानि दिखाते हुये (१०% फर्नीचर व फिटिंग्स पर ह्रास, आवश्यक कल्पित करके) एक विवरण व ३० जून १९५१ को चिट्ठा बनाइये ।

१ जुलाई १९५१ को दोहरे लेख पद्धति प्रारम्भ करने के लिये कौनसी जर्नल प्रविष्टियाँ करनी होंगी ।

उत्तर : लाभ १,७६० रु० ।

१२. एक व्यापारी अपनी पुस्तकें इकहरा लेख पद्धति पर रखता है तथा आपको उसकी पुस्तकों से निम्नलिखित सूचनाओं का पता लगा है :—

		३१-१२-१९५९	३१-१२-१९६०
		रु०	रु०
स्टॉक हस्ते	...	६००	७५०
फर्नीचर	....	१००	१००
देनदार	..	१५०	१६०
लेनदार	...	३००	२००
रोकड़ बैंक में	..	५०	१४०
रोकड़ हस्ते	...	२०	—

[illegible]

[illegible]

उत्तर : [illegible]

१३. [illegible]

	रु०		रु०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
		[illegible]	[illegible]
		[illegible]	[illegible]

	सी		१,३७०
	५५,०७०		५५,०७०

३० जून १९५१ को रोकड ४७० रु०; स्टॉक ८,८०० रु० ऋणदाता ४,२०० रु० व लेनदार ३,५१० रु० थे। वे क्रमशः /७, २/७ व २/७ के अनुपात में लाभ बाँटते हैं तथा ए ने ७० रु०; बी ने ४० रु० व सी ने ३० रु० प्रति सप्ताह निकाले। पूँजी पर व साझीदारों के अधिविकर्ष (overdraft) पर ६% की दर से व्याज होगा, परन्तु अपहरण पर कोई व्याज न होगा। ३० जून १९५१ को उनके खातों की स्थिति बताओ व यह भी बताओ कि राशियाँ किस प्रकार मालूम की गई है?

उत्तर: लाभ ५,०२८ रु० ; ए की पूँजी ७,८०१ रु० ; बी की पूँजी ३,७३५ रु० ; सी का अधिविकर्ष १,५७६ रु०।

१४ १ जनवरी १९५० को ए व बी प्रत्येक ने १०,००० रु० लगाकर साझेदारी में व्यापार प्रारम्भ किया। वे लेनदारों व देनदारों के अतिरिक्त हिसाब क्रमबद्ध न रख सके। ३१ दिसम्बर १९५० को उनके व्यापार की स्थिति निम्न थी :—

रोकड हस्ते १,२५० रु० ; रोकड बैंक में ५,००० रु० ; स्टॉक १२,००० रु० ; देनदार २,००० रु०; लेनदार ४,२५० रु० ; विनियोग ४,००० रु० ; फर्नीचर १,००० रु०।

वर्ष में ए व बी प्रत्येक ने माह के अन्त में २५० रु० अपने वैयक्तिक खर्चों के लिये निकाले।

आप फर्नीचर पर ५% ह्रास अपलिखित करके लाभ-हानि का विवरण व ३१ दिसम्बर १९५० को चिट्ठा बनाइये।

उत्तर: शुद्ध लाभ ६,६५० रु०; चिट्ठे का योग २५,२०० रु०।

१५. एक फुटकर व्यापारी ने अपने हिसाब की उचित पुस्तकें नहीं रक्खीं, परन्तु आपको निम्नलिखित विवरण से ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष की लाभ-हानि निकालनी है तथा उसी तिथि का आर्थिक विवरण (Statement of Affairs) भी बनाना है।

	१ जनवरी १९५० रु०	३१ दिसम्बर १९५० रु०
स्टॉक	१६,७००	१८,५००
विविध लेनदार	१५,४००	१४,०००
विविध देनदार	११,२००	१०,५००
रोकड़ हस्ते	२५०	१,२००
बैंक अधिविकर्ष (overdraft)	२०,२००	१६,४००
प्राप्य बिल	१५,०५०	१४,२००
फिक्चर्स व फिटिंग्स	१,५००	१,५००
मोटर गाड़ी	१,६००	१,६००

वर्ष में २,६०० रु० आहरण के थे। १०% फिक्चर्स में ह्रास व ३०० रु० से मोटर गाडी अपलिखित करो। देनदारों के सम्बन्ध में यह पता लगा कि ५०० रु० अप्राप्य हैं व ५% और संचय करना है। प्राप्य बिलों के सम्बन्ध में ७०० रु० का और संचय करो।

उत्तर: लाभ ३,८५० रु० ; स्थिति-विवरण ४५,६५० रु०

१६. १ जनवरी १९५० को एक व्यापारी ने १०,००० के धन से केवल एक रोकड़ पुस्तक व वैयक्तिक खाता बही रखते हुए व्यापार प्रारम्भ किया। ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ-हानि खाता व उसी तिथि को चिट्ठा बनाइये। रोकड़ पुस्तक के विश्लेषण करने पर निम्न बातें पता लगीं :—

देनदारों से प्राप्त ७०,००० रु० ; नकद बिक्री २१,००० रु० ; लेनदारों को भुगतान ५०,००० रु०, व्यय भुगतान किये ११,००० रु० ; वैयक्तिक आहरण ५,००० रु० ; नकद क्रय १८,००० रु०।

३१ दिसम्बर १९५० को स्टॉक १०,००० रु० का; देनदार ६०,००० रु० के व लेनदार ५५,००० रु० के मूल्यांकित किये गये।

उत्तर: शुद्ध लाभ २७,००० रु० ; चिट्ठा ८७,००० रु०।

१७. ए ने, जो अपनी पुस्तकें इकहरा लेखा पद्धति पर रखता है, आपको ३१ मार्च १९५१ को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ-हानि खाता व उसी तिथि को चिट्ठा बनाने के लिये निम्न सूचना दी :—

रोकड़	३,३७०	१,२३०
व्यापारिक लेनदार	५,०८०	४,८१०
अदत्त खर्चे	७२०	६२०

उसकी रोकड़ पुस्तक अग्नि द्वारा नष्ट हो गई, परन्तु उसके अन्य लेख प्रमाणों से पता लगा कि उसका आहरण ६,५०० रु० था व ३१ दिसम्बर १९५० को जो फर्नीचर साल के मध्य में खरीदा गया उसमें ७०० रु० की एक तिजोरी सम्मिलित है, तथा उसने ६,४६० रु० खर्चे के व्यय किये।

माल का क्रय ५६,३१० रु० व विक्रय ७३,३२० रु० का था तथा ३१ दिसम्बर १९५० को राशि निकालने से पूर्व देनदारों की राशि में से ४२० रु० डूबत ऋण लिख दिये गये।

अधिक से अधिक विवरण देते हुए व्यापार व लाभ-हानि खाता तैयार करो।

उत्तर : शुद्ध लाभ ८,०१० रु०।

अध्याय—१९

व्यक्तियों और संस्थाओं के हिसाब-खाते

जब कोई व्यक्ति व्यापार आरम्भ करता है तो वह उसमें पूँजी लगाता है और उसके ऐसा करने का मूल उद्देश्य लाभ प्राप्त करना होता है। इसलिये उसे इस तरह का बहीखाता रखना चाहिए जिससे उसे बड़ी सरलता से व्यापार का लाभ या हानि मालूम हो सके और यह मालूम हो जाय कि उसकी पूँजी व्यापार वर्ष के अन्त में किस प्रकार लगी हुई है। इसके लिये उसे व्यापारिक हिसाब पद्धति को ही अपनाना चाहिये और यदि उसका व्यापार छोटा है तो कम से कम मिश्रित हिसाब पद्धति को तो अवश्य ही अपनाना चाहिए, परन्तु सिर्फ रोकड़ी हिसाब पद्धति केवल उसी समय तक काम दे सकेगी जब तक उसके लेन-देन रोकड़ी हों और उधार व्यवहार बिल्कुल नहीं हो।

यद्यपि व्यापार में रोकड़ी-हिसाब पद्धति काम नहीं दे सकती, परन्तु वह व्यवसायी व्यक्तियों, सोसाइटियों और संस्थाओं के लिए बिल्कुल ठीक हो सकती है, क्योंकि इनको न तो दूसरी तरह की कठिन पद्धतियों की आवश्यकता है और न वे इस तरह से हिसाब को रखने वाले विद्वान् अकाउन्टेन्टों को रखने में समर्थ ही हैं। इसीलिए इस तरह की संस्थाओं में साधारण ढंग से हिसाब रखना ही ठीक है।

व्यवसायी व्यक्तियों का बहीखाता

व्यवसायी व्यक्तियों (जैसे—डॉक्टर, वकील, अकाउन्टेन्ट आदि) का हिसाब रोकड़ी-हिसाब पद्धति के अनुसार रखा जाता है। इन व्यवसायों में उधार का लेन-देन बहुत कम होता है, इसलिए व्यापारिक बहीखाता पद्धति काम में नहीं ली जाती। परन्तु यदि व्यवसायी व्यक्ति के उधार के लेन-देन अधिक होते हैं तो उसे [illegible] पद्धति को अपनाना पड़ता है।

व्यवसायी व्यक्ति को दो उद्देश्यों के लिए [illegible] रखने पड़ते हैं—(१) आय-व्यय को [illegible] से हिसाब रखने के लिये, (२) एक समय विशेष की शुद्ध आय निकालने के लिये। ये दोनों उद्देश्य रोकड़ी हिसाब पद्धति से भली प्रकार सिद्ध हो जाते हैं।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

२. स्टॉक-बहियाँ—रोकड़ बही के अतिरिक्त, एक या अधिक स्टॉक-बहियाँ भी (अ) तमाम स्थायी उपयोग के लिए खरीदी हुई तमाम वस्तुओ (जैसे —मशीन, पुस्तक, औजार आदि) और (ब) बेचने के लिए खरीदे हुये माल का रिकॉर्ड रखने के लिए रखी जानी चाहिए।

जब ये वस्तुएँ खरीदी जाती है तब इन्हे रोकड़ बही में लिखा जाता है, परन्तु इन्हे स्टॉक-बही मे भी लिखना चाहिए ताकि इनका स्थायी रिकॉर्ड रखा जा सके। इस स्टॉक-बही मे तिथि, वस्तु का व्योरा, तादाद, रकम आदि के सम्बन्ध मे खाने होने चाहिए। जब वस्तु बेची जाती है, या खो जाती है, या नष्ट हो जाती है तब इनका नोट स्टॉक बही मे दे देना चाहिए।

३. आय-व्यय खाता—(Income & Expenditure Account) व्यवसाय की वार्षिक आय मालूम करने के वास्ते आय-व्यय खाता तैयार करना चाहिए। यह खाता व्यापारी के हानि लाभ खाते के सदृश होता है। आय-व्यय खाता रोकड़ बही से सब आय और व्यय की रकमे लेकर तथा शुरू और अन्त के स्टॉक की रकमें शामिल करके तैयार किया जाता है। यदि आय-व्यय खाता रोकड़ी-हिसाब पद्धति के अनुसार तैयार किया जाय तो इसमे न चुकाये हुए खर्चों, पेशगी मे दी हुई आय आदि की रकमो को ध्यान मे नही रखा जाता। ये रकमे हर वर्ष ही छोड़ दी जाती हैं।

यदि चिट्ठे की आवश्यकता हो तो वह रोकड़ बही और स्टॉक बही की सूचना से तैयार कर लिया जाता है।

नोट – यदि व्यवसायी व्यक्ति पूर्ण व्यापारिक बही-खाता पद्धति अपनाता है तो अन्तिम खाते व्यापारिक खातो की तरह तैयार किये जाते है।

उदाहरण ११५

एक डॉक्टर ने, राजकीय सेवा से अवकाश प्राप्त करके १ अप्रैल १९५० को २,००० रु० अपने तथा अपनी जीवन बीमा की पॉलिसी पर ६% वार्षिक की दर से ३,००० रु० उधार लेकर निजी चिकित्सालय खोला। उसके खाते रोकड़ के आधार पर रक्खे गये तथा उसका संक्षिप्त रोकड़ खाता निम्न था :—

	रु०		रु०
निजी पूँजी	२,०००	दवाई आदि की खरीद	२,४५०
ऋण	३,०००	चीरफाड के यन्त्र	२,५००
दवाओं की बिक्री	५,२५०	मोटरकार	३,२५०
रोगियों से प्राप्त भेंट	२५०	मोटरकार खर्चे	१,२००
रोगियों को घर देखने का शुल्क	२,५००	मजदूरी व वेतन	१,०५०
भाषणों से प्राप्त शुल्क	२४०	किराया	६००
प्राप्त पेंशन	३,०००	सामान्य खर्चे	५६०
विनियोग से आय	१,३५०	घरेलू खर्चे	१,८००
		घरेलू फर्नीचर	२५०
		पुत्री के विवाह का खर्च	२,१५०
		ऋण पर ब्याज	१८०
		बैंक में शेष	१,५००
		रोकड़ हस्ते	१००

३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का रोकड़ खाता तथा आय व्यय खाता और उसी तिथि को चिट्ठा तैयार कीजिये। मोटरकार खर्चों का १/५ भाग कार के निजी प्रयोग में व्यवहार किये गये तथा मजदूरी व वेतन मे २०० रु० घरेलू नौकर पर व्यय हुये।

३१ मार्च १९५१ को दवाओं के स्टॉक का मूल्य ९५० रु० है।

टिप्पणी :—इस प्रश्न में अन्तिम खाते रोकड़ के आधार पर रक्खे गये लेखों से तैयार करने हैं तथा अदत्त का कोई विचार नहीं करना है। तथापि बिक्री योग्य माल के स्टॉक का ध्यान अवश्य रखना है।

३१ मार्च १९५१ को समाप्त होने वाले वर्ष का पूँजी खाता

	रु०		रु०
मोटरकार खर्च	४००	रोकड़	२,०००
घरेलू खर्च	१,८००	पेंशन	३,०००
घरेलू फर्नीचर	२५०	विनियोग से आय	१,१५०
विवाह का खर्च	२,१५०	प्रैक्टिस से शुद्ध आय	३,८५०
घरेलू नौकरों की मजदूरी	३००		
शेष आ/लि	५,३००		
	१०,३००		१०,२००

३१ मार्च १९५१ को समाप्त होने वाले वर्ष का आय व्यय खाता

	रु०		रु०
दवाओं का क्रय	२,४५०	दवाओं की बिक्री	५,२५०
मोटरकार खर्चे	८००	रोगियों से प्राप्त भेंट	२५०
मजदूरी व वेतन	७५०	देखने का शुल्क	२,५००
किराया	६००	[illegible] से प्राप्त शुल्क	२४०
सामान्य खर्चे	५६०	दवाओं का स्टॉक ३१-३-५१ को	९५०
ऋण पर ब्याज	१८०		
शुद्ध आय	३,८५०		
	९,१९०		९,१९०

चिट्ठा ३१ मार्च १९५१ को

	रु०		रु०
ऋण	३,०००	रोकड़ हाथ में	१००
पूँजी	५,३००	रोकड़ बैंक में	१,५००
		दवाओं का स्टॉक	९५०
		फर्नीचर व यन्त्र	२,५००
		मोटरकार	३,२५०
	८,३००		८,३००

(२) प्राइवेट व्यक्तियों के लिये बहीखाता

[illegible]

[illegible]

२. स्टॉक-बहियाँ—रोकड़ बही के अतिरिक्त, एक या अधिक स्टॉक-बहियाँ भी (अ) तमाम स्थायी उपयोग के लिए खरीदी हुई तमाम वस्तुओ (जैसे —मशीन, पुस्तक, औजार आदि) और (ब) बेचने के लिए खरीदे हुये माल का रिकॉर्ड रखने के लिए रखी जानी चाहिए।

जब ये वस्तुएँ खरीदी जाती है तब इन्हे रोकड़ बही में लिखा जाता है, परन्तु इन्हे स्टॉक-बही मे भी लिखना चाहिए ताकि इनका स्थायी रिकॉर्ड रखा जा सके। इस स्टॉक-बही मे तिथि, वस्तु का व्योरा, तादाद, रकम आदि के सम्बन्ध मे खाने होने चाहिए। जब वस्तु बेची जाती है, या खो जाती है, या नष्ट हो जाती है तब इनका नोट स्टॉक बही मे दे देना चाहिए।

३. आय-व्यय खाता—(Income & Expenditure Account) व्यवसाय की वार्षिक आय मालूम करने के वास्ते आय-व्यय खाता तैयार करना चाहिए। यह खाता व्यापारी के हानि लाभ खाते के सदृश होता है। आय-व्यय खाता रोकड़ बही से सब आय और व्यय की रकमे लेकर तथा शुरू और अन्त के स्टॉक की रकमे शामिल करके तैयार किया जाता है। यदि आय-व्यय खाता रोकड़ी हिसाब पद्धति के अनुसार तैयार किया जाय तो इसमे न चुकाये हुए खर्चों, पेशगी मे दी हुई आय आदि की रकमो को ध्यान मे नहीं रखा जाता। ये रकमें हर वर्ष ही छोड़ दी जाती हैं।

यदि चिट्ठे की आवश्यकता हो तो वह रोकड़ बही और स्टॉक वही की सूचना से तैयार कर लिया जाता है।

नोट - यदि व्यवसायी व्यक्ति पूर्ण व्यापारिक बही-खाता पद्धति अपनाता है तो अन्तिम खाते व्यापारिक खातो की तरह तैयार किये जाते है।

उदाहरण ११५

एक डॉक्टर ने, राजकीय सेवा से अवकाश प्राप्त करके १ अप्रैल १९५० को २,००० रु० अपने तथा अपनी जीवन बीमा की पॉलिसी पर ६% वार्षिक की दर से ३,००० रु० उधार लेकर निजी चिकित्सालय खोला। उसके खाते रोकड़ के आधार पर रक्खे गये तथा उसका संक्षिप्त रोकड़ खाता निम्न था :—

	रु०		रु०
निजी पूँजी	२,०००	दवाई आदि की खरीद	२,४५०
ऋण	३,०००	चीरफाड़ के यन्त्र	२,५००
दवाओं की बिक्री	५,२५०	मोटरकार	३,२५०
रोगियों से प्राप्त भेट	२५०	मोटरकार खर्चे	१,२००
रोगियों को घर देखने का शुल्क	२,५००	मजदूरी व वेतन	१,०५०
भाषणों से प्राप्त शुल्क	२४०	किराया	६००
प्राप्त पेंशन	३,०००	सामान्य खर्चे	५६०
विनियोग से आय	१,३५०	घरेलू खर्चे	१,८००
		घरेलू फर्नीचर	२५०
		पुत्री के विवाह का खर्च	२,१५०
		ऋण पर व्याज	१८०
		बैंक में शेष	१,५००
		रोकड़ हस्ते	१००

३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का रोकड़ खाता तथा आय व्यय खाता और उसी तिथि का चिट्ठा तैयार कीजिये। मोटरकार खर्चों का १/४ भाग कार के निजी प्रयोग में व्यवहार किये गये तथा मजदूरी व वेतन के ३०० रु० घरेलू नौकर पर व्यय हुये।

३१ मार्च १९५१ को दवाओं के स्टॉक का मूल्य ९५० रु० है।

टिप्पणी :—इस प्रश्न में अन्तिम खाते रोकड़ के आधार पर रक्खे गये लेखों से तैयार करने हैं तथा प्रश्न का कोई विचार नहीं करना है। वास्तव में किसी शेष माल के स्टॉक का ध्यान अवश्य रखना है।

३१ मार्च १६५१ को समाप्त होने वाले वर्ष का पूँजी खाता

	रु०		रु०
मोटरकार खर्चे	४००	रोकड़	२,०००
घरेलू खर्चे	१,८००	पेंशन	३,०००
घरेलू फर्नीचर	२५०	विनियोग से आय	१,३५०
विवाह का खर्च	२,१५०	प्रैक्टिस से शुद्ध आय	३,८५०
घरेलू नौकरों की मजदूरी	३००		
शेष आ/ले	५,३००		
	१०,२००		१०,२००

३१ मार्च १६५१ को समाप्त होने वाले वर्ष का आय-व्यय खाता

	रु०		रु०
दवाओं का क्रय	२,४५०	दवाओं की बिक्री	५,२५०
मोटरकार खर्चे	८००	रोगियों से प्राप्त भेंट	२५०
मजदूरी व वेतन	७५०	देखने का शुल्क	२,५००
किराया	६००	भाषणों से प्राप्त शुल्क	२४०
सामान्य खर्चे	५६०	दवाओं का स्टॉक ३१-३-५१ को	६५०
ऋण पर व्याज	१८०		
कुल आय	३,८५०		
	६,१६०		६,१६०

चिट्ठा　३१ मार्च १६५१ को

	रु०		रु०
ऋण	३,०००	रोकड़ हस्ते	१००
पूँजी	५,३००	रोकड़ बैंक मे	१,५००
		दवाओं का स्टॉक	६५०
		चीरफाड़ के यन्त्र	२,५००
		मोटरकार	३,२५०
	८,३००		८,३००

(२) प्राइवेट व्यक्तियों के लिये बहीखाता

बहुत से व्यक्ति अपना कोई हिसाब नहीं रखते; उनके विचार मे हिसाब रखना अनावश्यक है और समय की बरबादी है। किन्तु, क्या यह बुद्धिमानी की नीति है ? एक प्राइवेट व्यक्ति को भी अपना हिसाब-किताब रखना चाहिए, जिससे यह पता लग सके कि एक दी हुई अवधि मे उसकी आय क्या हुई, किस प्रकार खर्च की गई और वह कितनी रकम बचा सका है। उचित हिसाब-किताब के अभाव मे, वह खोई या चोरी गई रकम पता न लगा सकेगा और न यही पता लगा सकेगा कि कौनसी दिशा मे उसके खर्चे अधिक हुये हैं।

प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सामर्थ्य के भीतर खर्च करना चाहिये। एक दी हुई अवधि के आरम्भ मे, जैसे मान लो महीने के आरम्भ मे, उसे अपनी आय का उस माह के लिए अनुमान लगाना चाहिये और खर्च उसी प्रकार करना चाहिये। साथ ही उसे माह के दौरान की तमाम प्राप्तियों और भुगतानो का हिसाब भी रखना चाहिये ताकि वह महीने के अन्त मे यह मालूम कर सके कि उसकी स्थिति क्या है—क्या उसके खर्चे उतने ही हुये है जितना उसने सोचा था अथवा अधिक हो गए हैं ?

रोकड़ी पद्धति बहीखाता प्राइवेट व्यक्ति के लिए पर्याप्त है। प्राप्त हुई और चुकाइ गई तमाम रकमो का दर्ज करने के लिये एक साधारण रोकड़ बही रखनी चाहिए। महीने के अखीर में रोकड़ पुस्तक का विश्लेपण करना चाहिए और एक संक्षिप्त रोकड़ खाता (Abstract Cash Account) भी बनाया जाय। इसमे आय और व्यय को उचित शीर्षकों के अन्तर्गत दिखाना चाहिये। इस तरह वह उन स्रोतो का पता लगा सकता है जिनसे आय प्राप्त की गई है और खर्च करने की मदे भी मालूम हो जाती हैं। यदि वह देखे कि किसी मद विशेप पर उसका व्यय अनुमान से अधिक हुआ है तो वह भविष्य मे उसको घटाने के उपाय कर सकता है। आधुनिक दिनों मे यदि उचित प्रकार अंकुश न रखा जाय तो व्यय के बढ़ने की प्रवृत्ति होती है।

रोकड़ बही के अतिरिक्त, एक स्टॉक बही भी खरीदी गई तमाम सम्पत्तियो जैसे विनियोग, जेवरात, घरेलू फर्नीचर और अन्य वस्तुओ का स्थायी रिकार्ड रखने के लिये होनी चाहिए। स्टॉक बही मे दिखाई गई कोई वस्तु जब प्रयोग मे आ जाय, बेच दी जाय, खो जाय या चोरी चली जाय, तो इस आशय का नोट उसमे दे देना चाहिये ताकि स्टॉक बही यह ठीक-ठीक बता सके कि एक अमुक दिन क्या वस्तुये पास होनी चाहिये। स्टॉक बही मे ऐसी तमाम वस्तुओ का लेखा होना चाहिए जो समय-समय पर खरीदी जाये। यदि किसी व्यक्ति के पास कोई बड़ा मकान या जायदाद हो, तो उसे किरायेदारों का रजिस्टर रखना भी आवश्यक होगा।

एक धनी व्यक्ति के लिये, जिसकी आय के कई महत्वपूर्ण साधन हैं, केवल एक रोकड़ बही, स्टॉक बही और किरायेदारों का रजिस्टर रखना ही पर्याप्त न होगा। मुख्य रोकड़ बही के अतिरिक्त उसे अन्य कई खाता बहियाँ रखनी पड़ेंगी। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति, जिसे मकान जायदाद से, विनियोग, जमींदारी, कृषि और महाजनी से आय प्राप्त होती है, निम्नलिखित खाते रख सकता है :—

(१) सामान्य खाता (General Account) :—अर्थात् एक सामान्य रोकड़ बही तमाम आय और व्यय दर्ज करने के लिए। जिन मदो के लिए सहायक रोकड़ बही रखी जाती है वे सामान्य रोकड़ बही मे केवल जोड़ से दर्ज की जायेंगी, ताकि उनमे निरर्थक बातो का समावेश न हो पाये।

(२) मकान जायदाद खाता (House Property Account) —अर्थात् एक सहायक रोकड़ बही, मकान जायदाद सम्बन्धी तमाम प्राप्ति एवं भुगतानो को दर्ज करने के लिए। साथ मे एक किराए-दारो का रजिस्टर भी रखा जाय जिसमे प्रत्येक किरायेदार का अलग-अलग खाता हो और एक स्टॉक बही भी होनी चाहिये जिससे प्रत्येक मकान का विवरण पता लग सके। यह स्टॉक बुक 'मकान जायदाद का रजिस्टर' (House Property Register) कही जा सकती है।

(३) विनियोग खाता (Investment Account) :—अर्थात् एक सहायक रोकड़ बही विनियोगो के सम्बन्ध मे किये गए तमाम भुगतानो और प्राप्तियो का रिकार्ड करने के लिये। एक प्रतिभूति रजिस्टर (Securities Register) भी हो जिसमे प्रत्येक विनियोग की विस्तृत बाते दी गई हों।

(४) कृषि खाता (Agriculture Account :—अर्थात् एक सहायक रोकड़ बही कृषि के सम्बन्ध मे तमाम प्राप्तियों और भुगतान को दर्ज करने के लिए; साथ मे तमाम कृषि औजारों, पशु-धन आदि की एक स्टॉक बही भी हो।

(५) जमींदारी खाता (Zamindari Account) :—अर्थात् एक सहायक रोकड़ बही जमींदारी की तमाम प्राप्तियों एवं भुगतानों को दर्ज करने के लिए। साथ में किरायेदारों का एक रजिस्टर भी रखना चाहिये जिसमें प्रत्येक किरायेदार का अलहदा खाता दिया हो। तमाम भू-जायदाद का विस्तार से ब्यौरा दिखाने के लिये एक भू-सम्पत्ति रजिस्टर (Land Register) भी रखा जाये।

यदि हिसाब किताब की एक योजना कार्यान्वित की जाय तो कोई भी सूचना सरलता से प्राप्त की जा सकती है।

(३) सोसाइटियों, संस्थाओं आदि के हिसाब

(Book-keeping for Socities, Institutions etc.)

सार्वजनिक लाइब्रेरी, स्कूल, कालिज, अनाथालय, मन्दिर, मस्जिद, गिरजा आदि संस्थाये और विभिन्न प्रकार की सोसाइटी भी लाभ कमाने के लिए नहीं होतीं । वे तो साधारण जनता के लाभ के लिए होती है । उनकी आय प्रमुखत दान, फीस, चन्दे, सरकारी और म्यूनिस्पल ग्रान्ट तथा अन्य समान स्रोतो से होती है । वे किसी एक विशेष व्यक्ति या व्यक्तियो की सम्पत्ति नहीं होतीं । उनका संचालन और नियन्त्रण कुछ व्यक्तियो के हाथ मे होता है जिन्हें ट्रस्टी, प्रबन्धक सभा, एक्जीक्यूटिव कमेटी कहते हैं। प्रतिदिन का प्रबन्ध एक व्यक्ति को (वैतनिक या अवैतनिक) सौंप दिया जाता है जिसे मैनेजर या सैक्रेटरी कहते हैं ।

क्योंकि सुसाइटी और संस्थाओ के फण्ड का प्रबन्ध देने वाले व्यक्तियों के अलावा अन्य व्यक्तियों के हाथ मे रहता है, कपट और गबन के लिए वहाँ बहुत अवसर हैं । अतः यह बहुत आवश्यक है कि संस्था एवं सुसायटी का हिसाब उचित रूप से रखा जाय ।

किसी संस्था या सुसायटी की प्रबन्धक सभा प्रायः प्रत्येक वर्ष के आरम्भ मे उस वर्ष के लिये संभावी आय और व्यय का एक अनुमान तैयार करती है । इस अनुमान को बजट कहते हैं । बजट तैयार करने का उद्देश्य पहले से यह योजना बनाना है कि किसी वर्ष विशेष की आय किस प्रकार काम में लाई जावेगी । अत सुसाइटी या संस्था के हिसाब रखने का प्रमुख उद्देश्य यह देखना है कि तमाम आय दी हुई अवधि के अन्दर प्राप्त हो जाय, वह बजट के अनुसार खर्च की जाय तथा कुछ खो या चोरी न हो जाय ।

सुसाइटी और संस्थाओ के हिसाब रोकड़ी पद्धति बहीखाता से रखे जाते हैं, व्यापारिक पद्धति से नहीं । निम्नलिखित हिसाब की किताबे आवश्यक है :—

(१) रोकड़ बही :—विश्लेपण खानो सहित एक रोकड़ बही तमाम प्राप्ति और भुगतान दर्ज करने के लिये रखी जाती है । विश्लेपण खाने रखने का उद्देश्य यह है कि वर्ष के अन्त मे आय और व्यय का सारांश बनाने की आवश्यकता बच जावे । प्रत्येक प्राप्ति एव भुगतान रोकड़ बही मे दर्ज करते समय ही उपयुक्त विश्लेपण खाने मे रख दिया जाता है । इस प्रकार प्रतिदिन आय और व्यय का सारांश बनता जाता है । विश्लेषण के खाने का जोड़ एक विशेष मद के अन्तर्गत प्राप्त की गई या चुकाई गई रकम बताता है ।

(२) स्टॉक बही —इमारत, फर्नीचर, विनियोग, पुस्तके, लेबोरेटरी का साज सामान, उपभोग्य स्टोर्स आदि के रूप मे खरीदी गई तमाम जायदाद का विस्तृत रिकार्ड रखने के लिये एक या अधिक स्टॉक बहियाँ होनी चाहिये । जब कुछ वस्तुये खरीदी जाती हैं, तो उनको पहले तो रोकड़ बही मे लिखा जाता है परन्तु वहाँ से उनका स्टॉक बहियो मे दर्ज किया जाता है । जब कभी कोई वस्तु, जो स्टॉक बही में दिखाई हुई है, काम में आ जाती है या बेच दी या अलग कर दी अथवा चोरी चली जाती है तो हमे इस आशय का नोट स्टॉक बही में दे देना चाहिये जिससे स्टॉक बहियाँ तिथि तक पूर्ण हिसाब बतावे ।

यह आवश्यक नहीं है कि वह पुस्तक जिसमें किसी स्थाई जायदाद का व्यौरा लिखा जाता है, स्टॉक बही ही कही जावे । उदाहरण के लिए, किसी संस्था के विनियोगों का व्यौरा जिस पुस्तक मे लिखा जावे उसे 'प्रतिभूति रजिस्टर' (Securities Register) कहते हैं ।

(३) वैयक्तिक खाता बही (Personal Ledger) ;—एक खाता बही वह पुस्तक है जिसम वर्गित खाते रखे जाते हैं। आय पर अंकुश रखने और वैयक्तिक आय का ब्यौरा दर्ज करने के लिये एक वैयक्तिक बहीखाता रखना प्रायः आवश्यक हो जाता है। उदाहरण के लिये,

(अ) स्कूल या कालिज का फीस रजिस्टर जिसमे प्रत्येक विद्यार्थी के लिये फीस का ब्यौरा दिया जावे, जैसे प्रत्येक माह चुकाई गई रकम और बकाया रकम आदि।

(आ) लाइब्रेरी या क्लब में सदस्यो का रजिस्टर यह दिखलाने के लिये कि प्रत्येक सदस्य से कितना चन्दा लेना है, कितना वास्तव मे प्राप्त हो गया और कितना बकाया है।

(इ) पुण्यार्थ संस्था जैसे अनाथालय के लिये दानकर्त्ताओ का रजिस्टर जिसमे प्रत्येक दानकर्त्ता द्वारा वायदा की हुई रकम, वास्तव मे संग्रह की गई रकम और बकाया पड़ी रकमे दिखाई गई हो।

(ई) किरायेदार या आसामियो का रजिस्टर (उदाहरण के लिये एक मस्जिद या मन्दिर की दशा में, जिसके पास मकान जायदाद तथा कृषि भूमि होती है) जिसमे प्रत्येक किरायेदार द्वारा दी जाने वाली रकम, वास्तव मे प्राप्त हुई रकम और बकाया रकम दिखाई गई हो।

(४) वेतन एवं मजदूरी बही (Salary and wages Books) व्यय पर अंकुश रखने और अधिक भुगतान रोकने के लिये उचित वेतन एवं मजदूरी बहियाँ रखना चाहिये। इस पुस्तक मे प्रत्येक कर्मचारी को देय वेतन या मजदूरी की रकम और वास्तव मे चुकाई गई रकम लिखी जावेगी तथा मासिक योग रोकड़ बही में दर्ज किया जावेगा।

(५) वार्षिक खाता विवरण (Annual Statement of Account) .—वर्ष के अन्त में एक संक्षिप्त रोकड़ खाता रोकड़ बही से बनाया जा सकता है। यह विवरण उचित रूप से वर्गित मदो के अन्तर्गत वर्ष की आय और व्यय दिखाता है और प्रत्येक शीर्षक या मद के सामने केवल कुल रकम दिखाई जाती है। इसे वार्षिक खाता विवरण कहते हैं। इस विवरण में कभी-कभी गत वर्ष के अंक और चालू होने वाले वर्ष के अनुमानित अंक भी तुलना के हेतु लगा दिये जाते हैं।

बहुत दशाओं में तो इस खाता विवरण का अंकेक्षण कराया जाता है। संस्था की प्रवन्धक सभा के सामने इसे स्वीकृति के लिये प्रस्तुत किया जाता है और जब स्वीकृति हो जाय तो अन्तिम रूप प्राप्त कर लेना है।

नोट :—पुण्यार्थ संस्था कभी-कभी अपनी साधारण आय को बढ़ाने के लिये कोई व्यापारिक या औद्योगिक क्रिया आरम्भ कर देती हैं। उदाहरण के लिये अनाथालय एक प्रिंटिंग प्रेस, दर्जी की दुकान आदि चालू कर सकता है। ऐसी दशाओं मे व्यापारिक विभाग के खाते साधारण व्यापारी की भाँति रखने चाहिये ताकि व्यापारिक अवधि के अन्त में हानि लाभ खाता बनाकर शुद्ध लाभ मालम किया जा सके।

कॉलेज में रखी जाने वाली रोकड़ वही और व्यक्तिगत खाता वही के निम्नलिखित नमूने हैं :—

. . . . कॉलेज.......... ...

. . . माह की सामान्य रोकड़ वही

प्राप्त

तिथि	विवरण	सहायता									शुल्क एव दण्ड															दान			विविध			योग			प्रमाणक सं०	विशेष विवरण
		सरकारी			चुंगी की			अन्य			अध्यापन			छात्रालय			क्रीड़ा			अन्य			दण्ड													
		रु.	आ	पा.	रु.	आ	पा.	रु.	आ	पा	रु.	आ	पा	रु	आ	पा.	रु.	आ	पा.	रु.	आ	पा	रु	आ	पा	रु	आ	पा	रु.	आ	पा	रु	आ	पा.		

भुगतान

तिथि	विवरण	स्थापन व्यय				पुस्तकालय	विज्ञान		वाणिज्य		क्रीड़ा	छात्रालय	फर्नीचर	मरम्मत आदि	कार्यालय व्यय	विविध	योग	प्रमाणक सं०
		अध्यापक वर्ग		कार्यालय	सेवक		यन्त्र	प्रयोग	यन्त्र	प्रयोग								
		वेतन	भत्ता															

.... कॉलेज . . ..

....माह का विद्यार्थी-शुल्क-रजिस्टर

कक्षा .. ..

स०	नाम	बाकी नी/ला			प्रवेश शुल्क			अध्यापन शुल्क			छात्रालय शुल्क			प्रकाश व्यय			क्रीड़ा शुल्क			दण्ड			अन्य			योग			भुगतान की तिथि	राशि दी			बाकी आ/ले			स०
		रु.	आ	पा.	रु.	आ	पा	रु.	आ	पा.	रु	आ	पा	रु.	अ	पा	रु.	आ	पा	रु.	आ	पा	रु.	आ	पा	रु.	आ	पा.		रु	आ	पा	रु.		पा.	

टिप्पणी .—उपर्युक्त खाता वही की लाइनों का एक और उद्धरण है ।

"प्राप्ति एवं भुगतान खाता" तथा "आय और व्यय खाता" (Receipts & Payments Account and Income & Expenditure Account) .—संस्थाओ और सोसाइटियो की हिसाब-पद्धति ऊपर बतलाई जा चुकी है, परन्तु परीक्षाओ मे कभी-कभी प्रश्न इस आधार पर दिये जाते हैं कि इन संस्थाओ के हिसाब व्यापारिक हिसाब पद्धति से रखे जाते है। उदाहरणार्थ, किसी संस्था का "प्राप्ति एवं भुगतान खाता" (अर्थात् एक संक्षिप्त रोकड़ खाता) एक निश्चित अवधि के लिये दे दिया जाता है और उस अवधि के लिये कुछ बाकी रहे हुए खर्चे तथा अन्य आय आदि की रकम भी बता दी जाती हैं और परीक्षार्थियो से व्यापारिक हिसाब-पद्धति के अनुसार आय-व्यय खाता और चिट्ठा तैयार करने के लिये कहा जाता है।

प्राप्ति एवं भुगतान खाता (Receipts & Payments Account) :—यह खाता सिर्फ रोकड़ बही का सार होता है, इसमे प्राप्त हुआ रोकड़ी रुपया नाम की तरफ और दिया हुआ रोकड़ी रुपया जमा की तरफ लिखा जाता है। इसमे, पिछला और आगे ले जाने वाला, दोनो बैलेंस दिखलाये जाते हैं। इसमे जो भी रोकड़ी रुपया वास्तव मे प्राप्त हुआ है अथवा दिया है लिखा जाता है। यह व्यापार का ठीक परिणाम नहीं बतला सकता, क्योंकि इसमे सब रोकड़ी रकमे लिखी जाती है चाहे वे उस व्यापार-वर्ष से सम्बन्धित हो या न हो।

आय और व्यय खाता (Income and Expenditure Account) :—व्यापार करने वाली संस्थाओ के हानि-लाभ खाते का दूसरा नाम आय और व्यय खाता है। इस आय और व्यय खाते के नाम की तरफ खर्चा और जमा की तरफ आय दिखलाई जाती है। इसमे उस समय विशेष से सम्बन्धित सब आय और व्यय, चाहे यह रोकड़ी रुपये मे हुआ हो या नहीं, लिखा जाता है। यह हानि-लाभ खाते की तरह से ही तैयार किया जाता है।

यदि प्राप्ति एव भुगतान खाते से आय-व्यय खाता तैयार करना हो तो निम्नलिखित समायोजन किये जाने चाहिए .—

(अ) प्राप्ति एवं भुगतान खाते से निम्न को हटा दो —(क) शुरू और अन्त के बैलेंस (ख) तमाम पूँजी प्राप्तियाँ और भुगतान तथा (ग) तमाम पिछले और आगामी समय से सम्बन्धित लाभ और व्यय की रकमे।

(ब) उस समय से सम्बन्धित तमाम आय जो पैदा हो चुकी हो या बकाया खर्चे आदि आय-व्यय खाते मे शामिल कर लेना चाहिए।

(स) डूबत ऋण, ह्रास इत्यादि के लिये ठीक व्यवस्था कर लेनी चाहिए।

नोट .—जब कभी प्राप्ति और भुगतान खाते से और कुछ पूरक सूचनाओं से आय और व्यय खाता और चिट्ठा बनाना हो, तो इसके यह अर्थ होंगे कि अन्तिम खाते व्यापारिक हिसाबी पद्धति के अनुसार रोकड़ी पद्धति पर रखी गई पुस्तकों से बनाना है।

यह प्रणाली उन व्यापारिक संस्था के लिये आवश्यक हो जाती है जिसने रोकड़ी पद्धति बही खाता अपनाया है लेकिन जो व्यापार वर्ष के अन्त मे व्यापारिक बही खाता प्रणाली पर अपने अन्तिम खाते बनाना चाहती है।

व्यवहार में एक गैर-व्यापारिक संस्था अपने अन्तिम खाते एक आय और व्यय खाते तथा चिट्ठे के रूप में नहीं रखेगी। प्रबन्धक सभा या प्रबन्धक बोर्ड को प्रस्तुत करने के लिये केवल संक्षिप्त रोकड़ खाता जिसे वार्षिक खाता विवरण (Annual Statement of Account) कहते हैं, बनाया जाता है।

उदाहरण ११६

बंगाली क्लब का ३१ दिसम्बर १६५० को समाप्त होने वाले वर्ष का निम्नलिखित प्राप्ति तथा भुगतान खाता (Receipts and Payments Account) है।

	रु०		रु०
शेष नी०/ला	१,०२५	वेतन	६००
चन्दा : १६४६	४०	सामान्य खर्चें	७५
,, १६५०	२,०५०	नाटक खर्च	४५०
,, १६५१	६०	अखबार आदि	१५०
दान	५४०	नगरपालिका कर	४०
नाटक टिकटों की विक्रय-राशि	६५०	धर्मादा	३५०
रद्दी कागजों की बिक्री	४५	विनियोग (राजकीय पत्र)	२,०००
		बिजली खर्च	१४५
		शेष आ/ले	६००
	४,७१०		४,७१०

निम्नलिखित सूचनाओं का ध्यान रखते हुये, क्लब का ३१ दिसम्बर १६५० को समाप्त होने वाले वर्ष का आय-व्यय खाता तथा उसी तिथि को चिट्ठा तैयार कीजिये :—

१. उसके ५ रु० वार्षिक चन्दा देने वाले ५०० सदस्य हैं, १६४६ के ५० रु० बकाया हैं।
२. १०० रु० के दान का वर्ष में वायदा हुआ परन्तु प्राप्त नहीं हुआ।
३. ४० रु० वार्षिक नगरपालिका कर का ३१ मार्च १६५१ तक भुगतान कर दिया गया है, तथा वेतन के ५० रु० अदत्त हैं।
४. पुस्तकों में ५,००० रु० का भवन है जिस पर ५% वार्षिक का ह्रास अपलिखित करना है।
५. राजकीय पत्रों का पाँच माह का ३% वार्षिक की दर से व्याज अभी अप्राप्य है।

इस प्रकार के प्रश्न हल करते समय प्रारम्भिक पूँजी की गणना के लिए यह आवश्यक होगा कि उसके उस समय के विभिन्न पावने एवं देनों का निश्चय कर लिया जाय।

पुन. इसका भी ध्यान रखना चाहिए कि इच्छित (required) अन्तिम खाते, जिनमे आय एवं व्यय का हिसाब तथा चिट्ठे समाविष्ट होते है, पूर्ण व्यापारिक प्रणाली के अनुसार लिखे जावें। कहने का तात्पर्य यह है कि सम्पूर्ण न चुकाये गए हिसाबों पर, जोकि फर्म के पक्ष अथवा विपक्ष में हो, विचार कर लेना चाहिए।

३१ दिसम्बर १६५० को समाप्त होने वाले वर्ष का आय-व्यय खाता

	रु०		रु०
वेतन	६५०	चन्दा	२,५००
सामान्य व्यय	७५	दान	६४०
नाटक खर्च	४५०	नाटक-टिकटों की विक्रय-राशि	६५०
अखबार आदि	१५०	रद्दी कागजों की बिक्री	४५
नगरपालिका कर	३०	व्याज	२५
धर्मादा	३५०		
बिजली खर्च	१४५		
ह्रास	२५०		
आय का व्यय पर आधिक्य	२,०६०		
	४,१६०		४,१६०

चिट्ठा ३१ दिसम्बर १६५० को

		रु०		रु०
अग्रिम प्राप्त चन्दा		६०	रोकड़	६००
अदत्त वेतन		५०	विनियोग (राजकीय पत्र)	२,०००
पूँजी १-१-५० को	६,११५		अप्राप्त ब्याज	२५
१६५० का आधिक्य	२०६०	८,१७५	अप्राप्त चन्दा	५००
			अप्राप्त दान	१००
			पूर्वदत्त कर	१०
			भवन ह्रास रहित	४,५५०
		८,२८५		८,२८५

१ जनवरी १६५० को पूँजी की राशि निम्न प्रकार ज्ञात की गई है :—

	रु०
अप्राप्त चन्दा	६०
रोकड़	१,०२५
भवन	५,०००
पूँजी	६,११५

उदाहरण ११७

एक साहित्यिक एवं वाद-विवाद परिषद् का ३१ दिसम्बर १६५० को समाप्त होने वाले वर्ष के रोकड़व्यवहार का निम्नलिखित सारांश है :—

	रु०		रु०
पिछले वर्ष का शेष	३१६	किराया व दर	१६८
प्रवेश-शुल्क	२५५	मजदूरी	२४५
चन्दा	१,६००	रोशनी	७२
दान	१६५	भाषण शुल्क व व्यय	४३५
आजीवन सदस्यों का चन्दा	२५०	पुस्तकें	२१३
ब्याज	१४	कार्यालय खर्च	४५०
मनोरंजन से लाभ	४२	३% स्थायी जमा में दिये	
		१ जुलाई १६५० को	८००
		रोकड़ बैंक में	२४२
		रोकड़ हस्ते	२०
	२,६४५		२,६४५

वर्ष के प्रारम्भ में, परिषद् के पास २,००० रु० के मूल्य की पुस्तकें तथा ८५० रु० के मूल्य का फर्नीचर था। वर्ष के प्रारम्भ में साधारण चन्दा ३५ रु० व अन्त में ४५ रु० बकाया था, तथा ६ माह का किराया (६० रु०) वर्ष के प्रारम्भ व अन्त दोनों में देय था।

३१ दिसम्बर १६५० को समाप्त होने वाले वर्ष का परिषद् का आय-व्यय खाता तथा उसी तिथि को चिट्ठा तैयार कीजिये।

५० रु० फर्नीचर पर तथा ११३ रु० पुस्तकों पर अपलिखित करने हैं।

३१ दिसम्बर १६५० को समाप्त होने वाले वर्ष का आय-व्यय खाता

	रु०		रु०
किराया व दर	१६८	प्रवेश-शुल्क	२५५
मजदूरी	२४५	चन्दा	१,६१०
प्रकाश	७२	दान	१६५
भाषण शुल्क व व्यय	४३५	आजीवन सदस्यों का चन्दा	२५०
कार्यालय व्यय	४५०	ब्याज	[illegible]

ह्रास :			मनोरंजन से लाभ	४२
पुस्तकें	११३			
फर्नीचर	५०			
		१६३		
व्यय पर आय का आधिक्य		८१५		
		२,३४८		२,३४८

चिट्ठा ३१ दिसम्बर १९५० को

		रु०		रु०
अदत्त ऋण		६०	रोकड हस्ते	२०
पूँजी १-१-५० को	३,१४४		रोकड बैंक में	२४२
वर्ष का आधिक्य	८१५		स्थायी जमा	८००
		३,९५९	अप्राप्त ब्याज	१२
			अप्राप्त चन्दा	४५
			पुस्तकें	२,१००
			फर्नीचर	८००
		४,०१९		४,०१९

१ जनवरी १९५० को पूँजी निम्न प्रकार निकाली गई है :—

	रु०
पुस्तकें	२,०००
फर्नीचर	८५०
अप्राप्त चन्दा	३५
रोकडी शेष	३१९
	३,२०४
घटाया अदत्त किराया	६०
पूँजी १-१-५० को	३,१४४

उदाहरण ११८

निम्नलिखित विवरण अग्रवाल क्लब के ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष के व्यवहार बतलाते हैं। आपको उससे आय-व्यय खाता तथा चिट्ठा तैयार करना है :—

रोकड़ पुस्तक का सारांश

	रु०		रु०
गत वर्ष का शेष	२,३५०	वेतन	१,२००
प्रवेश शुल्क	३००	बिजली खर्च	१२०
चन्दा :		अन्य व्यय	५२५
बकाया	५०	स्थायी जमा	२,५००
चालू वर्ष के लिए	३,५००	बर्तन	२००
अग्रिम प्राप्त	७५	लेनदार	१,०००
जलपान आदि पर लाभ	१००	शेष ३१-१२-१९५० को	१,१५०
विविध आय	३२०		
	६,६९५		६,६९५

१ जनवरी १९५० को सम्पत्ति व दायित्व निम्न थे :—बर्तन ८०० रु० ; फर्नीचर २,५०० रु० ; उपभोग्य संग्रह (Consumable Stores) ३५० रु०; लेनदार १,३०० रु० ।

३१ दिसम्बर १९५० को उपभोग्य संग्रह का मूल्य ७०० रु०, लेनदार ५५० रु०, व अदत्त चन्दा ७५ रु० थे तथा स्थायी जमा पर अप्राप्य ब्याज अनुमान से २५ रु० था।

फर्नीचर व बर्तनों के अन्तिम शेषों पर क्रमशः १०% व १५% का ह्रास काटो।

३१ दिसम्बर १६५० को समाप्त होने वाले वर्ष का आय-व्यय खाता

	रु०		रु०
वेतन	१,२००	प्रवेश शुल्क	३००
बिजली खर्च	१२०	चन्दा	३,५७५
अन्य व्यय	५२५	जलपान आदि पर लाभ	१००
ह्रास	४००	विविध आय	३२०
आधिक्य	२,०७५	ब्याज	२५
	४,३२०		४,३२०

चिट्ठा ३१ दिसम्बर १६५० को

	रु०			रु०
लेनदार	५५०	रोकड़		१,१५०
अग्रिम प्राप्त चन्दा	७५	स्थायी जमा		२,५००
पूँजी	६,६२५	अप्राप्त ब्याज		२५
		बर्तन	१,०००	
		घटाया ह्रास	१५०	८५०
		फर्नीचर	२,५००	
		घटाया ह्रास	२५०	२,२५०
		उपभोग्य सग्रह		७००
		अप्राप्त चन्दा		७५
	७,५५०			७,५५०

प्रश्न

१. एक व्यापारिक संस्था व एक अव्यापारिक संस्था के हिसाब एक ही प्रकार से क्यों नहीं रक्खे जाते ?

२. एक वकील ने अभी अपनी वकालत प्रारम्भ की है। आप उसको किस प्रकार हिसाब रखने की सलाह देंगे ?

३. एक प्राइवेट चिकित्सक ने ३१ मार्च १६५१ को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये अपना हिसाब रोकड़ के आधार पर रखा है तथा वह भविष्य में भी इसी पद्धति का अनुसरण करना चाहता है। आप उसकी वर्ष की पेशे से आय (Professional Income) कैसे निकालेंगे ?

४. संक्षेप में बतलाइये कि एक क्लब, सभा अथवा एक विद्यालय के हिसाब किस प्रकार रक्खे जाते हैं ?

५ एक महाविद्यालय जैसी संस्था के विषय में आप 'वार्षिक हिसाब लेखा' से क्या तात्पर्य समझते हैं और वह कैसे तैयार किया जाता है ?

६ बजट का क्या अर्थ है और वह क्यों तैयार किया जाता है ?

७. एक अनाथालय में, जिसका कार्य सदस्यों के चन्दे से, नकद दान व नगरपालिका की सहायता से तथा उसके लकड़ी, टेलरिंग विभाग व बढ़ई के काम से बनाये माल को बेचने से चलता है, हिसाब की कौन-कौनसी पुस्तकें होनी चाहियें ? काल्पनिक अंक लेते हुये बताइये कि अनाथालय की वार्षिक सभा में किस प्रकार वर्ष के हिसाब प्रस्तुत किये जाते हैं ?

८ 'आगम तथा शोधन' व 'आय-व्यय' खातों में क्या अन्तर है ? संक्षेप में बतलाइये।

९. आप आगम तथा शोधन खाते से किस प्रकार आय-व्यय खाता तैयार करेंगे ?

१०. ३१ दिसम्बर १६४६ को एक चिकित्सालय का चिट्ठा निम्न था :—

	रु०		रु०
धन समर्पण कोष (Endowment fund)	२,००,०००	भवन की लागत	१,०६,५००

अदत्त राशि :—		रोगियों पर शेष	७५०
यंत्र व दवायें	१,०००	रोकड़ हस्ते	१,७५०
भोजन	२,६००		
संग्रह	४००		
एकत्रित आधिक्य	५,०००		
	१,०६,०००		१,६००००

खजाँची की १६५० की रोकड़ पुस्तक निम्न थी —

	रु०		रु०
शेष १-१-५० को	१,७५०	भुगतान—दवा	७,०००
चन्दा	२८,७५०	भोजन	१५,०००
रोगियों से प्राप्त	१४,०००	संग्रह	५,०००
		वेतन	१६,०००
		शेष ३१-१२-५० को	१,५००
	४४,५००		४४,५००

३१ दिसम्बर ५० को निम्न व्यय अदत्त थे —दवा १,२०० रु० ; भोजन १,५०० रु० ; सग्रह ५०० रु० ; वेतन १,००० रु० उसी तिथि को १,२०० रु० रोगियों पर शेष थे।

१६५० वे वर्ष का चिकित्सालय का आय और व्यय खाता बनाओ, व ३१ दिसम्बर १६५० को चिट्ठा बनाओ

उत्तर : कोई कमी अथवा आधिक्य नहीं ; चिट्ठा १,०६,२०० रु० ।

११. एक क्रिकेट-क्लब की रोकड पुस्तक से निम्नलिखित प्राप्ति एवं भुगतान खाता बनाया गया :—

	रु०	आ०		रु०	आ०
शेष १-१-५० को	२५४	१०	किराया व दर	१,६८०	०
सदस्यता प्रवेश शुल्क	२३१	०	मुद्रण व विज्ञापन	८००	०
खिलाड़ी सदस्यों का चन्दा			डाक व लेखन-सामग्री	२७८	०
१६४६	६३	०	मजदूरी व निर्णय-कर्ता का शुल्क	१,२००	०
१६५०	६००	०			
अवैतनिक सदस्यों का चन्दा			खिलाड़ियों का आवागमन व्यय	५००	०
१६४६	२६०	०	मण्डप की मरम्मत	२०६	४
१६५०	४,७२५	०	मण्डप की वृद्धि	१,६५६	८
१६५१	१२०	०	विकेट की चटाई	२२१	४
सार्वजनिक खेल	१,१२०	१०	बल्ले, गेंद आदि	४५३	१०
स्थायी जमा का व्याज	१४१	२	शेष ३१-१२-५० को	२१६	१२
	७,५१५	६		७,५१५	६

बीजक, प्रमाण-पत्रों व अन्य लेख-प्रमाणों को जाँचने से निम्न सूचनायें प्राप्त हुई :—

किराया (१०० रु० प्रति माह का) केवल ३० सितम्बर १६५० तक का ही भुगतान किया गया है, तथा दरें १२० रु० पेशगी दे दी गई हैं। १८० रु० मजदूरी व निर्णय-कर्ता शुल्क के तथा ५४ रु० १० आ० ६ पा० बल्ले व गेंद इत्यादि के अभी तक अदत्त हैं। २४० रु० खिलाडी सदस्यों पर बकाया है, तथा ४२५ रु० अवैतनिक सदस्यों पर शेष हैं।

३१ दिसम्बर १६५० को समाप्त होने वाले वर्ष का आय-व्यय खाता बनाओ।

उत्तर : आधिक्य १,५२५ रु० १५ आ० ६ पा०

१२. इण्डियन जीमखाने का ३१ दिसम्बर १६५० को समाप्त होने वाले वर्ष का निम्नलिखित प्राप्ति एवं भुगतान खाता था :—

२. लाभ और हानि के विभाजन का अनुपात।

३. पूँजी खाते स्थायी रहेंगे या चालू ?

४. पूँजी और आहरण खाते पर व्याज लगाया जावेगा या नहीं और यदि लगाया जावेगा तो किस दर से ?

५. हरएक साझीदार लाभ के आधार पर अधिक से अधिक कितना रुपया व्यापार से निकाल सकेगा ?

६. वेतन की कोई रकम जो साझीदार को दी जा सकती हो।

७. वार्षिक खातो की तैयारी, परीक्षण और उन पर हस्ताक्षर करना आदि के नियम।

८. किसी साझीदार की मृत्यु, या उसके अवकाश ग्रहण करने पर उसके हिस्से का मूल्य निर्धारित करने की और उसके हिस्से की ख्याति (Goodwill) की रकम निश्चित करने की विधि।

९. आपस के मतभेद को समाप्त करने के लिए पंच-फैसले की कार्यवाही का प्रबन्ध।

१० गारनर बनाम मर्रे (Garner V. Murray) का नियम लागू होगा या नहीं।

संविदे के अभाव में लागू होने वाले नियम

(Rules applicable in the absence of agreement)

यदि साझीदारो ने कोई साझेदारीनामा तैयार न किया हो तो उनके आपस के सम्बन्ध साझा-सम्बन्धी कानून मे दिये गये नियमो द्वारा निश्चित होगे :—

१. व्यापारिक लाभ और हानि मे सब साझियो का समान भाग होगा।

२. किसी भी साझीदार की पूँजी पर व्याज व्यापारिक लाभ के मालूम करने से पूर्व नहीं दिया जा सकेगा।

३. यदि किसी साझी ने अपनी पूँजी के अतिरिक्त कोई रकम फर्म को उधार दी है तो उसे उस रकम पर ६ प्रतिशत वार्षिक दर से व्याज दिया जावेगा।

४. प्रत्येक साझी को व्यापार के संचालन मे भाग लेने का अधिकार है।

५. विना सब साझियो की अनुमति के कोई भी व्यक्ति नया साझीदार नहीं बनाया जा सकेगा।

६. साझे की बहियाँ व्यापार के स्थान पर रखी जावेगी और हर साझी को फर्म के हिसाब-किताब को देखने तथा नकल करने का अधिकार होगा।

७. कोई भी साझी साझेदारी व्यापार मे कार्य करने के लिए किसी भी पारिश्रमिक (Remuneration) का अधिकारी नहीं होगा।

ये सामान्य शर्तें साधारणतया साझेदारीनामे मे परस्पर संविदा करके बदल दी जाती हैं और पूँजी पर व्याज तथा साझियो को वेतन का प्रबन्ध कर लिया जाता है।

साझेदारी खातों में सामान्य समायोजन

(Usual Adjustments in Partnership Accounts)

१. पूँजी पर व्याज :—अकेले व्यापारी की पूँजी पर व्याज नहीं दिया जाता, क्योंकि इसमें उसके लाभ मे कोई अन्तर नहीं होता है, परन्तु साझेदारी में स्थिति बिल्कुल दूसरी है। बहुधा साझीदार भिन्न-भिन्न पूँजी व्यापार में लगाते हैं और यह आशा रखना अनुचित होगा कि एक साझेदार बिना कुछ पुरस्कार दूसरों की अपेक्षा अधिक पूँजी लगादे। इसके पुरस्कार देने का सरल ढंग यह है कि प्रत्येक साझेदार को उसके द्वारा दी गई पूँजी पर एक निश्चित दर के अनुसार व्याज दिया जाय।

जब साझीदार पूँजी की रकम के अनुपात से लाभ बाँटते हैं तब उन्हे उनकी पूँजी पर ब्याज नहीं दिया जाता है, क्योंकि अधिक पूँजी लगाने वाला साझेदार अधिक लाभ प्राप्त कर लेता है और इसलिये उसे अतिरिक्त पुरुष्कार देने की जरूरत नहीं होती परन्तु पूँजी पर ब्याज देकर यह मालूम किया जा सकता है कि ब्याज बाँटने के बाद व्यापार लाभ पर चल रहा है या नहीं।

२. आहरण (Drawings) पर ब्याज .—जिस तरह से फर्म के लिए पूँजी पर ब्याज देना आवश्यक है वैसे ही आहरणो पर ब्याज लगाना भी आवश्यक है। ब्याज की दरे साझेदारीनामे मे निश्चित कर दी जाती है। आहरण (Drawings) पर ब्याज, व्यापार से रकम निकालने के दिन से व्यापार-वर्ष के अन्तिम दिन तक लगाया जाता है। जहाँ साझेदार प्राय रुपया निकाला करते है वहाँ आहरण (Drawings) पर ब्याज मध्यम-भुगतान-तिथि के अनुसार मालूम किया जा सकता है।

३ साझेदारी वेतन —यदि फर्म के कुछ साझीदार अन्य साझीदारो से अधिक कार्य करते हैं तो अतिरिक्त काम करने के लिये उन्हे वेतन या कमीशन के रूप मे कुछ रकम दी जाती है। यह व्यवस्था प्राय तब की जाती है जबकि एक जूनियर साझी व्यापार मे लिया जाता है। उसे कुछ निश्चित वेतन और लाभ का थोड़ा हिस्सा दिया जाता है। वह यह भी स्वीकार कर सकता है कि जब तक उसकी पूँजी एक निश्चित रकम तक एकत्र न हो जावेगी तब तक वह व्यापार से अपने हिस्से का लाभ नही निकालेगा।

(अ) साझियों के खाते

१. पूँजी-खाते —अभी तक यह बतलाया गया है कि प्रत्येक साझी का एक पूँजी-खाता होता है और इसमे लगाई गई हुई पूँजी, आहरण, पूँजी और आहरण का व्याज, वेतन, लाभ या हानि के हिस्से का लेखा किया जाता है और इस खाते के बैलेंस को चिट्ठे मे लिखा जाता है। इस पद्धति के अनुसार पूँजी-खाता प्रति वर्ष बदलता रहता है, इसलिए इसे परिवर्तनशील-पूँजी-पद्धति (Fluctuating Capital Method) कहते है।

परन्तु बहुधा साझीदारो मे यह तय कर लिया जाता है कि उनकी पूँजी स्थायी रहेगी और इसमे किसी तरह की घटोतरी या बढ़ोतरी, सिवाय किसी विशेष संविदा होने पर, साझेदारी की अवधि मे नहीं हो सकेगी। इस पद्धति के अनुसार साझीदारो के पूँजी-खाते में सिवाय पूँजी के और कोई रकम नाम या जमा मे नहीं लिखी जाती है। इस पद्धति को स्थायी पूँजी-पद्धति (Fixed Capital Method) कहते है।

२. चालू-खाते —जब साझीदारो के पूँजी खाते स्थायी होते हैं तब उनके चालू-खाते रखना आवश्यक हो जाता है। हर एक साझी के चालू खाते मे पूँजी और आहरणों के व्याज आहरण, ऋण के व्याज, वेतन या कमीशन, लाभ या हानि के हिस्से आदि का लेखा किया जाता है। इस खाते का बैलेंस भी व्यापार वर्ष के अन्त मे चिट्ठे मे लिखा जाता है। यह चालू खाता अधिकतर क्रेडिट बैलेंस ही दिखलाता है, परन्तु जब व्यापार से अधिक रुपया निकाल लिया जाता है तब इसमें डेबिट बैलेंस रह जाता है।

३. साझीदारो के ऋण खाते —जब कोई साझी फर्म को पूँजी के अतिरिक्त ऋण देता है तब वह फर्म का एक लेनदार हो जाता है। इसलिए उसके लिए एक विशेष ऋण खाता खोला जाता है। इस ऋण का व्याज चालू-खाते में जमा कर दिया जाता है।

उदाहरण ११९

ए. बी व सी, जो क्रमश. ४, ३ व १ के अनुपात में लाभ-हानि का वितरण करते हैं, १ जनवरी १९५० से साझीदार हैं। उन्होंने पूँजी के क्रमश ५,००० रु०, ३००० रु० व २,००० रु० दिये, तथा वर्ष के लाभ में से ७,००० रु०, ५,००० रु० व १,५०० रु० निकाले।

यह प्रबन्ध किया गया कि प्रत्येक साझीदार पूँजी पर ५ प्रतिशत ब्याज लेने का अधिकारी होगा, परन्तु आहरण पर कोई ब्याज न होगा। ब्याज का प्रबन्ध करने के पूर्व १९५० के लाभ-हानि खाते में २४,००० रु० क्रेडिट शेष थे। इसमें से उन्होंने १,५०० रु० एक अनिर्णीत मुकदमें के लिये रखने का निश्चय किया।

लाभ-हानि खाता तथा प्रत्येक साझीदार का खाता अन्तिम देय राशि दिखलाते हुये बनाओ।

३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ-हानि खाता

		रु०		रु०
पूँजी पर ब्याज			शेष नी/ला	२४,०००
ए	२५०			
बी	१५०			
सी	१००	५००		
सम्भाव्य कोष		१,५००		
शेष : ए	११,०००			
बी	८,२५०			
सी	२,७५०	२२,०००		
		२४,०००		२४,०००

पूँजी खाते

		ए	बी	सी			ए	बी	सी
१९५०		रु०	रु०	रु०	१९५०	रोकड़	रु०	रु०	रु०
दिस. ३१	आहरण	७,०००	५,०००	१,५००	जन. १	ब्याज	५,०००	३,०००	२,०००
	शेष आ/ले	९,२५०	६,४००	३,३५०	दि. ३१	लाभ	२५०	१५०	१००
							११,०००	८,२५०	२,७५०
		१६,२५०	११,४००	४,८५०			१६,२५०	११,४००	४,८५०

टिप्पणी—यह परिवर्तनशील-पूँजी-पद्धति है। इसमे प्रत्येक साझी के लिए कोई पृथक चालू खाता नहीं रखा जाता।

चूँकि प्रत्येक साझी के खाते में डैबिट और क्रेडिट पद एक ही प्रकार के होते हैं. पूँजी खाते, जहाँ तक सम्भव हो सके खानेदार आकृति (Tabular Form) में बनाने चाहिये।

उदाहरण १२०

ए, बी व सी साझीदार हैं। उन्होंने १९५० वें वर्ष में ८३,००० रु० कमाये। साझेदारी इकरारनामे के अनुसार सी, जिसने व्यापार में कोई पूँजी नहीं लगायी है, १२,००० रु० प्रति वर्ष वेतन पाने का अधिकारी है तथा ए व बी की पूँजी पर, जिन्होंने क्रमशः ६०,००० रु० व १,००,००० रु० लगाये, ५% ब्याज देना है। इसके अतिरिक्त सी को कुल लाभ पर ५% कमीशन (ऐसे लाभ में से वेतन, ब्याज व कमीशन काटने के पश्चात्) दिया जाता है।

यह पुनः निश्चय किया गया कि शेष लाभ का २०% दान कोष में लगाया जाय तथा शेष ए व बी में समान रूप से बाँट दिया जाय। साझीदारों के आहरण वर्ष में निम्न हैं :—ए १०,००० रु० ; बी ६,००० रु० ; सी १३,००० रु०। साझीदारों के पूँजी व चालू खाते तथा लाभ-हानि खाता तैयार कीजिये।

वर्ष १९५० का लाभ-हानि खाता

	रु०		रु०
सी का वेतन	१२,०००	शेष नी/ला	८३,०००
पूँजी पर ब्याज : ए	३,०००		
बी	५,०००		
सी का कमीशन	३,०००		
दान कोष	१२,०००		
ए (शेष का आधा)	२४,०००		
बी	२४,०००		
	८३,०००		८३,०००

साझियों के पूँजी खाते

		ए रु०	बी रु०	सी रु०
	शेष नी/ला	६०,०००	१,००,०००	—

साझियों के चालू खाते

	ए रु०	बी रु०	सी रु०		ए रु०	बी रु०	सी रु०
आहरण	१०,०००	६,०००	१३,०००	पूँजी पर ब्याज	३,०००	५,०००	—
शेष आ/ले	१७,०००	२०,०००	२,०००	वेतन	—	—	१२,०००
				कमीशन	—	—	३,०००
				लाभ	२४,०००	२४,०००	—
	२७,०००	२६,०००	१५,०००		२७,०००	२६,०००	१५,०००

टिप्पणी—यह स्थायी-पूँजी-पद्धति है।

उदाहरण १२१

ब्राउन, जौन्सन तथा ग्रीन आपस में साझीदार हैं। १ जनवरी १६५० को उनकी पूँजी, जिस पर ५% वार्षिक की दर से ब्याज देय है, क्रमशः १०,००० रु० ६,००० रु० तथा २,००० रु० थी, तथा १ जुलाई १६५० को जौन्सन १,००० रु० और लाया।

ग्रीन ४०० रु० प्रति वर्ष वेतन पाने का अधिकारी है, जो कि ३०० रु० ब्राउन के लाभ में से तथा १०० रु० जौन्सन के लाभ में से देय हैं।

ब्याज काटने के पश्चात् लाभ के प्रथम २,००० रु०, ब्राउन, जौन्सन व ग्रीन के बीच क्रमशः ५, ४ व १ के अनुपात में, अगले २,००० रु० ६, ८ व ३ के अनुपात में; अगले २,००० रु० ८, ७ व ५ के अनुपात में तथा अन्य शेष तीनों में समान रूप से विभाजित होंगे।

ब्याज काटने से पूर्व, ३१ दिसम्बर १६५० को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ ६,१२५ रु० था। साझीदारों के बीच बँटवारा दिखाते हुए एक विवरण तैयार कीजिये।

हल :—

पूँजी पर ब्याज काटने के उपरान्त फर्म का लाभ निम्न होगा :—

		रु०
साल का लाभ		६,१२५
घटाया पूँजी पर ब्याज : ब्राउन	५००	
जौन्सन	३२५	
ग्रीन	१००	६२५
		५,२००

यह साझियों के मध्य निम्न प्रकार वितरित किया जायगा :—

	ब्राउन रु०	जौन्सन रु०	ग्रीन रु०
प्रथम २,००० (५, ४, १ के अनुपात में)	१,०००	८००	२००
अगले २,००० (६, ८, ३ के अनुपात मे)	६००	८००	३००
अगले १,२०० (८, ७, ५ के अनुपात में)	४८०	४२०	३००
	२,३८०	२,०२०	८००
घटाया ग्रीन का वेतन	३००	१००	—
	२,०८०	१,६२०	८००
जोड़ा वेतन	—	—	४००
	२,०८०	१,६२०	१,२००

उदाहरण १२२

ए व बी साझीदार हैं तथा ३ व ७ के अनुपात में लाभ बाँटते हैं। साझेदारी के इकरारनामे के अनुसार लाभ विभाजित करने से पूर्व—

(अ) पूँजी खातों पर ४% वार्षिक की दर से ब्याज दिया जाना चाहिये।

(ब) ए ३० जून १९५० तक १०० रु० प्रति माह तथा उसके पश्चात् १२५ रु० प्रति माह की दर से वेतन प्राप्त करेगा ; तथा

(स) आहरण पर ५% वार्षिक की दर से ब्याज लगाया जावेगा।

१ जनवरी १९५० को पूँजी खाते निम्न प्रकार थे :—ए १०,००० रु०; बी ६,००० रु०। १९५० के वर्ष का लाभ उपर्युक्त समायोजन करने से पूर्व १०,००० रु० था।

ए ने निश्चित वेतन आहरित किया परन्तु कोई अतिरिक्त आहरण नहीं किया। बी का आहरण निम्न था :—

१ जनवरी, १०० रु०; १ फरवरी, ४०० रु० (जिसमे से १०० रु० उसने १ मार्च को लौटाये) १ जुलाई, ५० रु०; १ अक्तूबर, १०० रु० तथा १ नवम्बर ३०० रु० (जिसमें से ५० रु० उसने १ दिसम्बर को लौटाये)

१९५० के वर्ष का लाभ-हानि खाता बनाओ। बी के आहरण पर मासिक आधार पर ब्याज (निकटतम रुपये तक) निकालो।

वर्ष १९५० का लाभ हानि खाता

		रु०		रु०
पूँजी पर ब्याज :			शेष नी/ला	१०,०००
ए	४००		बी के आहरण पर ब्याज	२४
बी	२४०	६४०		
ए का वेतन		१,३५०		
शेष : ए	२,४१०			
बी	५,६२४	८,०३४		
		१०,०२४		१०,०२४

टिप्पणी —बी के आहरण पर ब्याज मध्यम-भुगतान तिथि के द्वारा निकाली गई है।

बंद साझेदारी खातों का समायोजन (Adjustment of Closed Partnership Accounts).—

साझेदारी सम्बन्धी खाते बन्द करने के बाद कभी-कभी यह मालूम होता है कि खातों में कोई गलती रह गई है। उदाहरणार्थ, पूँजी या आहरण पर बहुत अधिक या बहुत कम दरों पर ब्याज लगा दिया गया हो या लाभ या हानि गलत अनुपात से बाँटे गये हों आदि। इन गलतियों को ठीक करने के लिए जर्नल समायोजन प्रविष्टियाँ की जाती हैं।

उदाहरण १२३

ए, बी, सी व डी साझीदार हैं जो समान रूप में लाभ का वितरण करते हैं। १ जनवरी १९५० को उनके पूँजी खाते निम्न थे :—ए ३,००० रु०; बी ५,००० रु०; सी ८,००० रु० तथा डी १०,००० रु०।

१९५० वें वर्ष के खाते तैयार करने के पश्चात् यह पता लगा कि साझेदारी इकरारनामे के अनुसार ५% वार्षिक ब्याज, लाभ बाँटने से पूर्व, साझीदारों के पूँजी खाते में क्रेडिट नहीं किया गया है।

चिट्ठा परिवर्तन करने की अपेक्षा अगले वर्ष के आरम्भ में समायोजन जर्नल प्रविष्टि करने का निश्चय किया गया।

आवश्यक जर्नल प्रविष्टि कीजिये।

पूँजी पर ब्याज, जो कि ए की पूँजी पर १५० रु०, बी की पूँजी पर २५० रु०, सी की पूँजी पर ४०० रु० व डी की पूँजी पर ५०० रु० होती है, देने से रह गई है अर्थात् कुल ब्याज के १,३०० रु० नहीं दिये गये हैं। यदि यह ब्याज दे दी जाती तो प्रत्येक साझेदार का लाभ ३२५ रु० से कम हो जाता क्योंकि वे बराबर-बराबर लाभ बाँटते हैं।

अतः जर्नल प्रविष्टि देने से पूर्व छूटी हुई ब्याज समायोजन से साझेदारों के खातों पर पड़े प्रभाव को दिखाने के लिए निम्न विवरण बनाया जावेगा।

साझीदार	समायोजन		अन्तर	
	डे०	क्रे०	डे०	क्रे०
ए	३२५	१५०	१७५	—
बी	३२५	२५०	७५	—
सी	३२५	४००		७५
डी	३२५	५००	—	१७५
	१,३००	१,३००	२५०	२५०

आवश्यक समायोजन निम्न दो ढग में से किसी एक के द्वारा किया जा सकता है :—

जर्नल (प्रथम विधि)

		रु०	रु०
१९५१			
जन० १	ए का पूँजी खाता	१७५	
	बी का पूँजी खाता	७५	
	सी का पूँजी खाता		७५
	डी का पूँजी खाता		१७५
	१९५० के खातों में पूँजी पर न दी गई व्याज का समायोजन		

जर्नल (द्वितीय विधि)

		रु०	रु०
१९५१			
जन० १	ए का पूँजी खाता	३२५	
	बी ,, ,, ,,	३२५	
	सी ,, ,, ,,	३२५	
	डी ,, ,, ,,	३२५	
	ए का पूँजी खाता		१५०
	बी ,, ,, ,,		२५०
	सी ,, ,, ,,		४००
	डी ,, ,, ,,		५००
	१९५० में पूँजी खातों पर न दी गई व्याज का समायोजन		

टिप्पणी—यदि स्थायी-पूँजी-पद्धति अपनाई गई है, तो साझियों के पूँजी खातों के स्थान पर चालू खाते डैबिट व क्रेडिट होंगे।

उदाहरण १२४

१९५० के वर्ष (व्यापार का प्रथम वर्ष) के साझीदार के खाते बनाने तथा पुस्तकें बन्द करने के पश्चात् यह पता लगा कि साझीदारों की पूँजी पर ६% वार्षिक की दर से व्याज क्रेडिट कर दिया गया है, यद्यपि साझेदारी के इकरारनामे में व्याज के लिये ऐसा कोई प्रबन्ध न था।

ए, बी व सी क्रमश १०,००० रु०, ८,००० रु० तथा ६,००० रु० की पूँजी के तीन साझीदार हैं। वे अपने लाभ-हानि ४, ३ व १ के अनुपात मे बाँटते हैं।

१ जनवरी १९५१ को सम्बन्धित खातों को डैबिट क्रेडिट करते हुए आवश्यक समायोजन प्रविष्टि कीजिये।

निम्न विवरण साझियों के खातों पर गलती से दी हुई व्याज के समायोजन के प्रभाव को दिखाता है।

साझीदार	समायोजन		अन्तर	
	डे०	क्रे०	डे०	क्रे०
ए	६००	७२०	—	१२०
बी	४८०	५४०	—	६०
सी	३६०	१८०	१८०	—
	१,४४०	१,४४०	१८०	१८०

इस समायोजन को करने के लिए आवश्यक प्रविष्टि निम्न होगी।

		रु०	रु०
१९५१ जन. १	सी का चालू खाता	१८०	
	ए का चालू खाता		१२०
	बी का चालू खाता		६०
	पूँजी पर गलती से दी गई व्याज का समायोजन		

टिप्पणी—यह समायोजन निम्न जर्नल प्रविष्टि से भी किया जा सकता है किन्तु प्रश्न के अनुसार पहली विधि अपेक्षित है क्योंकि प्रश्न में कहा गया है, "साझियों के खाते डैबिट या क्रेडिट करते हुए आवश्यक समायोजन प्रविष्टि दीजिये।" द्वितीय विधि मे समायोजन प्रविष्टि साझियों के खाते डैबिट और क्रेडिट करके की जाती है। अतः उपर्युक्त प्रश्न मे द्वितीय विधि प्रयोग नहीं की जा सकती।

		रु०	रु०
१९५१	ए का पूँजी खाता	६००	
जन० १	बी ,, ,, ,,	४८०	
	सी ,, ,, ,,	३६०	
	ए का पूँजी खाता		७२०
	बी ,, ,, ,,		५४०
	सी ,, ,, ,,		१८०
	पूँजी पर गलती से दी गई व्याज का समायोजन		

साख या गुडविल (Goodwill)

'गुडविल' शब्द की ठीक से व्याख्या करना कठिन है। ग्राहकों के अच्छे सम्बन्ध और फर्म के नाम और यश के कारण फर्म का मूल्य बढ़ जाता है उसे ही पगड़ी, नेकनामी या 'गुडविल' कहते है। 'गुडविल' व्यापार की स्थायी सम्पत्ति है क्योंकि यह व्यापार का लाभ बढ़ाने में सहायक होती है। परन्तु यह अस्पृश्य और अचिन्त्य सम्पत्ति है और व्यापार से अलग इसका कोई मूल्य नहीं है क्योंकि यह व्यापार के बेचने के समय के सिवाय कभी अलग से नहीं बेची जा सकती।

व्यापार की 'गुडविल' अच्छा माल वेचने, व्यापार के स्वामी की योग्यता और यश, व्यापार की सर्वश्रेष्ठ स्थिति, सर्वाधिकारो आदि के होने से बनती है। नये व्यापार की शुरू मे कोई 'गुडविल' नहीं होती परन्तु बाद में उपर्युक्त कारणो से धीरे-धीरे बनती रहती है।

'गुडविल' का मूल्य व्यापार की आय-उत्पत्ति शक्ति पर निर्भर रहता है। यदि प्रतिवर्ष लाभ में परिवर्तन होता रहता है तो गुडविल के मूल्य मे भी परिवर्त्तन होता रहता है। गुडविल का मूल्य कुछ गत वर्षों के लाभ को ध्यान में रखते हुए निश्चय किया जा सकता है। यह साधारणत. दो से पाँच साल के औसत लाभ के बराबर मानली जाती है। कुछ व्यापारों के लिये, जैसे फुटकर व्यापार या व्यवसायों में उसे कुल बिक्री या कुल फीस के आधार पर निश्चय किया जा सकता है।

गुडविल चाहे जितनी बहुमूल्य हो परन्तु उसका खाता-बहियो में लेखा तब तक नहीं किया जाता जब तक (अ) यह खरीदी न गई हो या (ब) साझे के संगठन में परिवर्तन न हो।

साझेदारी खाता में गुडविल (Goodwill in Partnership Accounts) :—निम्नलिखित परिस्थितियों मे गुडविल के लिए समायोजन किया जाता है। (अ) जब साझेदारों के लाभ बाँटने के अनुपात मे परिवर्त्तन किया गया हो; (ब) नये साझी के आने पर; (स) किसी साझी की मृत्यु या अवकाश ग्रहण करने पर और (द) जब दो या अधिक व्यापारी साझे का व्यापार स्थापित करने के लिए सम्मिलित होते हैं।

(अ) नये साझी के प्रवेश पर

जब कभी व्यापार में अधिक रुपये या संचालन शक्ति की आवश्यकता होती है तो किसी

व्यक्ति को साझेदार के रूप मे लिया जा सकता है। यदि अकेला व्यापारी किसी व्यक्ति को साझे मे लेता है तो यह साझेदारी हो जाती है। पुरानी साझेदारी मे नया साझी सब साझियो की अनुमति से ही लिया जा सकता है।

जब कोई व्यक्ति साझी बनाया जाता है तो उसके साथ की जाने वाली शर्ते नये व पुराने दोनो साझियो के लिए उचित होनी चाहिएँ। अतः साझी के प्रवेश के समय दो प्रमुख प्रश्न तय करने पड़ते है :—प्रथम तो गुडविल का और द्वितीय पुराने व्यापार की सम्पत्ति और ऋणो के मूल्य निर्धारण का।

साख (Good will)—जब कोई व्यक्ति साझी बनता है तो उसे दो अधिकार प्राप्त होते हैं; (अ) साझेदारी की सम्पत्ति मे हिस्सा लेने का अधिकार और (ब) व्यापार के लाभ का हिस्सा बाँटने का अधिकार। प्रथम अधिकार के लिए साझी को व्यापार में पूँजी के रूप मे कुछ रोकड़ी रुपया लगाना पड़ता है और यह उसके पूँजी-खाते मे जमा कर दिया जाता है। साझे का अन्त होने पर उसे यह पूँजी वापिस दे दी जायगी।

परन्तु, क्योंकि प्रतिवर्ष तत्पश्चात् लाभ अधिक साझेदारों में बाँटा जाया करेगा इसलिये पुराने साझेदार नये साझेदार से उसको दिये गये लाभ के हिस्से के बदले में कुछ लाभ केवल अपने ही लिये देने को कहते है। व्यापार के आगामी लाभो मे भाग पाने के अधिकार को 'गुडविल' का अधिकार भी कहते हैं। जैसे, यदि नये साझी को चार आने लाभ का हिस्सा मिला है तो यह कहा जावेगा कि उसने चौथाई गुडविल खरीद ली है। इस लाभ के हिस्से के लिये नया साझी जो कीमत देता है उसे व्यापार मे 'प्रीमियम' (Premium) कहते हैं।

यह प्रीमियम पुराने साझियों को सीधा दिया जा सकता है और इस अवस्था मे यह रकम व्यापार में नहीं रहती। परन्तु यदि पुराने साझी इसे व्यापार में ही लगाना चाहे तो यह उनके पूँजी-खात मे लाभ के अनुपात से जमा कर दी जाती है।

मान लीजिए 'अ' और 'ब' व्यापार मे साझी है और उनका हिस्सा क्रमश १२ आने और ४ आने है और उनकी गुडविल १६००) की निर्धारित की गई है। वे 'स' को चार आने के हिस्से पर साझी बना रहे है। 'स' को चौथाई गुडविल के लिए ४००) देने पड़ेंगे। परन्तु यह ४००) 'अ' और 'ब' मे किस अनुपात मे बाँटा जावे ?

यह इस बात पर निर्भर रहेगा कि 'स' ने चार आने का हिस्स किस तरह खरीदा है ? वह इसे निम्नलिखित तरह से खरीद सकता है —(अ) अ और ब से उनके मूल लाभ-विभाजन के अनुपात में अर्थात् तीन आने अ से और एक आना ब से या (ब) दो आने स से और दो आने ब से या (स) एक आना 'अ' से और तीन आने 'ब' से या (द) सबका सब 'अ' से।

उपर्युक्त स्थितियो मे 'स' द्वारा दिये हुए प्रीमियम के ४००) 'अ' और 'ब' में इस प्रकार से विभाजित किये जावेंगे :—(अ) अ को ३००) और ब को १००); (ब) अ को २००, और 'ब' को २००); (स) 'अ' को १००) और ब' को ३००) और (द) अ को ४००) और 'ब' को कुछ नही।

परन्तु जब नया साझी गुडविल की रकम रोकड़ी न दे सकता हो तो एक नया गुडविल खाता खोला जाता है। इस खाते के नाम मे गुडविल की पूरी रकम लिखी जाती है और पुराने साझियों के पूँजी खातो में लाभ-विभाजन के अनुपात के अनुसार जमा कर दी जाती है। नये साझी को जमा नहीं किया जाता क्योंकि वह विद्यमान गुडविल का सहस्वामी नहीं है।

सारांश यह है कि नये साझी के प्रवेश पर गुडविल का प्रश्न निम्नलिखित तीन प्रकार से निश्चित किया जा सकता है :—

(अ) नया साझी पुराने साझियो को रोकड़ी रुपया दे दे।

(ब) नया साझी फर्म को रोकड़ी रुपया दे और इसे फर्म मे ही रख लिया जावे।

(स) साझेदारी की बहियो मे एक नया गुडविल खाता खोल दिया जाय।

प्रथम पद्धति :—इस पद्धति के अनुसार नया साझी पूँजी के अतिरिक्त अपने हिस्से की गुडविल की रकम पुराने साझियो को रोकड़ी रुपये मे देता है। यह रकम पुराने साझियो मे उस अनुपात मे उन्होने अपनी गुडविल दी है, विभाजित कर दी जाती है।

फर्म की बहियो मे इस लेन-देन का रिकार्ड रखने के लिए निम्नलिखित लेखा किया जाता है :—

१ नये साझी की पूँजी की रकम रोकड़ खाते के नाम लिखकर उसके पूँजी खाते मे जमा की जाती है।

२. नया साझी गुडविल की जो रकम देता है वह रोकड़ खाते के नाम लिख कर पुराने साझियो के पूँजी खाते मे उनके गुडविल के हिस्से के अनुसार जमा कर दी जाती है और उसी समय पुराने साझियों के पूँजी खाते के नाम लिखकर रोकड़ खाते मे जमा किया जाता है।

उदाहरण १२५

१ जनवरी १६५१ को ए व बी ने जो क्रमशः २/३ व १/३ के अनुपात मे लाभ विभाजित करते हैं, सी को इस शर्त पर साझीदार बनाने का निश्चय किया, कि वह ३००० रु० पूँजी के तथा ६०० रु० ख्याति के १/६ भाग के लिये जो वह ए व बी से समान रूप मे प्राप्त करेगा, देगा।

पुनः यह निश्चय किया गया कि सी द्वारा ख्याति के लिये देय धन व्यापार मे नहीं रहेगा।

उपर्युक्त व्यवहारों का लेखा करने के लिये आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिए तथा साझीदारों का भविष्य में विभाजन का अनुपात बताइये।

जर्नल

		रु०	रु०
१६५१ जन० १	रोकड़ खाता सी का पूँजी खाता सी द्वारा पूँजी लगाई गई	३,०००	३,०००

	रोकड़ खाता
	  ए का पूँजी खाता
	  बी ,, ,, ,,
	सी द्वारा १/६ भाग ख्याति का क्रय करने के लिए दी गई प्रव्याजि जो कि वह ए और बी के भाग मे बराबर-बराबर क्रय करता है
		६००	४५०
			४५०

	ए का पूँजी खाता बी ,, ,, ,, रोकड़ खाता सी से प्राप्त प्रव्याजि राशि व्यापार से निकाल ली गई	४५० ४५०	६००

भविष्य में साझियों का लाभानुपात निम्न होगा :—

ए, प्रारम्भिक भाग २/३ − १/१२ (सी को बेचा गया) = ७/१२ या ७

बी, प्रारम्भिक भाग १/३ − १/१२ (सी को बेचा गया) = ३/१२ या ३

सी, ए व बी से समान भाग क्रय किया गया = २/१२ या २

द्वितीय पद्धति .—नया साझी पूँजी की रकम के साथ ही साथ अपनी गुडविल के हिस्से के रुपये भी व्यापार मे जमा करा देता है। इस तरह से दिया हुआ रुपया भी व्यापार में ही रहता है और इसके लिए निम्नलिखित लेखा किया जाता है —

१ नये साझी की पूँजी की रकम रोकड़-खाते के नाम लिखकर उसके पूँजी-खाते मे जमा कर दी जाती है।

२. नये साझी द्वारा दी हुई 'गुडविल' की रकम रोकड़-खाते के नाम लिखकर पुराने साझियो के पूँजी-खाते मे उनके हिस्से के अनुसार जमा कर दी जाती है।

उदाहरण १२६

ए व बी १०,००० रु० व ६,००० रु० की पूँजी के साथ साझीदार हैं तथा क्रमशः २/३ व १/३ के अनुपात में लाभ विभाजित करते हैं। १ जनवरी १६५१ को उन्होंने सी को १/६ भाग के लिये इस शर्त पर साझेदार बनाने का निश्चय किया कि वह ४,००० रु० पूँजी के तथा १,५०० रु० ख्याति के देगा। सम्पूर्ण ५,५०० रु० व्यापार में ही रहेंगे।

ए व बी का भाग पूर्वानुसार मानकर, उपर्युक्त व्यवहारों का लेखा करने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये तथा साझीदारों के भविष्य मे विभाजन के भाग बतलाइये।

जर्नल

		रु०	रु०
१६५१ जन० १	रोकड़ खाता	५,५००	
	ए का पूँजी खाता		१,०००
	बी का पूँजी खाता		५००
	सी का पूँजी खाता		४,०००
	सी द्वारा लाई गई राशि ४,००० रु० पूँजी के लिए तथा १,५०० ख्याति के १/६ भाग के लिए जो वह ए व बी से २ : १ के अनुपात में क्रय करता है।		

भविष्य में साझियों का लाभानुपात निम्न होगा :—

ए, प्रारम्भिक भाग २/३ − १/६ का २/३ (सी को बेचा गया भाग) = १०/१८ या १०
बी, ,, ,, १/३ − १/६ का १/३ (सी को बेचा गया भाग) = ५/१८ या ५
सी, ए व बी से क्रय किया गया भाग = ३/१८ या ३

तृतीय पद्धति—नया साझी अपने पास रोकड़ी रुपये की कमी होने के कारण गुडविल का हिस्सा नहीं खरीदता। इसलिए गुडविल की तय की हुई रकम गुडविल खाते के नाम लिखकर पुराने साझियो के पूँजी खातो मे उनके लाभ विभाजन के अनुपात मे जमा कर दी जाती है। इस तरह पुराने साझियों के पूँजी खातो की रकमें बढ़ जाती हैं और उन्हे ब्याज आदि के रूप में नये साझी से अधिक लाभ प्राप्त हो जाता है।

नया साझी जो पूँजी की रोकड़ी रकम देता है वह रोकड़ खाते के नाम लिखकर उसके पूँजी खाते में जमा कर दी जाती है।

उदाहरण १२७

ए व बी क्रमश १२,००० रु० व ६,००० रु० की पूँजी के साथ, लाभ-हानि समान रूप मे विभाजित करते हुये, साझीदार हैं। १ जनवरी १६५१ को, उन्हाने सी को इस शर्त पर, कि वह ३,००० रु० पूँजी के देकर लाभ का १/६ भाग लेगा, साझीदार बनाने का निश्चय किया।

फर्म की ख्याति का मूल्य ४,००० रु० लगाया गया। ए व बी ने, जहाँ तक कि उनका सम्बन्ध है, पूर्व अनुपात के अनुसार ही लाभ विभाजित करने का निश्चय किया।

उपर्युक्त प्रबन्ध को करने के लिये जर्नल प्रविष्टियो कीजिये तथा सी के प्रवेश के पश्चात् चिट्ठा बनाइये।

जर्नल

		रु०	रु०
१९५१ जन० १	रोकड़ खाता	३,०००	
	सी का पूँजी खाता		३,०००
	सी द्वारा लगाई गई पूँजी		
	ख्याति खाता	४,०००	
	ए का पूँजी खाता		२,०००
	बी का पूँजी खाता		२,०००
	नये साझीदार के आने पर ख्याति खाता खोला गया		

ए, बी व सी का चिट्ठा

	रु०		रु०
पूँजी खाते :		विविध सम्पत्ति	१८,०००
ए	१४,०००	रोकड़	३,०००
बी	८,०००	ख्याति	४,०००
सी	३,०००		
	२५,०००		२५,०००

सम्पत्ति और ऋणों का पुनर्मूल्यांकन
(Revaluation of Assets and Liabilities)

जैसा किसी पिछले अध्याय मे बतलाया जा चुका है बैलैंस-शीट में सम्पत्तियाँ प्राप्त होने योग्य मूल्य पर नहीं दिखलाई जाती क्योकि स्थायी सम्पत्तियो के मूल्य मे परिवर्तन या मूल्य वर्धन एक चालू फर्म के रूप मे विचार में नहीं लिये जाते।

परन्तु जब फर्म के विधान मे नये साझी के प्रवेश पर परिवर्तन किया जाता है तो विद्यमान सम्पत्तियो और ऋणो का फिर से मूल्य निर्धारण करना भी आवश्यक है जिससे वे पुस्तको में उचित मूल्य दिखाई जा सके और पुराने साझियो के पूँजी खातो के बैलेंसेज नये साझी की प्रवेश तिथि पर ठीक-ठीक बताये जा सके। आने वाला साझेदार यह चाहेगा कि जिस व्यापार मे वह अपनी पूँजी लगा रहा है वह मजबूत स्थिति मे है या नहीं। यही कारण है कि नये साझीदार के प्रवेश से पहले विद्यमान साझियो की सम्पत्तियो और दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन कर लिया जाता है। इससे सम्बन्धित समायोजनो को बहियो मे लिखने के लिए एक नया खाता, जिसे "पुनर्मूल्यांकन खाता" (Revaluation Account) कहते हैं, खोला जाता है। इस खाते मे हानि की रकमें नाम मे लिखी जाती हैं और लाभ की रकमे जमा में। इस खाते का बैलेंस जो लाभ या हानि के रूप मे होता है, पुराने साझियों के खाते में उनके लाभ विभाजन के अनुपात से ट्रान्सफर कर दिया जाता है।

नोट.—यदि सामयोजन एक या दो ही हैं तो उन्हे सीधा पुराने साझियो के पूँजी खातों में लिखा जा सकता है और पुनर्मूल्यांकन खाता खोलने की कोई आवश्यकता नहीं रहती।

उदाहरण १२८

ए, बी व सी साझीदार हैं तथा ए $\frac{1}{2}$, बी $\frac{1}{3}$ व सी $\frac{1}{6}$ के अनुपात मे लाभ विभाजित करते हैं। १ जनवरी १९५० से उन्होंने डी को निम्न शर्तों पर साझेदारी में प्रविष्ट किया.—

डी का $\frac{1}{4}$ भाग होगा, जिसको वह केवल ए से उसकी ख्याति के भाग के ८,००० रु० देकर खरीदेगा। इस राशि में से ए ६,००० रु० अपने लिये निकाल कर शेष फर्म में अतिरिक्त पूँजी के रूप में देगा।

डी फर्म मे ५,००० रु० पूँजी भी लायगा। पुन. यह निश्चय किया गया कि विनियोगों को उनके बाजार मूल्य अर्थात् ३,६०० रु० के मूल्य पर लाया जाय तथा फर्नीचर ५,८०० रु० तक कम कर दिये जायें।

३१ दिसम्बर १९४९ को पुरानी फर्म का निम्न चिट्ठा था :—रोकड़ बैंक में ८,००० रु० ; देनदार १२,००० रु० ; स्टॉक १०, ०० रु०; विनियोग लागत पर ६,००० रु० ; फर्नीचर २,००० रु० ; यत्र ७,००० रु०; लेनदार २१,००० रु० ; पूँजी ए १२ ००० रु० ; बी ८,००० रु० तथा सी ४,००० रु० ।

१९५० का लाभ १२,००० रु० था, तथा आहरण निम्न थे : ए ६,००० रु० बी ६,००० रु०, सी ३,००० रु० व डी ३,००० रु० ।

प्रारम्भिक समायोजनों को पुस्तकों मे लिखते हुए १ जनवरी १९५० को नयी फर्म का चिट्ठा तैयार कीजिये तथा ३१ दिसम्बर १९५० को प्रत्येक साझीदार का पूँजी खाता बनाइये ।

जर्नल

१९५०		रु०	रु०
जन. १	रोकड़ खाता	८,०००	
	ए का पूँजी खाता		८,०००
	ए से क्रय किये गये ख्याति के १/४ भाग के लिए डी से प्राप्त राशि		
	ए का पूँजी खाता	६,०००	
	रोकड़ खाता		६,०००
	ए द्वारा आहरित राशि		
	रोकड़ खाता	५,०००	
	डी का पूँजी खाता		५,०००
	डी द्वारा लगाई गई पूँजी		
	पुनर्मूल्यन खाता	३,६००	
	विनियोग खाता		२,४००
	यत्र खाता		१,२००
	विनियोग तथा यत्र पर ह्रास		
	ए का पूँजी खाता	१,८००	
	बी ,,	१,२००	
	सी ,,	६००	
	पुनर्मूल्यन खाता		३,६००
	पुनर्मूल्यन की हानि हस्तातरित की गई		

१ जनवरी १९५० को ए, बी, सी तथा डी का चिट्ठा

	रु०		रु०
लेनदार	२१,०००	बैंक में रोकड़	१५,०००
पूँजी खाते : ए	१२,२००	विनियोग	३,६००
बी	६,८००	देनदार	१२,०००
सी	३,४००	स्टॉक	१०,०००
डी	५,०००	फर्नीचर	२,०००
		यंत्र	५,८००
	४८,४००		४८,४००

पूँजी खाते

		ए	बी	सी	डी			ए	बी	सी	डी
१९५०		रु०	रु०	रु०	रु०	१९५०		रु०	रु०	रु०	रु०
दि. ३१	आहरण	६,०००	६,०००	३,०००	३,०००	जन. १	शेष नी/ला	१२,२००	६,८००	३,४००	५,०००
	शेष आ/ले	१०,२००	४,८००	२,४००	४,०००	दि. ३१	लाभ	४,०००	४,०००	२,०००	२,०००
		१६,२००	१०,८००	५,४००	७,०००			१६,२००	१०,८००	५,४००	७,०००

उदाहरण १२६

ऐक्स, वाई व जैड क्रमशः १,५०० रु०; १,७५० रु० तथा २,००० रु० की पूँजी के साथ समान साझीदार हैं। इन्होंने डब्लू को साझेदारी में ख्याति के १/४ भाग के लिये १,५०० रु० रोकडा तथा पूँजी के लिये १,८०० रु० देने पर प्रविष्ट करने का निश्चय किया। दोनों धन व्यापार में रहेंगे। पुरानी फर्म का दायित्व ३,००० रु० तथा सम्पत्ति रोकड़ के अतिरिक्त, मोटर १,२०० रु० ; फर्नीचर ४०० रु० ; स्टॉक २,६५० रु० व देनदार ३,७८० रु० है।

मोटर व फर्नीचर क्रमश ९५० रु० व ३८० रु० पर पुनर्मूल्यांकित किये गये तथा ह्रास अपलिखित किया गया। एक ख्याति खाता, डब्लू के साझीदार बनने पर उस आधार के अनुसार जिसके अनुसार डब्लू ने अपने भाग के लिये भुगतान किया है, खोला गया।

उपर्युक्त प्रबन्ध को करने के लिये आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये तथा नयी फर्म का प्रारम्भिक चिट्ठा बनाइये।

जर्नल

	रु०	रु०
रोकड़ खाता	३,३००	
ऐक्स का पूँजी खाता		५००
वाई ,, ,,		५००
जैड ,, ,,		५००
डब्ल्यू ,, ,,		१,८००
डब्ल्यू ने अपनी पूँजी और ख्याति के १/४ भाग के लिये राशि दी		
एक्स का पूँजी खाता	९०	
वाई का ,,	९०	
जैड ,,	९०	
मोटर खाता		२५०
फर्नीचर खाता		२०
ह्रास अपलिखित किया		
ख्याति खाता	६,०००	
एक्स का पूँजी खाता		१,५००
वाई ,,		१,५००
जैड ,,		१,५००
डब्ल्यू ,,		१,५००
पुस्तकों में ख्याति खाता खोला गया		

एक्स, वाई, जैड तथा डब्ल्यू का चिट्ठा

	रु०		रु०
लेनदार	३,०००	रोकड़	३,५२०
पूँजी : एक्स	३,४१०	देनदार	३,७८०
वाई	३,६६०	स्टॉक	२,६५०
जैड	३,९१०	फर्नीचर	३८०
डब्ल्यू	३,३००	मोटर	९५०
		ख्याति	६,०००
	१७,२८०		१७,२८०

टिप्पणी.—चूँकि डब्ल्यू ने ख्याति का १/४ भाग खरीदा है इसलिए वह पुस्तकों में ख्याति खाता खोलते समय १,५०० रु० से क्रेडिट कर दिया गया है।

मोटर और फर्नीचर का ह्रास पुनर्मूल्यन खाते के द्वारा लिखने की अपेक्षा सीधा ऐक्स, वाई तथा जैड के पूँजी खातों में लिख दिया गया है।

उदाहरण १३०

ए, एक एकाकी व्यापारी ने, जो कि एक स्थापित व्यापार का स्वामी है, १ जनवरी १९५१ को, बी को साझेदार बनाया। इस तिथि को व्यापार की ख्याति का मूल्य ६,००० रु० निश्चित किया गया। ए की पूँजी

(ख्याति रहित) १०,००० रु० थी तथा बी ३,००० रु० अपनी पूँजी के लाया। पूँजी खातों पर ५% ब्याज देय है तथा शेष लाभ ए व बी को २ व १ के अनुपात मे विभाजित करना है।

१९५० का लाभ ब्याज काटने से पूर्व २,६०० रु० था। इस धन का ए व बी के बीच में यह मानते हुये कि (अ) बी का प्रवेश होते समय ख्याति भुला दी गई है, (ब) ख्याति उसके उचित मूल्य पर खातों में सम्मिलित की गई है, विभाजन की गणना करो।

लाभ-हानि खाता (जबकि बी के प्रवेश पर ख्याति छोड़ दी गई है)

	रु०		रु०
पूँजी पर ब्याज		शेष नी/ला	२,६००
ए १०,००० रु० पर ५%	५००		
बी ३,००० रु० पर ५%	१५०		
शेष—ए	१,३००		
बी	६५०		
	२,६००		२,६००

लाभ-हानि खाता (जबकि ख्याति इसके उचित मूल्य पर पुस्तकों में सम्मिलित की गई है)

	रु०		रु०
पूँजी पर ब्याज		शेष नी/ला	२,६००
ए १६,००० रु० पर ५%	८००		
बी ३,००० रु० पर ५%	१५०		
शेष—ए	१,१००		
बी	५५०		
	२,६००		२,६००

उदाहरण १३१

लीन व स्टाउट साझेदार हैं, जो क्रमशः $\frac{३}{५}$ व $\frac{२}{५}$ के अनुपात में लाभ विभाजित करते हैं। उनका चिट्ठा निम्नलिखित है :—

		रु०			रु०
पूँजी—लीन	२,०००		रोकड़		६५०
स्टाउट	१,०००	३,०००	देनदार	१,०००	
लेनदार		४००	घटाया संचय	४००	६००
			स्टॉक		१,५००
			प्लाण्ट		६५०
		३,४००			३,४००

उन्होंने थिन को $\frac{१}{२}$ भाग पर, इस शर्त पर कि वह व्यापार में १,००० रु० ख्याति के तथा नये फर्म की पूँजी का $\frac{१}{२}$ भाग प्राप्त करने के लिये यथेष्ठ पूँजी देगा, प्रविष्ट करने का निश्चय किया। यह निश्चय किया गया कि डूबत ऋण के लिये सञ्चय १०० रु० तक घटा दिया जाय, स्टॉक २,००० रु० पर पुन. मूल्यांकित किया जाय, प्लाण्ट ५०० रु० तक घटा दिया जाय। नयी साझेदारी का चिट्ठा बनाइये।

लीन, स्टाउट व थिन का चिट्ठा

	रु०			रु०
लेनदार	४००	रोकड़		६,२००
पूँजी—लीन	२,५९०	देनदार	१,०००	
स्टाउट	१,६६०	घटाया संचय	१००	९००
थिन	४,६५०	स्टॉक		२,०००
		यन्त्र		५००
	९,३००			९,३००

उदाहरण १३२

ए व बी जो क्रमशः $\frac{2}{3}$ व $\frac{1}{3}$ के अनुपात में लाभ-हानि ग्रहण करते है, साझीदार हैं। ३१ दिसम्बर १९५० को उनका चिट्ठा निम्न था :—

रोकड़ १,००० रु०; विविध देनदार १५,००० रु०, स्टॉक २२,००० रु०; कल व यत्र ४,००० रु०; विविध लेनदार २,००० रु०; बैंक अधिविकर्ष १५,००० रु०; ए की पूँजी १५,००० रु०; बी की पूँजी १०,००० रु०।

१ जनवरी १९५० को उन्होंने निम्न शर्तों पर सी को साझीदार बनाया :—

(अ) सी को ख्याति का चौथाई भाग ३,००० रु० में खरीदना है तथा १०,००० रु० पूँजी के लाने हैं।

(ब) लाभ-हानि निम्न अनुपात में विभाजित होंगे : ए को आधा, बी को चौथाई तथा सी को चौथाई।

(स) कल व यत्र १०% से घटाने हैं तथा ५०० रु० का अनुमानित डूबत ऋण के लिये प्रबन्ध करना है। स्टॉक २४,६४० रु० के मूल्य पर लेना है।

(द) ए व बी की पूँजियों को रोकड़ में निकाल कर या लाकर सी के लाभ विभाजन के अनुपात के अनुसार समायोजित करनी है।

फर्म के जर्नल मे उपर्युक्त प्रबन्ध के सम्बन्ध में प्रविष्टियाँ कीजिये ; साझीदारों के पूँजी खाते खानेदार आकृति में बनाइये, तथा नयी फर्म का प्रारम्भिक चिट्ठा तैयार कीजिये।

जर्नल

	रु०	रु०
पुनर्मूल्यन खाता	९००	
कल व यन्त्र खाता		४००
डूबत ऋण संचय खाता		५००
कल व यन्त्र १०% से अपलिखित किये तथा ५०० रु० डूबत ऋण संचय किया		
स्टॉक खाता	२,६४०	
पुनर्मूल्यन खाता		२,६४०
स्टॉक का मूल्य २,६४० रु० से बढा दिया गया		
पुनर्मूल्यन खाता	२,०४०	
ए का पूँजी खाता		१,३६०
बी ,, ,, ,,		६८०
पुनर्मूल्यन का लाभ हस्तातरित किया		
रोकड़ खाता	१३,०००	
ए का पूँजी खाता		२,०००
बी ,, ,, ,,		१,०००
सी ,, ,, ,,		१०,०००
सी ने अपनी पूँजी और क्रय किये गये ख्याति के भाग के लिए रोकड़ लगाई		
रोकड़ खाता	१,६४०	
ए का पूँजी खाता		१,६४०
पूँजी को लाभ विभाजन अनुपात में लाने के लिए रोकड़ लाई गई		
बी का पूँजी खाता	१,६८०	
रोकड़ खाता		१,६८०
पूँजी का आधिक्य आहरित किया गया		

पूँजी खाते

	ए	बी	सी		ए	बी	सी
	रु०	रु०	रु०		रु०	रु०	रु०
रोकड़	—	१,६८०	—	शेष नी/ला	१५,०००	१०,०००	—
शेष आ/ले	२०,०००	१०,०००	१०,०००	पुनर्मूल्यन खाता	१,३६०	६८०	—
				रोकड़	२,०००	१,०००	१०,०००
				रोकड	१,६४०	—	—
	२०,०००	११,६८०	१०,०००		२०,०००	११,६८०	१०,०००

१ जनवरी १९५१ को ए, बी और सी का चिट्ठा

		रु०			रु०
विविध लेनदार		२,०००	रोकड़		१३,६६०
बैंक अधिविकर्ष		१५,०००	विविध देनदार	१५,०००	
पूँजी खाते (:)			घटाया डूबत ऋण सचय	५००	१४,५००
ए	२०,०००		स्टॉक		२४,६४०
बी	१०,०००		कल व यन्त्र		३,६००
सी	१०,०००	४०,०००			
		५७,०००			५७,०००

साझी के हिस्से की गारण्टी (Guarantee of a Partner's Share) —जब कभी एक छोटा साझी साझे में रखा जाता है तो उसका लाभ कुछ निश्चित रकम तक, जो वह कर्मचारी के नाते प्राप्त कर रहा था, गारण्टी कर दिया जाता है। यह गारण्टी इस उद्देश्य से दी जाती है कि छोटे साझी को लाभ की कमी के कारण अधिक कष्ट न उठाना पड़े। कभी-कभी यह गारण्टी सब साझियों द्वारा और कभी सिर्फ एक साझी द्वारा ही दी जाती है।

गारण्टी का जो लाभ दिया जाता है वह गारण्टी देने वाले साझियों का नुकसान समझा जाता है और इसलिए उसे लाभ-हानि बाँटते समय हानि-लाभ खाते में समायोजित कर देना चाहिए।

उदाहरण १३३

साझीदार ए व बी ३ व २ के अनुपात में लाभ-हानि का वितरण करते हैं। १ जनवरी १९४० को उन्होंने अपने प्रबन्धक सी को, लाभ के आठवें भाग का साझीदार बनाया तथा निश्चय किया कि उसका लाभ २,००० रु० न्यूनतम होगा। ए व बी पूर्वानुसार अपने भाग लेंगे।

फर्म का १९५० का लाभ १२,००० रु० था। लाभ-हानि खाता तैयार कीजिये।

वर्ष १९५० का लाभ-हानि खाता

	रु०	रु०			रु०
ए—$\frac{21}{40}$ भाग	६,३००		शेष नी/ला		१२,०००
घटाया, सी को दिया गया	३००	६,०००			
बी—$\frac{14}{40}$ भाग	४,२००				
घटाया, सी को दिया गया	२००	४,०००			
सी—$\frac{5}{40}$ भाग	१,५००				
जोड़ा, ए से प्राप्त	३००				
,, बी से प्राप्त	२००	२,०००			
		१२,०००			१२,०००

एक साझेदार के लाभ का कुछ भाग दूसरे को मिलना (Portion of Partner's share borne by another) :—जब कोई जूनियर साझी किसी सीनियर साझी को कुछ कार्य से मुक्त करने के लिए रखा जाता है तो सीनियर साझी इस जूनियर साझी के लाभ का कुछ हिस्सा और वेतन स्वयं देने की स्वीकृति देता है। इसलिए फर्म के लाभ के विभाजित करते समय इस बात का भी पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिए।

उदाहरण १३४

१ जनवरी १९५० को, ए व बी समान साझीदारों ने सी को सहायक साझीदार बनाया। ए की पूँजी १०,००० रु० तथा बी की ८,००० रु० है जिस पर ५% वार्षिक ब्याज देय है। सी को २ ००० रु० पूँजी के देने है। ६०० रु० बी को व ३०० रु० सी को वार्षिक वेतन क्रेडिट करना है। सी को लाभ का १/६ भाग मिलना है, परन्तु यह निश्चय किया गया कि सी के लाभ का आधा भाग तथा उसके वेतन का २०० रु० ए देगा।

फर्म का १९५० का लाभ, पूँजी पर ब्याज तथा साझीदारों का वेतन काटने से पूर्व १६,६६० रु० है। १९५० का लाभ-हानि खाता बनाइये।

वर्ष १९५० का लाभ हानि खाता

		रु०			रु०
पूँजी पर ब्याज			शेष नी/ला		१६,६६०
ए	५००				
बी	४००				
सी	१००	१,०००			
वेतन :					
बी	६००				
सी	३००	९००			
सी—लाभ का १/६ भाग		२,२२०			
शेष आ/ले		१५,५४०			
		१६ ६६०			१६,६६०
ए		८,४२५	शेष नी/ला		१५,५४०
बी		८,४२५	ए—सी के भाग का १/२ सी का वेतन	१११०	
				२००	१,३१०
		१६,८५०			१६,८५०

(C) सम्मिश्रण (Amalgamations)

जब दो या अधिक व्यक्ति जो अभी तक अकेले व्यापार कर रहे हों, साझा करने का निश्चय करें तो उन्हें अपनी अलग बहियों को बन्द करना पड़ेगा और नये फर्म के लेन-देन, सम्पत्ति आदि को लिखने के लिए नई बहियाँ खोलनी पड़ेंगी।

अलग अलग हर एक व्यापारी को उसकी सम्पत्तियों और ऋणों का जो मूल्य निर्धारित किया जावे स्वीकार करना पड़ेगा। फर्म में प्रत्येक साझी की पूँजी वह रकम होगी जो व्यापार की कुल सम्पत्ति से दायित्वों की रकम कम करने के बाद बचे।

फर्म की नई बहियाँ विभिन्न सम्पत्तियों के खाते के नाम लिख कर और दायित्वों और साझियों के पूँजी खातों को जमा करके खोल ली जाती हैं।

इस सम्बन्ध में यह ध्यान में रखना चाहिए कि गुडविल भी खरीदी हुई सम्पत्ति का एक अंग हो सकती है।

उदाहरण १३५

ए व बी दो एकाकी व्यापारियों ने १ जनवरी १९५१ को अपने व्यापारों का परस्पर सम्मिश्रण किया, उनके अलग-अलग चिट्ठे निम्न थे :—

ए का चिट्ठा—यंत्र ५,००० रु०; देनदार १,००० रु० स्टॉक २,००० रु०; लेनदार ५०० रु०; बैंक अधिविकर्ष २५० रु०; पूँजी ७,२५० रु० ।

बी का चिट्ठा—फर्नीचर ५०० रु०; देनदार ७०० रु०; स्टॉक ३०० रु०; रोकड़ ८३५ रु०; लेनदार ४०० रु०; पूँजी १,६३५ रु० ।

सम्मिश्रण निम्न शर्तों पर हुआ :—(अ) ए व बी को क्रमशः ३,००० रु० व ५०० रु० से ख्याति के लिए क्रेडिट करना है; (ब) ए के यंत्र का १०% तथा उसके स्टॉक का ५% मूल्य कम करना है; (स) बैंक अधिविकर्ष का भुगतान करना है तथा (द) समस्त देनदारों पर ५% का सचय करना है ।

साझेदारी की पुस्तकों में सम्मिश्रण का लेखा करने के लिये जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये तथा प्रारम्भिक चिट्ठा तैयार कीजिये ।

साझेदारी की पुस्तकों मे जर्नल

		रु०	रु०
१९५१ जन ०१	ख्याति	३,०००	-
	यन्त्र	४,५००	
	देनदार	१,०००	
	स्टॉक	१,९००	
	लेनदार		५००
	बैंक अधिविकर्ष		२५०
	डूबत ऋण सचय		५०
	ए का पूँजी खाता		९,६००
	ए की सम्पत्ति व दायित्व लिये गये		
	ख्याति	५००	
	फर्नीचर	५००	
	देनदार	७००	
	स्टॉक	३००	
	रोकड़	८३५	
	लेनदार		४००
	डूबत ऋण सचय		३५
	बी का पूँजी खाता		२,४००
	बी की सम्पत्ति व दायित्व लिये गये		
	बैंक अधिविकर्ष	२५०	
	रोकड़		२५०
	बैंक का अधिविकर्ष भुगतान किया		

टिप्पणी :—ए व बी से ली गई सम्पत्ति व दायित्व पुस्तकों में उस मूल्य पर लिखे जायेंगे जिस पर कि वे लिये गये हैं । पुनर्मूल्यन का परिणाम ए व बी की पृथक पृथक पुस्तकों में लिखा जावेगा न कि साझेदारी की पुस्तकों में, क्योंकि क्रेता अपने यहाँ उसी मूल्य पर सम्पत्ति दिखाता है जिस पर वह खरीदता है । वह उस सम्पत्ति को विक्रेता की पुस्तकों में प्रकट होने वाले मूल्य पर नहीं लिखता ।

ए व बी की फर्म का चिट्ठा

		रु०			रु०
लेनदार		९००	रोकड़		५८५
पूँजी : ए	९,६००		देनदार	१,७००	
बी	२,४००	१२,०००	घटाया डूबत ऋण सचय	८५	१,६१५
			स्टॉक		२,२००
			फर्नीचर		५००
			यन्त्र		४,५००
			ख्याति		३,५००
		१२,९००			१२,९००

उदाहरण १३६

ऐक्स व वाई एक ही प्रकार के व्यापार के दो स्वतन्त्र व्यापारी हैं, ३१ दिसम्बर १९५० को उनके चिट्ठे निम्न थे :—

	ऐक्स रु०	वाई रु०		ऐक्स रु०	वाई रु०
पूँजी	२२,४००	४,६६०	ख्याति	२,०००	
विविध लेनदार	२,०४७	२,३१८	मुक्त सम्पत्ति	२,४००	
देय बिल		१,२००	फिक्चर्स व फिटिंग्स	५३०	१८०
बैंक अधिविकर्ष		३१९	स्टॉक	१०,८५४	५,१७१
			देनदार	७,५६१	३,१४६
			रोकड़ बैंक में	१,०७२	
	२४,४४७	८,४९७		२४,४४७	८,४९७

ऐक्स व वाई ने १ जनवरी १९५१ से अपने व्यापारों का सम्मिश्रण करने का निश्चय किया, फर्म, वाई के फिक्चर्स (जिसको वह रखकर बेचना चाहता है) तथा स्टॉक (जिसे २८० रु० से अपलिखित करना है) के अतिरिक्त समस्त सम्पत्ति व दायित्वों को लिखे हुये मूल्य पर लेगी। वाई के व्यापार की ख्याति का मूल्य ६०० रु० निश्चय किया गया।

साझेदारी का प्रारम्भिक चिट्ठा तैयार कीजिये।

१ जनवरी १९५१ को ऐक्स व वाई का चिट्ठा

	रु०		रु०
विविध लेनदार	४,३६५	बैंक में रोकड़	१,०७२
देय बिल	१,२००	देनदार	१०,७३७
बैंक अधिविकर्ष	३१९	स्टॉक	१५,७४५
पूँजी—ऐक्स	२२,४००	फिक्चर्स व फिटिंग्स	५३०
वाई	४,८००	मुक्त सम्पत्ति	२,४००
		ख्याति	२,६००
	३३,०८४		३३,०८४

उदाहरण १३७

ऐक्स व वाई समान शर्तों पर जैड के प्राचीन व्यापार को क्रय करने व चलाने के लिये साझीदार हुये। १ जनवरी १९५१ को चालू व्यापार निम्न चिट्ठे के आधार पर लिया गया :—

	रु०		रु०
विविध लेनदार	३,४८२	भूमि व भवन	१४,२००
डूबत ऋण संचय	३८५	कल व यन्त्र	८,१००
पूँजी	२६,५९३	कार्यालय फर्नीचर	६००
		स्टॉक	४,१४०
		विविध देनदार	३,४२०
	३०,४६०		३०,४६०

क्रय मूल्य २८,००० रु० निश्चित हुआ जिसको ऐक्स व वाई ने बराबर बराबर भाग में विक्रेता को समय पर चुकता कर दिया। इसके अतिरिक्त प्रत्येक साझीदार ने नये फर्म के बैंक खाते में कार्यशील पूँजी के लिये १,००० रु० जमा किये तथा नयी पुस्तकें खोलने से पूर्व यह निश्चय किया कि ५०० रु० से कल व यन्त्र, ४५० रु० से स्टॉक व २०० रु० से कार्यालय फर्नीचर का मूल्य कम कर दिया जाय।

फर्म की पुस्तकों में उपर्युक्त व्यवहारों का लेखा करने के लिये आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये, तथा साझेदारी प्रारम्भ करने पर ऐक्स व वाई की स्थिति दिखलाते हुये एक चिट्ठा बनाइये।

जर्नल

		रु०	रु०
१९५१ जन० १	ख्याति	२,५५७	
	भूमि व भवन	१४,२००	
	कल व यन्त्र	७,६००	
	कार्यालय फर्नीचर	४००	
	विविध देनदार	३,४२०	
	स्टॉक	३,६६०	
	विविध लेनदार		३,४८२
	डूबत ऋण सचय		३८५
	जैड		२८,०००
	जैड से सम्पत्ति व दायित्व लिये गये		
	जैड	२८,०००	
	ऐक्स का पूँजी खाता		१४,०००
	वाई का पूँजी खाता		१४,०००
	ऐक्स व वाई द्वारा जैड का भुगतान किया		
	बैंक खाता	२,०००	
	ऐक्स का पूँजी खाता		१,०००
	वाई का पूँजी खाता		१,०००
	साझियों द्वारा लाई हुई अतिरिक्त पूँजी		

ऐक्स तथा वाई का चिट्ठा

	रु०			रु०
विविध लेनदार	३,४८२	बैंक में रोकड़		२,०००
पूँजी : ऐक्स	१५,०००	विविध देनदार	३,४२०	
वाई	१५,०००	घटाया डूबत ऋण संचय	३८५	३,०३५
		स्टॉक		३,६६०
		कार्यालय फर्नीचर		४००
		कल व यन्त्र		७,६००
		भूमि व भवन		१४,२००
		ख्याति		२,५५७
	३३,४८२			३३,४८२

(ड) छोड़ कर जाने वाले साझी (Outgoing Partners)

फर्म का पुराना साझी वह समझा जावेगा जो फर्म से अवकाश ग्रहण करता है, या जिसकी मृत्यु हो गई है, या जो फर्म से निकाल दिया गया हो। साझी के अवकाश ग्रहण करने पर या मृत्यु पर साझेदारी का अन्त हो जाता है। परन्तु यदि बचे हुए साझी नई साझेदारी करना चाहें तो कर सकते हैं।

परन्तु जब साझेदार साझेदारी छोड़ता है तो उसको या उसके मरने की दशा में उसके कानूनी प्रतिनिधि को दी जाने वाली रकम निश्चय करना आवश्यक हो जाता है। इसके लिए बहुधा साझेदारी-नामे में कुछ नियम रहते हैं। जब साझेदार की मृत्यु हो जाती है या वह अवकाश ग्रहण करता है तो उसका हिसाब तय करने के लिए निम्नलिखित कार्य किया जाता है :—

१. छोड़कर जाने वाले साझी की पूँजी का बैलेंस या तो वही मान लिया जाता है जो

अवकाश लेने या मृत्यु होने वाले वर्ष के आरम्भ में था या इसे मालूम करने के लिए अवकाश-ग्रहण या मृत्यु की तिथि पर अन्तिम खाते तैयार किये जाते है।

२. बाहर जाने वाले साझी के पूँजी खाते को ब्याज, वेतन आदि से समझौते के अनुसार क्रैडिट किया जाता है।

३. बाहर जाने वाले साझी की पूँजी का उचित बैलेंस मालूम करने के लिए सम्पत्ति और ऋणों का मूल्य निर्धारण दुबारा किया जाता है।

४. गत वर्षों के लाभ के आधार पर या साझेदारीनामे के अनुसार अवकाश ग्रहण या मृत्यु की तिथि तक बाहर जाने वाले साझी के लाभ का हिस्सा मालूम किया जाता है। कभी-कभी लाभ के स्थान मे पूँजी पर एक निश्चित दर के अनुसार ब्याज भी दिया जाता है।

५. बाहर जाने वाले साझेदार के हिस्से की गुडविल का मूल्य या तो साझेदारीनामे की शर्तों के अनुसार या निष्पक्ष मूल्य निर्धारण द्वारा निश्चित किया जाता है। बहुधा इसकी रकम गत कुछ वर्षों के औसत लाभ के कुछ गुनी रकम के बराबर मान ली जाती है, जैसे यह गत पाँच वर्षों के औसत लाभ के तीन गुणी के बराबर मानी जा सकती है।

गुडविल की रकम गुडविल खाते के नाम लिखकर इस साझी के पूँजी खाते में जमा कर दी जाती है। इस तरह यह गुडविल खाता सिर्फ छोड़कर जाने वाले साझी के हिस्से की रकम से खोला जाता है और फिर प्रायः बचे हुए साझियो के पूँजी खाते मे इसकी रकम नाम लिखकर खाता बन्द ही कर देते हैं।

६. कभी-कभी फर्म सब साझियो की संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी ले लेती है। इस तरह की पॉलिसी का रुपया किसी एक साझी की मृत्यु पर मिल जाता है। यह इस अभिप्राय से ली जाती है कि किसी साझी की मृत्यु पर उसके कानूनी प्रतिनिधि को चुकाने के लिए इकट्ठे रुपये प्राप्त हो जावें और इस तरह फर्म की रोकड़ी स्थिति पर प्रभाव न पड़े। इस पॉलिसी का वार्षिक प्रीमियम हानि-लाभ खाते से काट लिया जाता है, इसलिए इस पॉलिसी से प्राप्त रुपया सब साझियो मे उनके लाभ विभाजन अनुपात में बाँट दिया जाता है।

बाहर जाने वाले साझी को दी जाने वाली रकम उक्त प्रकार मालूम कर लेने के पश्चात् उसे साझेदारीनामे के अनुसार देना पड़ेगा। यह रकम इकट्ठी या कई किस्तो मे (अदत्त किस्तों पर ब्याज सहित) या वार्षिक वृत्ति (annuity) के रूप मे साझेदार या उसके प्रतिनिधि को चुकाई जा सकती है।

(अ) यदि साझी को वह रकम एक साथ दे दी जाती है तो उसको पूँजी खाते के नाम लिखकर रोकड़ खाते मे जमा किया जाता है।

(ब) यदि यह रकम किस्तो मे दी जावेगी तो उसके पूँजी खाते का बैलेंस उसका एक ऋण-खाता खोलकर उसमे जमा कर दिया जावेगा। इस खाते मे समय-समय पर ब्याज की रकमें भी जमा होती रहेगी और जो रकमे चुकाई जावेगी उनको इसके नाम मे लिखा जावेगा।

(स) यदि यह रकम वार्षिक वृत्ति के रूप मे दी जावेगी तो इसे एक खाते में जिसे वार्षिक वृत्ति खाता (Annuity Account) कहते हैं जमा कर दी जाती है। इस खाते में ब्याज की रकम भी जमा की जाती है और जो रकम इसमें से वार्षिक भत्ते के रूप मे दी जाती है वह इसके नाम लिख दी जाती है।

यदि वार्षिक वृत्ति प्राप्त करने वाला इस रकम के समाप्त होने से पहले मर जाता है तो इस खाते का बैलेंस एक विशेष पूँजी-लाभ समझा जाता है और साझियों के पूँजी खातों में उनके लाभ विभाजन अनुपात में जमा कर दिया जाता है।

परन्तु यदि वृत्ति पाने वाला इस खाते की रकम समाप्त होने के बाद तक जीवित रहता है तो जो वार्षिक वृत्ति बाद में देनी पड़ेगी उसे हानि-लाभ खाते के नाम लिखा जावेगा।

उदाहरण १३८

एम व एन साझीदारों ने १८,००० रु० की एक लाभ रहित साझीदार पॉलिसी ७०० रु० वार्षिक किस्त पर ली, यह किस्त फर्म के लाभ में से काटी जायगी। लाभ एम व एन में क्रमशः २/३ व १/३ के अनुपात में विभाजित होगा।

३१ मार्च १९५१ को एम की मृत्यु हो गई। तीन वर्ष की किस्त दी जा चुकी है। १ जनवरी से ३१ मार्च १९५१ तक का एम के लाभ का भाग १,२३३ रु० था। साझेदारी संविदे के अनुसार :—

(अ) अन्तिम चिट्ठे की तिथि की पूँजी पर ५% ब्याज होगा (एम की पूँजी २४,००० रु०)।

(ब) ख्याति (देहान्त होने पर) पिछले तीन वर्षों के औसत लाभ के दो वर्षों के क्रय के (पूँजी पर ब्याज काटने के पश्चात् परन्तु बीमा की किस्त देने से पूर्व) आधार पर होगी।

तीन वर्षों का कुल लाभ, पूँजी पर ब्याज तथा बीमा काटने के पश्चात्, ८,००० रु०, ७,६०० रु० तथा ७,७०० रु० था। ३१ मार्च १९५१ को समाप्त होने वाले तीन माह के लिये एम के आहरण १,८०० रु० के थे।

कानूनी प्रतिनिधि से समझौते के लिये एम की मृत्यु पर उसका पूँजी खाता तैयार कीजिये।

एम का पूँजीखाता

१९५१		रु०	१९५१		रु०
मार्च ३१	आहरण	१,८००	मार्च ३१	शेष नी/ला	२४,०००
	शेष देना बाकी	४६,१३३		३ माह का लाभ	१,२३३
				ब्याज	३००
				पालिसी के धन का भाग	१२,०००
				ख्याति का भाग	१०,४००
		४७,९३३			४७,९३३

उदाहरण १३९

३१ दिसम्बर १९५० को ए व बी का चिट्ठा निम्नलिखित था :—

	रु०		रु०
ए की पूँजी	१०,०००	कल व यंत्र	२०,०००
बी की पूँजी	७,५००	एकस्व	२,०००
संचिति कोष	६,०००	स्टॉक	५,०००
कर्मचारी प्रोविडेन्ट फण्ड	५००	विविध देनदार	४,०००
विविध लेनदार	२,०००	रोकड़	१,०००
लाभ-हानि खाता	६,०००		
	३२,०००		३२,०००

१ जनवरी १९५१ को ए ने व्यापार से अवकाश प्राप्त किया। साझेदारी संविदे के अनुसार ख्याति की गणना साझेदारी का अन्त होने से पहले तीन वर्षों के औसत लाभ के दो वर्षों के क्रय के बराबर करनी है। ३१ दिसम्बर १९४८ व १९४९ को समाप्त होने वाले वर्षों का लाभ क्रमशः ५,००० रु० व ४,००० रु० था। एकस्व मूल्यहीन हैं। यंत्र व कल पर १०% ह्रास करना है। पुस्तक ऋणों पर डूबत व संदिग्ध ऋणों के लिये ५% संचय करना है।

यह मानते हुये कि उपर्युक्त समायोजनाओं का विधिवत पालन किया गया, साझेदारों के पूँजी खाते तथा ए का भुगतान करने के बाद बी का चिट्ठा बनाइए। बी ने ए का भुगतान करने के लिए यंत्र व स्टॉक की जमानत पर अपने बैंक से रुपया उधार लिया।

ए का पूँजीखाता

१९५१		रु०	१९५१		रु०
जन. १	पुनर्मूल्यन खाता (हानि)	२,१००	जन. १	शेष नी/ला	१०,०००
	रोकड़	१८,९००		लाभ १९५० का	३,०००
				संचय कोष	३,०००
				ख्याति	५,०००
		२१,०००			२१,०००

बी का पूँजीखाता

१९५१		रु०	१९५१		रु०
जन १	पुनर्मूल्यन खाता (हानि)	२,१००	जन. १	शेष नी/ला	७,५००
	शेष आ.ले	११,४००		लाभ १९५० का	३,०००
				संचय कोष	३,०००
		१३,५००			१३,५००

टिप्पणी—सचय कोष विगत साल के न बाँटे गये लाभ को बतलाता है।

१ जनवरी १९५१ को बी का चिट्ठा (ए का भुगतान करने के बाद)

	रु०			रु०
बैंक ऋण	१८,९००	रोकड़		१,०००
विविध लेनदार	२,०००	विविध देनदार	४,०००	
कर्मचारी प्रॉविडेण्ट फंड	५००	घटाया डूबत ऋण सचय	२००	३,८००
पूँजी	११,४००	रहतिया		५,०००
		कल व यंत्र		१८,०००
		ख्याति		५,०००
	३२,८००			३२,८००

टिप्पणी—यदि ख्याति अपलिखित कर दी जाती है तो पूँजी खाते में केवल ६,४०० रु० शेष रहेंगे।

उदाहरण १४०

ए, बी व सी तीन साझीदार हैं, जो अपने लाभ आधा, चौथाई तथा चौथाई के रूप में बाँटते हैं तथा इनकी पूँजी क्रमश १०,००० रु०, ६,००० रु० व ४००० रु० है। इनके साझेदारी सविदे में निम्न बातें दी हुई हैं.—

(अ) कि साझीदारों को इनकी स्थायी पूँजी पर ५% वार्षिक की दर से ब्याज दिया जायगा, परन्तु आहरित न किए हुए लाभ पर तथा आहरण पर कोई ब्याज न होगा।

(ब) कि साझीदार की मृत्यु पर फर्म की ख्याति, मृत्यु की तिथि से पूर्व ३१ दिसम्बर को समाप्त होने वाले पूर्व तीन वर्षों के औसत लाभ के एक वर्ष के क्रय के अनुसार मूल्यांकित की जायगी।

(स) साझीदारों के सयुक्त जीवन पर १०,००० रु० की एक पालिसी ली गई, जिसकी किस्त लाभ में से देय होगी।

(द) कि साझीदार की मृत्यु होने पर उसे मृत्यु के बाद ३१ दिसम्बर तक के लाभ के भाग से व पूँजी के ब्याज आदि से क्रेडिट किया जायगा।

(य) मृतक साझीदार की मृत्यु के बाद ३१ दिसम्बर को साझीदारों की पालिसी व ख्याति के भाग उसके खाते में क्रेडिट होंगे।

(फ) कि साझीदारी की पुस्तकें प्रत्येक वर्ष ३१ दिसम्बर को बन्द होंगी।

३० सितम्बर १९५० को ए की मृत्यु हुई। ३१ दिसम्बर १९४९ को उसके चालू खाते में ४५० रु० का क्रेडिट शेष था और इस तिथि से मृत्यु की तिथि तक उसने ३,००० रु० व्यापार से निकाले।

फर्म का व्यापारिक परिणाम (पूँजी पर ब्याज काटने से पूर्व) निम्न था :—१९४७ का लाभ ८,६४० रु०; १९४८ का ५,०२० रु०; १९४९ की हानि १,६४० रु०; १९५० का लाभ २,६०० रु०।

ए के कानूनी प्रतिनिधि को देय राशि (amount due) दिखलाते हुए एक खाता तैयार कीजिये।

ए का पूँजी खाता

१९५०		रु०	१९५०		रु०
सि० ३०	चालू खाता	'५०	जन. १	शेष नी/ला	१०,०००
दि० ३१	शेष (कानूनी प्रतिनिधि को देय राशि)		दिस. ३१	ब्याज	५००
				लाभ का भाग	८३५
				ख्याति	१,६२०
				पालिसी राशि	५,०००
					१७,९५५

टिप्पणी—(अ) ए का ... हस्तांतरित कर दिया गया है तथा चालू खाते का शेष उक्त खाते में डेबिट कर दिया

(ब) तीनों साझियों ... ०० रु० है जिस पर वार्षिक ब्याज १,००० रु० है। अतः पूँजी पर ब्याज देने के पश्चात ... निम्न प्रकार होगा :—१९४७ का लाभ ७,९४० रु० ; १९४८ का लाभ ४,७२० रु० ... ० रु० तथा १९५० का लाभ १,९७० रु०।

(स) १९५० के ... ० का आधा अर्थात् ८३५ रु० होगा।

(द) १९४७- ... ौसत लाभ ३,२४० रु० है और ए का ख्याति का भाग इस औसत का आधा अर्थात् १,६

उदाहरण १४१

ए, ... अपने लाभ क्रमशः $\frac{1}{2}$, $\frac{1}{4}$ व $\frac{1}{4}$ के अनुपात मे बाँटते हैं। ३१ दिसम्बर १९५० को उनका चि

	रु०		रु०
विविध लेन	४,०००	रोकड़	१,०००
ए की पूँ	१०,०००	विविध देनदार	४,५००
बी ,,	६,०००	स्टॉक	५,५००
सी .	४,०००	ए को दिया गया ऋण	३,०००
		मुक्त गृह सम्पत्ति	१०,०००
	२४,०००		२४,०००

.९५१ को ए का देहान्त हो गया। फर्म ने तीनों साझीदारों के संयुक्त जीवन पर १०,००० रु० रक्खा था जिसकी पालिसी की राशि १ फरवरी १९५१ को प्राप्त हुई। साझेदारी समझौते ा आगमन साझीदार की मृत्यु या अवकाश ग्रहण करने से पिछले तीन पूर्ण वर्षों के औसत लाभ र होगा। मृतक साझीदार की पूँजी, ख्याति आदि का भाग १ जनवरी १९५१ को रोकड़ में से आवश्यक रोकड़ शेष की पूर्ति फर्म के बैंकर से मुक्त-गृह सम्पत्ति की जमानत पर ऋण लेकर की गई। व १९५० के शुद्ध लाभ क्रमशः ५,५०० रु० ४,८०० रु० तथा ६,५०० रु० थे।

ाझीदारों के खाते (Ledger Accounts) बनाते हुये ए का भुगतान करने के बाद बी व सी का चिट्ठा बन।.

साझियों के पूँजी खाते

१९५१		ए रु०	बी रु०	सी रु०	१९५१		ए रु०	बी रु०	सी रु०
जन० १	ख्याति		२,८००	२,८००	जन० १	शेष नी/ला	१०,०००	६,०००	४,०००
	ऋण खाता	३,०००	—	—		ख्याति	५,६००	—	—
मार्च १	रोकड़	१७,६००	—	—	फ० १	पालिसी खाता	५,०००	२,५००	२,५००
	शेष पा/ले		५,७००	३,७००					
		२०,६००	८,५००	६,५००			२०,६००	८,५००	६,५००

३१ मार्च १९५१ को बी व सी का चिट्ठा

	रु०		रु०
विविध लेनदार	४,०००	विविध देनदार	४,५००
बैंक ऋण	६,६००	रहतिया	५,५००
पूँजी . बी	५,७००	मुक्त गृह सम्पत्ति	१०,०००
सी	३,७००		
	२०,०००		२०,०००

टिप्पणी—बी व सी की पुस्तकों में कोई ख्याति खाता नहीं रखा गया है।

उदाहरण १४२

ए बी तथा सी तीन साझेदार अपने लाभ क्रमशः $\frac{1}{2}$, $\frac{1}{3}$ व $\frac{1}{6}$ के अनुपात में बाँटते हैं। उन्होंने आपस में यह समझौता किया कि साझीदार की मृत्यु होने पर ख्याति खाता पिछले पाँच वर्षों के औसत लाभ के तीन वर्षों के क्रय से १० प्रतिशत कम कर के खोला जाय। जीवित साझीदारों को मृतक साझीदार के भाग खरीदने का विकल्प (Option) होगा। कुल व्यापारिक परिणाम निम्न रहे—प्रथम वर्ष, लाभ ३,००० रु०; द्वितीय वर्ष, लाभ ३,३०० रु०; तृतीय वर्ष, लाभ ३,७०० रु० चतुर्थ वर्ष, हानि ३,४०० रु०; पंचम वर्ष, लाभ ५,४०० रु०।

१० मार्च १९५१ को सी का देहान्त हो गया। उस दिन साझेदारी की सम्पत्ति निम्न थी :—फर्नीचर ३०० रु०; विविध देनदार १६००० रु०; रोकड़ बैंक में ३,१०० रु०; उस दिन फर्म का दायित्व ४०० रु० था। मृत्यु के दिन सी की पूँजी ४,००० रु० थी, ए की पूँजी बी से दुगुनी थी।

ए व बी ने मृतक साझीदार का भाग आधा नकद तथा शेष छः माह के बिल द्वारा क्रय करने का प्रस्ताव रक्खा।

सी का खाता, तथा व्यवहार पूर्ण होने पर और बिल स्वीकृत होने के पश्चात् ए व बी का प्रारम्भिक चिट्ठा तैयार कीजिये।

सी का खाता

१९५१		रु०	१९५१		रु०
मार्च १०	बैंक खाता	२,५४०	मार्च १०	शेष नी/ला	४,०००
	देय बिल खाता	२,५४०		ख्याति	१,०८०
		५,०८०			५,०८०

ए और बी का चिट्ठा

		रु०		रु०
विविध लेनदार		४००	बैंक में रोकड़	५६०
देय बिल		२,५४०	विविध देनदार	१६,०००
पूँजी खाते			फर्नीचर	३००
ए—शेष	१०,०००		ख्याति	६,४८०
जोड़ी ख्याति	३,२४०			
		१३,२४०		
बी—शेष	५,०००			
जोड़ो ख्याति	२,१६०	७,१६०		
		२३,३४०		२३,३४०

उदाहरण १४३

ए, बी व सी तीन व्यापारी साझेदारी में व्यापार करते हैं। साझेदारी संलेख के अनुसार किसी साझीदार की मृत्यु होने पर, उस साझीदार की सम्पत्ति, मृत्यु होने की तिथि पर पूँजी (जो उसके नाम अंकित है) तथा ख्याति की राशि पाने का अधिकारी होगा। ख्याति पिछले तीन वर्षों के औसत लाभ के तीन वर्ष के क्रय पर लगाई जायगी। [illegible] ख्याति को जीवित साझीदार पाँच वार्षिक किश्तों में अदा कर सकते हैं। [illegible] दर से ब्याज दिया जायगा।

३१ दिसम्बर १९५० को सी का देहान्त हो गया। १ जनवरी १९५० को उसकी व्यापार में ४०,००० रु० की पूँजी थी, वर्ष में उसके आहरण २,००० रु० थे। प्रत्येक वर्ष प्रथम दिन पूँजी के शेष पर ५ प्रतिशत ब्याज देय था।

फर्म का १९४८, १९४९ व १९५० का लाभ क्रमश १०,००० रु०; १२,००० रु० तथा १४,००० रु० था, जिसका सी २०% प्राप्त करने का अधिकारी था।

आप (अ) सी की सम्पत्ति पर देय राशि तथा (ब) यह मानते हुये कि धन साझेदारी संलेख के अनुसार पाँच वार्षिक किश्तों में अदा किया गया, किश्तें रकम निकालो।

(अ) मृतक सी की सम्पत्ति पर देय राशि का विवरण

	रु०
सी की पूँजी १-१-१९५० को	४०,०००
पूँजी पर ब्याज वर्ष १९५० के लिये	२,०००
१९५० के लाभ का भाग —२०%	२,८००
ख्याति का भाग	७,२००
	५२,०००
घटाया आहरण १९५०	२,०००
देय राशि ३१-१२-१९५० को	५०,०००

(ब) किस्तों की गणना

किश्त	मूलधन	ब्याज	किश्त की राशि
	रु०	रु०	रु०
१. ३१-१२-५१ को	१०,०००	२,५०० (५०,००० पर ५%)	१२,५००
२. ३१-१२-५२ को	१०,०००	२,००० (४०,००० पर ५%)	१२,०००
३. ३१-१२-५३ को	१०,०००	१,५०० (३०,००० पर ५%)	११,५००
४. ३१-१२-५४ को	१०,०००	१,००० (२ ,००० पर ५%)	११,०००
५ ३१-१२-५५ को	१०,०००	५०० (१०,००० पर ५%)	१०,५००

(इ) साझेदारी का अन्त (Dissolution of Partnership)

भारतीय साझा सम्बन्धी कानून के अनुसार साझेदारी का कुछ स्थितियों में अन्त किया जा सकता है। उनमें मुख्य ये हैं —

१. साझेदारी का अन्त सब साझियों की अनुमति से किया जा सकता है।

२. जिस निश्चित अवधि के लिए साझेदारी थी उसकी समाप्ति पर साझा समाप्त हो जाता है।

३. किसी साझी की मृत्यु पर या उनके दिवालिया हो जाने से भी साझा टूट जाता है।

जब साझेदारी का अन्त हो जाता है तो इसे उसका टूटना कहते हैं। साझेदारी के अन्त पर, इसकी सब सम्पत्ति को बेच कर लेनदारों आदि को चुकाया जाता है। उनके चुकाये जाने के बाद जो कुछ बचता है वह साझियों को उनके अधिकारों के अनुसार बाँट दिया जाता है।

साझेदारी का अन्त हो जाने पर हिसाब तय करने में निम्नलिखित नियम। यदि आपस में साझियों ने कोई अन्य नियम तय न किया हो) लागू होंगे।

(अ) सारी हानि, चाहे वह पूँजी की ही क्यों न हो पहले लाभ में से चुकाई जावेगी, फिर पूँजी में से और यदि फिर भी कुछ हानि शेष रहती है तो सब साझी लाभ विभाजन के अनुपात में उस हानि को आपस में बाँटेंगे।

(ब) फर्म की सारी सम्पत्ति, जिसमे साझियो द्वारा पूँजी की कमी को पूरा करने के लिए दी हुई रकमें भी सम्मिलित हैं, निम्न प्रकार काम मे लाई जावेगी :—

(१) पहले उन व्यक्तियों के ऋण चुकाये जायेंगे जो साझी नहीं हैं।

(२) फिर साझियो का वह ऋण चुकाया जावेगा जो उन्होने अपनी पूँजी के अतिरिक्त फर्म को दिया है।

(३) इसके पश्चात् प्रत्येक साझी द्वारा फर्म मे लगाई हुई पूँजी उचित अनुपात से चुकाई जायेगी।

(४) यदि फिर भी कुछ शेष बचता है तो वह साझियो में लाभ वितरण के अनुपात में बाँट दिया जायगा।

समाप्ति के खाते (Dissolution Accounts).—साझेदारी की बहियाँ बन्द करने के लिए निम्नलिखित प्रविष्टियाँ की जाती हैं :—

१. एक वसूली खाता (Realisation Account) खोला ज ता है और इस खाते के नाम में वसूल हुई व्यापारिक सम्पत्तियों के पुस्त मूल्य लिखे जाते हैं और विभिन्न सम्पत्ति खातो में जमा कर सम्पत्ति खाते बन्द कर दिये जाते हैं।

२. सम्पत्ति बेचने से जो रकम प्राप्त होती है वह रोकड़ खाते के नाम लिखी जाती है और वसूली खाते मे जमा कर दी जाती है। जब कोई साझी सम्पत्ति लेता है तो उसके पूँजी खाते नाम लिखकर यह रकम वसूली खाते में जमा कर दी जाती है।

३ वसूली पर जो खर्चा लगता है वह वसूली खाते नाम लिखकर रोकड़ खाते मे जमा किया जाता है।

४ जब ऋण चुका दिये जावें तो विभिन्न ऋण खातो मे नाम लिखकर रोकड़ खाता जमा कर दिया जाता है। परन्तु जब किसी ऋण के चुकाने का भार कोई साझी अपने ऊपर ले लेता है तो यह रकम ऋण खाते के नाम लिख दी जाती है और उस साझी के पूँजी खाते में जमा कर दी जाती है।

५. यदि ऋणो के चुकाने पर बट्टे आदि के रूप मे कोई फायदा हो तो उसे ऋण खाते नाम लिखकर वसूली खाते में जमा किया जाता है।

६. तब वसूली खाते का बैलेंस लाभ या हानि बतावेगा और यह साझियों में उनके लाभ विभाजन के अनुपात में विभाजित कर दिया जावेगा। यदि लाभ हो तो वसूली खाते के नाम और साझियों के पूँजी खातों मे जमा किया जाता है परन्तु यदि हानि हो तो इससे विपरीत किया जाता है।

७ यदि किसी साझी का ऋण हो तो उसे चुका देना चाहिए और इसकी रकम साझियो के ऋण खातो के नाम लिख करके रोकड़ खाते जमा की जाती है।

८ साझियों के चालू खाते और रिजर्व खाते भी उनके पूँजी खातो मे ट्रांसफर कर दिये जाते हैं।

९ तत्पश्चात् जो रोकड़ी रुपया बचे वह साझियों के पूँजी खातों के बैलेंसो के बराबर होगा इसलिए अब सब साझियों को उनका रुपया दे देना चाहिए। दी हुई रकम उनके पूँजी खाते नाम लिखकर रोकड़ खाते में जमा कर दी जाती है इस प्रकार सब खाते बन्द हो जावेंगे।

१० यदि सम्पत्ति की वसूली होने और ऋण चुकाने के बाद यह मालूम हो कि किसी एक साझी के पूँजी खाते में नाम शेष है, तो अन्य साझियों की पूँजी चुकाने के लिए रोकड़ी रुपया

तब तक काफी नहीं होगा जब तक वह साझी अपने नाम की रकम फर्म को न दे देवे। जब यह रकम प्राप्त हो जावेगी तो सब साझियों के खाते बन्द हो जावेंगे।

उदाहरण १४४

ऐक्स व वाई जो क्रमशः $\frac{३}{५}$ व $\frac{२}{५}$ के अनुपात में लाभ-हानि विभाजित करते हैं, साझीदार हैं। ३१ मार्च १९५१ को उनका चिट्ठा निम्न प्रकार है —

	रु०		रु०
लेनदार	५२८	रोकड़	३६३
आकस्मिक संचय	५००	विनियोग	२,०८०
बैंक ऋण	१,०००	देनदार	१,९६०
पूँजी-ऐक्स	६,०००	स्टॉक	८७५
वाई	२,०००	फर्नीचर	२५०
		मुक्त गृह	४,५००
	१०,०२८		१०,०२८

उन्होंने इस तिथि को साझेदारी का अन्त करने का निश्चय किया। सम्पत्ति १५ अप्रैल १९५१ को, विनियोगों व रोकड़ के अतिरिक्त, ६,६०० रु० में बेची। विनियोगों को जिनका चिट्ठे की तिथि को बाजार मूल्य २,२०० रु० था, वाई ने लिया तथा वह बैंक ऋण चुकता करने के लिये राजी हुआ। अन्त करने का व्यय ११० रु० हुआ। लेनदारों का ५०३ रु० में पूर्ण भुगतान कर दिया गया।

३० अप्रैल १९५१ को पूर्ण हुई समाप्ति से सम्बन्धित जर्नल व आवश्यक खाते (Ledger Accounts) तैयार कीजिये।

जर्नल

१९५१		रु०	रु०
मार्च ३१	वसूली खाता विविध सम्पत्ति शेष स्थानांतरित किये गये	६,६६५	६,६६५
अप्रैल १५	रोकड़ खाता वसूली खाता सम्पत्ति के विक्रय से प्राप्त राशि	६,६००	६,६००
अप्रैल ३०	वाई का पूँजी खाता वसूली खाता विनियोग वाई द्वारा लिये गये	२,२००	२,२००
	वसूली खाता रोकड़ खाता वसूली का व्यय	११०	११०
	बैंक ऋण वाई का पूँजी खाता वाई ने बैंक ऋण ले लिया	१,०००	१,०००
	लेनदार रोकड़ खाता वसूली खाता लेनदारों का भुगतान किया तथा प्राप्त बट्टा वसूली खाते में हस्तांतरित किया	५२८	५०३ २५

ऐक्स का पूँजी खाता	३६०	
वाई ,, ,, ,,	२६०	
वसूली खाता		६५०
वसूली करने में हुई हानि हस्तातरित की गई		
आकस्मिक संचय	५००	
ऐक्स का पूँजी खाता		३००
वाई ,, ,, ,,		२००
कोष पूँजी खाते में हस्तातरित किया गया		
ऐक्स का पूँजी खाता	५,९१०	
वाई का पूँजी खाता	७४०	
रोकड खाता		६,६५०
पूँजियों का भुगतान किया गया		

वसूली खाता

१९५१		रु०	१९५१			रु०
मार्च ३१	विविध सम्पत्ति	६,६६५	अप्रैल १५	रोकड़		६,६००
अप्रैल ३०	रोकड़ (व्यय)	११०	३०	वाई का पूँजी खाता		२,२००
				लेनदार (बट्टा)		२५
				हानि ऐक्स	३९०	
				वाई	२६०	६५०
		९,७७५				९,७७५

रोकड़ खाता

१९५१		रु०	१९५१		रु०
मार्च ३१	शेष नी/ला	३६३	अप्रैल ३०	वसूली खाता (व्यय)	११०
अप्रैल १५	वसूली खाता	६,६००		लेनदार	५०३
				ऐक्स का पूँजी खाता	५,९१०
				वाई का पूँजी खाता	७४०
		७,२६३			७,२६३

बैंक ऋण खाता

१९५१		रु०	१९५१		रु०
अप्रैल ३०	वाई का पूँजी खाता	१,०००	मार्च ३१	शेष नी/ला	१,०००

लेनदार खाता

१९५१		रु०	१९५१		रु०
अप्रैल ३०	रोकड खाता	५०३	मार्च ३१	शेष नी/ला	५२८
	वसूली खाता	२५			
		५२८			५२८

आकस्मिक संचय खाता

१९५१		रु०	१९५१		रु०
अप्रैल ३०	ऐक्स का पूँजी खाता	३००	मार्च ३१	शेष नी/ला	५००
	वाई का पूँजी खाता	२००			
		५००			५००

पूँजी खाते

		ऐक्स	वाई			ऐक्स	वाई
		रु०	रु०			रु०	रु०
१९५१				१९५१			
अप्रैल ३०	वसूली खाता		२,२००	मार्च ३१	शेष नी/ला	६,०००	२,०००
	वसूली खाता (हानि)	३९०	२६०	अप्रैल ३०	आकस्मिक संचय खाता	३००	२००
	रोकड़	५,९१०	७४०		बैंक ऋण	—	१,०००
		६,३००	३,२००			६,३००	३,२००

उदाहरण १४५

ब्राउन व रॉबिन्सन बिना किसी सलेख के साझेदारी में प्रविष्ट हुये। साझेदारी का प्रथम वर्ष समाप्त होने पर उन्होंने उसे समाप्त करने का निश्चय किया तथा आपसे उचित खाते बनाने के लिये कहते हैं। निम्न शेष उनकी बहियों से लिये गये हैं :—

ब्राउन की पूँजी १०,००० रु०; रॉबिन्सन की पूँजी १५,००० रु०, फर्म पर ब्राउन का ऋण १०,००० रु०; ब्राउन के आहरण ८,००० रु० ; रॉबिन्सन के आहरण ८,००० रु० ; वर्ष का कुल लाभ २७,५०० रु० ; स्टॉक २०,००० रु; भवन २४,००० रु० ; रोकड़ शेष ७,५०० रु० व लेनदार ५,००० रु०

यह मानते हुये कि दिखलाये गये अंकों पर सम्पत्ति की वसूली हुई व दायित्व भुगतान किया गया, अन्तिम समझौता दिखलाते हुये आवश्यक खाते तैयार कीजिये।

वर्ष का लाभ-हानि खाता

		रु०		रु०
ब्राउन के ऋण पर ब्याज ६% प्रतिवर्ष की दर से		६००	कुल लाभ नी/ला	२७,५००
शेष—ब्राउन	१३,४५०			
रॉबिन्सन	१३,४५०	२६,९००		
		२७,५००		२७,५००

वसूली खाता

		रु०		रु०
विविध सम्पत्ति			रोकड़ (प्राप्ति)	४४,०००
स्टॉक	२०,०००			
भवन	२४,०००	४४,०००		

रोकड़ खाता

	रु०		रु०
शेष नी/ला	७,५००	विविध लेनदार	५,०००
वसूली खाता	४४,०००	ब्राउन का ऋण खाता	१०,६००
		ब्राउन का पूँजी खाता	१५,४५०
		रॉबिन्सन का पूँजी खाता	२०,४५०
	५१,५००		५१,५००

पूँजी खाते

	ब्राउन	रॉबिन्सन		ब्राउन	रॉबिन्सन
	रु०	रु०		रु०	रु०
आहरण खाता	८,०००	८,०००	शेष नी/ला	१०,०००	१५,०००
रोकड़ खाता	१५,४५०	२०,४५०	लाभ-हानि खाता	१३,४५०	१३,४५०
	२३,४५०	२८,४५०		२३,४५०	२८,४५०

ब्राउन का ऋण खाता

	रु०		रु०
रोकड़	१०,६००	शेष नी/ला	१०,०००
		ब्याज खाता	६००
	१०,६००		१०,६००

उदाहरण १४६

ए, बी व सी का ३१ दिसम्बर १९५० को निम्नलिखित चिट्ठा है :—पूँजी खाते—ए २०,००० रु०, बी १०,००० रु०, व सी ५,००० रु० ; लेनदार १५,००० रु० ; ख्याति ४,५०० रु० ; स्टॉक २५,००० रु० ; देनदार २०,००० रु० ; रोकड़ ५०० रु० ।

उस स्थिति में जब साझेदारी इसी तिथि को भग कर दी जाय तो प्रत्येक साझी को क्या प्राप्त होगा —

(अ) यदि सम्पत्तियों की वसूली उनके पुस्तक मूल्य पर हो तथा साझीदार लाभ-हानि का समान वितरण करे ।

(ब) यदि देनदार १५,००० रु० में, स्टॉक ३०,००० रु० में व ख्याति १०,००० रु० में वसूल हों तथा साझीदार अपने लाभ ५ : ३ : २ के अनुपात में विभाजित करे ।

(स) यदि सम्पत्ति से (रोकड़ के अतिरिक्त) ४०,००० रु० वसूल हों तथा लाभ का समान वितरण हो ।

(अ) यदि सम्पत्ति पुस्तक मूल्य पर बिकती है, तो उनकी वसूली पर कोई लाभ या हानि नहीं होगी । अत. साझियों को क्रमशः २०,००० रु०, १०,००० रु० तथा ५,००० रु० मिलेंगे ।

(ब) यदि सम्पत्ति से, जिसका पुस्तक मूल्य ५०,००० रु० है, ५५,५०० रु० वसूल होते हैं, तो उनकी वसूली पर ५,५०० रु० का लाभ होगा । यह लाभ ए, बी तथा सी को क्रमश. २,७५० रु०, १,६५० रु०, व १,१०० रु० मिलेगा । अतः साझियों को क्रमश २२,७५० रु० ; ११,६५० रु० तथा ६,१०० रु० मिलेंगे ।

(स) यदि सम्पत्ति से रोकड़ सम्मिलित करते हुए केवल ४०,५०० रु० प्राप्त होते हैं, तो उनकी वसूली पर ६,५०० रु० की हानि होगी, जो कि प्रत्येक साझी समान रूप से २,१६६ रु० १० आ० ८ पा० सहन करेगा । अतः साझियों को, पूँजी में से हानि का भाग घटाते हुए, क्रमशः १६,८३३ रु० ५ आ० ४ पा०, ६,८३३ रु० ५ आ० ४ पा० तथा १,८३३ रु० ५ आ० ४ पा० मिलेंगे ।

उदाहरण १४७

ए, बी, व सी जो अपने लाभ-हानि क्रमश. $\frac{1}{2}$, $\frac{1}{3}$ व $\frac{1}{6}$ के अनुपात में बाँटते हैं. साझीदार हैं । ३१ मार्च १९५१ को साझा भग करने का निश्चय किया गया तथा उस तिथि को निम्नलिखित चिट्ठा फर्म की स्थिति प्रगट करता है .—

	रु०		रु०
लेनदार	४०,०००	भूमि व भवन	५७,०००
ऋणखाता—ए	१०,०००	स्टॉक	५०,०००
पूँजी खाते—ए	६०,०००	विविध देनदार	५०,०००
बी	४०,०००	रोकड़ बैंक में	३,०००
सी	१०,०००		
	१,६०,०००		१,६०,०००

वसूली के अन्तर्गत एक हानि के लिये की गई नालिश का दायित्व, जिसके लिये फर्म की पुस्तकों में केवल ५,००० रु० का प्रबन्ध था, २०,००० रु० में तय हुआ ।

भूमि व भवन ४०,००० रु० में बेची गई, तथा स्टॉक व विविध देनदारों से क्रमशः ३०,००० रु० व ४२,००० रु० वसूल हुए । वसूली पर १,२०० रु० व्यय हुआ । फर्म की पुस्तकें बन्द कीजिये ।

वसूली खाता

	रु०			रु०
विविध सम्पत्ति	१,५७,०००	रोकड़ (विक्रय से प्राप्ति)		१,१२,०००
रोकड़ (व्यय)	१,२००	हानि—ए	३०,६००	
लेनदार (क्षति)	१५,०००	बी	२०,४००	
		सी	१०,२००	६१,२००
	१,७३,२००			१,७३,२००

रोकड़ खाता

	रु०		रु०
शेष नी/ला	३,०००	वसूली खाता (व्यय)	१,२००
वसूली खाता	१,१२,०००	लेनदार	५५,०००
सी का पूँजी खाता	२००	ए का ऋण खाता	१०,०००
		ए का पूँजी खाता	२८,४००
		बी ,, ,, ,,	१६,६००
	१,१५,२००		१,१५,२००

लेनदार

	रु०		रु०
रोकड़	५५,०००	शेष नी/ला	४०,०००
		वसूली खाता	१५,०००
	५५,०००		५५,०००

ए का ऋण खाता

	रु०		रु०
रोकड़	१०,०००	शेष नी/ला	१०,०००

पूँजी खाते

	ए	बी	सी		ए	बी	सी
	रु०	रु०	रु०		रु०	रु०	रु०
वसूली खाता (हानि)	२०,६००	२०,४००	१०,२००	शेष नी/ला	६०,०००	४०,०००	१०,०००
रोकड़	२९,४००	१९,६००	—	रोकड़	—	—	२००
	६०,०००	४०,०००	१०,२००		६०,०००	४०,०००	१०,२००

गारनर बनाम मर्रे का नियम (Rule in Garner V Murray)

यह तो हमें पहले से ही विदित है कि साझेदारी का अन्त हो जाने पर साझियों को अपने पूँजी खाते के नाम की रकम रोकड़ी रुपये में लानी पड़ती है। परन्तु यदि किसी कारण किसी साझी से यह रुपया वसूल न होने पावे तो दूसरे साझियों को उनका पूरा-पूरा रुपया नहीं मिल सकता है।

इस गारनर बनाम मर्रे के सिद्धांत के अनुसार, साझेदारी का अन्त हो जाने पर यदि कोई साझी अपने पूँजी खाते के नाम की रकम दिवालिया हो जाने से रोकड़ी रुपये में दे न सकता हो, तो इस हानि को अन्य साझियों में उनके गत पूँजी खातों के अनुपात में विभाजित कर दिया जाता है। यह नियम इस सिद्धान्त पर आधारित है कि हानि और लाभ को विभाजन करने का अनुपात तो सिर्फ व्यापार से हुए लाभ या हानि को विभाजित करने के लिए है। परन्तु जब कोई साझी रुपये नहीं दे सकता है तो यह पूँजीगत नुक्सान है, अत. इसको हानि लाभ सम्बन्धी अनुपात के आधार पर विभाजित नहीं किया जा सकता।

गत पूँजी खाते वे हैं जो गत बैलेंस शीट (अर्थात् वसूली के पहले बनी पिछली बैलेंस शीट) में दिखलाये गये हैं।

जब यह सिद्धान्त लागू करना हो तो वसूली खाता साधारण ढंग से तैयार किया जाता है और वसूली पर जो लाभ या हानि होती है वह साझियों में उनके लाभ विभाजन के अनुपात में विभाजित कर दी जाती है। यदि इस विभाजन के बाद किसी साझी के पूँजी खाते में नाम की रकम रहती है तो

इस रकम का वह हिस्सा जो वह साझी दे सकता हो उसी समय दे देना चाहिए। बाकी रकम जो हानि के रूप मे होगी अन्य साझियो मे उनकी गत पूँजी के अनुपात मे बाँट देना चाहिए।

उदाहरण १४८

ए, बी व सी जो अपना लाभ-हानि ४, ३ व २ के अनुपात में बाँटते हैं, साझेदार है। ३१ दिसम्बर १९५० को उनका चिट्ठा तैयार किया गया :—

	रु०		रु०
लेनदार	३,५००	रोकड	१,५००
पूँजीखाते : ए	४,०००	देनदार	१,०००
बी	२,०००	स्टॉक	२,०००
सी	५००	भूमि व भवन	५,५००
	१०,०००		१०,०००

उन्होंने उस दिन साझा भग करने का निश्चय किया। विक्रय पर हानि से बचने के लिए, ए ने स्टॉक १,५०० रु० के मूल्य पर तथा देनदार ७०० रु० के मूल्याकन पर लेने का निश्चय किया। भूमि व भवन २,७०० रु० मे नीलाम द्वारा बेची गई।

आवश्यक खातों द्वारा बतलाइये कि साझेदारी की पुस्तकें किस प्रकार बन्द होंगी। सी दिवालिया हो गया तथा और रोकड़ देने मे असमर्थ है।

वसूली खाता

	रु०			रु०
देनदार	१,०००	ए का पूँजी खाता		२,०००
रहतिया	२,०००	रोकड़		२,७००
भूमि व भवन	५,५००	शेष—हानि		
		ए	१,६००	
		बी	१,२००	
		सी	८००	३,६००
	८,५००			८,५००

ए का पूँजी खाता

	रु०		रु०
वसूली खाता	२,२००	शेष नी/ला	४,०००
,, ,, (हानि)	१,६००		
सी का पूँजी खाता	२००		
	४,०००		४,०००

बी का पूँजी खाता

	रु०		रु०
वसूली खाता (हानि)	१,२००	शेष नी/ला	२,०००
सी का पूँजी खाता	१००		
रोकड़	७००		
	२,०००		२,०००

सी का पूँजी खाता

	रु०		रु०
वसूली खाता (हानि)	८००	शेष नी/ला	५००
		ए का पूँजी खाता	२००
		बी का पूँजी खाता	१००
	८००		८००

रोकड़ खाता

	रु०		रु०
शेष नी/ला	१,५००	लेनदार	३,५००
वसूली खाता	२,७००	बी का पूँजी खाता	७००
	४,२००		४,२००

टिप्पणी :—सी के दिवालिया होने के कारण ३०० रु० की हानि ए व बी ने अपनी पूँजी के अनुपात में (अर्थात् ४,००० व २,००० के अनुपात में) सहन की है।

उदाहरण १४६

३१ दिसम्बर १६५० को ए, बी, सी व डी की पूँजी क्रमशः २६,१३० रु०, ६,५४० रु०, ११,७२० रु०, तथा ३७,२१० रु० है। वे अपने लाभ-हानि क्रमशः ७, ४, ६ व ८ के अनुपात में विभाजित करते हैं। लेनदारों का भुगतान कर देने के पश्चात् सम्पत्ति से २२,१०० रु० वसूल हुये। सी अपना देय धन ले आया परन्तु बी की निजी सम्पत्ति से कुछ भी प्राप्त न हो सका। वसूली खाता, रोकड़ खाता, तथा साझेदारों के खाते तैयार कीजिये।

वसूली खाता

	रु०		रु०
सम्पत्ति	८४.६००	रोकड़	२२,१००
		हानि—ए	१७,५००
		बी	१०,०००
		सी	१५,०००
		डी	२०,०००
	८४,६००		८४,६००

रोकड़ खाता

	रु०		रु०
वसूली खाता	२२,१००	ए का पूँजी खाता	८,४७०
सी का पूँजी खाता	३,३५२	डी का पूँजी खाता	१६,६८२
	२५,४५२		२५,४५२

पूँजी खाते

	ए	बी	सी	डी		ए	बी	सी	डी
	रु०	रु०	रु०	रु०		रु०	रु०	रु०	रु०
वसूली पर हानि	१७,५००	१०,०००	१५,०००	२०,०००	शेष नी/ला	२६,१३०	६,५४०	११,७२०	३७,२१०
बी का पूँजी खाता	१६०	—	७२	२२८	ए का पूँजी खाता		१६०		
रोकड़	८,४७०	—	—	१६,६८२	सी का पूँजी खाता		७२		
					डी का पूँजी खाता		२२८		
					रोकड़			३,३५२	
	२६,१३०	१०,०००	१५,०७२	३७,२१०		२६,१३०	१०,०००	१५,०७२	३७,२१०

(फ) अन्तिम खाते (Final Accounts)

अन्तिम खाते तैयार करने की पद्धति पहले समझाई जा चुकी है। बही-खाते को रखने और तैयार करने के नियम साझेदारीनामे मे दिये होते हैं। इसलिए यह याद रखना आवश्यक है कि साझे के अन्तिम खाते साझेदारीनामे के अनुसार ही तैयार किए जावे। इसके नियम अच्छी तरह से पढ़ कर समझ लेने चाहिए।

यदि पूर्ण दोहरा लेख बहियाँ नहीं रखी गई हैं तो अन्तिम खाते अपूर्ण रिकार्डों से तैयार करने पड़ेंगे।

उदाहरण १५०

१ जनवरी १९५० को ए ने अपने मैनेजर बी को साझीदार बनाने का निश्चय किया। उस दिन ए के पूँजी खाते में ११,००० रु० थे, तथा साझेदारी सलेख में निम्न बातें सम्मिलित थीं :—

(१) १ जनवरी १९५० को, ए के खाते में व्यापार की ख्याति के १,००० रु० क्रेडिट करने हैं; (२) प्रत्येक साझीदार १२ रु० प्रति सप्ताह लाभ के निकालेगा (जो अब तक निकाले गये हैं)।

३१ दिसम्बर १९५० को फर्म की पुस्तकों मे निम्नलिखित शेष प्रविष्ट हुये :—

	रु०		रु०
उत्पादन व्यय	२,०००	डूबत ऋण	५५
व्यापारिक व्यय	२०,२८	बट्टा खाता (क्रे०)	४२
मजदूरी	४,६०६	यत्र व कल	३,१०५
दर, कर व बीमा	३९०	स्टॉक (१–१–५०)	२,६२०
वेतन	१,२५०	क्रय वापसी	२८१
मुक्त गृह सम्पत्ति	३,१००	विक्रय वापसी	१०७
क्रय	१८,६०३	विविध लेनदार	८,५४४
विक्रय	३१,६०४	विविध देनदार	६,३६०
विक्रय पर भाडा	२०६	रोकड़ हस्ते व बैंक में	२,७९०

१९५० के वर्ष का व्यापार व लाभ-हानि खाता तथा ३१ दिसम्बर १९५० को चिट्ठा तैयार कीजिये व ऐसा करते हुये निम्नलिखित का ध्यान रखिए :—

(१) ५७ रु० अदत्त मजदूरी के लिये रक्खो।
(२) विविध देनदारों पर २½% सदिग्ध ऋणों के लिये सचय करो।
(३) ३१ दिसम्बर १९५० को कल व यंत्र २,९०० रु० में पुनर्मूल्यांकित किये।
(४) पूर्वदत्त बीमे के २५ रु० आगे ले जाने हैं।
(५) ३१ दिसम्बर १९५० को स्टॉक ४,६१२ रु० था।
(६) पूँजी पर ५% की दर से व्याज क्रेडिट होगा, परन्तु आहरण पर कोई व्याज न होगा।
(७) बी को व्यापार के मैनेजर होने के फलस्वरूप कुल लाभ का, पूँजी पर व्याज काटने के पश्चात्, १०% प्राप्त करेगा, लाभ-हानि का शेष निम्न प्रकार विभाजित होगा : ए २/३ बी १/३।
(८) बी को १२ रु० प्रति सप्ताह से अधिक हुआ लाभ उसके पूँजी खाते में हस्तान्तरित करना है।

वर्ष १९५० का व्यापार तथा लाभ-हानि खाता

		रु०			रु०
रहतिया १–१–५० को		२,६२०	विक्रय	३१.६०४	
क्रय	१८,६०३		घटाया वापिसी	१०७	३१,४९७
घटाया वापिसी	२८१	१८,३२२	रहतिया ३१–१२–५० को		४,६१२
मजदूरी		४,६६३			
उत्पादन व्यय		२,०००			
सकल लाभ आ/ले		८,८०४			
		३६,४०९			३६,४०९
व्यापारिक व्यय		२,०२८	सकल लाभ नी/ला		८,८०४
दर, कर व बीमा		३६५	बट्टा		४२

वेतन	१,२५०		
भाड़ा	२०६		
डूबत ऋण	५५		
डूबत ऋण संचय	२३४		
ह्रास	२०५		
पूँजी पर ब्याज	६००		
कुल लाभ आ/ले	३,६००		
	८,८४६		८,८४६
बी—१०%	३६०	शेष नी/ला	३,६००
ए—३,५१० रु० का ⅔	२,३४०		
बी—३,५१० रु० का ⅓	१,१७०		
	३,६००		३,६००

३१ दिसम्बर १९५० को चिट्ठा

		रु०			रु०
विविध लेनदार		८,५४४	रोकड़ हस्ते व बैंक में		२,७६०
अदत्त मजदूरी		५७	विविध देनदार	६,३६०	
ए की पूँजी :			घटाया डूबत ऋण संचय	२३४	६,१२६
शेष १-१-५० को	११,०००		रहतिया		४,६१२
ख्याति	१,०००		पूर्वदत्त बीमा		२५
ब्याज	६००		यंत्र व कल	३,१०५	
लाभ	२,३४०		घटाया ह्रास	२०५	२,६००
	१४,६४०		मुक्त गृह सम्पत्ति		३,१००
घटाया आहरण	६२४	१४,३१६	ख्याति		१,०००
बी की पूँजी :					
लाभ	१,५६०				
घटाया आहरण	६२४	९३६			
		२३,८५३			२३,८५३

उदाहरण १५१

एक्स अपना व्यापार एकाकी व्यापारी के रूप में चलाता है। १ जनवरी १९५० को उसकी सम्पत्ति व दायित्व निम्न थे : रोकड़ हस्ते २०० रु०; पुस्तक ऋण १२,७२० रु०; स्टॉक ८,२८० रु०; कार्यालय फर्नीचर ५०० रु०; ख्याति १२,००० रु०; व्यापारिक लेनदार ४,००० रु० व बैंक अधिविकर्ष ५०० रु०।

उस तिथि को वह वाई के साथ साझेदारी में प्रविष्ट हुआ। उसने ६,००० रु० रोकड़ी पूँजी के दिये तथा वह लाभ के १/४ भाग का अधिकारी है। यह प्रबन्ध किया गया कि एक्स की कुल सम्पत्ति २७,००० रु० मूल्य पर साझे में ली जायगी।

फर्म की पुस्तकों में केवल रोकड़ बही व विक्रय खाता बही सम्मिलित हैं। ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष के आगम (जो सब बैंक में जमा किये गये) तथा शोधन निम्न थे :—

आगम	रु०	शोधन	रु०
वाई—पूँजी	६,०००	व्यापारिक लेनदार	१,०२,६२०
आय—		मजदूरी	५,५४०
नकद बिक्री	६८,२३०	किराया व दर	२,४१०
उधार बिक्री	६१,५८०	मोटर कार	१,८००
		मोटर कार का व्यय	७८०
		सामान्य व्यय	३,२५०
		व्यापारिक गृह	३,०००

		आहरण—	
		एक्स	५,६७०
		वाई	३,०००
	१,३८,८१०		१,२८,३६०

निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखते हुए ३१ दिसम्बर १६५० को समाप्त होने वाले वर्ष का व्यापार व हानि-लाभ खाता तथा उसी तिथि को चिट्ठा तैयार कीजिये :—

(अ) वर्ष के अन्त में व्यापारिक देनदार व लेनदार क्रमशः १४,७७० रु० व ५,४७० रु० थे तथा स्टॉक का मूल्य ६,१४० रु० था।

(ब) 'मोटर कार व्यय' नामक पद में १६५१ के १२० रु० भी सम्मिलित हैं।

(स) वर्ष के अन्त में ४५० रु० का व्यय अदत्त है।

(द) मोटर कार पर २०% ह्रास अपलिखित करना है तथा कार्यालय फर्नीचर ४५० रु० के मूल्य पर लिखना है।

तलपट

	रु०		रु०
रोकड़ हस्ते	२००	पूँजी—ऐक्स	२७,०००
रोकड़ बैंक में	६,७५०	वाई	६,०००
मजदूरी	५,५४०	विक्रय	१,३१,८६०
किराया व दरें	२,४१०	विविध लेनदार	५,४७०
मोटर कार	१,४४०	अदत्त व्यय	४५०
मोटर कार व्यय	६६०		
सामान्य व्यय	३,७ ०		
व्यापारिक भवन	३,०००		
आहरण—ऐक्स	५,६७०		
वाई	३,०००		
क्रय	१,०४,०८०		
विविध देनदार	१४,७७०		
रहतिया (१–१–१६५०)	८,२८०		
फर्नीचर	४५०		
ख्याति	१०,०००		
ह्रास	४१०		
पूर्वदत्त व्यय	१२०		
	१,७३,७८०		१,७३,७८०

व्यापार व लाभ-हानि खाता
३१ दिसम्बर १६५० को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये

	रु०		रु०
रहतिया १–१–५० को	८,२८०	विक्रय	१,३१,८६०
क्रय	१,०४,०८०	रहतिया ३१–१२–५० को	६,१४०
मजदूरी	५,५४०		
सकल लाभ आ/ले	२३,१००		
	१,४१,०००		१,४१,०००
किराया व दरें		सकल लाभ नी/ला	२३,१००
मोटर व्यय	२,४१०		
सामान्य व्यय	६६०		
ह्रास	३,७००		

मोटर कार	३६०				
कार्यालय फर्नीचर	५०	४१०			
कुल लाभ :					
ऐक्स	११,६४०				
वाई	३,६८०	१५,६२०			
		२३,१००			२३,१००

३१ दिसम्बर १९५० को चिट्ठा

	रु०	रु०		रु०	रु०
विविध लेनदार		५,४७०	रोकड़ हस्ते		२००
अदत्त व्यय		४५०	रोकड़ बैंक में		६,७५०
पूँजी			विविध देनदार		१४,७७०
ऐक्स—शेष (१-१-५०)	२७,०००		रहतिया		६,१४०
जोड़ा लाभ	११,६४०		कार्यालय फर्नीचर	५००	
	३८,६४०		घटाया ह्रास	५०	४५०
घटाया आहरण	५,९७०	३२,६७०	मोटर कार	१,८००	
वाई—शेष (१-१-५०)	६,०००		घटाया ह्रास	३६०	१,४४०
जोड़ा लाभ	३,६८०		व्यापारिक भवन		३,०००
	१२,६८०		पूर्वदत्त व्यय		१२०
घटाया आहरण	३,०००	६,६८०	ख्याति		१०,०००
		४८,८७०			४८,८७०

प्रश्न

१ यदि साझीदारों में आपस में कोई संविदा न हुआ हो, तो आप उनके खाते किस प्रकार बनायेंगे ?

२ ख्याति का क्या अर्थ है ? यह कैसे उत्पन्न होती है तथा इसके लिये साझीदारों की पुस्तकों में कब प्रविष्ट होती है ?

३. एक नये साझीदार के प्रवेश करने पर सम्पत्ति व दायित्वों का फिर से क्यों मूल्यांकन किया जाता है, तथा उसके परिणाम का क्या व्यवहार किया जाता है ?

४. अवकाश ग्रहण करने वाले साझीदार के भाग का मूल्य किस प्रकार निश्चित किया जाता है ?

५. साझेदारी का अन्त करते समय, साझीदारों के हिसाब का समझौता किन-किन सिद्धान्तों पर होता है ?

६. ए, बी व सी क्रमशः ५०,००० रु०, ३०,००० रु० व २०,००० रु० के साझीदार हैं। उनके समझौते के अनुसार पूँजी पर ६% प्रति वर्ष ब्याज दिया जायगा, परन्तु आहरण पर कोई ब्याज न होगा। लाभ व हानि ३:२:१ के अनुपात में बाँटे जायेंगे व सी को प्रति वर्ष ५,००० रु० वेतन दिया जायगा। १९५० में साझीदारों ने क्रमशः ६,००० रु०, ५,००० रु० व ६,००० रु० रोकड़ी निकाले। बी ने २,००० रु० की लागत का माल लिया जिसकी पुस्तकों में कोई प्रविष्टि नहीं की गई।

ब्याज, वेतन व माल लिखने से पहले १९५० का व्यापारिक लाभ ६०,००० रु० था। साझीदारों के चालू खाते व लाभ-हानि खाता बनाओ।

उत्तर : चालू खाते के शेष (जमा) : ए २२,५०० रु०; बी ११,८०० रु०; सी ८,३०० रु०।

७. जोन्स व रॉबिन्सन १९५० वें वर्ष में साझेदारी में व्यापार करते हैं। उनमें साझेदारों का कोई संविदा नहीं हुआ। व्यापार में उन्होंने निम्नलिखित पूँजी लगाई :—जोन्स ५,००० रु० व रॉबिन्सन १,००० रु०; इसके अतिरिक्त जोन्स ने फर्म को देनगी १,००० रु० का ऋण दिया, परन्तु साझीदारों में इस ऋण का ब्याज देने के सम्बन्ध में कोई संविदा नहीं किया गया।

३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ बिना किसी ब्याज का (चाहे वह पूँजी का हो या ऋण का) हिसाब किये ३,००० रु० था। साझेदार लाभ के अनुपात या ब्याज के प्रश्न पर परस्पर सहमत नहीं।

उन्होंने मामला आपके सम्मुख रखा तथा आपके बनाये हुये हिसाब पर समझौता करने के लिये सहमत हैं। आप उस वर्ष के लाभ का किस प्रकार विभाजन करेंगे ?

उत्तर : प्रत्येक साझीदार के लाभ का भाग १,४७० रु० ।

८. ऐक्स, वाई व जैड आपस में साझीदार हैं तथा १ जनवरी १९५० को उनकी पूँजी क्रमशः ४,००० रु० २,७८० रु० व १,५६० रु० थी। लाभ बाँटने से पूर्व वाई २५० रु० व जैड २०० रु० प्रति वर्ष वेतन पाने के अधिकारी हैं। पूँजी पर ५% प्रति वर्ष ब्याज होगा व आहरण पर कोई ब्याज न होगा। शुद्ध बाँटने योग्य लाभ के प्रथम १,००० रु० में से ४०% एक्स के, ३५% वाई के व २५% जैड के होंगे तथा शेष लाभ बराबर-बराबर बाँटा जायगा।

३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ, साझीदारों को वेतन देने के बाद परन्तु पूँजी पर ब्याज लगाने से पूर्व २,३१७ रु० था, तथा प्रत्येक साझीदार ने वेतन, ब्याज व लाभ के सम्बन्ध में ८०० रु० निकाले।

१९५० वे वर्ष का लाभ-हानि खाता तथा साझीदारों के चालू खाते बनाओ।

उत्तर. पूँजी खाते : एक्स ४,०९९ रु० ८ आ०; वाई ३,०१८ रु० ८ आ०; जैड १,६१६ रु०।

९. ए, बी, सी, व डी साझीदार है। वार्षिक खातों के तैयार होने पर तथा ३१ दिसम्बर १९५० को हस्ताक्षर होने के पश्चात् यह पता लगा कि ५% प्रति वर्ष की दर से पूँजी का ब्याज असावधानी से भुला दिया गया है। पुस्तकों को दुबारा खोलने तथा चिट्ठा बनाने की अपेक्षा नये वर्ष में समायोजन प्रविष्टि करने का निश्चय किया गया। १ जनवरी १९५० को साझीदारों की पूँजी क्रमशः १७,००० रु०; ११,००० रु०; ११,००० रु०; व ६,००० रु० थी। लाभ क्रमश $\frac{1}{3}$, $\frac{1}{4}$, $\frac{1}{4}$ व $\frac{1}{6}$ बाँटे गये। उपर्युक्त विवरण का समायोजन करने के लिये जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये।

१०. साझीदारों के खाते बनाने के पश्चात् यह पता लगा कि साझीदारों के पूँजी खातों में ५% प्रति वर्ष की दर से ब्याज जमा कर दिया गया है जबकि साझेदारी सलेख में ब्याज का कोई विधान न था। ब्याज की राशि : ए ३०५ रु०; बी २१० रु०; सी ९० रु० थी।

यह मानते हुये कि लाभ ५ : ३ : व २ के अनुपात में विभाजित हुये हैं १ जनवरी १९५१ को समायोजन प्रविष्टियाँ करो।

११. ए व बी साझीदार हैं, जो क्रमशः ७ : ५ के अनुपात में लाभ-हानि का वितरण करते हैं। उन्होंने अपने मैनेजर सी को व्यापार के $\frac{1}{6}$ भाग का साझीदार बनाने का निश्चय किया। सी १०,००० रु० पूँजी के व ४,८०० रु० ख्याति के $\frac{1}{6}$ भाग के लिये लाया जिसका $\frac{1}{24}$ भाग उसने ए से व $\frac{1}{8}$ भाग बी से प्राप्त किया। नयी साझेदारी के प्रथम वर्ष का लाभ २४,००० रु० हुआ।

सी के प्रवेश के सम्बन्ध में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये तथा साझीदारों में लाभ विभाजित कीजिये।

उत्तर : लाभ का भाग : ए १३,००० रु०; बी ७,००० रु०; सी ४,००० रु०।

१२. ए व बी ने, जो कि क्रमशः $\frac{3}{5}$ व $\frac{2}{5}$ के अनुपात में लाभ-हानि का वितरण करते हैं, १ जनवरी १९५१ से सी को व्यापार में साझीदार बनाने का निश्चय किया।

उन्होंने सी को लाभ का $\frac{1}{5}$ भाग देने का निश्चय किया। ए व बी अपने पूर्व अनुपात में ही विभाजन करेंगे, इस प्रविष्टि से पूर्व १,५०० रु० से एक ख्याति खाता खोलकर उसे पुराने साझीदारों में लाभ के अनुपातानुसार जमा करना आवश्यक है।

पुनः यह निश्चय किया गया कि ख्याति का समायोजन होने के पश्चात् सी, ए व बी की सम्मिलित पूँजी का चौथाई भाग अपनी पूँजी के रूप में लाये।

३१ दिसम्बर १९५० को ए व बी का वार्षिक चिट्ठा निम्न था :—विविध सम्पत्ति १०,६५० रु०; रोकड़ बैंक में १,२२० रु०; विविध लेनदार २,६७० रु०; ए की पूँजी ६,५०० रु०; बी की पूँजी २,७०० रु०।

उपर्युक्त व्यवहारों का लेखा करने के लिये आवश्यक प्रविष्टियाँ कीजिये व यह मानते हुये कि सी निश्चित पूँजी की राशि नकद लाया है, नये फर्म का वार्षिक चिट्ठा बनाइये। यह भी बताइये कि भविष्य में साझीदारों में लाभ किस अनुपात में बाँटे जायेंगे।

उत्तर : चिट्ठा १६,०४५ रु०; लाभ का अनुपात १२ : ८ : ५।

१३. ए व बी साझेदारी में क्रमशः $\frac{3}{5}$ व $\frac{2}{5}$ के अनुपात में लाभ-हानि बाँटते हैं। ३१ दिसम्बर १९५० को उनका वार्षिक चिट्ठा निम्न था :—

	रु०		रु०
विविध लेनदार	३७,५००	रोकड़ बैंक में	२२,५००
पूँजी खाते		प्राप्य बिल	३,०००
ए	४०,०००	पुस्त ऋण	१६,०००

बी	१०,०००	स्टॉक	२०,०००
		फर्नीचर	१,०००
		भवन	२५,०००
	८७,५००		८७,५००

उन्होंने एक जनवरी १९५१ को निम्नलिखित शर्तों पर सी को साझेदारी मे प्रविष्ट किया :—

(अ) कि सी भविष्य में लाभ मे पाँचवा भाग लेने के लिये पूँजी के १०,००० रु० दे।

(ब) कि नई फर्म की पुस्तकों में २०,००० रु० का ख्याति खाता खोला जाय।

(स) कि स्टॉक व फर्नीचर का १०% अवमूल्यन किया जाय व सम्भावित डूबत ऋण के लिये ५% सञ्चय किया जाय।

(द) कि भवन के मूल्य में २०% वृद्धि की जाय, तथा

(य) ए व बी के पूँजी खाते उनके लाभ बाँटने के अनुपात के आधार पर समायोजित किये जाय।

उपर्युक्त व्यवहारों को कार्यान्वित करने के लिय आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ करो तथा नये फर्म का प्रारम्भिक चिट्ठा बनाओ।

उत्तर चिट्ठा ८७,५०० रु०, लाभ विभाजन अनुपात ३ : १ : १।

१४ ए और बी, जो क्रमशः $\frac{3}{5}$ व $\frac{2}{5}$ के अनुपात में लाभ-हानि विभाजित करते हैं, साझीदार हैं। सी को, जो कि २५० रु० प्रति माह वेतन पर उनका मैनेजर है, ए व बी ने लाभ का $\frac{1}{6}$ भाग देकर साझेदार बनाया। ए व बी अपने पुराने अनुपात ही रखते हैं।

फर्म की ख्याति का जिसका पुस्तकों में लेखा नहीं हुआ है, २४ ००० रु० मूल्य लगाया गया; परन्तु सी को, ख्याति के लिये कुछ भी भुगतान नहीं करना है। ए व बी के बीच यह निश्चय हुआ कि बी को नई साझेदारी में वेतन के स्थान पर लाभांश लेने के कारण कोई हानि न उठानी पड़े। फर्म के लाभ समान हैं तथा मैनेजर का वेतन देने के बाद लाभ १५,००० रु० माना गया।

आप (अ) ख्याति की समायोजना कीजिये (ब) नये प्रबन्ध के अनुसार लाभ का विभाजन कीजिये (स) तथा नये साझेदारी के अनुसार लाभ बाँटने का अनुपात बताइये।

उत्तर : ए ८,५०० रु० ; बी ५,००० रु० ; सी ४,५०० रु०।
लाभ का अनुपात १७ . १० : ६।

१५. एस व टी जो क्रमश $\frac{3}{5}$ व $\frac{2}{5}$ के अनुपात में लाभ-हानि विभाजित करते हैं, साझीदार हैं। १ जनवरी १९५० को उन्होंने डब्लू को एक संविदे के अनुसार साझेदारी में प्रविष्ट किया, जिसके अनुसार तीनों साझीदार वर्ष में वेतन स्वरूप क्रमश ३,००० रु ; २ ५०० रु० व २,००० रु० निकालने के अधिकारी हैं।

डब्लू को, ६,५०० रु० सम्मिलित वेतन व लाभ की न्यूनतम राशि की गारन्टी के साथ लाभ का $\frac{1}{6}$ भाग तथा शेष एस व टी को उनके मूल अनुपात के अनुसार प्राप्त होना था।

आपको प्रथम वर्ष के लाभ का, जो साझीदारों का वेतन देने से पूर्व २२.४०० रु० था, विभाजन विवरण तैयार करना है।

उत्तर : एस ११,६०० रु०; टी ८.५०० रु०, डब्लू ४,५०० रु०।

१६. एक्स, वाई व जैड जो क्रमशः $\frac{4}{8}$: $\frac{3}{8}$: $\frac{1}{8}$ के अनुपात में लाभ-हानि विभाजित करते हैं, साझीदार हैं। दूसरे साझीदारों ने जैड के लाभ अंश को ७२० रु० की न्यूनतम राशि तक गारन्टी दे रखी है। चालू वर्ष का शुद्ध लाभ ३.५२० रु० रहा। एक खाते द्वारा दिखलाइये कि प्रत्येक साझीदार कितनी राशि प्राप्त करेगा।

उत्तर . एक्स १,६०० रु०; वाई १,२०० रु०; जैड ७२० रु०।

१७ ए, बी व सी क्रमश १०,००० रु०, ५,००० रु० व २,००० रु० की पूँजी के साझीदार हैं। पूँजी पर ५% प्रति वर्ष ब्याज देने के पश्चात्, लाभ निम्न प्रकार विभाजित किये जाते हैं : ए $\frac{1}{2}$; बी $\frac{1}{3}$; सी $\frac{1}{6}$। परन्तु ए व बी ने यह प्रत्याभूत दी कि किसी भी वर्ष सी के भाग की राशि ५०० रु० से कम न होगी।

१९५० के वर्ष में ए व बी प्रत्येक ने १,००० रु० व सी ने ५०० रु० निकाले। वर्ष का शुद्ध लाभ, साझीदारों के पूँजी पर ब्याज का प्रबन्ध करने से पूर्व २.४०० रु० था। साझेदारों के चालू खाते बनाइये।

उत्तर . ए १३० रु० (क्रे०); बी ३३० रु० (डे०); सी १०० रु० (क्रे०)

१८ ए व बी साझीदारों ने और सी ने, जो पृथक व्यापार करता है, सम्मिलित व्यापार करने का निश्चय किया। दोनों व्यापारों की सम्पत्ति व दायित्व जैसा कि उनके वार्षिक चिट्ठों से पता लगता है ३१ दिसम्बर १९५० को निम्न प्रकार थे :—

	ए व बी	सी
	रु०	रु०
रोकड बैंक में		६७६
बैंक अधिविकर्ष	५११	
विविध देनदार	३,२१५	२,१३८
स्टॉक	१,८००	१,२००
भूमि व भवन	२,४००	
फर्नीचर	२००	१२०
विविध लेनदार	३,१०४	६७६

ए व बी की संस्था की पूँजी ए को $\frac{1}{4}$ व बी को $\frac{3}{4}$ भाग में विभाजित की गई। मिश्रण के समय पारस्परिक निश्चयानुसार ए व बी का अधिविकर्ष सी के बैंक शेष द्वारा समाप्त कर दिया गया, तथा सम्पत्तियों का निम्न मूल्याकन किया गया :—भूमि व भवन २,००० रु० ; सी का फर्नीचर १०० रु० ; सी की ख्याति ७०० रु० तथा ए व बी की ख्याति २०० रु०।

नयी संस्था की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये।

१६. सिंह व खान अलग-अलग जनरल मर्चेण्ट की तरह व्यापार करते हैं। उन्होंने सिंह व खान के नाम से अपने व्यवसाय का निम्न शर्तों पर एकीकरण करने का निश्चय किया :—

(अ) प्रत्येक साझी की स्थायी पूँजी १०,००० रु० होगी।
(ब) सिंह का स्टॉक ३,२०० रु० में व खान का २,७०० रु० में लाया गया है।
(स) ऋणियों पर डूबत ऋण संचय के लिये ६% तक वृद्धि की गई।
(द) खान का फर्नीचर नहीं लिया गया जबकि सिंह का फर्नीचर ४५० रु० में लिया गया।
(य) एकीकरण से पूर्व सिंह को अपने पुत्र के ऋण का भुगतान करना है।
(र) सम्पत्ति की किसी भी कमी को संस्था के बैंक खाते में जमा करना होगा व उसकी कोई भी वृद्धि निकाल ली जायगी।

३१ दिसम्बर १६५० को वार्षिक चिट्ठे निम्न थे :—

सिंह : फर्नीचर ३५० रु० ; कलें ५,००० रु० ; स्टॉक ३,४०० रु० ; देनदार २,७५० रु० (डूबत ऋण संचय १२० रु०) ; रोकड़ बैंक में १,०५५ रु० ; लेनदार १,२०० रु० ; पुत्र से लिया हुआ ऋण ६०० रु०।

खान : फर्नीचर २०० रु० ; कलें ५,५०० रु० ; स्टॉक २,८०० रु० ; देनदार ३,०२५ रु० (डूबत ऋण सचय १२५ रु०) ; रोकड़ बैंक में ८०० रु० ; लेनदार २,१०० रु०।

मिश्रण के पूर्व, प्रत्येक व्यापारी की पुस्तकों का समायोजन करने के लिये आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये, तथा नई सस्था का प्रारम्भिक चिट्ठा बनाइये।

उत्तर : चिट्ठे का योग २३,३०० रु०।

२०. ए, बी व सी साझीदार हैं, जो क्रमशः $\frac{5}{12}$: $\frac{4}{12}$ व $\frac{3}{12}$ के अनुपात में लाभ-हानि को विभाजित करते है। सी के प्रवेश के समय साझेदारी की पुस्तकों में १८,००० रु० का एक ख्याति खाता खोला गया तथा बी की मृत्यु पर भी वह खाता उतने ही रुपये का था।

साझेदारी संलेख के अनुसार किसी भी साझीदार की मृत्यु पर उसकी ख्याति का भाग पिछले तीन पूर्ण वर्षों में उसके खाते में क्रेडिट हुये लाभ के आधे भाग पर मूल्यांकित किया जायेगा। उन वर्षों में संस्था के खातों ने क्रमशः ५८,५०० रु०, ६७,५०० रु० व ६३,००० रु० लाभ दिखाये।

बी की ख्याति के भाग का मूल्य लगाइये तथा पूर्ण व्याख्या सहित आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये। अवस्थित (Existing) साझीदार ख्याति खाते में मृतक साझीदार के भाग से अधिक वृद्धि करना नहीं चाहते।

२१. ऐक्स, वाई व जैड, जो क्रमश' १०, ६, ५ के अनुपात में लाभ बाँटते हैं, साझीदार हैं। ३१ दिसम्बर १६५० को ऐक्स ने अवकाश प्राप्त किया। उस दिन सस्था का चिट्ठा निम्नलिखित था :—

	रु०		रु०
लेनदार	४,८३२	ख्याति	१०,०००
पूँजी : ऐक्स	१०,०००	कलें	८,५६०
वाई	७,०००	विविध सम्पत्ति	१०,३५४
जैड	५,०००		
चालू खाते : ऐक्स	१,०८४		

वाई	३२७		
जैड	८७१		
	२६,११४		२६,११४

साझेदारी संविदे के अनुसार समस्त सम्पत्ति व दायित्व केवल निम्न को छोड़कर पुस्त मूल्यों पर लिये गये (अ) ख्याति, जो अवकाश प्राप्त करने से पहले तीन वर्षों के औसत लाभ के तिगुने पर मूल्यांकित की गई है, तथा (ब) कलें, जो एक स्वतन्त्र मूल्यांकक द्वारा पुन मूल्यांकित की गई हैं। अवकाश प्राप्त करने से पहले तीन वर्षों के लाभ : १९४८ ३,७४२ रु० ; १९४९–५,६४१ रु० ; १९५०–१,४७२ रु० । दत्त मूल्यांकक ने कलों का ६,८७५ रु० पर मूल्यांकन किया।

अवकाश लेने के समय ऐक्स को देय राशि दिखाते हुये खाता तैयार कीजिये।

उत्तर . ऐक्स को देय राशि ११,६०४ रु० १३ आ० ४ पा०।

२२. ओल्ड व यङ्ग समान लाभ-हानि के साझीदार हैं। ३१ दिसम्बर १९५० को उनका चिट्ठा निम्न था :—

	रु०		रु०
विविध लेनदार	७,०००	मुक्त गृह सम्पत्ति (Freehold Premises)	३,०००
पूँजी-ओल्ड	५,०००	कलें	१,५००
यङ्ग	४,०००	स्टॉक	३,२५०
		विविध देनदार	८,१५०
		बैंक में शेष	१००
	१६,०००		१६,०००

यह निश्चय किया गया कि ओल्ड ३१ दिसम्बर १९५० को अवकाश प्राप्त करेगा तथा यङ्ग निम्नलिखित शर्तों पर व्यापार को लेगा।

(अ) संस्था की ख्याति १,००० रु० निश्चय की गई।
(ब) स्टॉक का मूल्य २,७५० रु० निश्चय किया गया।
(स) संदिग्ध ऋणों के लिये एक कोष (विविध देनदारों पर ४%) बनाया जाय।
(द) ओल्ड को २,००० रु०, मुक्त-गृह सम्पत्ति ५% प्रतिवर्ष पर बन्धक रख कर दिये जायँ तथा शेष के लिए एक १२ मास का विनिमय पत्र (बिना ब्याज) स्वीकार किया जाय।

उपर्युक्त (अ) से (द) तक के विवरणों का लेखा करने के लिये आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये तथा समायोजन के पश्चात् ३१ दिसम्बर १९५० को यङ्ग का चिट्ठा बनाइये।

उत्तर : चिट्ठा १६,१७४ रु०।

२३ ऐक्स व वाई साझे में व्यापार चलाते हैं। ३१ दिसम्बर १९५० को ऐक्स ने अवकाश प्राप्त किया। उस दिन उनका चिट्ठा निम्न था :—

	रु०		रु०
विविध लेनदार	१०,०००	रोकड़ हस्ते	२००
देय बिल	५,०००	रोकड़ बैंक में	१,५००
मुक्त सम्पत्ति की		प्राप्य बिल	२,५००
बन्धक पर ऋण	२,०००	विविध देनदार	११,०००
ऐक्स का पूँजी खाता	२१,०००	स्टॉक व्यापार में	१५,०००
वाई का पूँजी खाता	२१,०००	औज़ार	४,०००
		यन्त्र व कलें	१४,०००
		मुक्त भूमि व भवन	५,०००
	५३,०००		५३,०००

वे अपने लाभ-हानि क्रमशः ३ व २ के अनुपात में बाँटते हैं। वाई ने निम्नलिखित शर्तों पर व्यापार को लेना निश्चय किया :

ऐक्स ने बंधक रखी हुई मुक्त भूमि व भवन को चिट्ठे में वर्णित राशि पर लेना स्वीकार किया तथा वाई गृह का किराया २५० रु० प्रति वर्ष देगा।

अन्य सम्पत्तियाँ पुनः मूल्यांकित की गईं :—यंत्र व कल ११,८०० रु०; औजार ४,४०० रु०; व्यापारिक रहतिया १२,००० रु०।

ऐक्स को ३०० रु० नकद मिलने हैं तथा शेष को वह ६% प्रति वर्ष व्याज पर वाई के पास ऋण के रूप में छोड़ देगा।

व्यवहार पूर्ण करने के पश्चात् वाई का चिट्ठा बनाओ।

उत्तर : चिट्ठा ४२,६०० रु०

२४. ए, बी व सी अपने लाभ ७ : २ : १ के अनुपात में बाँटते हुये साझीदार हैं तथा ३१ दिसम्बर १९५० को उनका चिट्ठा निम्न था :—

	रु०		रु०
पूँजी खाते :—		एकस्व (Patents)	३,८०८
ए	१,२४१	भवन	२,०००
बी	८६५	यंत्र	३,१२२
सी	८,०६२	ख्याति	१,०००
लेनदार	१,१२१	ऐक्स लि० के १०० शेयर (लागत पर)	२४०
यंत्र ह्रास के लिये संचय	२,०००	वाई लि० के १,००० शेयर (लागत पर)	१,०००
		स्टॉक	१,१२४
		देनदार	८७४
		बैंक	१२१
	१३,२८९		१३,२८९

३१ दिसम्बर १९५० को निम्न शर्तों पर साझेदारी का विघटन (dissolution) करने का निश्चय किया गया :—

(अ) ए को भवन निश्चित किये हुए मूल्य ३,१५० रु० पर लेना होगा।

(ब) बी, जो व्यापार का सचालन करेगा, ख्याति, स्टॉक तथा देनदार पुस्तक मूल्य पर, एकस्व ३००० रु० पर व यंत्र ३,५०० रु० पर लेगा। उसको लेनदारों का भी भुगतान करना होगा।

(स) सी १ रु० ८ आ० प्रति शेयर के भाव से एक्स लि० के शेयर लेगा।

(द) वाई लि० के शेयर लाभ के अनुपात में विभाजित होंगे।

संस्था की पुस्तकों में समाप्ति का लेखा करते हुये, आवश्यक खाते बनाइये।

उत्तर : वसूली पर हानि ३७० रु०

२५. ए व बी अपने लाभ क्रमशः ३/५ व २/५ के अनुपात में बाँटते हुये साझीदार हैं। उन्होंने ३१ दिसम्बर १९५० को साझेदारी का विघटन करने का निश्चय किया।

उस दिन चिट्ठे में सम्पत्ति ३७,८५० रु० की थी, बिक्री पर केवल २४,५०० रु० वसूल हुये, वसूली की लागत ८७५ रु० हुई।

चिट्ठे में दायित्व निम्न था : विविध व्यापारिक लेनदार ११,२०० रु०; बैंक ऋण व व्याज ४,२७५ रु०; संचय खाता ३७५ रु०; पूँजी खाते ए १०,०-०; बी १,००० रु०; ऋण खाते : ए १०,००० रु० बी १,००० रु०।

समाप्ति का परिणाम दिखाने के लिये आवश्यक खाते बनाओ।

उत्तर : वसूली पर हानि ए २,५३५ रु०; बी १,६९० रु०।

२६. ए व बी साझीदार हैं जो क्रमशः ७/११ व ४/११ के अनुपात में लाभ-हानि विभाजित करते हैं। उन्होंने ३० मई १९५१ को साझेदारी समाप्त की। उस दिन उनकी पूँजी : ए ७,००० रु० व बी ४,००० रु० थी। ए पर ऋण खाते में ४,५०० रु० व बी पर ७५० रु० दातव्य थे। अन्य दायित्व ५,००० रु० का था। उस सम्पत्ति से, जो पिछले वर्ष के कम मूल्य पर लिखी गई थी, २४,००० रु० वास्तविक वसूली हुई।

साझेदारों के बीच अंतिम निर्णय दिखलाते हुये आवश्यक खाते बनाओ।

उत्तर : वसूली पर लाभ—ए १,७१० रु०; बी १,००० रु०।

२७. ए, बी व सी, जो क्रमशः ५, ३ व २ के अनुपात में लाभ-हानि विभाजित करते हैं, साझीदार हैं। उन्होंने ३० जून १९५१ को अपनी साझेदारी का विघटन किया। उस दिन उनका चिट्ठा निम्न था :—

	रु०			रु०
विविध लेनदार	१,४६०	बैंक में शेष		२१८
देय बिल	२,५४०	विनियोग		१,०००
बी का ऋण खाता	२,०००	विविध देनदार	२,८००	
पूँजी : ए	२,५००	घटाया—डूबत ऋण संचय	१५०	२,६५०
बी	१,५००	स्टॉक		१,६१२
सी	१,०००	यंत्र		१,५००
चालू खाते : ए	१२०	स्वायत्त सम्पत्ति (Freehold Property)		४,०००
बी	७३			
सी	८७			
	११,२८०			११,२८०

ए ने स्वायत्त सम्पत्ति ३५०० रु० में व बी ने विनियोग ८०० रु० में लिए। शेष सम्पत्ति निम्न प्रकार वसूल हुईः—देनदार २,३२० रु०; स्टॉक १,५६० रु० व यंत्र १,१८२ रु०।

साझेदारी की पुस्तकें बन्द करने के लिये जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये।

२८. ऐक्स, वाई व जैड समान लाभ व हानि विभाजित करते हैं। उन्होंने साझेदारी का विघटन करने का निश्चय किया तथा निम्न चिट्ठा सम्पत्तियों की वसूली होने के पश्चात् की स्थिति बताता है :—

	रु०		रु०
पूँजी—ऐक्स	१,८००	रोकड़	१,५००
वाई	१,२००	जैड की आहरित पूँजी	६००
		वसूली पर हानि	९००
	३,०००		३,०००

जैड दिवालिया हो जाने के कारण अपनी पूँजी के अधिविकर्ष व संस्था की कमी में कुछ भी देने में असमर्थ है। साझीदारों के बीच कोई संविदा नहीं है।

आवश्यक खाते बनाते हुये संस्था की पुस्तकें बन्द करो।

उत्तर—भुगतान की हुई राशि ऐक्स को ९६० रु०; वाई ५४० रु०।

२९. ए, बी व सी तीन साझीदार हैं जो लाभ-हानि क्रमशः १/२, १/३ व १/६ के अनुपात में बाँटते हैं। उन्होंने साझेदारी का विघटन किया तथा विघटन के दिन व्यापारिक स्थिति निम्न थी :—

	रु०		रु०
विविध लेनदार	३,८७५	रोकड़	९८६
(ऋण खाता)	२५०	विविध देनदार	३,०५६
पूँजी खाते :		स्टॉक	१,८४४
ए	१,५२०	फिक्चर्स	७२०
बी	१,१२०	सी का पूँजी खाता (डे०)	१५९
	६,७६५		६,७६५

सम्पत्तियों से (रोकड़ के अतिरिक्त) ४,८४४ रु० वसूल हुए तथा ५२ रु० व्यापार की समाप्ति में व्यय हुये। ए व बी ऋण चुकाने योग्य हैं, परन्तु सी कुछ भी लाने में असमर्थ है। संस्था की पुस्तकें बन्द करने के लिए गार्नर बनाम मरे का नियम लागू करते हुये आवश्यक खाते बनाइये।

उत्तर : वसूली पर हानि ८२८ रु०।

३०. ए व बी लाभ-हानि अपनी पूँजी के अनुपात में विभाजित करते हुये, दिल्ली व आगरा में व्यापार करते हैं, तथा ३१ दिसम्बर १९५० को उनका चिट्ठा निम्न था :—

	रु०		रु०
विविध लेनदार : दिल्ली	७,६२०	फर्नीचर : दिल्ली	७,०००
आगरा	३,४२०	आगरा	३,०००
पूँजी : ए	५०,०००	[illegible] : दिल्ली	४२,२००
बी	४०,०००	आगरा	३८,७३०

		रोकडी शेष : देहली	१४,३७०
		आगरा	५,७३०
	१,०१,०५०		१,०१,०५०

उस दिन दोनों की सहमति से साझेदारी का विघटन किया गया तथा यह निश्चय किया गया कि ए ७२,००० रु० में सम्पति व दायित्व सहित देहली का व्यापार ले, तथा ठीक उसी प्रकार से बी ४५,००० रु० में आगरे का व्यापार ले।

साझीदारों के बीच आवश्यक समायोजन दिखाते हुये समाप्ति के खाते बनाइये।

उत्तर : वसूली पर लाभ—ए १५,००० रु० ; बी १२,००० रु०।

३१. ए, बी व सी ने, जो लाभ व हानि क्रमशः ४/९, २/९ व १/३ के अनुपात में बाँटते हैं, १ जनवरी १९५१ को साझेदारी समाप्त की और बी को सम्पत्तियों की वसूली करने व प्राप्तियाँ विभाजित करने के लिये नियुक्त किया गया। बी को ए से ५०० रु० पारिश्रमिक के रूप में प्राप्त होने हैं तथा उसे स्वयं वसूली के सब व्यय करने हैं। ३१ दिसम्बर १९५० को उनका चिट्ठा निम्न था :—

दायित्व			सम्पत्ति	
		रु०		रु०
विविध लेनदार		४,५००	रोकड़ हस्ते	५००
देय बिल		२,०५०	रोकड़ बैंक में	३,२५०
ए का ऋण		२,०००	प्राप्य बिल	२,८००
पूँजी—			विनियोग	१२,०००
ए	३४,०००		देनदार	१५,५००
बी	२३,०००		स्टॉक	६,७००
सी	१,५००		फर्नीचर	१,८५०
		५८,५००	यंत्र	७,५००
संचय कोष		६,३००	भवन	२२,५००
लाभ व हानि		२,२५०		
		७५,६००		७५,६००

सम्पत्तियों की वसूली—विनियोग १५% कम ; प्राप्य बिल तथा देनदार १४,१०० रु० ; स्टॉक २५% कम ; फर्नीचर १,०२५ रु० ; यंत्र ४,३०० रु० तथा भवन १३,२०० रु०। वसूली की लागत ३०० रु० थी।

९०० रु० की राशि के लेनदार चिट्ठे से भुला दिये गये थे। सारे दायित्वों का भुगतान कर दिया गया।

सी दिवालिया हो गया तथा संस्था के पूर्व निर्णय के अनुसार उसकी निजी सम्पत्ति से केवल ५१२ रु० प्राप्त हुये। साझेदारों का भुगतान कर दिया गया।

वसूली खाता तथा साझीदारों के पूँजी खाते बनाइये।

उत्तर : वसूली पर हानि २२,६५० रु०। सी की कमी २,६८८ रु० ए व बी द्वारा ३४ : २३ के अनुपात में सहन की गई।

३२. ऐक्स ने एक एकाकी व्यापारी के रूप में व्यापार चलाया। १ जुलाई १९५० को वह निम्न शर्तों पर अपने मैनेजर वाई को साझीदार बनाने पर राजी हुआ :—

(अ) ऐक्स ७५ रु० प्रति माह व वाई ५० रु० प्रति माह आहरित करेंगे जिस पर कोई ब्याज नहीं होगा।

(ब) पूँजी पर ६% प्रति वर्ष ब्याज दिया जायगा।

(स) वाई को २५ रु० प्रति माह साझेदारी के वेतन स्वरूप दिया जायगा।

(द) ऐक्स को ३/४ व वाई को १/४ लाभ विभाजित किया जायगा।

३० जून १९५१ को संस्था की पुस्तकों में निम्न शेष उद्धृत किये गये :—

	रु०		रु०
पूँजी खाते : ऐक्स	८,०००	कार्यालय खर्चे	२६३
वाई (रोकड़ १-७-५०)	१,०००	यांत्रिक कमीशन	१,६७३
आहरण खाता : ऐक्स	९००	किराया, दर व बीमा	२५६
वाई	३००	बट्टा (क्रे०)	२३

ख्याति	४,०००	बैंक अधिविकर्ष	२४६
वाई-साझेदारी वेतन	३००	विविध देनदार	८,७३२
कल व यन्त्र	३,८००	विविध लेनदार	६,६३४
स्टॉक ३०-६-५१ को	३,६२४	कार्यालय फर्नीचर	२००
डूबत ऋण	३८१	बिक्री पर भाड़ा	१,५४२
डूबत ऋण संचय	२५०	वर्ष का शुद्ध लाभ	११,६२७
कार्यालय वेतन	१,४८६		

३० जून १९५१ को समाप्त होने वाले वर्ष का हानि-लाभ खाता तथा उसी तिथि को चिट्ठा बनाइये। खाते बनाते समय निम्नलिखित का ध्यान रखिये . —

(अ) ह्रास का प्रबन्ध निम्न प्रकार से होना चाहिये ; कल व यन्त्र १० प्रतिशत , कार्यालय फर्नीचर ५ प्रतिशत।

(ब) ४५० रु० का डूबत ऋण संचय कोष बनाना है।

(स) जून १९५१ के माह का १६६ रु० यानिक कमीशन संचय में रखना है।

(द) साझेदारी सलेख के अनुसार वाई के लाभ के भाग में से ५०० रु० की राशि (या जो प्राप्त हो) उसके पूँजी खाते में प्रति वर्ष हस्तान्तरित की जाये जब तक कि उसकी पूँजी ऐक्स की पूँजी की आधी के बराबर न हो जाये।

उत्तर : शुद्ध लाभ—ऐक्स ३,३०० रु० ; वाई १,१०० रु० ; चिट्ठा १९,८१६ रु०।

अध्याय—२१

कम्पनी खाते (१)

अभी तक हमने अकेले व्यापारियो और साझेदारी के खातों पर विचार किया है। अब हम परिमित दायित्व वाली कम्पनियो पर विचार करेंगे। १६ वीं शताब्दी में उद्योग-धन्धे, व्यवसाय व व्यापार की वृद्धि के साथ ही साथ व्यावसायिक संगठन मे भी विकास हुआ। अकेले व्यापारियों और साझियों के लिए इस बढ़ते हुए व्यवसाय के लिए पूँजी जुटाना कठिन हो गया। इसलिए इन बड़े-बड़े उद्योग-धन्धों को सुचारु रूप से चलाने के लिये एक नये संगठन की स्थापना हुई जिसे संयुक्त पूँजी वाली कम्पनी या साधारणत कम्पनी कहते हैं।

कम्पनी व्यक्तियों का संघ है जो कानून द्वारा एक अलग अस्तित्व के साथ किसी विशेष उद्देश्य के लिए स्थापित किया जाता है। साझेदारी की फर्म मे साझी ही सब कुछ होते हैं परन्तु कम्पनी का अपना एक अलग वैधानिक अस्तित्व है जो उसके सदस्यों से बिल्कुल भिन्न है। कम्पनी के नाम से कम्पनी के विरुद्ध या कम्पनी द्वारा दूसरो के विरुद्ध कानूनन कार्यवाही की जा सकती है।

१८३६ ई० से कम्पनियों की स्थापना तथा संचालन के लिए बहुत से कानून बनाये गये हैं। परन्तु सन् १६१३ ईसवी मे इन भिन्न-भिन्न कानूनो और सशोधनो को एकत्रित करके भारतीय कम्पनी अधिनियम (Indian Companies Act VII of 1913) बनाया गया। परन्तु यह भी सन् १६३६ ई० से बिल्कुल पूरी तरह से संशोधित कर दिया गया और अब वह इन संशोधनो सहित हमारे देश मे लागू है। इस अध्याय में इसी कानून की धारायें लगेगी।

कम्पनियों के प्रकार

भारतीय कम्पनी अधिनियम के अनुसार तीन प्रकार की कम्पनियाँ रजिस्टर कराई जा सकती हैं:—

१. शेअरों द्वारा परिमित कम्पनियाँ (Companies limited by shares)—इस तरह की कम्पनी के प्रत्येक शेयर होल्डर का दायित्व उसके लिए हुए शेयर तक ही परिमित होता है। सबसे अधिक कम्पनियाँ इसी प्रकार की है। इन कम्पनियो को साधारणतः परिमित दायित्व वाली कम्पनियाँ भी कहा जाता है।

२. गारण्टी द्वारा परिमित कम्पनियाँ (Companies limited by guarantee):—इस तरह की कम्पनी का प्रत्येक सदस्य इस बात की गारण्टी करता है कि कम्पनी के बन्द होने पर वह एक निश्चित रकम कम्पनी को देगा। इस तरह की कम्पनियो मे शेयर पूँजी हो सकती है और नहीं भी। इन कम्पनियो की सख्या बहुत कम है। इस प्रकार की कम्पनियाँ प्राय सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यो के लिए आरम्भ की जाती हैं, जैसे क्लब, व्यापार समितियाँ आदि।

३. अपरिमित दायित्व वाली कम्पनियाँ (Unlimited Companies):—इस प्रकार की कम्पनी के सदस्यो का दायित्व साझेदारी की भाँति अपरिमित होता है। इन कम्पनियो की सख्या नहीं के बराबर है।

कम्पनियों को सार्वजनिक (Public) और निजी (Private) दो भागों में भी विभाजित किया जा सकता है। प्राइवेट कम्पनी वह है जो अपनी नियमावली (Articles) के द्वारा शेयरों की हस्तान्तरण

करने का अधिकार सीमाबद्ध कर देती है, जो सर्व साधारण को अपने शेयर या डिबेंचर खरीदने के लिए आमन्त्रित नहीं करती और जो अपने सदस्यों की संख्या कम्पनी के कर्मचारियों के अतिरिक्त ५० तक सीमित कर देती है। जो कम्पनी प्राइवेट कम्पनी नहीं है वह सार्वजनिक या पब्लिक कम्पनी कही जाती है।

प्राइवेट कम्पनियों का आजकल बहुत प्रचार हो रहा है क्योंकि इस संगठन में साझेदारी और पब्लिक कम्पनी के सब लाभ प्राप्त हो सकते हैं और यह इन दोनों के दोषों से मुक्त है। साझेदारी का मुख्य लाभ है निजी स्वार्थ (Personal Touch) होना और पब्लिक कम्पनी का मुख्य लाभ है परिमित दायित्व। परन्तु प्राइवेट कम्पनियों में ये दोनों लाभ हैं। साझेदारी का मुख्य दोष व्यक्तिगत दायित्व और पब्लिक कम्पनी का मुख्य दोष इसके कार्यों का अति अधिक प्रचार है। परन्तु प्राइवेट कम्पनी इन दोनों दोषों से मुक्त है।

कम्पनी की सृष्टि

(Formation of a Company)

मूल संस्थापक (Promoter) :—जो व्यक्ति कम्पनी को स्थापित और चालू करने में अग्रगण्य कार्य करता है उसे संस्थापक कहते हैं। वही बहुत से व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त करता है और वही उन व्यक्तियों की खोज करता है जोकि इस नई कम्पनी के प्रथम संचालक बन सकें। वही संस्थापन सम्बन्धी सब कागज-पत्रों (documents) की तैयारी करवाता है और कम्पनी को रजिस्टर करवाने के सब आवश्यक कार्य वह करता है। उसे इन सब सेवाओं के लिए प्रतिफल मिल सकता है परन्तु भारतवर्ष में अधिकतर वे ही पुरुष जो प्रबन्धक एजेण्ट बनना चाहते हैं संस्थापक का कार्य करते हैं। और वे संस्थापन करने के लिए कोई फीस नहीं लेते; क्योंकि वे जानते हैं कि प्रबन्धक एजेण्टों (Managing Agents) का कार्य ही बहुत लाभदायक है।

कानून के अनुसार संस्थापक किसी भी तरह का गुप्त लाभ या और किसी तरह का व्यक्तिगत लाभ प्राप्त नहीं कर सकता जब तक यह बात वह सम्बन्धित व्यक्तियों पर प्रगट न कर दे।

कम्पनी संस्थापन (Incorporation) :—जो व्यक्ति नई कम्पनी स्थापित करना चाहते हैं, उन्हें सबसे पहले उस प्रांत की कम्पनियों के रजिस्ट्रार के पास, जहाँ कि कम्पनी का रजिस्टर्ड कार्यालय स्थापित होना निश्चित हुआ है कुछ कागज-पत्र भेजने पड़ते हैं, जिनमें 'कम्पनी का उद्देश्य-पत्र' (Memorandum of Association) और 'कम्पनी की नियमावली' (Articles of Association) प्रमुख हैं। इन दोनों पत्रों पर एक निश्चित टिकट लगता है और इन पर यदि वह पब्लिक कम्पनी हो तो कम से कम सात व्यक्ति और यदि प्राइवेट हो तो कम से कम दो व्यक्तियों के हस्ताक्षर होना आवश्यक है।

यदि सब कागज-पत्र ठीक हों और आवश्यक रजिस्ट्रेशन शुल्क दे दिया गया हो तो रजिस्ट्रार कम्पनी को एक संस्थापन प्रमाण-पत्र (Certificate of Incorporation) दे देता है; जिससे कम्पनी का संस्थापन पक्का हो जाता है। इस तरह से कम्पनी को चिरस्थाई वैधानिक अस्तित्व प्राप्त हो जाता है और यदि वह प्राइवेट कम्पनी है तो वह उसी दिन से कार्य आरम्भ कर सकती है।

उद्देश्य-पत्र (Memorandum of Association) :—यह कम्पनी का सबसे महत्त्वपूर्ण और मुख्य-पत्र है क्योंकि इसमें कम्पनी के संगठन की व्याख्या की जाती है। इससे ही कम्पनी और अन्य बाहरी व्यक्तियों के सम्बन्ध निर्धारित होते हैं। इसमें निम्नलिखित बातों का उल्लेख होता है:— (क) कम्पनी का नाम, जिसके अन्त में 'लिमिटेड' शब्द हो (ख) उस प्रांत का नाम जिसमें कम्पनी का रजिस्टर्ड कार्यालय स्थापित होगा (ग) कम्पनी के उद्देश्य और कार्य जो वह करेगी (घ) इस बात

का लेखा कि हिस्सेदारों का दायित्व परिमित होगा और (ङ) कम्पनी की अधिकृत पूँजी और उसका हिस्सों में विभाजन। उद्देश्य-पत्र के अन्त में उन व्यक्तियों के नाम, पते व हस्ताक्षर जो कम्पनी की सृष्टि करना चाहते हैं। हर एक व्यक्ति अपने नाम के आगे कम्पनी के हिस्सो की वह संख्या भी लिख देता है जो उसने खरीदना स्वीकार कर लिया है।

कम्पनी का नामकरण :- कम्पनी अपना कोई भी नाम रख सकती है। हाँ, यह किसी दूसरी कम्पनी के नाम के सदृश्य न होना चाहिये और न इसमें सम्राट्, साम्राज्य, राजा, राजशाही, रानी आदि शब्द ही हो जो राज्य की संरक्षकता घोषित करते है। कम्पनी का व्यक्तिगत नाम भी हो सकता है (जैसे सुरेश एण्ड सन्स लिमिटेड) और अव्यक्तिगत भी। बहुधा अव्यक्तिगत नाम ही रखे जाते हैं। ये नाम कभी-कभी तो बहुत छोटे होते है जैसे डाबर लिमिटेड। कभी-कभी तो ये नाम बड़े दिलचस्प भी होते हैं जैसे अकाउन्टेन्सी ट्रेनिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पाठ्य पुस्तक लिमिटेड।

कम्पनी की नियमावली (Articles of Association) :—कम्पनी के आन्तरिक प्रबन्ध और कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए जो नियम होते है उन्हें कम्पनी की नियमावली कहते हैं। यही नियम कम्पनी के संचालकों व हिस्सेदारो (Shareholders या शेयर होल्डर्स) के कर्त्तव्य और अधिकार निश्चित करते हैं। इनमे ही हिस्सो को प्रचलित करने, उनका रुपया माँगने, उनको हस्तान्तरित करने, सभाएँ करने, लाभांश (dividend) बाँटने की विधि आदि का उल्लेख होता है।

यदि शेअरो द्वारा परिमित कम्पनी अपनी अलग नियमावली नहीं बनाती है तो उस पर कम्पनी एक्ट की प्रथम परिशिष्ट की टेबिल ए (Table A) के नियम लागू हो जाते है। इसके कुछ नियम सब कम्पनियों के लिए अनिवार्य है।

नोट :—आजकल प्रत्येक कम्पनी अपने अलग नियम बना लेती है।

कम्पनी का पूँजी संग्रह .—(Capitalisation of a Company) संस्थापक का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य कम्पनी का पूँजी ढाँचा तैयार करना है। इस सम्बन्ध मे दो बातों पर विशेष विचार करना है। प्रथम तो यह कि कम्पनी के व्यापार के लिए कुल कितने रुपयो की आवश्यकता है और द्वितीय यह कि उक्त धन किस तरह से जुटाया जा सकता है।

(अ) प्रारम्भिक पूँजी की रकम :—नई कम्पनी के लिए जितनी पूँजी की आवश्यकता है उसका सावधानी से अनुमान लगाना चाहिए। कम्पनी को पूँजी दो उद्देश्यों के लिए आवश्यक होती है, (१) स्थायी सम्पत्ति खरीदने और संस्थापन के खर्चे चुकाने के लिए और (२) कार्यशील पूँजी के वास्ते अर्थात् कच्चा माल खरीदने, माल को बेचने तथा अन्य खर्चे चुकाने के लिए।

नई कम्पनी द्वारा खड़ी की गई पूँजी व्यापार सुचारु रूप से चलाने के लिये पर्याप्त होनी चाहिए। कम पूँजी वाली कम्पनी को शुरू से ही बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। भारतीय कम्पनियों का यह एक बड़ा भारी दोष है।

(ब) पूँजी का स्वरूप .—पूँजी की रकम निश्चित करने के बाद संस्थापक को यह निश्चय करना चाहिए कि यह पूँजी किस प्रकार प्राप्त की जाय। इसके प्राप्त करने के तीन मुख्य साधन हैं :—(अ) विभिन्न प्रकार के शेअरों को निर्गमित करके, (ब) डिबेञ्चर द्वारा और (स) जनता से धरोहर लेकर। अन्तिम साधन प्रबन्धकारिणी एजेन्सी प्रथा की तरह से भारत की एक अपूर्व देन है जिसके द्वारा भारतीय कम्पनियाँ कुछ प्रारम्भिक पूँजी प्राप्त करती हैं। पूँजी के भिन्न-भिन्न स्वरूप निश्चित करते समय निम्नलिखित नियमो को ध्यान में रखा जाता है :—

१. जहाँ तक हो सके, आवश्यक पूँजी भिन्न-भिन्न वर्ग की प्रतिभूतियों, जैसे साधारण शेअर, विशेष अधिकार वाले शेअर और डिबेञ्चरों आदि के निर्गमन द्वारा प्राप्त करनी चाहिए ताकि पूँजी कम खर्चे पर मिल सके।

२. यदि व्यापार डाँवांडोल प्रकृति का है तो इसकी पूँजी का अधिकतर भाग साधारण शेअरो द्वारा प्राप्त करना चाहिए।

३. विशेष अधिकार वाले शेअर तो सिर्फ उन्ही कम्पनियों को जारी करना चाहिए जिनकी आय स्थाई और निश्चित हो अर्थात् उनको जो सट्टा का व्यापार न करती हो।

४. सब कम्पनियाँ डिबेञ्चर प्रचलित नहीं कर सकती क्योंकि इनको सुरक्षित करने के लिये जमानत के रूप में कुछ मूल्यवान सम्पत्ति और स्थायी आय की आवश्यकता होती है।

५. डिबेचरो और जनता की धरोहरों के व्याज की दरें न्याययुक्त होनी चाहिएँ और इनके वापिस चुकाने की शर्तें भी ठीक होनी चाहिएँ

सूचना-पत्र (Prospectus) —कम्पनी का सम्थापन होने के उपरांत दूसरा कार्य पूँजी एकत्रित करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सूचना-पत्र तैयार किया जाता है। यह सूचना-पत्र जन-साधारण को कम्पनी के हिस्से और डिबेचरो को खरीदने के लिए आमंत्रित करता है। यह कम्पनी की विशेषताएँ और भविष्य की हालत के बारे में जनता को ज्ञान कराता है। इसमें कुछ ब्यौरा देना अनिवार्य है और इसके सब लेख सत्य होने चाहिए। यदि किसी व्यक्ति ने इसके असत्य लेख के विश्वास पर कोई शेअर खरीद लिया हो तो उसे अपने रुपये को वापिस लौटाने के लिए कम्पनी और उन व्यक्तियों के विरुद्ध, जो उस सूचना-पत्र को प्रचलित करने के लिए उत्तरदायी हैं, कानूनी कार्यवाही करने का अधिकार होगा।

व्यापार का आरम्भ :—जैसा पहले बतलाया जा चुका है, प्राइवेट कम्पनी सम्थापन के बाद फौरन व्यापार शुरू कर सकती है; परन्तु पब्लिक कम्पनी ऐसा नहीं कर सकती। आवश्यक पूँजी प्राप्त होने के बाद, पब्लिक कम्पनी को रजिस्ट्रार के पास कार्य आरम्भ करने का प्रमाण-पत्र देने के लिए प्रार्थना-पत्र भेजना पड़ता है। यदि रजिस्ट्रार को यह विश्वास हो जाता है कि सब कानूनी आवश्यकताओं की पूर्ति हो गई है तो वह कम्पनी को कार्यारम्भ करने का प्रमाण पत्र दे देता है। इस प्रमाण-पत्र को पाने के पश्चात् ही कम्पनी अपना कार्य प्रारम्भ कर सकती है।

कम्पनी आॅफिस, मोहर और नाम :—हर कम्पनी का एक रजिस्टर्ड कार्यालय होना चाहिए जिसको सब पत्र, सूचनाएँ आदि भेजी जा सकें और इसकी स्थिति तथा उसमें परिवर्तन की सूचना रजिस्ट्रार को दे देनी चाहिए।

प्रत्येक कम्पनी को एक साधारण मोहर (Common seal) रखनी चाहिए। इस पर कम्पनी का रजिस्टर्ड नाम साफ-साफ उभरा हुआ होना चाहिए। यह मोहर सब आवश्यक और महत्त्वपूर्ण पत्रों व दस्तावेजों पर लगाई जाती है। कम्पनी का नाम भी 'लिमिटेड' शब्द के साथ उसके व्यापार स्थान के बाहर प्रदर्शित कर देना चाहिए।

कम्पनी की सभाएँ (Company Meetings).—कम्पनी ऐक्ट के अनुसार जिन कम्पनियों की स्थापना की जाती है उनको अपने सदस्यों की कुछ सभायें करनी पड़ती हैं, जिन्हें साधारण सभायें (meetings) कहते हैं। ये साधारण सभायें तीन प्रकार की होती हैं :—

१. वैधानिक सभायें (Statutory Meetings) :—शेअरों और गारन्टी द्वारा परिमित प्रत्येक कम्पनी को यह कार्यारम्भ की तिथि से एक महीने बाद से छः महीने तक की अवधि के दौरान में (एक महीने से पहले नहीं और छः महीने के बाद नहीं) अपने सदस्यों की एक सभा करनी पड़ती है जिसे वैधानिक सभा कहते हैं।

इस सभा का उद्देश्य यह होता है कि कम्पनी के सदस्यों को कम्पनी के सम्बन्ध में कुछ जानने का अवसर प्राप्त हो। संचालकों को चाहिए कि इस सभा की सूचना हरएक सदस्य को २१ दिन पहले दे दें और उसकी रिपोर्ट जिसे वैधानिक रिपोर्ट (Statutory Report) कहते हैं रजिस्ट्रार के पास भेज दें।

२. वार्षिक साधारण सभा (Annual General Meeting) .—हरएक कम्पनी को हर वर्ष और अधिक से अधिक गत साधारण अधिवेशन से पन्द्रह महीने बाद एक साधारण सभा करनी पड़ती है। इस सभा को ही वार्षिक साधारण सभा कहते है। इस सभा या अधिवेशन का मुख्य कार्य हिसाब-खातो को स्वीकृत करना, संचालको के लाभ-वितरण सम्बन्धी प्रस्तावो की पुष्टि करना, संचालको का चुनाव करना और हिसाब-परीक्षको की नियुक्ति करना होता है।

३. विशेष साधारण सभा (Extraordinary General Meeting) :—वह साधारण सभा, जो किसी विशेष कार्य को करने के लिए की जाती है, असाधारण सामान्य सभा कहलाती है।

कम्पनी का प्रबन्ध (Management of a Company)

संचालक (Directors) .—कम्पनी का अपना कोई वास्तविक व्यक्तित्व न होने के कारण वह स्वयं अपना कार्य संचालन नहीं कर सकती। इसलिए उसका कार्य अन्य व्यक्तियो द्वारा ही हो सकता है। वैसे तो कम्पनी को संचालित करने का सर्वाधिकार हिस्सेदारों को होता है परन्तु हिस्सेदारो की संख्या सैकड़ो और हजारो मे होती है, इसलिए वे सब कम्पनी के प्रबन्ध मे भाग नहीं ले सकते। इसलिए कम्पनी का प्रबन्ध वैधानिक रूप से संचालको के हाथ मे सौप दिया जाता है और उनका प्रतिफल कम्पनी की नियमावली म निश्चित कर दिया जाता है।

प्रबन्धक एजेण्ट (Managing Agents) :—यह प्रथा हमारे ही देश मे पाई जाती है जिसके कारण किसी व्यक्ति विशेष के स्थान पर कोई फर्म या कम्पनी व्यवस्थापक का कार्य करने के लिए नियुक्त की जाती है। जो फर्म या कम्पनी प्रबन्ध करने के लिए नियुक्त की जाती है, उसे प्रबन्धक एजेण्ट कहते हैं। यह प्रबन्धक एजेण्ट सचालको द्वारा नियुक्त नहीं किये जाते; परन्तु उनकी नियुक्ति एक इकरारनामे द्वारा कम्पनी करती है।

हमारे यहाँ अधिकतर कम्पनियों का प्रबन्ध इस तरह संचालको और प्रबन्धक एजेण्टों द्वारा होता है। वैसे तो एजेण्ट संचालको की अधीनता मे होते हैं परन्तु व्यवहार मे उनके इतने अधिक अधिकार होत है कि संचालक उनके हाथो की कठपुतली बने रहते हैं। इन एजेण्टो का प्रतिफल नेट लाभ के कुछ प्रतिशत के रूप मे (कुछ कम से कम रकम सहित) होता है।

कम्पनी बहीखाता (Company Accountancy)

निजी व्यापार के लिए हिसाब खाता रखना वैधानिक रूप से आवश्यक नहीं है और यदि कोई हिसाब रखा भी जावे तो वह किसी भी हिसाब पद्धति के अनुसार रखा जा सकता है। भारतीय फर्में तो अधिकतर महाजनी बहीखाते के अनुसार ही हिसाब रखती हैं।

परन्तु परिमित दायित्व वाली कम्पनियो की स्थिति बिल्कुल ही भिन्न है। धारा एक-सौ-तीस के अनुसार सब कम्पनियो के लिए उचित हिसाब-किताब रखना परमावश्यक है और वह भी व्यापारिक हिसाब पद्धति (Mercantile System) के अनुसार। इसलिए कम्पनियों में अंग्रेजी हिसाब पद्धति को अधिक अपनाया जाता है।

परिमित दायित्व वाली कम्पनियों के खातों को तीन मुख्य भागों में विभाजित किया जा सकता है :—(१) साधारण व्यापारिक लेन-देन (२) कम्पनी संस्थापन और पूँजी सम्बन्धी लेन-देन और (३) कम्पनी के अन्तिम खाते और लाभ वितरण खाते। साधारण व्यापार के लेन-देन तो साझेदारी की तरह से ही लिखे जाते हैं। पूँजीगत लेन-देनों के लिखने का ढंग इस अध्याय में और लाभ-वितरण खाता दूसरे अध्याय में बतलाया जावेगा।

कम्पनी की पूँजी भिन्न-भिन्न प्रकार से प्राप्त की जाती है। यहाँ सब पर विचार किया जायेगा।

शेअर पूँजी

शेअर पूँजी की श्रेणियाँ (Classes of share Capital) .—शेअर पूँजी वह धन है जो शेयर लेने वाले कम्पनी के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए देते है। यह निम्नलिखित श्रेणियों मे विभाजित की जाती है :—

१. निर्दिष्ट, रजिस्टर्ड या अधिकृत पूँजी (Nominal, Registered or Authorised Capital) :—यह वह रकम है जिसका उद्देश्य-पत्र में उल्लेख होता है और जिसको जारी करने का कम्पनी को अधिकार है। रजिस्ट्रेशन कराने के लिए इस रजिस्टर्ड पूँजी पर मूल्य के अनुसार फीस देनी पड़ती है। यह पूँजी हिस्सों मे (जैसे १०) या ५०) या १०० (आदि) विभाजित कर दी जाती है।

२. निर्गमित या प्रार्थित पूँजी (Issued or Subscribed Capital) —यह वह पूँजी है जो कम्पनी द्वारा शेयर होल्डरो को वास्तव मे बाँटी गई है अर्थात् जिसे कम्पनी ने जारी किया है और जिसको हिस्सेदारों ने खरीदने की स्वीकृति दे दी है

यदि कम्पनी के जारी किये हुए सबके सब शेयर हिस्सेदारों के पास रहें तब तो निर्गमित (issued) और प्रार्थित (subscribed) पूँजी मे कोई अन्तर नही होता है। परन्तु जब जारी किये हुए हिस्सों में से कुछ हिस्से जब्त (forfeit) कर लिये जाते हैं तो इन दोनों शब्दों मे कुछ कम्पनियाँ अन्तर करती हैं। इस स्थिति में तमाम बाँटे हुए हिस्सो को जारी (issued) पूँजी और जब्त हिस्सो को कम करने के बाद जो हिस्से हिस्सेदारों के पास हैं उन्हें प्रार्थित (subscribed) पूँजी कहते हैं।

३. अनिर्गमित पूँजी (Unissued Capital) :—निर्दिष्ट पूँजी का वह भाग जो जारी नहीं किया जाता अनिर्गमित पूँजी (Unissued Capital) कहलाता है। यह पूँजी आवश्यकतानुसार बाद में जारी की जा सकती है।

४. माँगी हुई या याचित पूँजी (Called-up Capital) :—यह बिकी हुई पूँजी का वह भाग है जो माँग लिया गया है। कम्पनी को तमाम हिस्सों की रकम की एक साथ आवश्यकता नहीं होती इसलिए यह उतनी पूँजी माँगती है जितनी की इसे आवश्यकता होती है।

५. न माँगी हुई या अयाचित पूँजी (Uncalled Capital) :—बिकी हुई पूँजी में जो पूँजी अभी तक हिस्सेदारों से माँगी नही गई है उसे बेमाँगी हुई पूँजी (Uncalled Capital) कहते हैं। यह हिस्सेदारों का संदिग्ध ऋण (Contingent liability) है।

६. प्राप्त पूँजी (Paid-up Capital) —माँगी हुई पूँजी का वह भाग जो कम्पनी के हिस्सेदारों से प्राप्त हो जाता है, प्राप्त पूँजी कहलाता है। प्राप्त पूँजी माँगी हुई पूँजी से कम होगी। यदि कोई हिस्सेदार सब माँगे हुए रुपये देने में असमर्थ रहा तो इन माँगी हुई और प्राप्त पूँजी के अन्तर को माँग का शेष (Calls in Arrears) कहते हैं।

७. रिजर्व पूँजी (Reserve Capital) :—यदि कम्पनी यह निश्चित करे कि इसकी न माँगी हुई पूँजी का कुछ हिस्सा कम्पनी के कारोबार को बन्द करने के समय के अतिरिक्त कभी नहीं माँगा जायेगा तो इस हिस्से को रिजर्व पूँजी कहते हैं।

८. ऋण पूँजी (Loan Capital) :—यह शब्द कम्पनी के डिबेंचर और दूसरे ऋणों के लिए काम में लिया जाता है। ऋण वास्तव में पूँजी नहीं है क्योंकि ये तो लेनदारों को दी जाने वाली रकमें हैं।

उदाहरण १५८

एक लिमिटेड कम्पनी १,००,००० रु० की अधिकृत पूँजी से, जो कि १०० रु० वाले १,००० अंशों में [illegible] रजिस्टर हुई। [illegible] ८०० अंश निर्गमित किये [illegible] (call) [illegible] [illegible] पूँजी के विभिन्न [illegible] की राशि मालूम करो।

विभिन्न पूँजियों की रकमें निम्नलिखित होंगी :—

	रु०
अधिकृत व रजिस्टर्ड पूँजी	१,००,०००
निर्गमित पूँजी	८०,०००
अनिर्गमित पूँजी	२०,०००
माँगी हुई (याचित) पूँजी	४८,०००
अयाचित पूँजी	३२,०००
दत्त पूँजी	४७,०००
माँगों पर शेष	१,०००

शेअरो की श्रेणियाँ (Classes of Shares) —शेअर कम्पनी की पूँजी की उन इकाइयो मे से एक इकाई है जिनमे कम्पनी की सारी पूँजी विभाजित की जाती है। हरएक शेअर का भिन्न-भिन्न नम्बर होता है जिससे उनमें पहचान की जा सके। शेअरो की मुख्य श्रेणियाँ तीन है.—विशेष अधिकार वाले शेअर, साधारण शेअर और विलम्बित शेअर, परन्तु ये भी भिन्न-भिन्न तरह के हो सकते हैं, जैसे कि निम्नलिखित :—

१. विशेष अधिकार वाले या पूर्वाधिकार शेअर (Preference Shares) —इन शेअरों के हिस्सेदारो को अन्य हिस्सेदारों की अपेक्षा कुछ विशेष अधिकार दिये जाते हैं। इनको एक विशेष अधिकार तो यह है कि उन्हे लाभांश (dividend) दूसरे हिस्सेदारों से पहिले दिया जाता है और दूसरा विशेष अधिकार यह है कि उन्हे कभी-कभी पूँजी भी कम्पनी के बन्द होने पर दूसरे हिस्सेदारो से पहले दी जाती है।

२. संचयी पूर्वाधिकार शेयर (Cumulative Preference Shares) —ये वे शेअर हैं जिन पर लाभांश किसी एक निश्चित दर से दिया जाता है और यदि चालू वर्ष मे काफी लाभ नहीं हो तो वह आगामी वर्षो के लाभ मे से दिया जाता है। यह एकत्रित हुआ लाभाँश देने के बाद ही अन्य हिस्सेदारो का लाभांश दिया जा सकता है, अन्यथा नहीं। दूसरे शब्दों मे संचयी पूर्वाधिकार शेयरो पर लाभांश भुगतान होने तक एकत्र या संचय होता जाता है। जब तक अन्यथा उल्लेख न हो, पूर्वाधिकार शेयर संचयी ही माना जायगा।

३. असंचयी पूर्वाधिकार शेयर (Non-Cumulative Preference Shares) :—ये वे शेअर हैं जिन पर वार्षिक लाभांश किसी एक निश्चित दर के अनुसार दिया जाता है। परन्तु जब किसी वर्ष संचालक किसी कारण से लाभांश वितरण करने मे असमर्थ हों तो इनका लाभांश एकत्रित नहीं होता और न अगले वर्ष के लाभ मे से ही दिया जा सकता है।

४. भागीदार पूर्वाधिकार शेयर (Participating Preference Shares) .—ये वे शेअर हैं जिन पर एक निश्चित दर के अनुसार लाभांश दिया जाता है, परन्तु इसके अतिरिक्त अन्य साधारण शेअरों पर लाभांश दे देने के पश्चात् जो लाभ बच जाता है उसमे भी अन्य हिस्सो के साथ इन्हें एक निश्चित अनुपात में लाभ बटाने का अधिकार होता है।

५. शोधन योग्य पूर्वाधिकार शेयर (Redeemable Preference Shares) .—ये वे शेअर हैं जिनका भुगतान कम्पनी अपनी इच्छा के अनुसार कर सकती है। ऐसे शेअर या तो लाभांश के लिए सुलभ लाभों में से, या नये शेअरों की बिक्री से प्राप्त धन से या कम्पनी की सम्पत्ति की बिक्री द्वारा प्राप्त रकम में से चुकाये जा सकते हैं। केवल पूर्ण दत्त शेअर (fully paid-up shares) ही चुकाये जा सकते हैं।

अन्य शेयरों के स्वामियो को, यदि वह लगाई हुई रकम वापस पाना चाहते हैं, साधारण ढंग से बाजार मे अपने शेयर बेच देना चाहिये। किन्तु शोधन योग्य पूर्वाधिकार शेयर का स्वामी अपनी प्रारम्भिक पूँजी की वापसी के लिये एक भावी निश्चित तिथि तक रुक सकता है।

६. साधारण शेअर (Ordinary Shares) :—ये वे शेअर हैं जिनके हिस्सेदारों को लाभांश तब ही मिलता है जब विशेष अधिकार वाले शेअरों (Preference Shares) को लाभांश दे दिया जाता है। इन हिस्सों पर लाभाँश की कोई निश्चित दर नहीं होती परन्तु इन्हे कभी-कभी बहुत अधिक दर से लाभांश मिल जाता है और इस तरह यह घाटे मे नही रहते।

७. शेषांशी शेयर (Equity Shares) :—यह शब्द भी साधारण शेअरों के लिए काम मे आता है। यह शब्द उन शेअरो के लिए काम मे आता है जिनको लाभ या सम्पत्ति का भाग अन्य हिस्सों को चुकाने के बाद लेने का अधिकार होता है।

८. विलम्बित या संस्थापक के शेअर (Deferred or Founders Shares) :—ये वे शेअर हैं जिनको विशेष अधिकार वाले शेअरो पर एक निश्चित दर से लाभांश देने के बाद बचा हुआ समस्त लाभ पाने का अधिकार होता है। इस प्रकार के अधिकार प्रायः साधारण शेयरों के स्वामियो को ही होते हैं। यही कारण है कि इस शब्द का प्रयोग साधारण शेयरों के लिये होता है। इन्हे कभी-कभी संस्थापक के शेअर (Founder's Shares) भी कहते है। ये अधिकतर कम्पनी के संस्थापक द्वारा खरीद लिये जाते हैं।

नोट :—शेअर पूँजी विभिन्न श्रेणियों द्वारा इस प्रकार सूचित की जाती है :—विशेष अधिकार वाली शेअर पूँजी, साधारण शेअर पूँजी या शेषांशी पूँजी या विलम्बित शेअर पूँजी।

व्यवहार में विशेष अधिकार वाले शेअरों का ऊपर लिखा मूल्य बहुत अधिक होता है, साधारण शेअरों का उनसे कम और विलम्बित शेअरों का बिलकुल ही कम, जैसे उदाहरणार्थ, इनका मूल्य क्रमशः १००), १०) और १) हो सकता है।

निर्गमन की शर्तें (Terms of Issue) :—भिन्न-भिन्न प्रकार के शेअरों को जारी करने की शर्तें कम्पनी के सूचना-पत्र (Prospectus) में घोषित कर दी जाती हैं। कम्पनी के शेअरों का भुगतान एक-साथ नहीं किया जाता, परन्तु धीरे-धीरे किया जाता है। शेअर के मूल्य का कुछ निश्चित हिस्सा आवेदन-पत्र के साथ भेजना पड़ता है, कुछ हिस्सा शेअरों का वितरण (allotment) होने पर और शेष हिस्सा जब कभी संचालकों द्वारा माँगा जाये तब ही भेजना पड़ता है।

इसके अतिरिक्त शेअर अंकित मूल्य में, या बट्टे पर या प्रीमियम पर जारी किये जा सकते हैं। यदि १००) का शेअर १००) मे बेचा जाता है तो यह अंकित मूल्य में बिका हुआ, या १००) से कम में तो बट्टे पर, या १००) से अधिक में बेचा जाय तो इसे प्रीमियम पर बिका हुआ कहते हैं।

शेअर आवेदन-पत्र (Application for Shares) :—जो व्यक्ति कम्पनी के शेअर खरीदना चाहता है उसे इस छपे हुए आवेदन-पत्र को भर कर शेअर की मूल्य कीमत के उस भाग के साथ, जो आवेदन पत्र के साथ माँगा गया है, कम्पनी में या उसके बैंक में जमा कर देना चाहिए। उसको इस जमा किए हुए रुपये के लिये रसीद दे दी जावेगी।

जब ये सब आवेदन-पत्र कम्पनी के कार्यालय में पहुँच जाते हैं तो इन पर यथाक्रम से नम्बर लगा दिये जाते हैं और इनको एक रजिस्टर में जिसे 'प्रार्थना-पत्र एवं वितरण पुस्तक' (Application and Allotment Book) कहते हैं, लिख लिया जाता है। यदि आवेदन-पत्र बैंक द्वारा प्राप्त हुए हैं तो बैंक-पास-बुक का मिलान प्राप्त हुए रुपयों से प्रतिदिन कर लिया जाता है।

शेअरों का बँटवारा (Allotment of Shares) :—जब कम्पनी न्यूनतम पूँजी के लिए आवश्यक आवेदन-पत्र प्राप्त कर लेती है और संचालक ने कम्पनी के बनाए हुए सब कानूनी शर्तें पूरी हो जाती हैं तो संचालक शेअरों का बँटवारा कर सकते हैं। शेअरों के बँटवारे होने का अर्थ है कि उन व्यक्तियों के आवेदन पत्र स्वीकार कर लिए गए हैं, जिन्होंने आवश्यक रुपया आवेदन-पत्र के साथ भेज दिया है। जब

शेअरो का बँटवारा हो जाता है तब एक बँटवारे का पत्र (allotment letter) हर एक हिस्सेदार के पास भेजा जाता है जिसमे उसको दिये गये शेयरो का नम्बर लिखा रहता है और उससे कुछ रुपया और भेजने के लिए लिखा जाता है। जिन व्यक्तियो को हिस्से नहीं दिये जा सके उनको एक खेद-पत्र (Letter of Regret) भेज दिया जाता है।

बँटवारे का पत्र प्राप्त होने पर हिस्सेदार अपने हिस्से का वितरण पर माँगा गया धन (allotment money) कम्पनी को भेज देते है। इस रुपये के लिये कम्पनी उन्हे एक रसीद भेज देती है।

आवेदन-पत्र के साथ और बँटवारे पर प्राप्त हुये धन व बाँटे हुए हिस्सों का व्यौरा "प्रार्थना-पत्र एवं वितरण पुस्तक" (Application and Allotment Book) में लिखा जाता है।

शेअरों पर माँग करना (Calls on Shares).—जब हिस्सों का बँटवारा हो जाता है और बँटवारे का रुपया प्राप्त हो जाता है तब हर एक हिस्से पर बाकी बचे हुए रुपये की माँग की जाती है। सचालक या तो बाकी बचा हुआ सब रुपया माँगते हैं या सिर्फ उसका कुछ भाग। यदि इसको कई भागों मे बाँट दिया जाता है तो पहली किस्त को प्रथम माँग (First call), दूसरी किस्त को द्वितीय माँग (Second call) और अन्त वाली माँग को अन्तिम माँग (Final call) कहते हैं।

जब कोई माँग की जाती है तब हर हिस्सेदार को एक निर्दिष्ट तिथि से पहले चुकाने के लिये एक माँग-पत्र (call-letter) भेजा जाता है और जब हिस्सेदार रुपया दे देते है तब उन्हे कम्पनी एक रसीद देती है। इन माँगो का लेखा माँग पुस्तक (Call-Book) में करते है।

नगदी के अतिरिक्त प्रतिफल के लिये वितरित शेयर (Shares allotted for a consideration other than cash) :—रोकड़ी रुपये में हिस्से बेचने के स्थान पर, कभी-कभी कम्पनी खरीदी हुई सम्पत्ति या प्राप्त हुई सेवाओ के बदले में भी हिस्से दे देती है। ये हिस्से पूर्ण दत्त (finally paid) या अंश दत्त (partly-paid) हो सकते हैं। अंश दत्त शेअरो का बाकी बचा हुआ हिस्सा रोकड़ी रुपये मे लिया जाता है। इस तरह के शेअरो को बैलेंस-शीट मे अलग से दिखाना चाहिए।

शेअर प्रमाण-पत्र (Share Certificates) :—शेअरों के बँटवारे के बाद कम्पनी बँटवारे के पत्रों या अन्य रसीदों की एवज में हिस्सेदारो को शेअर प्रमाण-पत्र देती है। इस प्रमाण-पत्र मे हिस्सेदार का नाम, पता, व्यवसाय, शेअरो का नम्बर, रकम आदि लिखे रहते हैं। यदि यह शेयर प्रमाण-पत्र शेअरो पर पूर्ण रकम चुकाने से पहले ही दे दिये जाते हैं तो उस समय तक चुकाई गई रकम उस पर लिख दी जाती है और तत्पश्चात् जब कोई माँग चुकाई जाये तो उसकी रकम भी इस प्रमाण पत्र पर लिख दी जाती है।

शेअरों का हस्तांतरण (Transfer of Shares) :—यदि कोई हिस्सेदार कम्पनी का सदस्य नहीं रहना चाहता, तो वह कम्पनी से रुपया तो वापिस नही माँग सकता, परन्तु किसी दूसरे व्यक्ति को, जो कम्पनी का सदस्य होना चाहता है, अपने शेअर बेच सकता है। कम्पनी के शेअर चल सम्पत्ति के रूप में होते हैं, इसलिए यह कम्पनी की नियमावली के अनुसार हस्तान्तरित किये जा सकते हैं। शेअरों की बिक्री, क्रय और विक्रय करने वालो द्वारा आपस में किये गये हस्तान्तरित संविदा (Transfer Deed) द्वारा की जाती है। यह हस्तांतर संविदा और शेअर प्रमाण-पत्र रजिस्ट्रेशन के लिए कम्पनी के कार्यालय में जमा करा दिये जाते हैं।

इन सब संविदों को अच्छी तरह से जाँचा जाता है और यदि वे ठीक हैं तो संचालकों द्वारा स्वीकार कर लिये जाते हैं। क्रय करने वाले के नाम से एक नया शेअर प्रमाण-पत्र बना दिया जाता है और विक्रेता का पुराना शेअर प्रमाण-पत्र काट दिया जाता है। इस हस्तान्तर का व्यौरा एक हस्तांतरण रजिस्टर (Transfer Register) में लिखा जाता है। शेअरों के हस्तान्तर पर कम्पनी कुछ फीस लेती है जिसे हस्तांतरण की फीस (Transfer Fee) कहते हैं।

सदस्यों का रजिस्टर (Register of Members) :—कम्पनी एक्ट की ३१ वीं धारा के अनुसार प्रत्येक कम्पनी को सदस्यों का एक रजिस्टर रखना पड़ता है। इस रजिस्टर में सदस्यों के नाम, पते, व्यवसाय, शेअरों का नम्बर, उन पर चुकाई हुई रकम आदि का ब्योरा होता है। इस रजिस्टर मे सदस्य बनने एवं बन्द होने की तिथियाँ भी लिखी जानी चाहिए। यदि सदस्यों की संख्या पचास से अधिक हो तो रजिस्टर में ढूँढने की सुविधा के लिये सूची (Index) भी होनी चाहिए।

सदस्यों के रजिस्टर में जिसे शेअर खाता बही कहते है, हरएक सदस्य का शेअर खाता होता है और यह प्रार्थना पत्र एवं वितरण पुस्तक, माँग पुस्तक हस्तांतरण के रजिस्टर की सहायता से तैयार किया जाता है। सदस्यों का रजिस्टर निम्नलिखित रूप में रखा जा सकता है —

सदस्यों का रजिस्टर तथा शेयर खाताबही (साधारण अंश)

नाम : व्यवसाय : पता : सदस्य बनने की तिथि :

सदस्य न रहने की तिथि :

नकद खाता									अंश खाता												शेष	
									प्राप्त किये गये अंश						हस्तांतरित अंश							
तिथि	विवरण	पृ० सं०	प्रति अंश याचित राशि	कुल याचित राशि	तिथि	विवरण	पृ० सं०	कुल याचित राशि	तिथि	पृ० सं०	अंशों की संख्या	विशिष्ट सख्या से	विशिष्ट सख्या तक	प्रदत्त राशि	तिथि	पृ० सं०	अंशों की संख्या	विशिष्ट सख्या से	विशिष्ट सख्या तक	प्रदत्त राशि	अंशों की संख्या	प्रदत्त राशि

बहीखाता प्रविष्टियाँ :—शेअर पूँजी के लेन-देन हिसाब की पुस्तक में लिखने से पहले प्रार्थना-पत्र और वितरण पुस्तक, माँग पुस्तक, हस्तांतरण रजिस्टर और सदस्यों के रजिस्टर में लिखे जाते हैं। यदि हिस्सेदार बहुत कम हैं तो सिर्फ सदस्यों का रजिस्टर ही रखा जाता है और उसी में यह सब ब्योरा लिख लिया जाता है।

हिसाब की पुस्तकों में शेयरों के निर्गमन के सम्बन्ध में जो प्रविष्टियाँ होगीं उन पर विचार करते समय यह याद रखना लाभदायक होगा कि शेयर माल की भाँति बिक्री के हेतु प्रस्तुत किये जाते हैं। जबकि बिके माल का रुपया उधार की अवधि समाप्त होने पर मिलेगा, शेयरों का भुगतान किश्तों में

शेअरो का बँटवारा हो जाता है तब एक बँटवारे का पत्र (allotment letter) हर एक हिस्सेदार के पास भेजा जाता है जिसमे उसको दिये गये शेयरो का नम्बर लिखा रहता है और उससे कुछ रुपया और भेजने के लिए लिखा जाता है। जिन व्यक्तियो को हिस्से नहीं दिये जा सके उनको एक खेद-पत्र (Letter of Regret) भेज दिया जाता है।

बँटवारे का पत्र प्राप्त होने पर हिस्सेदार अपने हिस्से का वितरण पर माँगा गया धन (allotment money) कम्पनी को भेज देते है। इस रुपये के लिये कम्पनी उन्हे एक रसीद भेज देती है।

आवेदन-पत्र के साथ और बँटवारे पर प्राप्त हुये धन व बाँटे हुए हिस्सों का व्यौरा "प्रार्थना-पत्र एवं वितरण पुस्तक" (Application and Allotment Book) में लिखा जाता है।

शेअरों पर माँग करना (Calls on Shares) —जब हिस्सों का बँटवारा हो जाता है और बँटवारे का रुपया प्राप्त हो जाता है तब हर एक हिस्से पर बाकी बचे हुए रुपये की माँग की जाती है। संचालक या तो बाकी बचा हुआ सब रुपया माँगते हैं या सिर्फ उसका कुछ भाग। यदि इसको कई भागों मे बाँट दिया जाता है तो पहली किस्त को प्रथम माँग (First call), दूसरी किस्त को द्वितीय माँग (Second call) और अन्त वाली माँग को अन्तिम माँग (Final call) कहते हैं।

जब कोई माँग की जाती है तब हर हिस्सेदार को एक निर्दिष्ट तिथि से पहले चुकाने के लिये एक माँग-पत्र (call-letter) भेजा जाता है और जब हिस्सेदार रुपया दे देते हैं तब उन्हें कम्पनी एक रसीद देती है। इन माँगो का लेखा माँग पुस्तक (Call-Book) में करते है।

नगदी के अतिरिक्त प्रतिफल के लिये वितरित शेयर (Shares allotted for a consideration other than cash) :—रोकड़ी रुपये में हिस्से बेचने के स्थान पर, कभी-कभी कम्पनी खरीदी हुई सम्पत्ति या प्राप्त हुई सेवाओं के बदले मे भी हिस्से दे देती है। ये हिस्से पूर्ण दत्त (finally paid) या अंश दत्त (partly-paid) हो सकते हैं। अंश दत्त शेअरो का बाकी बचा हुआ हिस्सा रोकड़ी रुपये मे लिया जाता है। इस तरह के शेअरो को बैलेस-शीट में अलग से दिखाना चाहिए।

शेअर प्रमाण-पत्र (Share Certificates) :—शेअरों के बँटवारे के बाद कम्पनी बँटवारे के पत्रों या अन्य रसीदों की एवज में हिस्सेदारो को शेअर प्रमाण-पत्र देती है। इस प्रमाण-पत्र मे हिस्सेदार का नाम, पता, व्यवसाय, शेअरो का नम्बर, रकम आदि लिखे रहते है। यदि यह शेयर प्रमाण-पत्र शेअरो पर पूर्ण रकम चुकाने से पहले ही दे दिये जाते हैं तो उस समय तक चुकाई गई रकम उस पर लिख दी जाती है और तत्पश्चात् जब कोई माँग चुकाई जाये तो उसकी रकम भी इस प्रमाण पत्र पर लिख दी जाती है।

शेअरो का हस्तांतरण (Transfer of Shares) :—यदि कोई हिस्सेदार कम्पनी का सदस्य नहीं रहना चाहता, तो वह कम्पनी से रुपया तो वापिस नही माँग सकता, परन्तु किसी दूसरे व्यक्ति को, जो कम्पनी का सदस्य होना चाहता है, अपने शेअर बेच सकता है। कम्पनी के शेअर चल सम्पत्ति के रूप में होते हैं, इसलिए यह कम्पनी की नियमावली के अनुसार हस्तान्तरित किये जा सकते हैं। शेअरों की बिक्री, क्रय और विक्रय करने वालों द्वारा आपस में किये गये हस्तान्तरित संविदा (Transfer Deed) द्वारा की जाती है। यह हस्तांतर संविदा और शेअर प्रमाण-पत्र रजिस्ट्रेशन के लिए कम्पनी के कार्यालय में जमा करा दिये जाते हैं।

इन सब संविदों को अच्छी तरह से जाँचा जाता है और यदि वे ठीक हैं तो संचालकों द्वारा स्वीकार कर लिये जाते हैं। क्रय करने वाले के नाम से एक नया शेअर प्रमाण-पत्र बना दिया जाता है और विक्रेता का पुराना शेअर प्रमाण-पत्र काट दिया जाता है। इस हस्तान्तर का व्यौरा एक हस्तांतरण रजिस्टर (Transfer Register) में लिखा जाता है। शेअरों के हस्तान्तर पर कम्पनी कुछ फीस लेती है जिसे हस्तांतरण की फीस (Transfer Fee) कहते हैं।

सदस्यों का रजिस्टर (Register of Members) :—कम्पनी एक्ट की ३१ वीं धारा के अनुसार प्रत्येक कम्पनी को सदस्यों का एक रजिस्टर रखना पड़ता है। इस रजिस्टर में सदस्यों के नाम, पते, व्यवसाय, शेयरों का नम्बर, उन पर चुकाई हुई रकम आदि का ब्यौरा होता है। इस रजिस्टर में सदस्य बनने और न रहने की तिथियाँ भी लिखी जानी चाहिए। यदि सदस्यों की संख्या पचास से अधिक हो तो रजिस्टर में हवाले की सुविधा के लिये सूची (Index) भी होनी चाहिए।

सदस्यों के रजिस्टर को जिसे शेअर खाता बही कहते हैं, हरएक सदस्य का शेअर खाता होता है और यह प्रार्थना पत्र एवं वितरण पुस्तक, माँग पुस्तक हस्तांतरण के रजिस्टर की सहायता से तैयार किया जाता है। सदस्यों का रजिस्टर निम्नलिखित रूप में रखा जा सकता है :—

सदस्यों का रजिस्टर तथा शेयर खाताबही (साधारण अंश)

नाम : व्यवसाय : पता : सदस्य बनने की तिथि :
सदस्य न रहने की तिथि :

शेयर खाता									अंश खाता														शेष	
									प्राप्त किये गये अंश						हस्तांतरित अंश									
												विशिष्ट संख्या						विशिष्ट संख्या						
तिथि	विवरण	पृ० सं०	प्रति अंश याचित राशि	कुल याचित राशि	तिथि	विवरण	पृ० सं०	कुल याचित राशि	तिथि	पृ० सं०	अंशों की संख्या	से	तक	प्रदत्त राशि	तिथि	पृ० सं०	अंशों की संख्या	से	तक	प्रदत्त राशि			अंशों की संख्या	प्रदत्त राशि

बहीखाता प्रविष्टियाँ :—शेअर पूँजी के लेन-देन हिसाब की पुस्तक में लिखने से पहले प्रार्थना-पत्र और वितरण पुस्तक, माँग पुस्तक, हस्तांतरण रजिस्टर और सदस्यों के रजिस्टर में लिखे जाते हैं। यदि हिस्सेदार बहुत कम हैं तो सिर्फ सदस्यों का रजिस्टर ही रखा जाता है और उसी में यह सब ब्यौरा लिख लिया जाता है।

हिसाब की पुस्तकों में शेयरों के निर्गमन के सम्बन्ध में जो प्रविष्टियाँ होंगी उन पर विचार करते समय यह याद रखना लाभदायक होगा कि शेयर माल की भाँति बिक्री के हेतु प्रस्तुत किये जाते हैं। जबकि बिके माल का रुपया उधार की अवधि समाप्त होने पर मिलेगा, शेयरों का भुगतान किश्तों में

किया जा सकता है। क्योंकि शेयर होल्डरो की संख्या प्राय बहुत अधिक होती है, इसलिये प्रत्येक शेयर होल्डर का पृथक्-पृथक् खाता हिसाब की पुस्तको मे खोलना संभव नहीं है। अत शेयर होल्डरो के खाते केवल 'सम्पूर्ण की इकाई' रूप मे खोले जाते है अर्थात् सब शेयर होल्डरो को एक मान लिया जाता है। शेयर होल्डरो के पृथक्-पृथक् खाते सदस्यो के रजिस्टर मे रखे जाते है।

शेअरो के जारी करने पर निम्नलिखित लेखा किया जाता है —

(१) एक मुश्त भुगतान होने वाले शेयर (Shares Payable in full)

(अ) अंकित मूल्य पर निर्गमन (Issue at Par).—यदि शेअर अंकित मूल्य पर दिये गये हो और उनका रुपया सब एक साथ दिया जाने वाला हो तो जिन व्यक्तियो को यह शेअर दिये गये हैं वे कम्पनी के देनदार हो जाते है। इसलिए हर श्रेणी के हिस्सेदारो के लिए अलग-अलग खाते खोल दिये जाते है और हरएक तरह का शेअर-पूँजी खाता भी। जो व्यक्ति साधारण शेअर लेते है वे साधारण हिस्सेदार कहलाते है और इन शेयरो की पूँजी को साधारण शेअर-पूँजी कहते है। इन शेअरो की बिक्री का लेखा माल की बिक्री की तरह से ही किया जाता है।

उदाहरण १५३

एक लिमिटेड कम्पनी की अधिकृत पूँजी ५,००,००० थी जो १०० रु० वाले २,००० ६% पूर्वाधिकार अंशों तथा १० रु० वाले २०,००० साधारण अंशों में विभक्त थी। सारे पूर्वाधिकार अंश पूर्ण दत्त व २०,००० साधारण अंश जो कि पूर्ण आवेदित तथा दत्त हैं, सम मूल्य पर निर्गमित किये गये।

आवश्यक जर्नल तथा रोकड़ प्रविष्टियाँ कीजिये, खातों में खताइये तथा कम्पनी का चिट्ठा तैयार कीजिये।

जर्नल

		रु०	रु०
	साधारण अंशधारी साधारण अंश पूँजी खाता १० रु० वाले २०,००० साधारण अंश	२,००,०००	२,००,०००
	पूर्वाधिकार अंशधारी पूर्वाधिकार अंश पूँजी खाता १०० रु० वाले २,००० पूर्वाधिकार अंश	२,००,०००	२,००,०००

रोकड़ वही (प्राप्ति पक्ष)

		रु०
	साधारण अंशधारी	२,००,०००
	पूर्वाधिकार अंशधारी	२,००,०००

साधारण अंशधारी

	रु०		रु०
साधारण अंश पूँजी	२,००,०००	बैंक खाता	२,००,०००

साधारण अंश पूँजी खाता

			रु०
		साधारण अंशधारी	२,००,०००

पूर्वाधिकार अंशधारी

	रु०		रु०
पूर्वाधिकार अंश पूँजी खाता	२,००,०००	बैंक खाता	२,००,०००

पूर्वाधिकार अंश पूँजी खाता

			रु०
		पूर्वाधिकार अंशधारी	२,००,०००

चिट्ठा

		रु०		रु०
अधिकृत पूँजी :—			बैंक में रोकड़	४,००,०००
२,००० १०० रु० वाले ६% पूर्वाधिकार अंश		२,००,०००		
३०,००० १० रु० वाले साधारण अंश		३,००,०००		
		५,००,०००		
निर्गमित तथा प्रदत्त पूँजी :—				
२,००० पूर्णदत्त पूर्वाधिकार अंश	२,००,०००			
२०,००० पूर्णदत्त साधारण अंश	२,००,०००	४,००,०००		
		४,००,०००		४,००,०००

नोट :—कानून के अनुसार भिन्न-भिन्न शेअर-पूँजी. (जैसे रजिस्टर्ड पूँजी, निर्गमित पूँजी, माँगी हुई पूँजी और प्राप्त पूँजी) का ब्यौरा बैलेंस-शीट में अलग-अलग दिया जाता है। क्योंकि कम्पनी का दायित्व तो केवल दत्त शेयर पूँजी के सम्बन्ध में होता है, अतः अधिकृत, निर्गमित, याचित पूँजियों की रकमें केवल सूचना मात्र के लिये दी जाती हैं।

किसी अनुसूचित एक नई कम्पनी का जितना भी रोकड़ी रुपया शेयरों पर आता है, कानून के अनुसार उसे बैंक में रखना आवश्यक होता है, इसलिए शेअर-पूँजी पर प्राप्त हुए रुपये बैंक खाते के नाम लिखना चाहिए।

(ब) प्रीमियम पर निर्गमन (Issue at Premium) :—यदि कम्पनी के शेअरों की बहुत अधिक माँग है तो वे प्रीमियम पर दिये जा सकते हैं। ऐसी दशा में निर्गमित शेयरों के अंकित मूल्य से अधिक धन प्राप्त होगा। इस तरह जो अधिक धन (प्रीमियम) प्राप्त होता है वह शेअर-पूँजी का अंग नहीं कहा जा सकता। यह तो सिर्फ कम्पनी का लाभ है। इसलिए यह प्रीमियम एक नये खाते में, जिसे 'शेयर प्रीमियम खाता' (Premium on Shares Account) कहते हैं, जमा कर लिया जाता है। उसे पूँजी खाते में जमा नहीं किया जाता।

यह प्रीमियम बैलेंस-शीट में उस समय तक ऋण के रूप में दिखलाया जाता है जब तक यह काम में न ले लिया जाय।

उदाहरण [illegible]

एक लिमिटेड कम्पनी की अधिकृत पूँजी ५,००,००० रु० की जो १०० रु० वाले ५,००० अंशों में विभक्त है। इसे [illegible] प्रव्याजि पर निर्गमित किया गया। [illegible] पूर्णतः [illegible] है। [illegible] प्रविष्टियाँ कीजिये तथा कम्पनी का चिट्ठा बनाइये।

जर्नल

	रु०	रु०
[illegible] अंशधारी	५,२५,०००	
अंश पूँजी खाता		५,००,०००
[illegible] खाता		२५,०००
[illegible] प्रव्याजि पर १०० रु० वाले ५,००० अंशों पर निर्गमन		

रोकड़ बही

	रु०		
विविध अंशधारी	१,०५,०००		

चिट्ठा

	रु०		रु०
अधिकृत, निर्गमित और प्रदत्त पूँजी		बैंक में रोकड़	१,०५,०००
१,००० १०० रु० वाले पूर्ण दत्त अंश	१,००,०००		
अंश प्रव्याजि	५,०००		
	१,०५,०००		१,०५,०००

(स) कटौती पर निर्गमन (Issue at a Discount) :—नई कम्पनी अपने शेअरों को बट्टे पर नहीं बेच सकती। सिर्फ पुरानी कम्पनी ही निम्नलिखित आवश्यकताओं की पूर्ति होने पर ऐसा कर सकती है :—(क) वह कम्पनी कम से कम एक वर्ष से व्यापार कर रही हो। (ख) जो शेअर बट्टे पर दिये जाने वाले हैं वे उस श्रेणी के है जिन्हे पहले से जारी किया हुआ है (ग) कम्पनी के वर्त्तमान अंशधारी साधारण सभा मे हिस्सो को छूट पर जारी करने के लिये तैयार हो गये हों, (घ) न्यायालय से भी इस सम्बन्ध में स्वीकृति प्राप्त करली गई हो (ङ) न्यायालय की स्वीकृति प्राप्त करने की तिथि से छः मास के अन्दर ही हिस्से जारी कर दिये गये हो। इस तरह बट्टे पर शेअर बेचने के लिए बहुत प्रतिबन्ध हैं, इसलिए बहुत कम कम्पनियाँ ही ऐसा कर सकती है।

जब कम्पनी बट्टे पर शेअर देती है तो उसे शेअर की साधारण कीमत से कम रकम प्राप्त होती है, परन्तु यह हिस्सेदारो के प्रति पूर्ण रकम के लिए उत्तरदायी होती है। इसलिए बट्टा कम्पनी का नुकसान है और यह "अशो पर बट्टा" (Discount on Shares Account) के नाम लिखा जाता है। क्योंकि यह नुकसान पूँजीगत नुकसान है, इसलिए इसे बैलेंस-शीट में, जब तक उसे समाप्त न कर दिया जावे, दिखलाया जाता है।

उदाहरण १५५

एक विद्यमान लिमिटेड कम्पनी की अधिकृत पूँजी १०० रु० वाले अंशों में २,००,००० रु० थी, जो कि आधी पहले से दत्त व निर्गमित है। उसने शेष अश ५% बट्टे पर निर्गमित किये, सब पूर्ण याचित व दत्त हैं। जर्नल व रोकड़ बही में आवश्यक प्रविष्टियाँ कीजिये तथा चिट्ठा बनाइये।

जर्नल

		रु०	रु०
	विविध अशधारी	९५,०००	
	अंशों पर बट्टा खाता	५,०००	
	अंश पूँजी खाता		१,००,०००
	५% बट्टे पर १०० रु० वाले, १,००० अंशों का निर्गमन		

रोकड़ बही

	रु०		
विविध अंशधारी	९५,०००		

चिट्ठा

	रु०		रु०
अधिकृत पूँजी :—		विविध सम्पत्ति	१,००,०००
२,००० १०० रु० वाले अंश	२,००,०००	अंशों पर बट्टा	५,०००
निर्गमित तथा प्रदत्त पूँजी :—		बैंक में रोकड़	९५,०००
२,००० १०० रु० वाले पूर्णदत्त अंश	२,००,०००		
	२,००,०००		२,००,०००

(२) किस्तों में चुकने वाले शेयर (Shares Payable by Instalments)

प्रायः कम्पनियाँ अपने शेयर निश्चित समयान्तरों पर चुकाई जाने वाली किस्तों के बदले जारी करते हैं। ये किस्तें इस प्रकार हैं :—प्रार्थनापत्र, वितरण, प्रथम माँग, द्वितीय माँग और अन्तिम माँग की किस्तें। कुछ दशाओं में केवल तीन ही किस्तें रखी जा सकती हैं जैसे—प्रार्थना, वितरण और माँग। जब केवल एक ही माँग हो उसे प्रथम माँग की संज्ञा नहीं दी जायगी। प्रथम, द्वितीय और अन्तिम शब्दों का प्रयोग तो तभी किया जाता है जब एक से अधिक माँग हों।

जब शेयरों को किस्तों में चुकाने के लिये जारी किया जाता है तो प्रत्येक किस्त की रकम शेयर होल्डरों के खाते नाम की जा सकती है परन्तु ऐसा करने से विभिन्न किस्तों में भेद नहीं हो पावेगा। अतः प्रत्येक किस्त के लिए जब वह देय हो जावे, एक पृथक व्यक्तिगत खाता खोल लिया जाता है—जैसे प्रार्थना और वितरण खाता, प्रथम माँग खाता, द्वितीय माँग खाता और अन्तिम माँग खाता। यह ध्यान रहे कि ये सब अव्यक्तिगत जँचते हुये भी व्यक्तिगत खाते हैं क्योंकि उनको 'शेयरहोल्डर्स खाते' के स्थान में खोला गया है।

प्रार्थना-पत्र और वितरण के लिये पृथक-पृथक खाता खोलना आवश्यक नहीं है, क्योंकि दोनों की रकम कानूनन तब ही देय होती है जबकि वितरण (allotment) हो जाय इससे पहले नहीं। अतः हिसाब की किताबों में प्रविष्टियाँ वितरण के बाद ही करनी चाहियें।

प्रार्थियों से शेयरों का प्राप्त प्रार्थना धन इस बीच एक सांख्यकीय पुस्तक में, जिसे शेयर होल्डर्स रोकड़ बही कहते हैं, दर्ज किया जाता है। यह पुस्तक उसके हिसाबी रिकार्ड का भाग नहीं है।

जब किस्तों में चुकने वाले शेयर किस्तों में प्रीमियम पर निर्गमित किये जाते हैं तो प्रीमियम किसी विशेष किस्त के साथ मँगाया जा सकता है और उसे तदनुसार ही दर्ज किया जायगा।

यदि एक से अधिक श्रेणी के शेयर्स एक ही समय जारी किये जाते हैं तो शेयरों की प्रत्येक श्रेणी के लिये पृथक-पृथक किस्त खाते खोले जावेंगे।

जब कम्पनी द्वारा जारी किये गये शेयर्स किस्तों में चुकने वाले हैं तो हिसाब की किताबों में केवल उतने भाग का लेखा किया जावेगा जो वास्तव में मंगा लिया गया है और अधिकृत, निर्गमित, याचित तथा दत्त पूँजियों का ब्यौरा बैलेंस शीट में दिखाया जायगा।

उदाहरण १५६

१ जनवरी १९५१ को एक लिमिटेड कम्पनी २,००,००० रु० की १०० रु० वाले अंशों में विभक्त, अधिकृत पूँजी से रजिस्टर्ड हुई। जनता को उसने १,००० अंशों का निम्न प्रकार देय होने का प्रस्ताव रक्खा :—२० रु० प्रार्थना पर, ३० रु० वितरण पर, ५० रु० [illegible]

[illegible]

जर्नल

		रु०	रु०
१९५१			
फरवरी १	अंश आवेदन तथा आवंटन खाता	५०,०००	
	अंश पूँजी खाता		५०,०००
	आवेदन तथा आवंटन पर देय राशि		
मार्च १	अंश प्रथम याचना खाता	२५,०००	
	अंश पूँजी खाता		२५,०००
	प्रथम याचना पर देय राशि		
मई १	अंश अन्तिम याचना खाता	२५,०००	
	अंश पूँजी खाता		२५,०००
	अन्तिम याचना पर देय राशि		

रोकड़ बही (प्राप्ति पक्ष)

		रु०
१९५१		
फर० १	अंश आवेदन तथा आवंटन खाता	२०,०००
१५	,, ,, ,, ,, ,,	३०,०००
मार्च १५	अंश प्रथम याचना खाता	२५,०००
मई १५	अंश अंतिम याचना खाता	२५,०००

अंश आवेदन तथा आवंटन खाता

		रु०			रु०
१९५१			१९५१		
फर० १	अंश पूँजी खाता	५०,०००	फर० १	बैंक	२०,०००
			१५	,,	३०,०००
		५०,०००			५०,०००

अंश पूँजी खाता

					रु०
			१९५१		
			फर० १	अंश आवेदन तथा आवंटन खाता	५०,०००
			मार्च १	अंश प्रथम याचना खाता	२५,०००
			मई १	अंश अंतिम याचना खाता	२५,०००

अंश प्रथम याचना खाता

		रु०			रु०
१९५१			१९५१		
मार्च १	अंश पूँजी	२५,०००	मार्च १५	बैंक	२५,०००

अंश अन्तिम याचना खाता

		रु०			रु०
१९५१			१९५१		
मई १	पूँजी खाता	२५,०००	मई १५	बैंक	२५,०००

चिट्ठा

	रु०		रु०
अधिकृत पूँजी :— २,००० अंश प्रत्येक १०० रु० का	२,००,०००	बैंक में रोकड	१,००,०००
निर्गमित तथा प्रदत्त पूँजी :— १,००० अंश प्रत्येक १०० रु० का	१,००,०००		

माँग की बकाया (Calls in Arrear) :—अक्सर कुछ हिस्सेदार अपने शेअरों की किश्तों के रुपये देने में असमर्थ रहते हैं। इस तरह की परिस्थितियों में आवेदन तथा बँटवारे खाते में और माँग खातों में जितना रुपया प्राप्त नहीं हुआ है उतने के बराबर नाम का बैलेंस रहेगा। किस्तो के न प्राप्त हुए बलेंस को ही 'माँग की बकाया' कहते हैं। कम्पनी की नियमावली संचालकों को इस रकम पर एक निश्चित दर से ब्याज लगाने का अधिकार देती है।

इन माँग की बकाइयो के लिए अलग खाता खोलने की कोई आवश्यकता नहीं है। विभिन्न किस्त खातों के नाम की रकमें स्थित विवरण को ट्रांसफर कर दी जायेंगी और उसमें सपत्ति के रूप में न दिखला कर याचित पूँजी (Called up Capital) में से घटोत्तरी के रूप में दिखाया जाता है।

माँग की पेशगी (Calls in Advance) :—कभी-कभी हिस्सेदार जितना रुपया उनसे माँगा गया उससे अधिक रुपया अदा कर देते हैं। आवश्यक रुपये से अधिक प्राप्त हुए रुपये को 'माँग की पेशगी' कहते हैं। यह रुपया 'माँग की पेशगी खाता' ('Calls in Advance Account') में जमा कर दिया जाता है। इस रुपये पर कोई लाभांश (dividend) नहीं दिया जाता क्योंकि इसे कम्पनी की शेअर पूँजी का हिस्सा नहीं माना जाता।

यदि नियमावली में कोई ऐसा नियम हो तो इस रकम पर एक निश्चित दर के अनुसार ब्याज भी दिया जाता है। जब माँग वास्तव में की जाती है तो यह रकम एक ट्रांसफर एन्टरी द्वारा 'माँग की पेशगी खाते' के नाम लिखकर सम्बन्धित माँग खाते में जमा कर दी जाती है। माँग की पेशगी खाते का बैलेंस बैलेंस-शीट में अलग से ऋण के रूप में (न कि दत्त पूँजी में जोड़कर) दिखलाया जाता है।

उदाहरण १५७

एक लिमिटेड कम्पनी ने जिसकी अधिकृत पूँजी १०० रु० वाले २,००० अंशों में विभक्त २००,००० रु० थी, अपने १,००० शेअर्स निम्न प्रकार निर्गमित किये :—२५ रु० प्रति अंश आवेदन पर, २५ रु० आबंटन पर, २० रु० तीन मास पश्चात् तथा शेष आवश्यकता पड़ने पर।

आवेदन पर देय राशि प्राप्त हुई, परन्तु जब २० रु० प्रति अंश की याचना की गई, तो एक अंशधारी अपने १०० अंशों पर देय राशि देने में असमर्थ रहा तथा एक अन्य अंशधारी ने ५० अंशों पर देय राशि पूरा रुपया चुकता कर दी।

उपर्युक्त व्यवहारों का लेखा करने के लिये आवश्यक प्रविष्टियाँ कीजिये तथा खाते में खतौनी कीजिये। यह भी दिखाइये कि कम्पनी के चिट्ठे में पूँजी किस प्रकार प्रदर्शित होगी।

जर्नल

	रु०	रु०
बैंक खाता नाम [illegible] शेअर पूँजी खाते से आवेदन तथा आबंटन पर देय राशि	५०,०००	५०,०००
[illegible] [illegible] [illegible]	[illegible]	[illegible]

रोकड़ बही (प्राप्ति पक्ष)

		रु०
	अंश आवेदन तथा आवंटन खाता	२५,०००
	” ” ” ” ”	२५,०००
	अंश प्रथम याचना खाता	१८,०००
	अग्रिम याचना खाता (Calls in Advance Account)	१,५००

अंश आवेदन तथा आवंटन खाता

	रु०		रु०
अंश पूँजी खाता	५०,०००	बैंक	२५,०००
		बैंक	२५,०००
	५०,०००		५०,०००

अंश पूँजी खाता

			रु०
		अंश आवेदन तथा आवंटन खाता	५०,०००
		अंश प्रथम याचना खाता	२०,०००

अंश प्रथम याचना खाता

	रु०		रु०
अंश पूँजी खाता	२०,०००	बैंक	१८,०००
		शेष आ/ले	२,०००
	२०,०००		२०,०००

अग्रिम याचना खाता

			रु०
		बैंक	१,५००

चिट्ठा (दायित्व पक्ष)

	रु०	रु०
अधिकृत पूँजी :—		
२००० अंश, प्रत्येक १०० रु० का	२,००,०००	
निर्गमित तथा प्रदत्त पूँजी :—		
१,००० अंश १०० रु० का प्रत्येक ७० रु० प्रति अंश याचित	७०,०००	
घटाई बकाया याचित राशि	२,०००	६८,०००
अग्रिम याचना		१,५००

उदाहरण १५८

१ जनवरी १९५१ को एक लिमिटेड कम्पनी ५,००,००० रु० की अधिकृत पूंजी से, जो १०० रु० वाले २,००० ६% पूर्वाधिकार अंश तथा १० रु० वाले ३०,००० साधारण अंशों में विभक्त है, स्थापित हुई। उसने आधे पूर्वाधिकार तथा दो तिहाई साधारण अंश जनता में प्रस्तावित किये जो निम्न प्रकार देय हैं :—

निर्दिष्ट राशि का १०% आवेदन पर, २०% आवंटन पर, २०% प्रथम याचना पर, २०% द्वितीय याचना पर, तथा शेष आवश्यकता पड़ने पर।

८०० पूर्वाधिकार अंश व १०,००० साधारण अंशों के लिये आवेदन पत्र आये तथा १५ फरवरी १९५१ को आवंटित किये गये। प्रथम व द्वितीय याचना क्रमशः १ अप्रेल १९५१ व १ जून १९५१ को की गई। निम्नलिखित धन देय तिथियों से १० दिन के बाद प्राप्त हुआ :—

१६,००० रु० पूर्वाधिकार अंशों पर आवंटन राशि तथा १६,००० रु० साधारण अंशों पर आवंटन राशि।

१५,००० रु० पूर्वाधिकार अंशों पर प्रथम याचना की राशि, तथा १८,००० रु० साधारण अंशों पर प्रथम याचना की राशि।
१४,००० रु० पूर्वाधिकार अंशों पर द्वितीय याचना की राशि, तथा १६,००० रु० साधारण अंशों पर द्वितीय याचना की राशि।
उपर्युक्त व्यवहारों का लेखा जर्नल व रोकड़ बही में करो तथा कम्पनी के चिट्ठे में पूँजी दिखाओ।

जर्नल

१९५१		रु०	रु०
फ० १५	पूर्वाधिकार अंश आवेदन तथा आवंटन खाता पूर्वाधिकार अंश पूँजी खाता आवेदन तथा आवंटन पर देय राशि	२४,०००	२४,०००
	साधारण अंश आवेदन तथा आवंटन खाता साधारण अंश पूँजी खाता आवेदन तथा आवंटन पर देय राशि	३०,०००	३०,०००
अप्रैल १	पूर्वाधिकार अंश प्रथम याचना खाता पूर्वाधिकार अंश पूँजी खाता प्रथम याचना पर देय राशि	१६,०००	१६,०००
	साधारण अंश प्रथम याचना खाता साधारण अंश पूँजी खाता प्रथम याचना पर देय राशि	२०,०००	२०,०००
जून १	पूर्वाधिकार अंश द्वितीय याचना खाता पूर्वाधिकार अंश पूँजी खाता द्वितीय याचना पर देय राशि	१६,०००	१६,०००
	साधारण अंश द्वितीय याचना खाता साधारण अंश पूँजी खाता द्वितीय याचना पर देय राशि	२०,०००	२०,०००

रोकड़ बही (प्राप्ति पक्ष)

१९५१		रु०
फ० १५	पूर्वाधिकार अंश आवेदन तथा आवंटन खाता	८,०००
	साधारण अंश आवेदन तथा आवंटन खाता	१०,०००
२५	पूर्वाधिकार अंश " "	१६,०००
	साधारण अंश " "	१६,०००
अ० १	पूर्वाधिकार अंश प्रथम याचना खाता	१५,०००
	साधारण " "	१८,०००
जून १	पूर्वाधिकार अंश द्वितीय याचना खाता	१४,०००
	साधारण " "	१६,०००

चिट्ठा (दायित्व पक्ष)

	रु०	रु०
अधिकृत पूँजी :—		
२,००० [illegible] रु० पूर्वाधिकार अंश प्रत्येक १०० रु० का	२,००,०००	
१०,००० [illegible] साधारण अंश प्रत्येक १० रु० का	[illegible]	[illegible]
निर्गमित पूँजी :—		
८०० [illegible] रु० पूर्वाधिकार अंश प्रत्येक १०० रु० का	८०,०००	

१०,००० साधारण अंश प्रत्येक १० रु० का		१,००,०००	१,८०,०००
प्रदत्त पूँजी :--			
८०० ६% पूर्वाधिकार अंश ७० रु० प्रति अंश याचित	५६,०००		
घटाई बकाया याचित राशि	३,०००	५३,०००	
१०,००० साधारण अंश ७ रु० प्रति अंश याचित	७०,०००		
घटाई बकाया याचित राशि	७,०००	६३,०००	१,१६,०००

टिप्पणी :—बकाया याचित राशि विभिन्न किस्त खातों (call accounts) के नाम शेषों का योग है तथा यह राशि बिना खाते बन्द किये निम्न प्रकार निकाली जा सकती है :—

किस्तें	पूर्वाधिकार अंश			साधारण अंश		
	देय	प्राप्त	बकाया	देय	प्राप्त	बकाया
	रु०	रु०	रु०	रु०	रु०	रु०
आवेदन	८,०००	८,०००	—	१०,०००	१०,०००	—
आवटन	१६,०००	१६,०००	—	२०,०००	१९,०००	१,०००
प्रथम याचना	१६,०००	१५,०००	१,०००	२०,०००	१८,०००	२,०००
द्वितीय याचना	१६,०००	१४,०००	२,०००	२०,०००	१६,०००	४,०००
	५६,०००	५३,०००	३,०००	७०,०००	६३,०००	७,०००

(३) प्रार्थनाधिक्य (Over-subscription)

कभी-कभी (विशेषकर अच्छी कम्पनियो मे) जितने शेअर होते है उनसे अधिक के लिये आवेदन पत्र आ जाते हैं। इसे ही प्रार्थनाधिक्य (Over-subscription) कहते हैं। इस तरह की स्थिति मे, संचालक शेअरो का प्रार्थनाधिक्य अनुपात मे विभाजन कर सकते हैं, जैसे कुछ को थोड़े शेअर दे और बाकी को कुछ न दे। परन्तु तमाम शेअरों का योग जारी किये जाने वाले शेअरो से अधिक नहीं होना चाहिये।

जिन व्यक्तियो को शेअर नहीं दिये गये हैं उन्हे उनका पूरा-पूरा रुपया लौटा दिया जावेगा। परन्तु जिनको कुछ शेअर दिये गये है उनका बाकी रुपया वितरित किये हुये शेअरो पर माँगो की पूर्ति के लिए कम्पनी मे ही रख लिया जावेगा और लौटाया नहीं जाता।

उदाहरण १५६

एक लिमिटेड कम्पनी ने, जिसकी अधिकृत पूँजी १०० रु० वाले अंशों में १,००,००० रु० थी, १० रु० प्रति अंश प्रव्याजि पर ५०० अंश निर्गमित किये जिनके लिये १२ रु० ८ आ० प्रति अंश आवेदन पर, १२ रु० ८ आ० (प्रव्याजि सहित) आवंटन पर; २५ रु० आवंटन के तीन माह पश्चात् प्रथम याचन पर तथा शेष आवश्यकता पड़ने पर देय होंगे।

६०० अंशों के लिये आवेदन पत्र आये तथा १ अप्रेल १९५१ को संचालकों ने अंश निम्न प्रकार आवंटित किये :—४०० अंशों के प्रार्थियों को पूर्ण आवटन प्राप्त हुआ; १५० अंशों के प्रार्थियों को १०० अंशों का आवटन प्राप्त हुआ; तथा ५० अंशों के प्रार्थियों को कोई आवटन प्राप्त नहीं हुआ, उनकी आवेदन पत्र की राशि २ अप्रेल १९५१ को लौटाई गई। आवटन पर देय सारी राशि १५ अप्रेल १९५१ को प्राप्त हुई।

१५ जुलाई १९५१ तक प्रथम याचन की राशि केवल १० अंशों पर देय राशि के अतिरिक्त सब प्राप्त हो गई।

१ जून १९५१ को कम्पनी ने १०० रु० वाले २०० अंश सम-मूल्य पर (at par) आवंटित किये। ये मशीनरी का भुगतान करने के लिये पूर्णदत्त दिये गये हैं।

कम्पनी की पुस्तकों में उपर्युक्त व्यवहारों का लेखा करने के लिये जर्नल व रोकड़ बही की प्रविष्टियाँ दीजिये तथा उसके पश्चात् कम्पनी का चिट्ठा तैयार कीजिये।

जर्नल

१९५१		रु०	रु०
अप्रैल १	अंश आवेदन तथा आवंटन खाता	१२,५००	
	अंश पूँजी खाता		७,५००
	अंश प्रव्याजि खाता		५,०००
	आवेदन तथा आवंटन पर देय राशि		
जून १	कल खाता	२०,०००	
	अंश पूंजी खाता		२०,०००
	क्रय की गई कल के भुगतान में २०० अंश पूर्णदत्त आवंटित किये		
जुलाई १	अंश प्रथम याचना खाता	१२,५००	
	अंश पूंजी खाता		१२,५००
	प्रथम याचना पर देय राशि		

रोकड़ बही

१९५१		रु०	१९५१		रु०
अ० १	अंश आवेदन तथा आवंटन खाता	७,५००	अ० २	अंश आवेदन तथा आवंटन खाता	६२५
१५	,, ,, ,, ,, ,,	५,६२५	जु० १५	शेष आ.ले	२४,७५०
जु० १५	अंश प्रथम याचना खाता	१२,२५०			
		२५,३७५			२५,३७५

चिट्ठा

	रु०		रु०
अधिकृत पूँजी :—		कल	२०,०००
१,००० अंश प्रत्येक १०० रु० का	१,००,०००	बैंक में मौजूद	२४,७५०
निर्गमित व प्रदत्त पूँजी :—			
२०० अंश पूर्ण दत्त कल क्रय करने पर आवंटित	२०,०००		
५०० अंश ४० रु० प्रति अंश याचित २०,०००			
घटाया बकाया याचना राशि २५०	१९,७५०		
	३९,७५०		
अंश प्रव्याजि	५,०००		
	४४,७५०		४४,७५०

टिप्पणी :— [illegible] के क्रय पर पूर्ण दत्त [illegible] निर्गमित किये जाते हैं, [illegible] [illegible] दिया है, [illegible] दिये जाते हैं।

[illegible] निर्गमित किये जाते हैं, [illegible] प्रकार दिखलाये जाते हैं।

(४) शेयरों का हरण (Forfeiture of Shares)

जब शेयरों की रकम किश्तों में मांगी जाती है तो कभी-कभी कुछ हिस्सेदार कुछ किश्तों का रुपया देने में असमर्थ रहते हैं। इस तरह की स्थिति में कम्पनी दो कार्य कर सकती है :—(क) वह [illegible] हिस्सेदारों पर [illegible] रुपये की प्राप्ति के लिये मुकदमा कर सकती या (ख) शेयरों का हरण (forfeit) कर सकती है। शेयर के हरण होने पर आवंटन (allotment) रद्द हो जाता है। प्रकार

कार्य ठीक नहीं समझा जाता है क्योंकि उसमें मुकदमेबाजी की परेशानी रहती है। अतः दूसरा उपाय ही अधिकतर काम में लिया जाता है।

शेअरो का हरण नियमावली में दिये हुए नियमों के अनुसार ही करना चाहिए अन्यथा वह अदालत द्वारा हिस्सेदार के आवेदन पर रद्द किया जा सकता है। जप्ती करने से पहले हिस्सेदार को सूचना देना चाहिए कि यदि वह एक निश्चित तिथि तक मॉग की बकाया रकम नही तो उसके शेअर जप्त कर लिए जावेंगे और उसका नाम सदस्यो के रजिस्टर से हटा दिया जायगा।

यदि इस सूचना पर भी रुपया प्राप्त न हो तो संचालक इन शेअरो को जप्त कर सकते है। शेअरो के हरण पर निम्नलिखित जमा-खर्च किया जाता है।

१. शेअर पूँजी खाते मे जो रकम इन शेअरो की पहले जमा की थी अब नाम लिख दी जाती है और 'हरण किये शेअर खाते' (Forfeited Shares Account) मे जमा कर दी जाती है।

२. 'हरण किये शेअर खाते' (Forfeited Shares Account) मे उन किस्तो की रकम जो प्राप्त नहीं हुई है नाम लिखी जाती है और आवेदन-पत्र व बॅटवारे खाते तथा मॉग खातो मे जमा की जाती है।

जब तक यह हरण किये हुए शेअर फिर से जारी न कर दिये जावें हरण हुये शेअर खाते का बैलेंस ऋण के रूप में बैलेंस-शीट मे दिखलाया जाता है।

उदाहरण १६०

ऐक्स लिमिटेड कम्पनी के २० रु० वाले १०० साधारण अंशों का स्वामी है। उसने २ रु० प्रति अंश आवेदन पर व ४ रु० प्रति अंश आवंटन पर दिये, परन्तु ७ रु० प्रति अंश की प्रथम व २ रु० प्रति अंश की द्वितीय याचना देने मे असमर्थ है।

७ अप्रेल १६५१ को संचालकों ने उसके अंश जब्त कर लिये। जब्त करने से सम्बन्धित आवश्यक जर्नल प्रविष्टियॉ कीजिये।

जर्नल

		रु०	रु०
१६५१			
अप्रेल ७	साधारण अंश पूँजी खाता	१५००	
	हरण किये अंश खाता		१,५००
	१०० अंश जो १५ रु० प्रति अंश याचित है हरण किये गये		
	हरण किये अंश खाता	६००	
	अंश प्रथम याचना खाता		७००
	अंश द्वितीय याचना खाता		२००
	अदत्त याचनाएँ अपलिखित की गई		

(५) हरण हुये शेयरों का पुनर्निगमन (*Reissue of Forfeited Shares*)

बहुधा संचालकों को हरण किए हुए शेअरो को दुबारा जारी करने का अधिकार होता है। वे इन्हें किसी नये खरीदार को किसी भी रकम में बेच सकते हैं। परन्तु यह रकम और पहले पुराने हिस्सेदार से प्राप्त हुई रकम शेअरों की साधारण कीमत से कम नही होनी चाहिए। दूसरे शब्दों में यह जप्त किये हुये शेअर वट्टे पर दिये जा सकते है, परन्तु वट्टे की रकम पुराने मूल हिस्सेदार से प्राप्त की हुई रकम से अधिक किसी भी अवस्था में नहीं होनी चाहिए।

जब ऐसे शेअर फिर बेचे जाते हैं तो रोकड़ खाते को नये हिस्सेदार से प्राप्त हुआ रुपया नाम लिखा जाता है और वट्टे की रकम 'हरण हुए शेअर खाते' (Forfeited Shares Account) के नाम लिखी जाती है और इन दोनों का योग शेअर पूँजी खाते मे जमा किया जाता है।

हरण हुए शेअर खाते का बैलेंस पूँजी लाभ होता है जो बैलेंस-शीट में अलग दिखलाया जाता है। यह बैलेंस साधारणतः पूँजी संचित (Capital Reserve) में ट्रान्सफर कर दिया जाता है। इस बैलेंस को हानि लाभ खाते में कभी नहीं रखना चाहिए क्योंकि यह व्यापार का साधारण लाभ नहीं है।

उदाहरण १६१

१ मई १९५१ को एक लिमिटेड कम्पनी के संचालकों ने २० रु० वाले ५०० अंश जब्त किये। १५ रु० प्रति अंश याचित हैं, जिस पर सी ने १० रु० प्रति अंश दिये हैं तथा प्रथम याचना की ५ रु० प्रति अंश की राशि अदत्त है। तीन दिन के पश्चात् संचालकों ने १० रु० प्रति अंश लेकर १५ रु० अंश क्रेडिट करते हुये, जब्त किये हुये अंश डी को पुनः निर्गमित किये।

ज़ब्त किये हुये व पुनः निर्गमित अंशों का लेखा करने के लिये कम्पनी की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये।

जर्नल

१९५१		रु०	रु०
मई १	अंश पूँजी खाता	७,५००	
	हरण किये अंश खाता		७,५००
	५०० अंश जिन पर १५ रु० प्रति अंश याचना की गई है, हरण किये		
	हरण किये अंश खाता	२,५००	
	अंश प्रथम याचना खाता		२,५००
	अदत्त याचना की राशि अपलिखित की गई		
४	बैंक खाता	५,०००	
	हरण किये अंश खाता	२,५००	
	अंश पूँजी खाता		७,५००
	हरण किये गये अंशों का बट्टे पर पुनर्निर्गमन		
	हरण किये अंश खाता	२,५००	
	पूँजी कोष खाता		२,५००
	शेष हस्तान्तरित किया		

उदाहरण १६२

एक लिमिटेड कम्पनी ने, जिसकी निर्दिष्ट पूँजी २,५०,००० रु० थी व जो १० रु० वाले अंशों में विभक्त थी, ४,००० अंश भवन क्रय करने के भुगतान में पूर्ण दत्त तथा ८,००० अंश जनता द्वारा व्याप्त (Subscribed) निर्गमित किये, और प्रथम वर्ष में प्रत्येक अंश पर ४ रु० याचित किये गये जो २ रु० आवेदन पर, [illegible] आवंटन पर १ रु० प्रथम याचना पर तथा १ रु० द्वितीय याचना पर देय थे। इन अंशों से वास्तविक धन निम्न प्रकार प्राप्त हुआ:—

६,००० अंशों पर कुल मांगी हुई रकम
१,२५० अंशों पर ४ रु० प्रति अंश
५०० अंशों पर ३ रु० प्रति अंश
२५० अंशों पर २ रु० प्रति अंश

[illegible]

[illegible]

[illegible] (Statement) [illegible]

किस्त	प्रति अंश देय राशि	८,००० अंशों पर कुल देय राशि	८,००० अंशों पर कुल प्राप्त राशि	बकाया
	रु०	रु०	रु०	रु०
आवेदन	२	१६,०००	१२,०००	
			२,५००	
			१,०००	
			५००	
		१६,०००	१६,०००	
आवंटन	१	८,०००	६,०००	
			१,२५०	
			५००	
		८,०००	७,७५०	२५०
प्रथम याचना	१	८,०००	६,०००	
			१,२५०	
		८,०००	७,२५०	७५०
द्वितीय याचना	१	८,०००	६,०००	२,०००

जर्नल

		रु०	रु०
	भवन खाता	४०,०००	
	अंश पूँजी खाता		४०,०००
	भवन के क्रय के भुगतान में ४,००० पूर्णदत्त अंशों का आवंटन		
	अंश आवेदन तथा आवंटन खाता	२४,०००	
	अंश पूँजी खाता		२४,०००
	आवेदन तथा आवंटन पर देय राशि		
	अंश प्रथम याचना खाता	८,०००	
	अंश पूँजी खाता		८,०००
	प्रथम याचना पर देय राशि		
	अंश द्वितीय याचना खाता	८,०००	
	अंश पूँजी खाता		८,०००
	द्वितीय याचना पर देय राशि		
	अंश पूँजी खाता	३,७५०	
	हरण किये अंश खाता		३,७५०
	७५० अंश, जो ५ रु० प्रति अंश याचित हैं हरण किये गये		
	हरण किये अंश खाता	१,७५०	
	अंश आवेदन तथा आवंटन खाता		२५०
	अंश प्रथम याचना खाता		७५०
	अंश द्वितीय याचना खाता		७५०
	हरण किये गये अंशों की अदत्त याचनायें अपलिखित की गईं		

रोकड़ बही (प्राप्ति पक्ष)

	रु०
अंश आवेदन तथा आवंटन खाता	१६,०००
,, ,, ,, ,, ,,	७,७५०
अंश प्रथम याचना खाता	७,२५०
अंश द्वितीय याचना खाता	६,०००

चिट्ठा (दायित्व पक्ष)

		रु०	रु०
अधिकृत पूँजी :—			
२५,००० अंश प्रत्येक १० रु० का		२,५०,०००	
निर्गमित पूँजी :—			
११,२५० अंश प्रत्येक १० रु० का		१,१२,५००	
प्रदत्त पूँजी :—			
४,००० अंश रोकड़ के अतिरिक्त अन्य प्रतिफल के लिए पूर्णदत्त आवंटित		४०,०००	
७,२५० अंश ५ रु० प्रति अंश याचित	३६,२५०		
घटाई बकाया याचित राशि	१,२५०	३५,०००	७५,०००
जब्त किये अंशों पर प्राप्त राशि			२,०००

(६) विद्यमान कम्पनी द्वारा निर्गमित नये शेयर (Further Shares issued by an Existing Company)

वर्तमान कम्पनी को अपने व्यापार की वृद्धि के लिए नई पूँजी की आवश्यकता होती है। यदि इसके पास अनिर्गमित (unissued) पूँजी नहीं है तो इसे अधिकृत पूँजी (nominal Capital) की वृद्धि करनी पड़ेगी। नये शेयर कम्पनी अपनी इच्छानुसार किसी भी शर्त पर दे सकती है।

जब कभी नये शेयर जारी किये जाते हैं तो वे पहले वर्तमान हिस्सेदारों को उनके मूल हिस्सों के अनुपात में दिये जाते हैं और यदि हिस्सेदार ये शेयर नहीं लें, तो जनता को दिये जाते हैं।

इनका हिसाब लेखा उसी ढंग से किया जाता है जैसा कि एक नई कम्पनी शेयरों के बेचने पर करती है।

परन्तु यदि कम्पनी ने यह शेयर व्यापार वर्ष के अन्त में जारी किये हों और उन पर रुपया तो प्राप्त हो गया हो परन्तु शेयरों का बँटवारा अभी न किया गया हो तो आवेदन-पत्रों के साथ प्राप्त हुआ रुपया कानूनन शेयर पूँजी खाते जमा नहीं किया जा सकता। उसे तो बैलेंस-शीट में एक दायित्व की भाँति "विभाजनाधीन नये शेयरों की प्रार्थना राशि" (Application Deposits on New shares pending Allotment) के नाम से दिखाया जाता है।

डिबेन्चर (Debentures)

डिबेन्चर कम्पनी द्वारा लिखित ऋणपत्र है। प्रत्येक व्यापारी और स्वामियों की भाँति कम्पनियाँ भी अपनी पूँजी का कुछ हिस्सा ऋणों द्वारा प्राप्त करती हैं। कम्पनियाँ एक निश्चित समय के लिए डिबेन्चरों के द्वारा ऋण लेती हैं जो कम्पनी को उधार देने वाले व्यक्तियों को एक निश्चित पूर्ण रकम के प्रमाण स्वरूप दिये जाते हैं।

डिबेन्चरों के प्रकार : डिबेन्चर कई प्रकार के हो सकते हैं। अरक्षित डिबेन्चर (Naked Debenture) वे हैं जिनके ब्याज और भुगतान के भुगतान के लिए कम्पनी कोई प्रतिभूति नहीं देती। इस तरह के डिबेन्चर साधारण ऋणपत्र के समान समझे जाते हैं। सुरक्षित डिबेन्चर (Mortgage Debenture) वे हैं जिनका [illegible] [illegible] [illegible]

पर क्रमश: प्रथम और दूसरा अधिकार होता है। मियादी डिबेन्चर (Redeemable Debentures) वे हैं जो एक निश्चित समय के बाद चुका दिये जाते है। न चुकाये जाने वाले या स्थाई डिबेन्चर (Irredeemable or Permanent Debentures) वे है जो कंपनी के जीवन पर्यन्त नहीं चुकाये जावेगे। धनी जोग डिबेन्चर (Bearer Debentures) वे है जो धारक (Bearer) को चुकाये जा सकते हैं और रजिस्टर्ड डिबेन्चर (Registered Debentures) वे हैं जिनका भुगतान उसी व्यक्ति को किया जाता है जिसका नाम इनमे लिखा है। धनी जोग डिबेन्चरो का व्याज कूपनो के द्वारा दिया जाता है।

व्यापारिक कंपनियो द्वारा जारी हुए डिबेन्चर प्राय: शोधन योग्य, जमानती और व्यक्ति विशेष को देय (Registered) होते है। पूर्वाधिकार शेयरों की भाँति डिबेन्चर भी अपनी निश्चित व्याज दर से पुकारे जाते हैं जैसे ५% प्रथम बंधक मुक्त ऋण-पत्र। यदि कम्पनी डिबेन्चरो की व्याज या मूल रकम देने मे असमर्थ रहे तो डिबेन्चर खरीदने वाले अपनी जमानत की सम्पत्ति को बेच सकते हैं। प्रतिभूत का होना ऋण-पत्र धारियो को कम्पनी के अन्य लेनदारों से भिन्नता प्रदान करता है। प्रथम व्यक्ति तो सुरक्षित लेनदार है, क्योंकि उनको एक निश्चित प्रतिभूति दी गई है जबकि अरक्षित लेनदार केवल उन्हीं सम्पत्तियों से भुगतान की आशा रखते हैं जो ऋण-पत्रधारियो को देने के बाद बचे। इसलिये वे कंपनी के सुरक्षित (Secured) लेनदार कहलाते हैं।

डिबेन्चर व्याज :—डिबेन्चरों पर एक वार्षिक या छिमाही निश्चित व्याज दिया जाता है। व्याज की यह रकम कंपनी के हानि-लाभ खाते के नाम लिखी जाती है चाहे लाभ हो या न हो। इस व्याज पर कपनी को अधिक से अधिक दरों के अनुसार आयकर (Income-tax) काट लेना चाहिए और यह रकम सरकार को दे देनी चाहिए। समय-समय पर जो व्याज डिबेन्चरों पर दिया जाता है वह कुल योग से व्याज-खाते के नाम लिख दिया जाता है।

बधको की रजिस्ट्री कराना (Registration of Mortgages) :—हरएक कम्पनी को जो बंधक-युक्त डिबेन्चर जारी करती है एक बंधको का रजिस्टर' (Register of Mortgages and Charges) रखना पड़ता है। जो सम्पत्ति रहन रखी गई हो उसका रजिस्ट्रेशन रजिस्ट्रार से इसकी सृष्टि के २१ दिन के अन्दर-अन्दर करा लेना चाहिए। इस आयोजन का उद्देश्य यह है कि जनता को यह विदित हो सके कि कम्पनी की कुछ सम्पत्तियाँ ऋण-पत्रधारियो के पक्ष मे रहन रखी हुई हैं।

ऋण-पत्रधारियों का रजिस्टर (Register of debenture-holders) :—जब कोई कम्पनी रजिस्टर्ड डिबेन्चर जारी करती है तो उसे एक ऋण-पत्रधारियों का रजिस्टर (Register of debenture-holders) रखना चाहिए। इस रजिस्टर मे ऋण-पत्रधारियों के नाम, पते, व्यवसाय व ऋण-पत्रों के नम्बर और रकम लिखी जाती है। इसमें हर ऋण-पत्रधारी वाहक का अलग-अलग खाता होता है।

अंशधारी और ऋण-पत्रधारी :—यद्यपि शेअर और डिबेन्चर दोनों ही कंपनी के लिए पूँजी प्राप्त करने के लिए जारी किये जाते हैं परन्तु इन दोनों में बहुत अन्तर है। इनके मुख्य-मुख्य अन्तर निम्नलिखित हैं :—

१. अंशधारी कंपनी का स्वामी है और ऋण-पत्रधारी कंपनी का लेनदार है।

२. अंशधारी को कंपनी का लाभांश (dividend) मिलता है जबकि ऋणपत्रधारी को व्याज दिया जाता है। व्याज हर दशा में दिया जावेगा चाहे लाभ हो या न हो परन्तु लाभांश लाभ से ही दिया जा सकता है।

३. अंशधारी को कंपनी के कार्यों पर कुछ अधिकार होता है परन्तु ऋण-पत्रधारियों को ऐसा कोई अधिकार तब तक नहीं होता जब तक उनको व्याज सुचारु रूप से मिलता रहे। यदि व्याज या मूलधन मिलने में त्रुटि हो तो वह कम्पनी की कुछ सम्पत्तियों पर दावा कर सकता है।

४ अंशधारी का पूँजी की घटोत्तरी पर या कंपनी के अन्त होने की स्थिति के सिवा पूँजी वापिस लेने का अधिकार नहीं है परन्तु ऋण-पत्रधारी अन्तिम तिथि को अपनी रकम ले सकते हैं।

निर्गमन की शर्तें (Terms of Issue)—डिबेन्चरों को शेअरों की तरह अंकित मूल्य पर या प्रीमियम पर अथवा छूट पर जारी किया जा सकता है। शेअरों को छूट पर जारी करने पर बहुत से प्रतिबन्ध हैं परन्तु डिबेन्चर बिना किसी प्रतिबन्ध के जारी किये जा सकते हैं।

डिबेन्चर का रुपया एक साथ लिया जा सकता है या किस्तों में। यदि डिबेन्चरों का भुगतान किस्तों द्वारा होता है तो इनका लेखा भी शेअरों की तरह से किया जाता है। डिबेन्चरों के लेखे के लिए डिबेन्चर आवेदन और बँटवारा पुस्तक, डिबेन्चर माँग पुस्तक, डिबेन्चर खरीदारों का रजिस्टर रखे जाते हैं।

डिबेन्चरों के लिये बहीखाता—डिबेन्चरों का लेखा भी शेअरों की भाँति किया जाता है, सिर्फ इस अन्तर के साथ कि हिस्सेदारों के खाते के स्थान पर डिबेन्चर खरीदने वालों के खाते, शेअर पूँजी खाते के स्थान पर डिबेन्चर खाता, शेअर आवेदन-पत्र और बँटवारे खाते के स्थान पर डिबेन्चर आवेदन-पत्र और बँटवारे-खाते और शेअर माँग खाते के स्थान पर डिबेन्चर माँग खाता खोला जाता है।

यदि किसी कम्पनी ने एक से अधिक श्रेणी के डिबेन्चर जारी किये हों तो हर एक श्रेणी के लिए अलग अलग खाते रखे जाते हैं।

उदाहरण १६३

१ फरवरी १९५१ को एक लिमिटेड कम्पनी ने, १,००० रु० वाले १०० ५% [illegible] पर निर्गमन किया, जो ५०० रु० प्रति [illegible] आवेदन पर, १८० रु० आवंटन पर, १५० रु० १ [illegible] १९५१ को तथा शेष एक माह बाद देय थे। माँग धन देय तिथियों से १४ दिन के अन्दर प्राप्त हुआ।

उपरोक्त [illegible] का लेखा करने के लिये जर्नल व कैश बुक बनाइये तथा [illegible] कम्पनी [illegible] में किस प्रकार दिखाये जायेंगे।

जर्नल

१९५१		रु०	रु०
फरवरी १	[illegible]	६८,०००	
	[illegible]	६,०००	
	[illegible]		७०,०००
	[illegible]		
जून १	[illegible]	१५,०००	
	[illegible]		१५,०००
जुलाई १	[illegible]	१५,०००	
	[illegible]		१५,०००

[illegible]

१९५१		रु०
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
		[illegible]

चिट्ठा

	रु०		रु०
५% बंधक	१,००,०००	ऋण-पत्र बट्टा	२,०००
		बैंक में रोकड़	९८,०००
	१,००,०००		१,००,०००

उदाहरण १६४

एक लिमिटेड कम्पनी ने १,००० रु० वाले ९८% पर २,००,००० रु० के ५% प्रथम बंधक ऋण-पत्र जो पूर्णतया प्रार्थित हैं निर्गमित किये।

सूची खोली तथा बन्द कर दी गई (lists opened and closed) व ३१ जुलाई १९५० को आवंटन हुआ, अंशदान १०% आवेदन पर, ४०% आवंटन पर, २५% १ सितम्बर को तथा २३% ३१ दिसम्बर १९५० को देय होगा।

निर्गमन की शर्तों के अनुसार १ सितम्बर १९५० को पूर्ण भुगतान हो सकता था व किसी भी पूर्वदत्त खातों पर १३% वार्षिक की दर से ब्याज होगा। यह ब्याज अंशदान करने के भुगतान में से न काटकर कम्पनी द्वारा ३१ दिसम्बर १९५० को देय होगा। ऋण-पत्रों के आवंटन करवाने वालों में से आधों ने प्रथम भुगतान की शर्तों से लाभ उठाया तथा दूसरों ने देय तिथि पर भुगतान किया।

कम्पनी की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये।

जर्नल

१९५०		रु०	रु०
जुलाई ३१	रोकड़ खाता	२०,०००	
	ऋण-पत्र आवेदन तथा आवंटन खाता		२०,०००
	प्रार्थना-पत्रों के साथ १०% राशि की प्राप्ति		
	ऋण-पत्र आवेदन तथा आवंटन खाता	१,००,०००	
	ऋण-पत्र खाता		१,००,०००
	आवेदन पर (१०%) तथा आवंटन पर (४०%) देय राशि		
	ऋण-पत्र बट्टा खाता	४,०००	
	ऋण-पत्र खाता		४,०००
	२,००,००० रु० के ऋण-पत्रों पर २% बट्टा		
	रोकड़ खाता	८०,०००	
	ऋण-पत्र आवेदन तथा आवंटन खाता		८०,०००
	आवंटन पर प्राप्त राशि		
सि० १	ऋण-पत्र प्रथम याचना खाता	५०,०००	
	ऋण-पत्र खाता		५०,०००
	प्रथम याचना पर २५% देय राशि		
	रोकड़	७३,०००	
	ऋण-पत्र प्रथम याचना खाता		५०,०००
	ऋण-पत्र अन्तिम याचना खाता		२३,०००
	प्रथम याचना पर प्राप्त राशि तथा अन्तिम याचना पर अग्रिम प्राप्त राशि		
दि० ३१	ऋण-पत्र अन्तिम याचना खाता	४६,०००	
	ऋण-पत्र खाता		४६,०००
	२३% की किस्त इस दिन देय हुई		

रोकड़ ऋण पत्र अन्तिम याचना खाता अन्तिम याचना पर प्राप्त राशि	२३,०००	२३,०००
ब्याज खाता रोकड़ खाता २३,००० रु० पर १३½% वार्षिक दर से ४ माह का ब्याज	११५	११५

प्रतिभूति के रूप में जमा किये गए ऋण-पत्र (Debentures Deposited as Security) — कम्पनी ऋण के अतिरिक्त जमानत (Collateral Security) के लिए अपने खुद के डिबेन्चर भी जारी कर सकती है। अतिरिक्त जमानत (Collateral Security) वह जमानत है जिसे (यदि ऋण ठीक समय पर न चुकाया जाय या ऋणदाता और ऋणी के बीच हुए समझौते के विरुद्ध कोई बात हो) ऋणदाता बेच कर अपना धन वसूल कर सकता है। ऋण के चुका देने पर यह जमानत तुरन्त खतम हो जाती है। अतः यदि एक कम्पनी अतिरिक्त जमानत के रूप में डिबेन्चर जारी करती है और वह ऋण उचित समय पर चुका दिया जाय तो साधारणतया ये डिबेन्चर वापिस ले लिए जाते हैं।

इस सम्बन्ध में यह बात ध्यान देने योग्य है कि कम्पनी का दायित्व ऋण की रकम के लिए होता है और नकि डिबेन्चरों के साधारण मूल्य के लिए। यह डिबेन्चर रोकड़ी रुपये के लिए जारी नहीं किये जाते हैं परन्तु ऋण की जमानत के रूप में दिये जाते हैं और इसलिए वे सिर्फ संदिग्ध ऋण के रूप होते हैं। यदि कम्पनी ऋण चुकाने में गड़बड़ी करती है तो ऋण-दाता उस समय ऋण-पत्र धारी हो जाता है और वह डिबेन्चर द्वारा दिये हुए सब अधिकार काम में ला सकता है।

जब इस तरह डिबेन्चर जारी किये जाते हैं तो इनका कोई लेखा बहियों में नहीं किया जाता है। परन्तु इनके सम्बन्ध में एक नोट ऋण खाते के शीर्षक के नीचे लिख देना चाहिए और बैलेंस-शीट में इन डिबेन्चरों के सम्बन्ध में पूर्ण सूचना दे देनी चाहिए।

जब ऋण चुका दिया जाता है तो डिबेन्चर वापिस ले लिये जाते हैं और ये बाद में भी इसी उद्देश्य के लिए दुबारा जारी किये जा सकते हैं।

उदाहरण १६४

१ जनवरी १९५० को एक लिमिटेड कम्पनी ने ६,००,००० रु० [illegible] निकाले। ५,००,००० रु० के [illegible] निर्गमित किये तथा ३,००,००० रु० [illegible] (collateral security) के लिये [illegible] दिसम्बर का [illegible]।

[illegible] १९५० [illegible] कीजिये। ३१ दिसम्बर १९५० [illegible]?

[illegible]

		रु०	रु०
१९५० जन० १	[illegible]	५,००,०००	५,००,०००
	[illegible]	३,००,०००	३,००,०००

[illegible]

जून ३०	ऋण-पत्र व्याज खाता वैंक खाता ऋण-पत्रों पर आधे साल का व्याज दिया	७,५००	७,५००
दिस ३१	ऋण-पत्र व्याज खाता वैंक खाता ऋण-पत्रों पर आधे साल का व्याज	७,५००	७,५००
	व्याज खाता वैंक खाता वैंक ऋण पर एक साल के व्याज का भुगतान	१२,०००	१२,०००

चिट्ठा ३१ दिसम्बर १९५० को

दायित्व	रु०	रु०
५% बन्धक ऋण-पत्र	६,००,०००	
घटाया वैंक ऋण पर समपार्श्विक प्रतिभूति में जमा किये गये	३,००,०००	३,००,०००
वैंक ऋण (३,००,००० रु० के ५% बन्धक ऋण-पत्रों की जमानत पर सुरक्षित)		२,००,०००

चिट्ठे में प्रविष्टियाँ निम्न प्रकार भी दिखाई जा सकती है—

चिट्ठा ३१ दिसम्बर १९५०

	रु०	रु०
५% बंधक ऋण-पत्र		३,००,०००
वैंक ऋण (३,००,००० रु० के ५% बन्धक ऋण-पत्रों की जमानत पर सुरक्षित)		२,००,०००

डिवेन्चरों का भुगतान

डिवेन्चर उधार लिये हुए धन के लिये कम्पनी के दायित्व होते हैं। स्थाई डिवेन्चरों (Irredeemable Debentures) का भुगतान तो जब तक कम्पनी का कार्य चलता रहता है नहीं किया जाता है, परन्तु मियादी डिवेन्चरों का भुगतान उनकी शर्तों के अनुसार अवश्य करना पड़ता है।

भुगतान का समय —डिवेन्चरों के भुगतान का समय समझौते की शर्तों पर निर्भर रहता है, डिवेन्चरों का भुगतान साधारणतया निम्नलिखित प्रकार से किया जाता है :—

(क) नियत अवधि पर वापस लेकर—अर्थात् एक निश्चित अवधि के बाद (उदाहरणार्थ प्रत्येक साल के अन्त में) कुछ डिवेन्चरों को उनके खरीदने वालों से वापस लिया जा सकता है और उनका भुगतान किया जा सकता है।

(ख) किसी निश्चित तिथि पर—अर्थात् किसी तिथि पर जो कि शर्तों के अनुसार निश्चित की गई है भुगतान किया जा सकता है।

(ग) कम्पनी की इच्छानुसार : अर्थात् किसी भी समय जब कम्पनी चाहे डिवेन्चरों खरीदने वालों को सूचना देकर भुगतान कर सकती है।

(घ) खुले बाजार में खरीद कर —अर्थात् कम्पनी अपने डिवेन्चरों को स्टॉक विनिमय बाजारों में चालू बाजार भाव से खरीद सकती है।

भुगतान की शर्तें.—जिस तरह डिवेन्चर अंकित मूल्य पर, प्रीमियम या छूट पर प्रचलित किये जा सकते हैं, उसी भाँति उनका भुगतान अंकित मूल्य, प्रीमियम या छूट पर किया जा सकता है। इस सम्बन्ध की आवश्यक बहीखाता प्रविष्टियाँ निम्न प्रकार हैं।

१. अंकित मूल्य पर निर्गमित और अंकित मूल्य पर शोधन योग्य ऋण-पत्र (Debentures issued at par and repayable at par) :—डिवेन्चरों को जारी करते समय रोकड़-खाता नाम लिखकर डिवेन्चर खाते जमा करते हैं और भुगतान पर उनके विपरीत प्रविष्टियाँ की जाती हैं।

२. अंकित मूल्य पर निर्गमित एवं प्रीमियम पर शोधन योग्य ऋण-पत्र (Debentures issued at par but repayable at a premium) :—डिबेन्चरों को जारी करते समय रोकड़-खाता नाम लिखकर डिबेन्चर खाते में इनका अंकित मूल्य जमा कर दिया जाता है और भुगतान पर दिये जाने वाले प्रीमियम की उस समय प्रविष्टि (entry) करना अनावश्यक है।

इस तरह डिबेन्चर बहियों और बैलेंस-शीट में अंकित मूल्य पर ही दिखलाये जाते हैं। परन्तु इनमें यह अवश्य लिख देना चाहिए कि इन डिबेन्चरों के भुगतान पर प्रीमियम दिया जावेगा।

क्योंकि भुगतान पर दिया जाने वाला प्रीमियम एक निश्चित नुकसान है इसलिए इसके लिये हर वर्ष हानि-लाभ खाते से एक निश्चित रकम प्रीमियम रिज़र्व-खाते में जमा करके पूर्ति का आयोजन कर लेना चाहिये। नहीं तो प्रीमियम की कुल रकम भुगतान के वर्ष के हानि-लाभ खाते से एक साथ ही काटनी पड़ेगी।

डिबेन्चरों के भुगतान पर दी जाने वाली रकम से डिबेन्चर खाता नाम किया जाता है। साथ ही यदि प्रीमियम पर भुगतान किया गया है तो "शोधन पर प्रीमियम खाता" (Premium on Redemption Account) नाम लिखा जाता है और कुल अदा की हुई रकम बैंक-खाते में जमा की जाती है। उसके बाद "शोधन पर प्रीमियम खाता" प्रीमियम रिज़र्व-खाते में नाम की तरफ ट्रांसफर कर दिया जाता है और इस तरह से ये दोनों खाते बन्द हो जाते हैं।

उदाहरण १६६

१ जनवरी १९४१ को, एक लिमिटेड कम्पनी ने सम मूल्य पर १,००,००० रु० के ६% बंधक ऋण-पत्र निर्गमित किये जो ५% प्रव्याजि पर १० वर्ष के बाद प्रतिदेय (Repayable) हैं। यह मानते हुये कि विमोचन (Redemption) पर देय प्रव्याजि का, ऋणपत्रों के काल तक प्रबन्ध कर लिया गया था, ऋणपत्रों के विमोचन व निर्गमन का लेखा करने के लिये आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये।

निर्गमन के समय खाते

६% बन्धक ऋण-पत्र

(१ जनवरी १९५१ को ५% प्रव्याजि पर प्रतिदेय)

		१९४१ जन. १ रोकड़	रु० १,००,०००

रोकड़ खाता

१९४१ जन. १ ६% बंधक ऋण-पत्र	रु० १,००,०००		

विमोचन के समय खाते

६% बन्धक ऋण पत्र

(१ जनवरी १९५१ को ५% प्रव्याजि पर प्रतिदेय)

१९५१ जन. १ बैंक	रु० १,००,०००	१९४१ [illegible]	रु० १,००,०००

[illegible]

१९५१ [illegible]	रु० ५,०००	१९५१ [illegible]	रु० ५,०००

विमोचन प्रव्याजि खाता

१९५१		रु०	१९५१		रु०
जन. १	रोकड़	५,०००	जन १	प्रव्याजि सचिति खाता	५,०००

टिप्पणी :—यह मान लिया गया है कि प्रव्याजि सचिति खाता दस वर्षों में लाभ-हानि खाते से प्रति वर्ष ५०० रु० काट कर बनाया गया है ।

३ अंकित मूल्य पर निर्गमित और कटौती पर भुगतान होने वाले डिबेन्चर (Debentures issued at par and repayable at discount) :—इस तरह की शर्त बहुत कम मिलती है। डिबेन्चरो के जारी होने पर रोकड़-खाते नाम लिखकर डिबेन्चर खाते मे जमा किया जाता है और इस समय भुगतान पर प्राप्त होने वाली छूट के सम्बन्ध मे कोई एण्ट्री नहीं की जाती है। इस तरह ये डिबेन्चर बहियो और बैलेस-शीट मे अंकित मूल्य पर ही दिखलाये जाते हैं।

भुगतान पर, डिबेन्चर खाते मे डिबेन्चरों का साधारण मूल्य नाम लिखा जाता है और वास्तव मे चुकाई हुई रकम बैंक-खाते मे जमा कर दी जाती है। साथ ही छूट की रकम भी "भुगतान पर कटौती खाते" (Discount on Redemption Account) मे जमा कर दी जाती है। भुगतान पर जो छूट प्राप्त होती है वह पूँजी लाभ है इसलिए इसे पूँजी रिजर्व मे ट्रांसफर किया जा सकता है।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि भुगतान पर दी जाने वाली प्रीमियम पूँजी की हानि है और भुगतान पर प्राप्त हुई कटौती पूँजी लाभ है। परन्तु दूसरी तरफ डिबेन्चरो को जारी करते समय जो प्रीमियम प्राप्त होता है वह पूँजी लाभ है और जो कटौती इस समय दी जाती है वह पूँजी हानि है।

जब डिबेन्चरो का भुगतान कर दिया जाय तो कम्पनी की सम्पत्ति उस रकम से कम हो जाती है, इसलिए डिबेन्चरो का भुगतान पूँजी द्वारा हुआ कहते है। परन्तु डिबेन्चरो के भुगतान करने का दूसरा साधन भी है और वह है लाभ से भुगतान करना। यह पद्धति २४ वे अध्याय में समझाई जावेगी।

रूपान्तर द्वारा भुगतान (Redemption by Conversion) .—डिबेन्चर का भुगतान अधिकतर रोकड़ी रुपये मे किया जाता है। परन्तु कभी-कभी डिबेन्चर खरीदने वालो को अपने डिबेन्चर शेअरो मे या नये डिबेन्चरो में परिवर्त्तन करने का अधिकार दिया जाता है। इस तरह के भुगतान को ही "रूपान्तर द्वारा भुगतान" कहते हैं। जिन डिबेन्चरो को रूपान्तर का अधिकार होता है उनको बदलने योग्य डिबेन्चर (Convertible debentures) भी कहते हैं।

शोधित डिबेन्चर जो चुकाये नहीं गये हैं (Debenture redeemed but not paid off)—जब कम्पनी यह सूचना दे देती है कि यह एक तिथि विशेष को अपने डिबेन्चरो का भुगतान करेगी, तो इन डिबेन्चरो पर व्याज मिलना उसी तिथि विशेष से बन्द हो जावेगा चाहे डिबेन्चरों के खरीदने वाले अपने डिबेन्चरो का रुपया कम्पनी से उस तिथि पर ले या नहीं।

कभी-कभी यह हो सकता है कि कम्पनी वर्ष के दौरान मे अपने डिबेन्चरों का शोधन कर देती है परन्तु फिर भी उस बैलेसशीट की तिथि पर कुछ डिबेन्चरों का रुपया अभी नहीं लिया गया है। जिन डिबेन्चरों का रुपया अभी तक नही माँगा गया है उन्हें बैलेंस-शीट में डिबेन्चरों के रूप में नहीं दिखलाया जा सकता, क्योंकि यदि ऐसा किया गया तो इसका मतलब यह होगा कि कम्पनी उनके व्याज के लिए उत्तरदायी है, जब कि ऐसा नहीं है। अतः इस तरह के डिबेन्चर बैलेंस-शीट में इस शीर्षक में दिखलाये जाते हैं। "वर्ष के दौरान में शोधित डिबेन्चर, जिनका भुगतान नहीं लिया गया है।"

उदाहरण १६७

सन् १९४० ई० में एक लिमिटेड कम्पनी ने १०० रु० वाले २,००० ६% बंधक ऋण-पत्र निर्गमित किये। व्याज अर्द्धवार्षिक ३० जून व ३१ दिसम्बर को देय है; तथा निर्गमन ३१ दिसम्बर १९६० को सम मूल्य पर प्रतिदेय है।

कम्पनी को ३१ दिसम्बर १९५० के पश्चात् १०५ प्रतिशत पर किसी भी ब्याज के दिन पर छः मास का नोटिस देकर निर्गमन का विमोचन करने का अधिकार है।

३१ दिसम्बर १९५० को, संचालकों ने निर्गमन की शर्तों के अनुसार निर्गमन को ३० जून १९५१ को प्रतिदेय करने का नोटिस दिया। उसी समय धारियों को रोकड़ी लेने के बजाय १०० रु० वाले ४½% ऋण-पत्र तथा प्रत्येक विद्यमान ऋण-पत्र पर ७ रु० रोकड़ी लेने के अधिकार का प्रस्ताव रक्खा।

१,४०० ऋण-पत्रधारियों ने इस प्रस्ताव को स्वीकार किया तथा शेष का नकद भुगतान किया। विमोचन (Redemption) से प्रभावित बहीखाते बनाओ।

३० जून १९५१ को, ६०० ऋण-पत्र ५% प्रव्याजि रोकड़ा पर विमोचित किये, तथा १,४०० ऋण-पत्र ७% प्रव्याजि पर परिवर्तन द्वारा विमोचित कर दिये गये। अतः विमोचन से प्रभावित आवश्यक खाते निम्न होंगे :—

६% बंधक ऋण-पत्र खाता

१९५१		रु०	१९५१		रु०
जून ३०	रोकड़	६०,०००	जून १	शेष नी/ला	२,००,०००
	४½% ऋण-पत्र	१,४०,०००			
		२,००,०००			२,००,०००

विमोचन प्रव्याजि खाता

१९५१		रु०			
जून ३०	रोकड़	१२,८००			

रोकड़ खाता

१९५१		रु०	१९५१		रु०
जून ३०	शेष नी/ला	?	जून ३०	६% बंधक ऋण-पत्र	६०,०००
				विमोचन प्रव्याजि	१२,८००

४½% ऋण-पत्र

			१९५१		रु०
			जून ३०	६% बंधक ऋण-पत्र	१,४०,०००

टिप्पणी : ऋण-पत्रों के विमोचन की [illegible]

उदाहरण १८

[illegible]

जर्नल

	रु०	रु०
साधारण अंश आवेदन तथा आवंटन खाता	१,५६,२५०	
पूर्वाधिकार अंश आवेदन तथा आवंटन खाता	५०,०००	
ऋण-पत्र आवेदन तथा आवंटन खाता	७०,०००	
साधारण अंश पूँजी खाता		१,२५,०००
पूर्वाधिकार अंश पूँजी खाता		५०,०००
ऋण-पत्र खाता		७०,०००
अंश प्रव्याजि खाता		३१,२५०
आवेदन तथा आवंटन पर देय राशि		
साधारण अंश याचना खाता	१,२५,०००	
साधारण अंश पूँजी खाता		१,२५,०००
२५,००० साधारण अंशों पर ५ रु० प्रति अंश की याचना		

रोकड़ बही (प्राप्ति पक्ष)

	रु०
साधारण अंश आवेदन तथा आवंटन खाता	६३,७५०
पूर्वाधिकार अंश आवेदन तथा आवंटन खाता	१८,७५०
ऋण-पत्र आवेदन तथा आवंटन खाता	२८,०००
साधारण अंश आवेदन तथा आवंटन खाता	६२,५००
पूर्वाधिकार अंश आवेदन तथा आवंटन खाता	३१,२५०
ऋण-पत्र आवेदन तथा आवंटन खाता	४२,०००
साधारण अंश याचना खाता	१,२५,०००

सार्वजनिक धरोहर (Public Deposits)

भारतीय कम्पनी अर्थ प्रबन्धन का एक अद्भुत लक्षण यह है कि यहाँ पर बहुत सी कम्पनियाँ अपनी प्रारम्भिक पूँजी का कुछ भाग इस सार्वजनिक धरोहर के द्वारा ही प्राप्त करती है। यह प्रणाली अहमदाबाद की कपड़े की मिलों में बहुत अधिक प्रचलित है। उदाहरणार्थ, एक कम्पनी विशेष में, जिसकी पूँजी पाँच लाख की है, सार्वजनिक धरोहरें करीब ढाई लाख से अधिक रुपये की हैं। एक दूसरी कम्पनी में पूँजी सिर्फ पाँच लाख की है, और सार्वजनिक धरोहरें तीस लाख से भी ऊपर हैं।

यह धरोहरें प्रबन्धक-एजेण्टों की आर्थिक स्थिति पर निर्भर रहती है। इन पर एक निश्चित दर के अनुसार व्याज दिया जाता है। अधिकतर धरोहरें लम्बे समय के लिए होती हैं। यह डिबेन्चरों के सदृश्य होती हैं परन्तु यह डिबेन्चरों से अच्छी हैं, क्योंकि इनके लिए किसी सम्पत्ति की जमानत की आवश्यकता नहीं होती है।

इन धरोहरों के लिये कोई विशेष बहियाँ नहीं रखी जाती। खाता-बही में ही सब जमा करने वालों के लिए एक धरोहर-खाता (Deposit Account) खोल लिया जाता है। परन्तु डिबेन्चरों के खरीदने वालों के रजिस्टर की भाँति ही जमा कराने वालों का रजिस्टर भी रखना चाहिए ताकि जमा कराने वालों के अलग-अलग खाते रखे जा सकें।

शेयर एवं डिबेन्चरों पर प्रीमियम (Premium on Shares and Debentures)

शेयर और डिबेन्चरों के बेचते समय कम्पनी को जो प्रीमियम प्राप्त होता है वह हानि-लाभ खाते में कभी जमा नहीं करना चाहिए क्योंकि यह साधारण व्यापार से पैदा नहीं हुआ। इसे पूँजी रिजर्व में ट्रांसफर कर देना चाहिए या पूँजी हानि कम करने के वास्ते काम में लेना चाहिए। हाँ, शेयर या डिबेन्चरों के जारी करने में जो खर्च किये गये हों उन्हें प्राप्त प्रीमियम से काटा जा सकता है।

कानूनन इस प्रीमियम को हानि-लाभ खाते में जमा करने पर तब तक कोई प्रतिबन्ध नहीं है जब तक कम्पनी की नियमावली इस पर कोई रोक न डाले।

शेयरों एवं डिबेन्चरों पर कटौती (Discount on Shares and Debentures)

शेयरों और डिबेन्चरों के बेचने पर जो कटौती (discount) दी जाती है वह पूँजी हानि है। यह रकम "शेयर कटौती खाता" (Discount on Shares Account) के नाम लिखी जाती है और बैलेंस-शीट में जब तक यह सब रकम वापिस न लिख दी जावे तब तक अलग मद के रूप में दिखलाई जाती है। डिबेन्चरों पर दी गई कटौती भी इसी तरह से वापिस जा सकती है कानूनी रूप से इसे एक नाम मात्र सम्पति के रूप में ही बैलेन्सशीट में बनाये रखने पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है।

उदाहरण १९९

१ जनवरी १९४७ को एक लिमिटेड कम्पनी ने ६% बट्टे पर २०,००० रु० के ऋण-पत्र निर्गमित किये, जो ४,००० रु० वार्षिक आहरण द्वारा प्रतिदेय हैं।

आहरण प्रतिवर्ष ३१ दिसम्बर को किये तथा वे प्रतिवर्ष अगले दिन प्रतिदेय हुये। संचालकों ने निर्गमन पर दिये बट्टे को, ऋण-पत्रों के समयानुसार इस प्रकार अपलिखित करने का निश्चय किया जिससे अपलिखित राशि वर्ष में बकाया ऋण-पत्रों के अनुपात में हो।

प्रत्येक वर्ष अपलिखित किये बट्टे की राशि मालूम करो तथा ३१ दिसम्बर १९४८ को हुये व्यवहारों का लेखा करने के लिये जर्नल प्रविष्टियां कीजिये।

वर्ष	बकाया ऋण पर रु०	अनुपात	अनुपात जो अपलिखित करना है	राशि जो अपलिखित करना है रु०
१९४७	२०,०००	५	५/१५	४००
१९४८	१६,०००	४	४/१५	३२०
१९४९	१२,०००	३	३/१५	२४०
१९५०	८,०००	२	२/१५	१६०
१९५१	४,०००	१	१/१५	८०
		१५		१,२००

जर्नल

		रु०	रु०
१९४८			
दिस० ३१	ऋण-पत्र खाता	४,०००	
	रोकड़ खाता		४,०००
	[illegible]		
	लाभ-हानि खाता	३२०	
	ऋण-पत्र बट्टा खाता		३२०
	[illegible]		

उदाहरण २००

[illegible]

[illegible]

[illegible]

उपर्युक्त व्यवहारों का लेखा करने के लिये जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये तथा व्यवहारों के पूर्ण होने के पश्चात् ऋण-पत्र व अंश पूँजी खाता बनाइये।

जर्नल

		रु०	रु०
	बैंक खाता अंश आवेदन तथा आवटन खाता आवेदन पर प्राप्त राशि	३७,५००	३७,५००
	अंश आवेदन तथा आवटन खाता अंश पूँजी खाता अंश प्रव्याजि खाता आवेदन तथा आवटन पर देय राशि	१,१२,५००	७५,००० ३-,५००
	बैंक खाता अंश आवेदन तथा आवंटन खाता आवटन पर प्राप्त राशि	७५,०००	७५,०००
	अंश प्रथम व अन्तिम याचना खाता अंश पूँजी खाता याचना पर देय राशि	७५,०००	७५,०००
	बैंक खाता अंश प्रथम व अन्तिम याचना खाता याचना पर प्राप्त राशि	७५,०००	७५,०००
	ऋण-पत्र खाता ऋण-पत्र विमोचन प्रव्याजि खाता बैंक खाता ५% प्रव्याजि पर ऋण-पत्रों का विमोचन	१,००,००० ५,०००	१,०५,०००
	अंश प्रव्याजि खाता ऋण-पत्र विमोचन प्रव्याजि खाता पूँजी संचय खाता अंश प्रव्याजि का हस्तांतरण	३७,५००	५,००० ३२,५००

ऋण-पत्र खाता

	रु०		रु०
बैंक	१,००,०००	शेष नी/ला	१,००,०००

अंश पूँजी खाता

	रु०		रु०
शेष आ/ले	४,५०,०००	शेष नी/ला	३,००,०००
		अंश आवेदन तथा आवंटन खाता	७५,०००
		अंश प्रथम व अन्तिम याचना खाता	७५,०००
	४,५०,०००		४,५०,०००

उदाहरण १७१

३१ दिसम्बर १९४९ को भारत कॉटन मिल कं० लि० के चिट्ठे में निम्न पद प्रकट हुए :—

(अ) अधिकृत पूंजी : १०० रु० वाले १०,००० अंश।
(ब) निर्गमित पूंजी : ६,००० अंश (रोकड़ी निर्गमित) ८० रु० प्रति अंश याचित।
(स) अदत्त प्रभाग (Calls in Arrears) १०,५०० रु०।
(द) कर्मचारी प्रोविडेन्ट फण्ड ३२,५०० रु०

१९५० के वर्ष में हुये कम्पनी के कुछ व्यवहार निम्नलिखित हैं :—

जनवरी २५	२० रु० प्रति अंश अन्तिम याचना की।
फरवरी १०	अन्तिम याचना के १,१५,००० रु० प्राप्त हुये।
मार्च ३१	२०० अंश जब्त किये जिन पर १४,००० रु० अदत्त है।
अप्रैल १५	विद्यमान अंशधारियों को २,००० नये अंश २५ रु० प्रति अंश प्रव्याजि पर प्रस्तुत किये, जिन पर ७५ रु० आवेदन (प्रव्याजि सहित) तथा शेष आवंटन पर देय हैं।
मई १०	२,००० अंश, जिनके लिये आवेदन प्राप्त हुए तथा जिन पर आवश्यक आवेदन राशि प्राप्त हो चुकी है, आवंटित किये।
जून १	६६,००० रु० आवंटन राशि के प्राप्त हुये।
जुलाई २५	पटेल इंजिनियरिंग कं० लि० को १,००० पूर्ण दत्त अंश उनसे यंत्र क्रय करने के बदले निर्गमित किये।
सितम्बर २०	कम्पनी के एक कर्मचारी को निकाल दिया गया तथा २,१५०) उसको प्रोविडेन्ट फण्ड के दिये।
अक्तूबर १	५०,००० रु० जनता से जमा के लिये ६% वार्षिक की दर से प्राप्त हुये।
दिसम्बर ३१	१९५० के वर्ष का कम्पनी का कर्मचारी प्रोविडेन्ट फण्ड में भाग दान ८,७५० रु० था।

उपर्युक्त व्यवहारों को कम्पनी के जर्नल व रोकड़ बही में लिखो तथा बताओ कि अंश पूंजी, जब्त अंश, अंश प्रव्याजि, कर्मचारी प्रोविडेन्ट फण्ड तथा जनता की जमा ३१ दिसम्बर १९५० को चिट्ठे में किस प्रकार दिखाई जायगी ?

जर्नल

१९५०		रु०	रु०
जन. २५	अंश अन्तिम याचना खाता	१,२०,०००	
	अंश पूंजी खाता		१,२०,०००
	२० रु० प्रति अंश की अन्तिम याचना		
मार्च ३१	अंश पूंजी खाता	२०,०००	
	बकाया याचना खाता		१०,५००
	अंश अन्तिम याचना खाता		३,५००
	जब्त किये अंश खाता		६,०००
	२०० अंश जिन पर १४,००० रु० दत्त हैं जब्त किये		
मई १०	अंश आवेदन तथा आवंटन खाता	२,५०,०००	
	अंश पूंजी खाता		२,००,०००
	अंश प्रव्याजि खाता		५०,०००
	[illegible]		
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	[illegible]		[illegible]
	[illegible]		
	[illegible]	[illegible]	
	[illegible]		[illegible]
	[illegible]		

दिस. ३१	लाभ-हानि खाता कर्मचारी प्रोविडेंट फण्ड खाता कं० द्वारा कर्मचारी प्रोविडेंट फण्ड के लिए भाग दान	८,७५०	८,७५०
	व्याज खाता सार्वजनिक जमा खाता सार्वजनिक जमा पर ३ माह का व्याज	७५०	७५०

रोकड़ बही

१९५०		रु०	१९५०		रु०
फर. १०	अंश अन्तिम याचना खाता	१,१५,०००	सि०.३०	कर्मचारी प्रोविडेंट फंड	२,१५०
मई १-	अंश आवेदन व आवटन खाता	१,५०,०००			
जून १	अंश आवेदन व आवटन खाता	९६,०००			
अ. १	सार्वजनिक जमा	५०,०००			

चिट्ठा ३१ दिसम्बर १९५०
(दायित्व पक्ष)

	रु०	रु०	रु०
अधिकृत पूँजी :—			
१०,००० अंश प्रत्येक १०० रु० का		१०,००,०००	
निर्गमित तथा प्रदत्त पूँजी :—			
७,८०० अंश १०० रु० का प्रत्येक रोकड़ी निर्गमित	७,८०,०००		
घटाया बकाया याचना राशि	२,५००	७,७७,५००	
१,००० अंश १०० रु० का प्रत्येक रोकड़ के अतिरिक्त निर्गमित		१,००,०००	८,७७,५००
अंश जब्ती खाता			६,०००
अंश प्रव्याजि			५०,०००
कर्मचारी प्रोविडेंट फण्ड			३६,१००
सार्वजनिक जमा			५०,७५०

टिप्पणी :—यह मान लिया गया है कि सार्वजनिक जमा पर व्याज नहीं दिया गया था।

शेयर व डिबेन्चरों पर कमीशन

(Commission on Shares and debentures)

कम्पनी को आवश्यक पूँजी प्राप्त करने में सुविधा हो इसके लिए कानून ने कम्पनी को पूँजी में से शेयरों पर कमीशन देने का अधिकार दिया है बशर्ते कि सब वैधानिक शर्तें पूर्ण कर दी जायें। यह कमीशन या तो अभिगोपन का कमीशन हो सकता है या शेयरों को बाजार में रखने का कमीशन।

अभिगोपन का कमीशन (Underwriting Commission) :—जब सार्वजनिक कम्पनी अपना सूचना-पत्र (prospectus) प्रचलित करती है तो यह आवश्यक नहीं है कि जनता कम्पनी के सब शेअर खरीद ले। जनता यदि कम्पनी के सब शेअर नहीं खरीदती तो कम्पनी को आवश्यक पूँजी प्राप्त नहीं हो सकती। यह कठिनाई अभिगोपन (underwriting) की व्यवस्था द्वारा दूर कर ली जाती है। कुछ व्यक्ति जिन्हे अभिगोपक (underwriters) कहते हैं इस बात का उत्तरदायित्व लेते हैं कि जो शेअर जनता नहीं खरीदेगी उन शेअरों को वे स्वयं खरीद लेंगे। इस उत्तरदायित्व के लिए उन्हें जो कमीशन दिया जाता है उसे अभिगोपन कमीशन कहते हैं।

यदि अभिगोपित शेअर जनता खरीद लेती है तो अभिगोपकों को कोई शेअर नहीं लेना पड़ता और यह कमीशन उनको लाभ के रूप में रह जाता है। परन्तु यदि जनता सब शेअर नहीं लेती तो उन्हे बचे हुए शेअर लेने पड़ते हैं।

शेअरों के बेचने पर कमीशन (Commission for Placing Shares) :—यह कमीशन कम्पनी उन एजेंटों को देती है जो कम्पनी के शेअर बेचने का कार्य करते हैं। एजेंटों को यह कमीशन उनके बेचे हुए शेअरों के मूल्य पर दिया जाता है। अभिगोपन का और बाजार में शेयर रखने का कमीशन डिबेन्चरों पर भी दिया जाता है और इसके लिये इसे पूँजी में से चुकाने पर कोई कानूनी बन्धन नहीं है।

दलाली :—कमीशन के अतिरिक्त कम्पनी पेशेवर दलालों और बैंकों को, जो लोगों को शेयरों और डिबेन्चर खरीदने के लिये लाते हैं, कानूनानुसार दलाली भी दे सकती है।

बहीखाते की प्रविष्टि :—नई कम्पनी कमीशन और दलाली अपनी पूँजी में से देती है क्योंकि उसने आय कमाना अभी आरम्भ नहीं किया है। इनकी रकम "शेयर या डिबेन्चर कमीशन खाता" (Commission on Shares or debentures Account) के नाम लिखी जाती है। इसे एक सम्पत्ति माना जाता और कई वर्षों पर फैला कर वापिस लिख देते हैं। जब तक यह पूर्णरूप से वापिस (write off) न लिख दी जावे, इसे बलेंस-शीट में एक अलहदा मद के रूप में दिखलाना चाहिए।

प्रारम्भिक खर्चे

कम्पनी के संस्थापन में जो खर्चे लगते हैं उन्हें प्रारम्भिक खर्चे कहते हैं। इन्हें संस्थापन खर्च, सृष्टि या संगठन खर्च भी कहते हैं। इनमें निम्नलिखित खर्चे सम्मिलित किये जाते हैं :—

१ कम्पनी के विभिन्न कानूनी कागज-पत्र जैसे उद्देश्य पत्र, नियमावली, अनुबन्ध सूचना पत्र आदि लिखने, छपवाने व रजिस्ट्री कराने के खर्चे।

२. कानूनी कागज-पत्रों पर लगने वाली स्टाम्प ड्यूटी, रजिस्ट्रार के पास नत्थी करने पर दी जाने वाली फीस और कम्पनी रजिस्टर्ड कराते समय प्रविष्ट पूँजी (Nominal Capital) पर दी जाने वाली फीस।

३ सूचना पत्र (pro-pect[illegible]) के विज्ञापन के खर्चे।

४. कम्पनी के आवेदन-पत्र, शेयर-प्रमाण-पत्र, बहियाँ, मोहर आदि के छपवाने के खर्चे।

५. व्यापार-संगठकों और हिसाब परीक्षकों आदि की फीस जो लाभ सम्बन्धी प्रमाण-पत्रों और सम्पत्तियों के मूल्यांकन के सम्बन्ध में रिपोर्ट देने के लिये दी गई हो, जबकि कम्पनी किसी स्थापित व्यापार को लेने के लिये बनी हो।

६ कम्पनी द्वारा दिया हुआ शेयरों पर कमीशन आदि। यद्यपि पूँजी में से दिया गया शेयर कमीशन 'प्रारम्भिक खर्चों' में शामिल कर लिया जाता है तथापि ऐसे कमीशन के लिये अलहदा खाता रखना चाहिए क्योंकि इसे कम्पनी की बैलेंस-शीट में अलहदा मद के रूप में दिखाना चाहिये। इसे प्रारम्भिक खर्चों के साथ शामिल करना ठीक नहीं है।

* प्रारम्भिक खर्चे [illegible] "प्रारम्भिक खर्च खाता" (Preliminary Expenses A/c) [illegible] और इसे [illegible] लाभ [illegible] इसलिये इसे [illegible] चाहिये।

कानूनी रूप से आवश्यक पुस्तकें (Statutory Books)

हर कम्पनी को अपनी [illegible] रखनी पड़ती हैं —

१ [illegible] रजिस्टर ([illegible]) [illegible] होता है।

२. वार्षिक सूची व संक्षिप्त विवरण (Annual List and Summary) :—धारा ३२ के अनुसार हर एक कम्पनी को एक वार्षिक सूची तैयार करनी पड़ती है जिनमें उन सब व्यक्तियों के नाम, पते व व्यवसाय दिये होते हैं जो वार्षिक साधारण सभा के दिन कम्पनी के सदस्य हो। इसमें उन व्यक्तियो के नाम भी दिये जाते हैं जिन्होने पिछली साधारण सभा के पश्चात् कम्पनी छोड़ दी है। इसमें पूँजी का संक्षिप्त विवरण भी दिया जाता है। इसे वार्षिक विवरण (Annual Return) भी कहते हैं।

३. सभा-कार्य विवरण बुक (Minute Book) :—धारा ८३ के अनुसार, शेयर होल्डरो की साधारण सभा व संचालकों की बैठको की कार्यवाही का पूरा विवरण रखना आवश्यक है। इसके लिए दो कार्य-विवरण पुस्तके रखी जाती हैं। एक शेयर होल्डरो की सभाओ के लिए और दूसरी संचालको की बैठको के लिए।

४. संचालकों और प्रबन्धक एजेण्टों का रजिस्टर (Register of Directors and Managing Agents) .—धारा ८७ के अनुसार हर एक कम्पनी को संचालको, व्यवस्थापकों और प्रबन्धक एजेण्टो का एक रजिस्टर रखना पड़ता है जिसमें इनके नाम, पते, व व्यवसाय लिखे जाते हैं।

५. संचालको के साथ हुये समझौतो का रजिस्टर (Register of Contracts) :—धारा ६१, अ (३) के अनुसार हर एक कम्पनी को एक ऐसा रजिस्टर रखना पड़ता है जिसमे वे समझौते लिखे जाते हैं जिसमे संचालको का किसी भी प्रकार का कुछ स्वार्थ हो।

६. रहन-सम्बन्धी रजिस्टर (Register of Mortgages and Charges) :—धारा १२३ के अनुसार हर एक कम्पनी को एक ऐसा रजिस्टर रखना पड़ता है जिसमे वे सब रहन लिखे जाते हैं जिनका सम्बन्ध कम्पनी की सम्पत्ति से है। इसमे रहन रखी हुई सम्पत्ति, रहन की रकम, तथा रहन रखने वाले व्यक्ति का नाम आदि लिखे जाते हैं।

स्थापित हुए व्यापार को खरीदना

बहुधा कम्पनी की स्थापना किसी नये व्यापार को शुरू करने के स्थान पर किसी पुराने व्यापार को खरीदने के लिए की जाती है। यह पुराना व्यापार किसी व्यक्ति विशेष का या साझेदारी का हो सकता है। जो व्यक्ति व्यापार को वेचता है उसे व्यापार विक्रेता (vendor) कहते हैं और जिस मूल्य पर यह खरीदा जाता है उसे क्रय मूल्य (Purchase Price) कहते हैं। खरीदने की शर्तें कम्पनी के संस्थापक द्वारा निश्चित की जाती हैं। खरीदने से पहले संस्थापक यह अच्छी तरह से मालूम कर लेगा कि व्यापार की स्थिति सुदृढ़ है या नहीं।

जब पुराना व्यापार खरीदा जाता है तो इसकी सम्पत्ति और ऋण एक निश्चित किए हुए मूल्य के आधार पर लिये जाते हैं न कि उनके बहीखाते के अङ्को पर। इस मूल्य मे साख (Goodwill) का रुपया भी सम्मिलित रहता है। जब साख की रकम अलग से न दी जावे तो वह क्रय मूल्य (Purchase price) और नेट सम्पत्ति (Net asset) (अर्थात् तमाम सम्पत्ति में से ऋणों की रकम कम कर देने के बाद बची हुई सम्पत्ति) की तुलना से मालूम की जा सकती है। जैसे यदि सम्पत्ति की निश्चित की हुई रकम ६०,०००) हो और ऋण १५,०००) का हो तो नेट सम्पत्ति ४५,०००) की है। यदि क्रय-कीमत ५०,०००) है तो साख (Goodwill) की रकम ५०००) होगी।

सारी की सारी क्रय-कीमत रोकड़ी रुपये में नहीं दी जाती। यह कुछ तो रोकड़ी रुपयों में और कुछ शेअरों और डिबेन्चरों के रूप में दी जाती है। यह शेअर अंकित मूल्य या प्रीमियम पर दिये जा सकते हैं। यदि तमाम क्रय-कीमत रोकड़ी रुपयों में दे दी जावे तो जनता को यह संदेह हो सकता है कि यह व्यापार इतना अच्छा नहीं है अन्यथा बेचने वाला अवश्य अपना हिस्सा नये व्यापार में रखता।

वहीखाता प्रविष्टियाँ.—एक नई कम्पनी द्वारा पुराने व्यापार के खरीदने पर निम्नलिखित लेखे की आवश्यकता होती है :—

१. निश्चित किये हुए मूल्य की रकम विभिन्न सम्पत्ति खातों के नाम लिखी जाती है और बेचने वाले के खाते में जमा की जाती है।

२. विभिन्न ऋणों की रकम व्यापार विक्रेता के खाते के नाम लिखकर सम्बन्धित ऋण खाते में जमा कर दी जाती है।

३. क्रय-कीमत बेचने वाले के नाम लिखकर शेयर पूँजी खाते, डिबेन्चर खाते और रोकड़ खाते में जमा की जाती है।

नोट: – जब क्रय मूल्य के आंशिक भुगतान में व्यापार विक्रेताओं को शेयर दिये गये हों तो शेयर पूँजी खाता जमा होगा न कि शेयर खाता।

४. यदि बेचने वाले को क्रय कीमत पर व्याज देना स्वीकृत किया गया हो तो व्याज की रकम व्याज खाते नाम लिखकर बेचने वाले को जमा की जाती है।

उदाहरण १७२

१ जनवरी १९५१ को, एक लिमिटेड कम्पनी एक व्यापार को लेने के लिये स्थापित हुई, तथा १,००,००० रु० की अधिकृत पूँजी से, जो १०० रु० वाले ५०० ६% पूर्वाधिकार अंश तथा १०० रु० वाले ५०० साधारण अंशों में विभक्त है, रजिस्टर हुई।

विक्रेता से क्रय मूल्य ५८,००० रु० निश्चित हुआ, जो १५ जनवरी १९५१ को २०० पूर्ण दत्त पूर्वाधिकार अंश तथा २०० साधारण अंशों के आवंटन द्वारा, तथा शेष १ फरवरी १९५१ को रोकड़ी भुगतान द्वारा पूर्ण हुआ।

कम्पनी द्वारा लिये गये सम्पत्ति व दायित्व निम्न थे: भूमि व भवन ३५,००० रु०; मोटरगाड़ी ६,२००० रु०; विविध देनदार १४,००० रु०; रहतिया १८,००० रु०; रोकड़ बैंक में १,१०० रु०; विविध लेनदार १५,५०० रु०; अदत्त व्यय ५०० रु०।

१५ जनवरी १९५१ को शेष अंश जनता को निर्गमित किये गये तथा उनकी राशि समयानुसार प्राप्त हुई— २० रु० अंश आवेदन पर, ४० रु० आवंटन पर, २० रु० प्रथम याचना पर जो १५ फरवरी १९५१ को देय है तथा २० रु० अन्तिम याचना पर जो १५ मार्च १९५१ को देय है।

१ अप्रैल १९५१ को कम्पनी ने ५% प्रव्याजि पर ४०,००० रु० के ५% [illegible] निर्गमित किये।

उपर्युक्त व्यवहारों का कम्पनी की पुस्तकों में लेखा करने के लिये जर्नल व रोकड़ बही में प्रविष्टियाँ कीजिये तथा चिट्ठा तैयार कीजिये।

इस व्यापार को लेने के लिये कम्पनी ने ६,००० रु० ख्याति के लिये जिसका निम्न प्रकार [illegible] किया गया :—

	रु०
[illegible]	५४,०००
[illegible]	३६,०००
[illegible]	४६,०००
क्रय मूल्य	५८,०००
ख्याति	६,०००

[illegible]

		रु०	रु०
१९५१			
जन० १५	[illegible]	६,०००	
	[illegible]	३६,०००	
	[illegible]	६,२००	
	[illegible]	१४,०००	
	[illegible]	१८,०००	
	[illegible]	१,१००	
	[illegible]		८१,१००
	[illegible]		

जर्नल

१९५१		रु०	रु०
जन. १	स्वायत्त भवन	१३,०००	
	कल व यंत्र	३,५१५	
	रहतिया	६,७५०	
	देनदार	५,६६५	
	ख्याति	२,१६८	
	विविध लेनदार		६,३६८
	विक्रेता		२५,०००
	सम्पत्ति व दायित्व लिये गये		
	ख्याति खाता	३,८२८	
	स्वायत्त भवन खाता		२,०००
	कल व यंत्र खाता		५१५
	रहतिया खाता		१,०१३
	डूबत ऋण सचय खाता		३००
	ली गई सम्पत्तियों के मूल्य में कमी तथा डूबत ऋण संचिति निर्माण		
	विक्रेता	२०	
	विविध लेनदार		२०
	अतिरिक्त दायित्व जो रह गया था		
	रोकड़ खाता	२७,०००	
	अंश पूँजी खाता		२७,०००
	नकद भुगतान के लिये अंशों का निर्गमन		
	विक्रेता	२४,९८०	
	रोकड़ खाता		२४,९८०
	देय राशि का भुगतान किया		

चिट्ठा

	रु०			रु०
अधिकृत पूँजी	—	ख्याति		५,६६६
निर्गमित पूँजी :—		स्वायत्त भवन		११,०००
	२७,०००	कल व यत्र		३,०००
२,७०० अंश प्रत्येक १० रु० का पूर्णदत्त	६,४१८	रहतिया		५,७३७
विविध लेनदार		विविध देनदार	५,६६५	
		घटाया डूबत ऋण संचय	३००	५,६६५
		रोकड़		२,०२०
	३३,४१८			३३,४१८

उदाहरण १७४

ब्राउन व ब्लैक प्रतियोगी व्यवसायों के स्वामी हैं। उन्होंने अ[illegible] हेतु स[illegible] । निश्चय किया, और इस काय के लिये उन्होंने ब्राउन व ब्लैक लि० नामक ए[illegible] ०,०० [illegible] पूँजी के साथ, जो १० रु० वाले ६०,००० साधारण अश तथा १०० रु० वा[illegible] ाधि[illegible] है, चालू (Float) की।

हस्तान्तरण की तिथि को, ब्राउन की सम्पत्ति (ख्या[illegible] के [illegible] २२,६०० रु० था। उसी तिथि को ब्लैक की सम्पत्ति [illegible] १५,००० रु० था।

यह निश्चय किया गया कि कम्पनी ब्राउन व ब्लैक दोनों की सम्पत्ति व दायित्व लेकर प्रत्येक को १५,००० साधारण पूर्ण दत्त अंश निर्गमित करेगी तथा शेष रोकड़ी भुगतान करेगी। यह भी निश्चय किया गया कि उनकी ख्याति के लिये पूर्णदत्त पूर्वाधिकार अंश निर्गमित किये जायगे। ख्याति पिछले तीन वर्षों के औसत लाभ के दो वर्षीय क्रय के आधार पर मूल्यांकित होगी। पिछले तीन वर्षों के लाभ निम्न थे :—

	ब्राउन	ब्लैक
	रु०	रु०
प्रथम वर्ष	१६,०००	८,०००
द्वितीय वर्ष	१२,०००	११,०००
तृतीय वर्ष	११,०००	१४,०००

उपर्युक्त के अतिरिक्त, जनता ८०,००० साधारण अंश व शेष पूर्वाधिकार अंशों के लिये भाग दान देती है और पूरा अदा करती है। कम्पनी ने प्रारम्भिक खर्चों के १५,००० रु० भी अदा किये।

कम्पनी की बहियों में विक्रेताओं के खाते दिखलाइये व इन व्यवहारों के पूर्ण होने पर कम्पनी का चिट्ठा तैयार कीजिये।

ब्राउन का खाता

	रु०		रु०
दायित्व	३२,६००	सम्पत्ति	२,६५,३५०
साधारण अंश पूँजी	१,५०,०००	ख्याति खाता	२६,०००
पूर्वाधिकार अंश पूँजी	२६,०००		
रोकड़ खाता	८२,७५०		
	२,९१,३५०		२,९१,३५०

ब्लैक का खाता

	रु०		रु०
दायित्व	२४,०००	सम्पत्ति	१,९४,०००
साधारण अंश पूँजी	१,५०,०००	ख्याति खाता	२२,०००
पूर्वाधिकार अंश पूँजी	२२,०००		
रोकड़ खाता	२०,०००		
	२,१६,०००		२,१६,०००

ब्राउन व ब्लैक लि० का चिट्ठा

	रु०		रु०
अधिकृत पूँजी —		ख्याति	[illegible]
१०,००० साधारण अंश प्रत्येक १० रु० का	[illegible]	अन्य सम्पत्ति	[illegible]
४,००० ६% पूर्वाधिकार अंश प्रत्येक १०० रु० का	४,००,०००	प्रारम्भिक व्यय	१५,०००
	[illegible]	रोकड़	[illegible]
निर्गमित तथा प्रदत्त पूँजी —			
[illegible]	[illegible]		
[illegible]	[illegible]		
[illegible]	[illegible]		
[illegible]	[illegible]		
[illegible]	[illegible]		
	[illegible]		[illegible]

संस्थापन के पूर्व का लाभ-हानि (Profit or loss prior to Incorporation) .—कभी-कभी कम्पनी अपने संस्थापन (Incorporation) से पहले कोई व्यापार खरीद लेती है, जैसे जब एक कम्पनी, जो प्रथम अप्रेल सन् १६५० ई० में रजिस्टर हुई हो, ३१ दिसम्बर सन् १६४८ ई० से किसी व्यापार को, जबकि व्यापार विक्रेता (vendor) ने अपने गत अन्तिम खाते तैयार किये थे, खरीद ले। यह व्यवस्था इसलिये की जाती है कि खरीद की तिथि को व्यापार-विक्रेता के अन्तिम खाते न बनाने पड़ें। हाँ, व्यापार का मूल्य विक्रेता की पिछली बैलेन्स शीट के आधार पर लगाया जा सकता है।

इस तरह की स्थितियो मे यह निश्चित किया जाता है कि क्रय की तिथि के बाद जो लाभ हो वह कम्पनी का लाभ समझा जावेगा। कम्पनी की दृष्टि से यह लाभ पूँजी लाभ है आय-लाभ नही है, क्योकि वैधानिक रूप से कोई कम्पनी अपने संस्थापन से पहले लाभ प्राप्त नहीं कर सकती है और इसलिये भी कि ऐसे लाभ व्यापार के क्रय मूल्य मे शामिल होते हैं। दूसरे शब्दो में इन्हे कम्पनी खरीदती है कमाती नहीं।

इस तरह के लाभ किस प्रकार निश्चित किये जाते है.—इस लाभ को मालूम करने की सर्वश्रेष्ठ पद्धति तो यह होगी कि कम्पनी के संस्थापन के दिन अन्तिम खाते तैयार किये जाये परन्तु यह करना तत्सम्बन्धित कठिनाइयों के कारण अव्यावहारिक जान पड़ता है। इसलिए यह लाभ निम्न प्रकार से मालूम किया जाता है :—

१. सारे वर्ष का लाभ समय या बिक्री (Turnover) के अनुसार 'संस्थापन से पहले' (Prior to Incorporation) 'संस्थापन के बाद' (*Post Incorporation*) दो भागो मे बाँटा जाता है।

२. साझेदारी का वेतन, पूँजी पर व्याज आदि के खर्चे जो संस्थापन से पहले खर्च हुए हैं उस समय मे लगाये जाते हैं।

३. प्रबन्धक एजेन्टो का प्रतिफल, संचालको की फीस, हिसाब-परीक्षको की फीस, डिबेन्चर व्याज आदि जो बाद के समय से सम्बन्धित होते है उस समय मे लगाये जाते है।

४. बाकी बचे हुए खर्चे दोनो समयो मे समय या बिक्री के अनुसार लगाये जाते हैं।

इस तरह से संस्थापन से पहले और बाद का नेट लाभ मालूम कर लिया जाता है।

यदि बेचने वाले को व्याज दिया जावे तो वह संस्थापन से पहले के समय मे लगाया जाता है।

उक्त लाभ का उपयोग .—संस्थापन से पहले जो लाभ होता है वह पूँजी लाभ है इसलिए इसे हिस्सेदारों को लाभांश (dividend) के रूप मे विभाजित नही करना चाहिए। इसे पूँजी रिजर्व में रखा जा सकता है या इसे साख (goodwill) की रकम अपलिखित (write off) करने मे या पूँजी हानि को वापिस लिखने (write off) के काम मे लिया जा सकता है।

यदि संस्थापन से पहले लाभ के स्थान पर नुकसान हुआ हो तो यह नुकसान पूंजी नुकसान है इसे गुडविल खाते (Goodwill Account) के नाम लिखा जा सकता है।

उदाहरण १७५

१ जनवरी १६५० से एक चालू आलोक (Private) व्यापार को लेने के लिये १ अप्रेल १६५० को एक लिमिटेड कम्पनी समामेलित हुई। १६५० के प्रथम तीन माह का विक्रय ३०,००० रु० था जबकि सारे वर्ष का विक्रय १,६०,००० रु० है। वर्ष का शुद्ध लाभ ४८,००० रु० था। वर्ष के खर्चे २७,००० रु० थे, जिसमें ५,००० रु० प्रबन्ध अभिकर्ता के पारिश्रमिक के, १,५०० रु० संचालकों के शुल्क के तथा ५०० रु० अंकेक्षण शुल्क के सम्मिलित हैं।

समामेलन से पूर्व उपार्जित लाभ की राशि तथा अंशधारियों के विभाजन के लिये प्राप्य राशि दिखलाते हुए खाता तैयार कीजिये।

प्रश्न

१. कम्पनी के 'पूँजीकरण' से आप क्या अर्थ समझते हैं ? एक कम्पनी की प्रारम्भिक पूँजी कितनी होनी चाहिये ?

२. निम्न मदों को समझाइये : अवास्तविक पूँजी (Nominal Capital), निर्गमित पूँजी, अनिर्गमित पूँजी, संचित पूँजी (Reserve Capital), समान पूँजी (Equity Capital) ।

३. अंश कितने प्रकार के होते हैं ? प्रत्येक की परिभाषा दीजिये ।

४. आप ऋण पत्रों के बारे में क्या जानते हैं ? भारत में इनके लोकप्रिय (Very Common) न होने के क्या कारण हैं ?

५ साधारणतया 'प्रारम्भिक व्यय' (Preliminary Expenses) नामक मद कम्पनी के शुरू होने से पहले कुछ वर्षों से चिट्ठे में लिखा जाता है । आप के विचार मे यह कहाँ तक उचित है तथा कौन से विभिन्न प्रकार के खर्चे इस शीर्षक के अन्तर्गत आते है ?

६ उन पुस्तकों के नाम बताओ जो एक कम्पनी को विधान के अनुसार साधारण आर्थिक पुस्तकों के अतिरिक्त रखना आवश्यक हैं । संक्षेप में प्रत्येक पुस्तक का वर्णन करो ।

७. एक लिमिटेड कम्पनी के अन्तिम खाते बनाते समय आप निम्न मदों का क्या करेंगे ? :—
(अ) कम्पनी के संस्थापन से पूर्व व पश्चात् उपार्जित लाभ ; (ब) ऋणपत्रधारियों को विमोचन के समय दी हुई प्रव्याजि; (स) अंशों व ऋण-पत्रों के निर्गमन पर दिया हुआ कमीशन ।

८. एक कम्पनी का हिसाब एक आलोक व्यापार (Private business) के हिसाब से किस प्रकार भिन्न है ?

९. एक लिमिटेड कम्पनी ने १,००,००० रु० के १,००० साधारण अंश १० रु० प्रति अंश प्रव्याजि पर तथा ५००, १०० रु० वाले ६% पूर्वाधिकार अंश सम मूल्य पर प्रस्तुत किये जो सब आहूत (Subscribed) एवं पूर्णदत्त हैं । इन व्यवहारों को कम्पनी की पुस्तकों में लिखो तथा चिट्ठे मे दिखाओ ।

१०. एक लिमिटेड कम्पनी ने १०० रु० वाले २,००० अंश निर्गमित किये जिन पर १० रु० प्रार्थना पर ३० रु० आवेदन पर तथा शेष २०—२० रु० आगामी याचनों में देय होंगे । सारा धन समय पर प्राप्त हुआ । इन व्यवहारों को कम्पनी की पुस्तकों में लिखो व बताओ कि यह चिट्ठे में किस प्रकार दिखाये जायँगे ।

११. एक लिमिटेड कम्पनी १ मई १९५१ को ३,००,००० रु० की अधिकृत पूँजी से, जो कि १,००० ६ प्रतिशत पूर्वाधिकार अंश प्रति अंश मूल्य १०० रु० तथा २,००० साधारण अंश प्रति अंश मूल्य १०० रु० में विभक्त है स्थापित हुई ।

उसी तिथि को कम्पनी ने एक प्रविवरण (Prospectus) ५०० पूर्वाधिकार अंश तथा १,४०० साधारण अंशों के याचन के लिये निकाला । दोनों अंशों के प्रभाग निम्न प्रकार देय हैं—२५ रु० प्रार्थना पर, ४० रु० आवटन पर तथा शेष एक याचन पर ।

सारे अंशों के लिये प्रार्थना-पत्र आये और आवटित किये गये तथा सारी आवंटन व याचन राशि रोकड़ी प्राप्त हुई ।

कम्पनी की खाता बही, रोकड़ वही व जर्नल में लेखा करने के लिये आवश्यक प्रविष्टियाँ कीजिये तथा बताइये कि चिट्ठे में अंश पूँजी किस प्रकार दिखाई जायेगी ।

१२ एक लिमिटेड कम्पनी ५,००,००० रु० की पूँजी से, जो १० रु० वाले अंशों में विभक्त थी, रजिस्टर की गई । पूँजी में से २०,००० अंश २ रु० प्रति अंश के कमीशन पर निम्न प्रकार देय हैं :—

२ रुपया प्रति अंश प्रार्थना पर, ५ रु० (प्रव्याजि सहित) आवंटन पर, तथा २ रु० प्रथम याचन पर जो कि तीन माह बाद होगी ।

प्रार्थना व आवंटन का रुपया समय पर प्राप्त हुआ परन्तु याचन पर ३०० अंशों के एक अंशधारी ने शेष सारी राशि भुगतान की तथा १,००० अंशों के ५ अंशधर अपने अंशों के प्रथम याचन की राशि देने में असमर्थ रहे ।

उपर्युक्त व्यवहारों का लेखा करने के लिये जर्नल प्रविष्टिया कीजिये तथा कम्पनी का प्रारम्भिक चिट्ठा बनाइये ।

उत्तर : चिट्ठा १,७८,९०० रु० ।

१३. एक लिमिटेड कम्पनी, ५ जनवरी १९५१ को २,००,००० रु० की निर्दिष्ट पूँजी से, जो कि १०,००० ६ प्रतिशत सचयी पूर्वाधिकार अंश (प्रत्येक अंश १० रु० का) तथा १०,००० साधारण अंश (प्रत्येक अंश १० रु० का) में विभक्त थी, स्थापित हुई ।

सारे पूर्वाधिकार अंश तथा ५,२०० साधारण अंश जनता को निम्न शर्तों पर अभिदान के लिये प्रस्तुत किये गये ।

रु० १—४—० प्रति अंश प्रार्थना पर ;
रु० १—४—० प्रति अंश १५ जनवरी १९५१ को हुये आवंटन पर ;

५ रु० प्रति अंश प्रव्याजि पर आवंटन किया जो कि २५ रु० प्रति अंश प्रार्थना पर, ३० रु० (प्रव्याजि सहित) आवंटन पर तथा शेष क्रमशः १ जुलाई व १ अक्तूबर को २५ रु० की दो समान किस्तों में देय होगा। एक अंशधारी के अतिरिक्त, जो अपने १० अंशों का अंतिम याचन देने में असमर्थ रहा है, सबसे आवंटन व याचन की राशि देय होने पर प्राप्त हुई। उचित नोटिस देने के पश्चात् १ नवम्बर को उसके अंश जब्त कर लिये गये। उपर्युक्त व्यवहारों का कम्पनी की पुस्तकों में लेखा करने के लिये आवश्यक प्रविष्टियाँ कीजिये।

उत्तर : रोकड़ पुस्तक का शेष ५,२२,५०० रु०।

२०. भार्गव ट्रेडिंग कम्पनी लि० की अधिकृत पूँजी ७,५०,००० रु० थी, जो ५०,००० साधारण अंश (प्रत्येक १० रु० का) तथा २५०० ६ प्रतिशत पूर्वाधिकार अंश (प्रत्येक १०० रु० का) में विभक्त थी। निर्गमित व पूर्णदत्त पूँजी में ४०,००० साधारण व २,० ० पूर्वाधिकार अंश थे।

अधिक कार्यशील पूँजी का प्रबन्ध करने के लिये कम्पनी ने शेष अधिकृत पूँजी निर्गमित करने का विचार किया, तथा विद्यमान अंशधारियों से निम्न प्रस्ताव किये.

साधारण अंशधारियों को १०,००० साधारण अंश १७ रु० ८ आ० प्रति अंश के हिसाब से प्रस्तुत किये जिन पर ७ रु० ८ आ० प्रार्थना पर (जिसमें से ३ रु० १२ आ०, प्रति अंश प्रव्याजि के हिसाब के हैं) तथा १० रु० आवटन पर (जिसमें से ३ रु० १२ आ० प्रव्याजि के हिसाब के है) देय है।

पूर्वाधिकार अंशधारियों से, ५०० पूर्वाधिकार अंश (प्रत्येक ११२ रु० ८ आ० का) जो कि ५० रु० प्रार्थना पर (प्रव्याजि सहित) तथा शेष आवटन पर देय हैं, देने का प्रस्ताव किया।

सारे अंश प्रार्थित हुये तथा शोधित हुए तथा १५,००० रु० का निर्गमन व्यय प्राप्त प्रव्याजि में से दिया गया।

कम्पनी की पुस्तकों में आवश्यक प्रविष्टियाँ कीजिये।

उत्तर : रोकड़ पुस्तक का शेष २,१६,२५० रु०।

२१. एक कम्पनी ने १,०००, ६% ऋण-पत्र प्रत्येक १०० रु० का, १० प्रतिशत बट्टे पर, जो कि १० रु० प्रार्थना पर तथा शेष आवंटन पर देय होंगे निर्गमित करने का निश्चय किया। १,२०० ऋण-पत्रों के लिये प्रार्थना-पत्र आये, तथा अधिक प्रार्थनाओं की राशि आवंटन पर देय राशि के अन्तर्गत रखकर प्रार्थना-पत्रों को घटाने (cut down) का निश्चय किया गया। आवंटन पर देय राशि प्राप्त हुई।

इन व्यवहारों का कम्पनी की पुस्तकों में लेखा करो।

२२. एक लिमिटेड कम्पनी ने १,००,००० रु० के ५% बंधक ऋण-पत्रों का निर्गमन किया। इस राशि का ४०,००० रु० २½ प्रतिशत प्रव्याजि पर अभिदान (subscribe) हुआ, ४०,००० रु० सममूल्य पर अभिदान हुआ व २०,००० रु० के ऋण पत्र १५,००० रु० के ऋण के लिये समपार्श्विक प्रतिभूति (collateral security) के रूप में कम्पनी के बैंक के पास जमा किये।

इन व्यवहारों का कम्पनी की पुस्तकों मे लेखा करने के लिये आवश्यक प्रविष्टियाँ कीजिये और बताइये कि ये चिट्ठे में किस प्रकार दिखाये जायेंगे।

२३. एक कम्पनी ने १,००,००० रु० के ५% ऋण-पत्र सममूल्य पर इस शर्त पर निर्गमित किये कि ५,००० रु० अंकित मूल्य (Face Value) के ऋण-पत्र प्रति वर्ष १०% प्रव्याजि पर शोधित (redeem) कर दिये जायेंगे। प्रथम तीन वर्ष के आवश्यक खाते बनाइये।

२४. एक लिमिटेड कम्पनी ने १०० ५% ऋण-पत्र (प्रत्येक १,००० रु० का) १० प्रतिशत बट्टे पर जो कि १५ वर्ष में (नाममात्र मूल्य का २०% प्रार्थना पर व शेष आवंटन पर देय) परिवर्तनीय हैं प्रस्ताव किया।

१ मार्च १९५१ को १२० ऋण-पत्रों के प्रार्थना-पत्र व प्रार्थना राशि प्राप्त हुई। ४ मार्च को १०० प्रस्तावित ऋण-पत्र आवटित हुये, तथा २० ऋण-पत्रों का प्राप्त हुआ धन जो कि निवेदित है परन्तु आवटित नहीं उसी दिन प्रार्थियों को वापिस लौटाया गया। आवंटन का दातव्य धन १ अप्रैल १९५१ को देय है तथा उसी तिथि को प्राप्त हुआ।

उपर्युक्त व्यवहारों से उत्पन्न हुई प्रविष्टियों को हिसाब की व्यवहारिक पुस्तकों में लिखिये, खाता बही में खताइये तथा तलपट बनाइये।

उत्तर : तलपट का योग १,००,००० रु०।

२५ एक लिमिटेड कं० (जिसकी अधिकृत पूँजी २,००,००० रु० है) के संचालकों ने एक प्रविवरण (Prospectus) निर्गमित किया जिसके द्वारा उन्होंने १५,००० अंश १० रु० प्रति अंश सममूल्य पर तथा ५,०००, ५% ऋण पत्र १०० रु० प्रति अंश ९८ रु० की दर पर प्रार्थना-पत्र आमन्त्रित किये। अंश निम्न प्रकार देय हैं : ५ रु० प्रार्थना पर, ३ रु० आवंटन पर तथा शेष तदनन्तर १ रु० की दो किस्तों में। ऋण पत्र-प्रार्थना पर पूर्णदत्त है।

कम्पनी की अवास्तविक पूँजी १,००० अंश (१०० रु० प्रति अंश) है। ५०० अंश जनता को निर्गमित हैं जो २५ रु० प्रति शेयर के हिसाब से ५ शेयर के अन्तिम याचन के अतिरिक्त पूर्ण दत्त हैं।

कम्पनी व्यापार का दायित्व लेने को तयार है। बैंक की रोकड़ विक्रेता ने स्वयं रख ली है। शेष सम्पत्तियाँ, एकस्व के अतिरिक्त जिसका १,०००) मूल्याकन किया गया, पुस्तक मूल्य पर लीं।

क्रय मूल्य ७५,००० रु० तय हुआ, जो २५,००० रु० रोकड़ में तथा शेष पूर्णदत्त अंशों में देय है।

कम्पनी के प्रारम्भिक खर्चे २,८५६ रु० हुये जो अभी तक नहीं दिये गये हैं।

उपर्युक्त व्यवहारों का लेखा करने के लिये कम्पनी की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये तथा कम्पनी का प्रारम्भिक चिट्ठा तैयार कीजिये।

उत्तर चिट्ठा १,०६,४७६।

३०. ३१ दिसम्बर १९५० को, जीवनलाल का निम्नलिखित चिट्ठा था : भूमि व भवन १,२०,००० रु०; रहतिया ७०,००० रु०; एकस्व १०,००० रु०; पुस्तक ऋण ६०,००० रु०; रोकड़ हस्ते तथा बैंक में ४०,००० रु०; प्राप्य बिल १०,००० रु० तथा व्यापारिक लेनदार १,००,००० रु०।

उन्होंने अपना व्यापार १ जनवरी १९५१ को २,००,००० रु० की अंश पूँजी से स्थापित एक लिमिटेड कम्पनी को बेचा, जिसकी अश पूँजी १०,००० साधारण अंश तथा १०,००० ६% पूर्वाधिकार अंशों में (१० रु० प्रति अंश) विभक्त थी। क्रय मूल्य २,००,००० रु० था जो सारे साधारण अ श, ५,००० पूर्वाधिकार अंश व ५०,००० रु० के बंधक ऋण-पत्र (सब सम मूल्य पर) निर्गमित करके तथा शेष रोकड़ से सतुष्ट किया गया।

पूर्वाधिकार अंशों का शेष (सममूल्य पर) तथा ५०० ऋण-पत्र (५ प्रतिशत प्रव्याजि पर जो आखिरी किस्त में देय है) निर्गमित किये तथा जनता ने निम्न भुगतान करके उन्हें लिया :—

	पूर्वाधिकार अंश	ऋण-पत्र
	रु०	रु०
प्रार्थना पर	१	२५
आवंटन पर	४	४०
३१ मार्च १९५१ को	५	४०

१६,००० रु० प्रारम्भिक खर्चे हुये।

कम्पनी के जर्नल व रोकड़ पुस्तक में आवश्यक प्रविष्टियाँ कीजिये।

उत्तर : चिट्ठा ४,०२,५००।

३१. मोहन ब्रादर्स के व्यापार को खरीदने के लिये मोहन ब्रॉदर्स लि० की, १,२५,००० रु० की अधिकृत पूँजी से जो १० रु० प्रति अ श में विभक्त थी, १ जनवरी १९५० में स्थापना हुई।

समस्त सम्पत्ति पुस्तक मूल्य पर ली गई तथा इसके अतिरिक्त १,००० पूर्णदत्त अंश विक्रेताओं को ख्याति के मूल्य के रूप में दिये गये।

१०,००० अ श जनता में प्रस्तुत किये गये जिनके लिये प्रार्थना-पत्र आये और उनका कुल मूल्य माँग लिया गया। ३०० रु० के अतिरिक्त शेष कुल माँगी हुई रकम ३१ दिसम्बर १९५० को प्राप्त हुई।

वर्ष के दौरान में १०० रु० वाले ५% २५० ऋण-पत्रों का भी १०% प्रव्याजि पर निर्गमन किया गया।

उपर्युक्त व्यवहारों के अतिरिक्त ३१ दिसम्बर १९५० को निम्न खाते खुले हुये थे :—

विविध लेनदार ८,९६० रु०; भूमि तथा भवन ५५,८९५ रु०; विनियोग २०,२२० रु०; प्रारम्भिक व्यय १,५६० रु०; संचित कोष २,००० रु०; रहतिया १२,६६० रु०; कल तथा यन्त्र २४,६०८ रु०; एकस्व २,५०० रु०; लाभ हानि खाता (अवितरित शेष) २,५५० रु०; बैंक में रोकड़ ९८७६ रु०; रोकड़ हस्ते ४८९ रु०; विविध देनदार १२,५७२ रु०।

३१ दिसम्बर १९५० को कम्पनी का चिट्ठा तैयार कीजिये।

उत्तर : चिट्ठा १,५०,७१० रु०।

३२. क्रीसैंट कं० लि० ए व बी के व्यापार को लेने के लिये स्थापित हुई, जो अपने लाभ को २:१ के अनुपात में विभाजित करते हैं तथा ३१ दिसम्बर १९५० को जिनका चिट्ठा निम्न था :—

भूमि व भवन ४०,००० रु०; यन्त्र २०,००० रु०; रहतिया २८,००० रु०; देनदार २२,२०० रु०; प्राप्य बिल ६,४०० रु०; विनियोग ४,८०० रु०; बैंक में रोकड़ ९,६०० रु०; ख्याति ८,००० रु०, देय बिल ७,२०० रु० विविध लेनदार २१,६०० रु०; श्रीमती ए का ऋण ३,२०० रु०; ए की पूँजी ६४,००० रु०; बी की पूँजी ४०,००० रु०।

सम्पत्तियों को (भूमि व भवन तथा रहतिये के अतिरिक्त जिन्हें क्रमशः ४५,००० रु० व २०,००० रु० में लेने का निश्चय किया) पुस्तक मूल्य पर लिया गया। फर्म ने विनियोग रख लिये और ४,००० रु० में बेचे वह श्रीमती ए का ऋण भी चुकायेगी। शेष दायित्व कम्पनी ने लिये।

क्रय मूल्य १,५१,६०० रु० तय हुआ जो निम्न प्रकार देय है :—३६,००० रु० के ५% ऋण-पत्र; ६०८ पूर्णदत्त साधारण अंश १०० रु० प्रति अंश तथा शेष रोकड़ी।

क्रय मूल्य की सम्पत्तियाँ व्यापार की बिक्री के आवश्यक समायोजन करने के पश्चात् ए व बी के पूँजी खातों में शेष राशियों के अनुपात में विभाजित होंगी।

ए व बी की पुस्तकें बन्द करते हुये आवश्यक खाते (Ledger Accounts) तयार करो, तथा कम्पनी की पुस्तकें खोलने के लिये जर्नल प्रविष्टियाँ करो।

३३. १ अप्रेल १६५० से एक निजी संस्था को लेने के हेतु दी स्वदेशी स्टोर्स लि० १ जुलाई १६५० को स्थापित हुई। ३१ मार्च १६५१ को समाप्त होने वाले वर्ष का शुद्ध लाभ (१,००० रु० सचालक शुल्क तथा १,२४० रु० प्रारम्भिक खर्चे देने के बाद) ६,७६० रु० था तथा वर्ष की बिक्री १,५२,००० रु० हुई जिसमें से ३८,००० रु० संस्थापन से पूर्व के थे।

बिक्री के अनुपात को विभाजन का आधार लेते हुये बताइये लाभ की कितनी राशि लाभांश के लिये उपलब्ध होगी।

उत्तर : लाभांश के लिये उपलब्ध लाभ ६,७६० रु०।

३४. १ जनवरी १६५० से एक चालू व्यापार को लेने के हेतु १ जून १६५० को एक लिमिटेड कम्पनी की स्थापना हुई। लेखों की जाँच करने के पश्चात् निम्नलिखित बातें पता लगीं :—

(अ) १६५० में वर्ष की कुल बिक्री ८०,००० रु० थी (पहले पाँच माह की कुल बिक्री २०,००० रु० थी)।

(ब) १६५० में वर्ष का शुद्ध लाभ ३०,००० रु० था, तथा कुल खर्चे (१,००० रु० सचालक शुल्क तथा ४,००० रु० प्रबन्ध अभिकर्ता के पारिश्रमिक सहित) २२,००० रु० थे।

(स) कम्पनी की अंश पूँजी १,००,००० रु० है।

कम्पनी की १६५० के वर्ष के लिये लाभांश की दर क्या होगी ? हल करके दिखलाइये।

उत्तर : ४ प्रतिशत।

३५. निम्नलिखित व्यापार को लेने के हेतु एक नई कम्पनी ५,००,००० रु० की पूँजी से, जो १०० रु० वाले ५,००० अंशों में विभक्त है, स्थापित की गई :—

	रु०			रु०
लेनदार	५,०००	भूमि व भवन		१,००,०००
साधारण-निधि	१०,०००	[illegible]		८०,०००
लाभ हानि खाता	८०,०००	फर्नीचर		१०,०००
पूँजी	१,६०,०००	रहतिया		१०,०००
		देनदार	६०,०००	
		[illegible]	५,०००	५५,०००
	२,५५,०००			२,५५,०००

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

उत्तर [illegible]

कम्पनी की अवास्तविक पूँजी १,००० अंश (१०० रु० प्रति अंश) है। ५०० अंश जनता को निर्गमित हैं जो २५ रु० प्रति शेयर के हिसाब से ५ शेयर के अन्तिम याचन के अतिरिक्त पूर्ण दत्त हैं।

कम्पनी व्यापार का दायित्व लेने को तयार है। बैंक की रोकड़ विक्रेता ने स्वयं रख ली है। शेष सम्पत्तियाँ, एकस्व के अतिरिक्त जिसका १,०००) मूल्यांकन किया गया, पुस्तक मूल्य पर लीं।

क्रय मूल्य ७५,००० रु० तय हुआ, जो २५,००० रु० रोकड़ में तथा शेष पूर्णदत्त अंशों में देय है।

• कम्पनी के प्रारम्भिक खर्चे २,८५९ रु० हुये जो अभी तक नहीं दिये गये हैं।

उपर्युक्त व्यवहारों का लेखा करने के लिये कम्पनी की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये तथा कम्पनी का प्रारम्भिक चिट्ठा तैयार कीजिये।

उत्तर चिट्ठा १,०६,४७६।

३०. ३१ दिसम्बर १९५० को, जीवनलाल का निम्नलिखित चिट्ठा था : भूमि व भवन १,२०,००० रु०; रहतिया ७०,००० रु०; एकस्व १०,००० रु०; पुस्तक ऋण ६०,००० रु०; रोकड़ हस्ते तथा बैंक में ४०,००० रु०; प्राप्य बिल १०,००० रु० तथा व्यापारिक लेनदार १,००,००० रु०।

उन्होंने अपना व्यापार १ जनवरी १९५१ को २,००,००० रु० की अंश पूँजी से स्थापित एक लिमिटेड कम्पनी को बेचा, जिसकी अंश पूँजी १०,००० साधारण अंश तथा १०,००० ६% पूर्वाधिकार अंशों में (१० रु० प्रति अंश) विभक्त थी। क्रय मूल्य ३,००,००० रु० था जो सारे साधारण अंश, ५,००० पूर्वाधिकार अंश व ५०,००० रु० के बंधक ऋण-पत्र (सब सम मूल्य पर) निर्गमित करके तथा शेष रोकड़ से संतुष्ट किया गया।

पूर्वाधिकार अंशों का शेष (सममूल्य पर) तथा ५०० ऋण-पत्र (५ प्रतिशत प्रव्याजि पर जो आखिरी किस्त में देय है) निर्गमित किये तथा जनता ने निम्न भुगतान करके उन्हे लिया :—

	पूर्वाधिकार अंश	ऋण-पत्र
	रु०	रु०
प्रार्थना पर	१	२५
आवंटन पर	४	४०
३१ मार्च १९५१ को	५	४०

१६,००० रु० प्रारम्भिक खर्चे हुये।

कम्पनी के जर्नल व रोकड़ पुस्तक में आवश्यक प्रविष्टियाँ कीजिये।

उत्तर : चिट्ठा ४,०२,५००।

३१. मोहन ब्रादर्स के व्यापार को खरीदने के लिये मोहन ब्रॉदर्स लि० की, १,२५,००० रु० की अधिकृत पूँजी से जो १० रु० प्रति अंश में विभक्त थी, १ जनवरी १९५० में स्थापना हुई।

समस्त सम्पत्ति पुस्तक मूल्य पर ली गई तथा इसके अतिरिक्त १,००० पूर्णदत्त अंश विक्रेताओं को ख्याति के मूल्य के रूप में दिये गये।

१०,००० अंश जनता में प्रस्तुत किये गये जिनके लिये प्रार्थना-पत्र आये और उनका कुल मूल्य माँग लिया गया। ३०० रु० के अतिरिक्त शेष कुल माँगी हुई रकम ३१ दिसम्बर १९५० को प्राप्त हुई।

वर्ष के दौरान में १०० रु० वाले ५% २५० ऋण-पत्रों का भी १०% प्रव्याजि पर निर्गमन किया गया।

उपर्युक्त व्यवहारों के अतिरिक्त ३१ दिसम्बर १९५० को निम्न खाते खुले हुये थे :—

विविध लेनदार ८,९६० रु०; भूमि तथा भवन ५५,८६५ रु०; विनियोग २०,२२० रु०; प्रारम्भिक व्यय १,५६० रु०; संचित कोष २,००० रु०; रहतिया १२,६६० रु०; कल तथा यन्त्र २४,६०८ रु०; एकस्व २,५०० रु०; लाभ हानि खाता (अवितरित शेष) २,५५० रु०; बैंक में रोकड़ ९८७६ रु०; रोकड़ हस्ते ४८९ रु०; विविध देनदार १२,५७२ रु०।

३१ दिसम्बर १९५० को कम्पनी का चिट्ठा तैयार कीजिये।

उत्तर : चिट्ठा १,५०,७१० रु०।

३२. क्रीसैंट क० लि० ए व बी के व्यापार को लेने के लिये स्थापित हुई, जो अपने लाभ को २:१ के अनुपात में विभाजित करते हैं तथा ३१ दिसम्बर १९५० को जिनका चिट्ठा निम्न था :—

भूमि व भवन ४०,००० रु०; यंत्र २०,००० रु०; रहतिया २८,००० रु०; देनदार २३,२०० रु०; प्राप्य बिल ६,४०० रु०; विनियोग ४,८०० रु०; बैंक में रोकड़ ६,६०० रु०; ख्याति ८,००० रु०, देय बिल ७,२०० रु० विविध लेनदार २१,६०० रु०; श्रीमती ए का ऋण ३,२०० रु०; ए की पूँजी ६४,००० रु०; बी की पूँजी ४०,००० रु०।

सम्पत्तियों को (भूमि व भवन तथा रहतिये के अतिरिक्त जिन्हें क्रमशः ४५,००० रु० व २०,००० रु० में लेने का निश्चय किया) पुस्तक मूल्य पर लिया गया। फर्म ने विनियोग रख लिये और ४,००० रु० में बेचे वह श्रीमती ए का ऋण भी चुकायेगी। शेष दायित्व कम्पनी ने लिये।

क्रय मूल्य १,५१,६०० रु० तय हुआ जो निम्न प्रकार देय हैं :—७६,००० रु० के ५% ऋण-पत्र; ६०८ पूर्णदत्त साधारण अंश १०० रु० प्रति अंश तथा शेष रोकड़ी।

क्रय मूल्य की सम्पत्तियाँ व्यापार की बिक्री के आवश्यक समायोजन करने के पश्चात् ए व बी के पूँजी खातों में शेष राशियों के अनुपात में विभाजित होंगी।

ए व बी की पुस्तकें बन्द करते हुये आवश्यक खाते (Ledger Accounts) तयार करो, तथा कम्पनी की पुस्तकें खोलने के लिये जर्नल प्रविष्टियाँ करो।

३३. १ अप्रैल १९५० से एक निजी संस्था को लेने के हेतु दी स्वदेशी स्टोर्स लि० १ जुलाई १९५० को स्थापित हुई। ३१ मार्च १९५१ को समाप्त होने वाले वर्ष का शुद्ध लाभ (१,००० रु० सचालक शुल्क तथा १,२४० रु० प्रारम्भिक खर्चे देने के बाद) ६,७६० रु० था तथा वर्ष की बिक्री १,५२,००० रु० हुई जिसमें से ३८,००० रु० सस्थापन से पूर्व के थे।

बिक्री के अनुपात को विभाजन का आधार लेते हुये बताइये लाभ की कितनी राशि लाभाश के लिये उपलब्ध होगी।

उत्तर : लाभाश के लिये उपलब्ध लाभ ६,७६० रु०।

३४. १ जनवरी १९५० से एक चालू व्यापार को लेने के हेतु १ जून १९५० को एक लिमिटेड कम्पनी की स्थापना हुई। लेखों की जाँच करने के पश्चात् निम्नलिखित बातें पता लगीं :—

(अ) १९५० में वर्ष की कुल बिक्री ८०,००० रु० थी (पहले पाँच माह की कुल बिक्री २०,००० रु०थी)।

(ब) १९५० वें वर्ष का शुद्ध लाभ ३०,००० रु० था, तथा कुल खर्चे (१,००० रु० सचालक शुल्क तथा ४,००० रु० प्रबन्ध अभिकर्ता के पारिश्रमिक सहित) २३,००० रु० थे।

(स) कम्पनी की अ श पूँजी १,००,००० रु० है।

कम्पनी की १९५० वें वर्ष के लिये लाभाश की दर क्या होगी ? हल करके दिखलाइये।

उत्तर : ४ प्रतिशत।

३५ निम्नलिखित व्यापार को लेने के हेतु एक नई कम्पनी ५,००,००० रु० की पूँजी से, जो १०० रु० वाले ५,००० अंशों में विभक्त है, स्थापित की गई :—

	रु०			रु०
लेनदार	५,०००	भूमि व भवन		१,००,०००
सामान्य-निधि	१०,०००	यत्र		८०,०००
लाभ-हानि खाता	७०,०००	फर्नीचर		१०,०००
पूँजी	१,९०,०००	रहतिया		२०,०००
		देनदार	७०,०००	
		घटाया संचय	५,०००	६५,०००
	२,७५,०००			२,७५,०००

व्यापार का क्रय मूल्य ३,००,००० रु० निश्चित हुआ जिसका १,५०,००० रु० तो १,५०० पूर्ण दत्त अंशों में तथा शेष १,५०,००० रु० विक्रेता के विकल्प (Option) पर रोकड़ी और पूर्ण दत्त अंश (१२० रु० प्रति अंश) निर्गमित करके चुकाया जायगा। विक्रेता ने उक्त शर्त पर १,००० अंश विकल्प किए। शेष अंश जनता में निर्गमित होंगे, जिन पर १० रु० प्रार्थना पर, २० रु० आवटन पर, ५० रु० प्रथम याचन पर (१० रु० प्रति अंश प्रव्याजि सहित) तथा ३० रु० अन्तिम याचन पर देय होंगे। निम्न प्रकार राशि प्राप्त हुई :—

३१,००० रु० प्रार्थना पर (आधिक्य प्राप्त राशि आवंटन के प्रयोग में लाई गई)

३६,००० रु० आवंटन पर

१,००,००० रु० प्रथम याचन पर तथा

६०,००० रु० अन्तिम याचन पर।

कम्पनी ने ३,००० रु० प्रारम्भिक व्यय किया। अंशों की प्रव्याजि प्रारम्भिक खर्चे व ख्याति अपलिखित करने के प्रयोग में लाई गई। जिन अंशों का याचन बकाया है उन्हें जब्त कर लिया गया। क्रय मूल्य पूरा चुकता कर दिया गया।

उपर्युक्त व्यवहारों का प्रभाव दिखलाने के लिये कम्पनी की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये तथा कम्पनी का चिट्ठा तैयार कीजिये।

उत्तर . चिट्ठा ४,७३,००० रु०।

अध्याय—२२

कम्पनी खाते (२)

परिमित दायित्व वाली कम्पनियो के व्यापारिक लेन-देन भी स्वतन्त्र व्यापारी या साझेदारी के व्यापारिक लेन-देनो की भाँति लिखे जाते हैं। विशेष लेन-देन और पूँजी सम्बन्धी लेन-देन का व्यौरा गत अध्याय मे दिया ही जा चुका है। अब कम्पनी के अन्तिम खातो के निर्माण और लाभ-वितरण सम्बन्धी हिसाब को समझाया जावेगा।

अन्तिम खाते (Final Accounts)

जो सामान्य सिद्धांत प्राइवेट व्यापार के व्यापार एवं हानि-लाभ खाते को तैयार करने मे अपनाये जाते हैं वे ही सिद्धान्त परिमित दायित्व वाली कम्पनियो के अन्तिम खाते तैयार करने में लागू होते हैं। परन्तु इनके अतिरिक्त भारतीय कम्पनी एक्ट के निम्नांकित नियमो का भी ध्यान रखना पड़ता है :—

हिसाब की बहियाँ (Books of Account) : – हरएक कम्पनी के लिए १३० वीं धारा के अनुसार उचित हिसाब बहियाँ कम्पनी के रजिस्टर्ड कार्यालय मे या जहाँ पर संचालक उचित समझें वहाँ रखना आवश्यक है। यह हिसाब बहियाँ संचालकों के निरीक्षण के लिए सदैव तैयार रहनी चाहिए।

इन उचित बहियो को रखने का उत्तरदायित्व प्रबन्धक एजेंटो (Managing Agents) या संचालकों पर (जहाँ पर प्रबन्धक एजेंट है) होता है और इनमे किसी भी तरह की कमी होने पर वे दंड के भागी होते हैं।

वार्षिक खाते (Annual Accounts) :—धारा १३१ के अनुसार हरएक कम्पनी के संचालकों को हर वर्ष (calendar year) कम्पनी की साधारण सभा मे वैलेंस-शीट और हानि-लाभ खाता (या आय-व्यय खाता जबकि कम्पनी व्यापारिक कम्पनी न हो), जो इस सभा की तिथि के नौ महीने से पहले की तिथि से पहले के न हो, रखने पड़ते हैं। इस तरह के खातो पर धारा १३३ के अनुसार व्यवस्थापक (Manager) या प्रबन्धक एजेंटो और कम से कम दो संचालको के हस्ताक्षर होना आवश्यक है।

धारा १३१ (२) के अनुसार, वैलेंस-शीट और हानि-लाभ खाता (या आय-व्यय खाता) कम्पनी के हिसाब-परीक्षक (Auditor) द्वारा जाँचा जाना चाहिए और इसके उपरान्त धारा १३१ (३) के अनुसार वैलेंस-शीट, हानि-लाभ खाता या आय-व्यय खाता और हिसाब-परीक्षक की रिपोर्ट की प्रतिलिपियाँ सभा से कम से कम १४ दिन पहले कम्पनी के हरएक सदस्य को भेजी जानी चाहिए। अन्त में धारा १३४ के अनुसार इस तरह से हस्ताक्षर की हुई इन हिसाव और रिपोर्टों की तीन-तीन प्रतिलिपियाँ, साधारण सभा मे रखी जाने के वाद, रजिस्ट्रार के पास भेज देनी चाहिए।

नोट :—कानून के अनुसार वैलेंस-शीट अधिक महत्त्वपूर्ण होने के कारण पहले रखी जाती है और हानि-लाभ खाता वाद में। लाभ-हानि खाता वैलेंस शीट का सहायक है और यह वताता है कि वैलेंस-शीट में दिखाया गया लाभ या हानि कैसे निकला है। अतः कक्षाओं में जो पद्धति हम अपनाते हैं वह गलत है क्योंकि हमें पहले वैलेंस-शीट और वाद मे हानि-लाभ खाता तैयार करना चाहिए।

वैलेंस-शीट की सामग्री (Contents of Balance Sheet) :—धारा १३२ (१) और (२) के अनुसार, वैलेंस-शीट में कम्पनी की सम्पत्ति और ऋणों का सारांश होना चाहिए। इसके साथ ही

कम्पनी की सम्पत्ति और ऋणों की प्रकृति, उनके मूल्य निर्धारण का ढंग भी देना चाहिए। बैलेस-शीट को भारतीय कम्पनी कानून की तृतीय शिड्यूल (Third Schedule) के फार्म "F" के अनुसार तैयार करना चाहिए। बैलेस-शीट में मुख्य-मुख्य सम्पत्ति और ऋणों की सूचना निम्न प्रकार दी जाती है :—

१. शेअर पूँजी —कम्पनी की अधिकृत पूँजी, जारी की हुई पूँजी, माँगी हुई पूँजी, प्राप्त की हुई पूँजी की रकमे हर श्रेणी के शेअरो के लिए अलग-अलग देनी चाहिए। इसके साथ-साथ वे शेअर जो रोकड़ी रुपये के प्रतिफल स्वरूप दिये गये हैं और जो रोकड़ी रुपये के बदले नहीं दिये गये हैं अलग-अलग रखना चाहिए।

२. रिजर्व .—भिन्न-भिन्न प्रकार के रिजर्व (चाहे वे लाभ से बने हो या और तरह से) अलग-अलग दिखलाये जाने चाहिए।

३ डिबेंचर .—ये एक अलग मद के रूप मे दी हुई प्रतिभूति की प्रकृति के विवरण सहित बैलेंस शीट मे दिखलाये जाते है।

४. ऋण —सुरक्षित (Secured) और असुरक्षित (Unsecured) ऋणों का पूर्ण ब्यौरा अलग से देना चाहिए और जो ऋण सुरक्षित है उनके लिये दी गई प्रतिभूति या धरोहर की प्रकृति के बारे में भी लिखना चाहिए।

५. चालू दायित्व (Current Liabilities) :—इनका विभाजन इस तरह से किया जाता है (अ) माल के वास्ते, (ब) खर्च के वास्ते, (स) बिलो के वास्ते और (द) अन्य बातो के लिए।

६. स्थायी सम्पत्ति खाता (Block Account) :—विभिन्न स्थायी सम्पत्तियाँ जैसे गुडविल (Goodwill), जमीन, इमारत, फर्नीचर, पेटेन्टस, इत्यादि जहाँ तक हो सके अलग-अलग ही दिखलाना चाहिए और हर एक में उसकी मूल लागत (Original Cost), बढ़ोतरी और घटोतरी जो साल भर में हुई हैं और उसकी कुल घटोतरी (Depreciation), जो कि बहियो मे लिखी जा चुकी है, अलग से दिखलाना चाहिए।

७. व्यापार का स्टॉक —मूल्य निर्धारण का ढंग स्पष्ट रूप से सूचित करना चाहिए।

८. व्यापारिक देनदार .—इन सब देनदारो को श्रेष्ठ, संदिग्ध और डूबने वालो की श्रेणी में विभाजित कर देना चाहिए। सुरक्षित और असुरक्षित को भी लिखना चाहिए।

९. विनियोग —इनकी प्रकृति और उनका मूल्य-निर्धारण करने की पद्धति देनी चाहिये।

१०. रोकड़ और अन्य बैलेस :—रोकड़ बाकी, बैंक के चालू खाते का बैलेस, स्थायी जमा खाते का बैलेंस, एजेण्टो के पास के रोकड़ी रुपयों का बैलेस आदि अलग-अलग लिखना चाहिए।

हानि-लाभ खाते की सामग्री —टेबल 'अ' के रेगुलेशन १०७ के अनुसार, जो सब कम्पनियो पर लागू होता है, हानि-लाभ खाते मे वर्णित रूप से कुल आय, उसके वे सब साधन जहाँ से वह आय प्राप्त हुई है और कुल खर्चे की रकम विशेषकर आफिस खर्च, वेतन और अन्य खर्चों को अलग-अलग दिखलाते हुये, स्पष्ट रूप से लिखना चाहिए। वर्ष की आय से उचित रूप से कटने वाले सब खर्चों को ध्यान में रखते हुए हानि-लाभ तैयार करना चाहिए ताकि न्याय-संगत हानि या लाभ का बैलेंस मालूम किया जा सके और वार्षिक साधारण सभा में रखा जा सके।

धारा १३२ (३) के अनुसार प्रबन्धक एजेण्टो की आमदनी (Remuneration) संचालको की फीस और घटोतरी (Depreciation) की कुल रकम हानि-लाभ खाते मे अलग-अलग दिखलानी चाहिए।

नोट—कानून के अनुसार हानि-लाभ खाता तैयार करना तो आवश्यक है परन्तु व्यापार खाता नहीं। परन्तु बहुत-सी कम्पनियाँ अपने हानि-लाभ खाते को तीन भागो में विभाजित कर देती हैं, प्रथम भाग व्यापार या उत्पादन लाभ बतलाता है, द्वितीय नेट लाभ और तृतीय वितरण

योग्य लाभ बतलाता है। परन्तु इन तीनों भागों को क्रमशः व्यापार खाता, हानि-लाभ खाता और विभाजन खाता (Appropriation Account) नहीं कहते और न इस लाभ को कुल लाभ या शुद्ध लाभ ही कहते है। सिर्फ हर एक भाग के बैलेस को दूसरे भाग मे ले जाते हैं और अन्तिम भाग के बैलेस को ही बैलेंस-शीट में ले जाते हैं।

लाभों का विभाजन (Disposal of Profits)

प्राइवेट व्यापार और परिमित दायित्व वाली कम्पनी के लाभ मालूम करने की पद्धति में कोई अन्तर नहीं है। कम्पनी का लाभ भी उस समय से सम्बन्धित सब खर्चे हानि-लाभ खाते मे लगा कर, चाहे वे वास्तव मे चुकाये गये हों या नहीं, मालूम किया जाता है। इन खर्चों में डिबेन्चरो का ब्याज, संचालक की फीस, प्रबन्ध एजेण्टो का प्रतिफल, हिसाब-परीक्षको की फीस, घटोतरी आयकर इत्यादि के खर्चे सम्मिलित किये जाते हैं।

परन्तु प्राइवेट व्यापार और परिमित दायित्व वाली कम्पनी के लाभ-विभाजन की पद्धति में बड़ा भारी अन्तर है। प्राइवेट-व्यापार का लाभ तो उस व्यापार के स्वामियो मे उनके निःश्चत हिस्सो के अनुसार विभाजित कर दिया जाता और उनके पूँजी या चालू खातो में लिख दिया जाता है, परन्तु कम्पनियो मे ऐसा नहीं होता। किसी वर्ष विशेष के लाभ को कम्पनी के हिस्सेदारो मे उसी वर्ष में नहीं बाँटा जाता अपितु यह रकम बैलेंस-शीट मे अलग से हानि-लाभ खाते के बैलेंस के रूप में दिखलाई जाती है। इसका विभाजन दूसरे वर्ष मे किया जाता है।

कम्पनी के लाभ का विभाजन करने का अधिकार संचालकों को होता है क्योंकि वे ही कम्पनी को सुचारु रूप से चलाने के लिए उत्तरदायी हैं। प्राइवेट व्यापार मे सारा का सारा लाभ-व्यापार-स्वामी ले सकते हैं; परन्तु परिमित दायित्व वाली कम्पनियो में हिस्सेदार सारा लाभ नहीं माँग सकते। संचालको को यह पूर्ण अधिकार है कि वे लाभ-विभाजन के सम्बन्ध मे सिफारिश करने से पहले रिजर्व के लिए कुछ धन जिसे वे उचित समझते हैं, अलग रख दें। कम्पनी के लाभ का विभाजन करने की पद्धति निम्न प्रकार से है :—

(अ) रिजर्व मे जो रकम रक्खी जाती हैं वह संचालक अपने अधिकारो के अनुसार हिस्सेदारों की किसी अनुमति के विना रखते हैं और इस तरह का विभाजन उसी साल के हानि-लाभ खाते में दिखलाया जाता है जिसके लाभ से वह किया गया है।

(ब) हिस्सेदारो को दिये जाने वाले लाभांश (dividends) के सम्बन्ध में उचित रकम की कानूनन सिफारिश तो संचालक करते हैं परन्तु अन्तिम रूप से हिस्सेदार साधारण सभा में अनुमोदित करते हैं। हिस्सेदारो को इसकी रकम बढ़ाने का कोई अधिकार नहीं है; परन्तु यदि वे चाहे ता इसको कम कर सकते हैं। व्यवहार मे संचालकों द्वारा सिफारिश किया हुआ लाभांश कम नहीं किया जाता है, क्योंकि यदि वे ऐसा करेंगे तो उन्हें ही नुकसान होगा।

सचालको द्वारा सिफारिश किया गया लाभांश उस वर्ष के खातों में, जिसके लाभ में से यह दिया जावेगा, दर्ज नहीं किया जाता है क्योंकि इस रकम के लिए कम्पनी तब तक उत्तरदायी नहीं है जब तक दूसरे वर्ष (हिस्सेदारों की सभा हिसाब-किताब पास करने के लिये दूसरे छिमाही वर्ष में ही जुड़ती है) हिस्सेदारों की साधारण सभा में यह स्वीकृत न हो जावे। इसलिए घोषित लाभांश दूसरे वर्ष के हानि-लाभ खाते मे लिखा जाता है। यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है जिसे विद्यार्थियों को अच्छी तरह समझना चाहिए।

(स) अन्तरिम लाभांश (Interim dividends) भी संचालक गण बिना हिस्सेदारों की अनुमति के दे सकते है। इसलिए इनका लेखा उसी वर्ष मे कर लिया जाता है जिस वर्ष के लाभ में से वे दिये गये हैं।

(द) कुछ कम्पनियो में (जो कि अधिक नहीं हैं) तो रिजर्व मे ट्रांसफर होने वाली रकम भी संचालकों द्वारा प्रस्तावित की जाती है और अन्तिम रूप मे हिस्सेदारो द्वारा साधारण सभा में स्वीकृत की जाती है। इस तरह की स्थिति मे रिजर्व भी दूसरे वर्ष के खातों में लिखे जाते हैं। सारांश में संचालकों द्वारा किये हुए विभाजन (जिनमे घटोतरी रिजर्व और अन्तरिम लाभांश भी सम्मिलित हैं) उसी वर्ष के हानि-लाभ खाते की डेबिट साइड में लिख दिये जाते हैं जिसमे वे किये गये हैं; जब कि हिस्सेदारों द्वारा साधारण सभा में अनुमोदित किये हुए विभाजन उस वर्ष के हानि-लाभ खाते में लिखे जाते हैं जिस वर्ष कि वे स्वीकृत होते है। हिस्सेदारो द्वारा स्वीकृत विभाजन निम्नलिखित दो प्रकार से किया जा सकता है :—

(अ) इस विभाजन की रकमे हानि-लाभ खाते के अन्तिम विभाग के डेबिट साइड मे रखी जाती हैं और गत वर्ष के लाभ का अंश क्रेडिट साइड मे रक्खा जाता है। यह पुरानी पद्धति है और इसमें दोष यह है कि गतवर्ष के लाभ विभाजन की रकमे इस वर्ष की लाभ-विभाजन की रकमों के साथ रख दी जाती हैं।

(ब) गत वर्ष के लाभ-विभाजन की रकमे गत वर्ष के लाभ मे से, जो क्रेडिट साइड मे दिखलाया जाता है, घटा दी जाती है। यही पद्धति आजकल अधिक काम मे आती है क्योंकि यह स्पष्ट रूप से यह बतलाती है कि गतवर्ष के लाभ मे से कौन सी रकम रखी गई है और चालू वर्ष के लाभ मे से कौन सी ?

नोट :—कुछ कम्पनियाँ इस लाभ विभाजन के ब्यौरे को हानि-लाभ खाते मे नहीं दिखलाती परन्तु यह सब ब्यौरा बैलेंस-शीट में हानि-लाभ खाते के शीर्षक के नीचे दिखला दिया जाता है।

लाभांश (Dividends) —लाभांश (Dividend) कम्पनी के लाभ का वह भाग है जो हिस्सेदारो को बाँटा जाता है। यह लाभांश संचालको द्वारा सिफारिश के रूप मे रक्खा जाता है और हिस्सेदारो द्वारा कम्पनी की साधारण सभा से स्वीकृत किया जाता है। परन्तु हिस्सेदारो को इसकी रकम मे वृद्धि करने का कोई अधिकार नहीं है। जब लाभांश इस तरह से प्रस्तावित होकर स्वीकृत हो जाता है तब इसे घोषित किया हुआ (declared) लाभांश कहते है। जब लाभांश इस तरह घोषित कर दिया जाता है तब वह कम्पनी के एक विशेष दायित्व के रूप में हो जाता है, जो हिस्सेदारो को देना है। परन्तु इस पर ब्याज नहीं दिया जाता।

भिन्न-भिन्न श्रेणी के शेअरो पर उनके अधिकारो के अनुसार लाभांश दिया जाता है। लाभांश या तो प्रतिशत के अनुसार या कुछ रकम प्रति शेअर के अनुसार घोषित किया जाता है जैसे लाभांश १० प्रतिशत या २॥) प्रति शेअर के हिसाब से हो सकता है। विशेष अधिकार वाले शेअर पर लाभांश प्रतिशत के रूप में होता है परन्तु साधारण और विलम्बित शेअरो पर यह किसी भी रूप मे हो सकता है।

कम्पनी की नियमावली के अनुसार लाभांश शेअरो के अंकित मूल्य पर या अंकित मूल्य के किसी वस्तुतः चुकाये गये भाग पर लगाया जा सकता है।

यह लाभांश उन हिस्सेदारो को दिया जाता है जिनका नाम साधारण सभा की तिथि पर या इस तिथि के तत्काल पहले कम्पनी के किसी अन्य रजिस्टरों मे रजिस्टर्ड होता है।

लाभांश पर आयकर —कम्पनी को अपने लाभ पर उच्चतम दरों के हिसाब से आयकर देना

पड़ता है चाहे इसके लाभ की रकम कितनी भी क्यों न हो। इस तरह दिया गया आयकर हिस्सेदारों के वास्ते दिया हुआ मान लिया जाता है। लाभांश घोषित करते समय कम्पनी यह स्पष्ट कर देती है कि लाभांश आयकर से मुक्त है या नहीं। इस पुस्तक मे आयकर को विचार मे नहीं लिया गया है।

लाभांश का भुगतान (Payment of Dividends) :- ज्योंही लाभांश घोषित किया जाये इसके भुगतान का प्रबन्ध करना पड़ता है। इस उद्देश्य के लिये एक लाभांश-सूची (Dividend List) तैयार की जाती है जिसमे हरएक हिस्सेदार का नाम, पता, उसके शेअरों का नम्बर, हरएक शेअर पर दी हुई रकम, उसके हिस्से का कुल लाभांश (Gross dividend), आयकर की रकम और नेट रकम, जो उसे दी जावेगी, लिखे जाते हैं। इसके उपरांत डिविडेन्ड वॉरण्ट (Dividend warrant) तैयार किये जाते हैं और हिस्सेदार के रजिस्टर्ड पते से भेज दिये जाते हैं। डिविडेन्ड वॉरण्ट के साथ एक लेखा, जिसमें इस बात का ब्यौरा होता है कि रकम कैसे निकली है, और कम्पनी द्वारा दिये गये आय-कर का प्रमाण-पत्र भी भेजा जाता है।

भारतवर्ष मे बहुत सी कम्पनियाँ हिस्सेदारो के माँगने पर ही डिविडेन्ड वॉरण्ट भेजती है अन्यथा नहीं। वार्षिक सभा से कुछ दिन पहले, यह सूचना दे दी जाती है कि यदि लाभांश स्वीकृत हो गया तो एक विशेष तिथि पर इसका भुगतान कर दिया जावेगा और हिस्सेदारो को स्वय इसे ले लेना चाहिए। इस पद्धति के कारण डिविडेण्ड-वॉरण्ट खो जाने से होने वाली हानि से कम्पनी बच जाती है।

अन्तरिम लाभांश (Interim dividend) :—संचालकों को हिस्सेदारों की अनुमति के बिना अन्तरिम लाभांश देने का अधिकार है। इस अन्तरिम लाभांश का मतलब उस लाभांश से है जो कि कम्पनी के हिस्सेदारो को आगामी लाभ की आशा में कम्पनी के खाते तैयार किये बिना परीक्षण और हिस्सेदारो की अनुमति के बिना दे दिया जाता है। दूसरे शब्दों मे, अन्तरिम लाभांश वह लाभांश है जो संचालको द्वारा दो साधारण सभाओ के बीच के समय मे घोषित किया जाता है।

विशेष अधिकार वाले शेअरो का बकाया लाभांश (Arrears of Preference Share Dividends) :—जब इस तरह के शेअरो का लाभांश शेष होता है तो यह कम्पनी का सदिग्ध ऋण होता है। इस तरह का लाभांश लाभ मे से ही दिया जा सकता है। इसलिये जब तक पर्याप्त लाभ न हो तब तक इस लाभांश के लिये कम्पनी का कोई उत्तरदायित्व नही है। इसलिए इस तरह के शेष रहे लाभांश का लेखा कम्पनी की बहियो में नहीं किया जाता, परन्तु बैलेंस शीट मे इसको भी एक नोट के रूप में दूसरे संदिग्ध ऋणो के साथ दिखला दिया जाता है।

न माँगा हुआ लाभांश (Unclaimed Dividend) :—हरएक कम्पनी में कुछ हिस्सेदार किसी न किसी कारण अपना लाभांश नही माँगते, इसलिये डिविडेण्ड खाते मे कुछ क्रेडिट बेलेंस रहता है। जब वर्ष के अन्त मे वार्षिक खाते तैयार किये जाते है तब इस बेलस का एक खाते मे जिसे "अयाचित लाभांश खाता" (Unclaimed Dividends Account) कहते है, ट्रान्सफर कर देते हैं और यह नया खाता बैलेंस-शीट मे ऋण के रूप मे दिखलाया जाता है।

कम्पनी की नियमावली के अनुसार इन न माँगे हुए लाभांश को निश्चित समय के बाद में जप्त कर लिया जाता है। परन्तु इस तरह के नियम की अनुपस्थिति मे यह लाभांश घोषणा के छ वर्ष तक 'समय मर्यादित' (Time barred) नहीं होता और इस बीच मे हिस्सेदार इसे कभी भी ले सकते हैं।

जब कभी न मांगे हुए डिविडेण्ड जप्त किये जाते हैं तब इनकी रकम साधारण रिजर्व (General Reserve) में ट्रान्सफर करनी चाहिये न कि हानि-लाभ खाते मे।

लाभ-विभाजन का हिसाब किताब :—जब लाभ विभाजन संचालकों द्वारा या कम्पनी की साधारण सभा मे स्वीकृत हो गया हो तो हानि-लाभ खाते का रिजर्व मे ट्रान्सफर की गई और डिविडेन्ड के लिये प्रयोग की गई रकमो से डेबिट करते है और विभिन्न रिजर्व और डिविडेन्ड खातों में क्रेडिट

किया जाता है। डिविडेण्ड के भुगतान हो जाने पर रकम डिविडेण्ड खाते नाम लिखकर रोकड़ या बैंक खाते जमा कर दी जाती है।

उदाहरण १७७

एक लिमिटेड कम्पनी १ जनवरी १६५० को १० रु०·वाले अंशों में विभक्त १,००,००० रु० की अधिकृत पूँजी के साथ, जो कि पूर्णतया निर्गमित व पूर्णदत्त है, स्थापित हुई। कम्पनी के हिसाब कलैंडर वर्ष के अन्त में बनाये जाते हैं। निम्नलिखित विवरणों से १६५० व १६५१ में कम्पनी की पुस्तकों मे आप लाभ नियोजन किस प्रकार दिखायेंगे :—

(अ) प्रथम वर्ष का लाभ २१,७५० रु० है, जिसमें से सचालकों ने ५,००० रु० ह्रास के लिये निकाले, व १०,०००रु० सामान्य निधि में हस्तान्तरित किये तथा उन्होंने १६५० वें वर्ष में आठ आना प्रति अंश लाभाश देने की सिफारिश की, बाकी शेष को आगे ले जाया गया।

(ब) १५ मार्च १६५१ को कम्पनी की प्रथम वार्षिक सामान्य सभा हुई जिसमें सचालकों द्वारा सिफारिश किया हुआ लाभाश स्वीकृत हुआ।

(स) १ अगस्त १६५१ को संचालकों ने आठ आने प्रति अंश का अन्तरिम लाभाश घोषित किया।

(द) ३१ दिसम्बर १६५१ को २५० रु० १६५० के लाभाश के व ५०० रु० अन्तरिम लाभांश के माँगे नहीं गये थे।

(य) १६५१ वें वर्ष का लाभ ३५,००० रु० था जिसमें से सचालकों ने ५,००० रु० ह्रास के लिये निकाले व १०,००० रु० सामान्य निधि मे हस्तान्तरित किये, तथा उन्होंने आगे ले जाने वाले शेष को छोड़ते हुये १६५१ वें वर्ष के लिये १ रु० प्रति अंश अन्तिम लाभाश की सिफारिश की।

१६५० की पुस्तके

जर्नल

		रु०	रु०
१६५०			
दि० ३१	लाभ-हानि खाता	१५,०००	
	ह्रास खाता		५,०००
	सामान्य निधि खाता		१०,०००
	संचालकों द्वारा किया गया लाभ-नियोजन		

ह्रास खाता

					रु०
			१६५०		
			दि० ३१	लाभ हानि खाता	५,००

सामान्य निधि खाता

					रु०
			१६५०		
			दि० ३१	लाभ-हानि खाता	१०,०००

लाभ-हानि खाता

	रु०		रु०
ह्रास	५,०००	शेष नी/ला	२१,७५०
सामान्य निधि	१०,०००		
शेष चिट्ठे को हस्तातरित	६,७५०		
	२१,७५०		२१,७५०

१९५१ की पुस्तकें

जर्नल

		रु०	रु०
१९५१ मार्च १५	लाभ-हानि खाता	५,०००	
	लाभांश खाता		५,०००
	प्रथम वार्षिक सभा में घोषित लाभांश		
अग० १	लाभ-हानि खाता	५,०००	
	अन्तरिम लाभांश खाता		५,०००
	संचालकों द्वारा घोषित लाभांश		
दि० ३१	लाभ-हानि खाता	१५,०००	
	ह्रास खाता		५,०००
	सामान्य निधि खाता		१०,०००
	संचालकों द्वारा किया गया नियोजन		

रोकड़ बही

		रु०			रु०
१९५१ जन० १	शेष नी/ला	?	१९५१ मार्च १५	लाभांश	४,७५०
			अग० १	अन्तरिम लाभांश	४,५००

लाभांश खाता

		रु०			रु०
१९५१ मार्च १५	रोकड़	४,७५०	१९५१ मार्च १५	लाभ-हानि खाता	५,०००

अन्तरिम लाभांश खाता

		रु०			रु०
१९५१ अग० १	रोकड़	४,५००	१९५१ अग० १	लाभ-हानि खाता	५,०००

ह्रास खाता

					रु०
			१९५१ जन १	शेष नी/ला	५,०००
			दिस. ३१	लाभ-हानि खाता	५,०००

सामान्य निधि खाता

					रु०
			१९५१ जन. १	शेष नी/ला	१०,०००
			दिस. ३१	लाभ-हानि खाता	१०,०००

लाभ-हानि खाता

	रु०			रु०
ह्रास	५,०००	शेष नी/ला		३५,०००
सामान्य निधि	१०,०००			
शेष आ/ले	२०,०००			
	३५,०००			३५,०००
अन्तरिम लाभांश	५,०००	शेष आ/ले	६,७५०	
शेष चिट्ठे को हस्तांतरित	१६,७५०	घटाया १९५० का लाभांश	५,०००	१,७५०
		शेष आ/ले		२०,०००
	२१,७५०			२१,७५०

बोनस (Bonus) :—संचालकों द्वारा लाभांश वितरण करने के लिए जो नीति निश्चित की जावे वह स्थिर होनी चाहिये डॉवाडोल नहीं। यदि लाभांश प्रति वर्ष बदलता रहेगा तो कम्पनी के शेअरो की कीमत बहुत अस्थिर रहेगी और इससे हिस्सेदारों के स्वार्थों पर बड़ा कुठाराघात होगा। डिविडेन्ड की दरे साधारणतः स्थिर रखने के वास्ते शुरू मे कुछ रूढ़िवादी होना ही उचित है। जब डिविडेन्ड की कोई दरें निश्चित करली गई हो तो जहाँ तक हो सके उन्हे स्थायी रखना चाहिए। इसलिए शुरू में लाभांश की दरे कम होनी चाहिए ताकि उन्हें कम करने का मौका कभी न आने पावे और यदि कभी अधिक-लाभ वितरण करना हो तो इसे बोनस (Bonus) के रूप में देना अधिक उचित होगा।

बोनस का अर्थ अतिरिक्त-लाभांश (Extra dividend) से है जिसकी स्थिरता की कोई गारन्टी नहीं है। इसको प्राप्त करने वाला यह जानता है कि यह शायद दूसरे वर्ष न मिल सके। कम्पनी बोनस दो स्थितियों में घोषित कर सकती है :—

(अ) रोकड़ी बोनस (Cash Bonus) :—जब किसी वर्ष कम्पनी का लाभ साधारण लाभ से बहुत अधिक हो जाता है, तो साधारण लाभांश को बढ़ाने के स्थान पर, लाभांश के साथ बोनस भी दिया जा सकता है। उदाहरणार्थ, यदि किसी कम्पनी ने गत वर्षों मे शेअर पूँजी पर १० प्रतिशत लाभांश दिया हो परन्तु सन् १६४४ में लाभ इतना बढ़ गया कि २० प्रतिशत तक लाभांश दिया जा सकता है, तो ऐसी दशा मे शेअर पूँजी पर २० प्रतिशत लाभांश न देकर १० प्रतिशत लाभांश और १० प्रतिशत बोनस के रूप मे देना अधिक उचित होगा।

इस तरह का बोनस अन्य लाभांश के साथ रोकड़ी रुपये मे ही दिया जावेगा और इसका लेखा भी लाभांश की भाँति ही होगा। जब बोनस रोकड़ी रुपये मे दिया जाता है तो इसे "रोकड़ी बोनस" कहते हैं।

उदाहरण १७८

३१ दिसम्बर १६४६ को, राजपूताना कैमिकल वर्क्स लि० के चिट्ठे मे, स्थाई सम्पत्ति पर ह्रास व प्रबन्ध अभिकर्ता कमीशन का प्रबन्ध करने से पूर्व लाभ हानि खाते का क्रेडिट शेष १,७२,६७० रु० था।

कम्पनी के संचालकों ने ह्रास के लिये २५,००० रु० का प्रबन्ध करने का निश्चय किया, तथा प्रबन्ध अभिकर्ता १६,००० रु० कमीशन लेने के अधिकारी थे।

कम्पनी की दत्त अंश पूँजी मे १०० रु० वाले ३,००० ६% पूर्वाधिकार अंश तथा १० रु० वाले ३०,००० साधारण अंश हैं व सब पूर्ण दत्त हैं।

फरवरी १६५० में हुई कम्पनी की वार्षिक सामान्य सभा में निम्नलिखित नियोजन स्वीकृत हुये (अ) कर के लिये ३०,००० रु० सचय करना (ब) २५,००० रु० पुनर्निर्माण सचय में हस्तान्तरित करना; (स) पूर्वाधिकार अंशों पर वर्ष का लाभाश अदा करना; (द) साधारण अंशधारियों को ८ आने लाभाश व ४ आने प्रति अंश रोकड़ बोनस अदा करना तथा (य) शेष आगे ले जाना।

१६५० वें वर्ष में कम्पनी का लाभ २,१५,००० रु० था तथा वर्ष मे साधारण अंशों पर १२ आने प्रति अंश अन्तरिम लाभाश दिया।

१६५० वे वर्ष के लिये कम्पनी का लाभ-हानि नियोजन खाता बनाओ।

१६५० का लाभ-हानि नियोजन खाता

	रु०		रु०	रु०
अन्तरिम लाभाश	२२,५००	शेष गत वर्ष से लाया गया		१,७२,६७०
शेष चिट्ठे को हस्तातरित	२,२८,६७०	घटाया ह्रास	२५,०००	
		प्रबन्ध अभिकर्तृ कमीशन	१६,०००	
		कर सचय	३०,०००	
		पुनर्निर्माण सचय	२५,०००	
		पूर्वाधिकार अंश लाभाश	१८,०००	

		साधारण अंश लाभांश	१५,०००	
		साधारण अंश बोनस	७,५००	१,३६,५००
				३६,१७०
		शेष १९५० का लाभ		२,१५,०००
	२,५१,१७०			२,५१,१७०

(ब) पूँजी-बोनस (Capital Bonus) :—जब कम्पनी के पास बहुत सा पुराना लाभ साधारण या गुप्त रिजर्वो मे एकत्रित हो रहा हो और चालू लाभ भी काफी हो और वह अपने हिस्सेदारो को एक विशेष बोनस इस लाभ मे से देना चाहती हो तो यह सारा बोनस रोकड़ी रुपये देना संभव नहीं होगा क्योकि यदि ऐसा किया जावे तो कम्पनी की रोकड़ी स्थिति ही बहुत खराब हो जायगी।

इसलिए जब कम्पनी कोई विशेष बोनस अपने एकत्रित लाभ मे से घोषित करती है तब या तो बोनस की यह रकम अर्द्ध-दत्त शेअरो का पूर्ण दत्त शेअर करने के वास्ते या पूर्ण-दत्त नये शेअरों या डिबेंचरों को जारी करने के काम मे लिया जाता है। इसी बोनस को पूँजी बोनस (Capital Bonus) कहते हैं। इस रूप मे वितरण किया हुआ लाभ सदैव के लिए शेअर पूँजी का एक अंग हो जाता है और इसे 'लाभ को पूँजी में परिणित करने की विधि' (Capitalisation of Profits) कहते हैं और इस तरह से दिये गये शेअरो को बोनस शेअर कहते हैं।

जब बोनस अर्द्ध दत्त शेअरो को पूर्ण दत्त शेअर बनाने के काम मे लिया जाता है तो अर्द्ध दत्त शेअरो से इस उद्देश्य के लिए अन्तिम माँग (Final Call) की जाती है। परन्तु जब नये बोनस शेअर इस बोनस की सन्तुष्टि मे जारी किये जाते हैं तो कम्पनी के पास काफी न जारी की हुई शेअर पूँजी होनी चाहिए अन्यथा कम्पनी को अपनी अधिकृत पूँजी बढ़ानी पड़ेगी।

हिसाब-लेखा :—जब पूँजी बोनस घोषित किया जाता है तब कम्पनी की बहियों मे निम्नलिखित लेखा किया जाता है :—

१. जितनी भी रकम बोनस के रूप में दी जाने वाली है उससे रिजर्व फंड अथवा हानि-लाभ खाते को डेबिट और बोनस-खाते को क्रेडिट किया जाता है।

२. जब बोनस की रकम अर्द्ध-दत्त शेअरो को पूर्ण-दत्त शेअरो में परिणित करने के काम में ली जाती है तो अन्तिम माँग खाते (Final Call Account) को डेबिट और शेयर पूँजी खाते को क्रेडिट किया जाता है और उसके उपरान्त बोनस खाते को डेबिट और अन्तिम माँग खाते को उसी रकम से क्रेडिट किया जाता है।

३. जब बोनस की रकम नये बोनस शेअर जारी करने के काम मे ली जाती है तो बोनस खाते को डेबिट किया जाता है और शेअर पूँजी खाते को क्रेडिट किया जाता है। यदि बोनस शेअर प्रीमियम पर दिये गए हों तो प्रीमियम को साधारण ढंग से लिख लिया जाता है।

४. जब बोनस गुप्त रिजर्व मे से दिया जाता है तब प्रथम गुप्त रिजर्व, उस सम्पत्ति विशेष को जिसका मूल्य बढ़ाना है डेबिट करके और रिजर्व फंड को क्रेडिट करके, साधारण रिजर्व (Open Reserve) में परिणित किया जाता है।

उदाहरण १७९

एक लिमिटेड कम्पनी ने १० रु० वाले पूर्ण दत्त अंशों में ५,००,००० रु० की अंश पूँजी पर जिसका बाजार में ४५ रु० प्रति अंश मूल्य है, १५ अप्रैल १९५१ को १०० प्रतिशत की दर पर संचित कोष में से बोनस बाँटा, जो पूर्ण दत्त अंशों में ३० रु० प्रति अंश प्रव्याजि पर देय है।

उपर्युक्त व्यवहारों का लेखा करने के लिये आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये।

जर्नल

		रु०	रु०
१९५१ अप्रेल १५	संचिति कोष खाता	५,००,०००	
	बोनस खाता		५,००,०००
	संचिति कोष में से १००% बोनस घोषित		
	बोनस खाता	५,००,०००	
	अंश पूँजी खाता		१,२५,०००
	अंश प्रव्याजि खाता		३,७५,०००
	१२,५०० पूर्णदत्त १० रु० वाले अंश ३० रु० प्रति अंश प्रव्याजि पर आवंटित करके बोनस का भुगतान		

उदाहरण १८०

एक लिमिटेड कम्पनी की अधिकृत पूँजी १० रु० वाले ३०,००० अंशों में विभक्त है, जिसमें से २५,००० अंश निर्गमित हैं व उन पर ८ रु० प्रति अंश याचित व दत्त है। उसका संचिति कोष २,००,००० रु० है।

संचिति कोष का आधा भाग बोनस के रूप में, विद्यमान अंशों को पूर्ण दत्त करके तथा ५,००० पूर्णदत्त अंश बोनस अंश के रूप में निर्गमित करके, बाँटने का निश्चय किया।

उपर्युक्त व्यवहारों का लेखा करने के लिये जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये।

जर्नल

		रु०	रु०
	संचिति कोष	१,००,०००	
	बोनस खाता		१,००,०००
	संचिति कोष में से बोनस घोषित किया		
	अंश अन्तिम याचना खाता	५०,०००	
	अंश पूँजी खाता		५०,०००
	२५,००० अंशों पर २ रु० प्रति अंश का अन्तिम याचन		
	बोनस खाता	१,००,०००	
	अंश अन्तिम याचन खाता		५०,०००
	अंश पूँजी खाता		५०,०००
	वर्तमान अंशों को पूर्ण दत्त करके तथा ५,००० नये बोनस अंश निर्गमित करके बोनस का भुगतान		

उदाहरण १८१

एक लिमिटेड कम्पनी की अधिकृत पूँजी ५० रु० वाले ५०,००० अंशों में विभक्त है जिसमें से ४०,००० अंश पूर्ण दत्त हैं। यह निश्चय किया गया कि (अ) कल व यन्त्र को २,००,००० रु० से तथा स्वायत्त भवन को ३,००,००० रु० से अपलिखित किया जाय तथा (ब) अनिर्गमित अंशों को प्रत्येक चार अंशों पर ५० रु० वाला एक पूर्ण दत्त अंश बोनस के रूप में निर्गमित किया जाय।

कम्पनी की पुस्तकों में उपर्युक्त निश्चय का लेखा करने के लिये आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये।

जर्नल

		रु०	रु०
	कल व यन्त्र खाता	२,००,०००	
	स्वायत्त भवन खाता	३,००,०००	
	संचिति कोष		५,००,०००
	गत अत्यधिक ह्रास लौटाया गया (written back)		

विवरण		
संचिति कोष	५,००,०००	
बोनस खाता		५,००,०००
संचिति कोष में से बोनस घोषित		
बोनस खाता	५,००,०००	
अंश-पूँजी खाता		५,००,०००
बोनस अंश निर्गमित करके बोनस का संतुष्टीकरण		

उदाहरण १८२

३१ दिसम्बर १६५० को एक लिमिटेड कम्पनी के चिट्ठे में निम्न पद थे :—(अ) १०० रु० वाले २,००० पूर्ण दत्त अंशों में विभक्त अंश पूँजी (ब) संचिति कोष १,५०,००० रु० (स) लाभ-हानि खाता (क्रे०) ५५,७२१ रु०।

१५ फरवरी १६५१ को हुई कम्पनी की वार्षिक आम सभा में निम्नलिखित नियोजन स्वीकृत हुये :—

(अ) कर सचय के लिये २०,००० रु० ।

(ब) कर्मचारी बोनस के लिये ५,००० रु० ।

(स) धर्मादा कोष के लिये ५,००० रु० ।

(द) लाभाश १० रु० व नकद बोनस २ रु० प्रति अंश तथा

(य) ५० रु० प्रति अश पूँजी बोनस [जो सचिति कोष से घोषित करना है तथा जिसकी संतुष्टि पूर्ण दत्त अंशों के आवटन द्वारा करनी है]

इन नियोजनों का लेखा करने के लिये जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये तथा १६५१ का लाभ-हानि खाता दिखलाइये।

जर्नल

दिनांक	विवरण	रु०	रु०
२६५१ मई १५	लाभ-हानि खाता	५४,०००	
	कर संचिति खाता		२०,०००
	कर्मचारी बोनस खाता		५,०००
	दान-कोश		५,०००
	लाभाश खाता		२०,०००
	बोनस खाता		४,०००
	लाभ का नियोजन		
	सचिति कोष खाता	१,००,०००	
	पूँजी बोनस खाता		१,००,०००
	संचिति कोष में से पूँजी बोनस घोषित		
	पूँजी बोनस खाता	१,००,०००	
	अश पूँजी खाता		१,००,०००
	पूँजी बोनस की संतुष्टि के लिए अंश आवटित किये		

१६५१ का लाभ-हानि खाता

				रु०
		शेष १६५० का लाया गया		५५,७२१
		घटाये नियोजन :—		
		कर संचिति	२०,०००	
		कर्मचारी बोनस	५,०००	
		दान कोष	५,०००	
		१६५० का लाभांश	२०,०००	
		१६५० का बोनस	४,०००	५४,०००
				१,७२१
		शेष नी/ला (१६५१ का लाभ)		?

टिप्पणी :—१९५० का लाभ वितरण के लिए १९५१ में लाया गया है। इसमें से किये गये नियोजन (appropriations) लाभ-हानि खाते के नाम पक्ष मे भी दिखाये जा सकते हैं, किन्तु उस लाभ में से, जिसमें से कि नियोजन किये गये हैं, घटाकर दिखाना ही अधिक उपयुक्त समझा जाता है।

उदाहरण १८३

३१ दिसम्बर १९४९ को एक लिमिटेड कम्पनी के चिट्ठे में निम्न पद प्रविष्ट हुये।

(अ) अधिकृत पूँजी—१०० रु० वाले १०,००० अंश।

(ब) निर्गमित तथा दत्त पूँजी—५,००० पूर्ण दत्त अंश।

(स) १,००० रु० वाले १०० ५% बंधक ऋण-पत्र, १ अक्तूबर १९४९ को विमोचित।

(द) लाभ-हानि खाता (क्रे०) १,६९,३५० रु०।

१९५० वें वर्ष में कम्पनी के निम्न व्यवहार हुये :—

(१) संचालकों की सिफारिश पर, कम्पनी ने १५ जून १९५० को हुई अपनी वार्षिक आम सभा में १९४९ के लाभ इस प्रकार वितरित करने का निश्चय किया : —५०,००० रु० एक नवीन प्रारम्भ हुये यंत्रोन्नति कोष में हस्तान्तरण करना, १,००,००० रु० पूर्ण दत्त बोनस अंशों के रूप में अंशधारियों मे वितरण करना तथा शेष आगे ले जाना।

(२) ऋण-पत्रों के विमोचन के लिये राशि प्राप्त करने के विचार से शेष अंश ३० रु० प्रति अंश प्रव्याजि पर निर्गमित किये, जो ८० रु० आवेदन पर तथा शेष आवंटन पर जो १ सितम्बर १९५० को पूर्ण हुआ, देय हैं। आवंटन पर देय सब धन २० सितम्बर १९५० तक प्राप्त हुआ।

(३) दातव्य तिथि को ५% प्रव्याजि पर ऋण-पत्र विमोचित किये गये, परन्तु वर्ष के अन्त में १० ऋण-पत्रों का भुगतान नहीं माँगा गया (unclaimed)।

यह मानते हुये कि १९५० का लाभ १,४७,२५० रु० था व ऋण-पत्रों के विमोचन की प्रव्याजि निर्गमित अंशों की प्रव्याजि में से घटाई गई। (अ) उपर्युक्त व्यवहारों का लेखा कम्पनी के जर्नल व रोकड़ वही में कीजिये, (ब) खाता वही में अंश पूँजी व ऋण-पत्र खाते तथा अन्य खाते दिखाइये। ३१ दिसम्बर १९५० को उसके चिट्ठे में उपर्युक्त शेष किस प्रकार दिखाये जायेंगे ?

जर्नल

१९५०		रु०	रु०
जून १५	लाभ-हानि खाता	१,५०,०००	
	यन्त्रोन्नति कोष खाता		५०,०००
	पूँजी बोनस खाता		१,००,०००
	५०,००० रु० यन्त्रोन्नति कोष में तथा १,००,००० रु० पूँजी बोनस मे हस्तातरित		
	पूँजी बोनस खाता	१,००,०००	
	अंश पूँजी खाता		१,००,०००
	बोनस अंशों के रूप मे १०० रु० वाले १,००० अंशों का निर्गमन		
सि० १	अंश आवेदन तथा आवंटन खाता	३,२०,०००	
	अंश पूँजी खाता		२,००,०००
	अंश प्रव्याजि खाता		१,२०,०००
	४,००० अंशों पर ५० रु० आवेदन तथा ३० रु० प्रव्याजि राशि		
	अंश आवेदन तथा आवंटन खाता	२,००,०००	
	अंश पूँजी खाता		२,००,०००
	आवंटन पर देय राशि		
अक्टू० १	ऋण-पत्र खाता	१,००,०००	
	विमोचन प्रव्याजि खाता	५,०००	
	ऋण-पत्र धारी		१,०५,०००
	ऋण-पत्र व विमोचन प्रव्याजि ऋण-पत्रधारियों के खाते में हस्तातरित		
दि० ३१	अंश प्रव्याजि खाता	५,०००	
	विमोचन प्रव्याजि खाता		५,०००
	विमोचन प्रव्याजि अंश प्रव्याजि में हस्तांतरित		

रोकड़ बही

		रु०			रु०
१६५० सि० १	अंश आवेदन तथा आवंटन खाता	३,२०,०००	१६५० दिस. ३१	ऋण-पत्र धारी	६४,५००
१०	,, ,, ,, ,, ,,	२,००,०००			

अंश पूँजी खाता

					रु०
			१६५० जन० १	शेष नी/ला	५,००,०००
			सि० १	बोनस खाता	१,००,०००
				अंश आवेदन तथा आवंटन	४,००,०००

ऋण-पत्र खाता

		रु०			रु०
१६५० अक्टू. १	ऋण-पत्र धारी	१,००,०००	१६५० जन० १	शेष नी/ला	१,००,०००

ऋण-पत्र विमोचन प्रव्याजि खाता

		रु०			रु०
१६५० अक्टू. १	ऋण-पत्र धारी	५,०००	१६५१ दिस. ३१	अंश प्रव्याजि खाता	५,०००

ऋण-पत्र धारी

		रु०			रु०
१६५० दि० ३१	रोकड़	६४,५००	१६५० अक्टू. १	ऋण-पत्र	१,००,०००
	शेष आ/ले	१०,५००		ऋण-पत्र विमोचन प्रव्याजि	५,०००
		१,०५,०००			१,०५,०००

अंश प्रव्याजि खाता

		रु०			रु०
१६५० दि० ३१	ऋण-पत्र विमोचन प्रव्याजि	५,०००	१६५० सि० १	अंश आवेदन तथा आवंटन	१,२०,०००
	शेष नी/ले	१,१५,०००			
		१,२०,०००			१,२०,०००

३१ दिसम्बर १६५० को चिट्ठा

दायित्व	रु०	रु०
अधिकृत पूँजी :—		
१०,००० साधारण अंश प्रत्येक "०० रु० का		१०,००,०००
निर्गमित एवं दत्त पूँजी :—		
६,००० साधारण अंश प्रत्येक १०० रु० का नकद पूर्ण दत्त	६,००,०००	
१,००० साधारण अश प्रत्येक १०० रु० का बोनस अंश रूप में निर्गमित	१,००,०००	१०,००,०००
विमोचित ऋण-पत्रों पर दायित्व जो माँगा नहीं गया (not Claimed)		१०,५००
यन्त्रोन्नति कोष		५०,०००
अंश प्रव्याजि खाता		१,२५,०००
लाभ-हानि खाता		१,६४,६००

उदाहरण १८४

स्टार मैन्यूफैक्चरिंग कम्पनी लि० की निर्दिष्ट पूँजी ५,००,००० रु० थी जो १०० रु० वाले २,५०० साधारण अंशों तथा १०० रु० वाले २,५०० ६% पूर्वाधिकार अंशों में विभक्त है। सारे अंश निर्गमित व पूर्णतया याचित हैं। ३१ दिसम्बर १६५० को कम्पनी की पुस्तकों से निम्नलिखित तलपट उद्धृत किया गया :—

	रु०	रु०
साधारण अंश पूँजी		२,५०,०००
६% पूर्वाधिकार अंश पूँजी		२,५०,०००
अवशिष्ट याचन (साधारण अंश)	५००	
अवशिष्ट याचन (पूर्वाधिकार अंश)	१,०००	
रहतिया (१ जनवरी १९५०)	१,६४,७१०	
उत्पादक-मजदूरी	६५,६००	
कोयला व कोक	२१,०००	
क्रय व विक्रय	७,२१,५६०	१०,०१,०७०
विक्रय पर भाड़ा	७,५००	
क्रय पर भाड़ा	१,५१०	
आय-कर	१७,८००	
बैंक ऋण (६%)		७५,०००
बैंक ऋण पर व्याज	२,२५०	
विविध देनदार व लेनदार	१,४०,६००	५१,६२०
लाभ-हानि खाता (१ जनवरी १९५० को शेष)		२४,२००
स्वायत्त निर्माण गृह	१,७१,०००	
यत्र व कल	६७,८००	
किराया, दर व बीमा	१४,२१०	
सचालक शुल्क	१२,०००	
कार्यालय वेतन व व्यय	१८,३००	
वापिसी	१६,४००	८,२००
प्रारम्भिक खर्चे	१०,०००	
हस्तान्तरण शुल्क		३००
रोकड़ बैंक में	१,१४,२२०	
रोकड़ हस्ते	२,७३०	
	१६,६०,६९०	१६,६०,६९०

३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का व्यापार व लाभ-हानि खाता तथा उस तिथि को चिट्ठा तैयार कीजिये। इन खातों को बनाते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखिये —

(अ) ५,००० रु० प्रारम्भिक खर्चों के अपलिखित करो (ब) यत्र व कल पर १०% ह्रास अपलिखित करो (स) बैंक ऋण पर देय ६ माह के व्याज का प्रवन्ध करो (द) ७,५०० रु० संदिग्ध ऋण के लिये सचय करो (य) १४,६४० रु० संचित कोष में हस्तातरित करो (फ) ३१ दिसम्बर १९५० को रहतिये का मूल्य १,६४,००० रु० था।

३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का व्यापार तथा लाभ-हानि खाता

		रु०			रु०
रहतिया १-१-५० को		१,६४,७१०	विक्रय	१०,०१,०७०	
क्रय	७,२१,५६०		घटाया वापिसी	१६,४००	९,८४,६७०
घटाया वापिसी	८,२००	७,१३,३६०	रहतिया ३१-१२-५० को		१,६४,०००
मजदूरी (उत्पादक)		६५,६००			
कोयला व कोक		२१,०००			
भाड़ा		१,५१०			
सकल लाभ आ/ले		१,२२,४९०			
		११,४८,६७०			११,४८,६७०
भाड़ा		७,५००	सकल लाभ नी/ला		१,२२,४९०
बैंक ऋण पर व्याज		४,५००	हस्तातरण शुल्क		३००
किराया, दर व बीमा		१४,२१०			
संचालक शुल्क		१२,०००			

रोकड़ बही

		रु०			रु०
१६५० सि० १	अंश आवेदन तथा आवंटन खाता	३,२०,०००	१६५० दिस. ३१	ऋण-पत्र धारी	६४,५००
१०	" " " " "	२,००,०००			

अंश पूँजी खाता

					रु०
			१६५० जन० १	शेष नी/ला	५,००,०००
			सि० १	बोनस खाता	१,००,०००
				अंश आवेदन तथा आवंटन	४,००,०००

ऋण-पत्र खाता

		रु०			रु०
१६५० अक्टू. १	ऋण-पत्र धारी	१,००,०००	१६५० जन० १	शेष नी/ला	१,००,०००

ऋण-पत्र विमोचन प्रव्याजि खाता

		रु०			रु०
१६५० अक्टू. १	ऋण-पत्र धारी	५,०००	१६५१ दिस. ३१	अंश प्रव्याजि खाता	५,०००

ऋण-पत्र धारी

		रु०			रु०
१६५० दि० ३१	रोकड़	६४,५००	१६५० अक्टू. १	ऋण-पत्र	१,००,०००
	शेष आ/ले	१०,५००		ऋण-पत्र विमोचन प्रव्याजि	५,०००
		१,०५,०००			१,०५,०००

अंश प्रव्याजि खाता

		रु०			रु०
१६५० दि० ३१	ऋण-पत्र विमोचन प्रव्याजि	५,०००	१६५० सि० १	अंश आवेदन तथा आवंटन	१,२०,०००
	शेष नी/ले	१,१५,०००			
		१,२०,०००			१,२०,०००

३१ दिसम्बर १६५० को चिट्ठा

दायित्व	रु०	रु०
अधिकृत पूँजी :—		
१०,००० साधारण अंश प्रत्येक १०० रु० का		१०,००,०००
निर्गमित एवं दत्त पूँजी :—		
६,००० साधारण अंश प्रत्येक १०० रु० का नकद पूर्ण दत्त	६,००,०००	
१,००० साधारण अंश प्रत्येक १०० रु० का बोनस अंश रूप में निर्गमित	१,००,०००	१०,००,०००
विमोचित ऋण-पत्रों पर दायित्व जो माँगा नहीं गया (not Claimed)		१०,५००
यन्त्रोन्नति कोष		५०,०००
अंश प्रव्याजि खाता		१,१५,०००
लाभ-हानि खाता		१,६४,५००

उदाहरण १८४

स्टार मैन्यूफैक्चरिंग कम्पनी लि० की निर्दिष्ट पूँजी ५,००,००० रु० थी जो १०० रु० वाले २,५०० साधारण अंशों तथा १०० रु० वाले २,५०० ६% पूर्वाधिकार अंशों में विभक्त है। सारे अंश निर्गमित व पूर्णतया याचित हैं ३१ दिसम्बर १६५० को कम्पनी की पुस्तकों से निम्नलिखित तलपट उद्धृत किया गया :—

(स) ५०० रु० सामान्य खर्चे के पूर्वदत्त हैं।
(द) स्थगित आगम व्यय का पाँचवाँ भाग अपलिखित करना है।
(य) कम्पनी की अधिकृत पूँजी १० रु० वाले ५०,००० अंशों में विभक्त है, जिसमें से १३,६७१ अंश निर्गमित व पूर्ण याचित थे।

३१ दिसम्बर १६५० को चिट्ठा

		रु०			रु०
अधिकृत पूँजी :—			भूमि व भवन		१८,०००
५०,००० अंश प्रत्येक १० रु० का		५,००,०००	यन्त्र व कल		२५,६००
दत्त पूँजी :—			मृत स्कन्ध		६,२००
याचित राशि		१,३६,७१०	स्थगित आगम व्यय	४१,५००	३३,२००
घटाया अवशिष्ट याचन		१०,०८५	घटाया अपलिखित भाग	८,३००	१,१२,५००
		१,२६,६२५	रहतिया		५६,६२५
विविध लेनदार		६०,४८५	पुस्त ऋण		५००
बैंक अधिविकर्ष		१,००,६६७	पूर्वदत्त व्यय		१,३६०
अदत्त व्यय :—			रोकड़ हस्ते		
उत्पादन व्यय	१,५००		लाभ-हानि खाता		
ब्याज	१,२००				
प्रबन्ध अभिकर्ता का पारिश्रमिक	३,०००	५,७००			
		३,२६,७७७			३,२६,७७७

३१ दिसम्बर १६५० को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ-हानि खाता

	रु०		रु०
रहतिया १-१-५० को	१५,६००	विक्रय	२,५४,४०५
क्रय	२,०४,५००	रहतिया ३१-१२-५०	१,१२,५००
उत्पादन व्यय	७,२८०		
शेष आ/ले	३६,५२५		
	३,६६,६०५		३,६६,६०५
स्थापन एव सामान्य व्यय	८,६५२	शेष नी/ला	३६,५२५
विक्रय कर	६,२७५	विविध आगम	२,६७५
ब्याज	४,६२८		
स्थगित आगम व्यय	८,३००		
प्रबन्ध अभिकर्ता का पारिश्रमिक	३,०००		
शेष आ/ले	११,०४५		
	४२,२००		४२,२००
शेष नी/ला	८३,५३७	शेष नी/ला	११,०४५
		शेष चिट्ठे के हस्तातरित	७२,४६२
	८३,५३७		८३,५३७

उदाहरण १८६

३१ दिसम्बर १६५० को पायनियर फ्लोर मिल्स कं० लि० की पुस्तकों में निम्नलिखित शेष थे :—

	रु०		रु०
अंश पूँजी (अधिकृत व निर्गमित)		ह्रास सचय	७१,०००
— ६०,००० अंश प्रत्येक १० रु० का	६,००,०००	रोकड़ शेष	७२,२४०
सामान्य सचय	२,५०,०००	क्रय	५,००,६०३

कार्यालय वेतन	१८,३००		
प्रारम्भिक व्यय	५,०००		
कल व यंत्र पर ह्रास	६,७८०		
डूबत ऋण संचय	७,५००		
कुल लाभ आ/ले	४४,०००		
	१,२२,७६०		१,२२,७६०
आय कर	१७,८००	शेष १-१-५०	२४,२००
संचिति कोष	१४,६४०	कुल लाभ नी/ला	४४,०००
शेष आ/ले	३५,४६०		
	६८,२००		६८,२००

३१ दिसम्बर १६५० को चिट्ठा

		रु०			रु०
अधिकृत पूँजी—			स्वायत्त निर्माणगृह		१,७१,०००
२,५०० साधारण अंश प्रत्येक १०० रु० का		२,५०,०००	कल व यंत्र	६७,८००	
२,५०० ६% पूर्वाधिकार अंश प्रत्येक १०० रु० का		२,५०,०००	घटाया ह्रास	६,७८०	८८,०२०
		५,००,०००	प्रारम्भिक व्यय		५,०००
			रहतिया		१,६४,०००
निर्गमित पूँजी—			विविध देनदार	१,४०,६००	
२,५०० साधारण अंश	२,५०,०००		घटाया डूबत ऋण संचय	७,५००	१,३३,१००
घटाया अदत्त याचन	५००	२,४६,५००	बैंक में रोकड़		१,१४,२२०
२,५०० पूर्वाधिकार अंश	२,५०,०००		रोकड़ हस्ते		२,७३०
घटाया अदत्त याचन	१,०००	२,४६,०००			
संचिति कोष		१४,६४०			
बैंक ऋण		७५,०००			
उपरोक्त पर अदत्त ब्याज		२,२५०			
विविध लेनदार		५१,६२०			
लाभ-हानि खाता		३५,४६०			
		६,७८,०७			६,७८,०७०

उदाहरण १८५

३१ दिसम्बर १६५० को मदूरा तम्बाकू लि० की पुस्तकों में निम्न शेष थे :—

	रु०		रु०
अंश पूँजी	१,२६,६२५	विक्रय	२,५४,४०५
बैंक अधिविकर्ष	१,००,६६७	विविध आय	२,६७५
विविध लेनदार	६०,४८५	क्रय	२,०४,५००
भूमि व भवन	१८,०००	स्थापन व सामान्य खर्चे	६,१५२
कल व यंत्र	२५,६००	उत्पादन-व्यय	५,७८०
मृत स्कध (Dead Stock)	६,२००	विक्रय कर	६,२३५
स्थगित आगम व्यय	४१,५००	ब्याज	३,७२८
पुस्त ऋण	५६,६२५	रोकड़ हस्ते	१,३६०
रहतिया १ जनवरी १६५० को	१५,६००	लाभ-हानि खाता (डे०)	८३,५३७

निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखते हुए ३१ दिसम्बर १६५० को कम्पनी का चिट्ठा व उसी तिथि को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ-हानि खाता तैयार करो :—

(अ) ३१ दिसम्बर १६५० को रहतिये का मूल्य १,१२,५०० रु० था।

(ब) अदत्त व्यय :—उत्पादन-व्यय १,५०० रु०; ब्याज १,२०० रु०; प्रबन्ध अभिकर्ता का पारिश्रमिक २,००० रु०।

(स) ५०० रु० सामान्य खर्चे के पूर्वदत्त हैं।
(द) स्थगित आगम व्यय का पाँचवाँ भाग अपलिखित करना है।
(य) कम्पनी की अधिकृत पूँजी १० रु० वाले ५०,००० अंशों में विभक्त है, जिसमें से १३,६७१ अंश निर्गमित व पूर्ण याचित थे।

३१ दिसम्बर १९५० को चिट्ठा

		रु०			रु०
अधिकृत पूँजी :--			भूमि व भवन		१८,०००
५०,००० अंश प्रत्येक १० रु० का		५,००,०००	यन्त्र व कल		२५,६००
दत्त पूँजी : --			मृत स्कन्ध		६,२००
याचित राशि		१,३६,७१०	स्थगित आगम व्यय	४१,५००	३३,२००
घटाया अवशिष्ट याचन		१०,०८५	घटाया अपलिखित भाग	८,३००	१,१२,५००
		१,२६,६२५	रहतिया		५६,६२५
विविध लेनदार		६०,४८५	पुस्त ऋण		५००
बैंक अधिविकर्ष		१,००,६६७	पूर्वदत्त व्यय		१,३६०
अदत्त व्यय :--			रोकड़ हस्ते		
उत्पादन व्यय	१,५००		लाभ-हानि खाता		
ब्याज	१,२००				
प्रबन्ध अभिकर्ता का पारिश्रमिक	३,०००	५,७००			
		३,२६,७७७			३,२६,७७७

३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ-हानि खाता

	रु०		रु०
रहतिया १-१-५० को	१५,६००	विक्रय	२,५४,४०५
क्रय	२,०४,५००	रहतिया ३१-१२-५०	१,१२,५००
उत्पादन व्यय	७,२८०		
शेष आ/ले	३६,५२५		
	३,६६,६०५		३,६६,६०५
स्थापन एव सामान्य व्यय	८,६५२	शेष नी/ला	३६,५२५
विक्रय कर	६,२७५	विविध आगम	२,६७५
ब्याज	४,६२८		
स्थगित आगम व्यय	८,३००		
प्रबन्ध अभिकर्ता का पारिश्रमिक	३,०००		
शेष आ/ले	११,०४५		
	४२,२००		४२,२००
शेष नी/ला	८३,५३७	शेष नी/ला	११,०४५
		शेष चिट्ठे के हस्तातरित	७२,४९२
	८३,५३७		८३,५३७

उदाहरण १८६

३१ दिसम्बर १९५० को पायनियर फ्लोर मिल्स कं० लि० की पुस्तकों में निम्नलिखित शेष थे :--

	रु०		रु०
अश पूँजी (अधिकृत व निर्गमित)		ह्रास संचय	७१,०००
-- ६०,००० अश प्रत्येक १० रु० का	६,००,०००	रोकड़ शेष	७२,२४०
सामान्य संचय	२,५०,०००	क्रय	५,००,६०३

अयाचित लाभाश	६,५२६	विक्रय	६,८३,६४७
व्यापारिक लेनदार	३६,८५८	उत्पादन व्यय	३,५६,०००
भवन	१,००,०००	स्थापन व्यय	२६,८१४
यंत्र	२,००,०००	सामान्य खर्चे	३१,०७८
मोटरगाड़ी	१५,०००	संचालक शुल्क	१,८००
फर्नीचर	५,०००	१९४९ का लाभाश	१५,०००
रहतिया	१,७२,०५८	ब्याज	८,५४४
पुस्त ऋण	२,२३,३८०	लाभ-हानि खाता १ जुलाई ५० (क्रे०)	१६ ८४८
विनियोग	२,८८,९५०	कर्मचारी प्रोविडेएट फन्ड	३७,५००

उपर्युक्त शेषों तथा निम्न सूचना से, ३१ दिसम्बर १९५० को कम्पनी का चिट्ठा तथा उसी तिथि को समाप्त होने वाले आधे वर्ष का लाभ हानि खाता तैयार कीजिये :—

(अ) ३१ दिसम्बर को गेहूँ व आटे के रहतिये का मूल्य १,४८,६८० रु० था।

(ब) १०,००० रु० स्थायी सम्पत्ति के ह्रास के लिये, ६,५०० रु० प्रबन्ध अभिकर्ता के कमीशन का तथा १,५०० रु० कर्मचारी प्रोविडेएट फन्ड में कम्पनी के अभिदान का प्रबन्ध करो।

(स) २,७५० रु० विनियोगों पर अप्राप्य ब्याज (accrued interest) था।

(द) २,५०० रु० का एक कर्मचारी का क्षति पूर्ति का दावा कम्पनी द्वारा विवादास्पद है।

पायनियर फ्लोर मिल्स कं० लि० का ३१ दिसम्बर १९५० को चिट्ठा

	रु०		रु०
अधिकृत एवं निर्गमित पूँजी :—		भवन	१,००,०००
६०,००० अंश प्रत्येक १० रु० का पूर्ण दत्त	६,००,०००	यन्त्र	२,००,०००
सामान्य कोष	२,५०,०००	मोटर गाड़ी	१५,०००
अयाचित लाभांश	६,५२६	फर्नीचर	५,०००
सम्भाव्य कोष	२,५००	रहतिया	१,४८,६८०
ह्रास कोष	८१,००	पुस्त ऋण	२,२३,३८०
कर्मचारी प्रोविडेन्ट फंड	३९,०००	विनियोग	२,८८,९५०
व्यापारिक लेनदार	३६,८५८	अप्राप्त ब्याज	२,७५०
प्रबंध अभिकर्ता का कमीशन	६,५००	रोकड़ी शेष	७२,२४०
लाभ-हानि खाता	३३,६१६		
	१०,५६,०००		१०,५६,०००

टिप्पणी :—कर्मचारी के विवादास्पद क्षति पूर्ति के दावे के लिये २,५०० रु० की सम्भाव्य देन है।

३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले आधे वर्ष का लाभ-हानि खाता

	रु०		रु०
रहतिया १ जुलाई १९५० को	१,७२,०५८	विक्रय	६,८३,६४७
क्रय	५,००,९०३	रहतिया ३१ दिसम्बर १९५० को	१,४८,६८०
उत्पादन व्यय	३,५६,०००		
शेष आ/ले	१,००,६६६		
	११ ३२,६२७		११,३२,६२७
स्थापन व्यय	२६,८१४	शेष नी/ला	१,००,६६६
सामान्य व्यय	३१,०७८	ब्याज	११,२९४
सञ्चालक शुल्क	१,८००		
ह्रास	१०,०००		
प्रबंध अभिकर्ता का कमीशन	६ ५००		
कर्मचारी प्रोविडेन्ट फंड	१,५००		
सम्भाव्य कोष	२,५००		
शेष आ/ले	३१,७६८		
	१,११,९६०		१,११,९६०

१९५९ का लाभाश	१५,०००	शेष नी/ला	३१,७६८
शेष आ/ले	३३,६१६	शेष १ जुलाई १९५० को	१६,८४८
	४८,६१६		४८,६१६

उदाहरण १८७

३१ दिसम्बर १९५० को लक्ष्मी कॉटन मिल्स लि० की पुस्तकों में निम्न शेष थे :—

	रु०		रु०
अंश पूँजी	१२,००,०००	भवन	७,५५,८००
सामान्य संचय	६,३५,०००	यंत्र	२२,४६,०००
अयाचित लाभांश	१६,६०६	फर्नीचर	१६,१७४
५% ऋण-पत्र	४,००,०००	पुस्तक ऋण	७५,३५०
कर्मचारी प्रोविडेन्ट फन्ड	२५,६५०	विनियोग	२,००,०००
व्यापारिक लेनदार	३६,८३०	रोकड़ी शेष	३५,६८३
लाभ-हानि खाता	११,५६५	वस्त्र व धागे का रहतिया	८,४१,५६०
ह्रास कोष	१९,४०,३८०	उत्पादन व्यय	१,६०,०००
विक्रय	१०,९५,६६४	सचालन शुल्क	३,०००
		सामान्य खर्चे	१ ५६,३२०
		ब्याज	१२,५४०
		उपभोगित संग्रह (Stores used)	६०,०००
		संग्रह (stores) का रहतिया	६५,२५०
		उपभोगित रुई	४ ५०,०००
		रुई का रहतिया	२,२४,३१८
	५३,६२,३२५		५३,६२,३२५

उपर्युक्त शेषों तथा निम्न सूचनाओं से, ३१ दिसम्बर १९५० को कम्पनी का चिट्ठा व उसी तिथि को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ-हानि खाता तैयार करो :—

(अ) कम्पनी की अधिकृत पूँजी १०० रु० वाले ५,००० ६% संचयी पूर्वाधिकार अंशों तथा १० रु० वाले १,००,००० साधारण अंशों में विभक्त है—३,००० पूर्वाधिकार व ६०,००० साधारण अंश निर्गमित व पूर्ण दत्त हैं।

(स) ३१ दिसम्बर १९५० को धागे व वस्त्र के रहतिये का मूल्य ९,१२,८६५ रु० था।

(स) ८५,७०० रु० प्रबन्ध अभिकर्ता के पारिश्रमिक के देय हैं।

(द) १,३२० रु० सामान्य खर्चे पूर्व दत्त हैं।

(य) कर्मचारी प्रोविडेन्ट फन्ड को ब्याज के ७५०) से क्रेडिट करना है।

लक्ष्मी कॉटन मिल्स लि०

३१ दिसम्बर १९५० को चिट्ठा

	रु०			रु०
अधिकृत पूँजी—		भवन		७,५५,८००
५,००० ६% सचयी पूर्वाधिकार अंश प्रत्येक १०० रु० का	५,००,०००	यत्र		२२,४६,०००
१,००,००० साधारण अश प्रत्येक १० रु० का	१०,००,०००	फर्नीचर		१६,१७४
	१५,००,०००	रहतिये		
		सूत व वस्त्र	९,१२,८६५	
		रुई	२,२४,३१८	११,३७,१८३
निर्गमित पूँजी—				
३,००० पूर्वाधिकार अश पूर्णदत्त	३,००,०००	संग्रह		६५,२५०
६०,००० साधारण अंश पूर्णदत्त	९,००,०००	पुस्त ऋण		७५,३५०
	१२,००,०००	अग्रिम (advances)		१,३२०
सामान्य निधि—	६,३५,०००	विनियोग		२,००,०००
अयाचित लाभाश	१६,६०६	रोकड़ी शेष		३५,६८३

५% ऋण-पत्र	४,००,०००		
कर्मचारी प्रोविडेन्ट फंड	२६,७००		
ह्रास कोष	१६,४०,३८०		
व्यापारिक लेनदार	३६,८३०		
प्रबंध अभिकर्ता का पारिश्रमिक	८५,७००		
लाभ-हानि खाता	२,२१,५४४		
	४५,६३,०६०		४५,६३,०६०

३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ-हानि खाता

	रु०		रु०
सूत व वस्त्र का रहतिया	८,४१,५६०	विक्रय	१०,६५,६६४
उपभोगित रुई	४,५०,०००	सूत व वस्त्र का रहतिया	९,१२,८६५
उपभोगित संग्रह	६०,०००		
उत्पादन व्यय	१,९०,०००		
सामान्य व्यय	१,५५,०००		
संचालक शुल्क	३,०००		
व्याज	१३,२६०		
प्रबन्ध अभिकर्ता का पारिश्रमिक	८५,७००		
शेष आ/ले	२,०९,९७९		
	२०,०८,५५९		२०,०८,५५९
शेष चिट्ठे को हस्तातरित	२,२१,५४४	शेष नी/ला	११,५६५
		शेष नी/ला	२,०९,९७९
	२,२१,५४४		२,२१,५४४

उदाहरण १८८

३१ दिसम्बर १९५० को हिन्दुस्तान बिस्कुट कं० लि० की पुस्तकों मे निम्न शेष थे :—

	रु०		रु०
अंश पूँजी	१३,५०,०००	भूमि व भवन	७,१०,०००
संचिति कोष	२,६५,०००	कल व यंत्र	६,७५,०००
कर्मचारी प्रोविडेन्ट फन्ड	५५,०००	फर्नीचर	४०,०००
अयाचित लाभांश	५,०००	मोटर गाड़ी	१५,०००
बैंक ऋण	२,००,०००	विद्युत् स्थापन	५०,०००
विविध लेनदार	२,४६,५००	विनियोग	२,३२,०००
लाभ-हानि खाता	८४,०००	पुस्त ऋण	३,००,०००
विक्रय	१२,५७,५००	बिस्कुट का स्टॉक	
प्राप्त व्याज	६,०००	१ जनवरी १९५० को	८५,०००
		सामग्री का उपभोग (Ingradlents used)	५,५०,०००
		संग्रह का रहतिया (stock of stores)	३,००,०००
		बैंक ऋण पर व्याज	६,५००
		उत्पादन व्यय	१,००,०००
		स्थापन व्यय	१,२५,०००
		सामान्य खर्चे	९०,०००
		संचालक शुल्क	३,०००
		नोकद हस्ते	१,५००
		बैंक शेष	१,८६,०००
	३४,७२,०००		३४,७२,०००

निम्न बातों को ध्यान मे रखते हुये ३१ दिसम्बर १९५० को कम्पनी का चिट्ठा तथा उसी तिथि को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ-हानि खाता तैयार कीजिये :—

(अ) ३१ दिसम्बर १९५० को बिस्कुट के रहतिये का मूल्य १,२५,००० रु० था।

(ब) कम्पनी की अधिकृत पूँजी १०० रु० वाले २०,००० अंशों में विभक्त है; तथा उसकी निर्गमित पूँजी पूर्ण दत्त है।

(स) ३१ दिसम्बर १९५० को ५०० रु० विनियोगों पर अप्राप्त (accrued interest) ब्याज है।

(द) ५०,००० रु० स्थायी सम्पत्ति के ह्रास का, ७५,००० रु० कर का तथा ४०,००० रु० प्रबन्ध अभिकर्ता के पारिश्रमिक का प्रबन्ध करो।

हिन्दुस्तान बिस्कुट कं० लि०

३१ दिसम्बर १९५० को चिट्ठा

	रु०		रु०
अधिकृत पूँजी :—		भूमि व भवन	७,१०,०००
२०,००० अंश प्रत्येक १०० रु० का	२०,००,०००	कल व यन्त्र	६,७५,०००
निर्गमित एवं दत्त पूँजी :—		फर्नीचर	४०,०००
१३,५०० पूर्णदत्त अंश	१३,५०,०००	मोटरगाड़ी	१५,०००
संचिति कोष	२,६५,०००	विद्युत् स्थापन	५०,०००
कर्मचारी प्रोविडेन्ट फण्ड	५५,०००	संग्रह	३,००,०००
अयाचित लाभांश	५,०००	रहतिया	१,२५,०००
कर संचिति	७५,०००	पुस्त ऋण	३,००,०००
ह्रास खाता	५०,०००	विनियोग	२,३२,०००
बैंक ऋण	२,००,०००	अप्राप्त ब्याज	५००
विविध लेनदार	२,४९,५००	बैंक में रोकड़	१,८६,०००
प्रबन्ध अभिकर्ता का पारिश्रमिक	४०,०००	रोकड़ हस्ते	१,५००
लाभ-हानि खाता	३,४५,५००		
	२६,३५,०००		२६,३५,०००

३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ-हानि खाता

	रु०		रु०
बिस्कुटों का रहतिया १-१-५० को	८५,०००	विक्रय	१२,५७,५००
अंशों का उपभोग	५,५०,०००	प्राप्त ब्याज	६,५००
उत्पादन व्यय	१,००,०००	बिस्कुटों का रहतिया ३१-१२-५० को	१,२५,०००
स्थापन व्यय	१,२५,०००		
सामान्य व्यय	९०,०००		
सचालक शुल्क	३,०००		
बैंक ऋण पर ब्याज	९,५००		
शेष आ/ले	४,२६,५००		
	१३,८९,०००		१३,८९,०००
ह्रास	५०,०००	शेष नी/ला	४,२६,५००
कर	७५,०००	शेष नी/ला	८४,०००
प्रबन्ध अभिकर्ता का पारिश्रमिक	४०,०००		
शेष चिट्ठे को हस्तांतरित	३,४५,५००		
	५,१०,५००		५,१०,५००

उदाहरण १८९

३१ दिसम्बर १९५० को क्लाइव कोल कम्पनी लिमिटेड का निम्न तलपट है.—

	रु०		रु०
सम्पत्ति एवं विकास	२,४०,०००	संग्रह-स्टॉक	३२,५५६
भवन	२७,०००	देनदार	२६,६७६
यंत्र	२,३३,०.०	विनियोग	२,०८,६२५
सड़क व पुल	१	रोकड़ शेष	८६,१६०
ट्राम की लाइनें	१	अंश पूँजी	६,५८,२७०
रहतिया	१ १५०	सामान्य निधि	३७,५००
कोयले की खान का व्यय	५५,०००	अयाचित लाभाश	८,३१६
सामान्य व्यय	१२,४६६	व्यापारिक लेनदार	६,३०१
प्रबन्ध अभिकर्ता का भत्ता	६,०००	लाभ-हानि-खाता १-१-५० को (क्रे०)	६४,४२५
संचालक शुल्क	७००		
लाभाश खाता	६४,३५३	व्याज	६,५००
संग्रह-उपभोग	२०,६५०	विक्रय	२,०३,०६४
हस्तान्तरण शुल्क	७५	विविध आगम	२५०

निम्नलिखित सूचनाओं को ध्यान में रखते हुये ३१ दिसम्बर १६५० को कम्पनी का चिट्ठा तथा १६५० वें वर्ष का लाभ-हानि खाता तैयार करो :—

१. कम्पनी की अधिकृत पूँजी १० रु० वाले ६०,००० अंशों मे विभक्त है तथा निर्गमित पूँजी पूर्ण दत्त है।

२. ३१ दिसम्बर १६५० को कोयले के रहतिये का मूल्य २,६५० रु० था।

३. ह्रास अपलिखित करो :—भवन १०,००० रु० तथा यत्र १८,००० रु०।

३. कोयले का खर्चा २ ८०८ रु०, सचालक शुल्क ६८ रु० तथा ५०० रु० कानूनी व्यय अदत्त थे।

५. १,२५० रु० खान प्रबन्धक के कमीशन का तथा १०,५०० प्रबन्ध अभिकर्ता के कमीशन का प्रबन्ध करो।

६. १,५८५ रु० विनियोगों पर अप्राप्त व्याज है।

७. वर्ष मे १ रु० प्रति अंश लाभांश घोषित किया गया तथा ५,००० रु० कर्मचारी समृद्धि कोष (Employees Welfare Fund) मे हस्तान्तरित किये गये परन्तु लाभाश के भुगतान के अतिरिक्त पुस्तकों में कोई प्रविष्टि नहीं की गई।

क्लाइव कोल कम्पनी लि०

३१ दिसम्बर १६५० को चिट्ठा

	रु०		रु०
अधिकृत पूँजी (६०,००० अंश प्रत्येक १० रु० का)	६,००,०००	सम्पत्ति एवं विकास	२,४०,०००
		भवन	१७,०००
निर्गमित पूँजी (६५,८२७ अंश पूर्ण दत्त)	६,५८,२७०	यन्त्र	२,१५,०००
सामान्य निधि	३७,५००	सड़क व पुल	१
कर्मचारी समृद्धि कोष	५,०००	ट्राम की लाइनें	१
अयाचित लाभांश	६,७६०	संग्रह	३२,५५६
व्यापारिक लेनदार	६,३०१	कोयले का रहतिया	२,६५०
अदत्त व्यय	१५,१२६	देनदार	२६,६७६
लाभ-हानि खाता	६८,६००	विनियोग	२,०८,६२५
		अप्राप्त व्याज	१,५८५
		रोकड़ शेष	८६,१६०
	८,३२,५८७		८,३२,५८७

टिप्पणी :—कोयला कम्पनियों के सम्बन्ध में सम्पत्ति एवं विकास (Property and Development) एक स्थायी सम्पत्ति है। इसमें खानों की भूमि का मूल्य एवं व्यय सम्मिलित है।

लाभाश खाते के जमा पक्ष का शेष (१,४७४ रु०) अयाचित लाभांश खातों में हस्तांतरित कर दिया गया है।

लाभ-हानि खाता
३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए

	रु०		रु०
रहतिया १-१-५० को	१,१५०	विक्रय	२,०३,०६४
खान व्यय	५७,८०८	रहतिया ३१-१२-५० को	२,६५०
संग्रह-उपभोग	२०,६५०		
खान प्रबंधक का कमीशन	१,२५०		
शेष आ/ले	१,२४,८५६		
	२,०५,७१४		२,०५,७१४
सामान्य व्यय	१२,६६६	शेष नी/ला	१,२४,८५६
प्रबंध अभिकर्त्ता का भत्ता	६,०००	ब्याज	८,०८५
,, ,, का कमीशन	१०,५००	हस्तांतरण शुल्क	७५
संचालक शुल्क	७६८	विविध आगम	२५०
ह्रास	२८,०००		
शेष नी/ले	७५,००२		
	१,३३,२६६		१,३३,२६६
लाभाश खाता	६५,८२७	शेष १-१-५० को	६४,४२५
कर्मचारी समृद्धि कोष	५,०००	शेष नी/ला	७५,००२
शेष चिट्ठे को हस्तांतरित	६८,६००		
	१,६६,४२७		१,६६,४२७

प्रश्न

१. क्या आप बता सकते है कि कम्पनी के अन्तिम खाते प्रस्तुत करते समय इतनी अधिक वैधानिक कार्यवाइयों को पूरा करना क्यों आवश्यक है ?

२. सक्षेप में कम्पनी के चिट्ठे व लाभ हानि खातों से प्राप्त सूचनाओं की प्रकृति बताइये।

३. वर्ष के लाभ वितरण (disposal) के लिये प्राप्य लाभ तथा लाभाश के लिये प्राप्य लाभ में क्या अन्तर है ?

४. एक कम्पनी के लाभ किस प्रकार नियोजित किये जाते हैं तथा इन नियोजनों का पुस्तकों में लेखा किस प्रकार किया जायेगा ?

५. निम्न मदों को समझाइए :—अन्तरिम लाभाश, अन्तिम लाभाश तथा अयाचित लाभाश।

६ आप 'सचयी अधिमान अश लाभाश अवशिष्ट (Arrears of cumulative preference share dividend) से क्या अर्थ समझते हैं तथा इस प्रकार के अवशेष का खातों में क्या व्यवहार किया जाता है ?

७. बोनस से आप क्या समझते हैं ? रोकड़ी बोनस व पूँजी बोनस में अन्तर बतलाइये।

८. 'लाभ के पूँजीकरण' पर एक संक्षिप्त नोट लिखिये।

९ एक लिमिटेड कम्पनी के लाभ-हानि खाते में विभाजन के लिये ७९,८०९ रु० हैं। इस शेष को निम्न प्रकार प्रयोग करने का निश्चय किया गया :—

(अ) ४०,००० रु० सामान्य निधि में हस्तान्तरित किये जायँ;
(ब) ५,००० रु० कर्मचारी पेंशन कोष में।
(स) १,००० ६ प्रतिशत पूर्वाधिकार अशों (प्रत्येक १०० रु० का) पर एक वर्ष का लाभाश देना है।
(द) १५% की दर से एक वर्ष का २०,००० साधारण अशों (प्रत्येक १० रु० का) पर लाभाश देना है; तथा
(य) शेष आगे ले जाना है।

उपर्युक्त निश्चयों को कार्यरूप में परिणित करने के लिये आवश्यक प्रविष्टियाँ कीजिये तथा कम्पनी का लाभ हानि खाता बनाइये।

१०. निम्नलिखित सूचनायें एक कम्पनी के ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष की संचालकों की रिपोर्ट से उद्धृत हैं :—

सारे ऐलाउन्स देने के बाद वर्ष का लाभ, जिसमें ७ लाख रुपये ह्रास के तथा विनियोगों की आय के घटाने के बाद ६२,०७,०७६ रु० था। इसमें पिछले वर्ष से लायी हुई राशि के १,८६,७७८ रु० जोड़ते हुये कुल लाभ ६३,६३,८५७ रु० हो जाता है। संचालकों ने इस धन के नियोजन के लिये निम्न सिफारिशें कीं :—

कर सचय को हस्तान्तरित ४२ ००,००० रु०; पुनर्वास सचय को हस्तान्तरित ३,००,००० रु०; ३१ दिसम्बर १६५० को संचयी पूर्वाधिकार अंशों (८ प्रतिशत प्रति वर्ष) पर वर्ष का लाभाश ६,४८,००० रु०; ३१ दिसम्बर १६५० को साधारण अशों पर ४ आना प्रति अश से वर्ष का लाभाश ११,०३,७५० रु०; अन्य राशि आगे ले जायी गयी १,४२,१०७।

२३ मार्च १६५१ को हुई आम सभा में इन सिफारिशों को स्वीकृत हुई मानते हुये कम्पनी की पुस्तकों में इनका लेखा किस प्रकार होगा।

११ एक लिमिटेड कम्पनी की निर्गमित पूँजी ६,५०,००० रु० १० रु० वाले ४०,००० साधारण अंशों तथा १०० रु० वाले २५०० ६ प्रतिशत पूर्वाधिकार अंशों में विभक्त है तथा सब पूर्ण दत्त है। ३१ दिसम्बर १६५० को लाभ-हानि खाते में क्रेडिट राशि १,३६,७५० रु० थी। १६५१ के प्रारम्भ में यह निश्चय किया गया—

(अ) ५०,००० रु० करने के लिए सामान्य निधि में १५,००० रु० हस्तान्तरित किये जायँ।

(ब) पूर्वाधिकार अंशों पर अर्द्ध वार्षिक लाभाश दिया जाय—१,३६,७५० रु० का शेष निकालने के पूर्व इन पर ३% अन्तरिम लाभाश दिया गया था तथा इस राशि से लाभ हानि खाता डेबिट किया गया।

(स) १०,००० रु० कर्मचारी पेशन कोष में हस्तान्तरित किये जायँ तथा उस राशि को ट्रस्टी प्रतिभूतियां में विनियोग किया जाय।

(द) साधारण अंशों पर १५% लाभाश व ५ प्रतिशत बोनस दिया जाय; तथा इसके अतिरिक्त साधारण अशधारियों में प्रत्येक २० साधारण अंशों पर एक पूर्ण दत्त साधारण अश २० रु० के मूल्य वाला पूँजी बोनस के रूप में दिया जाय।

यह मानते हुये कि आवश्यक प्रस्ताव पास हुये, तथा कर्मचारी पैंशन कोष की राशि ३% राजकीय प्रतिभूतियों क्रय करने में प्रयोग की गई, उपर्युक्त का लेखा कीजिये।

१२. एक लिमिटेड कम्पनी के पास १०,००,००० रु० की अधिकृत पूँजी है, जो ५ रु० वाले २,००,००० अंशों में विभक्त है तथा ५,००,००० रु० का संचय कोष है। १,५०,००० अश निर्गमित किये हुए हैं तथा ४ ३.० प्रति अंश दत्त है।

सचय में से, निर्गमित पूँजी पर १ रु० प्रति अंश याचन (call) का भुगताये जाने का निश्चय किया गया, तथा २,५०,००० रु० शेष ५०,००० अंशों को, अशधारियों में बोनस के रूप में निर्गमित करने का निश्चय किया गया।

उपर्युक्त का लेखा करने के लिये आवश्यक प्रविष्टियाँ कीजिये।

१३. ३० जून १६५१ को, आइडियल मैन्युफैक्चरिंग क० लि० की पुस्तकों में निम्न शेष थे :—

	रु०		रु०
रहतिया १-७-५० को	७५,०००	अन्तरिम लाभांश खाता	४,०००
विक्रय	३,५०,०००	पूँजी १,००० पूर्ण दत्त अश	१,००,०००
क्रय	२,४५,०००	विविध देनदार	३७,५००
मजदूरी	५०,०००	कल व यन्त्र	२६,०००
बट्टा (डे०)	२,०००	रोकड़ी शेष	१६,२००
वेतन	७,५००	सचय कोष	१५,५००
किराया	४,२५०	प्रबन्ध संचालक को ऋण	३,६५०
सामान्य खर्चे	१७,०५०	ट्रेड ऋण	१,५८०
लाभ-हानि खाता १-७-५० को (क्रे०)	१५,०३०	विविध लेनदार	१७,५००
लाभांश खाता	५,०००		

निम्न बातों का ध्यान रखते हुये कम्पनी का चिट्ठा व लाभ-हानि खाता तैयार कीजिये :—

१. १०% कल व यन्त्र पर ह्रास काटो।
२. विविध देनदारों पर ५% संदिग्ध ऋण के लिये संचय करो।
३. ४५० रु० किराया अदत्त है।
४. ३७५ रु० असमाप्त (Unexpired) बीमा (सामान्य खर्चे सहित) है।
५. प्रबन्ध सचालक शुद्ध लाभ (Net Profit) पर १०% कमीशन पाने का अधिकारी है।
६ ३० जून १६५१ को रहतिये का मूल्यांकन ८२,००० रु० किया गया।

उत्तर —लाभ हानि खाते का शेष (क्रे०) २८,५४८ रु०; चिट्ठा १,३१,६६८ रु०।

१४. ३१ दिसम्बर १९५० को, भारत पेपर मिल्स लि० की पुस्तकों में निम्न शेष थे :—

	रु०	रु०
अश पूँजी (पूर्णदत्त)		४०,९४,५००
हरण किये अश खाता		३,०००
पूँजी सचय		१०,०००
कर के लिये सचय		४,५०,०००
अयाचित लाभाश (Unclaimed Dividends)		२,३६,९१४
५% बधक ऋण-पत्र		१०,००,०००
विविध लेनदार		४,६७,६२०
ह्रास खाता		११,००,०००
लाभ-हानि खाता १ जनवरी १९५० को		३,६६,१८७
विक्रय		३७,३०,६२९
विविध आय		१,०५२
स्थायी सम्पत्ति व्यय (Block Expenditure)	४६,८३,९५०	
कागज का रहतिया १ जनवरी १९५० को	२,५१,२४७	
माल व संग्रह (प्रयोग में लाया हुआ)	१६,७८,६६८	
माल व सग्रह का रहतिया	१३,४०,०२७	
उत्पादन व्यय	६,६८,६२३	
व्याज	८०,२३८	
स्थापन व्यय	२,२६,३२६	
विनियोग	३,५७,०५६	
अग्रिम (Advances)	१,३६,५५४	
पुस्तक ऋण	२,३६,०१६	
रोकड़ हस्ते	६१,४६२	
बैंक शेष	१२,३३,०६६	
लाभाश खाता	२,०३,५००	
कुल रु०	१,१५,१६,६०२	१,१५,१६,६०२

उपर्युक्त शेषों तथा निम्नलिखित सूचनाओं से ३१ दिसम्बर १९५० को कम्पनी का चिट्ठा व उसी तिथि को उसका लाभ-हानि खाता तैयार कीजिये :—

(अ) कम्पनी की अधिकृति पूँजी १० रु० वाले अंशों में १,००,००,००० रु० है।
(ब) ३१ दिसम्बर १९५० को कागज के रहतिये का मूल्य ६,६१,७५० रु० था।
(स) ३,००,००० रु० स्थायी सम्पत्ति के ह्रास के लिए व ३,५०,००० रु० कर के लिये तथा १,२८,६१४ रु० प्रबन्ध अभिकर्ता के पारिश्रमिक का प्रबन्ध करो।
(द) मई १९५० में कम्पनी की साधारण सभा मे १९४९ वें वर्ष के लिए ५% लाभाश की घोषणा की गई।
(य) ३,४५० रु० विनियोगों पर अप्राप्य व्याज है।

उत्तर :—लाभ-हानि खाते का शेष ५,७४,१९४ रु० ;
चिट्ठा ७३,४६,३६७ रु०।

१५. ३० दिसम्बर १९५० को, निम्न शेष स्टैण्डर्ड मैन्युफैक्चरिंग कं० लि० की पुस्तकों से उद्धृत किये गये जिसकी पूँजी १,००,००० रु० है जो १० रु० वाले ५,००० साधारण अंशों मे (जो कि सब निर्गमित तथा ५ रु० प्रति अश दत्त हैं) व १०० रु० वाले ५००, ६ प्रतिशत पूर्वाधिकार अंशों मे (जिसमे ३०० निर्गमित व पूर्णदत्त हैं) विभक्त है।

	रु०		रु०
क्रय	२३,८६०	डूबत व सदिग्ध ऋण के लिये संचय	५००
मजदूरी	११,७३२	कर, दर व बीमा	१,२२६
कल व यन्त्र	१६,०००	विविध देनदार	२३,१४६
विक्रय	३६,७६६	विविध लेनदार	८,६५०
कार्यालय वेतन	२,३४०	बैंक अधिविकर्ष	३,६४१
संचय कोष (Reserve Fund)	१,५००	अयाचित लाभाश (Unclaimed Dividend)	५०

क्रय पर भाडा	१,४३०	रोकड़ हस्ते	६२१
कर्मचारी पेंशन कोष	४,३००	मरम्मत व नवकरण	८९०
कर्मचारी पेंशन कोष विनियोग	४,०६०	सामान्य खर्चे	२,३६४
हस्तान्तरण शुल्क	७५	लाभ-हानि खाता १-१-५० को (डे०)	३,०००
कार्यालय फर्नीचर	७५०		
रहतिया १-१-१९५० को	२२,६६६		

३१ दिसम्बर १९५० को निम्न व्यवहार हुये :—

(१) १,७५० रु० का उधार माल खरीदा।
(२) ९०० रु० चैक द्वारा वेतन दिया।
(३) १५० रु० नकद विक्री।
(४) १०% कल व यन्त्र तथा कार्यालय फर्नीचर पर ह्रास अपलिखित करो।
(५) १,२०० रु० तक डूबत व संदिग्ध ऋण संचय बढ़ाया।
(६) १२० रु० असमाप्त बीमे में ले गये।
(७) ३०० रु० रोकड़ी भूतपूर्व कर्मचारी को पेंशन दी।
(८) २५ रु० का एक बिल कार्यालय के फर्नीचर की मरम्मत के लिये प्राप्त हुआ जो अदत्त है।

उपर्युक्त व्यवहारों का लेखा करने के लिये आवश्यक प्रविष्टियाँ कीजिये, अंतिम तलपट बनाइये तथा संक्षेप में यह समझाइये कि इस तलपट से आप कम्पनी के वार्षिक खाते किस प्रकार तैयार करेंगे।

उत्तर : तलपट का योग १,१७,३१० रु०।

१६. ३१ दिसम्बर १९५०को, गोपाल कॉटन मिल्स लि० की पुस्तकों में निम्नलिखित शेष था :—

	रु०		रु०
भूमि	६८,३८५	अंश पूँजी प्रत्येक अंश ५० रु० का पूर्णदत्त (अंशों में)	११,८६,२००
भवन	१३,८९,४००	हरण (forfeited) अंश खाता	८,०५०
यन्त्र व कल	४२,८१,५५०	ह्रास कोष	३६,६१,९७५
मृत स्कध (Dead Stock)	२३,०००	जमा	१६,३८,९००
संग्रह	८६,८५०	लेनदार	२३,८१७
रुई धागा व वस्त्र का रहतिया	४,४२,१९२	धागा खाता	५,४५,३५०
विनियोग	१,७६,८००	वस्त्र खाता	२१,३०,८१५
पुस्त ऋण	१,८१,८७३	परती खाता (waste A/c)	३७,४२५
रोकड़ी शेष	३,१५,७८७	फुटकर आय	४५,०००
रुई (प्रयोग हुई)	८,०८,७८०		
संग्रह (नियोजित)	२,८५,०००		
मिल की मजदूरी व वेतन	४,८१,२७५		
अन्य उत्पादन व्यय	१,००,०००		
सामान्य खर्चे	२,१४,४४०		
संचालक शुल्क	४,०००		
प्रबन्ध अभिकर्त्ता का कमीशन	१,३५,२००		
ब्याज	९०,०००		
लाभ-हानि खाता	१,९०,०००		
	९२,७७,५३२		९२,७७,५३२

निम्नलिखित समायोजनाओं का समावेश करते हुये कम्पनी के वार्षिक खाते तैयार कीजिये :—

(अ) १२,३४५ रु० जमा पर व ९,२५० रु० विनियोग पर अप्राप्त ब्याज है।
(ब) अदत्त खर्चे : मिल की मजदूरी व वेतन १०,७५० रु०; सामान्य खर्चे २५,६३५ रु०।
(स) ५०,००० रु० स्थायी सम्पत्ति के लिये ह्रास का प्रबंध करो।
(द) १०,००० रु० दान कोष में हस्तान्तरित करो।
(य) अधिकृत पूँजी ५० रु० वाले अंशों में १५,००,००० रु० है।

उत्तर : लाभ-हानि खाते का शेष ३,५०,४२५ रु०;
चिट्ठा ९६,७८,०८३ रु०।

१७ कलकत्ता प्रिंटिंग कं० लि० के निम्नलिखित तलपट व सम्मिलित सूचनाओं से ३१ मार्च १९५१ को कम्पनी का चिट्ठा तथा उस दिन समाप्त होने वाले आधे वर्ष का लाभ-हानि खाता तैयार कीजिये :—

	रु०		रु०
भवन	१,८०,०००	साधारण अंश पूँजी—	
यंत्र	३,५०,०००	५०,००० पूर्णदत्त अंश	५,००,०००
टाइप	१६,५००	पूर्वाधिकार अंश पूँजी—	
फर्नीचर व फिटिंग्स	७,६५०	३,००० पूर्णदत्त अंश	३,००,०००
मोटर गाड़ी	८,७००	सम्भाव्य संचिति कोष	१,१५,०००
आलेखन (Stationery), कागज व संग्रह		व्यापारिक लेनदार	६,६१८
का स्टॉक	६७,२५०	विक्रय खाता	२,५६,७७२
विनियोग	३,१२,०००	ब्याज	१०,३६०
रोकड़ शेष	२५,४५०	लाभ-हानि खाता	
पूर्वाधिकार (Preference) अंश		१-१०-५० को	४१,६११
लाभांश	१२,०००		
साधारण अंश लाभाश	२०,०००		
माल व संग्रह का क्रय	१ १३,५३५		
स्थापन व्यय	६१,३४८		
संचालक शुल्क	५००		
सामान्य खर्चे	२६,०२८		
	१२,३३,६६१		१२,३३,६६१

१. ३१ मार्च १९५१ को आलेखन, कागज व सग्रह के रहतिये का मूल्य १,२६,३५० रु० था।
२. ह्रास निम्न प्रकार अपलिखित करो : यत्र २०,००० रु० ; फर्नीचर व फिटिंग्स ७०० रु० ; मोटर गाड़ी १,००० रु०।
३ ४,५०० रु० अदत्त स्थापन व्यय, ५,२०० रु० अदत्त सामान्य खर्चे, ११,४५० रु० प्रबन्ध अभिकर्ता के अदत्त पारिश्रमिक तथा १,२०० रु० प्रेस मैनेजर के अदत्त कमीशन का प्रबन्ध करो।
४ १,३४५ रु० विनियोगों का ब्याज अप्राप्त है।
५. ५,००० रु० सम्भाव्य सचिति कोष में हस्तान्तरित करो।
६. ८५० रु० के नगरपालिका कर विवादास्पद है।

उत्तर : लाभ-हानि खाते का शेष ५३,१७७ रु० ; चिट्ठा १०,०६,२६५ रु०।

१८. ३१ दिसम्बर १९५० को सैन्ट्रल इंजीनियरिंग कं० लि० के निम्नलिखित शेष थे :—

	रु०		रु०
अंश पूँजी (अधिकृत		विविध खर्चे	१२०
१,००,००० रु०, १० रु० प्रति अंश)		क्रय	१४,२१०
५ रु० प्रति अंश याचित	५०,०००	प्रारम्भिक व्यय	५००
व्यापारिक देनदार	६,०००	क्रय वापिसी	७३०
अवशिष्ट याचन	२,०००	विक्रय वापिसी	४२०
स्वायत भूमि व भवन	६,०००	बट्टा (डे०)	२६५
डूबत ऋण संचय	३००	विनियोगों का ब्याज	७५
रहतिया १ जनवरी १९५० को	८,०००	रोकड़ बैंक में	७,२७५
व्यापारिक लेनदार	६,३६४	वेतन	२,४३०
कल व यन्त्र	१८,५००	अपलिखित डूबत ऋण	२२५
मजदूरी	१,२८३	विद्युत् शक्ति	५३१
विनियोग (क्रय मूल्य पर)	२,०००	दर व बीमा	१५०
विक्रय	२५,४२०	ख्याति	१०,५००
लाभ-हानि खाता (के० शेष १ जनवरी		उत्पादन व्यय	१,६००
१९५० को)	१,६४०	संचालक शुल्क	३००
लाभांश खाता	२,२५०		

३१ दिसम्बर १९५० को स्टॉक का मूल्य ८,१०० रु० था। कल व यन्त्र पर १०% ह्रास काटिये। प्रारम्भिक व्यय का आधा भाग अपलिखित करो। ४०० रु० तक डूबत ऋण संचय बनाइये तथा १,००० रु० सामान्य निधि में हस्तान्तरित कीजिये।

३१ दिसम्बर १९५० को व्यापार व लाभ-हानि खाता तथा चिट्ठा तैयार कीजिये।

उत्तर : लाभ-हानि खाता १,०११ रु० ; चिट्ठा ५६,३७५ रु०।

१९. प्रीमियर सीमैंट कं० लि० की पुस्तकों से ३१ दिसम्बर १९५० को निम्न तलपट तैयार किया गया :—

	डे०	क्रे०
	रु०	रु०
अंश पूँजी (१० रु० वाले १०,००० अंश)	—	१,००,०००
अवशिष्ट याचन	२००	—
फर्नीचर व फिटिंग्स	२,५००	—
पट्टा खाता (Lease Account)	१,२५०	—
व्यापारिक लेनदार	—	५३,०८६
रहतिया (१ जनवरी १९५०)	३५,१८७	—
दर व कर	५२०	—
व्यापारिक देनदार	७३,०३७	—
क्रय	१,८५,४६२	१,२७२
विक्रय	२,०८६	२,८०,६५७
बट्टा	७,१०६	३,६२४
वेतन	१२,०००	—
सामान्य खर्चे	८,७५०	—
बैंक अधिविकर्ष (८% प्रति वर्ष)	—	५०,०००
किराया व भाड़ा	१५,६२५	—
संचालक शुल्क	२,५००	—
ब्याज	६,२६०	—
लाभ हानि खाता	—	१,३६१
अंतरिम लाभाश दिया (१० अगस्त १९५०)	१५,०००	—
डूबत ऋण	१,६२३	—
प्रारम्भिक व्यय	२००	—
प्राप्य बिल	८५,२००	—
देय बिल	—	१०,०००
बैंक	४२,४९१	—
	५,००,०००	५,००,०००

यह मानते हुये कि ३१ दिसम्बर १९५० को रहतिये का मूल्य २७,६६० रु० था, उपर्युक्त विवरण से निम्न समायोजनाओं को लेते हुए कम्पनी का ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का व्यापार व लाभ-हानि खाता तथा उसी तिथि को चिट्ठा तैयार कीजिये।

समायोजना (Adjustments) :—

(अ) फर्नीचर व फिटिंग्स पर १६% ह्रास काटिये ;

(ब) प्रारम्भिक व्यय का आधा भाग अपलिखित करो ;

(स) ७५० रु० सदिग्ध ऋण के लिये संचय करो ; तथा

(ट) बैंक अधिविकर्ष पर ब्याज लगाओ।

उत्तर : लाभ-हानि खाते का शेष १४,५०२ रु०, चिट्ठा २,३१,३८८ रु०।

२०. ३१ दिसम्बर १९५० को भारत खाद्य उत्पादन लि० की पुस्तकों में निम्न शेष थे :—

	रु०		रु०
भूमि व भवन	७,७०,०००	अंश पूँजी	६,८०,०००
कल व यन्त्र	६,७५,०००	६% ऋण-पत्र	५,००,०००
फर्नीचर व फिटिंग्स	४०,०००	संचित कोष	२,२५,०००
मोटर गाड़ी	६५,०००	कर्मचारी प्रोविडेन्ट कोष	४५,०००

विनियोग	२,३२,०००	अयाचित लाभांश	५,०००
विविध देनदार	३,००,०००	बैंक ऋण	२,००,०००
रहतिया १-१-१९५० को	८५,०००	विविध लेनदार	२,२८,५००
माल उपयोग किया	५,५०,०००	स्थायी जमा	८०,०००
संग्रह का रहतिया	३,००,०००	डूबत व सदिग्ध ऋण सचय	१०,०००
बैंक ऋण पर ब्याज	४,५००	ऋणपत्रों के विमोचन के लिये शोधनप्रणाधि (Sinking Fund)	५०,०००
उत्पादन व्यय	१,०५,०००	वेतन मजदूरी आदि के देय	१०,०००
स्थापन व्यय	१,२५,०००	विक्रय	११,६७,०००
प्रबन्ध सचालक का पारिश्रमिक	३०,०००	लाभ-हानि खाता	८४,०००
सामान्य खर्चे	६०,०००	प्राप्त ब्याज	५,०००
सचालक शुल्क	३,०००	हस्तान्तरण शुल्क	६,५००
डूबत ऋण	१८,०००		
१९४७ के लाभ पर आयकर	४०,०००		
अन्तरिम लाभांश दिया	३०,०००		
प्रारम्भिक व्यय	२०,०००		
रोकड़ हस्ते	८७,५००		
रोकड़ बैंक में	५०,०००		
	३६,२०,०००		३६,२०,०००

निम्नलिखित बातों का ध्यान रखते हुये ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का चिट्ठा व लाभ-हानि खाता तैयार कीजिये .—

(अ) कम्पनी की अधिकृत पूँजी १०० रु० वाले २०,००० अंशों में विभक्त है। अंश पूँजी के १०० रु० वाले १०,००० अंशों पर पूरी रकम माँग ली गई है परन्तु इसके १०,००० रु० प्राप्त नहीं हुए।

(ब) ३१ दिसम्बर १९५० को रहतिये का मूल्य १,५०,००० रु० था।

(स) ३१ दिसम्बर १९५० को विनियोग व बैंक ऋण पर अप्राप्त एवं अदत्त ब्याज क्रमश. ७५० रु० व ५०० रु० था।

(द) ३० जून १९५१ को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये दिये गये बीमे के १०,०००) 'सामान्य खर्चे' में सम्मिलित है।

(य) समस्त देनदारों पर ५% डूबत व सदिग्ध ऋण के लिये सचय कीजिये।

(र) ५०,००० रु० का स्थायी सम्पत्ति पर ह्रास के लिये १०,००० रु० का कम्पनी के कर्मचारी-पैंशन कोष में अभिदान के लिये, १५,००० रु० का कर के लिये तथा ३०,००० रु० का ऋणपत्रों के ब्याज के लिये प्रवन्ध कीजिये।

उत्तर : लाभ-हानि खाते का शेष २,३१,२५० रु० ; चिट्ठा २६, ८०, २५० रु०।

अध्याय—२३

घटौती (Depreciation)

सम्पत्ति के मूल्य मे एक दी हुई अवधि के अन्दर जो कमी स्थायी रूप से हो जाती है उसे घटौती कहते हैं। मूल्य में यह कमी कई कारणो से होती है जैसे :—

(अ) घिसाव और क्षय से, उदाहरण के लिए इमारत, मशीन, फर्नीचर, मोटर इत्यादि के मूल्य में प्रतिदिन के प्रयोग के कारण कमी होती जाती है।

(आ) समय के व्यतीत होने से, उदाहरण के लिये पट्टे पर ली गई भूमि या पेटेन्ट का मूल्य समय बीतने के साथ-साथ कम होता जाता है।

(इ) गत प्रयोग होने से (obsolescence), उदाहरण के लिए नया फैशन चल निकलने से विद्यमान मशीन कम प्रयोग होने लगती है जिससे उसके मूल्य में कमी आ जाती है।

(ई) मूल पदार्थों के समाप्त होने पर, जैसे खानों में से कोयला निकाल लिये जाने पर।

(उ) दुर्घटना से।

घटौती काटने के कारण :—व्यापार के अन्तिम खाते तैयार करते समय स्थायी सम्पत्ति की घटौती निम्नलिखित कारणो से ध्यान मे रखनी चाहिए :—

(१) घटौती वह हानि है जो लाभ पैदा करने के लिए स्थायी सम्पत्ति का प्रयोग करने से होती है। इसलिए वह भी मजदूरी, वेतन आदि की भाँति एक व्यापारिक खर्च है। यदि घटौती को छोड़ दिया जाये तो इसका अर्थ यह होगा कि हानि-लाभ खाते से एक आवश्यक खर्च छोड़ दिया गया है और स्थायी सम्पत्ति भी बैलेंस-शीट मे बढ़े हुए मूल्य पर दिखलाई जावेगी। इस तरह से हानि-लाभ खाता यथार्थ हानि या लाभ नहीं दिखला सकेगा और न बैलेंस-शीट ही यथार्थ आर्थिक स्थिति बतला सकेगी।

(२) यदि किसी सम्पत्ति की घटौती का उचित प्रबन्ध न किया जाय तो जब यह सम्पत्ति बेकार हो जावेगी तो अतिरिक्त पूँजी लगाने की आवश्यकता होगी। उदाहरणार्थ, किसी व्यापारी ने २०,०००) से व्यापार शुरू किया और उसने १०,०००) की, अनुमानत. दस वर्ष तक चलने वाली, मशीन खरीदी। इस समय उसकी आधी पूँजी मशीन में लगी हुई है। यदि इसकी घटौती के लिए कोई प्रबन्ध न किया हो और सबका सब लाभ व्यापार से निकाल लिया जावे, तो दस वर्ष के बाद उसकी बैलेंस-शीट सम्पत्ति की तरफ १०,०००) की मशीन और दायित्व की ओर २०,०००) की पूँजी दिखलावेगी। परन्तु मशीन अब बिलकुल बेकार होगी जिसका मतलब यह होगा कि उसकी १०,०००) की पूँजी मारी गई। उसने व्यापार से न केवल लाभ ही निकाले हैं वस्तुतः अपनी आधी पूँजी भी निकाल ली है। यदि इस बेकार मशीन के स्थान पर अब नई मशीन खरीदनी हो तो व्यापार के स्वामी को १०,०००) पूँजी के रूप में और देने पड़ेंगे।

घटौती कैसे मालूम की जाती है :—किसी सम्पत्ति विशेष की घटौती मालूम करने के लिए निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए :—(क) सम्पत्ति का मूल्य, (ख) इसका सम्भव जीवन, (ग) इसका अन्तिम मूल्य (Residual value) अर्थात वह रकम जो सम्पत्ति अन्त में उसके

अवस्था में बेचने पर प्राप्त होगी। सम्पत्ति के जीवन का अर्थ है कि वह सम्पत्ति विशेष कितने वर्ष तक काम दे सकेगी। कुछ स्थायी सम्पत्ति अपने जीवन-समय के बाद व्यर्थ हो जाते हैं जैसे पेटेंट आदि। परन्तु कुछ सम्पत्ति, जैसे यंत्र, मशीन आदि का कुछ मूल्य अन्त मे भी प्राप्त हो सकता है। जब सम्पत्ति जीर्ण-शीर्ण अवस्था के कारण व्यर्थ हो जाती है तो इसे रद्दी हुआ (scrapped) कहते है।

किसी सम्पत्ति के जीवन का अनुमान लगाना बहुत कठिन है। इसके लिए बड़े अनुभव की आवश्यकता है। साधारणत तमाम यन्त्रो और मशीनों को एक ही खाते मे रक्खा जाता है; परन्तु इस अवस्था मे हर एक यंत्र के जीवन का अनुमान करना बड़ा कठिन हो जाता है क्योंकि विभिन्न मशीनों का विभिन्न उपयोगी जीवन होगा। इसलिए इसका सन्तोषप्रद लेखा करने के लिए निम्नप्रकार का एक प्लान्ट रजिस्टर (Plant Register) रखना अच्छा रहता है —

प्लान्ट रजिस्टर

मशीन का विवरण———————— अनुमानित अवधि————————
स्थापित———————— मे, अनुमानित अन्तिम मूल्य————————
क्रय तिथि———————— बनाने वाले————————

तिथि	विवरण	प्रारम्भिक लागत	वृद्धि	मरम्मत व नवकरण	ह्रास					विशेष विवरण
					१६....	१६	१६..	१६..	१६.	
		रु०	रु०	रु०	रु०	रु०	रु०	रु०	रु०	

नोट :—कुछ विद्वानो का विचार है कि घटौती की रकम या दर मालूम करते समय सम्पत्ति की मूल लागत, उसका उपयोगी जीवन और अन्तिम मूल्य के साथ-साथ उसकी मरम्मत के संभावी लागत खर्चे और गत प्रयोग के खतरे का भी ध्यान रखना चाहिए। परन्तु यह उचित नहीं जान पड़ता। मरम्मत और गत प्रयोग को अलग से ही लिखना चाहिए।

मरम्मत के खर्चे :—सम्पत्ति को कार्य योग्य रखने की लागत, जैसे मरम्मत और छोटे-छोटे भागो का नवीनकरण, हानि-लाभ खाते से काटनी चाहिए, उसे स्थाई सम्पत्ति खाते (Block Account) में शामिल करना मूर्खता होगी और यदि ये खर्चे साल-दर-साल बहुत बदलते रहते है तो इनको बराबर रखने के लिए एक पोषण रिजर्व खाता (Maintenance Reserve Account) खोल लेना चाहिए, जैसा कि एक पिछले अध्याय मे लिखा जा चुका है।

गत प्रयोग (Obsolescence) —जब कोई नई मशीन चल निकलती है, तो पुरानी मशीनें बेकार हो जाती हैं। इसलिए उनको प्रयोग से हटाना पड़ता है और नयी मशीन खरीदनी पड़ती है। यदि ऐसा नहीं किया जावे तो हमारे प्रतिद्वन्द्वियों को स्पर्धा करने का अवसर मिल जावेगा। नये आविष्कारो के सम्बन्ध मे पहले से जानना असम्भव है, इसलिए इस संदिग्ध नुकसान पर घटौती से अलग ही विचार करना चाहिये। इसके लिये एक 'गत प्रयोग हानि कोष' (Obsolescence Reserve) या स्थायी उन्नति खाता (Block Improvement Reserve) बना लेना चाहिए।

घटौती का प्रवन्ध करने की पद्धतियाँ :—वार्षिक घटौती मालूम करने की पद्धति सम्पत्ति की प्रकृति के अनुसार बदलती रहती है। घटौती का प्रवन्ध करने के लिए भिन्न-भिन्न छ पद्धतियाँ हैं, स्थायी

किस्त पद्धति, घटते हुए बैलेंस की पद्धति, वार्षिक वृत्त पद्धति, घटौती फंड पद्धति, बीमा-पॉलिसी-पद्धति और पुनः मूल्यन पद्धति।

१. स्थायी किस्त पद्धति (Fixed Instalment Method):—इस पद्धति के अनुसार सम्पत्ति की मूल लागत का एक निश्चित भाग हर वर्ष हानि-लाभ खाते में लिख दिया जाता है ताकि जब यह सम्पत्ति बेकार होती है तो बहियों में इसकी कीमत शून्य के बराबर या अन्तिम मूल्य के बराबर रह जाती है।

इस वार्षिक घटौती को मालूम करना बिल्कुल सरल है। सम्पत्ति की लागत (अन्तिम मूल्य को घटाने के बाद) को इसके अनुमानित जीवन के वर्षों से विभाजित करने पर जो रकम आती है वह हर साल की घटौती होती है। इस तरह किसी सम्पत्ति की वार्षिक घटौती, जो ५०,०००) के मूल्य पर खरीदी गई हो और दस वर्ष चलने वाली हो परन्तु जिसका अन्तिम मूल्य कुछ भी न हो, ५०००) होगी।

इस पद्धति को सीधी रेखा पद्धति (Straight Line Method) भी कहते हैं क्योंकि यदि वार्षिक घटौती का कोई ग्राफ बनाया जावे तो यह एक सीधी रेखा के रूप में होगा।

उदाहरण १६०

१ जनवरी १९४८ को, एक व्यापार ने ५०,००० रु० की लागत के कल व यन्त्र खरीदे। यह अनुमान लगाया गया कि यह सम्पत्ति दस वर्ष तक चलेगी तथा इसके जीवन की समाप्ति पर इसका शेष मूल्य कुछ न होगा। तीन वर्षों का कल व यन्त्र खाता दिखाइये, जबकि ह्रास का प्रबन्ध स्थायी किस्त पद्धति के अनुसार किया गया है।

कल व यन्त्र खाता

		रु०			रु०
१९४८			१९४८		
जन० १	रोकड़	५०,०००	दि० ३१	ह्रास	५,०००
				शेष आ/ले	४५,०००
		५०,०००			५०,०००
१९४९			१९४९		
जन० १	शेष नी/ला	४५,०००	दि० ३१	ह्रास	५,०००
				शेष आ/ले	४०,०००
		४५,०००			४५,०००
१९५०			१९५०		
जन० १	शेष नी/ला	४०,०००	दि० ३१	ह्रास	५,०००
				शेष आ/ले	३५,०००
		४०,०००			४०,०००

२. घटते हुए बैलेंस की पद्धति (Diminishing Balance Method) .—इस पद्धति के अनुसार सम्पत्ति के शेष बचे हुए मूल्य की एक निश्चित प्रतिशत रकम घटौती के रूप में काट दी जाती है। इस तरह से हर साल घटौती की रकम कम होती रहती है।

यह पद्धति आजकल बहुत काम में आती है क्योंकि आयकर के वास्ते घटौती सम्पत्ति के घटे हुए (written down value) बैलेन्स पर ही दी जाती है सम्पत्ति की मूल लागत पर नहीं। यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि इस पद्धति के अनुसार सम्पत्ति का मूल्य कभी भी शून्य के बराबर नहीं हो सकता है, घटौती की दरें चाहे कितनी भी अधिक क्यों न हों।

उदाहरण १६१

१ जनवरी १९४८ को एक व्यापारी ने ५०,००० रु० की लागत के कल व यन्त्र खरीदे। इस सम्पत्ति पर क्रमागत ह्रास पद्धति द्वारा २०% ह्रास अपलिखित करने का निश्चय किया गया। तीन वर्षों का कल व यन्त्र खाता दिखाइये।

कल व यन्त्र खाता

		रु०			रु०
१९४८			१९४८		
जन० १	रोकड	५०,०००	दि० ३१	ह्रास	५,०००
				शेष आ/ले	४५,०००
		५०,०००			५०,०००
१९४९			१९४९		
जन० १	शेष नी/ला	४५,०००	दि० ३१	ह्रास	४,५००
				शेष आ/ले	४०,५००
		४५,०००			४५,०००
१९५०			१९५०		
जन० १	शेष नी/ला	४०,५००	दि० ३१	ह्रास	४,०५०
				शेष आ/ले	३६,४५०
		४०,५००			४०,५००

उदाहरण १९२

पूँजी सम्पत्ति का ह्रास अपलिखित करने की 'स्थाई किस्त' तथा 'क्रमागत ह्रास पद्धति' से आप क्या समझते हैं ? यदि एक सम्पत्ति १ जनवरी १९४८ को ५०,०.० रु० में खरीदी गई तो तीन वर्ष पश्चात् उसका पुस्त मूल्य क्या होगा यदि उसका इन दोनों पद्धतियों द्वारा १०% वार्षिक की दर से ह्रास अपलिखित किया जाय ? सूचीबद्ध बही खाते (tabular ledger account) द्वारा दिखाओ।

कल खाता

		(अ)	(ब)			(अ)	(ब)
		रु०	रु०			रु०	रु०
१९४८				१९४८			
ज० १	रोकड़	५०,०००	५०,०००	दि० ३१	ह्रास	५,०००	५,०००
					शेष आ/ले	४५,०००	४५,०००
		५०,०००	५०,०००			५०,०००	५०,०००
१९४९				१९४९			
ज० १	शेष नी/ला	४५,०००	४५,०००	दि० ३१	ह्रास	५,०००	४,५००
					शेष आ/ले	४०,०००	४०,५००
		४५,०००	४५,०००			४५,०००	४५,०००
१९५०				१९५०			
ज० १	शेष नी/ला	४०,०००	४०,५००	दि० ३१	ह्रास	५,०००	४,०५०
					शेष आ/ले	३५,०००	३६,४५०
		४०,०००	४०,५००			४०,०००	४०,५००

(अ) स्थाई किस्त विधि (ब) क्रमागत ह्रास पद्धति

उदाहरण १९३

१ जनवरी १९४७ को, एक उत्पादन संस्था ने १९,४०० रु० में मिल के यंत्र खरीदे तथा उसके लगाने में ६०० रु० व्यय किये। उसी वर्ष में १ जुलाई को १०,००० रु० की लागत का एक यंत्र और लिया। १ जुलाई १९४९ को १ जनवरी १९४७ को खरीदा गया यंत्र अप्रचलित हो जाने के कारण ८,००० रु० में नीलाम कर दिया, तथा उसी तिथि को १५,००० रु० की लागत का एक यंत्र और खरीदा।

प्रत्येक वर्ष ३१ दिसम्बर को सम्पत्ति की मूल लागत पर १०% वार्षिक की दर से ह्रास घटाया जाता है। १९५० में संस्था ने ह्रास अपलिखित करने की इस पद्धति को बदल कर क्रमागत ह्रास पद्धति पर १५% अपलिखित करने की पद्धति अपनायी।

१९४७ से १९५१ तक प्रत्येक वर्ष के अन्त में यंत्र खाता दिखाओ। आगणन निकटतम रुपये तक करो।

यंत्र खाता

१९४७		रु०	१९४७		रु०
ज० १	रोकड़ (क्रय मूल्य)	१६,४००	दि० ३१	ह्रास	२,५००
	रोकड़ (लगाने का व्यय)	६००		शेष आ/ले	२७,५००
जु० १	रोकड़	१०,०००			
		३०,०००			३०,०००
१९४८			१९४८		
ज० १	शेष नी/ला	२७,५००	दि० ३१	ह्रास	३,०००
				शेष आ/ले	२४,५००
		२७,५००			२७,५००
१९४९			१९४९		
ज० १	शेष नी/ला	२४,५००	जु० १	रोकड़	८,०००
जु० १	रोकड़	१५,०००	दि० ३१	ह्रास	२,७५०
				लाभ-हानि खाता (यत्र विक्रय पर हानि	७,०००
				शेष आ/ले	२१,७५०
		३९,५००			३९,५००
१९५०					
ज० १	शेष नी/ला	२१,७५०	१९५०	ह्रास	३,२६३
			दि० ३१	शेष आ/ले	१८,४८७
		२१,७५०			२१,७५०
१९५१					
जन० १	शेष नी/ला	१८,४८७	१९५१	ह्रास	२,७७३
			दि० ३१	शेष आ/ले	१५,७१४
		१८,४८७			१८,४८७

उदाहरण १९४

एक उत्पादक फर्म ने, जिसकी पुस्तकें ३१ दिसम्बर को बन्द होती हैं, १५ जनवरी १९४६ को ५०,००० रु० का यत्र खरीदा। १ जुलाई १९४७ को १०,००० रु० का तथा १५ अप्रेल १९५० को १६,४६६ रु० के अतिरिक्त यंत्र लिये। कुछ यन्त्र, जिनकी १९४६ में मूल लागत १०,००० रु० थी ३ जून १९४९ को ५,००० रु० में बेचे गये।

क्रमागत ह्रास पद्धति से १०% की दर से ह्रास अपलिखित करते हुये पाँच वर्षों का यन्त्र खाता बनाइये।

यन्त्र खाता

१९४६		रु०	१९४६		रु०
ज० १५	रोकड़	५०,०००	दि० ३१	ह्रास	५,०००
				शेष आ/ले	४५,०००
		५०,०००			५०,०००
१९४७			१९४७		
ज० १	शेष नी/ला	४५,०००	दि० ३१	ह्रास	५,५००
जु० १	रोकड़	१०,०००		शेष आ/ले	४९,५००
		५५,०००			५५,०००
१९४८			१९४८		
ज० १	शेष नी/ला	४९,५००	दि० ३१	ह्रास	४,९५०
				शेष आ/ले	४४,५५०
		४९,५००			४९,५००

१९४९			१९४९		
ज० १	शेष नी/ला	४४,५५०	जून ३०	रोकड़	५,०००
			दि० ३१	लाभ-हानि खाता (हानि)	२,२९०
				ह्रास	३,७२६
				शेष आ/ले	३३,५३४
		४४,५५०			४४,५५०
१९५०			१९५०		
ज० १	शेष नी/ला	३३,५३४	दि० ३१	ह्रास	५,०००
	रोकड़	१६,४६६		शेष आ/ले	४५,०००
		५०,०००			५० ०००

ह्रास १०% की दर पर है न कि १०% प्रति वर्ष अर्थात् यदि कोई सम्पत्ति पूरे वर्ष नहीं चले तो भी उस पर ह्रास १०% होगा।

जब तक प्रश्न में स्पष्ट न दिया गया हो, ह्रास प्रतिशत प्रति वर्ष की दर पर नहीं काटना चाहिये। ह्रास निकटतम रुपये तक निकालना चाहिये, आने व पाइयों के देने की कोई आवश्यकता नहीं है।

३. वार्षिक वृत्ति पद्धति (Annuity Method) :—इस पद्धति के अनुसार सम्पत्ति एक निश्चित दर से ब्याज पैदा करने वाला इनवेस्टमेंट समझा जाता है और इस सम्पत्ति का इतना भाग हर वर्ष कम कर दिया जाता है, जो सम्पत्ति खाते मे इसके घटे हुए मूल्य (written down value) का ब्याज डेबिट करने के बाद सम्पत्ति के मूल्य के एक निश्चित समय के बाद शून्य के बराबर कर देता है। इस तरह से घटौती की रकम तो हर साल एक ही रहती है परन्तु ब्याज की रकम हर साल सम्पत्ति की रकम के अनुसार कम होती जाती है। परिणामस्वरूप लाभ से अधिक रकम कटने लगती है। यह पद्धति व्यवहार मे बहुत कम आती है।

वार्षिक वृत्ति की पद्धति के अनुसार वार्षिक घटौती वृत्ति सारिणियो (Annuity Tables) से मालूम की जाती है जिसका कुछ भाग यहाँ पर भी दिया जाता है :—

वार्षिक वृत्ति पद्धति द्वारा १ रु० अपलिखित करने के लिए
सालाना देय राशि जो कि एक रुपया क्रय करेगा

साल	३ प्रतिशत	३½ प्रतिशत	४ प्रतिशत	४½ प्रतिशत	५ प्रतिशत
३	·३५३५३०	३५६०३४	·३६०३४८	३६३७७३	·३६७२०८
४	·२६९०२७	·२७२२५१	२७५४९०	·२७८७४३	·२८२०११
५	·२१८३५४	·२२१४८१	·२२४६२७	·२२७७९१	·२३०९७४
१०	·११७२३०	१२०२४१	·१२३२९०	·१२६३७८	·१२९५०४
१५	·०८३७६६	·०८६८२५	·०८९९४१	·०९३११३	·०९६३४२
२०	·०६७२१५	·०७०३६१	०७३६८१	·०७६८७६	·०८०२४२

उदाहरण १९५

१ जनवरी १९४८ को, एक फर्म ने १०,००० रु० का तीन वर्ष के पट्टे पर गृह खरीदा, तथा पट्टे को ५% वार्षिक की दर से वार्षिक वृत्ति पद्धति द्वारा ह्रास करने का निश्चय किया गया। तीन वर्ष का पट्टा सम्पत्ति खाता दिखाओ।

उपर्युक्त सूची द्वारा हमें पता लगता है कि १ रु० का तीन वर्ष में वार्षिक वृत्ति पद्धति द्वारा ह्रास अपलिखित करने में, ·३६७२०८ रु० वार्षिक राशि आती है, अतः १०,००० रु० अपलिखित करने से वार्षिक ह्रास ·३६७२०८ × १०,००० या ३,६७२·०८ रु० या ३,६७२ रु० १ आ० २ पा० होगा।

पट्टा सम्पत्ति खाता

		रु०	आ	पा.			रु०	आ.	पा.
१६४८					१६४८				
जन० १	रोकड़	१०,०००	—	—	दि० ३१	ह्रास	३,६७२	१	३
दि० ३१	व्याज	५००	—	—		शेष आ/ले	६,८२७	१४	६
		१०,५००	—	—			१०,५००	—	—
१६४६					१६४६				
जन० १	शेष नी/ला	६,८२७	१४	६	दि० ३१	ह्रास	३,६७२	१	३
दि० ३१	व्याज	३४१	६	४		शेष आ/ले	३,४६७	३	१०
		७,१६६	५	१			७,१६६	५	१
१६५०					१६५०				
जन० १	शेष नी/ला	३,४६७	३	१०	दि० ३१	ह्रास	३,६७२	१	३
दि० ३१	व्याज	१७४	१३	५					
		३,६७२	१	३			३,६७२	१	३

४. घटौती फण्ड पद्धति (Depreciation Fund Method or Sinking Fund Method) :—इस पद्धति के अनुसार हर वर्ष हानि-लाभ खाते से एक स्थाई रकम घटौती के लिए कम कर दी जाती है और घटौती फण्ड खाते मे क्रेडिट कर दी जाती है। इस रकम के बराबर एक रकम व्यापार से बाहर विनियोग कर दी जाती है और यह रकम व्याज दर व्याज पर एकत्रित होती रहती है ताकि सम्पत्ति के जीवन की समाप्ति पर यदि उन विनियोगो को बेचा जावे तो नई सम्पत्ति खरीदने के लिए काफी रुपया प्राप्त हो जाय।

इस पद्धति का प्रयोग तब किया जाता है जब किसी बहुमूल्य सम्पत्ति के प्रतिस्थापन (replacement) का आयोजन करना हो। इस सम्बन्ध में निम्न प्रकार लेखा किया जाता है :—

(क) प्रथम वर्ष के अन्त में :—वार्षिक घटौती की रकम से हानि-लाभ खाते को डेबिट किया जाता है और घटौती फंड खाते को क्रेडिट किया जाता है। इसके साथ ही साथ घटौती फंड इनवेस्टमेंट खाते के नाम लिखकर रोकड़ खाते में यह रकम जमा की जाती है।

(ख) आगामी हर वर्ष के अन्त मे :—व्याज की रकम घटौती फंड इनवेस्टमेंट खाते को डेबिट और घटौती फंड खाते को क्रेडिट किया जाता है। वार्षिक घटौती की रकम से हानि लाभ खाते को डेबिट किया जाता है और घटौती फंड खाते को क्रेडिट किया जाता है। इसके अतिरिक्त घटौती फंड इनवेस्टमेंट खाते को डेबिट करके उसी रकम से रोकड़ खाते को क्रेडिट किया जाता है।

(ग) सम्पत्ति के प्रतिस्थापन पर :—इनवेस्टमेंटो की बिक्री से प्राप्त हुई रकम से रोकड़ खाते को डेबिट और घटौती फंड इनवेस्टमेंट खाते को क्रेडिट करते हैं और इस बाद वाले खाते मे विनियोगो की बिक्री पर जो लाभ या हानि हो उसे हानि-लाभ खाते मे ट्रांसफर कर देते है। नई सम्पत्ति की कुल लागत से नई सम्पत्ति के खाते को डेबिट किया जाता है और रोकड़ खाते को क्रेडिट करते हैं। घटौती फंड खाते को भी डेबिट करके पुरानी सम्पत्ति खाते को क्रेडिट किया जाता है और इस तरह से ये दोनों खाते बन्द हो जाते हैं।

इसी बीच के समय में घटौती फंड खाता बैलेंस-शीट में ऋण के रूप मे और घटौती फंड इनवेस्टमेंट खाता सम्पत्ति के रूप मे दिखलाया जाता है। जिस स्थाई सम्पत्ति के लिए यह घटौती फंड तैयार किया जाता है उसे बैलेंस-शीट में मूल लागत पर ही दिखलाते हैं।

इस पद्धति के अनुसार जो वार्षिक घटौती होती है उसे शोधन प्रणाली सूची (Sinking Fund Tables) से मालूम किया जाता है, जिसके एक पृष्ठ का कुछ हिस्सा यहाँ दिया जाता है :—

तालिका अ

१ रु० का प्रबन्ध करने के लिए वार्षिक शोधन प्रणवि किस्तें, या
१ रु० का प्रबन्ध करने के लिए वार्षिक देय वृत्ति

वर्ष	३ प्रतिशत	३½ प्रतिशत	४ प्रतिशत	४½ प्रतिशत	५ प्रतिशत
३	'३२३५३०	'३२१६३३	'३२०३४८	'३१८७७३	'३१७२०८
४	२३६०२८	'२८७२५१	'२३५४६०	'२३३७४४	'२३२०१२
५	१८८३५४	१८६४८१	१८४६२७	'१८२७९२	'१८०९७५
१०	'०८७२३०	०८५२४१	'०८३२९१	'०८१३७८	'०७९५०४
१५	०५३७६७	'०५१८२५	'०४९९४१	'०४८११४	'०४७३४२
२०	'०३७२१६	'०३५३६१	०३३५८२	०३१८७६	०३०२४३

तालिका ब

वे राशियाँ जो १ रु० वार्षिक देय वृत्ति से हो जावेंगी

वर्ष	३ प्रतिशत	३½ प्रतिशत	४ प्रतिशत	४½ प्रतिशत	५ प्रतिशत
३	३ ०९०९०	३'१०६२२	३ १२१६०	३'१३७०२	३ १५२५०
४	४ १८३६२	४ २१४९४	४'२४६४६	४ २७८१९	४ ३१०१२
५	५ ३०९१०	५ ३६२४६	५'४१६३२	५'४७०७१	५ ५२५६३
१०	११ ४६३८७	११'७३१३९	१२ ०६६१०	१२'२८८२०	१२ ५७७८९
१५	१८'५९८९१	१९'२९५६८	२०'०२३५८	२०'७८४०५	२१'५७८५६
२०	२६ ८७०३७	२८ २७९०८	२९'७७८०७	३१ ३७१४२	३३'०६५९५

उदाहरण १९६

१ जनवरी १९४८ को, एक फर्म ने १०,००० रु० की सम्पत्ति तीन वर्ष के पट्टे पर खरीदी, तथा पट्टे को ह्रास कोष द्वारा बदलने का, जो ५% वार्षिक ब्याज पर विनियोग किया जायगा, निश्चय किया गया।

उपर्युक्त से सम्बन्धित आवश्यक खाते दिखलाइये।

यह निकालना आवश्यक है कि ५% चक्रवृद्धि ब्याज पर तीन सालों में १०,००० रु० करने के लिए कितनी राशि प्रतिवर्ष लगानी चाहिये। यह उपर्युक्त दोनों तालिकाओं में से किसी एक के द्वारा ज्ञात किया जा सकता है।

तालिका अ के अनुसार '३१७२०८ रु० का १ रु० हो जाता है।

अतः '३१७२०८ × १०००० के १०,००० रु० हो जावेंगे।

या वार्षिक किस्त ३,१७२ ०८ रु० या ३,१७२ रु० १ आ० ३ पा० होगी।

तालिका ब के अनुसार १ रु० ३'१५२५० रु० हो जावेगा।

अतः ३'१५२५० रु० पैदा करने के लिए १ रु० की किस्त होगी।

या १०,००० रु० पैदा करने के लिए किस्त होगी—१०,०००/३ १५२५०

या ३,१७२ ०८ रु० या ३,१७२ रु० १ आ० ३ पा०।

पट्टा सम्पत्ति खाता

		रु०			रु०
१९४९ जन. १	रोकड़	१०,०००	१९५० दि ३१	ह्रास कोष	१०,०००

ह्रास कोष खाता

		रु०	आ	पा			रु०	आ.	पा.
१९४९ दि. ३१	शेष आ/ले	३,१७२	१	३	१९४८ दि ३१	लाभ-हानि खाता	३,१७२	१	३
१९४९ दि. ३१	शेष आ/ले	६,५०२	१२	२	१९४९ जन १	शेष नी/ला	३,१७२	१	३
					दि ३१	ह्रास कोष विनियोग खाता	१५८	९	८
						लाभ-हानि खाता	३,१७२	१	३
		६,५०२	१२	२			६,५०२	१२	२

१९५०					१९५०				
दि. ३१	पट्टा सम्पत्ति	१०,०००	–	–	जन. १	शेष नी/ला	६,५०२	१२	२
					दि. ३१	ह्रास कोष विनियोग खाता	३२५	२	३
						लाभ-हानि खाता	३,१७२	१	७
		१०,०००	–	–			१०,०००	–	–

टिप्पणी :—गणना निकटतम होने के कारण अन्तिम वर्ष की किस्त में ४ पाई का समायोजन है। व्यवहार में वार्षिक किस्त की राशि में आने पाई नहीं लिये जाते है।

ह्रास कोष विनियोग खाता

		रु०	आ	पा.			रु०	आ	पा.
१९४८					१९४९				
दि. ३१	रोकड़	३,१७२	१	३	दि. ३१	शेष आ/ले	३,१७२	१	३
१९४९					१९४९				
जन १	शेष नी/ला	३,१७२	१	३	दि ३१	शेष आ/ले	६,५०२	१२	२
दि ३१	ह्रास कोष खाता	१५८	९	८					
	रोकड़	३,१७२	१	३					
		६,५०२	१२	२			६,५०२	१२	२
१९५०					९५०				
जन. १	शेष नी/ला	६,५०२	१२	२	दि ३१	रोकड़ खाता	१०,०००	–	–
दि. ३१	ह्रास कोष खाता	३२५	२	३					
	रोकड़	३,१७२	१	७					
		१०,०००	–	–			१०,०००	–	–

टिप्पणी—अंत में नक़द किस्त विनियोग नहीं की जावेगी, क्योंकि एक ही तिथि को विनियोग खरीदने और फिर बेचने का कोई अर्थ नहीं है।

जब नई सम्पत्ति खरीदी जावेगी तो उसकी लागत सम्पत्ति खाते के नाम लिखकर रोकड़ खाते में जमा की जावेगी।

उदाहरण १९७

१ जनवरी १९४८ को, एक सेना के ठेकेदारी फर्म ने तीन वर्ष के पट्टे पर ५०,००० रु० में एक विशाल भवन खरीदा, तथा उसको ह्रास कोष द्वारा, जिसके विनियोग पर ३% वार्षिक ब्याज प्राप्त होगा, बदलने का निश्चय किया।

उपर्युक्त से सम्बन्धित आवश्यक बहीखाते दिखलाइये। एक वर्ष की वार्षिक वृत्ति, ३% वार्षिक ब्याज की दर से तीन वर्ष में ३·०९०९ रु० हो जाती है। अपनी गणना निकटतम रुपये तक करो।

भवन-पट्टा खाता

		रु०			रु०
१९५०			१९५१		
जन० १	रोकड़ खाता	५०,०००	दि० ३१	ह्रास कोष खाता	५०,०००

ह्रास कोष खाता

		रु०			रु०
१९४८			१९४८		
दि० ३१	शेष आ/ले	१६,१७७	दि० ३१	लाभ-हानि खाता	१६,१७७
१९४९			१९४९		
दि० ३१	शेष आ/ले	३२,८३९	जन० १	शेष नी/ला	१६,१७७
			दि० ३१	ब्याज	४८५
				लाभ-हानि खाता	१६,१७७
		३२,८३९			३२,८३९

१९५०			१९५०		
दि० ३१	पट्टा-भवन खाता	५०,०००	जन० १	शेष नी/ला	३२,८३६
			दि० ३१	ब्याज	९८५
				लाभ-हानि खाता	१६,१७९
		५०,०००			५०,०००

ह्रास कोष विनियोग खाता

१९४८		रु०	१९४८		रु०
दि० ३१	रोकड़	१६,१७७	दि० ३१	शेष आ/ले	१६,१७७
१९४९			१९४९		
जन० १	शेष नी/ला	१६,१७७	दि० ३१	शेष आ/ले	३२,८३६
दि० ३१	ब्याज	४८५			
	रोकड़	१६,१७७			
		३२,८३६			३२,८३६
१९५०			१९५०		
जन० १	शेष नी/ला	३२,८३६	दि० ३१	शेष आ/ले	५०,०००
दि० ३१	ब्याज	९८५			
	रोकड़	१६,१७९			
		५०,०००			५०,०००

टिप्पणी —यदि ह्रास कोष के विनियोग ३१ दिसम्बर १९५० को बेच दिये जाते हैं तो ह्रास कोष विनियोग खाता, बजाय शेष निकालने के रोकड़ी जमा किया जायगा।

उदाहरण १९८

१ जनवरी १९३९ को, एक कम्पनी ने ६०,००० रु० का एक यन्त्र खरीदा तथा १,००० रु० उसके लगाने पर व्यय किये। खरीदने की तिथि को यह अनुमान लगाया गया कि यत्र पन्द्रह वर्ष तक चलेगा, व उसको बदलने के लिये एक ह्रास कोष बनाने का, जो परम प्रतिभूतियों (Gilt edged-securities) में विनियोगित होगा, निश्चय किया।

अनुमानित जीवन के समाप्त होने से पूर्व, ३१ दिसम्बर १९५० को यत्र खण्डित करने का तथा उसको एक नवीन आविष्कृत यन्त्र से बदलने का निश्चय किया गया। यन्त्र को खण्डित करने पर २०० रु० व्यय हुये तथा नवीन यन्त्र के खरीदने व लगाने में २३,००० रु० की लागत पड़ी। पुराने यन्त्र के ५०० रु० मूल्य के भाग रख लिये गये तथा शेष ७५० रु० में बेच दिये।

पुराने यन्त्र के खण्डित करने की तिथि को पुस्तकों में ह्रास कोष १६,५०० रु० था जो इतनी ही राशि के लागत के विनियोगों का प्रतिनिधित्व करता था। ये विनियोग १५,६०० रु० में बेचे गये।

यन्त्र बदलने के पश्चात्, सम्बन्धित आवश्यक खाते (Ledger Accounts) दिखाओ।

यन्त्र खाता

१९ ०		रु०	१९५०		रु०
जन० १	शेष नी/ला	२१,०००	दि० ३१	रोकड़ खाता	७५०
दि० ३१	रोकड़	२३,०००		ह्रास कोष खाता	१९,७५०
				शेष आ/ले	२३,५००
		४४,०००			४४,०००

ह्रास कोप खाता

१९५०		रु०	१९५०		रु०
दि० ३१	खण्डन व्यय	२००	जन० १	शेष नी/ला	१६,५००
	ह्रास कोष विनियोग (हानि)	९००	दि० ३१	लाभ-हानि खाता	४,३५०
	यन्त्र खाता	१९,७५०			
		२०,८५०			२०,८५०

ह्रास कोष विनियोग खाता

		रु०			रु०
१६५० जन० १	शेष नी/ला	१६,५००	१६५० दि० ३१	रोकड़	१५,६००
				ह्रास कोष खाता	६००
		१६,५००			१६,५००

५. बीमा पॉलिसी पद्धति (Insurance Policy Method) :—इस पद्धति और घटौती फंड पद्धति में केवल इतना ही अन्तर है कि रोकड़ी रुपया इनवेस्टमेंट खरीदने के काम में लेने के स्थान पर बीमा कम्पनी को प्रीमियम के रूप मे एक परिमित बीमा पॉलिसी (Endowment Policy) खरीदने के लिए दे दिया जाता है। कम्पनी इसके बदले एक निश्चित धन एक निश्चित समय के बाद देने का उत्तरदायित्व लेती है।

जब यह पद्धति काम मे ली जाती है तो पॉलिसी-खाता घटौती फंड इनवेस्टमेंट खाते का स्थान ग्रहण कर लेता है। इस पॉलिसी-खाते पर वार्षिक व्याज नहीं मिलेगा परन्तु प्रीमियमो पर प्राप्त होने वाला व्याज पॉलिसी के रुपये वापिस होने के साथ इकट्ठा प्राप्त होगा।

उदाहरण १६६

१ जनवरी १६४८ को, एक फर्म ने १०,००० रु० में तीन वर्ष के पट्टे पर गृह खरीदा तथा पट्टे को एक बीमा पॉलिसी द्वारा, जो ३,२०० रु० की वार्षिक किस्त पर खरीदी गई है, बदलने का निश्चय किया।

उपरोक्त से सम्बन्धित आवश्यक खाते (Ledger Accounts) दिखाओ।

पट्टा-सम्पत्ति खाता

		रु०			रु०
१६४८ जन० १	रोकड़	१०,०००	१६५० दि० ३१	ह्रास कोष खाता	१०,०००

ह्रास कोष खाता

		रु०			रु०
१६४८ दि० ३१	शेष आ/ले	३,२००	१६४८ दि० ३१	लाभ-हानि खाता	३,२००
१६४६ दि० ३१	शेष आ/ले	६,४००	६४६ जन० १	शेष नी/ला	३,२००
			दि० ३१	लाभ-हानि खाता	३,२००
		६,४००			६,४००
१६५० दि० ३१	पट्टा सम्पत्ति खाता	१०,०००	१६५० जन० १	शेष नी/ला	६,४००
				लाभ-हानि खाता	३२,००
				पट्टा पालिसी खाता	४००
		१०,०००			१०,०००

पट्टा पॉलिसी खाता

		रु०			रु०
१६४८ दि० ३१	रोकड़	३,२००	१६४८ दि० ३१	शेष आ/ले	३,२००
१६४६ जन० १	शेष नी/ला	३,२००	१६४६ दि० ३१	शेष आ/ले	६,४००
दि० ३१	रोकड़	३,२००			
		६,४००			६,४००

१९५०			१९५०		
जन० १	शेष नी/ला	६,४००	दि० ३१	रोकड़	१०,०००
दि० ३१	रोकड़	३,२००			
	ह्रास कोष खाता	४००			
		१०,०००			१०,०००

६. पुन. मूल्य निर्धारण पद्धति (Revaluation method) :—इस पद्धति के अनुसार कुल सम्पत्ति का मूल्य हर वर्ष निर्धारित किया जाता है और जो भी घटौती होती है वह हानि लाभ खाते से काट ली जाती है। यह पद्धति उस सम्पत्ति के लिए उचित जान पड़ती है, जिसका जीवन अनिश्चित और बहुत ही परिवर्तनशील है, जैसे जानवर, मोटर आदि।

घटौती का बहियो मे लेखा —घटौती की रकम को खाते मे दो प्रकार से लिखा जा सकता है :—

(क) घटौती की रकम हानि-लाभ खाते मे डेबिट करके उस सम्पत्ति विशेष के खाते में क्रेडिट की जाती है और सम्पत्ति कम किये हुए मूल्य पर बैलेंस-शीट मे दिखलाई जाती है।

(ख) घटौती की रकम हर वर्ष हानि लाभ खाते मे डेबिट करके एक घटौती रिजर्व खाते में क्रेडिट की जाती है और सम्पत्ति को मूल लागत पर बैलेस-शीट मे दिखलाया जाता है। घटौती रिजर्व खाता इस तरह से तिथि विशेष तक की कुल घटौती दिखलाता है। जब सम्पत्ति को प्रयोग से निकालकर बेच दिया जाता है तो बिक्री की रकम इस सम्पत्ति खाते से क्रेडिट कर दी जाती है और सम्पत्ति खाते के शेष को घटौती रिजर्व खाते में ट्रांसफर कर दिया जाता है। यह पद्धति प्रथम पद्धति से अधिक अच्छी है, क्योंकि इससे अधिक सूचना प्राप्त हो सकती है। अधिकतर कम्पनियॉ इसी पद्धति के अनुसार घटौती का लेखा करती है।

प्रश्न

१. ह्रास क्या है और यह किस प्रकार होता है ?

२. व्यापार के खातों में ह्रास की व्यवस्था करने का क्या उद्देश्य है ? स्पष्ट रूप से बतलाइये।

३, वार्षिक ह्रास की राशि निश्चय करने के लिये कौनसी बातों का ध्यान रखना आवश्यक है ? क्या मरम्मत का ह्रास की राशि पर प्रभाव पड़ता है ?

४. निम्न में अन्तर बतलाइये (अ) ह्रास तथा मूल्य में घट-बढ़ (ब) ह्रास तथा अप्रचलन। अप्रचलन की क्या व्यवस्था होनी चाहिये ?

५. स्थायी सम्पत्ति के ह्रास की व्यवस्था करने की विभिन्न पद्धतियों का संक्षेप में वर्णन करो।

६ एक यत्र का, जिसकी पॉच वर्ष पूर्व ५०,००० रु० लागत थी तथा जिसकी १० वर्ष चलने की आशा थी, सीधी पंक्ति (Straight-line) पद्धति पर ह्रास किया गया। उसके कुछ मुख्य भागों के नष्ट हो जाने के कारण यह स्पष्ट है कि इस यत्र को तीन वर्षों में लगभग ६०,००० रु० की लागत से पुनः स्थापित किया जाय। इस स्थिति का वार्षिक खातों में क्या व्यवहार किया जायेगा ?

७. १ जनवरी १९४९ को एक संस्था ने अपने पुराने यत्र को बदलने के लिये १०,००० रु० की लागत से एक नवीन यत्र खरीदा। पुराना यत्र, जो पुस्तकों में २,८०० रु० से दिखाया जा रहा है, ६०० रु० में बिका। नवीन यत्र का अनुमानित जीवन १५ वर्ष है। उचित पद्धति के अनुसार ह्रास की व्यवस्था करते हुये १९४९ व १९५० के वर्ष के लिये कल व यंत्र लिखिये।

८ एक यत्र २०,००० रु० में खरीदा; उसका जीवन १० वर्ष व उसका अन्तिम मूल्य २,००० रु० माना गया है। शोधनप्रणिधि (Sinking Fund) द्वारा उसको बदलने का निश्चय किया गया। प्रथम तीन वर्षों के आवश्यक खाते दिखाइये। ०.०८७२३ रु० प्रति वर्ष ३% प्रति वर्ष चक्रवृद्धि ब्याज पर विनियोग करने से १० वर्ष की समाप्ति पर १ रु० संग्रह होगा।

उत्तर : शोधन प्रणिधि का शेष ४,८५२ रु० २ आ० ३ पा०।

९ कभी-कभी एक प्लान्ट के ह्रास की व्यवस्था प्रति वर्ष मूल लागत का एक स्थायी अनुपात अग्रलिखित

करके की जाती है, तथा कभी कभी प्रति वर्ष शेष पर एक स्थायी प्रतिशत, जो कि उस वर्ष के प्रारम्भ में है, अपलिखित किया जाता है।

मानलो कि वह यंत्र १०,००० रु० में खरीदा गया है। यदि इसे दोनों पद्धतियों द्वारा १०% से अपलिखित किया जाय तो तीन वर्ष के पश्चात् यंत्र खाते में क्या शेष होगा ? सूची बद्ध (Tabular) खाते द्वारा दिखाइये।

उत्तर : ७,००० रु० तथा ७,२९० रु० ।

१०. १ जनवरी १९४७ को एक व्यापारिक संस्था ने ४,००० रु० की एक मोटर लारी खरीदी तथा प्रति वर्ष क्रमागत ह्रास पद्धति (Written-down Value method) के अनुसार २०% ह्रास अपलिखित किया। चतुर्थ वर्ष के अन्त में उस लारी को एक नयी लारी से (जिसकी लागत ५,००० रु० है) बदलने का निश्चय किया गया, तथा यह निश्चित हुआ कि पुरानी लारी को बदले में दे देने पर क्रय मूल्य में १,० ० रु० की कमी हो जायगी। ३१ दिसम्बर १९५० को मोटर लारी खाता दिखाओ।

उत्तर . मोटर लारी खाते का शेष ५,००० रु० ।

११. १ जनवरी १९४६ को एक लिमिटेड कम्पनी ने ६००० रु० में एक पुराना यंत्र खरीदा तथा तुरन्त ही ४,००० रु० उसके साफ करने में व्यय किये। उसी वर्ष १ जुलाई को ५,००० रु० की लागत का एक अतिरिक्त यंत्र खरीदा। १ जुलाई १९४७ को, १ जनवरी १९४५ को खरीदा गया यंत्र अप्रचलित हो जाने के कारण २,००० रु० में बेचा गया। उसी दिन १२,००० रु० की लागत का एक नया यंत्र खरीदा।

३१ दिसम्बर को प्रति वर्ष सम्पत्ति की मूल लागत पर १०% प्रति वर्ष की दर से ह्रास का प्रबन्ध किया है। १९४८ में कम्पनी ने ह्रास काटने की इस पद्धति के स्थान पर १५% की दर से क्रमागत ह्रास पद्धति अपनायी।

प्रत्येक वर्ष के अन्त में १९४५ से १९५० (दोनों सहित) तक यंत्र खाता दिखाइये।

उत्तर : शेष ९,२०३ रु० १५ आ० ११ पा० ।

१२. एक उत्पादक के ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष के बारे में निम्नलिखित, बातें ज्ञात हैं :—

(अ) १ जनवरी १९५० को कल व यंत्र खाते का नाम शेष २६,८४० रु० था; (ब) वर्ष के दौरान में पुस्तकों में दिखाई गई १,२८६ रु० की तीन मशीनें ६०० रु० में बेची गईं; (स) १ अप्रैल १९५० को ५,८८० रु० की लागत की नई मशीन खरीदी तथा २१६ रु० (१७४ रु० मजदूरी व ४२ रु० का माल) व्यय करके अपने ही मजदूरों द्वारा लगवाई गई; (द) कल के अतिरिक्त क्रय पर १५% व पुरानी कल पर २०% ह्रास अपलिखित करने का व्यापार में चलन है।

३१ दिसम्बर १९५० को कल व यंत्र खाता तैयार कीजिये।

उत्तर : शेष २५,६२४ रु० १२ आ० ६ पा० ।

१३ एक कम्पनी ने पाँच वर्ष के लिये १५,००० रु० की लागत का एक पट्टा लिया। आपको गणना सारिणी से पता लगा कि इस मूल्य को वार्षिक वृत्ति पद्धति द्वारा ५% ब्याज की दर से अपलिखित करने पर ३,४६४ रु० ६ आ० ७ पा० वार्षिक ह्रास की राशि होगी।

पाँच वर्षों का पट्टा खाता तैयार कीजिये तथा यह भी दिखलाइये कि पाँच वर्षों में लाभ-हानि खाते में प्रति वर्ष कितना ह्रास नाम होगा।

१४. एक संयुक्त स्कन्ध प्रमण्डल ने १,००,००० रु० का एक यन्त्र क्रय किया जिसमें १०,००० रु० का एक बॉयलर भी शामिल है। प्रथम चार वर्षों में यन्त्र खाता १०% की दर पर घटती हुई किस्त (Reducing Instalment) पद्धति के अनुसार ह्रास से क्रेडिट किया गया। पाँचवे वर्ष मे उसके मुख्य भाग मे खराबी आ जाने के कारण बॉयलर बेकार हो गया तथा वह २,००० रु० मे बेच दिया गया तथा उसकी राशि यन्त्र खाते में क्रेडिट कर दी गई।

उपर्युक्त विवरण से चालू वर्ष में बेकार बॉयलर के लिये प्राप्त रोकड़ और उस पर हुई हानि व चालू वर्ष के लिए यन्त्र के ह्रास का ध्यान रखते हुये यन्त्र खाता तैयार कीजिये

उत्तर . शेष ५३,१४४ रु०

१५ १ जनवरी १९४९ को, एक लिमिटेड कम्पनी के सचालकों ने २,९०,००० रु० का एक नया यंत्र खरीद कर अपना पुराना यंत्र बदलने का निश्चय किया। कम्पनी की पुस्तकों में पुराने यंत्र खाते में १,२०,००० रु० तथा ह्रास खाते में ७५,००० रु० शेष था। यंत्र का एक भाग ५,००० रु० में नीलाम हुआ तथा १०,००० रु० मूल्य का एक भाग नये यंत्र के बदले में दिया गया।

यदि ह्रास की व्यवस्था क्रमागत शेष पद्धति पर ५% प्रति वर्ष है तो ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले दो वर्षों का यंत्र खाता बनाओ।

उत्तर : ३०,००० रु० की हानि लाभ-हानि खाते में हस्तान्तरित की गई; यंत्र खाते का शेष २,६१,७२५ रु० ।

अध्याय—२४

रिजर्व और सिंकिंग फंड

'रिजर्व' शब्द या तो किसी विशेष उद्देश्य के लिए हानि-लाभ खाते मे नेट लाभ निकालने के पहले कुछ रकम अलग रखकर बनाये गये आयोजन के लिये, या नेट लाभ के उस भाग के लिए, जो भविष्य के प्रयोग के लिए अलग रख दिया गया है, प्रयोग किया जाता है। इसलिए रिजर्व दो श्रेणियो में विभाजित किये जा सकते हैं —

(१) विशेष रिजर्व (Specific or Special Reserve)

विशेष रिजर्व वह रिजर्व है (आधुनिक लेखा कर्म मे इसे 'आयोजन' Provision कहते हैं) जो नेट लाभ प्राप्त करने से पहले हानि-लाभ खाते मे से घटा कर किसी विशेष उद्देश्य के लिए बनाया जाता है। यह विशेष उद्देश्य निम्न प्रकार के हो सकते हैं :—

(क) न दिये गये खर्चों के लिए, जैसे वेतन, मजदूरी, कमीशन, संचालको की फीस, आयकर इत्यादि के लिए रिजर्व बनाये जा सकते हैं।

(ख , सम्भावनीय हानि जो अभी निश्चित नहीं होने पाई हो, जैसे डूबत खाते, देनदारों पर, कटौती इत्यादि के लिए रिजर्व बनाये जा सकते है।

(ग) किसी सम्पत्ति पर होने वाले खर्च को लाभ हानि खाते से हर वर्ष बराबर-बराबर चार्ज करने के हेतु भी रिजर्वों की सृष्टि की जाती है, जैसे मरम्मत और नवीनकरण रिजर्व, बीमा रिजर्व, धर्मादा रिजर्व इत्यादि।

इन विशेष रिजर्वों का मुख्य उद्देश्य किसी वर्ष के तमाम खर्चे और सम्भावनीय हानि को उसी वर्ष के हानि-लाभ खाते में लिखना है ताकि यथार्थ लाभ या हानि मालूम की जा सके। इन रिजर्वों की सृष्टि करना अत्यावश्यक है। यदि यह रिजर्व न बनाये जावे तो लाभ या हानि बिल्कुल अशुद्ध होगे।

विशेष रिजर्व बैलेंस-शीट मे या ऋण के रूप में या सम्बन्धित सम्पत्ति में से कम करके दिखलाया जा सकता है। उदाहरण के लिये, डूबत खाते का रिजर्व या तो ऋण के रूप मे या देनदारों मे से कम करके दिखलाया जा सकता है।

यह अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए कि रिजर्व व्यापार का ऋण क्यो है। रिजर्व लाभ का वह भाग है जो किसी सम्भावनीय हानि की पूर्ति करने के लिए रखा गया है। यदि रिजर्व न रखा जाता तो लाभ अवश्य बढ़ जाता और इस तरह वह फर्म के ऋण को बढ़ा देता। परन्तु जिस हानि के हेतु रिजर्व की सृष्टि की गई है वह यदि नहीं होती तो इस रिजर्व पर व्यापारिक लाभ होने के नाते व्यापार स्वामी का अधिकार होगा। अतः प्रत्येक रिजर्व ऋण के रूप में होता है।

रिजर्व विशेष से सम्बन्धित हिसाब खाते पहले ही अध्याय १० मे समझाये जा चुके हैं।

(२) साधारण रिजर्व (General Reserves)

परिमित दायित्व वाली कम्पनियो के लिए यह बहुत ही आवश्यक है कि वे अपना तमाम लाभ हिस्सेदारो में न बाँट दे। परन्तु लाभ का कुछ भाग उन्हें संकट के समय के लिए बचा कर रखना चाहिए।

टिप्पणी:—अन्तिम तीनों चिट्ठों में सञ्चिति कोष अपरिवर्तित रहता है, किन्तु प्रत्येक दशा में सम्पत्ति का, जिसके द्वारा यह प्रकट किया गया है, स्वभाव बदल जाता है।

विशेष रिजर्व और साधारण रिजर्व का अन्तर वैसे तो ऊपर समझाया जा चुका है। परन्तु व्यवहार में सब रिजर्व एक ही सदृश समझे जाते हैं अर्थात् सब लाभ में से ही सृजन किये जाते हैं और बैलेंस-शीट में अलग-अलग दिखाये जाते हैं। भारतीय कम्पनियों के खातों में निम्नलिखित रिजर्व पाये जाते हैं:—

सामान्य निधि
संचिति कोष
सम्भाव्य कोष
लाभांश एकरूपता कोष (Equalisation Fund)
ऋण-पत्र विमोचन कोष
भूडोल (Earth quake) बीमा कोष
दान कोष
अग्नि एवं दुर्घटना (Accident)
बीमा कोष
कारखाना बीमा कोष
मार्गस्थ (Transit) बीमा कोष
कर्मचारी बीमा कोष
स्थायी सम्पत्ति (Block) विनियोग कोष
ह्रास कोष
संग्रह (stores) एव कच्चा माल संचिति
विनियोग ह्रास कोष
कर्मचारी मितव्ययिता (Provident) कोष
कर्मचारी पेंशन कोष
अधिकारी अवकाश ग्रहण कोष
कर्मचारी उपकार (Benefits) कोष
कृषकोपकार कोष (Benefits to Cultivators Reserve)
कर्मचारी धर्मार्थ (gratuity) कोष
कर्मचारी गृह कोष
श्रमजीवी बढ़ोत्री-लाभ (Labour Bonus) कोष
कर सञ्चिति
डूबत ऋण संचय
मरम्मत एवं नवकरण कोष
पुनर्वास (Rehabilitation) कोष
पुनर्निर्माण कोष

भिन्न-भिन्न रिजर्वों के नाम ही इनके उद्देश्यों को बतलाते हैं।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि विशेष रिजर्वों की सृष्टि करना आवश्यक है जबकि साधारण रिजर्वों की सृष्टि सिर्फ वांछनीय ही है।

गुप्त रिजर्व (S.cret Reserves)

गुप्त रिजर्व वह रिजर्व है जो बैलेंस-शीट में नहीं दिखलाया जाता। अर्थात् सम्पत्ति, पूँजी और ऋणों से अधिक तो है परन्तु यह अधिकता छिपा कर रखी गई है। जब कोई गुप्त रिजर्व होता है तो व्यापार की वास्तविक आर्थिक स्थिति, बैलेंस-शीट से मालूम होने वाली स्थिति से कहीं अच्छी होती है। कम्पनियों में गुप्त रिजर्व साधारणत: पाये जाते हैं।

गुप्त रिजर्व डिविडेंडों को संतुलित करने के हेतु या किसी विशेष हानि को पूरा करने के लिए सृजन किये जाते हैं और इनके सम्बन्ध में हिस्सेदारों और जनता को कोई ज्ञान नहीं कराया जाता। इन गुप्त रिजर्वों का होना कुछ कम्पनियों (जैसे बैंक, बीमा आदि कम्पनियों) में, जिनकी सफलता जनता के विश्वास पर रहती है, न्याय संगत है। सिद्धांत के अनुसार तो गुप्त रिजर्वों का होना उचित नहीं है, क्योंकि बैलेंस-शीट का कार्य कम्पनी की वास्तविक आर्थिक स्थिति को बतलाना है। परन्तु व्यवहार में आधुनिक व्यापार में दूरदर्शिता के नाते इन गुप्त रिजर्वों का होना आवश्यक है। भारतवर्ष में बहुत सी कम्पनियों में विशाल गुप्त रिजर्व हैं।

नोट :—कभी-कभी इन गुप्त रिजर्वों का होना बैलेंस शीट में भी स्पष्ट हो जाता है चाहे वे बैलेंस-शीट में न दिखलाये गये हों। ऐसी स्थिति तब हो सकती है जब बैलेंस-शीट में एक बहुमूल्य सम्पत्ति भी साधारण मूल्य पर दिखलाई गई हो।

गुप्त रिजर्वों की सृष्टि :- गुप्त रिजर्वों की सृष्टि निम्न प्रकार से की जा सकती है :—(क) स्थाई सम्पत्ति पर अधिक घटौती काट के (ख) स्टॉक, इन्वेस्टमेंट इत्यादि चल सम्पत्ति को कम दामों

पर लगा कर (ग) बहुत अधिक विशेष रिजर्व बना कर ; (घ) ऋणों को अधिक रकम पर लगा कर अथवा (ङ) पूंजी खर्चों को लाभ से काट कर।

गुप्त रिजर्वों की उपयोगिता —जब कभी गुप्त रिजर्व को उपयोग मे लेने की आवश्यकता हो तो इसकी विधि रिजर्व सृष्टि करने की विधि से बिल्कुल उल्टी होगी। अर्थात् गुप्त रिजर्व निम्न प्रकार की विधियो से उपयोग मे लिया जा सकता है :—(क) उस संपत्ति का मूल्य बढ़ा करके जिसकी गत वर्षों मे बहुत अधिक घटौती कट चुकी है, (ख) गत वर्षों मे सृजन किये विशेष रिजर्वों से रकम लेकर (ग) ऋणो को कम रकम दिखा कर, जो पहले अधिक रकम से दिखाये गये थे, (घ) पूँजीगत खर्चों से संपत्ति खातो को डेबिट और लाभ खाते को क्रेडिट करके।

इस तरह जो रकम प्राप्त हो वह उस कार्य मे ली जा सकती है जिसके लिए गुप्त रिजर्व प्रयोग करने की आवश्यकता थी।

उदाहरण २००

एक लिमिटेड कम्पनी के पास, जिसको एक डकैती के कारण ५०,००० रु० की हानि उठानी पड़ी, निम्न गुप्त सचय है :—(अ) १०,००० रु० जो स्टॉक के मूल्य पर १०% घटौती का प्रतिनिधित्व करते हैं (ब) आय-कर सचय जो १०,००० रु० द्वारा अधिक हैं तथा (स) एक यन्त्र का इतना कम मूल्य लगाया कि उसके परिणामस्वरूप ५०,००० रु० ह्रास का अधिक प्रबन्ध हो गया है।

कम्पनी के सचालकों ने अपनी इस आकस्मिक हानि की पूर्ति के लिये १०,००० रु० आय कर संचय कम तथा ४०,००० रु० से यन्त्र अपलिखित करने का निश्चय किया।

कम्पनी की पुस्तकों मे उपर्युक्त का लेखा करने के लिये आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये।

	रु०	रु०
आयकर संचय खाता	१०,०००	
यन्त्र खाता	४०,०००	
डकैती हानि खाता		५०,०००
डकैती के कारण हुई हानि गुप्त कोषों मे से अपलिखित की गई		

गुप्त रिजर्वों के लाभ —(क) विशाल और विशेष हानियो को बिना खातो मे प्रकट किये हुए और साधारण लाभ को बिना छुए इन रिजर्वों की सहायता द्वारा सरलता से पूरा किया जा सकता है, (ख) डिविडेंडो को इन गुप्त रिजर्वों की सहायता से, डिविडेंड समतोलन रिजर्व की अपेक्षा अधिक सुविधा से संतुलित किया जा सकता है क्योंकि अच्छे वर्षों मे लाभो रोक रखने का शेयर होल्डर प्राय विरोध किया करते हैं। (ग) व्यापार के लाभो को प्रतिद्वन्द्वियो से छिपा कर रखा जा सकता है। (घ) कम्पनी की क्रिया-शील पूँजी मे वृद्धि की जा सकती है।

गुप्त रिजर्वों के दोष —(क) कम्पनी के प्रकाशित किये हुए हिसाब अशुद्ध और भ्रमात्मक हो जाते है और हिस्सेदारो तथा जनता को कम्पनी के कार्यों का यथार्थ ज्ञान नहीं हो सकता।

(ख) दोषपूर्ण व्यवस्था के कारण जो हानि होती है वह हिस्सेदारों से छिपा ली जाती है।

(ग) संचालको और प्रबन्धक-एजेंटो को छल-कपट करने का पूरा अवसर मिलता है और वे अपनी चालाकियो से शेअरो के व्यापार में अनुचित लाभ प्राप्त कर सकते हैं। गुप्त रिजर्वों की सृष्टि से लाभ कम होजाता है और इस कारण कम डिविडेंड मिलता है। कम डिविडेंड से शेअरों का भाव गिर जाता है और भाव के गिरने से बहुत से हिस्सेदार अपने शेअरो को कम मूल्य पर बेच देते है। इससे उन्हें बड़ा भारी नुकसान होता है। कभी-कभी गुप्त रिजर्व की सहायता से कम्पनी की आर्थिक स्थिति उचित से अधिक अच्छी दिखलाई जाती है, जिसके कारण से बहुत से व्यक्ति कम्पनी के शेअर उचित से अधिक मूल्य पर भी खरीद लेते हैं

सिंकिंग फण्ड (Sinking Fund)

सिंकिंग फंड वह रिजर्व है जो कम्पनी के लाभ में से सृजन किया जाता है। अधिकतर इसकी रकम व्यापार से बाहर सरलता से बिकने वाली इनवेस्टमेंट में लगाई जाती है। सिंकिंग फंड का उद्देश्य एक निश्चित तिथि पर, किसी ऋण को चुकाने या किसी ऋणी संपत्ति का नवीनकरण करने के लिए एक निश्चित धन का प्रबन्ध करना है। सिंकिंग फंड को जो किसी क्षय होने वाली सम्पत्ति को बदलने के लिए बनाया जाता है घटौती फंड भी कहते हैं।

संचयी सिंकिंग फंड (Cumulative Sinking Fund) आवधिक किस्त और व्याज के द्वारा हर वर्ष बढ़ता रहता है। इसकी सृष्टि लाभ में से वार्षिक या अर्ध-वार्षिक किस्त अलग करके और व्यापार के बाहर व्याज दर व्याज पर एक दी हुई अवधि के अन्त में एक आवश्यक रकम पाने के लिये विनियोग करने से होती है। मान लीजिए हमें दस वर्ष बाद एक लाख रुपये किसी ऋण को चुकाने के लिए या किसी सम्पत्ति को बदलने के लिए आवश्यक होंगे। इसकी प्राप्ति के लिए हमें इतनी रकम हर वर्ष लगानी चाहिए जो व्याज दर व्याज किसी विशेष दर से (कहिये तीन प्रतिशत) दस साल के बाद एक लाख रुपये के बराबर हो जाय। वार्षिक किस्त की यह रकम सिंकिंग फण्ड तालिकाओं (Tables) से मालूम की जा सकती है।

जब रुपये की आवश्यकता किसी ऋण को चुकाने के लिए या संपत्ति को बदलने के लिए होती है तो इस फण्ड के इनवेस्टमेंटो को बेच दिया जाता है और जो रुपया इस तरह से प्राप्त होता है वह उपर्युक्त उद्देश्य की पूर्ति के काम में आजाता है। ऋण के भुगतान पर सिंकिंग फण्ड मुक्त हो जाता है और यह स्थायी सम्पत्ति की घटौती के काम में या किसी अन्य कार्य में लिया जा सकता है। परन्तु यह डिविडेंड आदि के भुगतान के काम में नहीं लिया जा सकता क्योंकि इस उद्देश्य के लिए आवश्यक रोकड़ी रुपये का अभाव रहेगा। यदि सिंकिंग फण्ड किसी नई सम्पत्ति के खरीदने के वास्ते रक्खा गया है तो जब नयी सम्पत्ति खरीद ली जाय यह पुरानी सम्पत्ति को अपलिखित के काम में आ सकता है।

उपर्युक्त सिंकिंग फण्ड सर्वश्रेष्ठ है परन्तु इसमें निम्नलिखित कल्पनायें मान ली जाती हैं:—

(क) कम्पनी के हर वर्ष का लाभ सिंकिंग फण्ड की वार्षिक किस्त जमा कराने के लिए काफी रहेगा।

(ख) यह वार्षिक किस्त जमा करने के लिए व्यापार में रोकड़ी रुपया भी काफी होगा।

(ग) हर वर्ष इस फण्ड का रुपया एक निश्चित व्याज दर से इनवेस्टमेंटों में लगाया जा सकेगा।

(घ) इस फण्ड के इनवेस्टमेंटो से बेचने पर उचित रकम मिल सकेगी।

यह हो सकता है कि इनमें से एक या दो बातें भविष्य में गलत हों। अतः इस प्रकार का सिंकिंग फण्ड सुविधा से प्रयोग में नहीं आ सकता है। अतः व्यवहार में इस फण्ड में कुछ हेर-फेर करके काम लिया जाता है।

सिंकिंग फण्ड की हर वर्ष की किस्त लाभ पर निर्भर रहती है। यदि किसी वर्ष किस्त न दी जा सके तो वह भविष्य के लाभ में से दी जाती है। सिंकिंग फण्ड के रुपये व्यापार में रखे जा सकते हैं या बाहर इनवेस्टमेंटों में लगाये जा सकते हैं। कभी-कभी सिंकिंग फंड के रुपये इनवेस्टमेंट में लगाने के स्थान पर डिबेञ्चरों को खरीदने के काम में लिए जाते हैं। जब इनवेस्टमेंटों में रुपया लगाया जाता है तब इनसे प्राप्त होने वाला व्याज भी सिंकिंग फण्ड में क्रेडिट किया जाता है, परन्तु कभी-कभी यह हानि-लाभ खाते में भी क्रेडिट कर दिया जाता है। जब सिंकिंग फण्ड का रुपया कम्पनी के व्यापार में ही रखा जाता है तो सिंकिंग फण्ड को प्रतिवर्ष किसी निश्चित दर से व्याज क्रेडिट कर देना चाहिए।

यदि कम्पनी के पास पहले से ही काफी इनवेस्टमेंट हो तो इनमें से कुछ विनियोगों को सिंकिंग फण्ड के नाम कर देना चाहिए।

बही खाते —संचयी सिंकिंग फंड का, जो कि किसी ऋण को चुकाने के लिए या किसी सम्पत्ति को बदलने के लिए रक्खा जाता है, लेखा निम्न प्रकार होता है :—

१. सिंकिंग फण्ड शुरू होने पर, प्रथम किस्त की रकम हानि-लाभ खाते को डेबिट और सिंकिंग फण्ड खाते को क्रेडिट करनी चाहिए तथा जो रकम वास्तव मे विनियोग की गई है उससे सिंकिंग फण्ड इनवेस्टमेंट खाते को डेबिट करके रोकड़ खाता क्रेडिट करना चाहिए।

२. आगामी वर्षों मे सिंकिंग फंड इनवेस्टमेंट खाते को डेबिट करके सिंकिंग फंड खाते को प्राप्त हुई व्याज की रकम से जो पुन विनियोग कर दी गई है क्रेडिट कर देना चाहिए। किस्त की रकम से हानि-लाभ खाते को डेबिट और सिंकिंग फण्ड खाते को क्रेडिट करना चाहिए। वास्तव में लगाया हुआ रुपया सिंकिंग फण्ड इनवेस्टमेंट खाते को डेबिट रोकड़ खाते मे क्रेडिट करना चाहिए।

३. ऋण के भुगतान की तिथि पर इनवेस्टमेंटों के बेचने पर प्राप्त हुए रुपये रोकड़ खाते मे डेबिट और सिंकिंग फण्ड इनवेस्टमेंट खाते के क्रेडिट करना चाहिए और इस बाद वाले खाते पर होने वाले लाभ या हानि को सिंकिंग फण्ड खाते मे ट्रांसफर कर देना चाहिए। जब ऋण का भुगतान किया जावे तब ऋण खाते को डेबिट और रोकड़ खाता क्रेडिट करना चाहिए।

जब ऋण का भुगतान हो जाता है तो सिंकिंग फण्ड का बैलेंस बच रहता है। इसे साधारण रिजर्व मे भेजने में, स्थाई सम्पत्ति की घटौती लिखने या और किसी अन्य उद्देश्य की पूर्ति के लिए, जिसके हेतु वह लाभ प्रयोग किया जा सकता है, उपयोग करना चाहिये।

यह प्रश्न उठ सकता है कि सिंकिंग फण्ड की आवश्यकता ही क्या है जबकि वह ऋण चुकाने के बाद मे बच रहता है। इसका कारण यह है कि लाभ का कुछ हिस्सा अलग रखने से डिविडेंडो की रकम कम हो जाती है और इसके बराबर रकम रोकड़ी रुपये मे बच रहती है व्यापार से बाहर लगा दी जाती है। यदि सिंकिंग फण्ड की सृष्टि न की जावे तो डिविडेंड अधिक दरो पर दिये जावेंगे और इस तरह व्यापार का रोकड़ी रुपया कम हो जाता है। इसलिए कम्पनी की रोकड़ स्थिति को शक्तिशाली बनाने के लिए सिंकिंग फण्ड की सृष्टि की जाती है।

४ यदि सिंकिंग फण्ड किसी संपत्ति को बदलने के लिए बनाया जाता है तो जब नयी सम्पत्ति खरीद ली जाती है यह पुरानी सम्पत्ति की रकम को अपलिखित करने (write off) के काम आता है।

उदाहरण २०१

१ जनवरी १९४६ को, एक लिमिटेड कम्पनी ने ५,००,००० रु० के पाँच वर्ष में सम मूल्य पर प्रतिदेय ५% ऋण पत्र निर्गमित किये; तथा उनके विमोचन के लिये एक शोधन-प्रणवि बनाने का निश्चय किया।

यह मानते हुये कि प्रति वर्ष विनियोगित राशि ५% व्याज उपार्जित करती है व ऋण पत्रों का ३१ दिसम्बर १९५० को भुगतान करना है, पाँच वर्षों का ऋण-पत्र खाता, ऋण-पत्र शोधन प्रणवि खाता तथा ऋण-पत्र शोधन प्रणवि विनियोग खाता दिखाओ। प्रति वष इस कार्य के लिये अलग रक्खी जाने वाली राशि ९०,४८७ रु० ८ आना है।

ऋण-पत्र खाता

		रु०	आ.	पा			रु०	आ.	पा.
१९५० दि० ३१	रोकड़	५,००,०००	—	—	१९४६ जन० १	रोकड़	५,००,०००	—	—

ऋण-पत्र शोधन प्रणवि खाता

		रु०	आ.	पा.			रु०	आ.	पा.
१९४६					१९४६				
दि० ३१	शेष आ/ले	९०,४८७	८	-	दि० ३१	लाभ-हानि खाता	९०,४८७	८	-
१९४७					१९४७				
दि० ३१	शेष आ/ले	१,८५,४९९	६	-	जन० १	शेष नी/ला	९०,४८७	८	-
					दि० ३१	ब्याज	४,५२४	६	-
						लाभ-हानि खाता	९०,४८७	८	-
		१,८५,४९९	६	-			१,८५,४९९	६	-
१९४८					१९४८				
दि० ३१	शेष आ/ले	२,८५,२६१	१३	६	जन० १	शेष नी/ला	१,८५,४९९	६	-
					दि० ३१	ब्याज	९,२७४	१५	६
						लाभ-हानि खाता	९०,४८७	८	-
		२,८५,२६१	१३	६			२,८५,२६१	१३	६
१९४९					१९४९				
दि० ३१	शेष आ/ले	३,९०,०१२	७	-	जन० १	शेष नी/ला	२,८५,२६१	१३	६
					दि० ३१	ब्याज	१४,२६३	१	६
						लाभ-हानि खाता	९०,४८७	८	-
		३,९०,०१२	७	-			३,९०,०१२	७	-
१९५०					१९५०				
दि० ३१	सामान्य निधि	५,००,०००	-	-	जन० १	शेष नी/ला	३,९०,०१२	७	-
					दि० ३१	ब्याज	१९,५००	९	११
						लाभ हानि खाता	९०,४८६	१५	१
		५,००,०००	-	-			५,००,०००	-	-

ऋण-पत्र शोधन प्रणवि विनियोग खाता

		रु०	आ	पा			रु०	आ.	पा
१९४६					१९४६				
दि० ३१	रोकड़	९०,४८७	८	-	दि० ३१	शेष आ/ले	९०,४८७	८	-
१९४७					१९४७				
जन० १	शेष नी/ला	९०,४८७	८	-	दि० ३१	शेष आ/ले	१,८५,४९९	६	-
दि० ३१	ब्याज	४,५२४	६	-					
	रोकड़	९०,४८७	८	-					
		१,८५,४९९	६	-			१,८५,४९९	६	-
१९४८					१९४८				
जन० १	शेष नी/ला	१,८५,४९९	६	-	दि० ३१	शेष आ/ले	२,८५,२६१	१३	६
दि० ३१	ब्याज	९,२७४	१५	६					
	रोकड़	९०,४८७	८	-					
		२,८५,२६१	१३	६			२,८५,२६१	१३	६
१९४९					१९४९				
जन० १	शेष नी/ला	२,८५,२६१	१३	६	दि० ३१	शेष आ/ले	३,९०,०१२	७	-
दि० ३१	ब्याज	१४,२६३	१	६					
	रोकड़	९०,४८७	८	-					
		३,९०,०१२	७	-			३,९०,०१२	७	-
१९५०					१९५०				
जन० १	शेष नी/ला	३,९०,०१२	७	-	दि० ३१	रोकड़	५,००,०००	-	-
दि० ३१	ब्याज	१९,५००	९	११					
	रोकड़	९०,४८६	१५	१					
		५,००,०००	-	-			५,००,०००	-	-

टिप्पणी :— व्यवहार में अंतिम वर्ष की शोधन प्रणवि निधि विनियोग नहीं की जाती है।

उदाहरण २०२

एक लिमिटेड कम्पनी ने बन्धक ऋण-पत्र द्वारा, जो दस वर्ष के अन्त में शोधन प्रणवि द्वारा प्रतिदेय है, अतिरिक्त पूँजी बढ़ाई।

कम्पनी की सम्पत्तियों में १,००,००० की लागत के कल व यन्त्र, जिनका जीवन दस वर्ष है, सम्मिलित है। इस सम्पत्ति का इस काल के पश्चात् नवकरण करने के लिये शोधन प्रणवि बनाना है।

यह मानते हुए कि प्रारम्भ में निम्नलिखित चिट्ठा था तथा ऋण-पत्रों के विमोचन व सम्पत्ति के नवकरण करने के लिये खातों में वार्षिक उचित प्रबन्ध किया जाता है, ऋण पत्रों के विमोचन व सम्पत्ति के नवकरण के तुरन्त पूर्व व पश्चात् की स्थिति दिखलाइये।

	रु०		रु०
निर्गमित अंश पूँजी	१०,००,०००	कल व यन्त्र (लागत पर)	१,००,०००
बन्धक ऋण-पत्र	२,००,०००	अन्य सम्पत्ति	१३,००,०००
अन्य दायित्व	५०,०००		
लाभ-हानि खाता	१,५०,०००		
	१४,००,०००		१४,००,०००

चिट्ठा (विमोचन के तुरन्त पूर्व)

	रु०		रु०
निर्गमित अंश पूँजी	१०,००,०००	कल व यत्र (लागत पर)	१,००,०००
बंधक ऋण पत्र	२,००,०००	अन्य संपत्ति	१३,००,०००
ऋण-पत्र विमोचन कोष	२ ००,०००	ऋण-पत्र विमोचन कोष विनियोग	२,००,०००
ह्रास कोष	१,००,०००	ह्रास कोष विनियोग	१,००,०००
अन्य दायित्व	५०,०००		
लाभ-हानि खाता	१.५०,०००		
	१७,००,०००		१७,००,०००

चिट्ठा (विमोचन के तुरन्त पश्चात्)

	रु०		रु०
निर्गमति अंश पूँजी	१०,००,०००	कल व यंत्र (लागत पर)	१,००,०००
सामान्य निधि	२,००,०००	अन्य संपत्ति	१३,००,०००
अन्य दायित्व	५०,०००		
लाभ-हानि खाता	१,५०,०००		
	१४,००,०००		१४,००,०००

टिप्पणी :—यह मान लिया गया है कि 'अन्य सपत्ति', 'अन्य दायित्व' तथा लाभ-हानि खाते के शेष में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।

उदाहरण २०३

एक लिमिटेड कम्पनी ने ५,००,००० रु० के ६% प्रथम बन्धक ऋण-पत्र निर्गमित किये हैं व १९५१ में उनके विमोचन के लिये एक शोधन प्रणवि बनाया है। १५ मार्च १९५१ को, ऋण-पत्रों का विमोचन होने के दिन पर शोधन प्रणवि ४,५७,००० रु० था। इसका एक भाग ४,००,००० रु० अंकित मूल्य के (लागत मूल्य ३,७५,००० रु०) विनियोगों में लगा हुआ है। उसी तिथि को ह्रास व सामान्य कोष क्रमशः १,५०,००० रु० व १,००,००० रु० तथा बैंक शेष २,७५,००० रु० था।

ऋण-पत्रों के विमोचन करने के लिये, शोधन प्रणवि विनियोगों का ९२% वसूल हुआ तथा ऋण-पत्रों का भुगतान कर दिया। ऋण-पत्रों के भुगतान के पश्चात् बची हुई शोधन प्रणवि की राशि में से १,००,००० रु० सामान्य संचय में हस्तान्तरित किये तथा शेष स्थायी सम्पत्ति के ह्रास के लिये प्रयोग किया गया।

१५ मार्च १९५१ को उपर्युक्त सूचनाओं से प्रभावित विभिन्न खाते कम्पनी के खाता-बही में किस प्रकार दिखाये जायेंगे।

१५ मार्च १९५१ को खाते

६ % प्रथम बंधक ऋण-पत्र खाता

	रु०		रु०
बैंक	५,००,०००	शेष नी/ला	५,००,०००

ऋण-पत्र शोधन प्रणवि खाता

	रु०		रु०
शोधन प्रणवि विनियोग खाता	७,०००	शेष नी/ला	४,५७,०००
सामान्य निधि	१,००,०००		
ह्रास कोष	३,५०,०००		
	४,५७,०००		४,५७,०००

शोधन प्रणवि विनियोग खाता (अंकित मूल्य ४,००,००० रु०)

	रु०		रु०
शेष नी/ला	३,७५,०००	बैंक	३,६८,०००
		ऋण-पत्र शोधन प्रणवि खाता	७,०००
	३,७५,०००		३,७५,०००

बैंक खाता

	रु०		रु०
शेष नी/ला	२,७५,०००	ऋण-पत्र	५,००,०००
शोधन प्रणवि विनियोग खाता	३,६८,०००		

सामान्य निधि

			रु०
		शेष नी/ला	१,००,०००
		ऋण-पत्र शोधन प्रणवि खाता	१,००,०००

ह्रास कोष खाता

			रु०
		शेष नी/ला	३,५०,०००
		ऋण-पत्र शोधन प्रणवि खाता	३,५०,०००

उदाहरण २०४

एक लिमिटेड कम्पनी, जिसने १९४६ में ४,००,००० रु० के ६% ऋण-पत्र निर्गमित किये थे उनके विमोचन के लिये एक शोधन प्रणवि स्थापित करना चाहती थी। शोधन प्रणवि का धन व्यापार में रहेगा या इन्हीं प्रतिभूतियों में विनियोग होगा यह सचालकों के निश्चय पर निर्भर है ; परन्तु वह ६% वार्षिक चक्रवृद्धि ब्याज उपार्जित करेगा, शोधन प्रणवि विनियोग से प्राप्त ब्याज लाभ-हानि खाते में हस्तान्तरित किया जायगा।

शोधन प्रणवि खाते में से कम्पनी के विनियोग व अभिदान (Contributions) निम्न थे :—

	अभिदान	विनियोग राशि
	रु०	रु०
३१ दिसम्बर १९४६	२०,०००	—
१९४७	२०,०००	११,०००
१९४८	—	५,०००
१९४९	२५,०००	—
१९५०	२५,०००	१०,०००

आप (अ) पाँच वर्षों का ऋण पत्र शोधन प्रणवि खाता बनाइये ; (ब) ३१ दिसम्बर १९४९ को ऋण-पत्र शोधन प्रणवि तथा उससे सम्बन्धित विनियोग कम्पनी के चिट्ठे में दिखाइये तथा (स) बताइये कि ऋण-पत्रों के भुगतान करने पर शोधन प्रणवि की राशि किस प्रकार प्रयोग होगी।

(अ) ऋण-पत्र शोधन प्रणवि खाता

		रु०			रु०
१९४६			१९४६		
दि० ३१	शेष आ/ले	२०,०००	दि० ३१	लाभ-हानि खाता	२०,०००
१९४७			१९४७		
दि० ३१	शेष आ/ले	४०,८००	जन० १	शेष नी/ला	२०,०००
			दि० ३१	ब्याज	८००
				लाभ-हानि खाता	२०,०००
		४०,८००			४०,८००
१९४८			१९४८		
दि० ३१	शेष आ/ले	४२,४३२	जन० १	शेष नी/ला	४०,८००
			दि० ३१	ब्याज	१,६३२
		४२,४३२			४२,४३२
१९४९					
दि० ३१	शेष आ/ले	७९,१२९	१९४९		४२,४३२
			जन० १	शेष नी/ला	१,६९७
			दि० ३१	ब्याज	३५,०००
		७९,१२९		लाभ-हानि खाता	७९,१२९
१९५०			१९५०		
दि० ३१	शेष आ/ले	१,०७,२९४	जन० १	शेष नी/ला	७९,१२९
			दि० ३१	ब्याज	३,१६५
				लाभ-हानि खाता	२५,०००
		१,०७,२९४			१,०७,२९४

(ब) ३१ दिसम्बर १९४९ को चिट्ठा

	रु०		रु०
ऋण-पत्र शोधन प्रणवि	७९,१२९	ऋण-पत्र शोधन प्रणवि विनियोग	२०,०००

(स) ऋण-पत्रों के विमोचन के पश्चात्, ऋण-पत्र शोधन-प्रणवि की राशि संचिति कोष में हस्तातरित की जा सकती है अथवा स्थायी सम्पत्ति पर ह्रास काटने में प्रयोग की जा सकती है, परन्तु यह राशि लाभांश के रूप में वितरित नहीं की जा सकती क्योंकि हो सकता है कि इस कार्य के लिए पर्याप्त रोकड़ हो।

उदाहरण २०५

१ जनवरी १९४६ को, एक लिमिटेड कम्पनी ने १०,००,००० रु० के ५% बन्धक ऋण-पत्र निर्गमित किये, जिन पर ३० जून व ३१ दिसम्बर को ब्याज देय है। इस राशि के ५,००,००० रु० २% प्रव्याजि पर संग्रहीत किये गये, २,००,००० रु० सम-मूल्य पर लिये गये तथा शेष कम्पनी के बैंक में २,५०,००० रु० के ऋण के लिए समपार्श्विक प्रतिभूति (Collateral Security) के रूप में जमा किये गये। बैंक ऋण पर ६% प्रति वर्ष की दर से ब्याज प्रति वर्ष ३१ दिसम्बर को देय है।

इस निर्गमन की शर्तों के अनुसार कम्पनी को (अ) १,००,००० रु० वार्षिक शोधन प्रणवि के लिये जो कम्पनी के अपने व्यापार में प्रयोग होगा प्रबन्ध करना है तथा (ब) पाँच वर्ष के समाप्त होने पर ४,००,००० रु० के ऋण-पत्र विमोचित करने हैं।

आप (*i*) ऋण-पत्रों के निर्गमन, ब्याज का भुगतान तथा १९४६ में शोधन प्रणवि बनाने का लेखा करने के लिये जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये ; तथा (*ii*) एक चिट्ठे द्वारा, यह मानते हुये कि निर्गमन की शर्तें पूर्ण हुई व बैंक ऋण अदत्त है, उपर्युक्त व्यवहारों से प्रभावित ३१ दिसम्बर १९५० को कम्पनी की स्थिति दिखलाइये।

जर्नल

		रु०	रु०
१९४९ जन० १	बैंक	७,१०,०००	
	ऋण-पत्र		७,००,०००
	ऋण-पत्र प्रव्याजि		१०,०००
	५,००,००० रु० के ऋण-पत्र २% प्रव्याजि पर तथा २,००,००० रु० के ऋण-पत्र सममूल्य पर निर्गमित किये		
	बैंक	२,५०,०००	
	बैंक ऋण		२,५०,०००
	बैंक से ऋण लिया।		
जून० ३०	ऋण-पत्र ब्याज खाता	१७,५००	
	बैंक		१७,५००
	ऋण-पत्रों पर आधे साल का ब्याज दिया		
दि० ३१	ऋण-पत्र ब्याज खाता	१७,५००	
	बैंक ऋण ब्याज खाता।	१५,०००	
	बैंक		३२,५००
	ऋण-पत्रों पर आधे वष का ब्याज एव बैंक ऋण पर एक वर्ष का ब्याज दिया		
	लाभ-हानि खाता	१,००,०००	
	ऋण-पत्र शोधन प्रणवि		१,००,०००
	१,००,००० रु० ऋण-पत्र शोधन प्रणवि मे हस्तातरित किये		

३१ दिसम्वर १९५० को चिट्ठा.

	रु०		
५% वन्धक ऋण-पत्र	१०,००,०००		
घटाये बैंक में समपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में जमा किये हुए ऋण-पत्र	३,००,०००		
	७,००,०००		
घटाये ३१ दिसम्वर १९५० को विमोचित	४,००,०००		
	३,००,०००		
बैंक ऋण (३,००,००० रु० के ५% वन्धक ऋण-पत्रों के द्वारा सुरक्षित)	२,५०,०००		
ऋण-पत्र शोधन प्रणवि	५,००,०००		

भिन्न-भिन्न सिंकिंग फण्डो के कार्यों को निम्नलिखित उदाहरणों से समझाया जा सकता है:—

ऋण चुकाने के लिए और लगी सम्पत्ति के वदलने के सिंकिंग फण्डो का अन्तर :—इन दोनों सिंकिंग फण्डों का सबसे महत्त्वपूर्ण अन्तर इस प्रकार है। जब सिंकिंग फण्ड किसी ऋण को चुकाने के लिए सृजन किया जाता है तब इसमें सिंकिंग फड इनवेस्टमेंट खाता और ऋण खाता एक-दूसरे को आपस में काट देते हैं और दोनों ही बैलेंस-शीट से लुप्त हो जाते हैं क्योंकि ऋण का भुगतान इनवेस्टमेंट की रकम से हो जाता है। परन्तु सिंकिंग फण्ड बच रहता है जिसे साधारण रिजर्व खाते ट्रांसफर कर दिया जाता है। जब सिंकिंग फण्ड किसी सम्पत्ति को बदलने के लिए रक्खा जाता है तो पुरानी सम्पत्ति के खाते को तो सिंकिंग फण्ड खाता में ट्रांसफर करके बन्द कर दिया जाता है और सिंकिंग इनवेस्टमेंटों की बिक्री से प्राप्त हुई रकम से नयी सम्पत्ति खरीद ली जाती है।

इन दोनो सिंकिंग फण्डो मे एक और भी अन्तर है। ऋण को चुकाने के लिए जो सिंकिंग फण्ड होता है उसकी किस्ते लाभ के विभाजन (appropriations) के रूप में होती हैं परन्तु संपत्ति को बदलने वाले सिंकिंग फण्ड की किस्तें लाभ में काट ली जाती हैं। (Charges Against Profits) परन्तु यह अन्तर व्यवहार में महत्वपूर्ण नहीं है। सब ही रिजर्व लाभ में से जो हिस्सेदारो को नहीं दिये गये, अलग रक्खे हुए भाग होते है और जो कम्पनी की क्रियाशील पूँजी को बढ़ाने के लिए व्यापार में रख लिए जाते है।

प्रश्न

१. संचय किसे कहते हैं तथा विशिष्ट संचय व सामान्य सचय में अन्तर बतलाइये।

२. संक्षेप मे निम्न सचयों का कार्य बतलाइये: कर्मचारी मितव्ययता कोष; (ब) श्रमिक बोनस सचय; (स) आकस्मिक सचय; (द) श्रमिक समृद्धि कोष; (य) स्थायी सम्पत्ति सुधार कोष; (र) गमनागमन बीमा कोष; (ल) पुनर्निमाण संचय।

३ सचिति कोष क्या है ? किन परिस्थितियो में तथा किस सीमा तक संचिति कोष लाभाश का भुगतान करने के प्रयोग में लाया जा सकता है ?

४. 'संचिति कोष' लिमिटेड कम्पनी द्वारा प्रकाशित चिट्ठे में दायित्व की ओर का एक पद है। स्पष्ट रूप से समझाइये कि यह पद किसका प्रतिनिधित्व करता है। यदि यह वास्तव में कोष है, तो इसका व्यवहार दायित्व के रूप क्यों किया जाता है ?

५. 'सामान्य सचय का अस्तित्व सम्पत्ति के अनुरूप बचत के अस्तित्व पर निर्भर है' इस विवरण को समझाइये तथा एक काल्पनिक चिट्ठा बनाते हुए अपने उत्तर को दृष्टान्त देकर स्पष्ट कीजिये।

६. गुप्त सचय से आप क्या अर्थ समझते हैं ? वे किस किस प्रकार उत्पन्न किये व काम में लाये जाते है ? गुप्त सचय के लाभ व हानि बताओ।

७. शोधन प्रणत्रि को समझाइये। किस कारण एक शोधन प्रणवि, जो खराब सम्पत्ति को बदलने के लिये किया जाता है, दायित्व को भुगतान करने के शोधन प्रणवि से भिन्न हैं ?

८. १ जनवरी १९४८ को ५ प्रतिशत बट्टे पर निर्गमित हुये २,००,००० रु० के ऋण-पत्रों की शर्तों के अनुसार प्रत्येक वर्ष ३१ दिसम्बर को लाभ में से समान धन निकाल कर चक्रवृद्धि व्याज पर विनियोग करके एक शोधन प्रणवि बनाया गया।

१६,००० रु० वार्षिक राशि निकाल कर तथा विनियोग पर ३½ प्रतिशत प्रतिवर्ष उत्पन्न व्याज मानकर (अ) ३१ दिसम्बर १९५० को तीन वर्ष का शोधन प्रणवि खाता व विनियोग खाता बनाओ तथा बताओ कि उस दिन कम्पनी के चिट्ठे में ये खाते तथा ऋणपत्र खाता किस प्रकार दिखाये जायेगे; तथा (ब) ऋण-पत्रों का भुगतान होने पर विभिन्न खातों का क्या व्यवहार होगा।

उत्तर शोधन प्रणवि का शेष ४९,६९९ रु० ९ आ० ७ पा०

९. ३० जून १९५० को, एन्टरप्राइज मैन्युफैक्चरिंग कं० लि० ने अपने खातों में ७५,००० रु० का ऋण-पत्र विमोचन कोष दिखाया जो निम्न विनियोगों में लगा है :—

५५,००० रु० की लागत के ५% राजकीय पत्र ५१,००० रु०

२०,००० रु० की लागत के नगरपालिका ऋणपत्र ५% १८,००० रु०।

३१ दिसम्बर १९५० को, कम्पनी का वैंक में ९,००० रु० का शेष है तथा उस दिन उसने ७२,५०० रु० के विनियोग बेचकर बिक्री बैंक खाते मे जमा की। उसके पश्चात् ऋण-पत्र चुकता कर दिये गये।

उपर्युक्त व्यवहारों को आवश्यक खातों (Ledger Accounts) द्वारा कम्पनी की पुस्तकों मे किस प्रकार प्रविष्ट करेंगे ?

१०. ३१ दिसम्बर १९५० को, एक लिमिटेड कम्पनी के चिट्ठे में निम्न पद थे:—पूर्णदत्त पूँजी १,००,००० रु०; ऋण-पत्र ६०,००० रु०; रोकड़ १,१०,००० रु०; देनदार ४०,००० रु०; लेनदार ३०,००० रु०; रहतिया ६०,००० रु०; भवन ५०,००० रु०; लाभ का शेष ७०,००० रु०।

लाभाश देने के बजाय ३% प्रव्याजि पर सारे ऋण-पत्रों का भुगतान करने का निश्चय किया गया। विभिन्न प्रभावित खातों में प्रविष्टियाँ कीजिये तथा नई स्थिति का चिट्ठा बनाइये।

उत्तर : चिट्ठा १,९८,२०० रु०।

११. १०,००,००० रु० के बंधक ऋण-पत्र निर्गमित करके एक लिमिटेड कम्पनी ने उनके विमोचन के लिये एक शोधन प्रणवि खोला। १ जनवरी १९५१ को, जो ऋण-पत्रों का भुगतान करने की तिथि थी, ८,७५,००० रु०

अध्याय—२५

विनियोग खाते

विनियोग का अर्थ उस रुपये से है जो विभिन्न सरकारी प्रतिभूतियों (Securities) मे, या पोर्ट ट्रस्ट या म्यूनिसपल कॉरपोरेशन आदि के डिबेन्चरो या कम्पनियों के शेअरो और डिबेन्चरों मे लगाया जाता है। जिन प्रतिभूतियो पर स्थाई दर से ब्याज मिलता है उन्हे स्थाई ब्याज की प्रतिभूतियाँ कहते है और जिन प्रतिभूतियो (जैसे कम्पनियो के शेअर) के डिविडेड साल-दर-साल बदलते रहते है उन्हे परिवर्तनशील ब्याज वाली प्रतिभूतियाँ कहते हैं।

प्रतिभूतियाँ बैंक और दलालो के द्वारा खरीदी और बेची जाती है और इनको इनकी सेवाओ के लिए कुछ कमीशन मिल जाता है। इनकी खरीद बिक्री के इकरारनामों पर एक निश्चित स्टाम्प लगाने का खर्चा भी करना पड़ता है। विनियोग खरीदते समय कमीशन और टिकट का खर्चा इनकी लागत (cost) का एक भाग समझा जाता है जबकि इनको बेचते समय यह खर्चा इनके बिक्री मूल्य मे से कम कर दिया जाता है।

प्रतिभूति पर लिखे हुए मूल्य (face-value) को अंकित मूल्य (Nominal Value) कहते हैं, परन्तु इसका वास्तविक बाजार मूल्य कभी भी इसके अंकित मूल्य के बराबर नहीं रहता। प्रतिभूति का बाजार भाव कई विशेष बातो पर निर्भर रहता है, जैसे इससे प्राप्त होने वाली आय, प्रचलित ब्याज की उस समय की राजनैतिक स्थिति, लगाये हुए रुपये की सुरक्षा, पूँजी की घटोतरी या बढ़ोतरी बाजार मे सट्टे का परिमाण आदि। जब सिक्यूरिटी का भाव इसके अंकित मूल्य के बराबर होता है तो इसे बराबर (at par) का भाव कहते है। यदि यह अंकित मूल्य से कम होता है तो इसे कटौती (at a discount) का भाव कहते है और यदि यह अंकित मूल्य से अधिक हो तो इसे प्रीमियम का भाव कहते हैं।

यदि व्यापार का उद्देश्य विनियोग खरीदना और बेचना है (जैसे कि एक फाइनेन्स कम्पनी का) तो विनियोग व्यापार की चल-सम्पत्ति कहलाते हैं। परन्तु यदि विनियोग स्थाई सम्पत्ति के रूप मे आय उत्पन्न करने के लिए रखे जाते है तो इन्हे स्थाई-सम्पत्ति कहते हैं। औद्योगिक कम्पनियो, बैंकों, बीमा तथा इनवेस्टमेंट ट्रस्ट कम्पनियो के विनियोग स्थाई-सम्पत्ति के रूप में होते है।

विनियोग खाते —विनियोग सम्पत्ति के रूप मे होने के कारण इनके खाते भी अन्य सम्पत्तियो की भाँति रखे जाते है। परन्तु हर एक प्रकार की प्रतिभूति के लिए एक अलग विनियोग खाता (Investment Account) खोलना चाहिए। इस खाते के शीर्षक मे प्रतिभूति की प्रकृति, ब्याज या डिविडेड प्राप्त होने वाली तिथियो, भुगतान की तिथि इत्यादि का ब्योरा दे देना चाहिए। जब विनियोग बहुत अधिक हो तो सब विनियोगों को लिखने के लिए एक अलग विनियोग खाता-बही (Investment Ledger) रख लेनी चाहिए।

जब कोई विनियोग खरीदा जाता है तो विनियोग खाते को डेबिट किया जाता है और इसकी कुल लागत से रोकड़ खाता क्रेडिट किया जाता है। जब विनियोग बेचा जाता है तो कुल बिक्री मूल्य से रोकड़-खाते को डेबिट किया जाता है और विनियोग खाते को क्रेडिट किया जाता है।

ब्याज और डिविडेड खाते :—विनियोग खातों के अतिरिक्त ब्याज या डिविडेड खाते भी भिन्न-भिन्न इनवेस्टमेंटो से प्राप्त हुई आय को लिखने के लिए रखे जाते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि

का शोधन प्रणवि था जो ८,००,००० रु० अंकित मूल्य के विनियोग मे (जिसकी लागत ८,०५,७५० रु० थी), उस दिन कम्पनी का आकस्मिक संचय (Contingency Reserve) २,००,००० रु० तथा बैंक शेष ४,५०,००० रु० था।

ऋण-पत्रों के भुगतान के सम्बन्ध में, शोधन प्रणवि विनियोग ६६% पर वसूल हुए तथा ऋण-पत्र विमोचित किये गये। शोधन प्रणवि की इस प्रकार मुक्त हुई राशि आकस्मिक संचय में हस्तान्तरित की गई।

उपर्युक्त व्यवहारों का कम्पनी की पुस्तकों में लेखा करने के लिये आवश्यक प्रविष्टियाँ कीजिये।

१२. एक लिमिटेड कम्पनी को, जिसने १०० रु० वाले १,००० ५% ऋण-पत्र निर्गमित किये है, इन्हें खुले बाजार में १०२% तक क्रय करने का अधिकार है। १९५० के वर्ष में, कम्पनी ने खुले बाजार में ९८% पर ५० ऋण-पत्र खरीदे; तथा कुछ ऋण-पत्रधारियों ने जिनके पास १०० ऋण-पत्र हैं ९७ रु० प्रति पर बेचने की प्रार्थना की तथा वे कम्पनी द्वारा स्वीकार किये गये।

अप्राप्य व्याज छोड़ते हुये बताओ कि कम्पनी की पुस्तकों में इन व्यवहारों का किस प्रकार लेखा किया जायगा?

१३. १ जनवरी १९५० को, एक लिमिटेड कम्पनी ने १,००० रु० वाले २०० ५% ऋण-पत्र ९५० रु० प्रति अंश पर निर्गमित किये। इन ऋण-पत्रधारियों को यह विकल्प होगा कि वे तीन वर्षों में किसी भी समय अपने ऋण-पत्र २५ रु० प्रति अंश प्रव्याजि पर १०० रु० वाले ८% पूर्वाधिकार अंशों से बदल लें।

३१ दिसम्बर १९५० को, ऋण-पत्रों पर एक वर्ष का व्याज अदत्त था तथा २० ऋण-पत्रों के एक धारी ने अपने विकल्प को कार्यान्वित करने की सूचना दी।

आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ करते हुये दिखलाइये कि ३१ दिसम्बर १९५० को प्रभावित पद कम्पनी के चिट्ठे में किस प्रकार दिखाये जायेंगे।

१४. एक लिमिटेड कम्पनी ने १ जनवरी १९४८ को ३०,००० रु० जो ५ प्रतिशत प्रति वर्ष व्याज पर तीन वर्ष मे देय हैं, उधार लिये। दायित्व का देय तिथि पर भुगतान करने के लिये एक शोधन प्रणवि बनाया।

यह अनुमान किया गया कि शोधन प्रणवि के विनियोग से ५% व्याज प्राप्त होगा। इससे तथा इसका भुगतान करने के लिये हुये ऋण से उत्पन्न सब खाते (ऋण के व्याज के भुगतान के अतिरिक्त) दिखलाइये।

५% की दर से विनियोग करने पर तीन वर्ष में एक रुपया उत्पन्न करने के लिये आवश्यक राशि, ०·३१७२०८ रु० है। विनियोग का तृतीय वर्ष का व्याज तथा उस वर्ष की किस्त विनियोग न करके, ऋण के भुगतान के लिये विनियोग से वसूल हुई राशि में जोड़ दी गई थी। विनियोग मे १९,५०० रु० वसूल हुये।

उत्तर : सामान्य संचय को हस्तान्तरित २९,९९१ रु० ११ आ० ६ पा०।

१५ ३१ दिसम्बर १९३९ को एक लिमिटेड कम्पनी का निम्नलिखित चिट्ठा था :—

	रु०		रु०
अंश पूँजी	१०,००,०००	स्थाई सम्पत्ति खाता	७,००,०००
ऋण-पत्र (१-१-१९५० को देय)	५,००,०००	रहतिया	३,००,०००
		देनदार	५,००,०००
लेनदार	१,००,०००	रोकड़ बैंक में	२,००,०००
लाभ-हानि खाता	१,००,०००		
	१७,००,०००		१७,००,०००

कम्पनी को ३१ जनवरी १९४० को जो ऋण-पत्र उसके पास थे उनके विमोचन का प्रबन्ध करना है तथा प्रत्येक आने वाली १ जनवरी को उन्होंने अपने लाभ में से ५०,००० रु० ३½ प्रतिशत राष्ट्रीय ऋण-पत्रों में विनियोग किया। प्रत्येक वर्ष विनियोग का व्याज लाभ-हानि खाते में जमा किया गया।

सारे विनियोगों की लागत सम मूल्य थी तथा वसूली की आवश्यकता के समय वास्तविक लागत मूल्य प्राप्त हुआ।

यह मानते हुये कि चिट्ठे के किसी मद में भी कोई परिवर्तन नहीं हुआ है, आप ३१ दिसम्बर १९४९ व १९५० को कम्पनी का चिट्ठा सारिणी के रूप (tabular form) में दिखलाइये।

अध्याय—२५

विनियोग खाते

विनियोग का अर्थ उस रुपये से है जो विभिन्न सरकारी प्रतिभूतियो (Securities) मे, या पोर्ट ट्रस्ट या म्यूनिसपल कॉरपोरेशन आदि के डिबेन्चरो या कम्पनियों के शेअरो और डिबेन्चरो मे लगाया जाता है। जिन प्रतिभूतियो पर स्थाई दर से ब्याज मिलता है उन्हे स्थाई ब्याज की प्रतिभूतियाँ कहते है और जिन प्रतिभूतियो (जैसे कम्पनियो के शेअर) के डिविडेंड साल-दर-साल बदलते रहते है उन्हे परिवर्तनशील ब्याज वाली प्रतिभूतियाँ कहते है।

प्रतिभूतियाँ बैंक और दलालो के द्वारा खरीदी और वेची जाती है और इनको इनकी सेवाओ के लिए कुछ कमीशन मिल जाता है। इनकी खरीद बिक्री के इकरारनामों पर एक निश्चित स्टाम्प लगाने का खर्चा भी करना पड़ता है। विनियोग खरीदते समय कमीशन और टिकट का खर्चा इनकी लागत (cost) का एक भाग समझा जाता है जबकि इनको बेचते समय यह खर्चा इनके बिक्री मूल्य मे से कम कर दिया जाता है।

प्रतिभूति पर लिखे हुए मूल्य (face-value) को अंकित मूल्य (Nominal Value) कहते हैं, परन्तु इसका वास्तविक बाजार मूल्य कभी भी इसके अंकित मूल्य के बराबर नहीं रहता। प्रतिभूति का बाजार भाव कई विशेष बातो पर निर्भर रहता है, जैसे इससे प्राप्त होने वाली आय, प्रचलित ब्याज की उस समय की राजनैतिक स्थिति, लगाये हुए रुपये की सुरक्षा, पूँजी की घटोतरी या बढ़ोतरी बाजार मे सट्टे का परिमाण आदि। जब सिक्यूरिटी का भाव इसके अंकित मूल्य के बराबर होता है तो इसे बराबर (at par) का भाव कहते है। यदि यह अंकित मूल्य से कम होता है तो इसे कटौती (at a discount) का भाव कहते हैं और यदि यह अंकित मूल्य से अधिक हो तो इसे प्रीमियम का भाव कहते हैं।

यदि व्यापार का उद्देश्य विनियोग खरीदना और बेचना है (जैसे कि एक फाइनेन्स कम्पनी का) तो विनियोग व्यापार की चल-सम्पत्ति कहलाते हैं। परन्तु यदि विनियोग स्थाई सम्पत्ति के रूप मे आय उत्पन्न करने के लिए रखे जाते हैं तो इन्हे स्थाई-सम्पत्ति कहते है। औद्योगिक कम्पनियो, बैंको, बीमा तथा इनवेस्टमेंट ट्रस्ट कम्पनियो के विनियोग स्थाई-सम्पत्ति के रूप मे होते है।

विनियोग खाते —विनियोग सम्पत्ति के रूप मे होने के कारण इनके खाते भी अन्य सम्पत्तियों की भाँति रखे जाते है। परन्तु हर एक प्रकार की प्रतिभूति के लिए एक अलग विनियोग खाता (Investment Account) खोलना चाहिए। इस खाते के शीर्षक में प्रतिभूति की प्रकृति, ब्याज या डिविडेड प्राप्त होने वाली तिथियो, भुगतान की तिथि इत्यादि का ब्यौरा दे देना चाहिए। जब विनियोग बहुत अधिक हो तो सब विनियोगो को लिखने के लिए एक अलग विनियोग खाता-बही (Investment Ledger) रख लेनी चाहिए।

जब कोई विनियोग खरीदा जाता है तो विनियोग खाते को डेबिट किया जाता है और इसकी कुल लागत से रोकड़ खाता क्रेडिट किया जाता है। जब विनियोग बेचा जाता है तो कुल बिक्री मूल्य से रोकड़-खाते को डेबिट किया जाता है और विनियोग खाते को क्रेडिट किया जाता है।

ब्याज और डिविडेड खाते .—विनियोग खातो के अतिरिक्त ब्याज या डिविडेड खाते भी भिन्न-भिन्न इनवेस्टमेंटो से प्राप्त हुई आय को लिखने के लिए रखे जाते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि

विनियोग खाते तो सिक्यूरिटियों की प्रकृति के अनुसार बहुत हो सकते हैं, परन्तु ब्याज या डिविडेंड खाता उन सब के लिये एक ही होगा।

विनियोग सम्बन्धी लेन-देन

विनियोग खातों को लिखते समय इनके डिविडेंड सहित (cum dividend) और डिविडेंड रहित भाव (ex-dividend) में बेचने और खरीदने पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

डिविडेंड सहित भाव (Cum Dividend Quotations)—स्थाई ब्याज वाली प्रतिभूतियों में डिविडेंड सहित भाव का अर्थ है कि इस कीमत में गत ब्याज प्राप्त होने की तिथि से खरीद की तिथि तक का उपार्जित ब्याज (accrued interest) भी सम्मिलित है क्योंकि इस तरह की प्रतिभूतियों पर प्रतिदिन ब्याज उपार्जित होता रहता है।

कम्पनी के शेअरों के सम्बन्ध में डिविडेंडसहित भाव का अर्थ यह है कि इस कीमत में हाल ही घोषित डिविडेड भी सम्मिलित है। भिन्न-भिन्न स्टॉक विनिमय बाजारों में उनके नियमों के अनुसार शेयरों की कीमत ज्यों ही डिविडेड घोषित किये जाते हैं त्यों ही, डिविडेंड सहित हो जाती है और यह डिविडेड के भुगतान तक रहती है। उदाहरणार्थ, यदि कोई कम्पनी जिसका व्यापारिक वर्ष ३१ दिसम्बर १९५० ई० को समाप्त होता है, १५ जुलाई १९५१ ई० में सन् १९५० ई० का डिविडेड घोषित करती है और १५ अगस्त १९५१ ई० तक इसका भुगतान करती हो, तो १५ जुलाई १९५१ ई० से १५ अगस्त १९५१ ई० के कुछ दिन तक इन शेअरों की कीमत डिविडेड सहित ही बतलाई जावेगी।

इसलिए जो व्यक्ति किसी प्रतिभूति को डिविडेड सहित खरीदता है उसे इस पर मिलने वाले आगामी ब्याज या डिविडंड को लेने का भी अधिकार हो जाता है। डिविडेंड सहित खरीदी और बेची हुई प्रतिभूतियों का लेखा निम्न प्रकार से किया जाता है :—

(अ) स्थाई ब्याज की प्रतिभूतियाँ

१. जब विनियोग डिविडेड सहित भाव पर खरीदा जाता है (कीमत सदैव डिविडेंड सहित ही समझी जाती है जब तक कोई अन्य शर्त न दी हो) तो गत ब्याज के भुगतान की तिथि से प्रतिभूति खरीदने की तिथि तक का ब्याज मालूम करना चाहिए। इस तरह से मालूम किया हुआ ब्याज एक ब्याज-खाते में डेबिट किया जाता है, शेष क्रय मूल्य, जो विनियोग की पूँजीगत लागत (Capital cost) है विनियोग खाते के नाम लिखते हैं और कुल दिया हुआ रुपया रोकड़ खाते में क्रेडिट किया जाता है। यह इसलिए है कि डिविडेंड सहित खरीदे हुए विनियोग की कुल लागत में कुछ रकम तो ब्याज की सम्मिलित होती है और बाकी प्रतिभूति की कीमत। जब सिक्यूरिटी पर अगला ब्याज प्राप्त हो तो वह रोकड़ खाते डेबिट और ब्याज-खाते क्रेडिट किया जाता है।

२. जब इनवेस्टमेंट डिविडेड सहित बेचा जाता है तो कुल रकम रोकड़ खाते में डेबिट की जाती है और उपार्जित ब्याज (accrued interest) से ब्याज खाते को और बाकी बिक्री रकम में विनियोग खाते को क्रेडिट किया जाता है। उपार्जित ब्याज (accrued interest) को ब्याज-खाते में इसलिए क्रेडिट किया जाता है क्योंकि यह भी सिक्यूरिटी के साथ बेचा गया है।

उदाहरण २०६

१ फरवरी १९५० को, ऐडम्स ने वाई से प्रीमियर शुगर वर्क्स लि० के चार १०० रु० वाले ६% ऋणपत्र, ११०) रु० की दर से लाभांश सहित खरीदे इन पर ब्याज १ जून व १ दिसम्बर को देय है।

यदि प्रत्येक पत्र को ४ आने प्रतिशत ब्रोकर कमीशन देना पड़े तो आप उपर्युक्त का ऐडम्स व वाई की पुस्तकों में किस प्रकार लेखा करेंगे।

एक्स की पुस्तकें

१०० रु० वाले ४ ऋण-पत्रों का, ११० रु० ८ आ० प्रति लाभांश सहित मूल्य पर, क्रय मूल्य	४४२
जोड़ा बैंक कमीशन, ४०० रु० पर ४ आ० प्रतिशत की दर से	१
कुल लागत	४४३
घटाई ४०० रु० पर ६% प्रति वर्ष की दर से २ मास (१ दिसम्बर १६४६ से १ फरवरी १६५० तक) की उपार्जित व्याज	४
विनियोग की पूँजी लागत रु०	४३६

प्रीमियर शुगर ऋण-पत्र खाता

(व्याज १ जून व १ दिसम्बर को देय)

		रु०			
१६५० फर. १	रोकड (४०० ऋण-पत्रों की लागत)	४३६			

व्याज खाता

		रु०			रु०
१६५० फर. १	रोकड़ (उपार्जित व्याज)	४	१६५० जून. १	रोकड़	१२
			दिस १	,,	१२

वाई की पुस्तकें

१०० रु० वाले ४ ऋणपत्रों का, ११० रु० ८ आ० प्रति लाभाश सहित मूल्य पर विक्रय मूल्य	४४२
घटाया ४ आ० प्रतिशत की दर से ४०० रु० पर बैंक कमीशन	१
कुल प्राप्त राशि	४४१
घटायी ४०० रु० पर ६% प्रति वर्ष की दर से २ मास (१ दिसम्बर १६४६ से १ फरवरी १६५० तक) की उपार्जित व्याज	४
बिके हुए विनियोगों का पूँजी मूल्य रु०	४३६

प्रीमियर शुगर ऋण-पत्र खाता

(व्याज १ जून व १ दिसम्बर को देय)

		रु०			रु०
१६५० जन. १	शेष नी/ला	?	१६५० फर. १	रोकड़ (४०० ऋण पत्रों की विक्रय राशि	४३७

व्याज खाता

					रु०
			१६५० फर. १	रोकड़ (उपार्जित व्याज विक्रय)	४

(ब) कम्पनियों के शेअर

१ जब कम्पनी के शेअर डिविडेंड सहित खरीदे जाते हैं तो इनकी कीमत मे डिविडेंड भी सम्मिलित रहता है। परन्तु क्योकि डिविडेड गत समय का है इसलिए यह सब विक्रेता का होता है। इसलिये खरीदने वालो की बहियो मे उपार्जित डिविडेड की रकम डिविडड खाते में और बाकी क्रय मूल्य विनियोग खाते मे डेबिट किया जाता है और कुल दिये हुए रुपये की रकम रोकड़ खाते मे क्रेडिट की जाती है। जब डिविडेड वास्तव मे प्राप्त होता है तो रोकड़ खाते डेबिट किया जाता है और डिविडेंड खाते मे क्रेडिट किया जाता है।

२. जब कम्पनी के शेअर डिविडेड सहित बेचे जाते हैं तो कुल रकम रोकड़ खाते मे डेबिट की जाती है और उपार्जित डिविडेंड की रकम डिविडेंड खाते में और बाकी विक्रय मूल्य की रकम विनियोग

खाते में क्रेडिट की जाती है। उपार्जित डिविडेंड की रकम डिविडेंड खाते मे इसलिए क्रेडिट की जाती है कि यह भी उन शेअरो के साथ वेच दी गई है।

उदाहरण २०७

१५ अगस्त १६५० को, ए ने बी से स्वदेशी कॉटन मिल्स लि० के २५० रु० वाले ५० अंश १,७८१ रु० लाभाश सहित की दर पर रोकड़ी खरीदे। कुछ दिन पूर्व कम्पनी ने १६४६ का ३५ रु० प्रति अंश लाभांश घोषित किया था, जो १ सितम्बर १६५० को या उसके पश्चात् देय है।

आवश्यक खातों द्वारा इन व्यवहारों का लेखा ए व बी दोनों की पुस्तकों में किस प्रकार होगा।

ए की खाता बही

स्वदेशी कॉटन मिल्स लि० अंश खाता

१६५०		रु०			
अग १५	रोकड़	८७,३००			

लाभांश खाता

१६५०		रु०	१६५०		रु०
अग १५	रोकड़	१,७५०	सि. १	रोकड़	१,७५०

बी की खाता बही

स्वदेशी कॉटन मिल्स लि० अश खाता

१६५०		रु०	१६५०		रु०
अग. १५	शेष नी/ला	?	अग १५	रोकड़	८७,३००

लाभांश खाता

			१६५०		रु०
			अग १५	रोकड़	१,७५०

उदाहरण २०८

१० अक्तूबर १६५० को, एक वीमा कम्पनी ने भारत इलैक्ट्रिक सप्लाई कं० लि० के १८२ रु० लाभांश सहित की दर से १०० रु० वाले २०० साधारण अंश खरीदे। १७ अक्तूबर १६५० को इन अशों पर आय कर से मुक्त ७ रु० प्रति अंश लाभाश दिया गया।

१५ दिसम्बर १६५० को आधे अश १८० रु० पर बेच दिये।

यह मानते हुये कि वीमा कम्पनी का हिसाब का वर्ष ३१ दिसम्बर को समाप्त होता है, उपर्युक्त व्यवहारों को उसके खातों में लिखिये।

विनियोग खाता

भारत इलैक्ट्रिक सप्लाई क० लि० में १०० रु० वाले साधारण अंश

१६५०		रु०	१६५०		रु०
अक्टू १०	रोकड़ (२०० अशों की लागत)	३५,०००	दि० १५	रोकड (१०० अंशों का विक्रय)	१८,०००
दि० ३१	लाभ-हानि खाता (लाभ)	५००	३१	शेष आ/लि	१७,५००
		३५,५००			३५,५००

लाभांश खाता

१६५०		रु०	१६५०		रु०
अक्टू १०	रोकड़	१,४००	अक्टू १७	रोकड़	१,४००

डिविडेंड रहित भाव (Ex-dividend Quotation)—डिविडेंड रहित भाव का अर्थ स्थाई ब्याज प्रतिभूतियों के सम्बन्ध मे यह होता है कि आगामी प्राप्त होने वाला ब्याज इस कीमत में सम्मिलित नहीं है। इसका मतलब यह हुआ कि जब प्रतिभूतियाँ डिविडेंड रहित बेची जाती हैं तो अगला मिलने वाला ब्याज विक्रेता को ही मिलेगा यद्यपि उसने प्रतिभूति को बेच दिया है। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि इससे खरीदने वाले को नुकसान रहता है, क्योकि विक्रेता खरीदने वाले को बेचने की तिथि से ब्याज मिलने की दूसरी तिथि तक के ब्याज की छूट दे देता है और इस रकम को प्रतिभूति की कीमत मे से कम कर दिया जाता है। इसलिए प्रतिभूति का डिविडेंड रहित मूल्य सदैव ही ब्याज की इस रकम से, जो खरीदने वाले की होती है, कम होता है।

स्थाई ब्याज वाली प्रतिभूतियो को ब्याज मिलने की तिथि के आस-पास डिविडेड रहित भाव पर बेचा या खरीदा जाता है। यह समय स्टॉक विनिमय बाजार के नियमों के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रतिभूतियो के लिए भिन्न-भिन्न होता है।

शेअरो को डिविडेंड रहित भावों मे डिविडेंड की घोषणा की तिथि से इनकी भुगतान तिथि तक ही बेचा या खरीदा जाता है। ज्यों ही डिविडेडो का भुगतान हो जाता है त्यों ही यह भाव बन्द हो जाता है, परन्तु यह बहुत कुछ स्टॉक विनिमय बाजारो के नियमों पर भी निर्भर रहता है। इस भाव का अर्थ यही है कि जो डिविडेड अभी मिलने वाला है वह विक्रेता को प्राप्त होगा यद्यपि उसने अपने शेअर बेच दिये हैं।

इसलिए जो व्यक्ति डिविडेंड रहित भाव पर प्रतिभूति खरीदता है, उसे वह आगामी ब्याज या डिविडेंड नही मिल सकेगा। इस तरह के भाव पर खरीदी या बेची हुइ प्रतिभूतियो के हिसाब को बहियों मे निम्न प्रकार से लिखा जाता है :—

(अ) स्थाई ब्याज की प्रतिभूतियाँ

१. जब डिविडेंड रहित भाव पर विनियोग खरीदा जाता है तो वास्तव में दी हुई रकम से विनियोग खाते को डेबिट और रोकड़ खाते को क्रेडिट किया जाता है और खरीदने की तिथि से ब्याज की तिथि तक के समय पर मिलने वाले ब्याज की रकम से भी विनियोग खाते को डेबिट और ब्याज खाते को क्रेडिट किया जाता है, क्योकि इस ब्याज की रकम प्रतिभूतियों की कीमत मे से कम कर दी गई है।

२. जब विनियोग डिविडेड रहित भाव पर बेचा जाता है तो प्राप्त हुई रकम से रोकड़खाते को डेबिट करते हैं और विनियोग खाते को क्रेडिट किया जाता है। बेचने की तारीख से खरीदने की तारीख तक के समय पर होने वाले ब्याज की रकम से ब्याज खाते को डेबिट और विनियोग खाते को क्रेडिट किया जाता है, क्योंकि प्रतिभूति कीमत इस रकम से कम कर दी गइ है और विक्रेता को आगामी पूरा ब्याज प्राप्त होगा।

उदाहरण २०६

१६ मई १६५० को, ऐक्स ने वाई से प्रीमियर शुगर वर्क्स लि० के चार ६% १०० रु० वाले ऋण-पत्र, जिन पर ब्याज १ जून व १ दिसम्बर को देय है, १०८ रु० लाभाश रहित की दर पर रोकड़ी खरीदे।

यदि प्रत्येक पक्ष को ४ आने प्रतिशत बैंक कमीशन देना पड़े तो आप उपर्युक्त का ऐक्स व वाई की पुस्तकों में किस प्रकार लेखा करेंगे।

ऐक्स की पुस्तके

१०० रु० वाले ४ ऋण-पत्रों का, १०८ रु० लाभाश रहित की दर से क्रय मूल्य	४३२
जोड़ा ४०० रु० पर ४ आ० प्रतिशत की दर से बैंक कमीशन	१
क्रय पर दी गई वास्तविक राशि रु०	४३३

४०० रु० पर ६% प्रतिवर्ष की दर से आधे मास (१६ मई १६५० से १ जून १६५० तक) की ब्याज की

खाते में क्रेडिट की जाती है। उपार्जित डिविडेंड की रकम डिविडेंड खाते मे इसलिए क्रेडिट की जाती है कि यह भी उन शेअरों के साथ वेच दी गई है।

उदाहरण २०७

१५ अगस्त १९५० को, ए ने बी से स्वदेशी कॉटन मिल्स लि० के २५० रु० वाले ५० अंश १,७८१ रु० लाभाश सहित की दर पर रोकडी खरीदे। कुछ दिन पूर्व कम्पनी ने १९४९ का ३५ रु० प्रति अंश लाभाश घोषित किया था, जो १ सितम्बर १९५० को या उसके पश्चात् देय है।

आवश्यक खातों द्वारा इन व्यवहारों का लेखा ए व बी दोनों की पुस्तकों में किस प्रकार होगा।

ए की खाता बही

स्वदेशी कॉटन मिल्स लि० अंश खाता

		रु०			
१९५०					
अग १५	रोकड़	८७,३००			

लाभांश खाता

		रु०			रु०
१९५०			१९५०		
अग १५	रोकड	१,७५०	सि. १	रोकड़	१,७५०

बी की खाता बही

स्वदेशी कॉटन मिल्स लि० अश खाता

		रु०			रु०
१९५०			१९५०		
अग. १५	शेष नी/ला	?	अग १५	रोकड़	८७,३००

लाभांश खाता

					रु०
			१९५०		
			अग. १५	रोकड़	१,७५०

उदाहरण २०८

१० अक्तूबर १९५० को, एक बीमा कम्पनी ने भारत इलैक्ट्रिक सप्लाई कं० लि० के १८२ रु० लाभाश सहित की दर से १०० रु० वाले २०० साधारण अश खरीदे। १७ अक्तूबर १९५० को इन अंशों पर आय-कर से मुक्त ७ रु० प्रति अंश लाभाश दिया गया।

१५ दिसम्बर १९५० को आधे अश १८० रु० पर बेच दिये।

यह मानते हुये कि बीमा कम्पनी का हिसाब का वर्ष ३१ दिसम्बर को समाप्त होता है, उपर्युक्त व्यवहारों को उसके खातों में लिखिये।

विनियोग खाता

भारत इलैक्ट्रिक सप्लाई कं० लि० में १०० रु० वाले साधारण अंश

		रु०			रु०
१९५०			१९५०		
अक्टू० १०	रोकड़ (२०० अशों की लागत)	३५,०००	दि० १५	रोकड़ (१०० अशों का विक्रय)	१८,०००
दि० ३१	लाभ-हानि खाता (लाभ)	५००	३१	शेष आ/लि	१७,५००
		३५,५००			३५,५००

लाभांश खाता

		रु०			रु०
१९५०			१९५०		
अक्टू० १०	रोकड़	१,४००	अक्टू० १७	रोकड़	१,४००

डिविडेंड रहित भाव (Ex-dividend Quotation)—डिविडेंड रहित भाव का अर्थ स्थाई व्याज प्रतिभूतियो के सम्बन्ध मे यह होता है कि आगामी प्राप्त होने वाला व्याज इस कीमत में सम्मिलित नहीं है। इसका मतलब यह हुआ कि जब प्रतिभूतियाँ डिविडेंड रहित बेची जाती हैं तो अगला मिलने वाला व्याज विक्रेता को ही मिलेगा यद्यपि उसने प्रतिभूति को बेच दिया है। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि इससे खरीदने वाले को नुकसान रहता है, क्योंकि विक्रेता खरीदने वाले को बेचने की तिथि से व्याज मिलने की दूसरी तिथि तक के व्याज की छूट दे देता है और इस रकम को प्रतिभूति की कीमत मे से कम कर दिया जाता है। इसलिए प्रतिभूति का डिविडेंड रहित मूल्य सदैव ही व्याज की इस रकम से, जो खरीदने वाले की होती है, कम होता है।

स्थाई व्याज वाली प्रतिभूतियो को व्याज मिलने की तिथि के आस-पास डिविडेंड रहित भाव पर बेचा या खरीदा जाता है। यह समय स्टॉक विनिमय बाजार के नियमों के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रतिभूतियो के लिए भिन्न-भिन्न होता है।

शेअरो को डिविडेड रहित भावों मे डिविडेड की घोषणा की तिथि से इनकी भुगतान तिथि तक ही बेचा या खरीदा जाता है। ज्यो ही डिविडेडो का भुगतान हो जाता है त्यों ही यह भाव बन्द हो जाता है, परन्तु यह बहुत कुछ स्टॉक विनिमय बाजारो के नियमों पर भी निर्भर रहता है। इस भाव का अर्थ यही है कि जो डिविडेंड अभी मिलने वाला है वह विक्रेता को प्राप्त होगा यद्यपि उसने अपने शेअर बेच दिये हैं।

इसलिए जो व्यक्ति डिविडेड रहित भाव पर प्रतिभूति खरीदता है, उसे वह आगामी व्याज या डिविडेड नही मिल सकेगा। इस तरह के भाव पर खरीदी या बेची हुई प्रतिभूतियो के हिसाब को वहियों में निम्न प्रकार से लिखा जाता है :—

(अ) स्थाई व्याज की प्रतिभूतियाँ

१. जब डिविडेड रहित भाव पर विनियोग खरीदा जाता है तो वास्तव में दी हुई रकम से विनियोग खाते को डेबिट और रोकड़ खाते को क्रेडिट किया जाता है और खरीदने की तिथि से व्याज की तिथि तक के समय पर मिलने वाले व्याज की रकम से भी विनियोग खाते को डेबिट और व्याज खाते को क्रेडिट किया जाता है, क्योंकि इस व्याज की रकम प्रतिभूतियों की कीमत मे से कम कर दी गई है।

२. जब विनियोग डिविडेड रहित भाव पर बेचा जाता है तो प्राप्त हुई रकम से रोकड़खाते को डेबिट करते हैं और विनियोग खाते को क्रेडिट किया जाता है। बेचने की तारीख से खरीदने की तारीख तक के समय पर होने वाले व्याज की रकम से व्याज खाते को डेबिट और विनियोग खाते को क्रेडिट किया जाता है, क्योंकि प्रतिभूति कीमत इस रकम से कम कर दी गइ है और विक्रेता को आगामी पूरा व्याज प्राप्त होगा।

उदाहरण २०६

१६ मई १६५० को, ऐक्स ने वाई से प्रीमियर शुगर वर्क्स लि० के चार ६% १०० रु० वाले ऋण-पत्र, जिन पर व्याज १ जून व १ दिसम्बर को देय है, १०८ रु० लाभांश रहित की दर पर रोकड़ी खरीदे।

यदि प्रत्येक पक्ष को ४ आने प्रतिशत बैंक कमीशन देना पड़े तो आप उपर्युक्त का ऐक्स व वाई की पुस्तकों में किस प्रकार लेखा करेंगे।

ऐक्स की पुस्तकें

१०० रु० वाले ४ ऋण-पत्रों का, १०८ रु० लाभांश रहित की दर से क्रय मूल्य	४३२
जोड़ा ४०० रु० पर ४ आ० प्रतिशत की दर से बैंक कमीशन	१
क्रय पर दी गई वास्तविक राशि रु०	४३३

४०० रु० पर ६% प्रतिवर्ष की दर से आधे मास (१६ मई १६५० से १ जून १६५० तक) की व्याज की

राशि, १ रु० क्रेता से सम्बन्धित है, परन्तु यह विक्रेता द्वारा प्राप्त की जायगी, क्योंकि ऋण-पत्र लाभाश रहित बेचे गये हैं। अतः यह एक रुपये की राशि, जो विनियोग में से घटा दी गई है, जोड़ी जानी चाहिये अर्थात् विनियोग का मूल्य ४३३ रु० + १ रु० = ४३४ रु० होगा।

प्रीमियर शुगर ऋण-पत्र खाता

(ब्याज १ जून व १ दिसम्बर को देय)

१९५०		रु०			
मई १६	रोकड़ (४०० ऋण-पत्रों का क्रय मूल्य)	४३३			
	ब्याज खाता	१			

ब्याज खाता

			१९५०		रु०
			मई १६	प्रीमियर शुगर ऋण-पत्र खाता	१
			दि० १	रोकड़ खाता	१२

वाई की पुस्तकें

१०० रु० वाले ४ ऋण-पत्रों का, १०८ रु० लाभाश रहित की दर से विक्रय मूल्य	४३२
घटाया ४०० रु० पर ४ आना प्रतिशत की दर से बैंक कमीशन	१
वास्तविक प्राप्त राशि रु०	४३१

प्रीमियर शुगर ऋण-पत्र खाता

(ब्याज १ जून व १ दिसम्बर को देय)

			१९५०		रु०
			मई १६	रोकड़ (४०० रु० के ऋण-पत्रों की विक्रय राशि)	४३१
				ब्याज खाता	१

ब्याज खाता

१९५०		रु०	१९५०		रु०
मई १६	प्रीमियर शुगर ऋण-पत्र	१	जून १	रोकड़	१२

(ब) कम्पनियों के शेअर

जब कोई व्यक्ति अपने शेअरों को डिविडेंड रहित भाव पर वेचता है तो उसे हाल में ही मिलने वाला डिविडेंड लेने का अधिकार होगा, इसलिए बहियों में किसी भी तरह का एडजस्टमेंट डिविडेंड के सम्बन्ध मे नहीं करना पड़ता क्योंकि जो कीमत शेअर के लिये दी गई है वह उसकी ही कीमत है।

विनियोग से आय :— समय-समय पर विनियोगों पर जो आय ब्याज और डिविडेंड के रूप में प्राप्त होती रहती है वह रोकड़ खाते डेबिट और ब्याज या डिविडेंड खाते क्रेडिट की जाती है। हर विनियोग के लिए भिन्न-भिन्न ब्याज या डिविडेंड खाते रखना आवश्यक नहीं है। एक ही ब्याज खाता और एक ही डिविडेंड खाता काफी होता है।

जब व्यापारिक बहीखाता पद्धति अपनाई जाती है तो उपार्जित ब्याज (accrued interest) को भी बहियों में उपार्जित ब्याज खाता (Accrued Interest Account) डेबिट और ब्याज खाता क्रेडिट करके लिख लेना चाहिए।

जब रोकड़ी बहीखाते की पद्धति से काम लिया जाता है (जैसे, व्यक्तियों, संस्थाओं आदि द्वारा) तो इस तरह से उपार्जित होने वाला ब्याज या डिविडेंड बिल्कुल बहियों में नहीं लिखा जाता है परन्तु केवल वास्तव में प्राप्त हुई रकम को ही क्रेडिट किया जाता है।

ब्याज या डिविडेड आयकर के कटने के बाद प्राप्त होता है, परन्तु इस पुस्तक मे आयकर का प्रश्न छोड़ दिया गया है।

वर्ष के अन्त मे ब्याज या डिविडेड खाते का बैलेस हानि-लाभ खाते में ट्रांसफर कर दिया जाता है।

विनियोग खाते का बैलेस करना —जब सारा विनियोग बेच दिया जाता है तो दोनो तरफो का अन्तर हानि या लाभ के रूप मे होता है। परन्तु जब विनियोग का सिर्फ कुछ भाग ही बेचा गया है तो बाकी बचे हुए विनियोग की मूल लागत बैलेस के रूप मे विनियोग खाते मे लिखी जावेगी और दोनो तरफ का जो अन्तर होगा वह बेचने पर होने वाला लाभ या हानि रहेगा।

विनियोग के बेचने पर जो लाभ या हानि होगी वह हानि-लाभ खाते में ट्रांसफर कर दी जावेगी यदि यह इनवेस्टमेट चल सम्पत्ति के रूप में थे। परन्तु जब विनियोग स्थाई सम्पत्ति के रूप मे थे तो इनके बेचने पर जो लाभ या हानि होगी वह पूँजी लाभ या हानि होगी और इसे हानि-लाभ खाते में नहीं रखा जा सकेगा।

यदि बैलेन्स-शीट की तिथि पर विनियोगों को बाजार-भाव पर रखना हो तो इनके मूल्य मे से डिविडेन्ड या ब्याज की रकम, जो डिविडेन्ड सहित भाव मे सम्मिलित की जाती है, कम कर देनी चाहिए।

उदाहरण २१०

१ अप्रेल १९५० को, एक लिमिटेड क० ने ५,००० रु० के ३% १९६३-६५ राजकीय ऋण ८९ रु० ८ आ० लाभाश सहित की दर से, जिन पर १ जून व १ दिसम्बर को ब्याज देय है, खरीदे। उन्होंने १ अगस्त १९५० को ५,००० रु० सम-मूल्य पर ३% पोर्ट ट्रस्ट बौण्ड में भी विनियोग किये, जिन पर १ फरवरी व १ अगस्त को ब्याज देय है।

दलाली व आयकर का ध्यान न करते हुये ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का विनियोग खाता व ब्याज खाता तैयार करो।

३% १९६३-६१ राजकीय ऋण-खाता

(ब्याज १ जून व १ दिसम्बर को देय)

		रु०			रु०
१९५० अप्रेल १	रोकड़ (५,००० रु० के ऋण की लागत)	४,४२५	१९५० दि० ३१	शेष आ/ले	४,४२५

३% पोर्ट ट्रस्ट बौण्ड्स खाता

(ब्याज १ फरवरी व १ अगस्त को देय)

		रु०			रु०
१९५० अग० १	रोकड़ (५,००० रु० के बौण्डों की लागत)	५,०००	१९५० दि० ३१	शेष आ/ले	५,०००

ब्याज खाता

		रु०			रु०
१९५० अप्रेल १	रोकड़ (उपार्जित ब्याज)	५०	१९५० जून १	रोकड़ खाता	७५
	लाभ-हानि खाता	१७५	दि० १	,, ,,	७५
			,, ३१	उपार्जित ब्याज	७५
		२२५			२२५

उपार्जित ब्याज खाता

		रु०			रु०
१९५० दि० ३१	ब्याज खाता	७५	१९५० दि० ३१	शेष आ/ले	७५

[illegible] पर [illegible] ब्याज निम्न प्रकार निकाली गई है :—

[illegible] राजकीय ऋणों पर १ मास (दिसम्बर १९५०) का ब्याज	१२–८–०
[illegible] ट्रस्ट बौण्डों पर ५ मास (अगस्त से दिसम्बर १९५० तक) का ब्याज	६२–८–०
रु०	७५–०–०

उदाहरण २११

१५ मई १९५० को, एक लिमिटेड कम्पनी ने ८९ रु० १४ आ० लाभाश रहित की दर से २०,००० रु० के ३% १९६३–६५ राजकीय ऋण (ब्याज १ जून व १ दिसम्बर को देय) जिस पर चार आना प्रतिशत बैंक खर्च हैं, खरीदे। व १ अगस्त १९५० को उन्होंने १०,००० रु० सम-मूल्य पर ३% पोर्ट ट्रस्ट बॉन्डस में लगाये (ब्याज १ फरवरी व १ अगस्त को देय है)।

१९५० के कम्पनी की बहियां में दोनों विनियोग खाते व ब्याज खाता तैयार कीजिये।

३% १९६३–६५ राजकीय ऋण
(ब्याज १ जून व १ दिसम्बर को देय)

१९५०		रु०	१९५०		रु०
मई १५	रोकड़ (२०,००० रु० के ऋणों की लागत)	१८,०२५	दि० ३१	शेष आ/ले	१८,०५०
	ब्याज खाता	२५			
		१८,०५०			१८,०५०

३% पोर्ट ट्रस्ट बौण्ड्स
(ब्याज १ फरवरी व १ अगस्त को देय)

१९५०		रु०	१९५०		रु०
दि० १	रोकड़ (१०,००० रु० के ऋणों की लागत	१०,०००	दि० ३१	शेष आ/ले	१०,०००

ब्याज खाता

१९५०		रु०	१९५०		रु०
अग० ३१	लाभ-हानि खाता	५००	मई १५	३% १९६३–६५ राजकीय ऋण	२५
			दि० १	रोकड़	३००
			३१	उपार्जित ब्याज	१७५
					५००

उपार्[illegible]

१९५०		रु०			रु०
दि० ३१	ब्याज खाता	१७५			१७५

की [illegible]

५०
१२५
१७५

उदाहरण २१२

१ जनवरी [illegible]

१ फरवरी व १ अगस्त को देय है, लिया। यह ऋण सम-मूल्य पर प्राप्त किया गया। १ जुलाई १९५० को उसने १०,००० रु० के और ये ऋण १०१ रु० १० आ० की दर से खरीदे।

यह मानते हुये कि ऋण १ फरवरी १९५१ को सम-मूल्य पर विमोचित है विनियोगों से सम्बन्धित आवश्यक खाते (Ledger Accounts) तैयार कीजिये।

३% १९५१ राजकीय ऋण खाता

(ब्याज १ फरवरी व १ अगस्त को देय)

		रु०	आ	पा.			रु०	आ	पा
१९५०					१९५०				
जन. १	शेष नी/ला	१०,०००	–	–	दिस ३१	शेष आ/ले	२०,०३७	८	–
जु. १	रोकड़	१०,०३७	८	–					
		२०,०३७	८	–			२०,०३७	८	–
१९५१					१९५१				
जन. १	शेष नी/ला	२०,०३७	८	–	फर. १	रोकड़	२०,०००	–	–
						लाभ-हानि खाता	३७	८	–
		२०,०३७	८	–			२०,०३७	८	–

ब्याज खाता

		रु.	आ.	पा			रु.	आ	पा.
१९५०					१९५०				
जन १	उपार्जित ब्याज	१२५	–	–	फर. १	रोकड़	१५०	–	–
जु. १	रोकड	१२५	–	–	अग. १	,,	३००	–	–
दिस ३१	लाभ-हानि खाता	४५०	–	–	दिस.३१	उपार्जित ब्याज	२५०	–	–
		७००	–	–			७००	–	–
१९५१					१९५१				
जन. १	उपार्जित ब्याज	२५०	–	–	फर. १	रोकड़	३००	–	–
दिस.३१	लाभ-हानि खाता	५०	–	–					
		३००	–	–			३००	–	–

उपार्जित ब्याज खाता

		रु.	आ.	पा.			रु	आ	पा.
१९५०					१९५०				
जन. १	शेष नी/ला	१२५	–	–	जन. १	ब्याज खाता	१२५	–	–
दिस ३१	ब्याज खाता	२५०	–	–	दिस.३१	शेष आ/ले	२५०	–	–
		३७५	–	–			३७५	–	–

स्कम्भीय विनियोग खाता (Columnar Investment Account) :—ऊपर जो विनियोग खाता बतलाया गया है वही खाता अधिकतर अपनाया जाता है। परन्तु विनियोग खाता खानो वाला भी हो सकता है अर्थात् इसमे प्रतिभूति के अकित मूल्य ब्याज और मूलधन को लिखने के लिए अलग-अलग खाने हो सकते हैं।

इस तरह का विनियोग अन्य देशों मे प्रचलित हो सकता है, परन्तु यह हमारे देश में बहुत कम प्रचलित है—यह पद्धति इसलिये समझाई जा रही है क्योंकि कुछ परीक्षक इसे परीक्षाओं में देते हैं।

जब विनियोग खाता खानो के रूप में रखा जाता है तब इसी खाते में सब आय भी प्रतिभूतियो की खरीद बिक्री के साथ लिखी जाती है। उदाहरण २११ को इस पद्धति के अनुसार यहाँ पर समझाया जावेगा :—

३% १९६३-६५ राजकीय ऋण
(ब्याज १ जून व १ दिसम्बर को देय)

		नाम-मात्र का मूल्य	प्राप्ति	पूंजी मूल्य			नाम-मात्र का मूल्य	प्राप्ति	पूंजी मूल्य
१९५०		रु०	रु०	रु०	१९५०		०	रु०	रु०
मई १५	रोकड़	२०,०००		१८,०२५	मई १५	राजकीय ऋण			
	ब्याज (वि०प्र०)			२५		(वि.प्र)		२५	
दिस. ३१	लाभ-हानि खाता		३७५		दिस, १	रोकड़ (½ साल का ब्याज)		३००	
					३१	उपार्जित ब्याज		५०	
						शेष आ/ले	२०,०००		१८,०५०
		२०,०००	३७५	१८,०५०			२०,०००	३७५	१८,०५०

३% पोर्ट ट्रस्ट बौण्ड्स
(ब्याज १ फरवरी व १ अगस्त को देय)

		नाम-मात्र का मूल्य	प्राप्ति	पूंजी मूल्य			नाम-मात्र का मूल्य	प्राप्ति	पूंजी मूल्य
१९५०		रु०	रु०	रु०	१९५०		रु०	रु०	रु०
अग० १	रोकड़	१०,०००		१०,०००	दि० ३१	उपार्जित ब्याज खाता		१२५	
दि० ३१	लाभ-हानि खाता		१२५			शेष आ/ले	१०,०००		१०,०००
		१०,०००	१२५	१०,०००			१०,०००	१२५	१०,०००

उदाहरण २१३

१ जनवरी १९५० को, ऐक्स कम्पनी लि० के पास ३०,० ० रु० के ४% १९६०-७० राजकीय ऋण हैं, जो ३२,८२५ रु० की लागत से खरीदे गये थे व जिन पर प्रति वर्ष ब्याज १५ मार्च व १५ सितम्बर को देय है। १ मार्च १९५० को ऐक्स कं० लि० ने अपने आधे ऋण वाई क० लि० को १०८⅛ लाभाश रहित की दर से बेचे।

इन विनियोगों से सम्बन्धित व्यवहारों का दोनों कम्पनियों की खाता पुस्तकों में आवश्यक खातों (Ledger Accounts) में ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष में किस प्रकार लेखा किया जायेगा।

ऐक्स क० लि० की खाता वही

विनियोग खाता
(१९६०-७० राजकीय ऋण—ब्याज १५ मार्च व १५ सितम्बर को देय)

१९५०		रु०	१९५०		रु०
जन० १	शेष नी/ला	३२,८२५	मार्च १	रोकड़	१६,२३७½
				ब्याज खाता	२५

ब्याज खाता

१९५०		रु०	१९५०		रु०
जन० १	उपार्जित ब्याज	३५०	मार्च १५	रोकड़	६००
मार्च १	विनियोग खाता	२५	सित० १५	,,	३००
			दिस० ३१	उपार्जित ब्याज	१७५

उपार्जित ब्याज खाता

१९५०		रु०	१९५०		रु०
जन० १	शेष नी/ला	३५०	जन० १	ब्याज खाता	३५०
दिस० ३१	ब्याज खाता	१७५			

बाई कं० लि० की खाता बही

विनियोग खाता

(१६६०–७० राजकीय ऋण—ब्याज १५ मार्च व १५ सितम्बर को देय)

१६५०		रु०			
मार्च १	रोकड़	१६,२३७½			
	ब्याज खाता	२५			

ब्याज खाता

			१६५०		रु०
			मार्च २	विनियोग खाता	२५
			सि० १५	रोकड़	३००
			दि० ३१	उपार्जित ब्याज	१७५

उपार्जित ब्याज खाता

१६५०		रु०			
दि० ३१	ब्याज खाता	१७५			

प्रश्न

१. विनियोग खाते से आप क्या समझते हैं ? सक्षेप में विनियोग खाते रखने की दो पद्धतियों का वर्णन करो ।

२ 'लाभाश सहित' व 'लाभाश रहित' शब्दों का अर्थ उदाहरण देकर समझाइये और बताइये कि इनका विनियोग खाते पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

३. १५ मार्च १६५० को, ए ने बी से १०० रु० वाले १०, ४% बम्बई पोर्ट ट्रस्ट ऋण-पत्र ६३ रु० १२ आ० में लाभाश सहित खरीदे, तथा इस सम्बन्ध में ८ रु० व्यय हुये । ऋण-पत्रों का ब्याज १ मई व १ नवम्बर को देय है । उपरोक्त का १६५० वें वर्ष में ए व बी दोनों की पुस्तकों में किस प्रकार लेखा होगा ।

४. १५ मार्च १६५० को, ए ने बी से १०० रु० वाले १० ५% बम्बई म्यूनिसिपल ऋण-पत्र ६२ रु० ८ आ० की दर से (लाभांश रहित) रोकड़ी खरीदे, तथा इस सम्बन्ध में ८ रु० व्यय हुये । ऋण-पत्रों का ब्याज १ अप्रेल व १ अक्टूबर को देय है । उपर्युक्त का १६५० वे वर्ष में ए व बी दोनों की पुस्तकों में किस प्रकार लेखा होगा ?

५ एक लिमिटेड कम्पनी ने अपनी अतिरिक्त कार्यशील पूँजी लगाने के लिये २८ फरवरी १६५० को २०,००० रु० के ४½% १६५५-६० सरकारी ऋण-पत्र ६८ रु० ८ आ० (लाभाश रहित) की दर से खरीदे । बैंक का कमीशन ४ आना प्रतिशत है । ऋण-पत्रों पर १५ मार्च व १५ सितम्बर को ब्याज मिलता है । १ अगस्त १६५० को आधे ऋण-पत्र ६६ रु० ४ आ० (लाभाश सहित) की दर से बेच दिये गये, विक्रय पर ३५ रु० खर्च हुये ।

उपर्युक्त विवरण से १६५० का विनियोग व ब्याज खाता बनाइये, ३१ दिसम्बर १६५० को ऋण पत्रों का बाजार मूल्य ६६ रु० था ।

उत्तर : विक्रय पर हानि ५६७ रु० ८ आ०; विनियोग खाते का शेष ६,७६८ रु० १२ आ०; लाभ-हानि खाते में क्रेडिट किया हुआ ब्याज ५६२ रु० ८ आ०

६. ३१ मार्च १६५० को, एक कम्पनी ने १०,००० रु० के ५% सरकारी ऋण-पत्र ६५ रु० (लाभांश सहित की दर से खरीदे जिन पर ३० जून व ३१ दिसम्बर को ब्याज मिलता है । १ जुलाई १६५० को आधे विनियोग ६६ रु० की दर से रोकड़ी बेचे । उसके बाद १ अक्तूबर १६५० को २,५०० रु० का ऋण ६६ रु० ८ आ० (लाभाश सहित) की दर से बेचा ।

३१ दिसम्बर १६५० को जब कि वार्षिक खाते तैयार होते हैं ऋण का मूल्य ६५ रु० (लाभांश रहित) की दर से बतलाया गया ।

कम्पनी के खाते में विनियोग खाता दिखलाओ ।

उत्तर : विनियोग खाते का शेष २,३४३ रु० १२ आ०; विक्रय पर लाभ १५० रु०; लाभ-हानि खाते में क्रेडिट किया हुआ ब्याज २१८ रु० १२ आ० ।

७. १ जून १६५० को, ऐक्स ने वाई से भारत टैक्सटाइल लि० के १०० रु० वाले १५ अंश ३७५ रु० (लाभाश सहित) की दर से खरीदे। १६४६ का १५ रु० प्रति अंश लाभाश १५ जून १६५० को देय है। १ दिसम्बर १६५० को उसके आधे ३०० रु० की दर पर बेचे।

उपर्युक्त व्यवहारों को ऐक्स के खाते में लिखो तथा ३१ दिसम्बर १६५० को खाते बन्द करो।

उत्तर : विक्रय पर हानि १५०० रु०;

विनियोग खाते का शेष ६,००० रु०।

८ एक लिमिटेड कम्पनी ने १ फरवरी १६५० को ६,००० रु० के ६% म्युनिसिपल ऋण-पत्र (Bonds) ११८ रु० की दर से खरीदे जिन पर १ मई व १ नवम्बर को व्याज मिलता है। १ दिसम्बर १६५० को आधे ऋण-पत्रों को १२० रु० (लाभाश रहित) की दर से बेच दिया।

उपर्युक्त व्यवहारों से कम्पनी के खातों में ३१ दिसम्बर १६५० को शेष निकालते हुये लेखा करो। दलाली व आयकर को छोड़ दीजिये।

उत्तर : विक्रय पर लाभ १२० रु०; विनियोग खाते का शेष ३,४६५ रु०; लाभ-हानि खाते में क्रेडिट किया हुआ व्याज २८५ रु०।

अध्याय—२६

१. दोहरा-खाता पद्धति (Double Account System)

दोहरा-खाता पद्धति वह नाम है जिसे सार्वजनिक उपयोग वाले व्यवसायो (जैसे रेल, बिजली, ट्राम, पानी और भाप कम्पनियो) की आर्थिक स्थिति को प्रस्तुत करने वाले ढंग के लिये प्रयोग किया जाता है। इन कम्पनियो के लिये शेअर और ऋण पूँजी की रकम और स्थाई सम्पत्ति पर (चल सम्पत्तियों से अलग) खर्च हुई कुल रकम को चल-सम्पत्ति और चालू दायित्वो की रकम से स्पष्ट रूप से दिखलाना ठीक समझा जाता है।

यह पद्धति इंगलैण्ड में सार्वजनिक उपयोग वाले व्यवसायो के लिए पार्लियामेंट के विशेष अधिनियमो द्वारा अनिवार्य कर दी गई है। परन्तु भारतवर्ष मे इस पद्धति को अपनाना किसी भी कम्पनी के लिए अनिवार्य नहीं है।

दोहरा-खाता पद्धति (Double Account System) और दोहरा-लेख पद्धति (Double Entry System) दो भिन्न-भिन्न पद्धतियाँ हैं, इसलिए इनके अन्तर को अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए। दोहरा-खाता पद्धति मे बैलेंस-शीट के दो भाग कर देते हैं। एक को पूँजी खाता (Capital Account) और दूसरे को साधारण बैलेस-शीट (General Balance Sheet) कहते हैं। यो खाते इस पद्धति में भी दोहरा लेख पद्धति के अनुसार ही लिखे जाते है। दोहरा खाता पद्धति की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

१. पूँजी-खाता (Capital Account) :—दोहरा खाता पद्धति के अनुसार तैयार की गई बैलेंस-शीट का यह प्रथम भाग है। यह एक खाते के रूप मे तैयार किया जाता है और इसमें पूँजी प्राप्तियाँ (receiptcs) और खर्चे (expenditure) उसी पक्ष मे दिखाये जाते हैं जिसमें वे अपने क्रमिक खातो मे, जिनकी वे सारांश है, दिखाये गये है, इसकी जमा (Credit) तरफ शेअरो, डिबेन्चरों और प्रीमियमो से प्राप्त सभी रकमे और नाम (Debit) की तरफ स्थाई सम्पत्ति और पूँजी खर्चों की रकम दिखलाई जाती है। हर तरफ इस खाते मे तीन-तीन खाने होते हैं जिनमे निम्न प्रकार से लेखा किया जाता है :—

(१) वर्ष के शुरू तक की प्राप्तियाँ और खर्चे।
(२) वर्ष में होने वाली प्राप्तियाँ और खर्चे।
(३) वर्ष की अन्तिम तिथि तक की कुल प्राप्तियाँ और खर्चे।

इस खाते का बैलेंस या दोनों तरफ के योग साधारण बैलेस-शीट में ले जाये जाते हैं।

२. साधारण बैलैंस-शीट (General Balance Sheet) :—यह दोहरा खाता बैलैंस-शीट का दूसरा भाग होता है। इसमे सम्पत्तियो को दाहिने हाथ की तरफ और ऋणों को बाँये हाथ की तरफ रखा जाता है। इसमें पूँजी खाते का बैलेंस या दोनो तरफ का योग, विभिन्न चल सम्पत्तियाँ जैसे, रोकड़, स्टॉक, देनदार इत्यादि और चालू दायित्व, जैसे लेनदार, विभिन्न रिजर्व और फण्ड और रेवेन्यू खाते का बैलैंस आदि, लिखे जाते हैं।

३. रेवेन्यू खाता (Revenue Account) :—व्यापार और हानि-लाभ खाते के स्थान पर रेवेन्यू खाता तैयार किया जाता है। इसमे अवधि की सब रेवेन्यू प्राप्तियाँ और खर्च लिखे जाते है। और इस खाते का बैलैंस नेट रेवेन्यू खाते (Net Revenue Account) मे लाया जाता है जो हानि-लाभ विभाजन खाते के सदृश्य होता है और शेष लाभ का विभाजन दिखलाता है।

४. घटौती और दोहरा खाता पद्धति (Depreciation under the double account system) :—इस पद्धति के अनुसार तैयार की हुई बैलैंस-शीट का मुख्य उद्देश्य यह बतलाना है कि मूल पूँजी किस तरह से खर्च की गई। क्योकि इस पद्धति की प्रयोगकर्त्ता संस्थायें स्थायी प्रकृति और सार्वजनिक उपयोग की होती है और उनको रेवेन्यू से ही कार्य योग्य दशा में बनाये रखना पड़ता है, इसलिये स्थायी सम्पत्ति को पूँजी खाते मे बिना घटौती कम किये हुए दिखाया जाता है। परन्तु घटौती का प्रबन्ध एक घटौती फण्ड की सृष्टि करके किया जाता है। यह फण्ड साधारण बैलैंस-शीट (General Balance Sheet) में ऋणो की तरफ दिखलाया जाता है।

५. मरम्मत और नवीनकरण :—यह खर्चे रेवेन्यू से काट दिये जाते हैं। परन्तु बहुधा इनके लिए रेवेन्यू से काट कर एक मरम्मत और नवीनकरण रिजर्व भी तैयार किया जाता है और यह सब खर्च इसी रिजर्व से कम कर दिये जाते हैं। इस रिजर्व की सृष्टि से रेवेन्यू पर होने वाला सालाना खर्च संतुलित हो जाता है।

६. वृद्धियाँ एवं विस्तार (Additions and Extensions) :—जब कभी नई स्थाई सम्पत्ति खरीदी जाती है तो इस तरह की नई वृद्धि को पूँजी मे परिणत कर लिया जाता है परन्तु जब मूल सम्पत्ति को प्रयोग से हटा दिया जाता है और इसके स्थान पर नवीन सम्पत्ति का निर्माण किया जाता है तो इसकी कीमत दो प्रकार से लिखी जा सकती है।

(अ) यदि इस परिवर्तन से मूल सम्पत्ति मे, जोकि प्रयोग से हटाई गई है, कोई वृद्धि मालूम नहीं होती तो इस परिवर्तन (replacement) की कुल लागत में से घटौती रिजर्व और पुरानी सम्पत्ति के क्रय मूल्य को कम करने के बाद जो रकम रह जाती है वह रेवेन्यू से काट दी जाती है और कोई भी रकम पूँजी मे परिणत नहीं की जाती।

(ब) यदि नयी सम्पत्ति पुरानी सम्पत्ति से अधिक उपयोगी है तो इस परिवर्त्तन (replacement) का अनुमानित मौजूदा मूल्य (present cost) तो रेवेन्यू मे लगा दिया जाता है और नई सम्पत्ति का शेप मूल्य पूँजी में परिणत (capitalise) कर दिया जाता है। हाँ घटौती रिजर्व और पुरानी सम्पत्ति के विक्रय से प्राप्त हुये धन को नये व्यय के उस भाग से घटा दिया जाता है, तो रेवेन्यू से काट (charge) लिया जाता है।

उदाहरण २१४

बम्बई रेलवे लि० के निम्नलिखित अंकों से ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का पूँजी खाता तथा उसी तिथि का साधारण चिट्ठा तैयार कीजिये :—

२१ दिसम्बर १९४९ तक प्राप्ति व खर्च :—स्थायी मार्ग व अन्य सामान ४५,१५,००० रु०; भवन ३०,००० रु०; शक्ति गृह २१,००,००० रु०; रौलिंग स्टॉक ६,००,००० रु०; ६% ऋण-पत्र १५,००,००० रु०; ८% पूर्वाधिकार अंश २०,००,००० रु०; साधारण अंश ३०,००,००० रु०।

१९५० की प्राप्तियाँ व खर्च : स्थायी मार्ग आदि ६,००,००० रु०; शक्ति गृह १,५०,००० रु०; रौलिंग स्टॉक १८,००० रु०, साधारण अंश १५,००,००० रु०।

अन्य सम्पत्ति व दायित्व : संचित कोष १५,००,००० रु०; लेनदार ३,८५,२०० रु०; [illegible] ७,५०,००० रु०; विनियोग १८,००,००० रु०; स्टोर्स व सामान २,८०,००० रु०; रोकड़ बैंक में कुल १५,४२,२०० रु०।

बम्बई रेलवे लि०

३१ दिसम्बर १६५० को समाप्त होने वाले वर्ष का पूँजी खाता

व्यय	३१-१२-४६ तक व्यय	१६५० में व्यय	योग	प्राप्ति	३१-१२-४६ तक प्राप्त	१६५० में प्राप्त	योग
	रु०	रु०	रु०		रु०	रु०	रु०
स्थाई मार्ग	४५,१५,०००	६,००,०००	५१,१५,०००	ऋण-पत्र	१५,००,०००	—	१५,००,०००
भवन	३०,०००	---	३०,०००	पूर्वाधिकार अंश	३०,००,०००	—	३०,००,०००
शक्ति गृह	२१,००,०००	१,५०,०००	२२,५०,०००	साधारण अंश	३०,००,०००	१५,००,०००	४५,००,०००
रौलिंग स्टॉक	६,००,०००	१८,०००	६,१८,०००				
शेष			६,८७,०००				
	७२,४५,०००	७,६८,०००	६०,००,०००		७५,००,०००	१५,००,०००	६०,००,०००

३१ दिसम्बर १६५० को साधारण चिट्ठा

	रु०		रु०
पूँजी खाते का शेष	६,८७,०००	रोकड़ हस्ते व बैंक में	१५,४२,२००
सञ्चिति कोष	१५,००,०००	विनियोग	१८,००,०००
ह्रास कोष	७,५०,०००	रहतिया व संग्रह	२,८०,०००
लेनदार	३,८५,२००		
	३६,२२,२००		३६,२२,२००

उदाहरण २१५

३१ दिसम्बर १६५० को हिन्दुस्तान इलैक्ट्रिक सिटी सप्लाई क० लि० की पुस्तकों में निम्न शेष थे :—

	रु०		रु०
यन्त्र	१२,६०,०००	शक्ति उत्पादन की लागत	६०,०००
अंश पूँजी	१०,००,०००	वितरण की लागत	१०,०००
ऋण-पत्र	५,००,०००	स्थापन खर्चे	३४,०००
भूमि व भवन	२,५०,०००	ह्रास	४०,०००
विविध देनदार	८१,०००	शक्ति की विक्री	२,५६,०००
मुख्य लाइने (Mains)	५,०२,०००	मीटरों का किराया	१४,०००
विविध लेनदार	२,०००	ऋण-पत्रों का व्याज	३५,०००
ह्रास खाता	५,००,०००	माल खाता (क्रे०)	३०,०००
संग्रह	१६,०००	रोकड़ बैंक में	१४,०००

१६५० में राशियों में निम्न वृद्धि हुई : यन्त्र ३०,००० रु०; भूमि व भवन १०,००० रु० मुख्य लाइने १,०२,००० रु० । १६५० वे वर्ष में अंश पूँजी का पाँचवा भाग बढाया गया ।

उपर्युक्त सूचना से कम्पनी का पूँजी खाता, साधारण चिट्ठा, आगम खाता व कुल आगम खाता तैयार कीजिये ।

हिन्दुस्तान इलैक्ट्रिसिटी सप्लाई कं० लि०

आगम खाता

	रु०		रु०
शक्ति-उत्पादन की लागत	६०,०००	शक्ति की विक्री	२,५६,०००
वितरण की लागत	१०,०००	मीटरों का किराया	१४,०००
स्थापन खर्चे	३४,०००		
ह्रास	४०,०००		
शेष कुल आगम खाते को ले जाया गया	१,२६,०००		
	२,७०,०००		२,७०,०००

कुल आगम खाता

	रु०		रु०
ऋण-पत्रों पर व्याज	३५,०००	शेष आ/ला	३०,०००
शेष (चिट्ठे को ले जाया गया)	१,२१,०००	शेष नी/ला आगम खाते से	१,२६,०००
	१,५६,०००		१,५६,०००

पूँजी खाता

व्यय	३१-१२-४६ तक व्यय	१६५० में व्यय	योग	प्राप्ति	३१-१२-४६ तक प्राप्त	१६५० में प्राप्त	योग
	रु०	रु०	रु०		रु०	रु०	रु०
भूमि व भवन	२,४०,०००	१०,०००	२,५०,०००	अश पूँजी	८,००,०००	२,००,०००	१०,००,०००
यन्त्र	१२,३०,०००	३०,०००	१२,६०,०००	ऋण-पत्र	५,००,०००	—	५,००,०००
मुख्य लाइनें	४,००,०००	१,०२,०००	५,०२,०००	शेष			५,१२,०००
			२०,१२,०००				२०,१२,०००

चिट्ठा ३१ दिसम्बर १६५०

	रु०		रु०
विविध लेनदार	२,०००	पूँजी खाता	५,१२,०००
ह्रास खाता	५,००,०००	संग्रह	१६,०००
कुल आगम खाता	१,२१,०००	विविध देनदार	८१,०००
		बैंक में रोकड़	१४,०००
	६,२३,०००		६,२३,०००

उदाहरण २१६

१८७५ में बनाये गये एक रेलवे स्टेशन की लागत २,००,००० रु० थी, परन्तु उसको मौलिक रूप में बदलने की लागत ३,००,००० रु० होगी। नगर की उन्नति के कारण पुराने स्टेशन को गिराकर एक नया विशाल स्टेशन बनाने का निश्चय किया गया। कार्य करने के लिये ७,००,००० रु० का टेण्डर स्वीकृत किया गया तथा पुराने सामान की बिक्री से १०,००० रु० प्राप्त हुए।

बतलाइये कि व्यय पूँजी व आगम (Revenue) में किस प्रकार विभाजित होगा व उसके परिणाम की प्रविष्टियाँ अन्तिम खातों में किस प्रकार दिखाई जायेगी।

	रु०
प्रारम्भिक आकृति में पुनर्स्थापन की वर्तमान लागत	३,००,०००
घटाई पुराने सामान की विक्रय राशि	१०,०००
आगम में लिखी जाने वाली राशि	२,६०,०००
पूँजी में लिखी जाने वाली राशि	४,००,०००
पुनर्निर्माण की लागत	६,६०,०००

अंतिम खातों में इसके परिणाम की प्रविष्टि निम्न प्रकार होगी:—

पूँजी खाता

	३१-१२-४६ तक व्यय	१६५० में व्यय	योग
	रु०	रु०	रु०
भवन	२,००,०००	४,००,०००	६,००,०००

२. बही रहित हिसाब-खाता (Book-keeping without Books)—ढीले पन्नो (loose leaf) वाली या कॉर्ड खाता बही (card ledger) हिसाब पद्धति को ही बिना बहियों वाली हिसाब पद्धति कहते हैं। यह पद्धति मशीनो के आगमन के साथ पाश्चात्य देशों मे बहुत अधिक प्रचलित हो रही है।

ढीले पन्नो वाली खाता बही मे साधारण बन्द-खाता बही की तरह से बहुत सी लाइनदार ढीली शीटें होती हैं और ये शीटें इच्छानुसार निकाली या वापिस बाइन्डर (binder) मे लगाई जा सकती हैं। ये शीटें छपी हुई और अंकित होती हैं। जब ये दी जाती है तो किस तिथि पर और किस व्यक्ति को दी गई, इसका लेखा रखा जाता है। जब एक शीट भर जाती है तो खाता दूसरी शीट पर शुरू कर दिया जाता है और जब कोई खाता बन्द हो जाता है तो इस खाते की शीटें निकाल कर अलग रख दी जाती हैं।

इन शीटो को भौगोलिक, वर्णमाला या किसी अन्य सिद्धान्न के अनुसार रखा जा सकता है।

यही सिद्धान्त कार्डो के साथ लागू होता है परन्तु कार्ड बाइन्डर के बजाय ट्रे मे रखे जाते हैं। बहुत सी जगह दो बाइन्डर या दो ट्रे रखे जाते है, एक तो चालू खातो के लिए और दूसरे बन्द खातों के लिए।

लाभ .—इस पद्धति मे एक साथ बहुत से क्लर्क कार्य कर सकते हैं। इसमे सूची (index) रखने की आवश्यकता नहीं है क्योकि कार्ड या शीट सूची के रूप में ही रखे जाते है। इस खाता बही मे बन्द हुये खाते नहीं रहत क्योकि वह अलग से एकत्रित करके रख दिये जाते हैं। नयी खाता बही खोलने की सब कठिनाइयाँ दूर हो जाती है। हरएक खाता लगातार चलता ही रहता है और खाता बही के अलग-अलग पन्नो में बिखरा नहीं रहता।

दोष :—कार्ड या शीट दुर्घटना से या जान-बूझकर नष्ट की जा सकती है। नई जाली शीटें या कार्ड सच्चे कार्डो के स्थान पर रखे जा सकते हैं।

सावधानियाँ :—ढीली पन्नो वली और कार्ड खाता बहियो के दोष निम्न प्रकार दूर किये जा सकते है .—

१. कोरी शीटो और कार्डों का स्टॉक किसी एक विशेष उत्तरदायित्व वाले व्यक्ति के पास रहना चाहिए जो इनके लेने और देने का पूरा-पूरा लेखा रखे।

२ प्रत्येक क्लर्क अपनी खाता-बही को लिखने व उचित ढंग से रखने का पूर्ण उत्तरदायी बना दिया जाय। अन्य कोई व्यक्ति उसमे लेखा न करे।

३. खाता बही लिखने वाले क्लर्कों को एक समय विशेप के पश्चात् बदल देना चाहिए और किसी भी क्लर्क को एक खाता बही पर बहुत दिनों तक नहीं रहने देना चाहिए।

४. ग्राहकों को हिसाब-लेखे समय-समय पर भेज देना चाहिए; परन्तु ये खाता बही लिखने वाले व्यक्ति द्वारा तैयार नही कराने चाहिए।

५. जिन खातो के रुपये अभी तक लेने बाकी हैं उनकी सूची समय-समय पर व्यापार के स्वामी को या और किसी अन्य उत्तरदायी व्यक्ति को दे देनी चाहिए।

३. स्कम्भीय बही खाता (Tabular Bookkeeping) .—स्कम्भीय बहीखाता कोई नई पद्धति नही है। यह वह पद्धति है जिसके अनुसार प्रारम्भिक बहियो और खाता बहियो में कुछ खाने उनमे दी गई प्रविष्टियाँ विश्लेपण करने के लिये रखे जाते हैं जिससे समय-समय पर विश्लेपण और सारांश तैयार करने की आवश्यकता बच जाय। इस प्रणाली से समय और मेहनत दोनो ही की बचत होती है। परन्तु ये खाने इतने अधिक नहीं होने चाहिए कि ये बहियों में भी न समा सके। अधिक खाने बजाय सहायक होने के अड़चन पैदा करने लगेगे।

स्कम्भीय प्रारम्भिक बहियाँ :—यह पद्धति क्रय बही, रोकड़ बही, विक्रय बही आदि बहियो के लिए अपनाई जा सकती है। इनके उदाहरण अध्याय ७, ८ और १७ में दिये गये हैं।

स्कम्भीय खाता बहियाँ :– जब एक ही प्रकृति के लेन-देन खातो मे लिखने हो तो इस पद्धति को अपनाया जा सकता है, जैसे कॉलेज का फी रजिस्टर। इसका नमूना अध्याय १६ मे दिया गया है।

प्रश्न

१. दोहरा खाता पद्धति (Double Accounts System) तथा द्वि प्रविष्टि पद्धति (Double Entry System) मे क्या अन्तर है ? कौन सी कम्पनियाँ प्रथम पद्धति का प्रयोग करती हैं ?

२. संक्षेप मे दोहरा खाता पद्धति की, इकहरा खाता या साधारण व्यापारिक खाते से तुलना करते हुये विशेष बाते बताओ।

३. उन कम्पनियों मे जिनके खाते दोहरा खाता पद्धति के अनुसार प्रकाशित होते हैं सम्पत्ति के क्षय (wastage) के लिये आयोजन करने के हेतु क्या नियम प्रचलित है ? यदि ऐसा कोई आयोजन किया जाता है तो उसे प्रकाशित खातों मे साधारणतया किस प्रकार दिखाते हैं ?

४. एक पुराने यन्त्र के स्थान पर एक नया यन्त्र लगाने के मामले मे दोहरा खाता पद्धति व इकहरा खाता या साधारण व्यापारिक खाता पद्धति के व्यवहारों मे क्या अन्तर है ?

५ दोहरा खाता पद्धति के अन्तर्गत आप निम्न का क्या व्यवहार करेंगे ?—(अ) स्थायी सम्पत्ति का ह्रास (ब) मरम्मत व नवकरण (स) स्थायी सम्पत्ति मे वृद्धि (द) निर्गमित अशों पर प्रव्याजि (य) प्रारम्भिक खर्चे।

६ ढीले पन्नों की खाता बही से आप क्या समझते हैं ? पन्नों के सम्बन्ध में छल-कपट को दूर करने के लिए आप क्या सावधानी रखेंगे ?

७. संक्षेप में पुस्तपालन की सारिणी पद्धति (Tabular System of Book-keeping) का अर्थ बतलाइये तथा एक खाता बही अनुमान से या एक मौलिक प्रविष्टि की पुस्तक लाइने खींचकर स्पष्टीकरण कीजिये।

अध्याय २७

हिन्दुस्तानी बहीखाता

हमारे देश मे लिमिटेड कम्पनियो की संख्या निजी व्यापार की तुलना में बहुत कम है। देश के अधिकतर निजी व्यापार का हिसाब 'बहीखाता' प्रणाली द्वारा रखा जाता है, यहाँ तक कि कुछ लिमिटेड कम्पनियाँ भी अपना हिसाब 'बहीखाता' प्रणाली द्वारा ही रखती हैं। भारतीय कम्पनी एक्ट लिमिटेड कम्पनियो को अपने हिसाब अँग्रेजी विधि द्वारा रखने के लिये बाधित नहीं करता।

क्योकि भारत मे अधिकांश व्यापारी अपने हिसाब भारतीय विधि से रखते हैं इसलिये भारतीय विधि हमारे लिए अँग्रेजी विधि से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। इन्हीं कारणों से विविध बोर्डों तथा विश्वविद्यालयों के बुककीपिंग पाठ्यक्रम मे वहीखाता प्रणाली भी रखी जाने लगी है। हमारे विश्वविद्यालयों मे यदि वाणिज्य विद्यार्थियो को इस प्रणाली का व्यावहारिक ज्ञान सिखाना सम्भव नहीं है तो कम से कम उनको सैद्धान्तिक ज्ञान तो सिखाया जा सकता है। बहीखाता प्रणाली नि:सन्देह भारतीय व्यापारिक तरीको का ही अंग है।

बहीखाता —देशी बहीखाता रखने की प्रणाली अँग्रेजी प्रणाली के समान ही पूर्ण है और कुछ अंशो मे यह अँग्रेजी प्रणाली से अधिक सरल और विचारयुक्त है। करोड़ों रुपये का व्यापार करने वाली फर्म देशी बहीखाता प्रणाली द्वारा सुचारु रूप से हिसाब रखती हैं।

देशी बहीखाता प्रणाली अंग्रेजी प्रणाली की तरह ही दोहरी पद्धति पर आधारित है और अँग्रेजी प्रणाली को जानने वाला कोई भी व्यक्ति देशी प्रणाली का ज्ञान चन्द दिनों में प्राप्त कर सकता है।

हिसाब की किताबें

अँग्रेजी प्रणाली की तरह वहीखाता भी तीन भागों में विभक्त किया गया है। प्रथम प्रारम्भिक लेखे, द्वितीय खाता-वही तथा तृतीय अन्तिम खाते। वहीखाते मे भी जमा व नाम (Credit and Debit) के नियम अँग्रेजी प्रणाली की तरह ही होते हैं। हिसाब रखने की किताबें वही कहलाती है। वही मे लम्बे-लम्बे मजबूत कागज लगे होते हैं जिनके ऊपर लाल कपड़े की जिल्द चढ़ी रहती है। यह एक सिरे पर मजबूती से सिले रहते है। बही के कागजों पर लाइनें खिंची हुई नहीं होती। सिलने से पहले इसके कागजों को ८ भागों मे मोड़ दिया जाता है जो लाइनो का काम करते हैं। बही का बायाँ अर्धभाग 'जमा' पक्ष (Credit Side) और दाहिना अर्धभाग 'नाम' पक्ष (Debit Side) कहलाता है। वही मे हिसाब लिखने को जमा-खर्च करना कहते हैं। वही के एक कोरे पन्ने का उदाहरण नीचे दिया गया है।

जमा				नाम			
१	२	३	४	१	२	३	४
सिरा	पेटा			सिरा	पेटा		

प्रत्येक पक्ष के चार खाने होते हैं जिन पर क्रमशः १, २, ३ तथा ४ लिखे हुए होते हैं। पहिले खाने को सिरा तथा दूसरे, तीसरे व चौथे को पेटा कहते हैं। सिरे के खाने मे हर नकल की धन राशि लिखी जाती है तथा पेटे के खानों मे उस रकम से सम्बन्धित लेखों का विवरण लिखा जाता है। वही-खाते भारत की सभी भाषाओ जैसे हिन्दी, उर्दू, मराठी, गुजराती, गुरमुखी आदि में रक्खे जाते हैं; परन्तु उत्तरी भारत मे वही खाते मुड़िया अर्थात् हिन्दी मुण्डी अथवा सर्राफी मे ही रक्खे जाते हैं। यह भाषा बहुत सुगमता से लिखी जा सकती है तथा इसे लेखक के अतिरिक्त अन्य पुरुष के लिये पढ़ना प्राय कठिन हो जाता है। अतः कुछ अंश तक इस भाषा मे लिखे गए हिसाब गोपनीय होते हैं।

प्रारम्भिक लेखे की वही—अँग्रेजी प्रणाली मे हर धनराशि केवल एक बार ही प्रारम्भिक लेखे की बहियो में लिखी जाती है परन्तु बहीखाते मे धन-राशियों को, जो कि ज्यादा महत्वपूर्ण होती हैं, कई बार लिखा जाता है। बहीखाते में प्रारम्भिक लेखे की मुख्य बहियाँ निम्नलिखित है :—

(अ) बन्द (आ) कच्ची रोकड़ बही (इ) पक्की रोकड़ बही (ई) जमा नकल बही (उ) नाम नकल बही।

प्रारम्भिक लेखे की बहियो की संख्या व्यापार के परिमाण पर निर्भर रहती है। जैसे—(१) छोटे व्यापारी के लिये एक कच्ची रोकड़ बही तथा एक पक्की रोकड़ बही ही काफी हो सकती हैं, जिनमे वह सब सौदे चाहे उधार हों या नकद हों लिख सकता है। (२) दूसरे व्यापारी के लिए एक रोकड़ बही ही बहुत हो सकती है जिनमे वह सब सौदे लिख सकता है।

(अ) बन्द यह बही रद्दी तथा सस्ते कागजो की बनाई जाती है और प्राय इसके साथ एक पेंसिल बँधी रहती है। प्रत्येक नकद सौदा जिस समय वह हो उसी समय इस बही में लिख दिया जाता है ताकि वह छूट न जाय। बड़े व्यापार-गृह में दो या अधिक बन्द बहियाँ भी रखते हैं। बन्द की धन राशियाँ प्रतिदिन कच्ची रोकड़ बही में लिख दी जाती हैं। बन्द में भी खाता बही की तरह जमा तथा नाम पक्ष होते है और प्रत्येक सौदा यथास्थान लिख दिया जाता है।

(आ) *कच्ची रोकड़ बही* :—यह प्रारम्भिक लेखों की बहियों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। जिस व्यापारी के यहाँ नकल की बहियाँ नहीं रक्खी जाती हैं वह व्यापारी सब सौदे इसी बही में लिखता है। उधार सौदे दोनों पक्षो में लिखे जाते हैं। जैसे—आशाराम को ५००) का माल उधार बेचा, यह सौदा इस प्रकार लिखा जावेगा—जमा पक्ष में ५००) बिक्री द्वारा प्राप्त तथा नाम पक्ष में ५००) आशाराम को दिये। इस प्रकार की रोकड़ बही रोजनामचा का ही काम करती है। कुछ व्यापारी तो अपनी कच्ची रोकड़ बही को रोजनामचा ही कहते हैं।

रोकड़ बही के पन्नों में भी खाता बही की तरह ही खाने होते हैं यथा चार जमा पक्ष में तथा चार नाम पक्ष मे। पहिले खाने में सौदे की कुल धनराशि, दूसरे खाने मे सौदे के अंगों की धन राशि तथा तीसरे व चौथे खाने में सौदे का विवरण दिया जाता है। प्रत्येक दिन रोकड़ बही में नये पन्ने से सौदे लिखे जाते हैं। सौदे लिखने से पहले पन्ने के ऊपर संक्षिप्त प्रार्थना तथा दिन, तारीख व साल (प्राय. संवत् व सन् दोनों) लिख दिए जाते हैं।

दिनभर के नकद लेन-देन रोकड़ बही में क्रमशः जमा व नाम पक्षों में लिख दिए जाते हैं। दिन के अन्त में रोकड़ बही की बाकी निकाल ली जाती है। यह बाकी खजांची की नकद धनराशि से मिलाई जाती है अगर यह बाकी नकद धनराशि से नहीं मिलती तब अवश्य ही या तो बही अथवा नकद धन मे कुछ गड़बड़ हुई है।

खतियाना :—कच्ची रोकड़ बही की रकमें खाता बही में खतिया दी जाती है। कच्ची रोकड़ बही से खाता बही में रकमें उसी पक्ष में खतियाई जाती हैं जिस पक्ष में वे पहिले होती हैं। इस प्रकार रोकड़ बही से जमा व नाम पक्ष की रकमें क्रमशः खाता बही में उचित खाते की जमा व नाम पक्ष में खतियाई जावेंगी।

अँग्रेजी प्रणाली मे यह बात नहीं है, उसमे इसके विपरीत बात है। अँग्रेजी प्रणाली मे कैश-बुक के डेबिट पक्ष की रकम लेजर में उचित एकाउन्ट के क्रेडिट पक्ष मे खतियाई जावेगी।

बाकी निकालना—दिन के अन्त मे कच्ची रोकड़ बही की बाकी निकाल ली जाती है। बाकी निकालने से पहिले दोनो पक्षों का जोड़ लिख लिया जाता है, फिर नाम पक्ष मे बाकी की धनराशि लिखकर उसका दोबारा जोड़ लगा दिया जाता है जो जमा पक्ष के जोड़ के बराबर होता है। ये जोड़ एक ही लाइन मे नहीं लिखे जाते वरन् जहाँ होते हैं वहीं रहते हैं।

टिप्पणी:—अगर कोई सौदा पूरा तय नहीं हुआ परन्तु धन दे दिया गया हो तो वह धन बन्द मे तो लिखा जावेगा परन्तु कच्ची रोकड़ बही मे तब तक नहीं लिखा जावेगा जब तक कि वह सौदा पूरा तय न हो जावे। इस बीच में वह धनराशि श्री रोकड़ की बाकी ही समझी जावेगी। यथा एक व्यापारी अपने मुनीम को ५,०००) देकर दिसावर माल खरीदने भेजता है। यह धनराशि बन्द में लिख ली जावेगी परन्तु कच्ची रोकड़ बही मे तब तक नहीं लिखी जावेगी जब तक मुनीमजी लौटकर रुपयो का हिसाब नहीं देते। इस बीच में यह धनराशि श्री रोकड़ बही की बाकी का ही भाग समझी जावेगी।

निम्नलिखित उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो जावेगी कि कच्ची रोकड़ बही किस प्रकार लिखी जाती है तथा किस प्रकार इसकी बाकी निकाली जाती है:—

रोकड़ पन्ना २१

श्रीगणेशजी सदासहाय श्री सं० २००६ मिती बैसाख बदी ७ बुधवार ता० १६ अप्रेल सन् १६५२ ई०।

जमा	नाम
१२२४।=) श्री रोकड़ बाकी रहे जमा	४२५) सुन्दरलाल नेमीचन्द बम्बई वाले के नाम
५०।) रामप्रसाद नानकचंद बेलनगंज वाले के जमा	४२५) रोकड़ी मा० केशवदास
५०।) रोकड़ी मा० रामप्रसाद	१२२≡) श्री माल खाते नाम
१०२≡) गोपालदास रामप्रसाद किनारी बाजार वाले के जमा	१२२≡) रोकड़ी नरायनप्रसाद रामजसमल को दीने मा० ताराचन्द चावल बोरे ७ मन १४।ऽ५ दर ८॥)
१०२≡) रोकड़ी मा० चुन्नीलाल	१॥-) श्री खर्च खाते नाम
२६) श्री माल खाते जमा	१॥-) मजदूरी खेरीज खर्च
१६।=) रोकड़ी चावल बोरी १	
६॥=) रोकड़ी गेहूँ बोरा १	
	५४८॥।)
२६)	८५४-) श्री रोकड़ बाकी रहे
१४०२॥।-)	१४०२॥।-)

(इ) *पक्की रोकड़ बही*.—जहाँ कच्ची व पक्की दोनों रोकड़ बहियाँ रखी जाती हैं वहाँ यह नहीं सोचना चाहिए कि कच्ची रोकड़ बही से कच्चा काम लिया गया है। यह एक मुख्य बही है जिससे प्रतिदिन धन का मेल कर लिया जाता है तथा खाता वहीं लिखी जाती है।

पक्की रोकड़ बही कच्ची रोकड़ बही से ही लिखी जाती है। पक्की रोकड़ बही कच्ची रोकड़ बही की साफ नकल है तथा इसमें रकमो का सारांश होता है, यथा—एक मनुष्य को एक दिन में तीन बार रुपये दिए तो यह कच्ची रोकड़ बही में तीन बार लिखा जावेगा परन्तु पक्की रोकड़ बही मे एक ही जगह

लिखे जावेंगे। पक्की रोकड़ वही मे नकल करते समय विवरणों को अच्छी प्रकार से लिख लिया जाता है।

उदाहरण २१७

मिति पौष वदी १० संवत् २००६ सोमवार १५ जुलाई, १९५२ को मोहनदास एण्ड ब्रदर्स की रोकड़ बाकी ५००) थी। उस दिन निम्न सौदे हुए—

४२०) की दाल अरहर २०ऽ दर २१) मन शंकरलाल मुरारीलाल से खरीदी। ८ खाली बोरों की कीमत १०) लगायी। १) तुलाई व पल्लेदारी दी।
२००) की खाली बोरी नग २०० दर १) की बोरी से विजय एण्ड सन्स से वापिस आई।
३७०) के नकद चने बेचे ३७ऽ दर १०) प्रति मन।
१००) सरूप एण्ड ब्रदर्स से पुराने हिसाब के रोकड़ा प्राप्त हुए।
५५) व्याज के अमृत इलेक्ट्रिक स्टोर से प्राप्त हुए।
२२०) आय-कर बावत साल १९५२ के चुकाये।
१०,०००) के चावल २५०ऽ दर ४०) फी मन श्याम एण्ड राम लखनऊ वालों के बेचे जिसमें ५०) आढ़त मिली इसमें व्यय हुआ—
तुलाई ॥) किराया गोदाम ५) ठेला व ढुलाई ॥=)
१००) श्री मूलसिंह को उधार दिए।
१५०) मुनीमों को वेतन दिया।
४।) डाक व्यय हुआ।
३०) दुकान का जुलाई का किराया चुकाया।
१०००) रुपये की अरहर १०० मन दर १०) प्रति मन आढ़त पर बेची जिस पर ५% आढ़त मिली।

उपर्युक्त व्यवहारों को मोहनदास एण्ड ब्रदर्स की रोकड़ वही में लिखो।

रोकड़ वही — पन्ना ९६

श्री गणेशजी सदा सहाय श्री शुभ संवत् २००६ मिती पोष वदी १०, सोमवार तारीख १५ जुलाई सन् १९५३ ई०।

५००) श्री रोकड़ बाकी जमा
५००) श्री रोकड़ रहे।

---

४३१) शंकरलाल मुरारीलाल के जमा
४२०) की दाल अरहर २०ऽ दर २१) प्रति मन से खरीदी।
१०) बोरे खाली ८ दर १।)
१) तुलाई व पल्लेदारी

४३१)

---

२००) विजय एण्ड सन्स के जमा
२००) खाली बोरे २०० दर १) प्रति बोरा वापिस आए।

---

३७०) श्री माल खाते जमा
३७०) के चने ३७ऽ दर १०) प्रति मन से बेचे।

४२१) श्री माल खाते नाम
४२०) अरहर की दाल २०ऽ दर २१) प्रति मन से शंकरलाल मुरारीलाल से खरीदी।
१) तुलाई व पल्लेदारी में खर्च हुआ।

४२१)

---

२१०) बारदाना खाते नाम
२००) बोरी नग २०० विजय एण्ड संस से वापिस आई।
१०) बोरी नग ८ अरहर की दाल में आई।

२१०)

---

२२०) आय-कर खाते के नाम
२२०) वर्ष का आय कर दिया

१००) सरूप एण्ड ब्रदर्स के जमा
१००) पुराने हिसाब के प्राप्त हुए।

५५) व्याज खाते जमा
५५) अमृत इलेक्ट्रिक स्टोर से व्याज के आए।

१०,०००) श्याम एण्ड राम लखनऊ वालों के जमा
१००००) चावल २५०ऽ दर ४०) फी मन से बेचे।

१००) आढ़त खाते जमा
५०) वावत विक्री चावल २५०ऽ दर ४०) प्रति मन ॥) सैकड़ा
५०) वावत विक्री अरहर १००ऽ दर १०) प्रति मन पर ५% की दर से।

१००)

११७५६)

५६=) श्याम एण्ड राम के नाम
५०) आढ़त विक्री चावल २५०ऽ दर ४०) फी मन से बेचे।
५) किराया गोदाम
॥) तुलाई
॥=) ढुलाई व ठेला व्यय

५६=)

१००) मूलसिंह के नाम
१००) रोकड़ा उधार दिए

१५०) वेतन खाते के नाम
१५०) वेतन मुनीमो को दिया

४।) विविध व्यय खाते नाम
४।) डाक टिकट पर खर्च हुआ

३०) किराया खाते नाम
३०) दुकान का 'पौप' मास का किराया दिया।

११६१।=)
१०५६४॥=) श्री रोकड़ वाकी रहे।

११७५६)

(ई) *जमा नकल वही (जमा जाकड या बीजक वही)* —यह वही उधार क्रय लिखने के काम आती है। इसमें जमा व नाम के पक्ष नही होते। इसमें प्राय: ६ खाने होते हैं। नीचे जमा नकल वही का एक उदाहरण दिया जाता है।

उदाहरण २१८

रघुवश नारायण महेश नारायण ने मिती वैसाख सुदी २ सम्वत् २०१० वि० सोमवार तारीख २५ मई सन् १९५३ ई० को निम्न माल उधार खरीदा :—

गोपीराम रामचन्द कलकत्ते वालों से—

चावल रंगूनी वोरा १२५ मन ३००ऽ वाद वारदाना ३ऽ५ वाकी २९६।।।ऽ५ दर ७) रुपया की दर से।
१२५ वोरे खाली दर ३० रुपये सैंकड़ा।
मजदूरी २७॥-)॥, विल्टी ।।।), चिठ्ठी रजिस्ट्री।-) आढत १०।।।≡)॥, धर्मादा १—)॥

रामगोपाल रामकिशनदास मेरठ वालों से—

गुड़ वोरा ५१ मन १०२ऽ दर ४) प्रति मन, ५१ वोरे खाली दर २७) सैंकड़ा।
विल्टी।), मजदूरी ४।।।)॥, चिट्ठी रजिस्ट्री।-) आढ़त ३≡)॥ धर्मादा।)।

उपर्युक्त व्यवहारों को श्री रघुवंश नारायण महेश नारायण की जमा नकल वही में लिखो।

जमा नकल वही

श्री गणेशजी सदा सहाय श्री शुभ संवत् २०१० मिती वैसाख सुदी २ सोमवार ता० २५ मई सन् १९५३ ई०।

२५८६॥≡) श्री माल खाते नाम

२१५६।–)॥ गोपीराम रामचन्द कलकत्ते वाले के जमा

२०७८≈) चावल रंगूली बोरा १२५ मन ३००ऽ बाद बारदाना ३ऽ५ बाकी २६६।।ऽ५ दर ७)

३७॥) बोरा खाली १२५ दर ३०) सै०

२८॥≈)॥ मजदूरी बिल्टी चिट्ठी रजिस्ट्री

२७॥–)॥ ।।।) –)

२१४४।)॥

१२–) आढ़त धर्मादा

१०॥≡)॥ १–)॥

२१५६।–)॥

४३०॥–)॥ रामगोपाल रामकिशनदास मेरठ वाले के जमा

४०८) गुड़ बोरा ५१ मन १०२ऽ दर ४)

१३॥।)। बोरा खाली ५१ दर २७) सै०

५।–)॥ बिल्टी मजूरी चिट्ठी रजिस्ट्री

।) ४।।।)॥ ।–)

४२७–)।।।

३।≡,।।। आढ़त धर्मादा

३≡)॥ ।)।

४३०॥–)॥

२५८६॥।≡)

खतियाना :—समस्त वैयक्तिक प्रविष्टि जो कि जमा वही में होती है खाता वही के जमा पक्ष में लेनदारों के खातों मे खतिया दी जाती है, और उनका जोड़ माल खाते के नाम पक्ष में चला जाता है। प्राय क्रय विक्रय आदि के लिए पृथक् खाते नहीं खोले जाते हैं वरन् केवल एक खाता (माल खाता) ही खोला जाता है।

(ङ) नाम नक़ल वही (नाम जाकड़ या विक्री वही) .—यह वही उधार विक्रय लिखने के लिए रखी जाती है इस वही में विवरण लिखने के लिए तक पट्टी (बेचे माल की नाप तौल लिखने वाली वही) से विवरण लिखा जाता है।

यह वही भी जमा नकल वही की तरह ही लिखी जाती है। नीचे नाम नक़ल वही का एक उदाहरण दिया हुआ है।

उदाहरण २१६

सर्व श्री रामप्रसाद हरप्रसाद ने मिती वैसाख वदी ७ सवन् २००६ दिन बुधवार तारीख १६ अप्रैल सन १६५२ ई० को निम्न माल उधार बेचा—

रामकुमार किशनस्वरूपजी मथुरा वालों को—

चावल बोरा ११ मन २२।०६ बाद बारदाना ।=१ बाकी २२०८ दर ८) फी मन।

खाली बोरे नग ११ दर ।) प्रति बोरा।

तुलाई ।।।=) बट्टे)।।।

रामचन्द्र रामगोपाल नूरीदरवाजे वालों को—
चावल बोरा ५ मन ११।ऽ६। बाद बारदाना ऽ५ बाकी ११।ऽ१। दर ८।) फी मन।
खाली बोरे नग ५ दर ।) प्रति बोरा।
तुलाई ।≥)। बाँट)॥
उपर्युक्त उधार बिक्री को नाम नकल बही में लिखो।

नाम नकल बही पन्ना १०८

श्री गणेशजी सदासहाय श्री सं० २००६ मिती बैसाख बदी ७ बुधवार ता० १६ अप्रेल सन् १६५२ ई०।

२७६–) श्री माल खाते जमा

१८१।)। रामकुमार किशनस्वरूप मथुराजी वाले के नाम
१७७।–)॥ चावल बोरा ११ मन २२।ऽ६ बाद बारदाना ।ऽ१ बाकी रहा २२ऽ८ दर ८)
२॥) बोरा खाली नग ११
॥।=)॥ तुलाई बाँट
॥।=))॥
१८१।)।

६४॥)॥ रामचन्द्र रामगोपाल नूरीदरवाजे वाले के नाम
६३–) चावल बोरा ५ मन ११ऽ६। बाद बारदाना ऽ५ बाकी ११।ऽ१। दर ८।) मन
१॥≥)॥ बोरा खाली ५ तुलाई बाँट
१।) ।≥)।)॥
६४॥)॥
२७६–)

खतियाना।—सारी वैयक्तिक प्रविष्टियाँ जो नाम नकल बही मे होती हैं खाता बही मे नाम पक्ष मे ग्राहकों के खाते मे खतिया दी जाती हैं और इसका जोड़ माल खाते के जमा पक्ष मे चला जाता है।

उदाहरण २२०

मैसर्स राजकुमार ब्रदर्स एण्ड कम्पनी की जनवरी २, सन् १६५१ ई० मिती चैत्र सुदी २ संवत् २००८ दिन सोमवार को १७०) रोकड़ बाकी थी। उस दिन निम्नलिखित सौदे हुए—

५०) ला० दौलतराम से नक्द आए
१००) मलमल नम्बर ६२, थान ५ दर २०) प्रति थान से रोकड़ा बेची।
२५०) बनारसी साड़ी नं० ५०, नग २, दर १२५) प्रति साड़ी रोकड़ा खरीदीं।
८००) गाँठ छींट नम्बर १०५, नग १ थान ४० दर २०) प्रति थान से लाला दीनानाथ से उधार खरीदी।
४००) लट्ठा नम्बर ५ थान २० दर २०) प्रति थान सोहनलाल को उधार बेचा।
२५०) लाला जयप्रकाश को पिछले हिसाब में दिये और नक्द कटौती मिली १०)।
३८०) लट्ठा नम्बर ८५ थान नग १६ दर २०) फी थान से लाला जगदीशशरण सन्तोषकुमार को उधार बेचा।
५००) डोरिया नम्बर १०० थान २० दर २५) बिरला मिल्स से खरीदा, इसके लाने में १०) रेल भाड़े मे नक्द व्यय किए।

२००) वायल रंगीन 'रजपूती' थान १० दर २०) प्रति थान लाला सन्तोषप्रकाश चन्द्रप्रकाश से उधार खरीदी।
११०) वायल रंगीन 'रजपूती' थान ५ दर २२) प्रति थान से इवादुल्ला खाँ को उधार बेची।
१२०) इलाहाबाद बैंक में जमा किये।
२४०) लोहे की तिजोरी नग १ रोकड़ा खरीदी।
१००) इवादुल्ला खाँ से रोकड़ा प्राप्त हुए, ५) नकद कटौती दी।
१५) बैंक से ब्याज के आए।
५) फर्नीचर की मरम्मत में दिए।
२०) दुकान का किराया दिया।
१०) निजी खर्च के लिये रोकड़ा घर ले गये।
२०) यात्रा व्यय हुआ।
५०) मुनीम का वेतन दिया।
५) विविध व्यय हुआ।
५५०) लाला रनजीतसिंह राजेन्द्रसिंह से रोकड़ा उधार लिए।
५०) बैंक से निकाले।

उपर्युक्त व्यवहारों को प्रारम्भिक लेखे की बहियों अर्थात् रोकड़ बही, जमा नकल बही एवं नाम नकल बही में अंकित करो।

रोकड़बही पन्ना १५

श्री गणेशजी सदा सहाय श्री शुभ संवत् २००८ मिती चैत्र सुदी २ दिन सोमवार तारीख २ जनवरी १९५१ ई०।

जमा	नाम
१७०) श्री रोकड़ बाकी जमा १७०) श्री रोकड़ा थे।	२५०) श्री माल खाते नाम २५०) बनारसी साड़ी नग २ दर १२५) प्रति साड़ी रोकड़ा खरीदी।
५०) दौलतराम के जमा ५०) दौलतराम से रोकड़ा प्राप्त हुए।	२६०) जयप्रकाश के नाम २६०) रोकड़ा दिए २५०) कटौती मिली १०)
१००) श्री माल खाते जमा १००) मलमल नं० ६२ थान ५ दर २०) प्रति थान से रोकड़ा बेची।	१०) रेल भाड़ा खाते नाम १०) डोरिया नं० १०० थान २० दर २५) के लाने में नकद रेल भाड़ा दिया।
१०) कटौती खाते जमा १०) नकद कटौती मिली जयप्रकाश से	१२०) इलाहाबाद बैंक खाते नाम १२०) रोकड़ा बैंक मे जमा किए।
१०५) इवादुल्ला खाँ के जमा १०५) रोकड़ा प्राप्त हुए १००) कटौती दी ५)	२४०) तिजोरी खाते नाम २४०) लोहे की तिजोरी नग १ खरीदी।
१५) ब्याज खाते जमा १५) बैंक से ब्याज के प्राप्त हुए।	५) मरम्मत खाते नाम ५) मरम्मत फर्नीचर में दिए।
५५०) रनजीतसिंह राजेन्द्रसिंह के जमा ५५०) रोकड़ा उधार लिए।	२०) किराया खाते नाम २०) दुकान का किराया दिया।
५०) बैंक खाते के जमा ५०) बैंक से निकाले।	१०) आहरण खाते नाम

१,०५०)

१०) निजी खर्च के लिए घर ले गए।

५) कटौती खाते नाम
५) इबादुल्ला खाँ को कटौती दी।

२०) यात्रा व्यय खाते नाम
२०) यात्रा व्यय हुआ

५०) वेतन खाते नाम
५०) वेतन मुनीम को दिया

५) विविध व्यय खाते नाम
५) फुटकर खर्च हुआ

६६५)
४५) श्री रोकड़ बाकी रहे

१,०५०)

जमा नकल वही पन्ना ५

श्री रामजी सदा सहाय श्री संवत् २००८ मिती चैत्र सुदी २, सोमवार तारीख २ जनवरी सन् १६५१ ई०।

१५००) श्री माल खाते नाम
८००) दीनानाथ के जमा
८००) छींट गाँठ १ नम्बर १०५ थान ४०
दर २०) प्रति थान से खरीदी।

५००) विरला मिल्स के जमा
५००) डोरिया नम्बर १०० थान २० दर २५) प्रति थान से उधार खरीदा।

२००) सन्तोषप्रकाश चन्द्रप्रकाश के जमा
२००) वायल रंगीन 'रजपूती' थान १० दर २०) प्रति थान से उधार खरीदी।

१५००)

नाम नकल वही पन्ना ७

श्री रामजी सदा सहाय श्री संवत् २००८ मिती चैत्र सुदी २ सोमवार तारीख २ जनवरी सन् १६५१ ई०।

८६०) श्री माल खाते जमा
४००) सोहनलाल के नाम
४००) लट्ठा नम्बर ५ थान २० दर २०) प्रति थान से उधार वेचा।

३८०) जगदीशशरण सन्तोषकुमार के नाम
३८०) लट्ठा नम्बर ८५ थान नग १६ दर २०) प्रति थान से उधार वेचे।

११०) इबादुल्लाखाँ के नाम

११०) वायल रंगीन 'रजपूती' थान ५ दर २२) प्रति थान से उधार वेची।

८६०)

२. *खाता बही* :—खाते बही मे हर व्यक्ति का, जिससे व्यापार सम्बन्धी लेन-देन होता है, एक-एक खाता खुला रहता है। हर खाते में व्यक्ति के साथ हुए हर सौदे का विवरण रहता है। प्रायः एक खाता नये पन्ने से शुरू होता है। खाता बही के पहिले कभी-कभी खातो की सारिणी (Index) भी लगा दी जाती है। सारिणी की सहायता से इच्छित खाते को निकालना बहुत आसान हो जाता है।

खाता बही में रोकड़ तथा नकल बहियों से प्रविष्टियाँ की जाती हैं। खातो मे केवल धनराशि ही लिखी जाती है तथा इसके साथ ही साथ तारीख तथा प्रारम्भिक लेखे की वही के पन्ने का नम्बर भी लिखा जाता है। खाते मे दूसरे खातो का, जिन पर कि उस रकम का प्रभाव पड़ा है, नाम नहीं लिखा जाता है, जैसा कि अँग्रेजी प्रणाली मे किया जाता है।

इन खातों मे रोकड़ वही नकल बहियो या अन्य सहायक बहियों से प्रविष्टियाँ की जाती हैं। इसे खतियाना अर्थात् खाते में चढ़ाना या लिखना कहते हैं। रोकड़ बही या नकल बहियों को खाते में खतियाते समय एक बही के पन्ने का नम्बर दूसरी बही में लिख दिया जाता है जिससे भविष्य में यह मालूम पड़ जाता है कि वह धनराशि कहाँ से खतियाई गई है। जब धनराशि खाते मे खतिया दी जाती है तब रोकड़ व नकल बहियो मे उस रकम के सामने खतियाने का चिन्ह (/ या ०) बना देते हैं जिससे यह पता चल जाता है कि यह रकम खतिया दी गई है।

उदाहरण २२१

उदाहरण –(२२०) की प्रारम्भिक लेखे की पुस्तकों से खाता बही मे खतियाओ।

खाता-बही

श्री माल खाता

१००)	रोकड़ पन्ना १५ मिती चैत्र सुदी २, सवत् २००८	२५०)	रोकड़ पन्ना १५ मिती चैत्र सुदी २, संवत् २००८
८६०)	नाम नकल पन्ना ७ मिती चैत्र सुदी २, संवत् २००८	१५००)	जमा नकल पन्ना ५ मिती चैत्र सुदी २, संवत् २००८

लेखा श्री दौलतराम का

५०)	रोकड़ पन्ना १५ मिती चैत्र सुदी २, सवत् २००८		

लेखा श्री इबादुल्ला खाँ का

१०५)	रोकड़ पन्ना १५ मिती चैत्र सुदी २. संवत् २००८	११०)	नाम नकल पन्ना ७ मिती चैत्र सुदी २, संवत २००८

लेखा रनजीतसिंह गजेन्द्रसिंह का

५५०)	रोकड़ पन्ना १५ मिती चैत्र सुदी २, संवत् २००८		

लेखा श्री जयप्रकाश का

	२६०) रोकड़ पन्ना १५ मिती चैत्र सुदी २, संवत २००८

लेखा श्री दीनानाथ का

८००) जमा नकल पन्ना ५ मिती चैत्र सुदी २, संवत् २००८	

लेखा बिरला मिल्स का

५००) जमा नकल पन्ना ५ मिती चैत्र सुदी २, संवत् २००८	

लेखा सन्तोषप्रकाश चन्द्रप्रकाश का

२००) जमा नकल पन्ना ५ मिती चैत्र सुदी २ सम्वत् २००८	

लेखा श्री सोहनलाल का

	४००) नाम नकल पन्ना ७ मिती चैत्र सुदी २, संवत् २००८

लेखा जगदीशशरण सन्तोषकुमार

	३८०) नाम नकल पन्ना ७ मिती चैत्र सुदी २, संवत् २००८

श्री बैंक खाता

५०) रोकड़ पन्ना १५ मिती चैत्र सुदी २, संवत् २००८	१२०) रोकड़ पन्ना १५ मिती चैत्र सुदी २, संवत् २००८

श्री तिजोरी खाता

	२४०) रोकड़ पन्ना १५ नि० चैत्र सुदी २ सम्वत् २००८

श्री आहरण खाता

	१०) रोकड़ पन्ना १५ मिती चैत्र सुदी २ सम्वत् २००८

कटौती खाता

१०) रोकड़ पन्ना १५ मिती चैत्र सुदी २ सम्वत् २००८	५) रोकड़ पन्ना १५ मिती चैत्र सुदी २ सम्वत् २००८

ब्याज खाता

१५) रोकड़ पन्ना १५ मिती चैत्र सुदी २ सम्वत् २००८	

रेल भाड़ा खाता

	१०) रोकड़ पन्ना १५ मिती चैत्र सुदी २ सम्वत् २००८

मरम्मत खाता

	५) रोकड़ पन्ना १५ मिती चैत्र सुदी २ सम्वत् २००८

किराया खाता

	२०) रोकड़ पन्ना १५ मिती चैत्र सुदी २ सम्वत् २००८

यात्रा व्यय खाता

	२०) रोकड़ पन्ना १५ मिती चैत्र सुदी २ सम्वत् २००८

वेतन खाता

	५०) रोकड़ पन्ना १५ मिती चैत्र सुदी २ सम्वत् २००८

विविध व्यय खाता

	५) रोकड़ पन्ना १५ मिती चैत्र सुदी २ सम्वत् २००८

३. *अन्तिम खाते* :—भारतीय व्यापारी प्रायः अपने हिसाब दशहरा, दिवाली या सम्वत् साल के अन्त, चैत्र में बन्द करते हैं। यद्यपि कुछ व्यापारी ३१ मार्च को भी हिसाब बन्द करते हैं, परन्तु अधिकांश व्यापारी दिवाली पर बन्द करते हैं। हिसाब बन्द करने का उद्देश्य व्यापारिक परिणाम तथा व्यापार की आर्थिक स्थिति मालूम करना होता है, अतः नफा-नुकसान खाता तथा चिट्ठा बनाना होता है।

नफा-नुकसान खाता .—विविध अवास्तविक खाते जैसे माल खाता, खर्च खाता आदि बन्द कर दिये जाते हैं और उनकी बाकी नफा-नुकसान में लिखी जाती है। परन्तु लाभ या हानि मालूम करने से पहिले वर्ष के अन्त का बचा हुआ माल मालूम कर लिया जाता है। इस माल को मालूम करना रहतिया निकालना कहते हैं। रहतिया निकालने के पश्चात् यह नफा-नुकसान खाते में लिखा जाता है। नफा-नुकसान खाते की बाकी कुल लाभ अथवा हानि होती है। यह बाकी स्वामी के व्यक्तिगत खाते में लिखी जाती है।

कई व्यापारी नफा-नुकसान खाता अलग नहीं बनाते वरन् माल खाते से ही यह काम लिया जाता है। अतः सब अवास्तविक खातों की बाकी तथा रहतिया माल खाते में ही लिखी जाती है और इसकी बाकी कुल नफा अथवा नुकसान होता है।

बहुत से भारतीय व्यापारी पूर्ण दोहरी लेखन-प्रणाली या पुस्तकी लाभ द्वारा अपना हिसाब नहीं रखते हैं। ये व्यापारी मिश्रित प्रणाली प्रयोग में लाते हैं, यथा उधार क्रय-विक्रय लिखी जाती है। परन्तु बकाया तथा पहिले चुकाये गए खर्चे नही लिखे जाते हैं, परन्तु पूर्ण दोहरी प्रणाली में ये सब खर्च भी हिसाब में लिखे जाते है।

चिट्ठा —वास्तविक तथा व्यक्तिगत खातों की बाकी निकालने के पश्चात् इनकी बाकियाँ (स्वामी के खाते की बाकी सहित) चिट्ठे में लिखी जाती हैं। चिट्ठा वर्ष के अन्त में व्यापार की आर्थिक स्थिति बतलाता है।

यह एक खाते की तरह ही लिखा जाता है। बाँया अर्द्धभाग जमा तथा दाँया अर्द्धभाग नाम पक्ष कहलाते है। वास्तविक तथा व्यक्तिगत खातों की बाकी चिट्ठे के उसी पक्ष में लिखी जाती है जिसमें वे होती है, यथा सम्पत्ति नाम पक्ष में ऋण जमा पक्ष में। अँग्रेजी प्रणाली में इसका उल्टा होता है।

उदाहरण २२२

सर्व श्री सूर्यप्रकाश चन्द्रप्रकाश की फर्म का कच्चा आँकड़ा बाबत साल मिती असौज सुदी १ संवत् २००८ निम्नलिखित है :—

	रुपये
प्रारम्भिक	५,२७०)
क्रय	२१,६८०)
विक्रय	२७,४००)
यात्रा व्यय	५००)
वेतन	२,०००)
भाड़ा	६००)
रोकड़ बाकी	२,७५०)
विविध व्यय	८०५)
व्याज (प्राप्त)	२७०)
व्याज चुकाया	४२०)
भवन	६,०००)
फर्नीचर	२००)
देनदार	३,२५०)
लेनदार	२,१००)
पूँजी	१२,७०५)

समायोजना

अन्तिम रहतिया ६०७५)
तीन मास का वेतन ७५) मासिक के हिसाब से बड़े मुनीम को अदत्त है।

उपर्युक्त सूचना के आधार पर व्यापारिक खाता लाभ-हानि खाता तथा चिट्ठा तैयार करो।

व्यापारिक तथा लाभ हानि खाता बाबत साल मिती असौज सुदी १, सम्वत् २००८

जमा		नाम	
२७,४००)	विक्रय	५,२७०)	प्रारम्भिक रहतिया
६,०७५)	अन्तिम रहतिया	२१,६८०)	क्रय खाता
		६००)	भाड़ा खाता
		२७,५५०)	
		५,९२५)	मिश्रित लाभ
३३,४७५)		३३,४७५)	
५,९२५)	मिश्रित लाभ	५००)	यात्रा व्यय
२७०)	ब्याज (प्राप्त)	२,२२५)	वेतन
			२,०००) नकद वेतन दिया
			२२५) अदत्त वेतन
			२,२२५)
		४२०)	ब्याज चुकाया
		८०५)	विविध व्यय
		३,९५०)	
		२,२४५)	वास्तविक लाभ पूँजी खाते को
६,१९५)		६,१९५)	रुपये

चिट्ठा सर्व श्री सूर्यप्रकाश चन्द्रप्रकाश मिती असौज सुदी १, सम्वत् २००८ वि० को।

पूँजी तथा देनदारियाँ		सम्पत्ति तथा लेनदारियाँ	
१५,९५०)	पूँजी	२,७५०)	रोकड़ बाकी
	१३,७०५) प्रारम्भिक पूँजी	३,२५०)	देनदार
	२,२४५) वास्तविक लाभ जोड़ो	६,०७५)	अन्तिम रहतिया
	१५,९५०)	२००)	फर्नीचर
२,१००)	लेनदार	६,०००)	भवन
२२५)	अदत्त वेतन		
१८,२७५)		१८,२७५)	

उदाहरण २२३

बहियों के शेष निकालते समय एक मुनीम को मालूम हुआ कि तलपट का नाम पक्ष १,०६६ रु० से कम पड़ता है। यह अन्तर कुछ काल को भूल-चूक खाते में लिखा गया। तदनन्तर निम्न गलतियां पता लगीं :—

(अ) मोहन द्वारा लौटाया गया १०० रु० का माल उसके लेखे में नहीं खताया गया यद्यपि विक्रय वापसी खाते में ठीक लिखा जा चुका है।

(आ) प्राप्त बट्टा १०० रु० से अधिक लिखा गया।

(इ) श्याम लेले का २०० रु० का जमा शेष तलपट के नाम पक्ष में लिखा गया है।

(ई) १३० रु० की राशि राम लेखे के स्थान पर हरी के लेखे में नाम लिख दी गई।
(उ) ७३४ रु०-८ आ० की राशि जो रोकड़ वही में दर्ज थी और जो दयालबाग स्टोर्स को भेजी गई, उनके लेखे में जमा कर दी गई थी।

उक्त अशुद्धियों को सुधारने के लिए रोकड़ वही में प्रविष्टियाँ, तथा भूल-चूक खाता खोल कर दिखलाओ।

रोकड़ वही पन्ना नं० २५०

श्री गणेशायनमः श्री शुभ सम्वत् २०१० मिती असौज सुदी २, दिन सोमवार तारीख ११ मार्च १९५३.

जमा	नाम
१००) मोहन के जमा १००) के माल वापिसी का लेखा उसके खाते में नहीं हुआ था।	१००) भूल चूक खाते नाम १००) का माल वापिस आया मोहन से लेकिन भूल से उसके खाते मे नहीं लिखा गया था।
१००) भूल चूक खाते जमा १००) का बट्टा जो मिला था गलती से अधिक लिखा गया था।	१००) बट्टा खाते नाम १००) मिलने वाला बट्टा भूल से अधिक लिखा गया था।
४००) ब्याज खाते जमा* ४००) ब्याज का २०० रु० जमा शेष भूल से तलपट मे नाम लिखा गया।	४००) भूल चूक खाते नाम ४००) ब्याज का २०० रु० का जमा शेष भूल से तलपट मे नाम लिखा गया।
१३०) हरी के जमा १३०) राम के नाम लिखे जाने के बजाय हरी के 'नाम' मे लिखे गए थे।	१३०) राम के नाम १३०) राम के नाम लिखे जाने चाहिए थे, न लिखे जाने पर अब लिखे जा रहे हैं।
१,४६९) भूल चूक खाते जमा १,४६९) दयालबाग स्टोर्स के नाम की राशि ७३४-८-० उसके जमा में लिखी गई थी।	१,४६९) दयालबाग स्टोर्स के नाम १,४६९) दयालबाग स्टोर्स के नाम की राशि ७३४-८-० उनके जमा मे लिखी गई थी।

खाता वही

भूल चूक खाता

जमा	नाम
	१,०६९) बाकी आ/ला
१००) रोकड़ पन्ना नं० २५० मिती असौज सुदी २	१००) रोकड़ पन्ना नं० २५० मिती असौज सुदी २
१,४६९) रोकड़ पन्ना नं० २५० मिती असौज सुदी २	४००) रोकड़ पन्ना नं० २५० मिती असौज सुदी २
१,५६९)	१,५६९)

*इससे ब्याज खाते में खतौनी नहीं होगी क्योंकि यह तलपट की अशुद्धि है।

उदाहरण २२४

दिल्ली के प्यारेलाल एण्ड सन्स ने २०,००० रु० का १०,००० गज कपड़ा खरीदा, जिसमें से ५,००० गज अजमेर वाले मगरुब चन्द एण्ड ब्रादर्स को चालान पर भेजा। चालान करने वालों ने ५०० रु० किराये व ५० पैकिंग आदि के दिए।

मगरुबचन्द एण्ड ब्रादर्स ने ४,००० गज ४ रु० प्रति गज से बेचा व २०० रु० विविध खर्चों में व्यय किए। वे कुल बिक्री पर ५% व ३ रु० गज से अधिक बेचने पर २०% कमीशन पाने के अधिकारी हैं।

३,००० गज दिल्ली में ३ रु० प्रति गज, ३०० रु० कमीशन कम करके बेचा। बाजार की मंदी के कारण कपड़े का शेष स्टॉक का १०% मूल्य कम हो गया।

प्यारेलाल एण्ड सन्स की रोकड़ बही एवं खाते में चालान खाता, माल खाता, लाभ हानि खाता तथा मगरुबचन्द एण्ड ब्रादर्स की रोकड़ बही एवं खाते में प्यारेलाल एण्ड सन्स का खाता तैयार करो।

प्यारेलाल एन्ड सन्स

रोकड़-बही

जमा	नाम
१०,०००) श्री माल खाते जमा १०,०००) का ५००० गज कपड़ा अजमेर वाले मगरुब चन्द एन्ड ब्रादर्स को चालान पर भेजा	२०,०००) श्री माल खाते नाम २०,०००) का १०,००० गज कपड़ा खरीदा।
१६,०००) श्री अजमेर चालान खाते जमा १६,०००) चालान का ४००० गज कपड़ा ४) प्र० ग० की दर से बेचा मगरुब चन्द एण्ड ब्रादर्स ने।	१०,०००) श्री अजमेर चालान खाते नाम १०,०००) का ५००० गज कपड़ा चालान पर मगरुब चन्द एण्ड ब्रादर्स को भेजा।
६,०००) श्री माल खाते जमा ६,०००) दिल्ली में ३००० गज कपड़ा बेचा।	५५०) श्री अजमेर चालान खाते नाम ५००) अजमेर चालान पर किराया ५०) अजमेर चालान पर पैकिंग व्यय
१,८००) मगरुब चन्द एण्ड ब्रादर्स के जमा २००) चालान पर व्यय १६००) उनका कमीशन	१६,०००) श्री मगरुब चन्द एन्ड ब्रादर्स के नाम १६,०००) का ४,००० गज कपड़ा चालान का ४) प्र० ग० की दर से उन्होंने बेचा।
५,५६०) माल खाते जमा ५,५६०) अजमेर चालान का लाभ माल खाते में गया	१,८००) अजमेर चालान खाते नाम २००) अजमेर चालान पर अजमेर में व्यय १६००) चालान पर मगरुब चन्द एण्ड ब्रादर्स का कमीशन
	३००) विविध खर्च खाते नाम ३००) दिल्ली माल बेचने में विविध व्यय
	५,५६०) अजमेर चालान खाते नाम ५५६०) अजमेर चालान पर लाभ हुआ।

खाता-वही

अजमेर चालान खाता

१६,०००) रोकड़ पन्ना नं० ······· मिती · ·	१०,०००) रोकड़ पन्ना नं० ········ मिती ··· ··· ···
१ ६१०) रहतिया रहा ?	५५०) रोकड़ पन्ना नं० ······ " मिती ··········
	१,८००) रोकड़ पन्ना नं० ··· ··· ··· मिती ··· ········
	५,५६०) रोकड़ पन्ना नं० ········ मिती·········
१७,६१०)	१७,६१०)

माल खाता

१०,०००) रोकड़ पन्ना नं० " · · · मिती ··········	२०,०००) रोकड़ पन्ना नं० ··· ··· मिती···········
६,०००) रोकड़ पन्ना नं० ···· " मिती · ·······	८,१६०) कुल लाभ (लाभ हानि खाते मे गया)
५,५६०) रोकड़ पन्ना नं० · · ······ मिती ·········	
३,६००) रहतिया रहा	
२८,१६०)	२८,१६०)

लाभ हानि खाता

८,१६०) कुल लाभ (माल खाते से लाया गया)	३००) श्री विविध खर्च (रोकड़ पन्ना नं० ··· ··· मिती ·······)
	७,८६०) शुद्ध लाभ
८,१६०)	८,१६०

मगरुब चन्द एण्ड ब्रादर्स

रोकड़-वही

१६,०००) प्यारेलाल एण्ड संस के जमा १६,०००) का चालान का ४००० गज कपड़ा ४) प्र० ग० की दर से बेचा	१,८००) प्यारेलाल एन्ड संस के नाम २००) चालान पर विविध खर्च १,६००) चालान पर कमीशन हुआ
१,६००) कमीशन खाते जमा १,६००) चालान पर कमीशन हुआ	

खाता-वही

प्यारेलाल एन्ड संस

१६,००० रोकड़ पन्ना नं०····· " मिती ··· ··· ···	१,८००) रोकड़ पन्ना नं०···· ··· मिती ·······
	१४,२००) बाकी रहे।
१६,०००)	१६,०००)

नोट—(१) अजमेर चालान में ४,००० गज कपड़ा बिक जाने के बाद १००० गज कपड़ा शेष रहा जिसका क्रय मूल्य ४,०००) रु० हुआ लेकिन बाजार में १०% मंदी के कारण इसका मूल्य ३,६००) रु०

रहा लेकिन इसमे चालान करने वालो द्वारा किये गए खर्च का पाँचवाँ हिस्सा जोड़ देने से यह १,६१० रु० आया है ।

(२) दिल्ली में ५,००० गज में से ३,००० गज कपड़ा बिका जिससे २,००० गज कपड़ा ४,०००) रु० क्रय मूल्य का रहा जो १०% बाजार में मंदी के कारण ३,६००) रु० का रहतिया दिखाया गया है ।

उदाहरण २२५

बलदेव व कृष्ण दोनों ने साझे में एक बड़ा मकान छोटे-छोटे हिस्सों में परिवर्तन करने के लिए खरीदा। बलदेव ने मकान का मूल्य १६,००० रु० तथा कानूनी खर्चे ८५० रु० बैंक से उधार लेकर दिए।

कृष्ण ने ४००० रु० इमारती सामान के तथा २,८०० रु० मकान में परिवर्तन कराने की मजदूरी के दिए। मकान के साथ खरीदी हुई कुछ जमीन ३,१०० रु० में बेच दी और यह धन राशि कृष्ण ने प्राप्त की। तय्यार हुई इमारत २४,६०० रु० में बिकी, जिसमें से ५००रु० विक्रय खर्च कम करके बाकी रुपया बलदेव ने प्राप्त किया और उसमें से ऋण तथा ब्याज के ४०० रु० बैंक को दिए।

समझौते के अनुसार बलदेव को ऋण पर ब्याज तथा कृष्ण को मकान में किए गए परिवर्तन पर १५% अतिरिक्त खर्चे के लिए देकर जो लाभ हुआ उसमें से बलदेव को २/३ और कृष्ण को १/३ हिस्सा मिला।

प्रत्येक साझी ने अपने बहीखाते में जो धन व्यय किया तथा उससे प्राप्त किया, उसका ब्यौरा रक्खा है। संयुक्त साहस के लाभ हानि का लेखा बनाते हुए यह प्रकट कीजिए कि दोनों साझीदारों का हिसाब बिल्कुल साफ है, यह दोनों साझियों की पुस्तकों में पूर्ण लेखों द्वारा होना चाहिए।

बल्देव की रोकड़ बही

१६,८५०) बैंक खाते के जमा १६,८५०) बैंक से संयुक्त साहस के लिए लिए	१६,८५०) कृष्ण के साथ संयुक्त साहस के नाम १६,०००) का मकान खरीदा ८५०) कानूनी खर्चे
२४,१००) कृष्ण के साथ संयुक्त साहस खाते जमा २४,१००) मकान बिका २४,६००), शेष कानूनी खर्चे ५००)	४००) कृष्ण के साथ संयुक्त साहस खाते नाम ४००) बैंक के ऋण पर ब्याज चढ़ा
४००) बैंक खाते के जमा ४००) उधार ली गई राशि पर ब्याज	१७,८५०) बैंक खाते नाम १७,८५०) बैंक ऋण ब्याज सहित चुकाया।
१,४२०) लाभ हानि खाते के जमा १,४२०) संयुक्त साहस का लाभ लाभ हानि खाते में ले गए	१,४२०) कृष्ण के साथ संयुक्त साहस के नाम १,४२०) संयुक्त साहस पर लाभ

बलदेव की खाता बही

कृष्ण के साथ संयुक्त साहस खाता

२४,१००) रोकड़ पन्ना नं०.......मिती.......	१६,८५०) रोकड़ पन्ना नं०......मिती.......
	४००) रोकड़ पन्ना नं०......मिती.......
	१,४२०) रोकड़ पन्ना नं०......मिती.......
	५,४३०) बाकी रहा कृष्ण की ओर
२४,१००)	२४,१००)

कृष्ण की रोकड़ वही

४,०००) इमारती सामान के जमा ४,०००) संयुक्त साहस में सामान लगा	४,०००) वलदेव के साथ संयुक्त साहस के नाम ४,०००) इमारती सामान लगा
२,८००) मजदूरी खाते जमा २,८००) इमारत पर लगी मजदूरी	२,८००) वलदेव के साथ संयुक्त साहस के नाम २,८००) संयुक्त साहस के भवन पर लगी मजदूरी
१,०२०) विविध व्यय खाते जमा १,०२०) खर्चे जो संयुक्त साहस से लेने हैं।	१,०२०) वलदेव के साथ संयुक्त साहस के नाम १,०२०) खर्चे हुए जो संयुक्त साहस से लेने हैं।
३,१००) वलदेव के साथ संयुक्त साहस के जमा ३,१००) जमीन विकी	७१०) वलदेव के साथ संयुक्त साहस के नाम ७१०) संयुक्त साहस मे लाभ रहा

कृष्ण की खाता वही

वलदेव के साथ संयुक्त साहस खाता

३,१००) रोकड़ पन्ना नं० ......मिती	४,०००) रोकड़ पन्ना नं० ......मिती ... ..
५,४३०) वाकी रहा वलदेव को देना	२,८००) रोकड़ पन्ना नं० ......मिती ... ...
	१,०२०) रोकड़ पन्ना नं० ...... मिती .. .
	७१०) रोकड़ पन्ना नं० ......मिती .... .
८,५३०)	८,५३०)

दोनों पक्षों की वहियों में

मेमोरेन्डम संयुक्त साहस खाता

३,१००) जमीन की विक्री	१६,०००) भवन का मूल्य
२४,१००) भवन की विक्री	८५०) कानूनी खर्चे
	४,०००) इमारती सामान
	२,८००) इमारत की मजदूरी
	४००) ब्याज संयुक्त साहस पर
	१,०२०) अतिरिक्त खर्च
	१,४२०) लाभ—वलदेव
	७१०) लाभ—कृष्ण
२७,२००)	२७,२००)

उदाहरण २२६

राम, मोहन व सोहन साझीदार हैं, तथा उन्होंने १९५४ के वर्ष में ८३,०००) कमाये। साझेदारी कारनामे के अनुसार सोहन, जिसने व्यापार में पूँजी नहीं लगाई है, १२,०००० रु० प्रति वर्ष वेतन पाने का, तथा अपने वेतन व कमीशन और राम और मोहन की पूँजी पर, जिन्होंने क्रमशः ६०,००० रु० व १,००,००० रु० लगाये हैं, ५% पूँजी का ब्याज देने के बाद, शेष लाभ पर ५% कमीशन पाने का अधिकारी है।

यह भी निश्चय किया गया कि शेष लाभ का २०% दान कोष में ले जाएँ तथा शेष राम और मोहन में समान रूप मे बॉट दिया जाए। साझीदारों के आहरण वर्ष मे निम्न हैं :—राम १०,००० रु०; मोहन ६,००० रु०; सोहन १२,००० रु०। साझे की रोकड़ वही मे प्रविष्टियाँ तथा पूँजी व चालू खाते तथा लाभ हानि खाता तैयार करो।

सर्व श्री राम मोहन व सोहन

रोकड़-वही

१२,०००)	सोहन के जमा १२,०००) सोहन का वर्ष का वेतन हुआ	३५,०००)	लाभ हानि खाते के नाम १२,०००) सोहन का वेतन ३,०००) राम की पूँजी का ब्याज ५,०००) मोहन की पूँजी का ब्याज ३,०००) सोहन का कमीशन १२,०००) दान कोष खाते मे डाला
३,०००)	राम के जमा ३,०००) राम की पूँजी पर ब्याज		
५,०००)	मोहन के जमा ५,०००) मोहन की पूँजी पर ब्याज		
३,०००)	सोहन के जमा ३,०००) सोहन का कमीशन		
१२,०००)	दान कोष खाते जमा १२,०००) से दान कोष बनाया		
२४,०००)	राम के जमा २४,०००) राम का लाभ का भाग		
२४,०००)	मोहन के जमा २४,०००) मोहन के लाभ का भाग		

राम का पूँजी खाता

६०,०००) बाकी आ/ला	

मोहन का पूँजी खाता

१,००,०००) बाकी आ/ला	

राम का चालू खाता

३,०००) रोकड़ पन्ना नं०····मिती····	१०,०००) रोकड़ पन्ना नं० " मिती " (आहरण)
२४,०००) रोकड़ पन्ना नं०····मिती····	१७,०००) बाकी आ/ले
२७,०००)	२७,०००)

मोहन का चालू खाता

५,०००) रोकड़ पन्ना नं० मिती····	६,०००) रोकड़ पन्ना नं० " मिती " (आहरण)

२४,०००) रोकड़ पन्ना नं० ... मिती ...	२०,०००) बाकी आ/ले
२६,०००)	२६,०००)

सोहन का चालू खाता

१२,०००) रोकड़ पन्ना नं० ... मिती ...	१३,०००) रोकड़ पन्ना नं० ... मिती ... (आहरण)
३,०००) रोकड़ पन्ना नं० ... मिती ...	२,०००) बाकी आ/ले
१५,०००)	१५,०००)

उदाहरण २२७

सैंट, युसुफ तथा जैड अहमद क्रमशः १५०० रु०, १,७५० रु० तथा २,००० रु० की पूँजी के साथ समान साझीदार हैं। उन्होंने विन्सैंट को समान साझेदारी में ख्याति के १/४ भाग के लिए १५०० रु० रोकड़ा तथा पूँजी के लिए १,८०० रु० देने पर, दोनों धन व्यापार में रहेंगे, प्रविष्ट करने का निश्चय किया। पुरानी फर्म का दायित्व ३,००० रु० तथा सम्पत्ति रोकड़ के अतिरिक्त मोटर १,२०० रु०, फर्नीचर ४०० रु०, स्टॉक २,६५० रु०, देनदार ३,७८० रु० है।

मोटर व फर्नीचर क्रमशः ९५० रु० व ३५० रु० पुनः मूल्यांकित किए गए तथा ह्रास अपलिखित किया गया। एक ख्याति खाता विन्सैंट के साझीदार बनने पर उस आधार के अनुसार जिसके अनुसार विन्सैंट ने अपने भाग के लिए भुगतान किया है, खोला गया।

उपर्युक्त के लिए रोकड़ वही में प्रविष्टियाँ कीजिए तथा नयी फर्म का चिट्ठा बनाइए।

रोकड़ वही

५००) सैंट के पूँजी खाते जमा ५००) विन्सैंट को दी गई ख्याति का भाग जमा हुआ।	६०) सैंट के पूँजी खाते नाम ६०) मोटर व फर्नीचर के ह्रास का भाग
५००) युसुफ के पूँजी खाते जमा ५००) विन्सैंट को दी गई ख्याति का भाग जमा हुआ।	६०) युसुफ के पूँजी खाते नाम ६०) मोटर व फर्नीचर के ह्रास का भाग।
५००) जैड अहमद के पूँजी खाते जमा ५००) विन्सेंट को दी गई ख्याति का भाग जो जमा किया।	६०) जैड अहमद के पूँजी खाते नाम ६०) मोटर व फर्नीचर के ह्रास का भाग।
१,८००) विन्सैंट के पूँजी खाते जमा १८००) विन्सैंट अपनी पूँजी के रुपये लाया।	६,०००) ख्याति खाते नाम ६,०००) की ख्याति खाते में खोली।
२५०) मोटर खाते जमा २५०) मोटर पर ह्रास काटा।	
५०) फर्नीचर खाते जमा ५०) फर्नीचर पर ह्रास काटा।	

१,५००) सैंट के पूँजी खाते जमा
 १,५००) ख्याति का भाग जमा किया

१,५००) युसुफ के पूँजी खाते जमा
 १,५००) युसुफ को ख्याति का भाग

१,५००) जैड अहमद के पूँजी खाते जमा
 १,५००) ख्याति का भाग जमा हुआ

१,५००) विन्सैट के पूँजी खाते जमा
 १,५००) ख्याति का भाग मिला

चिट्ठा सर्व श्री सैंट, युसुफ, जैड अहमद तथा विन्सट का

३,०००) विविध लेनदारों के जमा	३,५२०) रोकड़ खाते नाम
३,४१०) सैंट के पूँजी खाते जमा	३,७८०) विविध देनदारों के नाम
३,६६०) युसुफ के पूँजी खाते जमा	२,६५०) रहतिया खाते नाम
३,६१०) जैड़ अहमद के पूँजी खाते जमा	३८०) फर्नीचर खाते नाम
३,३००) विन्सैट के पूँजी खाते जमा	६५०) मोटर खाते नाम
	६,०००) ख्याति खाते नाम
१७,२८०)	१७,२८०)

उदाहरण २२८

शंकर, मुरारी व राघव अपने लाभ क्रमशः $\frac{1}{2}$, $\frac{1}{3}$ व $\frac{1}{6}$ के अनुपात में बाँटते हुए साझीदार हैं। उन्होंने आपस मे समझौता किया कि किसी साझीदार की मृत्यु होने पर ख्याति खाते में पिछले पाँच वर्षों के औसत लाभ के तीन वर्ष के क्रय १० प्रतिशत कम के आधार पर वृद्धि होगी। जीवित साझीदारों को मृतक साझीदार के भाग को खरीदने का विकल्प होगा। कुल व्यापारिक परिणाम ये रहे; प्रथम वर्ष लाभ ३,००० रु० द्वितीय वर्ष लाभ ३,३०० रु०; तृतीय वर्ष लाभ ३,७०० रु०; चतुर्थ वर्ष हानि २,४०० रु० व पंचम वर्ष लाभ ५,४०० रु०।

१० मार्च १९५१ को राघव का देहान्त हो गया उस दिन साझे की सम्पत्ति ये थी—फर्नीचर ३०० रु०; विविध देनदार १६,००० रु०; रोकड़ ३,१०० रु० और फर्म का दायित्व ४०० रु० का था। मृत्यु के दिन राघव की पूँजी ४,००० रु० थी और शंकर की पूँजी मुरारी से दूनी थी।

शकर व मुरारी ने मृतक साझी का भाग, आधा भाग नकद तथा शेष छः माह के बिल द्वारा चुका कर क्रय करने का प्रस्ताव किया।

फर्म की रोकड़ बही में प्रविष्टियाँ, राघव का खाता तथा शंकर व मुरारी का प्रारम्भिक चिट्ठा तैयार कीजिए।

सर्व श्री शंकर व मुरारी तथा राघव

रोकड़-बही

३,१००) रोकड़ बाकी रहे	६,४८०) ख्याति खाते नाम
	६,४८०) से ख्याति खाता खोला
३,२४०) शंकर के जमा	२,५४०) राघव के नाम
३,२४०) ख्याति का भाग	२,५४०) राघव के धन के आधे हिस्से को नकद दिया।
२,१६०) मुरारी के जमा	
२,१६०) ख्याति का भाग	

१,०८०)	राघव के जमा १,०८०) ख्याति का भाग	२,५४०)	राघव के नाम २,५४०) राघव का आधा हिस्सा ६ माह के बिल द्वारा चुकाया
२,५४०)	देय बिल खाते जमा २ ५४०) का बिल राघव को दिया		११,५६०)
		५६०)	रोकड़ बाकी रहे
	१२,१२०)		१२,१२०)

खाता-वही

खाता राघव का

४,०००)	बाकी आ/ला	२,५४०)	रोकड़ पन्ना नं०........मिती ...
१,०८०)	रोकड़ पन्ना नं० ....मिती	२,५४०)	रोकड़ पन्ना नं०..... मिती ...
	५०८०)		५०८०)

शंकर व मुरारी का

प्रारम्भिक चिट्ठा

५६०)	रोकड़ खाते जमा	४००)	विविध लेनदारों के नाम
१६,०००)	विविध देनदारो के जमा	२,५४०)	देय बिल खाते नाम
३००)	फर्नीचर खाते जमा	१३,२४०)	शंकर के पूँजी खाते नाम
६,४८०)	ख्याति खाते जमा	७,१६०)	मुरारी के पूँजी खाते नाम
	२३,३४०)		२३,३४०)

उदाहरण २२६

१ जनवरी १६५४ को एक लिमिटेड कम्पनी ने ५,००,००० रु० की अधिकृत पूँजी से जो १०० रु० वाले २०००, ६% पूर्वाधिकार हिस्सों तथा १० रु० वाले ३०,००० साधारण हिस्सों में विभक्त है स्थापित हुई। उसने आधे पूर्वाधिकारी हिस्से तथा २/३ साधारण हिस्से जनता में प्रस्तावित किए जो निम्न प्रकार देय हैं:—

निर्दिष्ट रकम का १०% आवेदन पर, २०% आवटन पर, २०% प्रथम याचन पर, २०% द्वितीय याचन पर तथा शेष आवश्यक्ता पड़ने पर।

८०० पूर्वाधिकार शेयरों व १०,००० साधारण हिस्सों के लिए आवेदन पत्र आए तथा १५ फरवरी को आवटित किए गए। प्रथम व द्वितीय याचन क्रमशः १ अप्रैल व १ जून को किये। निम्नलिखित धन देय तिथियों के १० दिन बाद प्राप्त हुआ:—

१६,००० रु० पूर्वाधिकार शेअरों पर आवटित राशि, तथा १६,००० रु० साधारण हिस्सों पर आवटित राशि।

१५,००० रु० पूर्वाधिकार हिस्सों पर प्रथम याचन की राशि, तथा १८,००० रु० साधारण हिस्सों पर प्रथम याचन की राशि।

१४,००० रु० पूर्वाधिकार हिस्सों पर द्वितीय याचन की राशि तथा १६,००० रु० साधारण हिस्सों पर द्वितीय याचन की राशि।

उपर्युक्त व्यवहारों का लेखा रोकड़ में करो और दिखाओ कि कम्पनी के चिट्ठे में पूँजी किस प्रकार दिखाओगे।

रोकड़ बही

सिद्ध श्री गणेशायनम. सम्वत् २०१२ मिती······ ···तारीख १५ फरवरी, १६५४.

२४,०००) पूर्वाधिकार हिस्सा पूँजी के जमा
२४,०००) पूर्वाधिकार हिस्सो के आवंटन पर धन वाजिब हुआ

२४,०००) पूर्वाधिकार हिस्सों के आवेदन व आवंटन के नाम
२४,०००) पूर्वाधिकार हिस्सों पर आवेदन व आवंटन का धन

३०,०००) साधारण हिस्सा पूँजी के जमा
३०,०००) साधारण हिस्से निकाले जिन पर आवेदन व आवंटन का धन वाजिब हुआ।

३०,०००) साधारण हिस्सों के आवेदन व आवंटन के नाम
३०,०००) साधारण हिस्सो पर आवेदन व आवंटन का धन

८,०००) पूर्वाधिकार हिस्सो के आवेदन आवंटन के जमा
८,०००) इन हिस्सो पर आवेदन के साथ धन प्राप्त हुआ।

१०,०००) साधारण हिस्सो के आवेदन व आवंटन के जमा
१०,०००) इन हिस्सो पर आवेदन के साथ धन मिला।

सिद्ध श्री गणेशायनम सम्वत् ······मिति ······तारीख २५ फरवरी, १६५४.

१६,०००) पूर्वाधिकारी हिस्सो के आवेदन व आवंटन के जमा
१६,०००) आवंटन पर धन प्राप्त हुआ

१६,०००) साधारण हिस्सो के आवेदन व आवंटन के जमा
१६,०००) इन हिस्सो के आवंटन पर धन मिला

सिद्ध श्री गणेशायनम. सम्वत् ······ ·· मिती ······ ···तारीख १ अप्रेल, १६५४.

१६,०००) पूर्वाधिकारी हिस्सा पूँजी के जमा
१६,०००) ऐसे हिस्सो के प्रथम याचन पर धन वाजिब हुआ।

१६,०००) पूर्वाधिकारी हिस्सो के प्रथम याचन के नाम
१६,०००) इन हिस्सों पर प्रथम याचन के वाजिब हुए।

२०,०००) साधारण हिस्सा पूँजी के जमा
२०,०००) ऐसे हिस्सो के प्रथम याचन पर धन वाजिब हुआ

२०,०००) साधारण हिस्सों पर प्रथम याचन के नाम
२०,०००) इन हिस्सों पर प्रथम याचन के वाजिब हुए

सिद्ध श्री गणेशायनमः सम्वत् ......मिती......तारीख ११ अप्रैल, १६५४.

१५,०००) पूर्वाधिकार हिस्सों पर प्रथम याचन के जमा
 १५,०००) इन हिस्सों के प्रथम याचन पर मिले।

१८,०००) साधारण हिस्सों पर प्रथम याचन के जमा
 १८,०००) इन हिस्सों के प्रथम याचन पर नकद मिले।

सिद्ध श्री गणेशायनम सम्वत् ... मिती ... तारीख १ जून १६५४.

१६,०००) पूर्वाधिकार हिस्सा पूँजी के जमा
 १६,०००) इन हिस्सों पर द्वितीय याचन पर धन वाजिव

२०,०००) साधारण हिस्सा पूँजी के जमा
 २०,०००) इन हिस्सों पर द्वितीय याचन पर धन वाजिव।

१६,०००) पूर्वाधिकार हिस्सों पर द्वितीय याचन के नाम
 १६.०००) द्वितीय याचन का धन वाजिव

२०,०००) साधारण हिस्सों पर द्वितीय याचन के जमा
 २०,०००) द्वितीय याचन का धन वाजिव हुआ।

सिद्ध श्री गणेशजी सदासहाय सम्वत् २०१२ मिति ... तारीख ११ जून, १६५४ ई०।

१४,०००) पूर्वाधिकार हिस्सों पर द्वितीय याचन के जमा
 १४,०००) द्वितीय याचन पर मिले

१६,०००) साधारण हिस्सों पर द्वितीय याचन के जमा
 १६,०००) द्वितीय याचन पर रोकड़ा मिले

चिट्ठा (जमा पक्ष)

५,००,०००) अधिकृत पूँजी
 ३,००,०००) के ३,००० रु० वाले पूर्वाधिकार हिस्से प्रत्येक १०० रु० का
 २,००,०००) के २०,००० साधारण हिस्से प्रत्येक १० रु० का

१,८०,०००) प्रस्तावित पूँजी (निर्गमित पूँजी)
 ८०,०००) के ८००, रु० पूर्वाधिकार हिस्से प्रत्येक १०० रु० का
 १,००,०००) के १०,००० साधारण हिस्से प्रत्येक १० रु० का

१,१६,०००) प्राप्त पूँजी

५३,०००) के ८००, ६% पूर्वाधिकार हिस्से प्रत्येक ७० रु० = ५६,०००
शेष भागो पर अदत्त = ३,०००

६३,०००) के १०,००० साधारण हिस्से प्रत्येक ७ रु० = ७०,०००
शेष भागो पर अदत्त = ७,०००

नोट :—उपर्युक्त भागो की अदत्त की रकम खाते बना कर पता चलाने के बजाए निम्न तालिका से ज्ञात की जाती है।

माँग का आधार	पूर्वाधिकार हिस्से			साधारण हिस्से		
	वाजिब	प्राप्त	अदत्त	वाजिब	प्राप्त	अदत्त
आवेदन	८,०००	८,०००	—	१०,०००	१०,०००	—
आवंटन	१६,०००	१६,०००	—	२०,०००	१६,०००	१,०००
प्रथम याचन	१६,०००	१५,०००	१,०००	२०,०००	१८,०००	२,०००
द्वितीय याचन	१६,०००	१४,०००	२,०००	२०,०००	१६,०००	४,०००
	५६ ०००	५३,०००	३,०००	७०,०००	६३,०००	७,०००

उदाहरण २३०

१ जनवरी १९५४ को एक संयुक्त पूँजी वाली संस्था ने, ६,००,००० रु० के ५% बचक ऋण पत्र निर्गमित किए। ३,००,००० रु० जनता से रोकड़ा भुगतान के लिए तथा ३,००,००० रु० के अपने बैंक को २,००,००० रु० के ६% वार्षिक व्याज पर लिए हुए ऋण की जमानत के लिए दिए। ऋण पत्रों पर व्याज प्रति वर्ष ३० जून व ३१ दिसम्बर को देय है।

ऋण पत्रों के निर्गमन तथा १९५४ के व्याज के भुगतान करने के लिए रोकड़ वही में प्रविष्टियाँ दीजिए तथा ३१ दिसम्बर १९५४ को ऋण-पत्र व बैंक ऋण किस प्रकार दिखाए जायेंगे।

रोकड़ वही

सिद्ध श्री रामजी सदा सहाय श्री शुभ सम्वत् २००६ मिती चैत्र वदी ५ तारीख जनवरी १ १९५४ ई०।

जमा	नाम
३,००,०००) ऋण पत्र खाते जमा ३,००,०००) के नकद ऋण पत्र निर्गमित किए।	३,००,०००) बैंक खाते नाम ३,००,०००) नकद ऋण-पत्र निकाले जिसकी राशि बैंक में जमा हुई।
२,००,०००) बैंक ऋण खाते जमा २,००,०००) का ऋण बैंक से २ लाख रु० के ऋण पत्र की जमानत पर लिया।	२,००,०००) बैंक खाते नाम २,००,०००) बैंक से ऋण लिया जो अपने बैंक खाते में जमा किया।

सिद्ध श्री रामजी सदा सहाय शुभ सम्वत् ... मिती .... तारीख ३० जून, १९५४ ई०।

७,५००) बैंक खाते जमा
७,५००) ऋण पत्रों पर पहला छमाही का ब्याज बैंक खाते से चुकाया

७,५००) ऋण पत्र ब्याज खाते नाम
७,५००) ऋण पत्रों पर छमाही का ब्याज चुकाया।

सिद्ध श्री रामजी सदा सहाय, सम्वत् मिति .....तारीख ३१ दिसम्बर, १९५४ ई०।

७,५००) बैंक खाते जमा
७,५००) ऋण पत्रो पर दूसरी छमाही का ब्याज बैंक खाते मे से चुकाया

७,५००) ऋण पत्र ब्याज खाते नाम
७,५००) ऋण पत्रो पर दूसरी छमाही का ब्याज चुकाया

१२,०००) बैंक खाते जमा
१२,०००) बैंक ऋण का वार्षिक ब्याज अपने बैंक खाते मे से चुकाया

१२,०००) ब्याज खाते नाम
१२,०००) बैंक ऋण पर ब्याज चुकाया

चिट्ठा जो ३१ दिसम्बर, १९५४ को है।

(जमा पक्ष)

३,००,०००) ५% बंधक ऋण पत्र
(६,००,००० रु० के ऋणपत्र थे जिनमे से ३,००,००० रु० के पत्र बैंक ऋण के लिए आंशिक प्रतिभूति मे जमा किए।)

२,००,०००) बैंक ऋण
(जो ३,००,००० रु० के ऋणपत्रो की जमानत पर लिया गया है)

उदाहरण २३१

१ जनवरी १९५० को, १० रु० वाले शेअरों मे १,००,००० रु० की अधिकृत पूँजी के साथ जो कि पूर्णतया निर्गमित तथा पूर्ण दत्त हैं एक लिमिटेड कम्पनी स्थापित हुई। कम्पनी के हिसाब कलैंडर वर्ष के अन्त में बनाए जाते हैं। निम्नांकित विवरण से १९५० व १९५१ में कम्पनी का नियोजन लाभ किस प्रकार दिखायेंगे :—

(अ) प्रथम वर्ष का लाभ २१,७५० रु० है जिसमें से ५००० रु० ह्रास के लिए तथा १०,००० रु० सामान्य सचय में हस्तान्तरित किए तथा वर्ष का आठ आना प्रति शेयर लाभांश देने की सिफारिश की। शेष आगे ले जाया गया।

(ब) १५ मार्च १९५१ को कम्पनी की वार्षिक सभा में संचालकों द्वारा सिफारिश किया हुआ लाभाश स्वीकृत हुआ।

(स) १ अगस्त १९५१ को संचालकों ने आठ आने शेयर का अन्तरिम लाभाश घोषित किया।

(द) ३१ दिसम्बर १९५१ को, २५० रु० १९५० के लाभांश के व ५०० रु० अन्तरिम लाभांश के लावारिस थे।

(य) १९५१ के वर्ष का लाभ २५,००० रु० था जिसमें से सचालकों ने ५,००० रु० ह्रास के निकाले व १०,००० रु० सामान्य सचय में हस्तान्तरित किये, उन्होंने आगे ले जाने वाले शेष को छोड़ते हुए १९५१ के वर्ष के लिए १ रु० प्रति शेयर अन्तिम लाभाश की सिफारिश की।

रोकड़ बही, १९५०

सिद्ध श्री रामजी सदा सहाय श्री शुभ सम्वत् २००८ मिती चैत्र सुदी १३, तारीख ३१ दिसम्बर १९५० ई०

५,०००) ह्रास खाते जमा
५,०००) ह्रास के काटे गए

१५,०००) लाभ हानि खाते नाम
५,०००) ह्रास के काटे

१०,०००) सामान्य संचय खाते जमा १०,००० से सामान्य संचय खाता खोला	१०,०००) सामान्य संचय खाते में डाले गए।

खाता बही, १९५०

ह्रास खाता

५,०००) रोकड़ पन्ना नं०…… मिती ……	

सामान्य संचय खाता

१०,०००) रोकड़ पन्ना नं० …… मिति ……	

लाभ हानि खाता

२१,७५०) बाकी आ/ला	५,०००) ह्रास (रोकड़ पन्ना नं० ……मिती……)
	१०,०००) सामान्य संचय खाता (रोकड़ पन्ना नं० …… मिती ……)
	६,७५०) बाकी (चिट्ठे में गई)
२१,७५०)	२१,७५०)

रोकड़ बही, १९५१

सिद्ध श्री रामजी सदा सहाय श्री शुभ सम्वत् २००६ मिति चैत्र बदी ८, तारीख १५ मार्च १९५१ ई०।

५,०००) लाभांश खाते जमा ५,०००) वार्षिक सभा मे घोषित हुआ	५,०००) लाभ हानि खाते नाम ५,०००) का लाभ घोषित किया
	४,७५०) लाभांश खाते नाम ४,७५०) का लाभ बाँटा गया

सिद्ध श्री रामजी सदा सहाय सम्वत् २००६ मिती…… तारीख १ अगस्त १९५१

५,०००) अन्तरिम लाभांश खाते जमा ५,०००) का संचालकों द्वारा अन्तरिम लाभांश बताया गया	५,०००) लाभ हानि खाते नाम ५,०००) का अन्तरिम लाभांश घोषित हुआ।
	४,५००) अन्तरिम लाभांश खाते नाम ४,५००) अन्तरिम लाभांश बाँटा गया

सिद्ध श्री रामजी सदा सहाय सम्वत् २००६ मिती …… तारीख ३१ दिसम्बर, १९५१.

५,०००) ह्रास खाते जमा ५,०००) ह्रास के काटे गए	१५,०००) लाभ हानि खाते नाम ५,०००) ह्रास के निकाले १०,०००) सामान्य संचय में हस्तांतरित किये।
१०,०००) सामान्य संचय खाते जमा	

१०,०००) सामान्य संचय खाता खोला गया

खाता बही, १९५१

लाभांश खाता

५,०००)	रोकड़ पन्ना नं० ……मिती ……	४,७५०)	रोकड़ पन्ना नं० …… मिती ……

अन्तरिम लाभांश खाता

५,०००)	रोकड़ पन्ना नं० …… मिती ……	४,५००)	रोकड़ पन्ना नं० ……मिती ……

ह्रास खाता

५,०००)	बाकी आ/ला		
५,०००)	रोकड़ पन्ना नं० ……मिती ……		

सामान्य संचय खाता

१०,०००)	बाकी आ/ला		
१०,०००)	रोकड़ पन्ना नं० …… मिती ……		

लाभ हानि खाता

३५,०००)	बाकी आ/ला	५,०००)	ह्रास (रोकड़ पन्ना नं० …… मिती ……)
		१०,०००)	सामान्य संचय (रोकड़ पन्ना नं० …… मिती ……)
		२०,०००)	बाकी आ/ले
३५,०००)		३५,०००)	
१,७५०)	बाकी आ/ला (६,७५० रु० बाकी आई जिसमें से १९५० का ५,००० रु० लाभांश दिया)	५,०००)	अन्तरिम लाभांश
२०,०००)	बाकी आ/ले	१६,७५०)	बाकी (चिट्ठ में गई)
२१,७५०)		२१,७५०)	

बहियों का बदलना—भारतीय व्यापारी प्रचलित प्रथा के अनुसार प्रति वर्ष के शुरू में अपनी बहियाँ बदल लेता है। जब नई बहियाँ आ जाती हैं तब उनमें पुरानी बहियों की बाकी लिख ली जाती है और दोनों बहियों में आवश्यकतानुसार आपस में पन्नों की संख्या डाल दी जाती है।

अन्य बहियाँ

भिन्न-भिन्न व्यापार-गृहों में भिन्न-भिन्न बहियाँ काम में लाई जाती हैं। निम्नलिखित बहियाँ प्रायः प्रत्येक व्यापार-गृह में रखी जाती हैं।

१. माल बही—यह बही रहतिया तथा उससे सम्बन्धित विवरण लिखने के काम आती है। थोक व्यापारियों के यहाँ विस्तृत माल बहियाँ काम में लाई जाती हैं। हर किस्म के माल के

लिए जमा तथा नाम पक्ष के रूप मे एक खाता रहता है। अगर उपयुक्त माल वहियाँ काम में लाई जाती हैं तो वर्ष के अन्त में रहतिया निकालना बहुत सरल हो जाता है। रहतिया और खातो की तरह ही महत्वपूर्ण होता है और आयकर अधिकारी वर्ग हमेशा वार्षिक हिसाव के साथ माल वही भी माँगते हैं।

२. *जाकड़ वही*—यह एक स्मरण पुस्त होती है जिसमे अस्थाई विक्रय जैसे ग्राहक की स्वीकृति के लिए माल देना। अगर ऐसा माल वापिस आजाता है तो जाकड़ वही मे लिखी रकम काट दी जाती है और अगर वह ग्राहक द्वारा रख लिया जाता है तो यह रकम नकल बही में लिख दी जाती है। जाकड़ वही नकल वही के लिए भी प्रयोग में आती है।

३. *हुण्डी वही*—यह बिल्स बही की तरह की बही नहीं होती हैं। हुण्डियाँ जोकि बेची अथवा खरीदी जाती हैं—वे रोकड़ बही में लिखी जाती हैं, परन्तु उनका विवरण हुण्डी बही में लिखा जाता है जो कि स्मरण-पुस्तक है।

४. *विल्टी वही*—इस बही मे खरीदे अथवा बेचे माल की रसीद का विवरण लिखा जाता है।

५. *चिट्ठी वही*—इस बही में बाहर भेजे गए सब पत्रों की नकल रखी जाती है।

६. *सौदा वही*—इस बही मे भविष्य के सौदे लिखे जाते हैं चाहे वे खरीद के हो या विक्री के।

७. *हिसाव वही*—इस बही मे सब बिक्री-पत्र रखे जाते है। यह बही आढ़तियों द्वारा रखी जाती है।

८. *तक पट्टी*—यह बही थोक व्यापारियों द्वारा रखी जाती है तथा इसमें बेचे हुए माल का विवरण लिखा जाता है, जैसे—बोरो की संख्या, तौल, खरीददार का नाम आदि। तक का मतलब एक नापने के पैमाने से होता है, अतः यह बही तकपट्टी इसलिए कहलाती है कि इसमें बोरों आदि को तौलते ही उनकी तोल लिख ली जाती है। पुराने समय मे यह विवरण पट्टी (लकड़ी की तख्ती) पर लिखा जाता था परन्तु शब्द का प्रयोग अब भी किया जाता है।

९. *तगादा वही*—यह बही भी थोक व्यापारी ही रखते हैं। इस बही में देनदारों से जितना रुपया लेना होता है वह लिखा रहता है। एक विश्वासपात्र नौकर जब धन वसूल करने जाता है तब वह इस वही को साथ रखता है देनदार जो रुपया देता है वह खुद इस वही में लिख देता है कि उसने इतना रुपया चुका दिया है। इसके लिए अलग रसीद नहीं दी जाती।

भारतीय तथा अँग्रेजी बहीखाता प्रणाली की तुलना

जैसे पहिले बताया जा चुका है भारतीय तथा अँग्रेजी वहीखाता प्रणाली की मुख्य बातें समान है, परन्तु कुछ बातों में दोनों भिन्न हैं।

१. वहियों में लाइनें नहीं होतीं परन्तु उनके स्थान पर वह मुड़ी रहती हैं जो लाइनों का काम करती हैं।

२. वही खाते मे कभी-कभी रकम दो बार लिखी जाती है—जैसे कच्ची व पक्की रोकड़ वही में, परन्तु अँग्रेजी प्रणाली में हमेशा एक बार ही लिखा जाता है।

३. दोनों प्रणालियों के जमा व नाम पक्ष उल्टे होते हैं। अँग्रेजी प्रणाली मे बायाँ अर्द्ध भाग नाम पक्ष होता है जबकि वही खाता में वह जमा पक्ष होता है।

४. रोकड़ वही की रकमें खाते वही में उसी पक्ष में लिखी जाती हैं जिसमें वे रोकड़ वही में होती हैं परन्तु अँग्रेजी प्रणाली में यह बात नहीं है। यद्यपि रोजनामचे (Journal) मे खातों में रकमें उसी पक्ष में लिखी जाती हैं जिनमे वे रोजनामचे में होती हैं परन्तु कैश-बुक मे खातों में रकमें दूसरे पक्ष में लिखी जाती हैं।

५. खातों मे केवल रकम व तारीख ही लिखी जाती है तथा रोकड़ या नकल बही के पन्ने का नम्बर डाला जाता है, परन्तु दूसरे खाते का जोकि इससे प्रभावित होता है, नाम नहीं लिखा जाता। अँग्रेजी प्रणाली में एक लेजर खाते मे दूसरे लेजर खाते का नाम भी लिखा जाता है।

६. बाकी निकालने मे भी दोनो प्रणालियो में अन्तर है। अँग्रेजी प्रणाली में बाकी कम रकम वाले पक्ष में लिखकर फिर जोड़ लगाया जाता है और लाइने खेच दी जाती है परन्तु खाता बही मे पहले जोड़ लगा कर फिर कम रकम वाले पक्ष मे बाकी लिखी जाती है तथा उस पक्ष में दोबारा लाइने खेंच देते है। अत दोनो पक्षो के जोड़ एक सीधी रेखा मे नहीं होते हैं।

७. बही खाता पद्धति मे रकम का पूरा विवरण प्रारम्भिक लेखे की बही मे लिखा जाता है क्योकि रसीदें प्राय. नहीं रक्खी जाती हैं। अँग्रेजी प्रणाली मे केवल रसीद की संख्या लिखी जाती है क्योकि रसीदें रखी जाती है।

८. अँग्रेजी प्रणाली मे कभी-कभी अवास्तविक खातो की संख्या काफी बढ़ जाती है, परन्तु भारतीय प्रणाली मे ऐसे खाते बहुत कम होते है। प्राय सब खर्चे 'दूकान खर्च खाता' में ही लिख दिये जाते हैं।

९ अँग्रेजी प्रणाली में व्यापारिक लाभ व्यापारिक खाता लाभ-हानि खाता (Trading and Profit & Loss Account) बना कर मालूम किया जाता है, परन्तु बही खाते में व्यापारिक खाता तो प्राय. होता ही नहीं वरन् कभी-कभी नफा नुकसान खाता भी नहीं होता है और लाभ या हानि माल खाते से निकाला जाता है।

१०. बही खाते मे या तो नकद सौदे ही लिखने की या मिश्रित प्रणाली में बही खाता लिखने की प्रथा है जिसमे बकाया खर्चे आदि छोड़ दिये जाते है।

११. चिट्ठे मे वास्तविक तथा व्यक्तिगत खातो की बाकी उसी पक्ष मे लिखी जाती है जिसमे वह खाते मे होती है, परन्तु अँग्रेजी प्रणाली में बाकी दूसरे पक्ष में लिखी जाती है।

१२. बही खाते मे हर वर्ष के शुरू मे नई बहियाँ बनाने की प्रथा है, परन्तु अँग्रेजी प्रणाली में ऐसी प्रथा नही है।

प्रश्न

१. बहीखाता क्या है तथा भारतीय वाणिज्य विद्यार्थियों के लिये इस विषय का ज्ञान होना क्यों आवश्यक है ?

२ बन्द क्या है और वह किस कार्य के लिये रखा जाता है ? क्या इसका बड़े व्यापार में विभाजन किया जा सकता है ?

३ क्या कच्ची रोकड़ बही तथा पक्की रोकड़ बही में अन्तर है ? क्या दोनों बहियों का रखना आवश्यक है ?

४ किस प्रकार रोकड़ व नकल बही खाता बही में खताई जाती है ?

५ (अ) कच्ची रोकड़ बही, (ब) जमा नकल बही, (स) नाम नकल बही तथा (द) बन्द प्रत्येक में पाँच काल्पनिक प्रविष्टियाँ करके आदर्श पृष्ठ बनाइये।

६. साधारणतया बहीखाते मे व्यापार का वार्षिक परिणाम किस प्रकार निकालते हैं ? क्या हमेशा नफा नुकसान खाता तैयार किया जाता है ?

७ सामान्य बहियों के अतिरिक्त बड़े व्यापार में कौन-सी दूसरी बहियाँ सामान्यतया प्रयोग में लाई जाती हैं ? किन्हीं तीन का वर्णन करो।

८. क्या आपके विचार में देशी बही खाते की पद्धति अंग्रेजी पद्धति से सरल है ? यदि है तो कैसे ?

९. "अंग्रेजी बनाम देशी बही खाता पद्धति" पर एक संक्षिप्त नोट लिखो।

१०. निम्नलिखित व्यापारियों द्वारा कौन-सी बही का प्रयोग करना चाहिये—(अ) एक बड़ा किराना मर्चेंट, (ब) एक जनरल स्टोर मर्चेंट, (स) एक पुस्तक विक्रेता तथा प्रकाशक (द) एक अनाज मर्चेंट, (य) अनाज

विक्रेता, (र) एक थोक वस्त्र व्यापारी, (ल) एक मन्दिर जिसके पास बड़ी सम्पत्ति है, (व) एक सोड़ा वाटर फैक्टरी, (श) एक फुटकर हलवाई, (स) एक धर्मशाला तथा (ह) एक वकील।

११. निम्नलिखित सौदों को रामगोपाल श्यामलाल की रोकड़ बही, जमा नकल बही, नाम नकल बही तथा खाता में संवत् २००६ वैसाख बदी ५ सोमवार तारीख १४ अप्रैल सन् १६५२ ई० को अंकित करो।

१,५००) रोकड़ बाकी।
५,०००) राममोहन से गेहूँ खरीदा।
५०) भाड़ा दिया
४,५५०) हरिराम को गेहूँ बेचा।
५ ०००) किशनलाल से नकद आया।
३,०००) बैंक में जमा किया।
५,०००) का एक चैक राममोहन को दिया।
४००) का नकद चना खरीदा।
६६०) की मूँग नकद बेची।
५००) रामगोपाल ने बैंक से अपने लिये निकाले।
४) फुटकर खर्च।

१२. श्री दयाप्रकाश एण्ड सन्स के कच्चे आँकड़े से नफा नुकसान खाता तथा चिठ्ठा तैयार करो। संवत् २००८ मिती चैत्र बदी १५।

जमा	नाम
१०००) पूँजी खाता	६५०) मशीन
१६०) लेनदार	३५०) देनदार
१६००) विक्रय	१०००) क्रय
२५६) देय हुण्डी	४४०) मजदूरी
३०४६)	१००) बैंक
	२०) रोकड़ा
	३०) मरम्मत
	२२०) प्रारम्भिक रहतिया
	४२) किराया
	७८) उत्पादक व्यय
	२५) बट्टा खाता
	६४) वेतन
	३०४६)

१५०) अन्तिम रहतियाँ चैत्र १५ संवत् २००८।

परिशिष्ट

(दोहराने के प्रश्न)

द्वि प्रविष्टि के सिद्धांत

१. निम्नलिखित व्यवहारों को बट्टे, रोकड़ तथा बैंक स्तम्भ वाली रोकड़ पुस्तक में लिखो :—

१९५१

जनवरी १ २०,००० रु० के रोकडा से ऐक्स ने व्यापार प्रारम्भ किया।

३ उसे कीर्ति एन्ड कं० से उनके खाते में ६०० रु० का एक चैक प्राप्त हुआ।

४ उसने १६,००० रु० बैंक के चालू खाते मे जमा किए।

७ उसने कीर्ति एण्ड कं० से प्राप्त चैक बैंक मे दिया।

१० उसने ३३० रु० का चैक रतन ब्रादर्स को दिया तथा २० रु० बट्टा मिला।

१२ त्रिपाठी एण्ड कं० ने उसके बैंक खाते में ४७५ रु० जमा किए।

१५ उसे एम व सी से ४५० रु० का चैक प्राप्त हुआ तथा उसे ३५ रु० बट्टे के दिये।

२० उसे १०० रु० का चैक व ७५ रु० रोकड़ी नकद बिक्री से प्राप्त हुए।

२५ उसने १,००० रु० बैंक में जमा किए।

२७ उसने २७५ रु० का चैक नकद क्रय के लिये दिया।

३० उसने ५० रु० रोकड़ी विविध खर्चों के दिये।

उसने जोन एन्ड कं० को ३७५ रु० रोकड़ी दिये तथा ३५ रु० बट्टे के मिले।

३१ उसने २०० रु० किराया चैक द्वारा दिया।

उसने ३०३ रु० वेतन चैक द्वारा दिया।

उसने २५० रु० अपने निजी खर्चे के लिये चैक द्वारा निकाले।

उसने ४०० का चैक कार्यालय के प्रयोग के लिए लिखा।

उसने २५ रु० आलेखन (Stationery) के रोकड़ी दिये।

उसने १२५ रु० का नकद माल खरीदा।

उसने यशपालसिंह को ३०० रु० कमीशन के चैक द्वारा दिये।

उसने फर्नीचर के नकद क्रय के लिए चैक द्वारा १,५७५ रु० श्री रामसरन को दिये।

उसे ५०० रु० का एक चैक राम एण्ड कं० से कमीशन के लिये प्राप्त हुआ तथा उसे बैंक में जमा किया।

उसे ४५० रु० का एक चैक कोमा एण्ड कं० से प्राप्त हुआ।

उत्तर :—रोकड़ शेष ६०० रु०; बैंक शेष १७,६४२ रु०।

२. कुछ पुस्तकों से तलपट बनाते हुये दोनों तरफ का योग नहीं मिला, डेबिट की ओर का योग २२,५०५ रु० १ आ० ६ पा० तथा क्रेडिट की ओर का योग २५,०८० रु० १२ आ० ३ पा० है। आपको विश्वास है कि कोई भी चीज भुलाई नहीं गई है तथा सारे अंक अंकगणित की रीति से ठीक हैं, खतौनी व सारे योग भी स्वतंत्र रूप से जाँच लिये गये हैं।

त्रुटि की सम्भाव्य प्रकृति बताइये तथा तलपट का ठीक योग निकालिये।

उत्तर :—सम्भवतया रु० २,७१२-२-६ का जमा शेष गलती से नाम शेष लिखा गया है। तलपट का ठीक योग रु० २८,७९२-१५-० होगा।

३ ऐक्स ने, जो गैरेज का मालिक है, वाई से जो कि तेल वितरक (distributor) है १,६५० रु० में एक पेट्रोल पम्प खरीदा तथा खरीदे हुये पेट्रोल की प्रति गैलन पर दो आने अतिरिक्त मूल्य देकर उसका मूल्य देने का निश्चय किया।

प्रथम वर्ष में १,२०० गैलन पेट्रोल खरीदा गया। उपर्युक्त व्यवहारों को ऐक्स की पुस्तकों में लेखा करने के लिये जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिए।

उत्तर :—वाई का शेष धन १,५५० रु०।

४ ३१ मार्च १९५२ को, एक व्यापारी की रोकड़ बही में १९५ रु० ६ आ० का बैंक अधिविकर्ष था। पास बुक देखने पर निम्न बातें पता लगीं :—

(अ) स्थाई जमा का व्याज १४ रु० १० आ० बैंक द्वारा क्रेडिट हो गया है, परन्तु रोकड़ वही में नहीं लिखा गया है।

(ब) २१ रु० १२ आ० के बैंक खर्चे मार्च मास में बैंक द्वारा विभिन्न तिथियों में नाम लिख दिये गये हैं, परन्तु रोकड़ वही में नहीं लिखे गये हैं।

(स) २६ मार्च १६५१ को बैंक में दिया हुआ एक बाहर का १५५ रु० का चैक अभी तक संग्रह नहीं किया गया है।

(द) ६३२ रु० ८ आ० के लिखे हुये चैक अभी तक भुगतान के लिये प्रेषित नहीं किये गये हैं।

रोकड़ वही में पूरी प्रविष्टियाँ करके पास बुक का शेष निकालो।

उत्तर :—पास बुक शेष (जमा) ५७५ रु०।

५. ३१ मार्च १६५१ को, एक व्यापारी की रोकड़ वही में १,३४८ रु० २ आ० का अधिविकर्ष (overdraft) है तथा पास बुक में ८२२ रु० १४ आ० ८ पा० का नाम शेष है। रोकड़ वही की पास बुक से तुलना करने पर निम्न बातें पता लगीं :—

(अ) ५६७ रु० १ आ० ४ पा० के लिखे हुये चैक तथा २५३ रु० ५ आ० ४ पा० का एक टिकान (Lodgment) रोकड वही में लिख लिये गये हैं परन्तु पास बुक में नहीं।

(ब) १८१ रु० ८ पा० का एक अस्वीकृत चैक (ऐक्स से प्राप्त), ५१० रु० का एक संग्रहीत प्राप्य बिल, ५ रु० बैंक खर्चे तथा ११२ रु० ८ आ० अधिविकर्ष का व्याज पास बुक में लिख लिये गये हैं, परन्तु रोकड़ वही में नहीं।

आवश्यक समाधान विवरण तैयार कीजिये।

६. ३० अप्रैल १६५१ को एक संस्था की रोकड़ वही मे ३,३७० रु० का बैंक शेष था। यह शेष निम्न कारणों द्वारा बैंक विवरण के शेष से भिन्न था :—

(अ) रोकड़ वही की जमा की ओर पृष्ठ १२३ पर बैंक स्तम्भ का योग (४१,१३० रु०) १२४ वें पृष्ठ पर ४१,३१० रु० ले जाया गया है।

(ब) २४ अप्रैल १६५१ को बैंक में जमा की हुई १८० रु० की नकद बिक्री का केवल रोकड़ स्तम्भ (Cash Column) मे ही लेखा किया गया है।

(स) निजी रोकड़ वही मे तथा संस्था नं० २ पर लिखा हुआ २५० रु० का चेक, असावधानी से बैंक द्वारा मुख्य खाते मे नाम लिख दिया गया।

(द) ३० अप्रैल १६५१ को अप्रेषित (Unpresented) चैकों का योग ११,२१० रु० था।

(य) ३० अप्रैल १६५१ को संग्रह के लिये बैंक मे भेजा हुआ २,५०० रु० का एक बिल उसी दिन रोकड़ वही के बैंक स्तम्भ में नाम लिख दिया गया।

३० अप्रैल १६५१ को, बैंक के विवरण (नं० १ खाता) के शेष का स्पष्टीकरण करते हुए समाधान विवरण तैयार कीजिये, तथा रोकड़ वही में आवश्यक शोधक प्रविष्टियाँ कीजिये।

उत्तर :—बैंक विवरण का शेष (जमा) १२,१६० रु०।

७. एक थोक संस्था ने ऐक्स को प्रबन्धक तथा वाई को सहायक प्रबन्धक के रूप में नौकर रक्खा। ऐक्स व वाई दोनों को कुछ वेतन तथा कुछ कमीशन मिलता है। ऐक्स कुल व्यापारिक लाभ का, कमीशन देने से पूर्व, ५% कमीशन प्राप्त करता है, तथा वाई कुल लाभ का, सब कमीशन देने के पश्चात, २% कमीशन प्राप्त करता है।

कोई भी कमीशन देने से पूर्व, संस्था का ३१ दिसम्बर १६५० को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ हानि खाता निम्न है .

	रु०		रु०
व्यापारिक खर्चे	१,३१,५००	सकल लाभ	२,४०,०००
शेष	१,१८,५००	विनियोगों से प्राप्त व्याज	१०,०००
	२,५०,०००		२,५०,०००

सम्पूर्ण हल दिखलाते हुये प्रबन्धक व सहायक प्रबन्धक का कमीशन निकालो तथा संशोधित लाभ-हानि खाता बनाओ।

उत्तर :—प्रबन्धक का कमीशन ५,९२५ रु० तथा सहायक प्रबन्धक का कमीशन २,२२० रु०। संशोधित लाभ १,१०,८५८ रु०।

८. ३१ दिसम्बर १९५० को, एक संस्था के बहीखाते में निम्न खाते प्रविष्ट हुये :—

भवन मरम्मत खाता

		रु०
१९५०		
मार्च ३१	रोकड़ खाता	१,३२५
जुलाई ७	,, ,,	४११
अक्तूबर २१	पी० दास एन्ड कं०	७,५३६

स्कन्ध खाता

		रु०
१९५०		
जनवरी १	शेष नी०/ला०	२५,७८०

इन खातों को नकल तथा पूर्ण करके निम्न सूचनाओं को ध्यान मे रखते हुये ३१ दिसम्बर १९५० को बन्द करो —

(अ) २१ अक्तूबर १९५० को भवन मरम्मत खाते की नाम की राशि मे ४,५०० रु० एक छोटे गोदाम के भवन की लागत सम्मिलित है।

(ब) दिसम्बर १९५० में हुई भवन की मरम्मत का, ७४८ रु० का एक बिल, ३१ दिसम्बर १९५० को प्राप्त हुआ।

(स) ३१ दिसम्बर १९५० को स्कंध का मूल्य २७,५०० रु० था।

उत्तर—भवन मरम्मत खाते का शेष ५,५२३ रु० तथा स्कंध खाते का शेष २७,५०० रु०।

९. एक व्यापारी के माल तथा लाभ-हानि खाते मे सकल लाभ ८,००० रु० तथा शुष्क लाभ (Net profit) ३,००० रु० था। अंकेक्षण के समय निम्न त्रुटियाँ पाई गई :—

(अ) अन्तिम स्कन्ध की गणना १०० रु० अधिक हुई।

(ब) २०० रु० का बिका माल ग्राहक से वापिस आया तथा स्कन्ध में सम्मिलित किया, परन्तु पुस्तकों में इसकी कोई प्रविष्टि नहीं हुई।

(स) क्रय में नयी गाड़ी के लिये दी गई २,४०० रु० की राशि सम्मिलित है।

(द) व्यापारी द्वारा निकाले हुये १,५०० रु० स्थापन व्यय मे नाम लिख दिये गये हैं।

(य) वर्ष मे प्राप्त ५०० रु० विनियोगों का व्याज उपार्जित माना गया था।

उपर्युक्त त्रुटियों को सुधारने के लिये आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये तथा समायोजित माल तथा लाभ-हानि खाता तैयार कीजिये।

उत्तर—समायोजित स० ला० १०,००० रु०; शु० ला० ७,५०० रु०।

१०. ३१ दिसम्बर १९५० को तैयार किये गये एक संस्था के वार्षिक खातों में १२,५०० रु० की हानि थी। इन खातों को तैयार करते समय १९५० वें वर्ष मे निम्न बातें ध्यान में नहीं रक्खी गईं :—

(अ) एक उत्पादक पर जिससे माल खरीदा गया है संस्था के २,५०० रु० बोनस के वाजिब हैं।

(ब) १,००० विज्ञापन का खर्च आगे ले जाना है।

(स) एक ऋणदाता (Loan creditor) के ५०० रु० व्याज के वाजिब हैं।

(द) वर्ष में ५०० रु० की लागत का माल मुफ्त नमूनों के रूप में भेजा गया।

(य) ३१ दिसम्बर १९५० को एक पूर्तिकर्ता से माल (१००० रु०) प्राप्त हुआ व स्कन्ध में ले जाया गया परन्तु ४ जनवरी १९५१ तक क्रय बही में कोई प्रविष्टि नहीं की गई।

संस्था की पुस्तकों में उपर्युक्त व्यवहारों का लेखा करने के लिये आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये, तथा १९५० का संशोधित लाभ-हानि खाता तैयार कीजिये।

उत्तर—संशोधित शुष्क हानि १०,५०० रु०।

११. एक व्यापारी का १९५० वें वर्ष का निम्नलिखित माल खाता था—प्रारम्भिक स्कन्ध १५,००० रु० क्रय ७०,००० रु०; प्रत्यक्ष खर्चे ३५,००० रु०; विक्रय १,००,००० रु०; अन्तिम स्कंध २०,००० रु०।

(अ) बिके हुये माल की लागत तथा (ब) प्रत्यक्ष खर्चों के विक्रय पर प्रतिशत (Percentage on turnover) निकालिये। चूंकि इससे कोई लाभ नहीं होता, व्यापारी ने यह देखकर कि वह अपना विक्रय मूल्य नहीं बढ़ा सकता, २०,००० रु० द्वारा अपना विक्रय बढ़ाने का तथा, प्रत्येक लागत मद पर ५ रु० कम करके उसका विक्रय प्रतिशत घटाने का निश्चय किया। उपर्युक्त परिवर्तन के आधार पर १९५१ वें वर्ष का उसका माल खाता तैयार कीजिये।

उत्तर—१९५१ का सकल लाभ १२,००० रु०।

डूबत ऋण	२४	
प्राप्य बिल	११८	
देनदार	८५२	
	५,५४४	६,०७७

निम्नलिखित बातों का ध्यान रखते हुए उपर्युक्त तलपट संशोधित कीजिए—

(अ) २० दिसम्बर १९५० को बैंक से भुनाये हुए २४ रु० के एक बिल की खाता बही में कोई प्रविष्टि नहीं हुई। भुनाने का खर्च (१ रु०) किसी प्रकार ग्राहक के खाते में नाम लिख दिया गया।

(ब) विक्रय पुस्तक में ८९ रु० कम जुड़े हैं।

(स) ३१ दिसम्बर १९५० को दिखाई गई अधिविकर्ष की राशि को बैंक ने प्रमाणित किया।

(द) २०८ रु० का ऐक्स का आहरण खाता बही मे नहीं खताया गया है।

(य) १० रु० की बिक्री ग्राहक के खाते मे नहीं खताई गई।

उत्तर :—तलपट का योग ५,९५२ रु० ।

१६. एक हिसाब रखने वाले ने निम्नलिखित नाम का (so-called) 'तलपट' तैयार किया। तलपट के उन मदों का, जिनमें त्रुटियाँ हुई हैं और इसका ध्यान रखते हुये कि देनदारों पर ५% डूबत ऋण सचय करना है, १०० रु० कार्यालय खर्च के अदत्त हैं तथा कल व यन्त्र पर १०% ह्रास का प्रबन्ध करना है, माल व लाभ-हानि खाता तथा चिट्ठा तैयार कीजिये :—

	रु०	रु०
पूँजी		८,०००
आहरण	४२०	
विविध लेनदार		१,६७०
विविध देनदार	२,५००	
स्कन्ध १ जनवरी १९५०		१,७००
स्कन्ध ३१ दिसम्बर १९५०	१,९६०	
बैंक	७६०	
क्रय	१२,१२०	
विक्रय वापिसी		३००
क्रय वापिसी	६१०	
सुपुर्दगी व्यय	८००	
वेतन	१,२५०	
विक्रय		१९,६००
क्रय पर बट्टा	३५०	
विक्रय पर बट्टा		१४०
डूबत ऋण	१००	
कल व यन्त्र	८,७००	
डूबत ऋण संचय	२००	
कार्यालय खर्च	१,४००	
किराया व दर	५४०	
	३१,७१०	३१,७१०

उत्तर :—सकल लाभ ८,३५० रु०; कुल लाभ ३,५७५ रु०; चिट्ठा १२,६२५ रु० ।

१७. ३१ दिसम्बर १९४९ को एक फर्म के चिट्ठे में २१२ रु० का पूर्वदत्त बीमा दिखाया गया था। आगामी वर्ष में विभिन्न बीमों के निम्नलिखित देय उनकी तिथियों पर भुगताये गये:—

मार्च ३१ भवन पर अग्नि प्रव्याजि, ३०,००० पर १[illegible]% ।
जून ३० स्टॉक पर अग्नि प्रव्याजि, ४०,००० पर २[illegible]% ।
दिसम्बर १ कर्मचारी भक्ति प्रव्याजि, १२५ रु० ।

बीमा खाता तैयार करो जैसा कि वह ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष की पुस्तकें बन्द करने के पश्चात् प्रकट होगा।

उत्तर—३१ दिसम्बर १९५० को पूर्वदत्त बीमा ७२७ रु० ६ आ० ४ पा० ।

१२. एक व्यापारी अपने वार्षिक खाते ३१ दिसम्बर को बनाता है। अत्याज्य परिस्थितियों के कारण, ३१ दिसम्बर १६५० को स्कंध का मूल्य नहीं निकाला जा सका; तथा वास्तव में स्कध ४ जनवरी १६५१ को लिया गया। निम्नलिखित विवरण से, ३१ दिसम्बर १६५० को स्कंध का मूल्य निकालो :—

	रु०
(अ) ४-१-१६५१ को लिये गये स्टॉक की राशि	८५,६१५
(ब) १ से ४ जनवरी १६५१ तक के क्रय	४६८
(स) १ से ४ जनवरी १६५१ तक के विक्रय	१,५१०
(द) १ से ४ जनवरी १६५१ तक की विक्रय वापसी	२०
(य) ४ जनवरी १६५१ को प्राप्त तथा स्कन्ध में सम्मिलित माल, परन्तु जिसका बीजक प्राप्त नहीं हुआ व ६ जनवरी १६५१ को लिखा गया।	१७०
(फ) विक्रय पर सकल लाभ की औसत दर ३०%	

उत्तर :—३१ दिसम्बर १६५० को स्कन्ध ८६,२६० रु०।

१३. एक बस कम्पनी अपने भविष्य मे आने वाले यात्रियों को १७ (एक आना बट्टा कूपन) कूपन की पुस्तक पर, १ रु० की दर से बट्टे के कूपन निर्गमित करती है, जिसकी प्रत्येक कूपन बस के एक आने के टिकट में परिवर्तित की जा सकती है। १६५० वे वर्ष में २६,३८६ पुस्तके नकद बिकीं। उतने ही समय में बस कन्डक्टरों द्वारा यात्रिक रसीदों (way of traffic receipts) के संग्रह का योग निम्न हुआ।

८६,४१७ रु० ६ आ० वास्तविक रोकड़ में तथा
२१,०७२ रु० ६ आ० एक आने वाली बट्टे कूपनों में।
उपर्युक्त का बस की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियों द्वारा लेखा करो।

उत्तर :—अदत्त बट्टा कूपन ५,३१६ रु० ७ आ०।
बट्टा खाता (नाम) १,२३६ रु० ६ आ०।

१४. १ जनवरी १६५० को, एक फर्म की पुस्तकों में ऐक्स के खाते का १५४ रु० १० आ० नाम शेष था। तदनन्तर निम्नलिखित व्यवहार हुये—

(अ) १० जनवरी को, ऐक्स ने ४०० रु० का उधार माल खरीदा।
(ब) १३ जनवरी को, उसने ५० रु० का माल नमूने जैसा न होने के कारण वापिस किया।
(स) ५ फरवरी को उसने अपने खाते पूर्ण भुगतान में ५% बट्टा काटकर, जोकि एक माह के समझौते पर जनवरी के क्रय पर था, एक चैक भेजा।
(द) १८ मई को, उसने १,००० रु० भविष्य के क्रय के लिए, इस बात को ध्यान में रखते हुए कि वह सकल क्रय पर जोकि उसके धन द्वारा पर्याप्त होगा १० प्रतिशत बट्टा प्राप्त करेगा, जमा किय।
(य) २३ जून को उसने ४०० रु० के मूल्य के माल के लिए; १७ अगस्त को ५०० के मूल्य के माल के लिए; तथा २६ अगस्त को ६०० रु० के मूल्य के माल के लिए आर्डर दिया।
(फ) नवम्बर में ऐक्स दिवालिया घोषित कर दिया गया तथा उसके स्थिति विवरण से पता लगता है कि लेनदारों को सम्भवतः रुपये में चार आने प्राप्त होंगे। ३१ दिसम्बर १६५० को पुस्तकें बन्द करते हुए अनुमानित हानि अपलिखित करदी गई।
(ज) १ जनवरी १६५१ को दिवाले में पूर्ण समझौते पर प्राप्तकर्ता (Receiver) से १०२ रु० १२ आ० का चैक प्राप्त हुआ।

फर्म की पुस्तकों मे ऐक्स का खाता लिखो।

उत्तर :—डूबत ऋण २ रु० १२ आ०।

१५. ३१ दिसम्बर १६५० को ऐक्स का निम्नलिखित तलपट है :—

	रु०		रु०
बैंक	१२६	पूँजी	६५०
यन्त्र	४५२	स्कन्ध १-१-१६५० को	३६०
फर्नीचर	७८	विक्रय	४,६२२
क्रय	२,२४२	लेनदार	४५५
वेतन	३१२		
किराया	१००		
मजदूरी	१,१३५		
सामान्य खर्चे	१०५		

डूबत ऋण	२४	
प्राप्य बिल	११८	
देनदार	८५२	
	५,५४४	६,०७७

निम्नलिखित बातों का ध्यान रखते हुए उपर्युक्त तलपट संशोधित कीजिए—

(अ) २० दिसम्बर १९५० को बैंक से भुनाये हुए २४ रु० के एक बिल की खाता वही में कोई प्रविष्टि नहीं हुई। भुनाने का खर्च (१ रु०) किसी प्रकार ग्राहक के खाते में नाम लिख दिया गया।

(ब) विक्रय पुस्तक में ८९ रु० कम जुड़े हैं।

(स) ३१ दिसम्बर १९५० को दिखाई गई अधिविकर्ष की राशि को बैंक ने प्रमाणित किया।

(द) २०८ रु० का ऐक्स का आहरण खाता वही में नहीं खताया गया है।

(य) १० रु० की बिक्री ग्राहक के खाते में नहीं खताई गई।

उत्तर :—तलपट का योग ५,९५२ रु०।

१६ एक हिसाब रखने वाले ने निम्नलिखित नाम का (so-called) 'तलपट' तैयार किया। तलपट के उन मदों का, जिनमें त्रुटियाँ हुई है और इसका ध्यान रखने हुये कि देनदारों पर ५% डूबत ऋण सचय करना है, १०० रु० कार्यालय खर्च के अदत्त हैं तथा कल व यन्त्र पर १०% ह्रास का प्रबन्ध करना है, माल व लाभ-हानि खाता तथा चिट्ठा तैयार कीजिये :—

	रु०	रु०
पूँजी		८,०००
आहरण	४२०	
विविध लेनदार		१,६७०
विविध देनदार	२,५००	
स्कन्ध १ जनवरी १९५०		१,७००
स्कन्ध ३१ दिसम्बर १९५०	१,९६०	
बैंक	७६०	
क्रय	१२,१२०	
विक्रय वापिसी		३००
क्रय वापिसी	६१०	
सुपुर्दगी व्यय	८००	
वेतन	१,२५०	
विक्रय		१९,९००
क्रय पर बट्टा	२५०	
विक्रय पर बट्टा		१४०
डूबत ऋण	१००	
कल व यंत्र	८,७००	
डूबत ऋण संचय	२००	
कार्यालय खर्च	१,४००	
किराया व दर	५४०	
	३१,७१०	३१,७१०

उत्तर :—सकल लाभ ८,३५० रु०; कुल लाभ ३,५७५ रु०; चिट्ठा १२,९२५ रु०।

१७. ३१ दिसम्बर १९४९ को एक फर्म के चिट्ठे में २१२ रु० का पूर्वदत्त बीमा दिखाया गया था। आगामी वर्ष में विभिन्न बीमों के निम्नलिखित प्रव्याजि उनकी तिथियों पर चुकाये गये:—

मार्च ३१ भवन पर अग्नि प्रव्याजि, ३०,००० पर १½%।
जून ३० स्टॉक पर अग्नि प्रव्याजि, ४०,००० पर २½%।
दिसम्बर १ कर्मचारी क्षति प्रव्याजि, १२५ रु०।

बीमा खाता तैयार करो जैसा कि वह ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष की पुस्तकें बन्द करने के पश्चात् प्रकट होगा।

उत्तर—३१ दिसम्बर १९५० को पूर्वदत्त बीमा ७२७ रु० १ आ० ४ पा०।

१८. निम्नलिखित अंक एक फर्म के लाभ-हानि खाते से जिसका हिसाब का वर्ष ३१ दिसम्बर को समाप्त होता है, उद्धृत किए गए हैं :—

	१९४०	१९५०
	रु०	रु०
विक्रय	१,०४,०००	१,२०,०००
सकल लाभ	२७,०००	३०,०००
स्कंध ३१ दिसम्बर को (लागत से १०% कम पर मूल्यांकित)	३८,७००	४५,०००

दोनों वर्षों के विक्रय पर शुद्ध लाभ की प्रतिशत निकालो। यदि फर्म ३१ दिसम्बर १९५० को तथा भविष्य में लागत से १०% कम के स्थान पर लागत पर स्कंध का मूल्याकन करे, तब १९५० वे वर्ष का शुद्ध लाभ तथा उसके प्रतिशत का विक्रय पर परिवर्तन का प्रभाव दिखलाते हुए संशोधित लाभ-हानि खाता तैयार कीजिए।

उत्तर—२५.९६% तथा २५%। संशोधित लाभ-हानि खाते के अनुसार शुद्ध लाभ २५,००० रु० तथा विक्रय पर उसका प्रतिशत २९.१७% होगा।

१९. ३१ दिसम्बर १९५० को एक व्यापारी के विविध देनदार १२,५०० रु० थे जिनमें १५० रु० डूबत, १,००० रु० संदिग्ध व शेष अच्छे माने गये। १ जनवरी १९५० को उसकी पुस्तकों में ५०० रु० का डूबत ऋण संचय था। १९५० वे वर्ष में २५० रु० के ऋण वास्तव में डूबत अपलिखित किये गए तथा एक देनदार से जिसका खाता डूबत लिख दिया गया था, ७५ रु० प्राप्त हुये। सब डूबत ऋण अपलिखित करके ६% से डूबत ऋण संचय में वृद्धि करो तथा २% देनदारों के बट्टे के लिए संचय करो।

उपर्युक्त व्यवहारों का लेखा करने के लिए जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये।

उत्तर—डूबत ऋण संचय ७४१ रु०। बट्टा संचय २३२ रु० २ आ० १० पा०।

२०. एक व्यापारिक संस्था तीन वर्ष के अन्तर से एक विशेष नियमित विज्ञापन कार्यक्रम चलाती है, जिसका लाभ लगभग सब वर्षों पर समान होता है, अतः यह सोचा गया कि लाभ में से समान वार्षिक खर्चे काट लिये जायँ। यह प्रत्येक वर्ष ३,००० रु० जो कि १९४५ से प्रारम्भ हुए 'विज्ञापन उदरत खाते' में जमा किये जाते है निकाल कर किया गया। प्रत्येक वर्ष में विज्ञापन पर वास्तविक व्यय निम्न हुआ—

		रु०
वर्षान्त ३१ दिसम्बर	१९४५	१,०००
	१९४६	६,६००
	१९४७	७५०
	१९४८	६२५
	१९४९	५,२१५
	१९५०	६२५

उपर्युक्त वर्षों का विज्ञापन उदरत खाता बनाओ।

उत्तर—शेष २,८८५ रु० (जमा)

२१. १ जुलाई १९५० को, माल के बेचने के सम्बन्ध में ऐक्स ने वाई पर ५,००० का एक विनिमय-पत्र लिखा। बिल, जो कि तिथि के तीन माह बाद देय है अगले दिन स्वीकार कर लिया गया तथा ४ जुलाई को ५% प्रति वर्ष पर भुना लिया गया। थोड़े दिन के बाद दातव्य तिथि से पूर्व वाई ने ऐक्स को सूचना दी कि वह बिल का रुपया देने में असमर्थ है परन्तु १,००० रु० का प्रबन्ध कर सकता है। इसके अनुसार ऐक्स ने वाई पर वाजिब मूलधन के लिये चार १००० रु० वाले बिल जो क्रमशः दो तीन चार व छः माह बाद देय होंगे लिखे जिन पर वाई ५% प्रति वर्ष रोकड़ी व्याज देगा।

उपरोक्त व्यवहारों का ऐक्स की खाता बही में लेखा करो।

२२. ए ने १ जनवरी १९५१ को बी को १०,००० रु० का माल बेचा तथा उसी दिन उस राशि का बी पर तीन माह का एक बिल लिखा। दातव्य तिथि पर बिल अस्वीकृत हो गया तथा २५ रु० निकराई (Noting) व्यय दिया।

उसके बाद बी ने ६,००० रु० का ए द्वारा लिखा हुआ तीन माह का एक नया बिल स्वीकार किया तथा उसने ए को नये बिल के समय पर १२% प्रति वर्ष व्याज तथा ४,०२५ रु० रोकड़ी दिये। बिल का समय पर भुगतान हुआ।

ए की पुस्तकों में उपरोक्त व्यवहारों का लेखा करने के लिये जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये।

२३. २ फरवरी १९५१ को, ऐक्स ने वाई से १२,५०० रु० में एक मोतियों का हार खरीदा तथा समझौते में दो बिल स्वीकार किये, एक ५,००० रु० का २ माह बाद देय है व दूसरा ७,५०० रु० का तीन माह बाद

देय है। प्रथम बिल भुगतान की तिथि आने पर अदा हो गया, परन्तु द्वितीय बिल की देय तिथि पर वह समझौते द्वारा वापिस ले लिया गया तथा ऐक्स ने एक नया दो माह का बिल स्वीकार किया, उधार के विस्तार पर कोई खर्चा नहीं लिया गया।

ऐक्स की पुस्तकों में उपर्युक्त व्यवहारों का लेखा करने के लिये आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये।

२४. १ जनवरी १९५१ को, ए ने १,००० रु० का तीन माह का एक बिल लिखा व बी ने स्वीकार किया। ४ जनवरी १९५१ को, ए ने बिल को अपने बैंक से ६% प्रति वर्ष पर भुनाया तथा राशि का आधा भाग बी को भेजा। १ फरवरी १९५१ को बी ने ४०० रु० का तीन माह का एक बिल लिखा तथा ए ने स्वीकार किया। ४ फरवरी १९५१ को, बी ने अपने बैंक से बिल को ६% प्रति वर्ष पर भुनाया तथा राशि का आधा भाग ए को भेजा। वे दोनों बट्टे को समान रूप में बाँटने को राजी हुये।

भुगतान के समय ए ने अपनी स्वीकृति का भुगतान कर दिया परन्तु बी ने अस्वीकृत की और ए को इसे देना पड़ा। ए ने मूल राशि तथा ६% प्रति वर्ष ब्याज का, तीन माह का एक नया बिल लिखा व बी ने स्वीकार किया। १ जुलाई १९५१ को, बी दिवालिया हो गया तथा उससे रुपये में केवल ८ आने प्राप्त हुये।

उपर्युक्त व्यवहारों का ए के जर्नल में लेखा कीजिये।

उत्तर :—डूबत ऋण के लिये ए की हानि ३५७ रु० ८ आ०।

२५. १ अगस्त १९५० को, पी ने क्यू पर दो बिल प्रत्येक ३०० रु० के लिखे जिसने उन्हे समान व पारस्परिक हित के लिये स्वीकार किया, एक बिल दो माह बाद तथा दूसरा चार माह बाद देय है। ४ अगस्त को पी ने दोनों बिल ३% प्रति वर्ष पर भुनाये व आधी राशि क्यू को भेजी। प्रथम बिल के भुगतान पर पी ने १५० रु० अपने अनुपात के क्यू को भेजे, परन्तु दूसरे बिल के देय होने पर वह और राशि भेजने में असमर्थ रहा।

क्यू ने अपने द्रव्य-साधन द्वारा दूसरे बिल का भुगतान किया तथा पी पर शेष देय राशि का जो उस पर शेष है, ५% प्रतिवर्ष ब्याज सहित, तीन माह का एक बिल लिखा।

उपर्युक्त व्यवहारों का पी व क्यू दोनों की पुस्तकों में लेखा करने के लिये जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये।

२६. पुस्तकें मिलाते समय एक मुनीम को ज्ञात हुआ कि तलपट में ६६६ रु० ८ आ० का अन्तर है। अन्तर को उदन्त खाते में लिखकर पुस्तकें बन्द कर दी गई। उसके पश्चात् निम्न त्रुटियाँ पाई गई :—

(१) २,०८० रु० पुराने यंत्र के विक्रय की राशि विक्रय खाते मे खता दी गई थी।

(२) ४२ रु०, रामरतन से खरीदे हुए माल का मूल्य उसके खाते मे ४२० रु० से जमा कर दिया गया था।

(३) बैंक द्वारा वापिस किया हुआ एक १,६०० रु० का अस्वीकृत बिल बैंक खाते में जमा कर दिया गया व प्रा/बि० खाते में नाम लिख दिया गया।

(४) मथुराप्रसाद द्वारा दिया हुआ बट्टा १८ रु० ८ आ० उनके खाते में लिखा दिया गया परन्तु बट्टे खाते में नहीं खताया गया है।

(५) जानकीसरन को दिये गये ऋण के ४८० रु० देनदारों की सूची में सम्मिलित नहीं किये गये हैं।

(६) देव शर्मा का खाता ८५ रु० से, उसके द्वारा माल वापिस आने के कारण नाम लिख दिया गया है।

उपर्युक्त त्रुटियों का सुधार करने के लिये जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये तथा उदन्त खाता तैयार कीजिये।

उत्तर :—६६६ रु० ८ आ० उदन्त खाते में नाम शेष हैं।

२७ द्वि प्रविष्टि द्वारा रक्खी हुई पुस्तकों में निम्न त्रुटियाँ पाई गई :—

(अ) विक्रय पुस्तक का ५२० रु० का एक मद ग्राहक के खाते में ५०२ रु० से खताया गया है।

(ब) बैंक द्वारा अधिविकर्ष पर लिया गया ६० रु० ब्याज रोकड़ बही के बैंक स्तम्भ में नाम की ओर लिखा गया।

(स) ग्राहक द्वारा वापिस किया हुआ १५० रु० का माल विक्रय वापिसी बही में लिख लिया गया परन्तु खताया नहीं गया।

(द) ऐक्स को बैंक द्वारा १०० रु० का भुगतान, रोकड़ बही के रोकड़ स्तम्भ में जमा की ओर लिखा गया।

तलपट का योग कितनी राशि से भिन्न होगा।

उत्तर :—४८ रु० से कम नाम लिखा गया।

२८. ३० जून १९५१ को ऐक्स की पुस्तकों से तलपट नहीं मिलता तथा एक उदन्त खाता खोलकर तलपट मिला दिया गया। पुस्तकों की जाँच करने पर निम्न त्रुटियों का पता लगा :—

(अ) १०० रु० की मशीन की क्रय-राशि [illegible] खाते के नाम में लिखा दी गई।

(ब) रूई की बिक्री बही १० रु० से कम जोड़ी गई है।

१८. निम्नलिखित अंक एक फर्म के लाभ-हानि खाते से जिसका हिसाब का वर्ष ३१ दिसम्बर को समाप्त होता है, उद्धृत किए गए हैं :—

	१६४०	१६५०
	रु०	रु०
विक्रय	१,०४,०००	१,२०,०००
सकल लाभ	२७,०००	३०,०००
स्कंध ३१ दिसम्बर को (लागत से १०% कम पर मूल्यांकित)	३८,७००	४५,०००

दोनों वर्षों के विक्रय पर शुद्ध लाभ की प्रतिशत निकालो। यदि फर्म ३१ दिसम्बर १६५० को तथा भविष्य में लागत से १०% कम के स्थान पर लागत पर स्कंध का मूल्यांकन करे, तब १६५० वें वर्ष का शुद्ध लाभ तथा उसके प्रतिशत का विक्रय पर परिवर्तन का प्रभाव दिखलाते हुए संशोधित लाभ-हानि खाता तैयार कीजिए।

उत्तर—२५.६६% तथा २५%। संशोधित लाभ-हानि खाते के अनुसार शुद्ध लाभ ३५,००० रु० तथा विक्रय पर उसका प्रतिशत २६.१७% होगा।

१६. ३१ दिसम्बर १६५० को एक व्यापारी के विविध देनदार १२,५०० रु० थे जिनमें १५० रु० डूबत, १,००० रु० संदिग्ध व शेष अच्छे माने गये। १ जनवरी १६५० को उसकी पुस्तकों में ५०० रु० का डूबत ऋण सचय था। १६५० वें वर्ष में २५० रु० के ऋण वास्तव में डूबत अपलिखित किये गए तथा एक देनदार से जिसका खाता डूबत लिख दिया गया था, ७५ रु० प्राप्त हुये। सब डूबत ऋण अपलिखित करके ६% से डूबत ऋण संचय में वृद्धि करो तथा २% देनदारों के बट्टे के लिए संचय करो।

उपर्युक्त व्यवहारों का लेखा करने के लिए जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये।

उत्तर—डूबत ऋण संचय ७४१ रु०। बट्टा संचय २३२ रु० २ आ० १० पा०।

२०. एक व्यापारिक संस्था तीन वर्ष के अन्तर से एक विशेष नियमित विज्ञापन कार्यक्रम चलाती है, जिसका लाभ लगभग सब वर्षों पर समान होता है, अत. यह सोचा गया कि लाभ में से समान वार्षिक खर्चे काट लिये जायँ। यह प्रत्येक वर्ष ३,००० रु० जो कि १६४५ से प्रारम्भ हुए 'विज्ञापन उदरत खाते' में जमा किये जाते हैं निकाल कर किया गया। प्रत्येक वर्ष में विज्ञापन पर वास्तविक व्यय निम्न हुआ—

		रु०
वर्षान्त ३१ दिसम्बर	१६४५	१,०००
	१६४६	६,६००
	१६४७	७५०
	१६४८	६२५
	१६४६	५,२१५
	१६५०	६२५

उपर्युक्त वर्षों का विज्ञापन उदरत खाता बनाओ।

उत्तर—शेष २,८८५ रु० (जमा)

२१. १ जुलाई १६५० को, माल के बेचने के सम्बन्ध में ऐक्स ने वाई पर ५,००० का एक विनिमय-पत्र लिखा। बिल, जो कि तिथि के तीन माह बाद देय है अगले दिन स्वीकार कर लिया गया तथा ४ जुलाई को ५% प्रति वर्ष पर भुना लिया गया। थोड़े दिन के बाद दातव्य तिथि से पूर्व वाई ने ऐक्स को सूचना दी कि वह बिल का रुपया देने में असमर्थ है परन्तु १,००० रु० का प्रबन्ध कर सकता है। इसके अनुसार ऐक्स ने वाई पर वाजिब मूलधन के लिये चार १००० रु० वाले बिल जो क्रमशः दो तीन चार व छः माह बाद देय होंगे लिखे जिन पर वाई ५% प्रति वर्ष रोकड़ी व्याज देगा।

उपरोक्त व्यवहारों का ऐक्स की खाता बही में लेखा करो।

२२. ए ने १ जनवरी १६५१ को बी को १०,००० रु० का माल बेचा तथा उसी दिन उस राशि का बी पर तीन माह का एक बिल लिखा। दातव्य तिथि पर बिल अस्वीकृत हो गया तथा २५ रु० लिखाई (Noting) व्यय दिया।

उसके बाद बी ने ६,००० रु० का ए द्वारा लिखा हुआ तीन माह का एक नया बिल स्वीकार किया तथा उसने ए को नये बिल के समय पर १२% प्रति वर्ष व्याज तथा ४,०२५ रु० रोकड़ी दिये। बिल का समय पर भुगतान हुआ।

ए की पुस्तकों में उपरोक्त व्यवहारों का लेखा करने के लिये जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये।

२३. ३ फरवरी १६५१ को, ऐक्स ने वाई से १२,५०० रु० में एक मोतियों का हार खरीदा तथा समझौते में दो बिल स्वीकार किये, एक ५,००० रु० का २ माह बाद देय है व दूसरा ७,५०० रु० का तीन माह बाद

देय है। प्रथम विल भुगतान की तिथि आने पर अदा हो गया, परन्तु द्वितीय विल की देय तिथि पर वह समझौते द्वारा वापिस ले लिया गया तथा ऐक्स ने एक नया दो माह का विल स्वीकार किया, उधार के विस्तार पर कोई खर्चा नहीं लिया गया।

ऐक्स की पुस्तकों में उपर्युक्त व्यवहारों का लेखा करने के लिये आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये।

२४. १ जनवरी १९५१ को, ए ने १,००० रु० का तीन माह का एक बिल लिखा व बी ने स्वीकार किया। ४ जनवरी १९५१ को, ए ने बिल को अपने बैंक से ६% प्रति वर्ष पर भुनाया तथा राशि का आधा भाग बी को भेजा। १ फरवरी १९५१ को बी ने ४०० रु० का तीन माह का एक विल लिखा तथा ए ने स्वीकार किया। ४ फरवरी १९५१ को, बी ने अपने बैंक से बिल को ६% प्रति वर्ष पर भुनाया तथा राशि का आधा भाग ए को भेजा। वे दोनों बट्टे को समान रूप में बाँटने को राजी हुये।

भुगतान के समय ए ने अपनी स्वीकृति का भुगतान कर दिया परन्तु बी ने अस्वीकृत की और ए को इसे देना पड़ा। ए ने मूल राशि तथा ६% प्रति वर्ष ब्याज का, तीन माह का एक नया बिल लिखा व बी ने स्वीकार किया। १ जुलाई १९५१ को, बी दिवालिया हो गया तथा उससे रुपये में केवल ८ आने प्राप्त हुये।

उपर्युक्त व्यवहारों का ए के जर्नल में लेखा कीजिये।

उत्तर:—डूबत ऋण के लिये ए की हानि ३५७ रु० ८ आ०।

२५. १ अगस्त १९५० को, पी ने क्यू पर दो बिल प्रत्येक ३०० रु० के लिखे जिसने उन्हे समान व पारस्परिक हित के लिये स्वीकार किया, एक बिल दो माह बाद तथा दूसरा चार माह बाद देय है। ४ अगस्त को पी ने दोनों बिल ३% प्रति वर्ष पर भुनाये व आधी राशि क्यू को भेजी। प्रथम बिल के भुगतान पर पी ने १५० रु० अपने अनुपात के क्यू को भेजे, परन्तु दूसरे बिल के देय होने पर वह और राशि भेजने में असमर्थ रहा।

क्यू ने अपने द्रव्य-साधन द्वारा दूसरे बिल का भुगतान किया तथा पी पर शेष देय राशि का जो उस पर शेष है, ५% प्रतिवर्ष ब्याज सहित, तीन माह का एक बिल लिखा।

उपर्युक्त व्यवहारों का पी व क्यू दोनों की पुस्तकों में लेखा करने के लिये जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये।

२६. पुस्तकें मिलाते समय एक मुनीम को ज्ञात हुआ कि तलपट में ६६६ रु० ८ आ० का अन्तर है। अन्तर को उचन्त खाते में लिखकर पुस्तकें बन्द कर दी गई। उसके पश्चात् निम्न त्रुटियाँ पाई गई:—

(१) २,०८० रु० पुराने यंत्र के विक्रय की राशि विक्रय खाते में खता दी गई थी।

(२) ४२ रु०, रामरतन से खरीदे हुए माल का मूल्य उसके खाते में ४२० रु० से जमा कर दिया गया था।

(३) बैंक द्वारा वापिस किया हुआ एक १,६०० रु० का अस्वीकृत बिल बैंक खाते में जमा कर दिया गया व प्रा/बि० खाते मे नाम लिख दिया गया।

(४) मथुराप्रसाद द्वारा दिया हुआ बट्टा १८ रु० ८ आ० उनके खाते में दिखा दिया गया परन्तु बट्टे खाते मे नहीं खताया गया है।

(५) जानकीसरन को दिये गये ऋण के ४८० रु० देनदारों की सूची में सम्मिलित नहीं किये गये हैं।

(६) देव शर्मा का खाता ८५ रु० से, उसके द्वारा माल वापिस आने के कारण नाम लिख दिया गया है।

उपर्युक्त त्रुटियों का सुधार करने के लिये जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये तथा उचन्त खाता तैयार कीजिये।

उत्तर:—६६६ रु० ८ आ० उचन्त खाते में नाम शेष हैं।

२७ द्वि प्रविष्टि द्वारा रक्खी हुई पुस्तकों में निम्न त्रुटियाँ पाई गई:—

(अ) विक्रय पुस्तक का ५२० रु० का एक मद ग्राहक के खाते में ५०२ रु० से खताया गया है।

(ब) बैंक द्वारा अधिविकर्ष पर लिया गया ६० रु० ब्याज रोकड़ बही के बैंक स्तम्भ में नाम की ओर लिखा गया।

(स) ग्राहक द्वारा वापिस किया हुआ १५० रु० का माल विक्रय वापिसी बही में लिख लिया गया परन्तु खताया नहीं गया।

(द) ऐक्स को बैंक द्वारा ९०० रु० का भुगतान, रोकड़ बही के रोकड़ स्तम्भ में जमा की ओर लिखा गया।

तलपट का योग कितनी राशि से विरुद्ध होगा।

उत्तर:—४८ रु० से कम नाम लिखा गया।

२८. ३० जून १९५१ को ऐक्स की पुस्तकों से उद्धृत तलपट नहीं मिलता तथा एक उचन्त खाता खोलकर अन्तर लिख दिया गया। पुस्तकों की व्यापक जाँच से निम्न त्रुटियों का पता लगा:—

(अ) १०० रु० की [illegible] खाते के नाम में खता दी गई।

(ब) नई की विक्रय बही १० रु० से कम जोड़ी गई है।

(स) जून में १२० रु० प्राप्त वट्टा बट्टे खाते के गलत ओर खता दिया गया।

(द) जे० वर्डी की १० रु० ५ आ० की बिक्री विक्रय पुस्तक मे ठीक लिखी गई, परन्तु जे० वर्डी के खाते में ५ रु० १० आ० से जमा की ओर खताई गई।

(य) यंत्र खाते के मरम्मत के लिये दिये गये ५ रु० छोटी रोकड़ बही के जिसका योग खता दिया गया था, योग मे लिख दिये गये, परन्तु वह उपर्युक्त विश्लेषण स्तम्भ मे दिखाई नहीं गई थी।

इन त्रुटियों के सुधार ने पुस्तकों को बैलेंस के योग्य बना दिया। सुधार के लिये आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये तथा साराश मे उदरत खाते की मूल प्रविष्टि की राशि दिखलाइये।

उत्तर :—उदरत खाते में मूल प्रविष्टि (जमा) ४२६ रु० १ आ०।

चालान तथा संयुक्त साहस

२६. १ जुलाई १९५० को, ऐक्स ने वाई को, १२० रु० लागत वाली ५० साइकिलें १६० रु० की दर से नकली बीजक पर, ४२० रु० किराया आदि देकर चालान पर भेजीं।

१० अक्तूबर को वाई ने एक विक्रय विवरण (Account Sales) भेजा जिसके अनुसार १६ साइकिलों से २०० रु० प्रति तथा २५ से १६० रु० प्रति की वसूली हुई, तथा ९ साइकिले विना बिकी स्कंध मे हैं। वाई ने अपने खाते के सम्बन्ध मे ६,००० रु० का एक बैंक ड्राफ्ट भेजा।

वाई ७½% विक्रय कमीशन लेने का अधिकारी है, जिसमे चालान पर हुए सब खर्चे सम्मिलित हैं।

ऐक्स व वाई की पुस्तकों मे खाते बनाइये।

उत्तर—लाभ २,०८१ रु० २ आ० ५ पा०।

३० बम्बई के बी ने कलकत्ते के सी को ५,००० रु० के मूल्य का कटपीस का कपड़ा भेजा, जिस पर उसने १०० रु० भाड़े व अन्य खर्चे के दिये। बी ने सी पर दो माह का २,००० रु० का चालान के लिये पेशगी बिल लिखा, जिसे सी ने स्वीकार किया।

बी ने उस बिल को अपने बैंक से ५% प्रति वर्ष पर भुनाया। बी को सी से एक विक्रय-विवरण मिला जिसके अनुसार चालान पर ७,५०० रु० की वसूली हुई, जिसमें से ५० रु० खर्चे के तथा सकल राशि का ३% सी का कमीशन काट लिया गया था। सी ने शेष देय राशि का एक ड्राफ्ट भेजा।

इन व्यवहारों को बी की खाता वही में लिखो।

उत्तर—लाभ २,१०८ रु० ५ आ० ४ पा०।

३१. १५ अप्रैल १९५१ को, बम्बई की पटेल एण्ड कं० ने आगरा के पौपूलर स्टोर को कमीशन पर बेचने के लिये कटपीस के ५० सदूक भेजे। भेजे हुए माल की लागत ६०० रु० प्रति सदूक है।

इस सम्बन्ध में चालान करने वाले ने चालान पर १०० रु० भाड़े के दिये तथा चालान पाने वाले ने ८५० रु० रेलवे किराया, चुङ्गी तथा अन्य खर्चे के दिये।

एजेन्ट ने १५ सन्दूक ६५० रु० प्रति सन्दूक के हिसाब से, १५ सन्दूक ८०० रु० प्रति संदूक के हिसाब से तथा शेष ७८० रु० प्रति सन्दूक के हिसाब से बेचे व १ जून १९५१ को उसने चालान करने वाले को देय राशि का, ४५० रु० दलाली तथा विक्रय का ४ प्रतिशत कमीशन काटकर, एक चैक तथा विक्रय-विवरण भेजा।

उपर्युक्त व्यवहारों का पटेल एन्ड क० की पुस्तकों में लेखा करने के लिए आवश्यक खाते बनाइये।

उत्तर—लाभ ५,८९६ रु०।

३२. १ अप्रैल १९५० को, बम्बई के भारत ड्रग हाउस लि० ने अपने दिल्ली के एजेन्ट को दवाइयों के ९० डिब्बे १६,२०० रु० का नकली बीजक (लागत पर २०% सहित) बनाकर तथा २,१०० रु० किराये व बीमा के देकर एक चालान भेजा।

रास्ते में १५ डिब्बे खो गये तथा चालान करने वाले को २० जून १९५० को २,७५० रु० रेलवे कम्पनी से प्राप्त हुए।

दिल्ली पहुँचने पर एजेन्ट ने ६०० रु० चुङ्गी व भाड़े के दिये। २० दिसम्बर १९५० को एजेन्ट ने विक्रय विवरण भेजा जिसमें ५० डिब्बों के मूल्य से प्राप्त १२,००० रु० की बिक्री दिखाई गई है। उसका ७,५०० रु० का चैक बम्बई में ३० दिसम्बर १९५० को प्राप्त हुआ।

एजेन्ट वितरण के खर्चों का जो ९०० रु० है तथा ५% कमीशन व १% परिशोध कमीशन लेने का अधिकारी है।

चालान करने वाले की पुस्तकों में, जिसका हिसाब प्रतिवर्ष ३१ दिसम्बर तक बनाया जाता है, चालान खाता बनाइये।

उत्तर—लाभ १,४६२ रु० ५ आ० ४ पा०।

३३. ए व बी ने अपने लाभ तथा हानि क्रमशः $\frac{२}{३}$, $\frac{१}{३}$ के अनुपात में बाँटते हुये गुड़ के संयुक्त साहस में प्रवेश किया। साहस काल में उनके रोकड-भुगतान पर ६% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज जमा किया जायगा।

१ मार्च १९५१ को, ए ने संयुक्त बैंक खाते में ५०,००० रु० जमा किये तथा बी ने २०,००० रु० के लिये स्वीकृति दी जो १९,८०० रु० में भुनाई गई।

५ मार्च १९५१ को, ६५,००० रु० का रोकडी गुड़ खरीदा तथा विक्रय के लिये एजेन्ट के पास कलकत्ता भेजा, उस पर १,२५२ रु० खर्चे के अदा किये। कलकत्ते में चालान ७४,४०० रु० का बिका। इस राशि में से २,१४० रु० खर्चों के तथा २½% कमीशन घटाया जाना है।

१ मई १९५१ को, कलकत्ते के एजेन्ट से उस पर देय राशि प्राप्त हुई व साहस समाप्त हुआ।

साहस का परिणाम दिखाते हुए आवश्यक खाते बनाइये।

उत्तर—लाभ ए २,३०० रु०; बी १,१५० रु०।

३४. एक अन्वेषण करके एक सिन्डीकेट को बेचने के लिये ऐक्स व वाई साझेदारी में प्रविष्ट हुये और लाभ हानि समान अनुपात में बाँटने का निश्चय किया। परिणाम के विभाजन से पूर्व साझीदारों की पूँजी पर कोई ब्याज नहीं दिया जाना था। प्रयोगों की लागत के लिये ऐक्स ने ३,००० रु० व वाई ने १,५०० रु० दिये। वाई ने अपनी वैयक्तिक सेवा अवैतनिक दी।

आवश्यक प्रयोगों के पूर्ण होने पर, क्रय व खर्चे ४,७८० रु० की राशि के निकले। ऐक्स ने फिर ५०० रु० पेशगी दिये व वाई ने ४०० रु० एकस्व शुल्क इत्यादि के दिये।

उन्होंने अन्वेषण एक सिन्डीकेट को बेचा जिसके लिए उन्हें १०,००० रु० नकद तथा १० रु० वाले सिन्डीकेट के १०० पूर्ण दत्त अंश मिले।

साझेदारी का अन्त करने पर वाई ने माल का स्कन्ध ३६० रु० में लेने का तथा अदत्त दायित्व (यदि कोई हों) का भुगतान करने का निश्चय किया। ऐक्स ने १०० पूर्णदत्त अंशों को ५०० रु० के मूल्यांकन पर लेने का निश्चय किया।

साझेदारी के अन्त पर आवश्यक खाते तैयार कीजिये।

उत्तर- लाभ ५,६८० रु०; पूँजी खाते : ऐक्स ५,८४० रु०, वाई ४,३८० रु०।

वर्गीय संतुलन

३५. व्यवहारिक प्रारम्भिक पुस्तकों से उद्धृत निम्नलिखित विवरण एक फर्म के मई १९५१ के विक्रय खाता बही के व्यवहारों के बारे में बतलाते हैं :—

		रु०	आ०	पा०
शेष ३०-४-१९५१ को (नियन्त्रण द्वारा मिला हुआ)	नाम	६,३२०	१२	०
	जमा	१११	१२	०
विक्रय		५,१९७	१४	०
विक्रय वापिसी		७४	२	०
प्राप्त रोकड़		४,६७०	६	०
बट्टा दिया		२१३	२	०
डूबा ऋण अपलिखित		४७	८	०
रोकड़ वापिसी (Refunds)		३३	८	०
विक्रय खाता बही के मद, क्रय खाता बही के खातों के नाम पक्ष में हस्तान्तरित		७६	०	०
विक्रय खाता बही से उद्धृत शेष ३१-५-१९५१ को	नाम	६,४०४	०	०
	जमा	४३	०	०

माह का विक्रय खाता बही नियन्त्रण खाता बनाओ तथा उसके बाद अन्तर की राशि निकालो।

उत्तर—अन्तर (जमा आधिक्य) [illegible] रु०।

३६. एक फर्म अपनी विक्रय खाता बही स्वयंसिद्ध रूप से रखता है तथा प्रत्येक माह के अन्त में उसकी शुद्धता की जाँच करता है। निम्नलिखित सूचना से मार्च १९५१ के माह की जाँच के लिये उपयुक्त खाता तैयार कीजिये :—

	रु०
२८ फरवरी १९५१ को कुल नाम शेष	३२,५१०
२८ फरवरी १९५१ को कुल जमा शेष	३३०
मार्च १९५१ की [illegible]	३३,२४०

मार्च १९५१ की क्रय वापिसी बही का योग	७६०
मार्च १९५१ की दे०/वि० बही का योग	२,०००
मार्च १९५१ में दी गई रोकड तथा प्राप्त बट्टे का योग	१०,६००
क्रय खाता बही के नाम पक्ष से विक्रय खाता बही के जमा पक्ष को हस्तान्तरण	९७०
एक अधिदेय (overdue) खाते पर लेनदार को जमा किया हुआ ब्याज	५०
एक १५० रु० का पुराना जमा शेष जिसका पावना नहीं हुआ है।	
सामान्य खाता बही के अवास्तविक खाते में हस्तान्तरित किया।	

उत्तर—क्रय खाता बही समायोजन खाते का शेष (क्रे०) १२,९५० रु०।

३७. एक व्यापारिक संस्था ने अपनी पुस्तकों का शेष निकालने की सुविधा के लिये अपनी विक्रय खाता बही को वर्णमाला के क्रमानुसार दो भागों में विभाजित किया (क्रमशः A—L तथा M—Z) प्रत्येक सामान्य खाता बही के समायोजन खातों द्वारा स्वकीय संतुलित है।

१ जनवरी १९५० को इन खातों में निम्न शेष थे :—

A—L विक्रय खाता बही सामायोजन खाता नाम ५,३६७ रु० तथा जमा ११९ रु०।

M—Z विक्रय खाता बही सामायोजन खाता नाम ३,८४६ रु० तथा जमा २९ रु०।

१९५० में व्यवहारों से प्रभावित बहियों का साराश निम्न है :—

	A—L बही	M—Z बही
	रु०	रु०
उधार विक्रय	४१,५८३	३५,११७
वापिसी व घटौती (Allowance)	६४१	४५१
प्राप्त रोकड़	३८,३९८	३२,५४०
डूबत अपलिखित किये हुये खाते से प्राप्त रोकड़, उपर्युक्त में सम्मिलित	४९	१४
बट्टा दिया	७३५	६०८
प्राप्त विनिमय पत्र	२,२५०	७७५
अपलिखित डूबत ऋृण	३१५	४२३

वर्ष में एक ग्राहक, सी० एल० बैरी ने, जिसके खाते में १५ रु० नाम में है, अपना नाम सी० एल० महगेत्रा कर लिया। अतः उसका खाता नये नाम से M—Z बही में हस्तान्तरित कर दिया।

३१ दिसम्बर १९५० को, कुल जमा शेष A—L बही में ८४ रु० तथा M—Z बही में ४३ रु० है।

दो समायोजन खाते बनाओ तथा उनके शेष निकालो।

उत्तर :— A—L विक्रय खाता बही समायोजन खाते का शेष नाम ४,६७० रु० तथा जमा ८४ रु०; M- Z विक्रय खाता बही समायोजन खाते का शेष नाम ४,२०९ रु० तथा जमा ४३ रु०।

३८. ए अपने खातों में वर्गीय सतुलन का प्रयोग करता है। ३१ दिसम्बर १९५० को पुस्तके बन्द करते समय, वह निम्नलिखित समायोजन करना चाहता है :—

(अ) विक्रय खाता बही में उसके नाम का शेष ५०० रु०; सामान्य खाता बही में उसके आहरण खाते में हस्तान्तरित करना है।

(ब) विक्रय खाता बही के निम्न नाम शेष डूबत ऋृण लिखन है। ऐक्स १५० रु०, वाई ७५० रु०।

(स) के० का क्रय खाता बही में २५० रु० का जमा शेष, विक्रय खाता बही में के० के खाते के जमा शेष में हस्तान्तरित करना है।

उपर्युक्त का समायोजन करने के लिये आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये।

३९. पारिख एण्ड क० की पुस्तकों में (अ) १,०५० रु० का फिलिप एण्ड सन्स पर देय नाम शेष (विक्रय खाता बही) तथा (ब) फिलिप एण्ड सन्स को देय ५,००० रु० का दायित्व (क्रय खाता बही) है। दोनों खातों पर रोकड़ बट्टा क्रमश २½ व ५ प्रतिशत है।

पारिख एण्ड कं० ने अपने ऊपर देय शेष का, दोनों खातों का बट्टा अपने खातों में लेकर चैक द्वारा भुगतान किया।

वर्गीय संतुलन क्रय व विक्रय खाता बही दोनों में प्रयोग होता है। वर्गीय संतुलन रखते हुये उपर्युक्त का लेखा किस प्रकार होगा?

उत्तर :—वर्गीय संतुलन रखते हुये फिलिप एण्ड कम्पनी का भुगतान व प्राप्ति का लेखा रोकड़ पुस्तक के दोनों ओर होगा तथा क्रय व विक्रय खाता बही दोनों में लगाया जायगा।

इकहरा लेख

४०. एक व्यापारी ने १ जनवरी १९५० को ५,००० रु० की पूँजी से व्यापार प्रारम्भ किया। वह एक रोकड़ वही के अतिरिक्त, जिसका १९५० का साराश निम्न है, और कोई पुस्तक नहीं रखता :—

प्राप्ति :—विविध देनदारों से ६,५०० रु०; नकद विक्रय ३,५०० रु०; कमीशन २५० रु०।

भुगतान :—विविध लेनदारों को ७,८५० रु०; नकद क्रय ४,५०० रु०; व्यावारिक खर्च १,२०० रु०; फर्नीचर १०० रु०; दान ५० रु०।

३१ दिसम्बर १९५० को १९५० वें वर्ष से सम्बन्धित निम्न सूचनायें और प्राप्त हुईं : उधार बिक्री १२,००० रु०; उधार खरीद १०,२०० रु०; अदत्त व्यय १५० रु०; पूर्वदत्त व्यय ७५ रु०।

फर्नीचर पर १०% ह्रास व ५०० रु० डूबत ऋण अपलिखित करके ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ-हानि खाता तथा उसी तिथि का चिट्ठा तैयार कीजिये। ३१ दिसम्बर १९५० को स्कध का मूल्य २,२५० रु० था।

उत्तर :—लाभ १,४१५ रु०; चिट्ठा ८,९१५ रु०।

४१. एक व्यापारी ने १ जनवरी १९५० को ५०,००० रु० की पूँजी से व्यापार प्रारम्भ किया। वह केवल रोकड़ वही व एक व्यक्तिगत खाता वही रखता है। १९५० की रोकड़ वही का विश्लेषण करने पर निम्न बातें पता लगीं :—

देनदारों से प्राप्ति १,४०,००० रु०; नकद विक्रय ४२,००० रु०; लेनदारों को भुगतान १,००,००० रु०; खर्चे २२,००० रु०; व्यक्तिगत आहरण १०,००० रु०; नकद क्रय ३६,००० रु०।

३१ दिसम्बर १९५० को, स्कंध का मूल्य २०,००० रु० तथा देनदार व लेनदार क्रमशः १,२०,००० रु० व १,१०,००० रु० के थे।

२,००० रु० डूबत व सदिग्ध ऋण के लिये सचय करने के पश्चात् ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ-हानि खाता तथा उसी तिथि को चिट्ठा तैयार कीजिये।

उत्तर :—लाभ ५२,००० रु०; चिट्ठा २,०२,००० रु०।

४२. एक व्यापारी द्वारा केवल रोकड़ वही तथा व्यक्तिगत खाता वही रक्खी जाती है। उसका ३१ दिसम्बर १९४९ को निम्न चिट्ठा था—दूकान-भवन १,५६० रु०; फर्नीचर ४२० रु०; स्कध ८७६ रु०; देनदार ९८२ रु०; रोकड़ ३३ रु०; लेनदार ७२१ रु०।

३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष में उसके प्राप्ति व भुगतान का सारांश निम्न था :—

	रु०		रु०
उधार विक्रय पर प्राप्त रोकड़	४,२७६	लेनदार (माल खरीदा)	३,९५४
नकद बिक्री	१,८६३	मजदूरी	७४३
पूँजी (लाई हुई)	२००	सामान्य व्यय	६२७
		फर्नीचर में वृद्धि	१६०
		आहरण	५३६
	६,३३९		६,०२०

३१ दिसम्बर १९५० को लेनदारों को देय ८१६ रु० थे तथा देनदार व स्कंध क्रमशः ९१८ रु० व ८५४ रु० थे। निम्न समायोजना के पश्चात् ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का माल व लाभ-हानि खाता व उसी तिथि का चिट्ठा तैयार कीजिए।

(अ) फर्नीचर पर वृद्धि सहित १०% ह्रास अपलिखित करो।

(ब) १५० रु० सदिग्ध ऋण-संचय के लिये प्रबन्ध करना है।

(स) स्वामी को दिये गये ३८ रु० का माल ३१ दिसम्बर १९५० को देनदारों में सम्मिलित है।

उत्तर—सकल लाभ १,२६१ रु० ; कुल लाभ ४२६ रु० ; चिट्ठा ४,०१८ रु०।

४३. निम्नलिखित सूचना से एक फर्म का ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का माल व लाभ-हानि खाता तथा उसी तिथि को चिट्ठा तैयार कीजिए—

रोकड़ पुस्तक का सारांश

	बट्टा रु०	रोकड़ रु०		बट्टा रु०	रोकड़ रु०
शेष रोकड़		५०	लेनदारों को दिया	१२२	६,१२४

बैंक		१,१००	मजदूरी		२,६००
पुराने कल की बिक्री		५००	वेतन		७००
ग्राहकों से प्राप्त रोकड़	३७८	१२,६७१	आहरण : ऐक्स		५००
किराया		५०	वाई		५००
			सामान्य व्यय		२,२१३
			सम्पत्ति खरीदी		१,५००
			शेष ३१-१२-१९५० को रोकड		३४
			बैंक		२००
	३७८	१४,३७१		१२२	१४,३७१

अन्य खाते निम्न थे—

	३१-१२-१९४९	३१-१२-१९५०
	रु०	रु०
कल	३,०००	२,५००
स्कंध	१,७६४	३,६६३
देनदार	२,३१०	१,२६१
लेनदार	१,२२४	८१६
पूँजी : ऐक्स	३,०००	
वाई	४,०००	

पूँजी पर ५% व्याज देय है। कल, १ जनवरी १९५० के शेष पर १०% वार्षिक की दर से ह्रास करनी है। ३१ दिसम्बर १९५० को १० रु० प्राप्त होने वाला किराया अप्राप्य था।

उत्तर—सकल लाभ, ५,४६१ रु०; शुष्क लाभ १,७०२ रु०; चिट्ठा ८,८९८ रु०।

४४. ऐक्स व वाई समान लाभ बाँटते हुए साझीदार हैं व पूँजी पर ५% वार्षिक व्याज दिया जायगा, पुस्तकें इकहरे लेख के आधार पर रक्खी जाती है तथा क्रमशः ३१ दिसम्बर १९४९ व १९५० के विवरणों से निम्न सूचनाये प्राप्त होती हैं—

	१९४९	१९५०		१९४९	१९५०
	रु०	रु०		रु०	रु०
लेनदार	३३१	३४७	रोकड़	६३०	५१८
चालू खाते ऐक्स	३१८	२३०	देनदार	१,१२७	१,०४३
वाई	२७	७४	स्कंध	४,३६९	४,६७०
पूँजी खाते: ऐक्स	४,०००	४,०००	फर्नीचर	३५०	४२०
वाई	१,८००	२,०००			
	६,४७६	६,६५१		६,४७६	६,६५१

१९५० के कुल क्रय ९,१३० रु० व विक्रय १२,३३७ रु० थे। रोकड़ पुस्तक की जाँच करने पर पता चला कि ऐक्स के आहरण ९६० रु० व वाई के ७२० रु० थे, तथा २०० रु० की अतिरिक्त पूँजी वाई ने ३० जून १९५० को दी थी।

वर्ष के खर्चे, शुष्क लाभ (साझीदारों का व्याज देने से पूर्व) तथा ३१ दिसम्बर १९५० को चालू खातों के शेष मालूम करो।

उत्तर—वर्ष के खर्चे १,८९९ रु०; शुष्क लाभ व्याज देने से पूर्व १,६३९ रु०; चालू खातों के शेष ऐक्स २३० रु०, वाई ७४ रु०।

४५ ए व बी एक खिलौना,निर्माण व्यापार में साझीदार हैं, जो अपने लाभ-हानि बराबर-बराबर विभाजित करते हैं तथा उनकी पूँजी भी बराबर-बराबर है। १ जुलाई १९५० को उनकी आर्थिक स्थिति निम्न थी :—

रोकड़ हस्ते २० रु०; विविध देनदार ५,१०० रु०; स्कन्ध ३,२८०; कल व यंत्र ६,२५० रु०; फर्नीचर २५० रु०; विविध लेनदार २,५०० रु०; बैंक अधिविकर्ष ५०० रु०।

उन्होंने अपने हिसाब के लिये उचित पुस्तकें नहीं रखी हैं, परन्तु ३० जून १९५१ को जाँच करने पर निम्न विवरण प्राप्त हुये :—

रोकड़ हस्ते २५ रु० ; विविध देनदार ५,४२० रु० ; स्कंध ३,७५० रु० ; विविध लेनदार २,४६० रु० ; बैंक अधिविकर्ष १५० रु० ।

वर्ष में प्रत्येक साझीदार ने ३५० रु० निकाले । १२० रु० डूबत व संदिग्ध ऋण के लिये संचय करने का २५० रु० कल व यंत्र पर व १०% फर्नीचर पर अपलिखित करने का निश्चय किया गया । प्रत्येक साझीदार अपनी पूँजी पर ५% वार्षिक व्याज लेने का अधिकारी है ।

उनका ३० जून १९५१ को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ-हानि खाता व उसी तिथि का चिट्ठा तैयार कीजिये ।

उत्तर—शुष्क लाभ ७६० रु० ; चिट्ठा १५,३०० रु० ।

४६. एक व्यापारी ने १९५० वें वर्ष के सम्पूर्ण लेखे नहीं रक्खे, परन्तु निम्न सूचना प्राप्य हैं :—

(अ) १ जनवरी १९५० को उसकी स्थिति : रोकड़ हस्ते ७०० रु० ; बैंक अधिविकर्ष ५,००० रु० ; प्राप्य बिल २५,००० रु० ; विविध देनदार ३६,००० रु० ; स्कंध ७५,३०० रु० ; कल व यंत्र ४७,००० रु० भूमि व भवन ७०,००० रु० ; देय बिल १६,००० रु० ; विविध लेनदार ३६,००० रु० ।

(ब) उसकी रोकड़-पुस्तक का सारांश :—

	रु०		रु०
शेष (हाथ में)	७००	बैंक अधिविकर्ष	५,०००
विविध देनदार	२,८०,०००	वेतन	१२,०००
विक्रय	१०,०००	देय बिल	१,४३,०००
प्राप्य बिल	१,००,०००	विविध लेनदार	१,४०,०००
		क्रय	७,०००
		व्यापारिक व्यय	२३,८००
		आहरण	४५,०००
		शेष (हाथ में)	२,४००
		शेष (बैंक)	१२,५००
	३,९०,७००		३,९०,७००

(स) उसके अन्य व्यवहारों का सारांश :—उधार विक्रय ४,०७,००० रु० ; बट्टा दिया २,००० रु० ; उधार क्रय ३,००,००० रु० ; प्राप्त बट्टा १,००० रु० ; प्रा०/बि० प्राप्त किये १,०६,००० रु०, दे०/बि० निर्गमित किये १,५०,००० रु० ।

निम्नलिखित का ध्यान रखते हुये ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ-हानि खाता तथा उसी तिथि का चिट्ठा तैयार कीजिये ।

(i) ३१ दिसम्बर १९५० को ५३,००० रु० का स्कन्ध था ।
(ii) विविध देनदारों पर ५% संदिग्ध ऋण के लिये संचय करो ।
(iii) कल व यन्त्र पर १०% ह्रास काटो ।

उत्तर—स० ला० ८७,७०० रु०; शु० ला० ४२,४५० रु०; चिट्ठा २,६६,४५० रु० ।

४७. ए अपनी पुस्तकें इकहरा लेखा पद्धति पर रखता है और आपसे ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का माल व लाभ-हानि खाता व उसी तिथि का चिट्ठा तैयार करने के लिये कहता है । आपने उसकी पुस्तकों से निम्न विवरण प्राप्त किये :—

	१-१-१९५०	३१-१२-१९५०
	रु०	रु०
व्यापारिक व्यय	३,०००	३,०००
व्यापारिक देनदार	४,४००	६,०००
व्यापारिक लेनदार	१,६००	१,१००
फर्नीचर	२००	२००
स्कन्ध	१,८००	२,०४०

उसकी वर्ष की रोकड़ बही के विश्लेषण से निम्न बातें पता लगीं :—

		रु०
प्राप्ति :—	नकद विक्रय	३,०००
	व्यापारिक देनदार	५,०००

भुगतान :—	बैंक अधिविकर्ष पर व्याज	१५
	प्रबन्धक का वेतन	२००
	आहरण	४००
	मजदूरी	१,२००
	वेतन	३००
	व्यापारिक व्यय	१,५८५
	व्यापारिक लेनदार	३,०००
शेष :—	बैंक अधिविकर्ष १–१–५० को	८००
	रोकड़ बैंक में ३१–१२–५० को	४८५
	रोकड़ हस्ते ३१–१२–५० को	१५

१ जनवरी १९५० को स्थित पूँजी पर ५% वार्षिक व्याज दो ; ३०० रु० डूबत व सदिग्ध ऋण के लिए संचय करो तथा ५% गृह व फर्नीचर पर ह्रास काटो।

प्रबन्धक, वेतन के अतिरिक्त, शुध्क लाभ पर वेतन व उसका कमीशन काटने के पश्चात् ५% कमीशन लेने का अधिकारी है। उसके कमीशन का प्रबन्ध करो तथा उसके अनुसार खाते बनाओ।

उत्तर :—स० ला० ६,१४० रु०; शु० ला० ३,०७६ रु०; चिट्ठा ११,२८० रु०।

४८. ए, एक दूकानदार आपसे ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष के हिसाब तैयार करवाना चाहता है। कोई भी पुस्तक नहीं रक्खी गई है, परन्तु निम्न तथ्यों का पता लगा :—

(अ) उस वर्ष में बैंक पास-बुक में ६,०१० रु० जमा व ५,९२५ रु० आहरित दिखलाये गये हैं।

(ब) १ अक्तूबर १९४९ को ४% वार्षिक पर ५०० रु० स्थायी जमा में जमा किये व ३१ मार्च १९५० को व्याज सहित निकाले।

(स) १ अप्रेल १९५० को १,००० रु० के ६% ऋण-पत्र (व्याज ३० जून व ३१ दिसम्बर को प्राप्य) सम मूल्य पर खरीदे।

(द) व्यापारिक गृहों पर १०० रु० वार्षिक किराया दिया गया है।

(य) उपर्युक्त व्यवहार तथा व्यापारिक खरीद के सारे भुगतान बैंक द्वारा किये गये। विक्रय व्यापारिक व्यय व व्यक्तिगत जीवनयापन व्यय काटकर बैंक में जमा किये।

(फ) ३१ दिसम्बर १९५० को सम्पत्ति व दायित्व निम्न थे :—स्कन्ध १,५५० रु०; पुस्तक ऋण ५७५ रु०; बैंक शेष १६० रु०; व्यापारिक दायित्व २०० रु०।

विश्वस्त सूचनाओं के अभाव में ए से निम्न बातों पर अनुमानित मूल्य उपलब्ध हुये :—(अ) वर्ष में स्कन्ध व पुस्तक ऋण प्रत्येक में ५० रु० की वृद्धि हुई; (ब) १ जनवरी १९५० को १०० रु० का व्यापारिक दायित्व था; तथा (स) वर्ष में ४०० रु० व्यक्तिगत व्यय तथा २५० रु० व्यापारिक व्यय हुये।

उपर्युक्त सूचना से व्यापार का ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ-हानि खाता, १ जनवरी व ३१ दिसम्बर १९५० को ए का चिट्ठा तथा १९५० का बैंक खाता तैयार कीजिये।

उत्तर :—प्रारम्भिक चिट्ठा २,६०५ रु०; शुध्क लाभ ६८० रु०; चिट्ठा ३,२८५ रु०।

४९. ऐक्स एकाकी व्यापारी के रूप में व्यापार करता है, परन्तु वह अपने हिसाब की उचित पुस्तकें नहीं रखता। उसके मामलों की जाँच पड़ताल करने पर निम्न बातें पता लगीं :—

(अ) उसकी सम्पत्ति दायित्व घटाकर १ जनवरी १९४६ को ४१,९०० रु० व १ जनवरी १९५१ को ३३,४०० रु० थी।

(ब) १ जनवरी १९४६ को उसके ७२,०.० रु० के निजी विनियोग थे।

(स) १९४७ में उसे १०,००० रु० उत्तरदान (legacy) के रूप में प्राप्त हुये।

(द) १९४६-१९५० वर्षों में ५२,५०० रु० की लागत में नये विनियोग प्राप्त किये व ४१,४०० रु० की लागत के विनियोग ३२,१०० रु० में बेचे।

(य) पाँच वर्षों में २४,४०० रु० विनियोगों से आय हुई।

(फ) उसने अनुमान लगाया कि पाँच वर्षों में सट्टे में उसे ८०,००० रु० की हानि हुई तथा उसका व्यक्तिगत खर्च औसतन ७,५०० रु० प्रति वर्ष हुआ। १ जनवरी १९५१ को वह सट्टे की हानि के लिये ४,००० रु० (८०,००० रु० से अलग) से ऋणी है।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर बिल्कुल ठीक गणना करके व्यापार का उपार्जित लाभ मालूम करो।

उत्तर – पाँच वर्षों में व्यापार से निकाले गये उसके आहरण १,१३,५१० रु० हैं। पाँच वर्षों में उसको व्यापार से १,०५,००० रु० का लाभ हुआ।

साझेदारी खाता

५०. ऐक्स व वाई साझीदार हैं जो अपने लाभ व हानि क्रमशः २/३ व १/३ के अनुपात में वितरण करते हैं। निम्न सूचनाओं से उनके ३० सितम्बर १९५१ को समाप्त होने वाले वर्ष के पूँजी व चालू खाते दिखाइये :—

	ऐक्स	वाई
	रु०	रु०
पूँजी (१ अक्तूबर १९५० को शेष)	८,८००	३,६००
चालू खाते ,,	२०३ (जमा)	१०४ (जमा)
अतिरिक्त पूँजी १ अप्रैल १९५१ को लाई गई	१,२००	१,४००
वर्ष के आहरण	२,०००	१,५००

३० सितम्बर १९५१ को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ २,९७० रु० था जिसमें से ५% वार्षिक की दर से साझीदारों की पूँजी पर व्याज जमा करना है।

उत्तर—पूँजी खातों के शेष (जमा) ऐक्स १०,००० रु०; वाई ५,००० रु०; चालू खातों के शेष ऐक्स रु० १९६-५-८ (जमा); वाई रु० ४१६-५-४ (नाम)।

५१. ए व बी साझीदार हैं, जिनकी पूँजी १ जनवरी १९५० को क्रमशः ४०,००० रु० व ६०,००० रु० की है। उनका साझेदारीनामे के अनुसार साझीदारों की पूँजी तथा आहरण पर ६% वार्षिक व्याज होगा; ए १०,००० रु० वार्षिक व बी ५,००० रु० वार्षिक वेतन लेने का अधिकारी है जो कि उन्हें अर्द्धवार्षिक किस्तों में जमा किया जायगा; व शेष लाभ उनमें २ व ३ के अनुपात में विभाजित होगा।

उपर्युक्त साझेदारीनामे को प्रभावित करने से पूर्व ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का कुल लाभ ३१,२१० रु० है। साझीदारों के वर्ष में निम्न आहरण थे :—

	ए	बी
	रु०	रु०
फरवरी १	२,०००	१,५००
अप्रैल १	१,५१०	१,०००
जून १	२,०००	३,०००
अगस्त १	१,८००	२,४००
अक्तूबर १	१,२००	२,२००
दिसम्बर १	२४००	४,४००

साझीदारों के १९५० के चालू खाते दिखाओ।

उत्तर—चालू खातों के शेष (जमा) ए ५,५८९ रु० ८ आना
बी २२० रु० ८ आना

५२. ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ सम्मिलित करने व आहरण का व्यवहार करने के पश्चात् ए, बी व सी के पूँजी खाते क्रमशः ४०,००० रु०; ३०,००० रु० व २०,००० रु० थे।

तदनन्तर यह पता लगा कि पूँजी पर ५% वार्षिक की दर से तथा आहरण पर व्याज जो कि ए २५० रु०, बी १८० रु० व सी १०० रु० था भुला दिया गया है। १९५० का लाभ ६०,००० रु० था जो उपर्युक्त पूँजी में सम्मिलित है तथा साझीदारों के आहरण क्रमशः १०,००० रु०; ७५,०० रु० व ४,५०० रु० थे। वे अपने लाभ व हानि १/२, १/३ व १/६ के अनुपात में विभाजित करते हैं।

उपर्युक्त त्रुटियों को सुधारने के लिये आवश्यक प्रविष्टियाँ कीजिये।

उत्तर—१-१-५० को पूँजी : ए ३०,००० रु०; बी २२,५०० रु०; सी १४,५०० रु० ए के २८५ रु० नाम लिखे जायेंगे तथा बी व सी को क्रमशः ५ रु० व २८० रु० जमा किये जायेंगे।

५३. एक फर्म के पिछले तीन वर्षों के लाभ, जो १२,००० रु० हैं ए, बी व सी तीनों साझीदारों द्वारा समान रूप में विभाजित किये जाते हैं। साझेदारी के कार्यों में ए के कम समय देने के कारण उसका भाग चौथाई करने तथा शेष तीन चौथाई बी व सी में समान बँटन का निश्चय किया गया तथा समझौता पिछले तीन वर्षों की प्रारम्भिक तिथि को करना है।

समायोजन प्रविष्टियाँ कीजिये।

उत्तर :—ए का चालू खाता १,००० रु० से नाम लिखा जायगा तथा बी व सी प्रत्येक का चालू खाता ५०० रु० से जमा किया जायगा।

५४. ऐक्स व वाई ३ व २ के अनुपात में अपने लाभ विभाजित करते हुये साझेदारी में व्यापार करते हैं।

३१ दिसम्बर १६५० को उनके पूँजी खाते क्रमशः १०,००० रु० व ५,००० रु० थे तथा पुस्तकों में २,००० रु० की ख्याति थी।

१ जनवरी १६५१ को, जैड साझीदार के रूप में इस शर्त पर फर्म में सम्मिलित हुआ कि वह ३,००० रु० नकद लगाएगा, लाभ ऐक्स, वाई व जैड में ६, ६ व ५ के अनुपात में विभाजित होंगे, साझीदारों के बीच समायोजन फर्म की वास्तविक ख्याति ४,५०० रु० के आधार पर होगा तथा फर्म की पुस्तकों में ख्याति २,००० रु० की रहेगी।
साझीदारों के पूँजी खाते बनाओ।

उत्तर :—शेष (जमा) :—ऐक्स १०,३७५ रु०; वाई ५,२५० रु० जैड २,३२५ रु०।

५५. ए व बी ने सी को १ जनवरी १६५१ से निम्न शर्तों पर साझीदार बनाने का निश्चय किया :—
(अ) सी ५,००० रु० लायेगा, जिसमें से १,५०० रु० प्रव्याजि के, (जो ए व बी में समान रूप से जमा होगी) होंगे।
(ब) सी को साझीदार बनाने से पूर्व देनदारों पर संदिग्ध ऋण के लिये ५% सचय करने का निश्चय किया गया।
(स) लाभ निम्न प्रकार विभाजित होंगे :—ए व बी प्रत्येक २/५; सी १/५।
३१ दिसम्बर १६५० को ए व बी का निम्न चिट्ठा था :—

	रु०		रु०
लेनदार	५,७६०	कल	१२,०००
पूँजी ए	८,५००	देनदार	३,६६०
बी	८,५००	स्कंध	५,७२०
		रोकड़	१,४१०
	२२,७६०		२२,७६०

१ जनवरी १६५१ को नयी फर्म का चिट्ठा दिखाओ।

उत्तर :—पूँजी ए ६,१५८ रु० ८ आ०; बी ६,१५८ रु० ८ आ०; सी ३,५०० रु० चिट्ठा २७,६०७ रु०।

५६. ए व बी ने, जो कि समान साझीदार हैं १ जनवरी १६५० को सी को साझीदार बनाया। यह निश्चय किया गया कि :—
(अ) पुस्तकों में ३,००० रु० की दिखाई गई ख्याति ६,००० रु० पर पुनर्मूल्याङ्कित होगी तथा चिट्ठे में से यह मद हटा दिया जायगा।
(ब) सी ६,००० रु० रोकड़ी पूँजी लायगा।
(स) लाभ इस प्रकार विभाजित होंगे ए २/५; बी २/५; सी १/५
(द) ए ६०० रु० प्रति वर्ष वेतन के प्राप्त करेगा।
(य) ए व सी की पूँजी पर ५% वार्षिक ब्याज व बी की पूँजी पर ६% वार्षिक ब्याज दिया जायगा।
१ जनवरी १६५० को ए व बी के पूँजी खाते क्रमशः ४,००० रु० व ५,००० रु० के थे। १६५० के सकल लाभ व सामान्य व्यय क्रमशः ३,६४१ रु० व ६०० रु० थे। वर्ष के आहरण निम्न थे : ए ५०० रु०, बी ४०० रु०, सी ७०० रु०। १ दिसम्बर १६५० को, बी को बिना ब्याज के ६०० रु० ऋण दिया। ३१ दिसम्बर १६५० को विविध सम्पत्तियाँ १५,६०० रु० व विविध दायित्व ३,०५६ रु० थे।
यह मानते हुये कि निश्चित किये हुये समझौते के अनुसार कार्य हुआ, ३१ दिसम्बर १६५० को फर्म का चिट्ठा तैयार कीजिये।
उत्तर :—चिट्ठा १६,२०० रु०।

५७. १६३४ में ए ने एक एकाकी व्यापार प्रारम्भ किया। १ जनवरी १६३८ को, बी अपने ख्याति के भाग के लिये १,५०० रु० रोकड़ी देकर व लाभ का १/३ भाग लेकर साझीदार के रूप में सम्मिलित हुआ।
१ जनवरी १६४२ को, सी अतिरिक्त साझीदार के रूप में फर्म में सम्मिलित हुआ, अब ए, बी व सी में क्रमशः ५, ४ व ३ के अनुपात में लाभ विभाजित होंगे। सी के प्रवेश के तुरन्त बाद पुस्तकों में ६,००० रु० से ख्याति खाता खोला गया, व सी ने अपके ख्याति के भाग के लिये कोई रोकड़ी राशि नहीं दी।
१६४२ के बाद ख्याति समयानुसार अपलिखित की गई तथा १६५० के अन्त में पुस्तकों में २,००० रु० थी। ३१ दिसम्बर १६५० को व्यापार बेच दिया गया तथा ख्याति से ५,४०० रु० वसूल हुए।
व्यापार के प्रारम्भ से अन्त तक प्रत्येक साझीदार द्वारा ख्याति के सम्बन्ध में हुई लाभ व हानि की कुल राशि दिखलाते हुये एक विवरण तैयार करो।
उत्तर—लाभ ए ५,२५० रु० व बी २०० रु०; सी १५० रु०।

५८. बी एक एकाकी व्यापारी ने ३० सितम्बर १९५० को, जब कि उसके पूँजी खाते में १८,००० रु० का शेष था, हिसाब तैयार किया। १ अक्तूबर १९५० को उसने सी को इस शर्त पर साझीदार बनाया कि सी के प्रवेश से पूर्व ८,००० रु० का ख्याति खाता खोला जायगा, सी अपनी पूँजी के ६,००० रु० रोकड़ी लगायेगा, पूँजी खातों पर ५% वार्षिक ब्याज दिया जायगा तथा शेष बी व सी मे ३ व १ के अनुपात में विभाजित होगा।

३० सितम्बर १९५१ को लाभ ब्याज काटने से पूर्व ८,१०० रु० था। बी व सी के बीच उसका विभाजन दिखाओ। यदि उपर्युक्त बातें ऐसी ही रहें किन्तु ख्याति के लिये समायोजन न हो तो यह किस प्रकार विभाजित होगा।

उत्तर—(अ) लाभ का विभाजन बी ४,८७५ रु०; सी १,६२५ रु०।
(ब) लाभ का विभाजन बी ५,१७५ रु०; सी १,७२५ रु०।

५९. ऐक्स व वाई साझीदार हैं और उन्होंने जैड को साझीदार बनाया, लाभ निम्न प्रकार विभाजित होंगे: ऐक्स ४/९, वाइ ३/९ व जैड २/९। वाई को ३,००० रु० प्रतिवर्ष साझेदारी वेतन मिलता है तथा ऐक्स व वाई ने यह गारण्टी दी कि किसी भी वर्ष जैड के लाभ का भाग २०,००० रु० से कम न होगा।

३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ, वाई का वेतन देने से पूर्व ८२,०८० रु० था। फर्म के लाभ का विभाजन दिखाओ।

उत्तर—लाभ का विभाजन : ऐक्स रु० ३३,७६०–०–३
वाई रु० २५,३१९–१५–९
जैड रु० २०,०००– ०–०

६०. पी व क्यू एकाकी व्यापारी थे। १ जनवरी १९५१ से उन्होंने समान लाभ बाँटते हुये साझीदार बनने का निश्चय किया। ३१ दिसम्बर १९५० को उनकी निम्न स्थिति थी।

	पी	क्यू
	रु०	रु०
स्वायत्त दूकान	२,५००	—
फर्नीचर	५२०	४००
स्कंध	३,०९७	१,७५१
देनदार	१,०८०	६४०
रोकड़	४२६	—
बैंक अधिविकर्ष	—	११२
व्यापारिक लेनदार	३९८	२४१

यह निश्चय किया गया कि साझेदारी में सारी सम्पति व दायित्व उपर्युक्त अंकों पर लिए जाय व देनदारों पर ५% डूबत व सम्भावित ऋण के लिये सञ्चय किया जाय, तथा पी का खाता १,००० रु० से ख्याति स्वरूप जमा किया जाये।

फर्म का प्रारम्भिक चिट्ठा बनाइये, क्यू के अधिविकर्ष का भुगतान कर दिया गया है।

उत्तर—चिट्ठा ११,२१६ रु०

६१ ऐक्स, वाई व जैड साझीदार हैं। फर्म की पूँजी २०,००० रु० है जिसमें १२,००० रु० ऐक्स की व ८,००० रु० वाई की है। ऐक्स व वाई समान साझीदार थे। ऐक्स के पुत्र जैड की व्यापार में कोई पूँजी नहीं है तथा वह इस शर्त पर साझीदार बनाया गया कि उसे ४०० रु० वेतन के (जिसका आधा ऐक्स से लिया जायगा) मिलेंगे व १/६ लाभ का दिया जायगा जो सारा ऐक्स द्वारा व्यय किया जायगा। हानि हो जाने पर जैड से उसकी हानि का भाग लिया जायगा तथा इसके अनुरूप ऐक्स मुक्त हो जायगा। व्यापार में साझीदारों की पूँजी पर ५% ब्याज देना है परन्तु उनके चालू खाते व आहरण पर नहीं।

३१ दिसम्बर १९४९ को, साझीदारों के चालू खाते में निम्न राशि जमा थी: ऐक्स ७३० रु०; वाई ६२० रु० तथा १९५० के वर्ष में साझीदारों ने निम्न राशि निकाली। ऐक्स १,००० रु०; वाई ७५० रु०; जैड ने निश्चित वेतन तथा १०० रु०।

फर्म का १९५० का लाभ, जैड के वेतन तथा पूँजी पर ब्याज काटने से पूर्व ६३० रु० था।

३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ हानि खाता तथा वर्ष के साझीदारों के चालू खाते तैयार करो।

उत्तर—कुल हानि का विभाजन — ऐक्स १०५ रु०; वाई १३५ रु०; जैड १० रु०। चालू खातों के शेष ऐक्स २२५ रु० (जमा), वाई १३५ रु० (जमा); जैड १० रु० (नाम)।

६२. १ जनवरी १९५० को ए व बी लाभ-हानि समान रूप में बाँटते हुए साझेदार हुए। ए ने पूँजी के ५,००० रु० इस शर्त पर दिये कि वह २,००० रु० रोकड़ी तथा ३,००० के मूल्य का फर्नीचर व कल देगा। बी केवल १,००० रु० ही रोकड़ी दे सका, परन्तु यह निश्चय हुआ कि वह अपने विक्रय सम्बन्धी १,५०० रु० से जमा किया जायगा तथा वह १७० रु० प्रतिवर्ष वेतन भी प्राप्त करेगा।

३० जून १९५० को बी ने ५०० रु० और दिये, व उसी तिथि को सी, लाभ के ⅙ भाग तथा ख्याति के लिये १,६०० रु० देकर फर्म में प्रविष्ट हुआ तथा १,००० रु० रोकड़ी पूँजी के लाया। यह निश्चय किया गया कि यह सब राशि व्यापार में रहेगी।

ए व बी पूर्वानुसार लाभ का विभाजन करेंगे तथा यह प्रबन्ध किया गया कि सी की प्रवेश तिथि से बी का वेतन समाप्त हो जायगा, परन्तु पूँजी पर ५% का वार्षिक ब्याज दिया जायगा।

३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ, ब्याज तथा बी का वेतन काटने से पूर्व १,१७० रु० था। साझेदारों में इस राशि का विभाजन दिखलाते हुए व समय के आधार पर आवश्यक बँटवारा करते हुए एक विवरण बनाओ।

उत्तर—लाभ—ए ३७० रु० ; बी ३७० रु० ; सी ८० रु०।
पूँजी पर ब्याज—ए १४५ रु० ; बी ९५ रु० ; सी २५ रु०।

६३. ३० जून १९५० तक जबकि ए के अवकाश प्राप्त करने से साझेदारी भंग हुई, ए व बी साझेदारी में क्रमशः ३/५, २/५ के लाभांश के अनुपात में व्यापार करते थे। भंग होने की तिथि का चिट्ठा निम्न था—

	रु०		रु०
विविध लेनदार	४,०००	रोकड़	७५०
देय बिल	२,५००	प्राप्य बिल	१,२५०
सामान्य निधि	१,०००	विविध देनदार	५,५००
पूँजी—ए	१०,५००	स्कंध	७,५००
बी	७,०००	कल व यंत्र	७,०००
		भवन	३,०००
	२५,०००		२५,०००

बी ने व्यापार को चलाने का प्रबन्ध किया, ए ने अपने ऊपर देय धन व्यापार में ५% वार्षिक ब्याज की दर से ऋण के रूप में रक्खा। भंग होने से पूर्व कुछ सम्पत्तियों को निम्न राशियों पर पुनर्मूल्यांकित किया: कल व यंत्र ६,००० रु० ; स्कंध ६,७०० रु० ; देनदार ५,३५० रु०।

ए ने भवन लेने का निश्चय किया, भवन का मूल्य ऐसा रक्खा गया कि ए का ऋण उसे ३५० रु० वार्षिक उपार्जित करेगा।

वसूली खाता बनाओ तथा १ जुलाई १९५० को बी का चिट्ठा बनाओ।

उत्तर—वसूली पर हानि २,१२५ रु० ; चिट्ठा २०,०५० रु०।
भवन का मूल्य २,८२५ रु०।

६४. ए, बी व सी जो ३:२:१ के अनुपात में लाभ-हानि विभाजित करते हैं, साझेदार हैं तथा ३१ दिसम्बर १९५० को उनका चिट्ठा निम्न था —

	रु०		रु०
देय बिल	७,५६०	रोकड़ हस्ते	२५०
लेनदार	१२,३००	रोकड़ बैंक में	९५०
संचय कोष	३,०००	प्राप्य बिल	३,३००
पूँजी—ए	१०,०००	देनदार	७,४५०
बी	६,०००	स्कंध	१२,४७०
सी	४,०००	विनियोग	१०,४१०
		भवन	८,०००
	४२,८६०		४२,८६०

२८ फरवरी १९५१ को बी की मृत्यु हो गई, तथा साझेदारी प्रसंविदे के अनुसार उसके कानूनी प्रतिनिधि को निम्न प्रकार भुगतान करना है :—

(अ) मृत्यु के समय उसके खाते में जमा पूँजी व मृत्यु के समय तक का [illegible] वार्षिक ब्याज।

(ब) उसका संचय कोष का बचा हुआ भाग।

(स) पूर्व वर्ष के लाभ के आधार पर उस समय तक का उसका लाभ का भाग।
(द) उसके लाभ के भाग के अनुसार ख्याति का भाग जिसकी गणना पिछले तीन वर्षों के औसत लाभ की दुगनी राशि पर होनी है।
वर्षों के लाभ निम्न थे :—१९४८—७,८०० रु०; १९४९—९,००० रु०; १९५०—९,६०० रु०।
विनियोग १६,२०० रु० में बेचे तथा बी के प्रतिनिधि का भुगतान किया गया।
आवश्यक प्रविष्टियाँ कीजिए तथा बी का खाता बनाइये।

उत्तर—१२,४५० रु० बी को दिये।

९५. ए व बी साझीदार हैं जो अपने लाभ २ . १ के अनुपात में विभाजित करते हैं। ३१ दिसम्बर १९५० को उनका चिट्ठा निम्नलिखित था—

	रु०		रु०
लेनदार	५,०००	रोकड़	५००
ऋण (बी)	१०,०००	देनदार	६,५००
पूँजी : ए	२०,०००	स्कंध	८,०००
बी	१०,०००	भूमि व भवन	३०,०००
	४५,०००		४५,०००

ए व बी अपनी साझेदारी का अन्त करना चाहते हैं। बी ने ए को व्यापार में उसके भाग के २५,००० रु० प्रस्तावित (offer) किये। इस स्थिति में ए को बी के लिये क्या प्रस्तावित करना चाहिये? कारण सहित लिखिये।

उत्तर :—१२,५०० रु०; बी के प्रस्ताव में ५,००० रु० ख्याति के सम्मिलित हैं।

९६. ए व बी साझीदारों ने जो अपने लाभ क्रमशः २/३ व १/३ के अनुसार बाँटते हैं, अपने व्यापार से वसूली करके साझेदारी का अन्त करने का निश्चय किया। १ जनवरी १९५१ को उनके निम्न सम्पत्ति व दायित्व थे:—
पुस्तक-ऋण १,८५० रु०; स्कंध ७८० रु०; ख्याति १,००० रु०; विनियोग ५५० रु०; फर्नीचर १२० रु०, बैंक अधिविकर्ष ३७८ रु०; विविध लेनदार ९२२ रु०; पूँजी : ए २,००० रु०; और बी १,००० रु०।
पुस्तक-ऋण व स्कन्ध क्रमशः अपने पुस्तक मूल्य के ८०% व ६०% पर वसूल हुये। फर्नीचर व ख्याति ५०० रु० में बेचे तथा विनियोग साझीदारों में समान रूप से बराबर-बराबर हस्तान्तरित किये।
रोकड़ खाता, वसूली खाता तथा प्रत्येक साझीदार का खाता तैयार कीजिये।

उत्तर :—वसूली पर हानि : ए ८६८ रु०; बी ४३४ रु०।

९७. सी व डी, जो लाभ-हानि क्रमशः २/३ व १/३ के अनुपात में विभाजित करते हैं साझीदार हैं। ३१ दिसम्बर १९५० को उनका चिट्ठा निम्न था :—

	रु०			रु०
लेनदार	१,०००	बैंक शेष		७५०
पूँजी खाते : सी	५,०००	देनदार	२,०००	
डी	३,०००	घटाये (डूबत-ऋण संचय)	२५०	१,७५०
		स्कन्ध		४,०००
		गृह		१,५००
		ख्याति		१,०००
	९,०००			९,०००

३१ दिसम्बर १९५० से उन्होंने निम्न परिणामों पर साझेदारी का विघटन करने का निश्चय किया :—(अ) सी अपने हिस्से में गृह १,२०० रु० के मूल्यांकन पर लेगा। (ब) ख्याति निरर्थक सिद्ध हुई (स) देनदारों से १,६०० रु० वसूल हुये (द) स्कन्ध ३,६०० रु० में बेचा; (य) लेनदार २½% बट्टे पर चुकाये गये; (फ) यह निश्चय किया गया कि डी विघटन की सेवा के लिये ५० रु० लेने का अधिकारी है।
ऐसे खाते दिखलाइये जिनमें प्रत्येक साझीदार द्वारा प्राप्त राशि का पता लगे।

उत्तर :—वसूली पर हानि :—सी ८५० रु०; डी ४२५ रु०।

९८ [illegible] व [illegible], जो समान साझीदार हैं, ३१ दिसम्बर १९५० को साझेदारी का विघटन करने का निश्चय किया, जबकि उनका चिट्ठा निम्न था :—

		रु०			रु०
लेनदार		२,०००	बैंक शेष		७८२
लौंग का ऋण	१,०००		देनदार	२,७२४	
उसका ब्याज	५०	१,०५०	घटाये (डूबत ऋण संचय)	२५०	२,४७४
पूँजी : लौंग		४,०००	स्कन्ध		५,२११
शौर्ट		३,०००	कल		१,५८३
		१०,०५०			१०,०५०

लेनदारों से १,८५० रु० में समझौता हुआ। कल १,३०० रु० में बेची गई। स्कन्ध का एक भाग १,००० रु० में लौंग द्वारा अपने हिस्से के भाग के रूप में लिया गया तथा शेष ४,००० रु० मे बेचा गया। देनदारों से कुल २,५०० रु० वसूल हुये।

व्यक्तिगत सम्पत्ति व दायित्व का ध्यान रक्खे बिना ऐसे खाते तैयार कीजिये जो विघटन के परिणाम को दिखलाने के लिये आवश्यक हों तथा जिनसे प्रत्येक साझीदार को प्राप्त अन्तिम राशि का पता लगे।

उत्तर :—वसूली पर हानि : लौंग १५६ रु० ; शौर्ट १५६ रु०
प्रत्येक साझीदार द्वारा प्राप्त राशि २,८४१ रु०।

६९. ऐक्स व वाई बिना किसी लिखित या मौखिक प्रसंविदे के साझेदारी मे व्यापार करते हैं। उन्होंने ३० जून १९५१ को जबकि उनका चिट्ठा निम्न था अपने व्यापार का विघटन करने का निश्चय किया :—

	रु०		रु०
बैंक	२,५००	भवन	१२,५००
लेनदार	६,१००	फिक्चर्स	४,४००
ऋण (ऐक्स)	३,६००	स्कन्ध	१०,२००
पूँजी : ऐक्स	१५,०००	देनदार	७,५००
वाई	७,६५०	पूर्वदत्त व्यय	२५०
	३४,८५०		३४,८५०

भवन ८,५०० रु० मे व फिक्चर्स ४,६०० में बेचे गये। लेनदार आंशिक भुगतान पर ५,००० रु० के पुस्तक मूल्य का स्कन्ध १०% विशेष अलाउन्स घटाकर लेने को राजी हुये। ऐक्स ने शेष स्कन्ध पुस्तक मूल्य पर लिया।

यह पता लगा कि स्कन्ध में १,३५० रु० का एक मद सम्मिलित है, जिसका क्रय बीजक खातों मे से भुला दिया गया था। पुस्तक ऋणों से ७,२०० रु० प्राप्त हुये जबकि पूर्वदत्त व्यय से कुछ भी वसूल नहीं हुआ।

ऐक्स ने ३१ दिसम्बर १९५० को २,४०० रु० का एक ऋण तथा २८ फरवरी १९५१ को १,२०० रु० का एक और ऋण दिया। ८०० रु० विघटन व्यय के हुये।

फर्म की पुस्तकें बन्द करो।

उत्तर :—वसूली पर हानि ७,०९६ रु०।

७०. ३१ दिसम्बर १९५० को ऐक्स, वाई व जैड का चिट्ठा निम्न था। वे अपने लाभ क्रमश: ३, २ व १ के अनुपात में विभाजित करते हैं।

	रु०		रु०
पूँजी : ऐक्स	८,०००	स्वायत्त सम्पत्ति	३,८००
वाई	२,०००	कल	७६३
जैड	१,०००	मोटर गाड़ी	४,६३७
चालू खाते : ऐक्स	६००	स्कन्ध	३,०५०
वाई	२००	विविध देनदार	३,१८०
सम्भाव्य कोष	२,२००	रोकड़	८१६
विविध लेनदार	२,८७६	जैड का चालू खाता	३००
	१६,८७६		१६,८७६

साझीदारों ने अपने व्यापार को, उपर्युक्त चिट्ठे के आधार पर निम्न समायोजन करने के पश्चात एक लिमिटेड कम्पनी को बेचने का निश्चय किया ; (अ) कल में १२,०० रु० की वृद्धि करनी है तथा मोटर गाड़ी ४,८०० रु० में अपलिखित करनी है ; व (ब) ख्याति का ६,००० रु० मूल्यांकन करना है।

क्रय मूल्य, प्रत्येक साझीदार को उनकी ख्याति रहित कुल सम्पत्ति के अनुपात मे आवंटित ५% पूर्वाधिकार अंशों में प्राप्त होगा तथा साधारण अंश ख्याति के लिये प्राप्त होंगे।

सविदे की शर्तें नियमानुसार पूर्ण हुईं। विक्रय के पूर्ण होने के पश्चात् साझेदारी की पुस्तकों में आवश्यक खाते (Ledger Accounts) दिखलाओ।

उत्तर :—वसूली पर लाभ : ऐक्स ४,६५० रु० ; वाई ३,१०० रु० ; जैड १,५५० रु०।

७१. ए, बी व सी पेशेवर लेखपाल (accountants) हैं। उनका निम्न सूचनाओं से ३१ मार्च १९५१ को समाप्त होने वाले वर्ष का आय-व्यय खाता तथा उसी तिथि को चिट्ठा तैयार करो :—

३१ मार्च १९५१ को साझेदारी पुस्तकों से निम्नलिखित शेष पता लगे :—

	रु०		रु०
पूँजी १-४-५० को—ए	१०,०००	विविध लेनदार	१,४८०
बी	१०,०००	मरम्मत	१६०
सी	१३,०००	कार्यालय का फर्नीचर	२,६००
आहरण—ए	५,०००	टंकन	६००
बी	५,०००	छोटे व्यय	६२०
सी	३,०००	बीमा	२८०
प्रगति में कार्य	५,०००	मुद्रण व आलेखन	६२०
रोकड़ बैंक में	५,६००	आवागमन व्यय	१,३७०
देय खर्चों के देनदार	१५,६५०	किराया	५,७६०
किये गये खर्चे	३६,२१०	वेतन	२१,७००

निम्न साझेदारी के वेतन काटने योग्य हैं। ए ५,००० रु० ; बी ५,००० रु० ; सी ३,००० रु०।

साझीदार वर्ष की प्रारम्भिक पूँजी पर ५% वार्षिक ब्याज लेने के अधिकारी हैं तथा लाभ निम्न प्रकार विभाज्य है—ए ३/७ ; बी २/७ ; सी २/७।

३१ मार्च १९५१ को १,५०० रु० किराया अदत्त है, २०० रु० का एक नया टंकन खरीदा तथा प्रविष्ट नहीं हुआ, प्रगति में काय १७,५०० रु० में मूल्यांकित हुआ तथा ७७० रु० डूबत ऋण के लिये सचय करने हैं।

उत्तर—लाभ का भाग—ए १,६५० रु० ; बी १,१०० रु० ; सी १,१०० रु० ; चिट्ठा ४१,७८०।

७२. १९४९ में एक लिमिटेड कम्पनी दिवालिया हुई तथा उसके दो संचालक सी व डी ने कम्पनी की सम्पत्ति लेकर व्यापार करने के उद्देश्य से साझेदारी करने का निश्चय किया।

उनका ११,५०० रु० का प्रस्ताव समापक (liquidator) द्वारा स्वीकृत हुआ तथा १ जनवरी १९५० को उन्होंने १४,००० रु० बैंक में पूँजी के जमा किये सी ने ८,००० रु० व डी ने ६,००० रु०। उन्होंने यह निश्चय किया कि सी १,५०० व डी १,२५० रु० प्रतिवर्ष वेतन के प्राप्त करेंगे तथा अपने लाभ व हानि अपनी पूँजी के अनुपात में विभाजित करेंगे। उसी दिन समापक को क्रय मूल्य का भुगतान कर दिया गया।

३१ दिसम्बर १९४९ को कम्पनी का अनुमानित चिट्ठा निम्नलिखित था—

	रु०		रु०
पूँजी	२०,०००	भवन	६,०००
व्यापारिक लेनदार	६,४००	कल	१,७००
		स्कंध	३,०००
		देनदार	४,८००
		ख्याति	३,०००
		लाभ व हानि खाता	१०,६००
	२६,४००		२६,४००

साझीदारों का प्रस्ताव इस अनुमान पर कि भवन का मूल्य ५,००० रु० कम व स्कंध प्रत्येक अपने पुस्तक मूल्य के ५०% मूल्य पर तथा ऋण में ४,१५० रु० वसूल होंगे, आधारित था। ऋण अंकित किये गए और वास्तव में अनुमानित राशि पर वसूल हुए। शेष (६५० रु०) ३१ दिसम्बर १९५० को अपलिखित किए गये तथा उस तिथि को निम्न शेष फर्म की पुस्तकों में लिखे हुए पूँजी खातों तथा लो नई सम्पत्तियों के अतिरिक्त थे।

	रु०		रु०
लेनदार	५,३८१	आहरण—सी	२,२००
क्रय	२५,८०८	डी	१,७०१

बैंक शेष	५,५७२	विक्रय	३४,८२४
दर	२१६	बिजली	६४
वेतन	२,८७१	आवागमन व्यय	२८६
मजदूरी	१,६८२	कानूनी खर्चे	३००
विविध देनदार	५,७३०	कार्यालय व्यय	३६३

३१ दिसम्बर १६५० को स्टॉक २,८७२ रु० था। ५१ रु० के दर पूर्वदत्त तथा १६ रु० बिजली व ४५ रु० कार्यालय व्यय के अदत्त हैं।

७६ रु० नये देनदार शेषों से डूबत अपलिखित करने तथा १०% कल का ह्रास करने का निश्चय किया।

आप (अ) १ जनवरी १६५० को साझेदारी की पुस्तकों के प्रारम्भ होने की जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिए (ब) तथा १६५० वें वर्ष के अन्तिम खाते तैयार कीजिए।

उत्तर—(ब) स० ला० ८,७०६ रु०; शु० ला० १,६२२ रु०; चिट्ठा १६,६१४ रु०।

कम्पनी खाते

७३. ३ जनवरी १६५१ को, एक लिमिटेड कम्पनी ने १०% प्रव्याजि पर १० रु० वाले १०,००० १०,००० साधारण अश व १०० रु० वाले ५०० ऋण-पत्रों, ६५ रु० निर्गमित मूल्य के, अभिदान के लिये प्रस्तावित एक प्रविवरण निर्गमित किया। अशों से सम्बन्धित राशि १ रु० प्रति अश आवेदन पर, ५ रु० (प्रव्याजि सहित) आवंटन पर तथा शेष ५ रु० १ मार्च १६५१ को देय है। ऋण-पत्र १० रु० आवेदन व ८५ रु० आवटन पर देय है।

७,२०० अंशों तथा सारे ऋण-पत्रों के लिये आवेदन पत्र प्राप्त हुए तथा नियमानुसार आवटित हुये।

यह मानते हुये कि १० जनवरी १६५१ को आवटन हुआ, आवटन पर देय राशि १३ जनवरी १६५१ को प्राप्त हुई तथा अंशों पर देय ३५,५०० रु० याचन राशि ४ मार्च १६५१ को प्राप्त हुई व शेष अदत्त है, उपर्युक्त का लेखा करने के लिये आवश्यक खाते (Ledger accounts) तैयार कीजिये।

यह मानते हुए कि ऋण-पत्रों का आधा वट्टा अपलिखित करना है, ३१ मार्च १६५१ को चिट्ठे का परिणाम दिखलाते हुए प्रविष्टियाँ भी कीजिये।

उत्तर—पूर्णदत्त अंश पूँजी ७१,५०० रु०; चिट्ठा १,२८,७०० रु०।

७४. एक लिमिटेड कम्पनी की अधिकृत पूँजी २,००,००० रु० थी, जो १० रु० वाले २०,००० अंशों में विभक्त है। सारे अश निम्न शर्तों पर सम-मूल्य पर निर्गमित किये गये: २ रु० ८ आ० प्रति अश आवेदन पर; २ रु० ८ आ० आवटन पर; २ रु० ८ आ० प्रथम याचन पर तथा २ रु० ८ आ० अन्तिम याचन पर।

अंश याचित हुये तथा सदस्यों द्वारा, ऐक्स के अतिरिक्त जो अपने १०० अशों का प्रथम व अन्तिम याचन देने में असमर्थ रहा है पूर्ण रूप से चुकाये गये। ऐक्स के अंश सचालकों द्वारा जब्त कर लिये गये।

उपर्युक्त का लेखा करने के लिये जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये और बताइये कि वे कम्पनी के चिट्ठे में किस प्रकार दिखाये जायेंगे।

उत्तर—निर्गमित एवं दत्त पूँजी १,६६,००० रु० जब्ती अंश खाते का शेष ५०० रु०।

७५. १५ जनवरी १६५१ को एक लिमिटेड कम्पनी १,५०,००० रु० की अधिकृत पूँजी के साथ रजिस्टर हुई। उसने ८०,००० रु० के अंश जनता के लिये निम्न प्रकार निर्गमित किये :—२ रु० ८ आ० आवेदन पर (२१-१-१६५१); ३ रु० १२ आ० आवटन पर (२५-१-१६५१); ३ रु० १२ आ० याचन पर (१५-२-१६५१)।

६,५०० अंशों के लिये आवेदन पत्र आये तथा अधिक प्राप्त रोकड़ को आगे ले जाने व आवटन पर देय राशि में जमा करने का निश्चय किया। तदनन्तर शेष आवटित राशि प्राप्त हुई। २०० अशों की याचन राशि अभी तक प्राप्त नहीं हुई।

इसके अतिरिक्त अभि-गोपक (Under-Writer) उसके पारिश्रमिक के १५० पूर्णदत्त अश तथा विक्रेता को १० रु० वाले १,५०० पूर्णदत्त अंश १०,००० रु० रोकड़ी उसके व्यापार को खरीदने के मूल्य के रूप में दिये गये।

उपर्युक्त व्यवहारों को दिखलाते हुये चिट्ठा तथा उचित खाते तैयार कीजिये।

उत्तर—पूर्णदत्त अश पूँजी ६५,७५० रु० चिट्ठा ६५,७५० रु०।

७६ एक लिमिटेड कम्पनी ने १० रु० वाले २०,००० अश अभिदान के लिये प्रस्तुत किये, जो २ रु० ८ आ० आवेदन पर तथा ५ रु० आवंटन पर देय हैं। २३,००० अंश के लिये आवेदन पत्र आये। १,५०० अशों की जमा उनको, जिनको कोई अंश आवटित नहीं किया गया वापिस की। अन्य १,५०० अंशों की जमा आवंटन पर देय राशि में ले जाई गई। आवटन पर देय राशि समय पर प्राप्त हुई।

कम्पनी ने १०० रु० वाले बॉंडों पर १,००,००० रु० के ५% बन्धक [illegible] ५% [illegible] पर निर्गमित किये जो २० रु० प्रति बॉन्ड आवेदन पर तथा शेष आवंटन पर देय है। सारी राशि समय पर प्राप्त हुई।

जर्नल व रोकड़ वही में आवश्यक प्रविष्टियाँ कीजिये तथा कम्पनी का चिट्ठा बनाइये।

उत्तर—रोकड़ वही का शेष २,४५,००० रु० चिट्ठा, २,५०,००० रु०।

७७. एक लिमिटेड कम्पनी ने १०० रु० वाले १,००,००० रु० के ५% ऋणपत्र प्रत्येक १०२ रु० पर अभिदान के लिये आमन्त्रित किये। इन पर देय राशि निम्न प्रकार थी—२५ रु० आवेदन पर; २२ रु० आवंटन पर, २५ रु० प्रथम याचन पर व ३० रु० अन्तिम याचन पर।

१,५०,००० रु० के ऋण-पत्रों का अभिदान प्राप्त हुआ। जिनमें से १०,००० रु० के अस्वीकृत कर आवेदन राशि लौटाई तथा शेष को अनुपातिक आवटन प्राप्त हुआ तथा आवेदन पर दी गई अधिक राशि आवंटन पर देय राशि में हस्तान्तरित की। याचन पर देय राशि समय पर प्राप्त हुई।

कम्पनी की पुस्तकों में आवश्यक खाते (Ledger Accounts) दिखलाइये।

उत्तर :—ऋण-पत्र खाते का शेष १,००,००० रु०; १०,००० रु० ऋण-पत्र आवेदन खाते से आवंटन खाते में हस्तान्तरित किये।

७८ एक लिमिटेड कम्पनी ने १०० रु० वाले बौन्डों में २,००,००० रु० के ऋण-पत्र निर्गमित करने की शक्ति प्राप्त की। १,००,००० रु० के ऋण-पत्र ३% बट्टे पर जनता में अभिदान के लिये प्रस्तुत किये। सारी प्रस्तावित राशि निर्दिष्ट मूल्य पर ऐक्स के द्वारा ५% कमीशन पर अभिगोपित प्रस्तावित की गई। ८८,००० रु० का अभिदान प्राप्त हुआ तथा प्रस्तावित राशि का शेष अभिगोपकों को आवटित किया। ६०,००० रु० के ऋण पत्र कम्पनी के बैंक को एक ४०,००० रु० के ऋण की सुरक्षा के अन्तर्गत निर्गमित किये।

उपर्युक्त व्यवहारों का कम्पनी की रोकड़ वही व खाता वही में लेखा करो और दिखलाओ कि ये कम्पनी के अगले चिट्ठे में किस प्रकार दिखलाये जायेंगे।

७९. कुछ वर्ष पूर्व जैड लि० ने ५% ऋण-पत्र निर्गमित किये थे, जो समयानुसार आहरण या बाजार में क्रय द्वारा प्रतिदेय हैं। ऋण-पत्र विमोचन कोष का वर्ष प्रति वर्ष संचय होता है। ब्याज ३० मार्च व ३० सितम्बर को देय है जो अब तक का देय है।

३१ मार्च १९५० को, १,१४,००० रु० के निर्गमित ऋण-पत्र थे तथा विमोचन कोष में ७७,००० रु० थे। १ मई १९५० को, जैड लि० ने बाजार से काटने के लिये ४,००० रु० के ऋण-पत्र ३,८८६ रु० में खरीदे तथा १ दिसम्बर १९५० को अन्य ४,००० रु० के ३,७४२ रु० की लागत पर खरीदे। शेष निर्गमित ऋण-पत्रों पर ब्याज ३० सितम्बर १९५० व ३१ मार्च १९५१ को दिया; तथा अन्तिम तिथि पर ७,५०० रु० ऋण-पत्र विमोचन कोष के जमा में हस्तान्तरित किये।

उपर्युक्त व्यवहारों का लेखा करते हुए आवश्यक खाते (Ledger Accounts) तैयार करो।

उत्तर—क्रय किये हुए ऋण-पत्रों पर ५० रु० उपार्जित ब्याज है। ४२२ रु० विमोचन का लाभ ऋण-पत्र विमोचन कोष में हस्तान्तरित किया जिसका शेष ८४,९२२ रु० हो गया।

८०. एक कम्पनी ने १०० रु० वाले १,००० अंश १० रु० प्रति अंश प्रव्याजि पर निर्गमित किये। सारे अंश जनता द्वारा आवेदित हुये, तथा सारी राशि, एक २० अंश के अंशधारी के अतिरिक्त जिसने ५० रु० प्रति अंश याचन का नहीं दिया प्राप्त हुई। उसके अंश जब्त करके ७५ रु० प्रति अंश पर पुनः निर्गमित किए गये।

इन व्यवहारों को कम्पनी के जर्नल में लिखिये।

उत्तर—पुनर्निर्गमित करने के पश्चात् अंश जब्ती खाते मे शेष राशि ५०० रु०।

८१. एक कम्पनी की अधिकृत व निर्गमित पूँजी में २५ रु० वाले २०,००० साधारण अंश तथा २५ रु० वाले २०,००० पूर्वाधिकार अंश हैं, जो २० रु० प्रति अंश याचित हैं। कम्पनी के संचालकों ने ऐक्स द्वारा लिये गये २०० साधारण अंश जिन पर वह ५ रु० प्रति, प्रथम व द्वितीय याचन देने में असमर्थ रहा है जब्त किये।

उन्होंने वाई के ४०० पूर्वाधिकार अंश भी जब्त किये जिन पर वह ५ रु० प्रति अंश आवंटन पर, ५ रु० प्रथम याचन पर तथा ५ द्वितीय याचन पर देने में असमर्थ रहा है।

संचालकों ने ऐक्स के सभी अंश १५ रु० प्रति अंश व वाई के १३ रु० ८ आना प्रति अंश की दर से जो कि इस व ले लिये गये हैं पुनः निर्गमित किये। ये सब अंश २० रु० प्रति अंश पूर्णदत्त के रूप में पुनः निर्गमित किये गये हैं।

इन व्यवहारों को कम्पनी की पुस्तकों में लेखा करने के लिये आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये।

उत्तर—पुनर्निर्गमन के पश्चात् अंश जब्ती खाते में शेष राशि २,०१० रु०।

८२. ३१ दिसम्बर १९५० को जिस दिन ऐक्स का चिट्ठा निम्न था, उसके द्वारा संचालित व्यापार को लेने के लिये, १,०८,००० रु० की अधिकृत पूँजी के साथ जो आधे साधारण तथा आधे १० रु० वाले ६% पूर्वाधिकार अंशों में विभक्त थी एक्स लि० स्थापित हुई :—

	रु०		रु०
बैंक अधिविकर्ष	४,०००	विविध देनदार	२१,५००
विविध लेनदार	८,०००	स्कंध	११,५००
ऐक्स का पूँजी खाता	४९,०००	कल व यंत्र	१५,०००
		स्वायत्त (freehold)	१३,०००
	६१,०००		६१,०००

क्रय मूल्य ६५,००० रु० निश्चित हुआ, जिस धन में से कम्पनी, विविध लेनदार व बैंक अधिविकर्ष अदा करेगी, शेष ३१ मार्च १९५० को बिना ब्याज के भुगतान किया जायगा।

३,००० साधारण अंश २५% प्रव्याजि पर जो २ रु० ८ आना प्रति अंश आवेदन पर तथा ५ रु० प्रति अंश (प्रव्याजि सहित) आवटन पर देय हैं निर्गमित किये। सारे पूर्वाधिकार अंश सम-मूल्य पर आवेदन पर पूर्ण रूप से देय थे। इसके अतिरिक्त आवेदन पर पूर्ण रूप से देय १०,००० रु० के ५% ऋण-पत्र ५% बट्टे पर निर्गमित किये।

उपर्युक्त का कम्पनी की पुस्तकों में लेखा करने के लिये आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये।

उत्तर—ख्याति ४,००० रु०।

८३. ए एन्ड कं० व सी एन्ड क० समान व्यापार करने वाली संस्था हैं। ३१ दिसम्बर १९५० को उनके चिट्ठे क्रमशः निम्न थे—

ए एन्ड कं० का चिट्ठा

	रु०		रु०
विविध लेनदार	१,२९३	ख्याति	२,०००
पूँजी—ए	११,०००	फर्नीचर	५००
बी	७,०००	स्कन्ध	८,९८२
		विविध देनदार	७,०२०
		रोकड़	७९१
	१९,२९३		१९,२९३

सी एन्ड कं० का चिट्ठा

	रु०		रु०
विविध लेनदार	७२५	स्वायत्त गृह	५,५५०
पूँजी—सी	१२,०००	फर्नीचर	६५०
डी	४,८९५	स्कन्ध	६,८००
		विविध देनदार	४,५१०
		रोकड़	११०
	१७,६२०		१७,६२०

ए व बी अपने लाभ समान तथा सी व डी अपने लाभ ३ व २ के अनुपात में विभाजित करते हैं। सारी सम्पत्ति व दायित्व लेकर दोनों संस्थाओं को लेने के लिए एक लिमिटेड कम्पनी स्थापित हुई।

सारी सम्पत्ति व दायित्व, ख्याति ३०० रु० के संचय के जो सी एन्ड क० के देनदारों पर बनाया गया है, अतिरिक्त पुस्तक मूल्य पर ली गई।

ए एन्ड कं० का क्रय मूल्य २०,००० रु० था जिसमें से १९,५०० रु०, १० रु० वाले सममूल्य पर निर्गमित साधारण अंशों द्वारा तथा शेष रोकड़ी (जब ए द्वारा लिया गया) द्वारा देय है, तथा सी एन्ड कं० का क्रय मूल्य १९,५०० रु० था, जो पूर्णांदत्त साधारण अंशों के निर्गमन द्वारा देय है।

सी ने सम मूल्य पर १,००० रु० के अतिरिक्त अंश रोकड़ी खरीदे। ४१५ रु० निर्माण व्यय हुए।

उपर्युक्त व्यवहारों को, करने के पश्चात् कम्पनी का चिट्ठा बनाइये तथा प्रत्येक सम्बन्धित पक्ष को निर्गमित अंशों की राशि बतलाइये।

उत्तर—चिट्ठा ४२,०१८ रु०। निर्गमित अंश—ए १,१५० ; बी ८०० ; सी १४५९'३ ; डी ५९३ ७।

८४. पी व क्यू लाभ व हानि ३ व २ के अनुपात में बाँटते हुए साझेदारी में व्यापार करते हैं, व प्रतिवर्ष ३१ मार्च को अपने खाते तैयार करते हैं। ३१ मार्च १९५० को, पी का पूँजी व चालू खाता दोनों १९,६५० रु० व क्यू का ७,५५० रु० था।

३० जून १९५० को, व्यापार एक लिमिटेड कम्पनी के रूप में बदल गया जिसने उस दिन १० रु० वाले २,८०० पूर्णदत्त अंश निर्गमित करके सारी सम्पत्ति व दायित्व लिया। पी ने २,००० व क्यू ने ८०० अंश लिये। ३१ मार्च १९५१ तक कोई लाभ-हानि खाता तैयार नहीं किया गया था जबकि निम्न सूचनायें प्राप्त थीं—

		रु०
३० जून १९५० तक ३ माह की बिक्री		१२,०३०
३१ मार्च १९५१ तक ९ माह की बिक्री		३२,०८०
		४४,११०
३१ मार्च १९५१ को वर्ष का सकल लाभ		१०,६७०
घटाया—९ माह की सचालक शुल्क	२,४००	
अपलिखित स्थापन व्यय	१००	
वेतन व मजदूरी (सचालकों के अतिरिक्त तथा अन्य व्यापारिक व्यय, सारे वर्ष में बराबर बँटे हुये	३,६००	६,१००
वर्ष के शुध्द लाभ का शेष		४,५७०

३० जून १९५० को समाप्त होने वाले तीन माह का पी का आहरण ९०० रु० व क्यू का ६०० रु० था।

३० जून १९५० तक के अविभाजित लाभ की गणना करो तथा बताओ कि कम्पनी अपने खातों में इसका किस प्रकार व्यवहार करेगी। एक साझीदार की कितनी राशि (यदि कोई है) दूसरे साझीदार पर देय है।

उत्तर—३० जून १९५० तक अविभाजित लाभ ५१० रु० (शुध्द लाभ २,०१०–१,५०० रु० आहरण) जो ख्याति अपलिखित करने के प्रयोग में लाया गया। क्यू पी का १२० रु० से ऋणी है।

८५. निम्न शेष ३१ मार्च १९४१ को एक लिमिटेड कम्पनी की स्थिति बतलाते हैं :—

	रु०		रु०
१० रु० वाले पूर्णदत्त अंश	२,००,०००	डूबत ऋण संचय	२,५७०
ख्याति	२०,०००	देय बिल	१०,०००
स्वायत्त गृह	३०,०००	प्राप्य बिल	३५,०००
स्कन्ध	६६,५८०	कार्यालय फर्नीचर	७,५००
विविध देनदार	५१,४००	रोकड़	१६,१९०
विविध लेनदार	१७,१००		

अप्रैल १९५१ में निम्न व्यवहार हुये :—

रोकड़ प्राप्त : देनदारों से २७,५१० रु० (२,१८० रु० बट्टा दिया); देय हुए (matured) बिलों से ५,००० रु० ; १०,००० रु० के बिल ९,९३० रु० मे भुनाने से; नकद बिक्री से ३,२१० रु०।

रोकड़ दी : अंशधारियों को लाभांश १०,००० रु०, लेनदारों को १३,१८० रु० (२२० रु० प्राप्त बट्टा); देय बिल ७,५०० रु० ; वेतन व मजदूरी ४,१६० रु० ; विविध व्यय ५,६५० रु० ; अन्तिम-पद में एक नयी कार्यालय तिजोरी की लागत ६०० रु० सम्मिलित है।

उधार बिक्री ३५,८२० रु०। ग्राहकों द्वारा स्वीकृत प्राप्य बिल ६,५०० रु०। देनदारों पर ४५० रु० डूबत ऋण लिखे गये।

क्रय १६,१०० रु० तथा कम्पनी द्वारा लेनदारों के पक्ष में स्वीकृत बिल ३,२५० रु०।

सारे खाते बनाओ व शेष निकाल कर ३० अप्रैल १९५१ को तलपट बनाओ।

उत्तर :—प्राप्त व दिये हुये बट्टे व बिल के लिये अलग खाते रखते हुये तलपट का योग २,६६,६३० रु०।

८६. एक लिमिटेड कम्पनी की ६,००० अंशों में विभक्त ६०,००० रु० की अधिकृत पूँजी थी जिसमें से ४,००० अंश १ जनवरी १९५० को निर्गमित व पूर्ण याचित हैं, यद्यपि इस समय ८० अंशों का ३ रु० १२ आ० प्रति अंश अन्तिम याचना अवशिष्ट है व ३१ दिसम्बर १९५० को भी नहीं प्राप्त हुआ है। ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष में शेष २,००० अंश ११ रु० ८ आ० प्रति अंश की दर से निर्गमित किये।

उपर्युक्त अंशों के सौदों के अतिरिक्त, ३१ दिसम्बर १९५० को शेष खातों के निम्न शेष हैं—

	रु०		रु०
लाभ-हानि खाता (जमा) १ जनवरी १९५० को	६,५००	बैंक अधिविकर्ष	७,५३४
		रोकड़ हस्ते	९६

कल व यत्र	३०,०००	डूबत ऋण संचय	७००
भूमि व भवन	४५,०००	दर व बीमा	१,४२५
स्कध	२,६४६	संचालक शुल्क	२,५००
विविध लेनदार	१२,६४८	बट्टा (नाम)	२२०
विविध देनदार	१६,८३०	अंकेक्षण शुल्क	२००
मजदूरी व वेतन	६,६२३	सामान्य खर्चे	७४१
विक्रय	५६,८७१	विक्रय वापिसी	६४६
क्रय	३३,८५६	क्रय वापिसी	८३५

३१ दिसम्बर १९५० को स्कध ३,४२६ रु० का था।

निम्न समायोजना करते हुए कम्पनी का ३१ दिसम्बर १९५० को चिट्ठा तथा उस दिन समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ-हानि खाता तैयार करो—

(अ) ह्रास लिखो—भूमि व भवन २% तथा कल व यत्र ७½%।
(ब) विविध देनदारों पर ५% तक डूबत ऋण संचय में वृद्धि करो।
(स) २३४ रु० दर के देय हैं; पूर्वदत्त बीमा ४३७ रु०।

उत्तर—शुष्क लाभ ५,७२७ रु० ८ आ०; चिट्ठा ६५,०४४ रु० ८ आ०।

८७. ३१ दिसम्बर १९५० को एक लिमिटेड कम्पनी का निम्नलिखित तलपट था—

	रु०		रु०
स्वायत्त गृह	२,००,०००	ऋण-पत्र का व्याज	६,०००
कल व यत्र	२,२०,०००	बीमा	३,०००
स्कंध	१,६०,०००	विक्रय वापिसी	७,५००
अवशिष्ट याचन	५,०००	वाहन व्यय व भाड़ा	३,६००
मोटर गाड़ी	६१,५००	अंश पूँजी	४,००,०००
फर्नीचर	५,२५०	६ % ऋण-पत्र	२,००,०००
विविध देनदार	२,७७,०००	लाभ-हानि खाता (जमा)	२३,४००
रोकड़	६२,५००	डूबत ऋण	२,५००
क्रय	६,३६,५५०	देय बिल	६०,०००
प्रारम्भिक व्यय	८,०००	विक्रय	१२,३५,०००
शोधन प्रणवि विनियोग	५०,०००	विविध लेनदार	१,७७,०००
मजदूरी	२,६५,०००	ऋण-पत्र शोधनप्रणवि	५०,०००
मरम्मत	१२,०००	शोधनप्रणवि विनियोग पर व्याज	२,०००
दर व कर	१७,५००		
ईंधन	२५,०००	विविध प्राप्ति	७५०
वेतन	११,२५०	क्रय वापिसी	२,७५०
यात्रा व्यय	१०,५००	अयाचित (Unclaimed) लाभांश	२,१००
बट्टा (नाम)	२०,०००	डूबत व सदिग्ध ऋण के लिए संचय	१२,५००
सचालक शुल्क	४,०००		
सामान्य खर्चे	२,७५०		

निम्न समायोजना करते हुये ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ-हानि खाता तथा उसी तिथि को कम्पनी का चिट्ठा तैयार करो—

(अ) ३१ दिसम्बर १९५० को स्कध का मूल्य १,४०,००० रु० था।
(ब) प्रारम्भिक व्यय में से २,००० रु० अपलिखित करो।
(स) ऋण-पत्र शोधन प्रणवि में १०,००० रु० जोड़ो।
(द) १०% की दर से मोटर गाड़ी तथा कल व यन्त्र पर ह्रास लिखो।
(य) देनदारों पर ५% डूबत व सदिग्ध ऋण के लिए संचय करो।
(फ) २,४०० रु० का बीमा ३१ मार्च १९५१ को समाप्त होने वाले वर्ष तक का चुकाया हुआ है।
(ज) १,००० रु० अंकेक्षण शुल्क के लिए प्रबन्ध करना है।
(ह) १० रु० वाले ६०,००० अंशों में अधिकृत पूंजी है जिसमें से ४०,००० अंश निर्गमित व पूर्ण याचित हैं।

उत्तर—शुष्क लाभ ६३,१५० रु० ; चिट्ठा १०,३७,८५० रु० ; ऋण पत्रों पर देय व्याज ६,००० रु० का प्रबन्ध किया है।

८८. भारत मिल्स लि० के निम्नलिखित तलपट से ३० जून १९५१ को समाप्त होने वाले वर्ष का माल व लाभ-हानि खाता तथा उसी तिथि का चिट्ठा तैयार कीजिए—

	रु०		रु०
अवशिष्ट याचन	१,०२५	कल व यंत्र	९३,७५०
स्कंध	३२,६८५	फर्नीचर	१८,७५०
क्रय	१,१२,२४०	ऋण पत्रों का व्याज	१,०७०
विक्रय वापिसी	५,८७०	रोकड़ हस्ते	२१५
सामान्य व्यय	५,०७०	बैंक में शेष	७,१३५
मजदूरी	६८,१६०	अंश पूँजी (१५,००० अंश)	१,५०,०००
वेतन	१०,२१०	५.० , ४½% ऋण-पत्र	२५,०००
यात्रा व्यय	३,७६०	क्रय वापिसी	८,७२५
विज्ञापन	४,३५०	विक्रय	२,३३,६४०
किराया, दर व बीमा	४,२६०	विविध लेनदार	३८,६४०
बट्टा दिया	१,५७०	सञ्चिति कोष	२५,०००
बैंक का व्याज (नाम)	५७०	डूबत ऋण सञ्चय	३,८००
डूबत ऋण	१,२४५	लाभ-हानि खाता १-७-५० को	१७,३१५
भवन	६२,२५०	लाभांश	७,०७५
देनदार	६०,८००		

निम्न समायोजन (Adjustments) करने हैं:—

(अ) कम्पनी की अधिकृत पूँजी १० रु० वाले २०,००० अंशों में है।

(ब) ३० जून १९५१ को स्कंध ३४,५०० रु० था, परन्तु २० जून १९५१ को ३,२०० रु० के मूल्य का स्कंध जो २,००० रु० पर बीमित था अग्नि द्वारा जल गया तथा बीमा कम्पनी ने ३० जून १९५१ को दावा स्वीकार किया।

(स) ऐक्स बीमा कम्पनी ने, एक दुर्घटना ग्रस्त यात्री को देय १,८०० रु० का दावा जिसकी राशि यात्रा व्यय खाते में लिखी गई है स्वीकार किया परन्तु भुगतान नहीं किया।

(द) वर्ष में ५०० रु० के मूल्य का माल मुफ्त नमूने के रूप में बाटा परन्तु इसका लेखा नहीं हुआ।

(य) कल व यंत्र १०% व फर्नीचर ७½% द्वारा ह्रासित करो।

(फ) पुस्तक ऋण पर ७½% डूबत ऋण के लिये सञ्चय करो।

(ज) ४८० रु० का बीमा पूर्वदत्त है।

उत्तर :—शुष्क लाभ २८,६६६ रु०, चिट्ठा ३,६६,३३६ रु०।

८९ अशोका लि० १,००,००० रु० की अधिकृत पूँजी के साथ, जो १०० रु० वाले ७०० ८% संचयी पूर्वाधिकार अंशों में व १० रु० वाले ३,००० साधारण अंशों (१२ रु० ८ आ० प्रति की दर से निर्गमित) में विभक्त है रजिस्टर हुई। सारी पूँजी निर्गमित व पूर्ण याचित है। ३१ दिसम्बर १९५० को कम्पनी की पुस्तकों में निम्न शेष थे :—

	रु०	रु०
पूर्वाधिकार अंश पूँजी		३०,०००
साधारण अंश पूँजी		३०,०००
अंश खाते पर प्रव्याजि		७,५००
अवशिष्ट याचन (साधारण अंश)	५००	
भूमि व भवन	१७,८६८	
उत्पादन व्यय	२२,१८०	
कल व यंत्र	३४,८२०	
[illegible]	२०,०००	
क्रय पर भाड़ा	२,१०६	
विक्रय पर भाड़ा	८,६२६	
क्रय व विक्रय	८८,४६१	[illegible]

स्कंध	१७,८८७	
डूबत ऋण-संचय		३००
विक्रय व क्रय वापिसी	६४८	७२१
स्थापन खर्चे	१६,७७६	
संचालक शुल्क	१,०००	
विविध देनदार व लेनदार	१८,४४०	३,६७८
फर्नीचर	२,४००	
रोकड़ हस्ते	१,७८२	
रोकड़ बैंक में	७,६४४	
फुटकर औजार (Loose Tools)	४,८२३	
विज्ञापन	६,५४७	
	२,३५,२५१	२,३५,२५१

निम्नलिखित बातों का ध्यान रखते हुये ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का माल व लाभ-हानि खाता तथा उसी तिथि का चिट्ठा तैयार कीजिये।

(अ) विविध देनदारों के ५% के बराबर राशि का डूबत ऋण संचय बनाना है।

(ब) पूर्वदत्त खर्चे निम्न प्रकार आगे ले जाने हैं:—बीमा (स्थापन खर्चे में सम्मिलित) १५० रु०; विज्ञापन १,५०० रु०।

(स) कल व यंत्र पर १५% व फर्नीचर पर १०% ह्रास का प्रबंध करना है।

(द) ३१ दिसम्बर १९५० को निम्न मूल्याकन हुए :—स्कंध १६,८७४ रु०; फुटकर औजार ४,२०० रु०।

उत्तर :—शुष्क लाभ ६,४६५ रु०; चिट्ठा १,२०,४७३ रु०।

९०. मोती शाह लि०, २,००,००० रु० की अधिकृत पूँजी के साथ जो १,००० ६% संचयी पूर्वाधिकार अंशों ५०० साधारण अंशों तथा ५०० स्थगित अंशों (सब १०० रु० वाले) मे विभक्त थी, एक प्राचीन स्थापित कम्पनी थी।

३१ मार्च १९५० को, पूर्वाधिकार अंशों का लाभाश ३० सितम्बर १९४८ से अवशिष्ट है तथा अप्रैल १९४७ से साधारण अंशों पर कोई लाभांश नहीं दिया गया है।

३१ मार्च १९५१ को कम्पनी की पुस्तकों से उद्धृत तलपट निम्न था :—

	रु०		रु०
ख्याति	२६,२००	७०० पूर्वाधिकार अश	७०,०००
ऋणपत्र का व्याज ३१–१२–५० को	१,५००	३०० साधारण अंश	३०,०००
फर्नीचर	१,४२५	३०० स्थगित अश	३०,०००
क्रय	१,२३,४१५	५% ऋणपत्र	४०,०००
विविध देनदार	४४,४९०	विक्रय	१,६२,६१८
मोटर ट्रक	७,१२०	विविध लेनदार	७,४०५
मजदूरी	१३,३१०	बट्टा	१,७५२
वेतन	५,२८६	डूबत ऋण सचय	१,२६३
डूबत ऋण	१,८१०	डूबत ऋण पुनर्प्राप्ति (recovered)	४१
स्कन्ध	८८,२१२	अयाचित लाभांश	१९३
किराया व बीमा	६,७७३	लाभ-हानि खाता १–४–१९५० को	१,२४१
विविध व्यय	१,५७५	विविध प्राप्ति	७४६
अधिमान (Preference) लाभांश ३०-९-५० को	८,४००	बैंक की जमा पर व्याज	६१
रोकड़ बैंक में	१२,४६२		
पूर्वदत्त व्यय	३७३		
	३,४५,३५४		३,४५,३५४

निम्न बातों को ध्यान में रखते हुये ३१ मार्च १९५१ को कम्पनी का चिट्ठा व उस तिथि को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ-हानि खाता तैयार करो :—

(अ) स्कन्ध २६ मार्च १९५१ को जो लिया गया ६३,८६६ रु० पर मूल्यांकित हुआ। ३० व ३१ मार्च

१६५१ को क्रय ६७७ रु० व विक्रय ६२० रु० के थे, ये व्यवहार पुस्तकों में लिख लिये गये। इन विक्रयों में सकल लाभ का अनुपात विक्रय पर ३०% था।

(ब) १,००० रु० ख्याति के अपलिखित करने हैं।

(स) २०% की दर से मोटर ट्रक व फर्नीचर पर ह्रास करना है।

(द) डूबत ऋण संचय १,००० रु० तक घटाना है।

उत्तर – वर्ष का शुद्ध लाभ १४,५६१ रु०, चिट्ठा १,८५,५०० रु० ३१ मार्च १६५१ को स्कंध ६४,१३६ रु०।

६१ एक कम्पनी की पूँजी, १०० रु० वाले १,२५० साधारण अंश, १०० रु० वाले १,२५० ६% पूर्वाधिकार अंश तथा १,००० रु० वाले १५० स्थगित अंशों में विभक्त हैं। स्थगित अंशों को साधारण अंशों को २½% लाभांश मिलने के बाद ही कोई लाभांश प्राप्त हो सकेगा तथा वह किसी भी हालत में साधारण अंशों से अधिक लाभांश प्राप्त नहीं करेंगे। स्थगित अंश उनको, जिनसे व्यापार खरीदा गया है पूर्णदत्त रूप से आवंटित हुये।

निम्नतम वार्षिक विभाज्य लाभ बताओ जो स्थगित अंशों को १½% देगा तथा उनको ८% देने के लिये लाभ कितने से बढ़ाया जाय। सम्पूर्ण हल दिखाओ।

उत्तर – निम्नतम विभाजित लाभ जो स्थगित अंशों को १½% देगा १२,८७५ रु०, जो १६,६२५ रु० (२६,५००-१२,८७५) द्वारा ८% देने के लिये बढ़ाया जायगा।

६२ एक लिमिटेड कम्पनी का ३१ दिसम्बर १६५० को समाप्त होने वाले वर्ष का शुद्ध लाभ १६,७८४ रु० हैं तथा ३७४५ रु० का शेष पिछले वर्ष से लाया गया है।

१ मार्च १६५१ को (अ) ५,००० रु० संचिति कोष में हस्तान्तरित करने का (ब) अंश पूँजी (१,००,००० रु०) पर १०% लाभांश व ५% बोनस देने का तथा (स) शेष आगे ले जाने का निश्चय किया गया।

३१ मार्च १६५१ को उपर्युक्त लाभांश के सब अधिकार पत्र, १० रु० वाले ५० व २० अंशों के अतिरिक्त, भुगतान कर दिये गये।

उपर्युक्त व्यवहारों का कम्पनी की बहियों में लेखा करने के लिये आवश्यक प्रविष्टियाँ कीजिये।

उत्तर—अयाचित लाभांश १०५ रु०।

६३. निम्नलिखित, दो लिमिटेड कम्पनियों के संचालकों की रिपोर्ट से उद्धृत है :—

(अ) ५,००,००० रु० सामान्य निधि व ८,००,००० रु० मरम्मत व नवकरण कोष में हस्तांतरित करने के पश्चात् ३,००,००० रु० ह्रास व १०,००,००० रु० कर के बाटने के पश्चात् तथा पिछले वर्ष से लायी गई २५,३४५ रु० की राशि को सम्मिलित करने के पश्चात् ७,४५,६१३ रु० आधिक्य बचता है जिसको निम्न प्रकार बाँटने का प्रस्ताव रक्खा :—

१०० रु० वाले १०,००० ५½% पूर्वाधिकार अंशों पर लाभांश, तथा

१० रु० वाले २,०६,७५० साधारण अंशों पर १ रु० प्रति अंश की दर से लाभांश तथा ८ आना प्रति अंश की दर से बोनस।

(ब) ३० सितम्बर १६५० को समाप्त होने वाले वर्ष के लाभ-हानि खाते में ४४,६७,८१५ रु० लाभ है, जिसमें पिछले वर्ष से लाये गये १,५६,६७३ रु० के शेष को जोड़ने हुये ४६,५४,४८८ रु० का योग होता है। इसमें से १६,५०,००० रु० का कर के लिये प्रबन्ध करना है तथा २०,०४,४८८ रु० [illegible] शेष छोड़ते हुये २,००,००० रु० संचित कोष में व ५,००,००० रु० विनियोग संचय में हस्तान्तरित करते हैं।

संचालकों ने [illegible] लाभांश घोषित किया, [illegible] १०,००,००० रु० के पूर्वाधिकार अंशों पर ३१ मार्च १६५० व ३० सितम्बर १६५० को समाप्त होने वाले अर्द्ध वर्षों का देय है, तथा [illegible] शेष को आगे ले जाते हुये १२,०६,४०० साधारण अंशों पर १ प्रति [illegible] व [illegible] आना प्रति अंश [illegible] भुगतान सहित लाभांश देने की सिफारिश की।

यह मानते हुये कि प्रस्तावित लाभांश का भी लेखा करना है प्रत्येक कम्पनी के लाभ-हानि खाते का [illegible] खाता तैयार करो।

उत्तर—(अ) [illegible] ३,७४,६६१ रु० (ब) [illegible] २,२६,४८८ रु०।

६४ एक लिमिटेड कम्पनी के संचालकों की रिपोर्ट से [illegible] ३१ दिसम्बर १६५० व १६५१ को समाप्त होने वाले वर्ष के लाभ-हानि खाते के [illegible] किया जाता।

[illegible] ८०,००,००० रु० [illegible] १०,००० रु० [illegible] ३०,००,००० रु० [illegible] १०,००,००० रु० [illegible] में हस्तान्तरित करके

स्कंध	१७,८८७	
डूबत ऋण-संचय		३००
विक्रय व क्रय वापिसी	६४८	७२१
स्थापन खर्चे	१६,७७६	
संचालक शुल्क	१,०००	
विविध देनदार व लेनदार	१८,४४०	३,६७८
फर्नीचर	२,४००	
रोकड़ हस्ते	१,७८२	
रोकड़ बैंक में	७,६४४	
फुटकर औजार (Loose Tools)	४,८२३	
विज्ञापन	६,५४७	
	२,३५,२५१	२,३५,२५१

निम्नलिखित बातों का ध्यान रखते हुये ३१ दिसम्बर १६५० को समाप्त होने वाले वर्ष का माल व लाभ-हानि खाता तथा उसी तिथि का चिट्ठा तैयार कीजिये।

(अ) विविध देनदारों के ५% के बराबर राशि का डूबत ऋण संचय बनाना है।

(ब) पूर्वदत्त खर्चे निम्न प्रकार आगे ले जाने हैं:—बीमा (स्थापन खर्चे में सम्मिलित) १५० रु०; विज्ञापन १,५०० रु०।

(स) कल व यंत्र पर १५% व फर्नीचर पर १०% ह्रास का प्रबंध करना है।

(द) ३१ दिसम्बर १६५० को निम्न मूल्यांकन हुए:—स्कंध १६,८७४ रु०; फुटकर औजार ४,२०० रु०।

उत्तर:—शुष्क लाभ ६,४६५ रु०; चिट्ठा १,२०,४७३ रु०।

६०. मोती शाह लि०, २,००,००० रु० की अधिकृत पूँजी के साथ जो १,००० ६% संचयी पूर्वाधिकार अंशों ५०० साधारण अंशों तथा ५०० स्थगित अंशों (सब १०० रु० वाले) में विभक्त थी, एक प्राचीन स्थापित कम्पनी थी।

३१ मार्च १६५० को, पूर्वाधिकार अंशों का लाभाश ३० सितम्बर १६४८ से अवशिष्ट है तथा अप्रैल १६४७ से साधारण अंशों पर कोई लाभाश नहीं दिया गया है।

३१ मार्च १६५१ को कम्पनी की पुस्तकों से उद्धृत तलपट निम्न था:—

	रु०		रु०
ख्याति	२६,२००	७०० पूर्वाधिकार अंश	७०,०००
ऋणपत्र का ब्याज ३१-१२-५० को	१,५००	३०० साधारण अंश	३०,०००
फर्नीचर	१,४२५	३०० स्थगित अंश	३०,०००
क्रय	१,२३,४१५	५% ऋणपत्र	४०,०००
विविध देनदार	४४,४६०	विक्रय	१,६२,६१८
मोटर ट्रक	७,१२०	विविध लेनदार	७,४०५
मजदूरी	१३,३१०	बट्टा	१,७५२
वेतन	५,२८६	डूबत ऋण संचय	१,२६३
डूबत ऋण	१,८१०	डूबत ऋण पुनर्प्राप्ति (recovered)	४१
स्कन्ध	८८,२१२	अयाचित लाभाश	१६३
किराया व बीमा	६,७७३	लाभ-हानि खाता १-४-१६५० को	१,२४१
विविध व्यय	१,५७५	विविध प्राप्ति	७४६
अधिमान (Preference) लाभाश ३०-६-५० को	८,४००	बैंक की जमा पर ब्याज	६१
रोकड़ बैंक में	१२,४६२		
पूर्वदत्त व्यय	३७३		
	३,४५,३५४		३,४५,३५४

निम्न बातों को ध्यान में रखते हुये ३१ मार्च १६५१ को कम्पनी का चिट्ठा व उस तिथि को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ-हानि खाता तैयार करो:—

(अ) स्कन्ध २६ मार्च १६५१ को ले लिया गया ६३,८२६ रु० पर मूल्यांकित हुआ। ३० व ३१ मार्च

१९५१ को क्रय ६७७ रु० व विक्रय ६२० रु० के थे, ये व्यवहार पुस्तकों में लिख लिये गये। इन विक्रयों में सकल लाभ का अनुपात विक्रय पर ३०% था।

(ब) १,००० रु० ख्याति के अपलिखित करने हैं।

(स) २०% की दर से मोटर ट्रक व फर्नीचर पर ह्रास करना है।

(द) डूबत ऋण संचय १,००० रु० तक घटाना है।

उत्तर – वर्ष का शुद्ध लाभ १४,५६१ रु०, चिट्ठा १,८५,५०० रु० ३१ मार्च १९५१ को स्कंध ६४,१३६ रु०।

६१ एक कम्पनी की पूँजी, १०० रु० वाले १,२५० साधारण अंश, १०० रु० वाले १,२५० ६% पूर्वाधिकार अंश तथा १,००० रु० वाले १५० स्थगित अंशों में विभक्त हैं। स्थगित अंशों को साधारण अंशों को २½% लाभाश मिलने के बाद ही कोई लाभाश प्राप्त हो सकेगा तथा वह किसी भी हालत में साधारण अंशों से अधिक लाभाश प्राप्त नहीं करेंगे। स्थगित अंश उनको, जिनसे व्यापार खरीदा गया है पूर्णदत्त रूप से आवटित हुये।

निम्नतम वार्षिक विभाज्य लाभ बताओ जो स्थगित अंशों को १½% देगा तथा उनको ८% देने के लिये लाभ कितने से बढ़ाया जाय। सम्पूर्ण हल दिखाओ।

उत्तर – निम्नतम विभाजित लाभ जो स्थगित अंशों को १½% देगा १२,८७५ रु०, जो १६,६२५ रु० (२६,५००–१२,८७५) द्वारा ८% देने के लिये बढ़ाया जायगा।

६२ एक लिमिटेड कम्पनी का ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का शुद्ध लाभ १६,७८४ रु० हैं तथा ३७४५ रु० का शेष पिछले वर्ष से लाया गया है।

१ मार्च १९५१ को (अ) ५,००० रु० संचिति कोष में हस्तान्तरित करने का (ब) अंश पूँजी (१,००,००० रु०) पर १०% लाभाश व ५% बोनस देने का तथा (स) शेष आगे ले जाने का निश्चय किया गया।

३१ मार्च १९५१ को उपर्युक्त लाभाश के सब अधिकार पत्र, १० रु० वाले ५० व २० अंशों के अतिरिक्त, भुगतान कर दिये गये।

उपर्युक्त व्यवहारों का कम्पनी की बहियों में लेखा करने के लिये आवश्यक प्रविष्टियाँ कीजिये।

उत्तर—अयाचित लाभाश १०५ रु०।

६३. निम्नलिखित, दो लिमिटेड कम्पनियों के संचालकों की रिपोर्ट से उद्धृत है :—

(अ) ५,००,००० रु० सामान्य निधि व ८,००,००० रु० मरम्मत व नवकरण कोष में हस्तांतरित करने के पश्चात् ३,००,००० रु० ह्रास व १०,००,००० रु० कर के काटने के पश्चात् तथा पिछले वर्ष से लायी गई २५,३४५ रु० की राशि को सम्मिलित करने के पश्चात ७,४५,६१६ रु० आधिक्य बचता है जिसको निम्न प्रकार बाँटने का प्रस्ताव रक्खा :—

१०० रु० वाले १०,००० ५½% पूर्वाधिकार अंशों पर लाभाश, तथा

१० रु० वाले २,०६,७५० साधारण अंशों पर १ रु० प्रति अंश की दर से लाभाश तथा ८ आना प्रति अंश की दर से बोनस।

(ब) ३० सितम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष के लाभ-हानि खाते में ४४,९७,५१५ रु० लाभ है, जिसमें पिछले वर्ष से लाये गये १,५६,९७३ रु० के शेष को जोड़ते हुये ४६,५४,४८८ रु० का योग होता है। इसमें से १६,५०,००० रु० का कर के लिये प्रबन्ध करना है तथा २०,०४,४८८ रु० देने योग्य शेष छोड़ते हुये २,००,००० रु० संचित कोष में व ५,००,००० रु० विनियोग सञ्चय में हस्तान्तरित करने हैं।

संचालकों ने अन्तरिम लाभांश घोषित किया, लाभाश ५% ३०,००,००० रु० के पूर्वाधिकार अंशों पर ३१ मार्च १९५० व ३० सितम्बर १९५० को समाप्त होने वाले अर्द्ध वर्षों का देय है, तथा अब उन्होंने बचे हुये शेष को आगे ले जाते हुये १९,०२,४०० साधारण अंशों पर १ प्रति अंश व चार आना प्रति अंश विशेष भुगतान सहित लाभांश देने की सिफारिश की।

यह मानते हुये कि प्रस्तावित लाभांश का भी लेखा करना है प्रत्येक कम्पनी के लाभ-हानि खाते का नियोजन खाता तैयार करो।

उत्तर—(अ) आ०/लि० ३,७५,९९१ रु० (ब) आ०/लि० २,२६,४८८ रु०।

६४. एक लिमिटेड कम्पनी के संचालकों की रिपोर्ट में सम्मिलित निम्न सूचनाओं का उसके ३१ दिसम्बर १९५० व १९५१ को समाप्त होने वाले वर्ष के लाभ हानि खाते में किस प्रकार लेखा किया जायगा।

कर के अनुमानित दायित्व के लिये ८०,००,००० रु० की राशि अलग करके तथा १०,००० रु० लाभांश कोष में, २०,००,००० रु० स्थानांतरण व सुधार कोष में व १०,००,००० रु० आकस्मिक कोष में हस्ता॰ ... बाद

१६५० वें वर्ष का लाभ ५४,२६,३५८ रु० है, जिसका कुल योग ६०,१३,८८४ रु० करते हुये पिछले वर्ष से लाया गया ५,८७,५२६ रु० का धन जोड़ना है। संचालकों ने इस धन को निम्न प्रकार वितरित की सिफारिश की :—

३१ दिसम्बर १६५० वें वर्ष का ८% संचयी पूर्वाधिकार अंशों पर लाभाश ६,४८,००० रु०; व साधारण अंशों पर १२ आना प्रति अंश की दर से लाभाश ४८,७५,००० रु० तथा अगले खाते में ले जाये गये ४,६०,८८४ रु० ।

उत्तर—१६५० के हानि-लाभ खाते से चिट्ठे में ले जाया गया शेष ६०,१३,८८४ रु०। १६५० का लाभाश, जो १६५१ के लाभ-हानि खाते में दिखाया जायगा खाते के जमा पक्ष में १६५० से लायी गयी राशि में घटाकर लिखा जायगा।

६५. ३१ दिसम्बर १६५० को एक लिमिटेड कम्पनी की पुस्तकों में निम्नलिखित शेष थे :—

पूँजी . १० रु० वाले १,५०० पूर्णदत्त अंश देय बिल ५०० रु०; विविध लेनदार २,५०० रु० स्वायत्त गृह पर बंधक २,००० रु०; १६५० का शुष्क लाभ ३,००० रु०; रोकड ६,००० रु०; विविध देनदार ३,००० रु०; स्कध ४,००० रु०; स्वायत्त गृह १०,००० रु० ।

संचालकों ने, स्वायत्त गृह पर बंधक भुगतान करने का, वर्ष का १२% लाभाश विभाजित करने का, ६६ रु० की दर से, सचित कोष से १,००० रु० की ३% राजकीय प्रतिभूतियाँ खरीदने का तथा शुष्क लाभ का शेष आगे ले जाने का प्रस्ताव रक्खा।

उपर्युक्त प्रस्ताव स्वीकृत हुये। इनका लेखा करने के लिये जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये तथा उसके पश्चात् कम्पनी का चिट्ठा तैयार कीजिये।

उत्तर—चिट्ठा १६,२०० रु०।

६६. जैड लि० की निर्गमित अंश पूँजी, १०० रु० वाले पूर्णदत्त ५०० ६% पूर्वाधिकार अंशों में, जिनमे से ३०० अंश ७५ रु० दत्त हैं, तथा १० रु० वाले २०,००० पूर्णदत्त साधारण अंशों में विभक्त है। कम्पनी का वर्ष ३१ दिसम्बर को समाप्त होता है।

१४ मार्च १६५१ को हुई वार्षिक सभा में यह निश्चय हुआ :—

(अ) ३१ दिसम्बर १६५० को आधे वर्ष का पूर्वाधिकार लाभाश दिया जाय (पूर्णदत्त धन के अनुपात में आंशिक दत्त अंशों का लाभाश देय है);

(ब) साधारण अंशों पर १०% अन्तिम लाभाश व २% बोनस दिया जाय।

(स) सचिति कोष में ५,००० रु० हस्तान्तरित किये जाये तथा

(द) साधारण अंशधारियों को एक नवीन साधारण अंश प्रत्येक पाँच अंशों पर, पूर्णदत्त निर्गमित विभाजित किया जाय जिसके लिए आवश्यक हस्तान्तरण सचित कोष से होगा।

उपर्युक्त निश्चयों का लेखा करने के लिये जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये, रोकड़ी भुगतान की प्रविष्टियों की आवश्यकता नहीं है।

६७. एक कम्पनी ने, जिसकी पूर्णदत्त पूँजी ५ रु० वाले अंशों में १,००,००० रु० की है, अपने संचय कोष में से ७०,००० रु० बोनस घोषित किया, जो २ रु० प्रति अंश प्रव्याजि की दर से ५ रु० वाले पूर्णदत्त अंशों पर देय है। प्रत्येक अंशधारी कम्पनी में लिये प्रत्येक दो अंशों पर एक ऐसा अंश प्राप्त करेगा। इसका लेखा करने के लिये कम्पनी की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये।

६८. एक कम्पनी ने, १० रु० प्रति अंश से १,००,००० रु० की अधिकृत व निर्गमित पूँजी के, जिसमें ७ रु० ८ आ० प्रति अंश आहूत व दत्त है, अपने सचित कोष में से जिसमें २०,००० रु० का शेष था, पूर्णदत्त पूँजी पर ३३⅓ % बोनस घोषित किया। बोनस अंशों को पूर्णदत्त बनाने से प्रयोग होगा। इन व्यवहारों का लेखा करने के लिये जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये।

६६. निम्नलिखित मद उनमें से है जो एक लिमिटेड कम्पनी के चिट्ठे में दिखाये गये हैं :—

	रु०
स्वायत्त भवन लागत पर	२५,०००
कल व यन्त्र लागत पर ह्रास रहित (चालू वर्ष के ह्रास सहित)	१४,५००
व्यापार में स्कंध लागत पर	१८,२५०

संचालकों ने पता लगाया कि (चिट्ठे की तिथि को) भवन का बाजार मूल्य २८,००० रु०, कल व यंत्र का १२,००० रु० तथा व्यापार में स्कंध का [illegible] रु० है।

प्रत्येक मामले में कारण देते हुये बताइये कि अन्तिम [illegible] के लिये क्या आप इन्हें (अ) अनुमति देंगे या (ब) प्रश्न के किसी एक या प्रत्येक [illegible] के [illegible] करना आवश्यक समझते हैं।

विविध खाते

१००, ३१ मार्च १९५० को बनाये गये एक लिमिटेड कम्पनी के चिट्ठे में, ह्रास अपलिखित करने के पश्चात् कल व यंत्र २५,५०० रु० के दिखाये गये थे। ह्रास विभिन्न मदों पर खरीदने की तिथि से घटते हुये मूल्य पर १० प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से क्रमानुसार अपलिखित किया जाता है। १ जून १९५० को, एक मोटर जो १ दिसम्बर १९४५ को ७५० रु० की खरीदी थी, २५० रु० में बेची तथा १,२०० रु० की लागत की एक नई बदले में ली।

वर्ष का उचित ह्रास अपलिखित करने के पश्चात् कम्पनी की पुस्तकों में ३१ मार्च १९५१ को समाप्त होने वाले वर्ष का कल व यंत्र खाता दिखाओ।

उत्तर :—बेची हुई मोटर का अपलिखित मूल्य ४७५ रु०; कल व यंत्र खाते का शेष २३,५२३ रु०।

१०१. एक मैन्यूफैक्चरिंग व्यापार के पास कलें थीं जिन पर क्रमागत ह्रास पद्धति से १५% वार्षिक की दर से ह्रास काटा जाता है। प्रत्येक वर्ष में ३० जून को खाते तैयार किये जाते हैं तथा ३० जून १९५० को सारी कलों का पुस्तक मूल्य १,७५,४१५ रु० था।

३० सितम्बर १९५० को, १२,२०० रु० में एक अतिरिक्त कल तथा ३१ दिसम्बर १९५० को ४,७५० रु० की लागत की एक और कल खरीदी।

३१ मार्च १९५१ को, कुछ पुरानी कलें २,३५० रु० में बेचीं, जिनका ३० जून १९५० को पुस्तक मूल्य २,५०० रु० था।

३० जून १९५१ को समाप्त होने वाले वर्ष का कल खाता बनाइये।

उत्तर—शेष १,६२,१९९ रु०।

१०२. ३१ दिसम्बर १९४९ को, एक क्लब का चिट्ठा निम्न था—बैंक २१५ रु०, अवशिष्ट चन्दा ५ रु०; फर्नीचर १६० रु०; भवन १,५०० रु०; मरम्मत के अदत्त १५ रु०।

उसके १९५० के प्राप्ति व भुगतान निम्न थे—

	रु०		रु०
चन्दा	२१५	दर	२५
दान	३०	मजदूरी	२०८
कमरों का किराया	१०	रोशनी	१५
प्रवेश शुल्क	२	मरम्मत	२४
		फर्नीचर	५०
		आलेख्य (Stationery)	५

३१ दिसम्बर १९५० को ४ रु० रोशनी व ४ रु० मरम्मत के अदत्त थे, तथा सदस्यों पर १० चन्दा देय था।

फर्नीचर पर २० रु० ह्रास काटने के पश्चात् क्लब का ३१ दिसम्बर १९५० को आय-व्यय खाता तथा चिट्ठा तैयार करो।

उत्तर—१९५० का आय का व्यय पर आधिक्य ८२ रु०। चिट्ठा १,९४५ रु०।

१०३. १ जनवरी १९५० को एक साहित्य सभा की सम्पत्ति व दायित्व निम्न थे—रोकड़ २१२ रु०; कार्यालय फर्नीचर ३५० ; ४०,००० रु० के नगरपालिका [illegible] ९३६ रु० की लागत पर; साहित्य का संग्रह ४७ रु०; १९५० का पेशगी प्राप्त चन्दा ४२ रु०; अदत्त किराया २० रु०।

निम्नलिखित १९५० के वर्ष के रोकड़ी लेनदेन का सारांश है।

	रु०		रु०
शेष रो०/बैं	२१२	किराया	२५०
चन्दा व दान	[illegible]	वेतन	६५०
१९५१ का पेशगी चन्दा	[illegible]	[illegible]	७३
ब्याज	२४	[illegible] ५०० रु० के [illegible] की लागत	२५५
साहित्य की बिक्री	[illegible]	[illegible]	१६६
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	साहित्य की खरीद	४३८
		शेष [illegible]	३३२
	[illegible]		[illegible]

३१ दिसम्बर १९५० को २० रु० किराये के अदत्त थे तथा साहित्य के स्कंध का मूल्य ५६ रु० था। २५ रु० फर्नीचर के ह्रास के अपलिखित करने है।

अपने विचार से उचित रूप में सभा के वार्षिक खाते तैयार कीजिए

उत्तर—आय का व्यय से आधिक्य ६८ रु० । चिट्ठा १,३२६ रु० ।

१०४. निम्नलिखित, एक वाक् परिषद् के ३१ मार्च १९५१ को समाप्त होने वाले वर्ष के रोकड़ी व्यवहारों का साराश है—

	रु०		रु०
पिछले वर्ष का शेष	३१९	किराया व दर	१९८
चन्दा व प्रवेश शुल्क	१,८५५	सेवकों को दी मजदूरी	२४५
दान	८५	रोशनी	७२
आजीवन सदस्यता शुल्क	२५०	भाषण शुल्क	८३५
विनियोग पर ब्याज	९४	फर्नीचर का क्रय	४०
मनोरंजन से लाभ	४२	कार्यालय व्यय	४४८
		५०० रु० के नगरपालिका ऋण-पत्रों का क्रय	४७३
		रोकड़ बैंक में	३४२
		रोकड़ हस्ते	१२
	२,६४५		२,६४५

वर्ष के प्रारम्भ में परिषद् के पास ४,००० रु० के राजकीय पत्र थे जिनकी लागत ३,२५१ रु० थी तथा ८७० रु० के मूल्य का फर्नीचर था। उस तिथि को ३० आजीवन सदस्य थे जिसमें से प्रत्येक ने ५० रु० चन्दे के दिये थे, परन्तु वर्ष में दो का स्वर्गवास हो गया। वर्ष के प्रारम्भ मे साधारण अवशिष्ट चन्दा ३५ रु० तथा वर्ष के अन्त में ४५ रु० था, और वर्ष के प्रारम्भ व अन्त में ६ माह का किराया ६० रु० देय था।

३१ मार्च १९५१ को समाप्त होने वाले वर्ष का परिषद् का आय-व्यय खाता तथा उसी तिथि का चिट्ठा तैयार करो। ७५ रु० फर्नीचर पर ह्रास के अपलिखित करने हैं।

जीवित सदस्यों का सदस्यता का चन्दा, 'आजीवन सदस्यता चन्दा कोष' में लिखा गया, परन्तु स्वर्गवासी सदस्यों का चन्दा वर्ष की आय मानी गई।

उत्तर—आय का व्यय से आधिक्य ३४३ रु० । आजीवन सदस्यता कोष का शेष १,७५० रु०; चिट्ठा ४,६६८ रु० ।

१०५. निम्न सूचनाओं से ए द्वारा बी को भेजा हुआ ३१ दिसम्बर १९५० तक का चालू खाता तैयार कीजिए। ५% वार्षिक की दर से गुणनफल विधि (Produots method) द्वारा ब्याज की गणना करनी है।

१९५०		रु०
अक्तूबर १२	बी को माल बेचा	१,०००
	बी से प्राप्त रोकड	५००
नवम्बर १	बी के पक्ष मे तृतीय पक्ष को नकद दिये	२,०००
२१	बी को माल बेचा	५,०००
दिसम्बर ११	बी को माल बेचा	२,०००
२१	बी से प्राप्त रोकड़	५,०००

उत्तर—ब्याज ५६ रु० २ आना ८ पाई। खाते का शेष ५,५५६ रु० २ आ० ८ पा० ।

१०६ डब्लू एण्ड कं० फर्म के साझीदार ऐक्स का ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का चालू खाता निम्न था :—

१०६. डब्लू एण्ड कं० फर्म के साझीदार ऐक्स का ३१ दिसम्बर १९५० को समाप्त होने वाले वर्ष का चालू खाता निम्न था :—

१९५०		रु०	१९५०		रु०
मार्च १	रोकड़	२००	जनवरी १	शेष नी/ला	१५०
जून ३०	,,	३५०			
अक्तूबर ३१	,,	२५०			
दिसम्बर ३१	,,	१५०			

साझेदारी संविदे के अनुसार पूँजी पर व्याज तथा किसी भी मद पर जो साझीदारों के चालू खाते से लिया जायगा क्रमश ५ % वार्षिक की दर नाम व जमा होगी तथा लाभ बराबर बराबर विभाजित होंगे। ऐक्स की पूँजी २,००० रु० है।

साझेदारी संविदे के अनुसार निश्चित व्याज का प्रबन्ध करने से पूर्व, वर्ष का लाभ १,७३३ रु० ५ आ० ४ पा० है। अन्य साझीदार वाई की पूँजी पर व्याज ५० रु० व आहरण पर ५ रु० है।

उपर्युक्त चालू खाते को इस प्रकार बनाओ कि सम्पूर्ण वर्ष का व्याज सरलता से निकाला जा सके। व्याज का आगणन माह के अनुसार करो।

उत्तर—ऐक्स के चालू खाते में व्याज ११ रु० १० आ० ८ पा० नाम लिखी जाती है ऐक्स का लाभ का भाग ८०० रु० व ऐक्स के चालू खाते का शेष ८८ रु० ५ आ० ४ पा०।

१०७. १ मार्च १९५१ को, ए बी का ५,००० रु० से ऋणी है। भुगतान में उस तिथि को उसने सी लि० के १०० रु० वाले ५० अशों (७५ रु० दत्त) ६० रु० प्रति अंश बाजार मूल्य पर बी को हस्तान्तरित किये, तथा शेष के लिये ५% वार्षिक व्याज सहित तीन माह का बी का ड्राफ्ट स्वीकार किया। बी को व्याज तुरन्त नकद दिया।

१ अप्रैल १९५१ को बी ने बिल को ४ % वार्षिक की दर से अपने बैंक से भुनाया, तथा उसी तिथि को सी लि० के अंशों पर २५ रु० अन्तिम याचन के दिये।

उपर्युक्त व्यवहारों को बी की खाता बहियों में लिखिये।

उत्तर—बिल की भुनाई का खर्चा १३ रु० ५ आ० ४ पा०।

१०८. मेहता लि० ५,०६५ रु० के लिए पटेल ब्रादर्स के ऋणी है। देय राशि को प्राप्त करने के लिये मुकदमा दायर किया तथा निर्णय वादी के पक्ष में हुआ जिस पर २७५ रु० लागत आई। दावे की राशि तथा लागत न्यायालय में दी गई व वादी के वकील द्वारा आहरित हुई। वादी के वकील ने ऋण की राशि ११५ रु० लागत के, जो प्रतिवादी से वसूल नहीं हुए, कम करके पटेल ब्रादर्स को भेज दी।

उपर्युक्त व्यवहारों को पटेल ब्रादर्स की खाता बहियों में लिखो।

उत्तर:—वकील से प्राप्त रोकड़ ४,६५० रु०।

१०९ ऐक्स जो १ जून १९५० को माल की पूर्ति के लिये वाई का २०० रु० से ऋणी है, अपना पूरा ऋण चुकाने में असमर्थ है तथा उसने अपने लेनदार से रुपये में चार आने का प्रस्ताव रक्खा और यह स्वीकृत हुआ। १ दिसम्बर १९५० को वाई को लाभांश का एक चैक प्राप्त हुआ।

जब ऐक्स ने अपने लेनदार बुलाये, वाई के पास ऐक्स का एक यन्त्र था और उसने उस पर अपने अधिकार का दावा किया। यह स्वीकृत हुआ और यन्त्र का मूल्य ८० रु० लगाया गया। तदनुसार वाई का दावा इस राशि से कम कर दिया गया।

वाई ने उस यन्त्र को बेचने की अपेक्षा उसे अपने कल के एक भाग के रूप में रखने का निश्चय किया। ३१ दिसम्बर १९५० को अपने वार्षिक खाते बनाते समय ऐक्स के खाते का शेष डूबत ऋण के रूप में अपलिखित किया।

आवश्यक खातों (Ledger Accounts) द्वारा दिखाओ कि उपर्युक्त व्यवहारों का वाई की पुस्तकों में किस प्रकार लेखा किया जायेगा।

उत्तर—९० रु० डूबत ऋण अपलिखित किये।

११०. जून १९५० में एक व्यापारी के यहां आग लग गई, तथा बीमा, वास्तविक मूल्य तथा वास्तविक हानि निम्न थी :—

	स्कंध	कल
	रु०	रु०
बीमा	१०,०००	१०,०००
वास्तविक मूल्य	२०,०००	२०,०००
अग्नि से वास्तविक हानि	१०,०००	१०,०००

कुल हानि के आधे भुगतान के आधार पर १५ जून १९५० को बीमा कम्पनी ने [illegible] द्वारा [illegible] क्योंकि [illegible] दो सम्पत्तियों के वास्तविक मूल्य के आधे का बीमा कराया तथा २१ जून १९५० को एक चैक प्राप्त हुआ।

उपर्युक्त से आवश्यक खाते (Ledger Accounts) दिखाओ।

उत्तर:—१०,००० रु० की क्षति के [illegible] जो बीमा कम्पनी से प्राप्त नहीं हुई है [illegible] अपलिखित की जायगी।

१११. निम्नलिखित विनियोग व्यवहारों का एक लिमिटेड कम्पनियों की बहियों में लेखा करो जो व्यवसायी बहीखाता प्रणाली (Mercantile System) का अनुसरण करता है तथा जिसका हिसाब का वर्ष ३१ दिसम्बर को समाप्त होता है :—

(अ) १ मई १६५० को, एक जूट मिल कम्पनी के २०,००० रु० के ५% ऋण पत्र ६५ रु० की दर से खरीदे तथा २५० रु० व्यय किये।

(ब) १ सितम्बर १६५० को, उपर्युक्त ऋणपत्रों के आधे ६८ रु० की दर से १३२ रु० खर्चे के घटाकर बेचे।

ऋणपत्रों पर व्याज प्रत्येक वर्ष १ जनवरी व १ जुलाई को देय है।

उत्तर—विनियोगों की बिक्री पर लाभ ३१८ रु०; विनियोगों का मूल्य लागत पर लगाये हुये विनियोग खाते का शेष, १४,१२५ रु०; लाभ-हानि खाते को हस्तान्तरित व्याज ७५० रु०।

११२. आपकी सम्मति में निम्नलिखित विवरणों में छूटा हुआ शब्द 'बढ़ाकर' या 'घटाकर' है।

(अ) यह बतलाते हुये कि उनकी व्यापारिक सम्पत्ति ३,००० रु०, लेनदार ३०० रु० व उसकी पूँजी २,४०० रु० थी उसने अपनी पूँजी .... बताई।

(ब) यदि एक क्रेता अपने क्रय में से व्यापारिक बट्टा न घटाये तो उसका दायित्व .... होगा।

(स) एक व्यापारी के अन्तिम स्कन्ध का वास्तविक मूल्य केवल ५४० रु० है परन्तु उसने अपने माल खाते में ५७० रु० सम्मिलित किये तदनुसार उसका सकल लाभ .... गया।

(द) एक व्यापार में जहाँ कि उचित डूबत ऋण संचय ५०० रु० है, स्वामी ७०० रु० संचय करने का आग्रह करता है, जिसके कारण उसका कुल लाभ......... है।

(य) जब ह्रास का अलाउन्स अनुचित होता है तब शुष्क लाभ......... है।

(फ) जब पेशगी दिये हुये बीमे की प्रव्याजि का कोई समायोजन नहीं किया जाता है तब लाभ.......... है।

(ग) यदि एक व्यापारी एक गाडी खरीदे तथा उसकी लागत क्रय खाते में नाम लिखे तो उसका सकल लाभ .... जायगा।

(ह) यदि आंशिक भुगतान करते हुये एक देनदार ऐसा बट्टा घटाये जिसका वह अधिकारी नहीं है तो उसके व्यक्तिगत खाते में बाकी शेष......... है।

(इ) एक ऋण के प्राप्त धन से, जो अपलिखित कर दिया गया है, देनदार के खाते को जमा कर दिया। अतः कुल लाभ.......... होगा।

64 — 80
1   64